श्रीराजेन्द्रप्रवचनकार्यालय-सिरिज ३

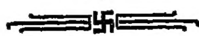


णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स.

'श्रीअभिहाण-राइन्द' महाकोशादि संस्कृत-प्राकृतमयानेकग्रन्थ-कर्तृक, सूरिशक्रचक्रचूडामणि-सकलजैनागमपारदृश्व, जङ्गमयुगप्रधान परमयोगिराज, जगत्पूज्य-

गुरुदेव-श्रीमद्विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज-संकलित-

श्रीकल्पसूत्रबालावबोध.



संशोधक—

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय-

मुनि श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज।



प्रकाशक—

ओशवंश-बहुफणागोत्रीय—

श्रीयुत सद्गृहस्थ रतनाजी भूताजी शाह.

मु० आहोर, (मारवाड़)

वीरनिर्वाण सं० २४५८	संवर्द्धित-द्वितीयसंस्करण	विक्रम सं० १९८८
राजेन्द्रसूरि सं० २५	५००	सन् १९३२ इस्वी.

Printed—Shah Gulabchand Lallubhai at
The Anand P. Press—Bhavnagar.

(मूल्य पठन-पाठन)

संवर्द्धित-द्वितीयावृत्ति.

आ परम पुनीत पूजनीय ग्रन्थनी प्रथमावृत्ति विक्रम सं. १६४४ मां श्रीसंघना तरफथी छपाइने प्रसिद्ध थइ हती, ते तेज वखते खलास थइ गई, ते पछी एना माटे बहु मांग थवा लागी परन्तु केटलाक अनिवार्य कारणोना लीधे बीजी आवृत्ति काढवामां बहु विलंब थयो. अने बीजी तरफ आनी उपयोगिता जोइने वाचकोनो आ ग्रन्थने प्राप्त करवा माटे लक्ष्य वधतोज गयो. वखतो वखत बीबी आवृत्ति छपाववा माटे प्रेरणापत्रो आववाथी आहोर (मारवाड) ना रहेवासी श्रीमान् सद्गृहस्थ शा. रतना भूताजीए आ ग्रंथने बीजीवार छपाववानो विचार कर्यो अने तदनुसार ते कार्यने अमलमां लइने छपावी प्रसिद्ध करेल छे. प्रथमावृत्ति करतां आमां घणा स्थले सुधारो वधारो करवामां आवेल छे अने दरेक विषयना आरंभमां हेडिंगो (अवतरणो) पण उमेरवामां आव्यां छे तेथी चालु विषयनुं ज्ञान वाचकोने सहजमां थइ शके छे. चित्रो जोइ जोइने केटलाक बालजीवो पुस्तक फाडी न्हाखीने आशातना करे छे तेथीज आ द्वितीय संस्करणमां वधारे चित्रो उमेरवामां आव्या नथी. वाचको तरफथी वखतो-वखत सिकायत थयां करती हती के आ ग्रन्थनो विस्तार बहु लांबो होवाथी ते पांच दिवसमां पूरुं करवामां घणी मुसीबत पडे छे, आ सिकायतने ध्यानमां राखीने अमोए आ संस्करणमां नियमथी वांचवा लायक मेटरने वब्भिक ब्लौक टाइप (मोटा अक्षर) मां अने टाइम ओछो होय तो वांचती वखते छोडी देवा लायक मेटरने ग्रेटब्लोक (छोटा) टाइपमां राखेल छे. तेथी वाचकोने सूचवीए छिये के वांचती वखते जो टाइम बहु होय तो मोटा-छोटा बन्ने टाइपना मेटर वांचवा अने टाइम अल्प होय तो छोटा टाइपवाला मेटरने छोडी दइने मोटा टाइपनो मेटरज वांची पूर्ण करवुं जोइये. छोटा टाइपवालो मेटर छोडीने वांचवाथी कोइ जातनो दोष के हरकत नथी.

आ संस्करणना प्रुफ वगेरे बहु सावधानी राखीने अने दरेक विषयने शोधवामां पूरो प्रयत्न सेवायो छे, छतां पण 'इत्थिया पुत्थिया कबु न शुद्धिया' ए नियम प्रमाणे दृष्टिदोष के प्रेसदोषथी कोइ ठेकाणे अशुद्धियो रही गई होय तो वाचकोने वांचती वखते ते सुधारीने वांचवा कृपा करवी. जेने आ ग्रन्थनो खप होय तेणे 'शा. रतना भूताजी, मु. आहोर, (मारवाड) व्हाया-एरनपुर' आ पता ऊपर पत्र लखी मंगावी लेवो जोइए. ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय-मुनियतीन्द्रविजय ।



विषय-प्रदर्शन।

(पीठिका सहित प्रथम व्याख्यान)

विषय. पृष्ठाङ्क

(द्वितीय–व्याख्यान)

(तृतीय–व्याख्यान)

(चतुर्थ–व्याख्यान)

विषय पृष्ठाङ्क

(पंचम-व्याख्यान)

विषय पृष्ठाङ्क

(छट्ठो–व्याख्यान)

विषय पृष्ठाङ्क

(सप्तम-व्याख्यान)

विषय | पृष्ठाङ्क

(अष्टम—व्याख्यान)

विषय पृष्ठांक



साहित्यविशारद-विद्याभूषण-आचार्य-



श्रीमद्विजयभूपेन्द्रसूरिजी महाराज ।

जन्म सं० १९४५, मु० भोपाल (मालवा)

दीक्षा सं० १९५२, मु० आलीराजपुर (मीमार)

आचार्यपद सं० १९८० मु० जावरा (मालवा)

आनंद प्रिं. प्रेस-भावनगर.

प्राथमिक—वक्तव्य.

—※卐※—

आ असार संसारमां प्राणिमात्रनुं जीवितव्य जलतरंगवत्, नाना प्रकारनी संपत्तियो दुःखागारवत्, इन्द्रियोना विविध विषयो संध्यारागवत् अने स्वजनादिकनो समागम स्वप्नोपम के इन्द्रजालवत् छे. तो पण मोहनीयकर्मना उदयथी प्राणि समजे छे के आ म्हारा पुत्र छे, आ म्हारी स्त्री छे, आ म्हारुं ऐश्वर्य छे, हुं महा सत्ताधारी छुं, संसारमां म्हारा आगल बोलनार कोण छे. इत्यादि मानसिक विनाशी संकल्पोमां सपडाइ प्राणिमात्र तेथी चणमात्र पण अलग थइ शकता नथी अने दुराग्रह, दंभ, लोभादिकमां पडी, मलेल मनुष्य जन्मने सफल करी शकता नथी. पूर्वे कुटुंब, विभव अने स्वजनादिकना संयोगजन्य सुखो यद्यपि अनन्तीवार जीव पामी चुक्यो छे; तथापि फरी मले छे त्यारे जाणे ए सुखो हमणाज मल्या छे एम मानवामां तल्लीन थइ जाय छे, परन्तु परमार्थ दृष्टिये जोतां तो सांसारिक दरेक सुखो दुःखरूपज छे. संसारवर्द्धक छे, कुगतिना कारण अने निजगुणोच्छेदक छे. आ कल्पित विषयसुखोमां गोता खातां अनन्ता कालचक्र व्यतीत थइ गया. पण अत्यार सुधी तृप्ति मलेल नथी अने आगल मलवानी आशा पण नथी माटे मिथ्या आशा छोडी धर्मध्यानमां तत्पर रहेवुं एज उभयलोकमां हितकर मार्ग छे.

मोहनीयकर्मनी अट्ठावीश प्रकृतियोमांथी ज्यारे अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार प्रकृतियोनो समूल क्षय थाय त्यारे क्षायक सम्यक्त्व, क्षयोपशम थाय त्यारे क्षायोपशमिक सम्यक्त्व अने उपशम थाय, त्यारे उपशम सम्यक्त्व थाय छे. आ त्रणमांथी कोइएक सम्यक्त्व जीवने मले त्यारे जिनेन्द्रभाषित शुद्ध धर्म मल्यो एम कही शकाय अने तेना मलवाथी जीवोने स्वयमेव विचारो उत्पन्न थई जाय छे के सांसारिक विषय सुख अनित्य छे, आ पार्थिव शरीर क्षणभंगुर छे. भोग रोगना घर छे, स्वजनादिकनो समागम पंखियोनो मेलो छे. संसारमां सकर्मीजीवो अजर अमर रहेवाना नथी. एक दिवसे मोतनो डंको तो वागवानोज छे. माटे काल ऊपर भरोसो न करतां जे कांइ शुभकृत्य करवानुं छे ते त्वराथी करी लऊं तो सारुं. एवा सद्विचारो तेना मनोमंदिरमां उद्भवयाथी ते जीवो तप, जप, प्रतिक्रमण, पौषध, व्रत, नियम, पूजा, प्रभावना अने तीर्थयात्रा वगेरे शुभ कार्यो करी पोतानी आत्माने सफल बनाववा समर्थ थाय छे. अने तेवाज प्राणियो द्विविध (अन्तर्बाह्य) परिग्रहनो त्याग करी, संयम आदरी, सर्वमुखे मंगल गवरावी तथा पोतानी कीर्त्तिने अजर—अमर बनावी कृतकृत्य थाय छे.

आवा सत्यधर्म (सम्यक्त्व)नी प्राप्ति माटे ज्ञान—क्रिया युक्त निर्ग्रन्थ गुरुनो योग मले त्यारे तेमना मुखथी जिनेश्वरोना प्ररूपेलां के बहुश्रुताचार्योनां बनावेलां शास्त्रो श्रवण करवा जोइये अथवा पोते वांचतां आवडतां होय तो पोते वांचवा जोइये. कदाच सांसारिक धंधा (रोजगार)ना प्रपंचथी वधारे वांचवानो अवकाश न मलतो होय तो पण रात दिवसमां बे के चार घडी मुकरर करी, तेमां शास्त्र वाचन अवश्य करवुं जोइये. घरनी स्थिति सारी न होवाथी के कुटुंब परिपालनना प्रपंचथी प्रतिदिवस वांचन श्रवण न थइ शके तो पर्वतिथियोमां तेवो अभ्यास राखवो, तेम पण न बनी शके तो पूर्वकृत अशुभकर्मोना उदयने धिकारी अने आत्मगर्हा करीने पर्युषणापर्वना दिवसोमां तो आ कल्पसूत्रनो श्रवण वाचन अवश्य करवुंज जोइये. केमके आ सूत्रने पण भक्ति बहुमान पूर्वक सांभलवा के वांचवाथी ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय थाय छे. जेम जेम ते क्षय थतो जाय तेम तेम क्षयोपशमनी तारतम्यता थाय छे तेना श्रवण वाचनादि साधनो पण सुलभ थाय छे अने तेथी कालांतरे ज्ञानी थवानो संभव थाय ए निर्विवाद सिद्ध छे.

आ विषमकाल (पंचमारक)मां तो धर्मदेशक अने सत्यप्ररूपक निर्लोभी निर्ग्रन्थ मुनिवरोनी जोगवाइ मलवी बहु मुश्किल छे. अने केटलाक गामो के शहेरोमां तेवा मुनिवरोनो योग मले छे तो श्रद्धालु अने योग्य श्रोताओनी खामी दीठामां आवे छे. हालना समयमां घणा खरा जैनोनी वसतिवाला गामो एवा पण जोवामां आवे छे के ज्यां योग्य साधुओनी जोगवाइ अलग रही, परन्तु शिथिलाचारी नामधारी योग्य मर्यादित यतियोनो योग पण मलतो नथी. तेवा गामोमां जैनो पर्युषण जेवा पवित्र पर्वदिवसोमां कल्पसूत्र श्रवण के धार्मिक क्रियाओथी पण वंचित रहे छे. कोइ कोइ गामना भावुको—जैनो नकरो ठरावी पर्युषणापर्वना दिवसोमां यतियोने बोलावी कल्पसूत्र श्रवण अने धर्मक्रिया आचरण करे छे परन्तु गाडी वाडी अने लाडीना प्रेमी ते भाडेतु यति अनेक नखरा करी भावुकोने तंग करे छे तेथी भावुको यतियोनी फरीवार बोलाववानी इच्छा पण राखता नथी. केटलाक यतियो सरल अने शांत स्वभाववाला होय छे ते पोतानी पासे कल्पसूत्रनी टब्बावाली के बालावबोधवाली जेवी प्रति होय तेज वांचीने संभलावे छे अने तेवा संभलावनार यति पण दरेक गाममां नियमित आवता होता नथी. दरवर्षे बदलाता रहे छे. तेमज कल्पसूत्रनी प्रतियो पण सर्वे सरखी होती नथी. कोइ प्रतिमां वर्णन के कथाभाग विस्तारथी अने कोइमां संक्षेपथी लखेलुं होय छे. हवे एक वर्षे एक यति पासे संक्षिप्तवर्णन के कथावाली प्रति सांभलेली अने बीजा वर्षे बीजा यति पासे विस्तृत वर्णन के कथावाली कल्पसूत्रनी प्रति सांभलवामां आवी होय त्यारे श्रोताओने संशय उत्पन्न थाय छे के आमां तो अमुक अधिकार आव्यो

नहीं तेथी आ प्रति तो ठीक नथी. आवा अल्प बुद्धिवाला श्रोताओने माटे एकज प्रकारनो लखेल कल्पसूत्र वंचातो होय तो तेओने कोइ जातनो संशय उत्पन्न थइ शके नहीं. कोइ वृद्ध श्रावक के श्राविका उपाश्रयमां सांभळवा माटे आववा अशक्त होय अने तेओनी इच्छा कल्पसूत्र सांभळवानी थइ होय तो ते पोताना घरे वांची के वंचावी सांभळी लाभ लइ शके. तेमज कोइ माणस बहेरो होय ते बीजाओनो सांभळी न शके अने पोते वांचवा आवडतुं होय तो ते पण कल्पसूत्र वांची पर्वनी आराधना करीने लाभ लइ शके. छोटा छोटा गामडावाला जैनो के ज्यां साधु के यतिनो पण योग न मळी शके, ते वांची लाभ लइ शके. मालवा, मारवाड अने मेवाड देशना केटलाक गामोमां स्त्रियोने परदामां राखवानो रिवाज छे, परदानशीन स्त्रियो व्याख्यान सांभळवा पण न जइ शके एवो सज्जड प्रतिबंध छे तेओ जो भणेली होय तो पर्युषण जेवा पर्व दिवसोमां कल्पसूत्र पोताना घेर वांची शके, तेमज नवदीक्षित साध्वी बालावबोधमय कल्पसूत्र होय तो वांची संभळावी के पोते वांची शके इत्यादि अनेक कारणोने लक्ष्यमां राखी मालवा, मेवाड, मारवाड अने गुजरातना जैन-संघोए प्रार्थना करी के यद्यपि कल्पसूत्रना टब्बा अने ज्ञानविमलसूरि आदिना करेलां बालावबोध छे तथापि तेओमां केटलीक बाबतो न होवाथी के अधुरी रहेवाथी ते सौ कोइने सरखी रीते लाभ कारक थाय तेम नथी. केमके ' अधूरुं ज्ञान ते ज्ञान नहीं, अधूरो भण्यो ते भणेल नहीं, अधूरी रसवती ते रसोइ नहीं, अधूरो वृक्ष ते वृक्ष नहीं, अर्द्धपक्व फल ते स्वादिष्ट नहीं, तेथी संपूर्ण जोइये. ' माटे आप एवो कल्पसूत्रनो बालावबोध तैयार करवा कृपा करो के जेथी सौ कोई सरखी रीते लाभ प्राप्त करी शके.

श्रीसंघनी प्रार्थना ध्यानमां लइ प्राचीन भंडारोमांथी पुरातन लखेली कल्पसूत्रनी टीका, चूर्णी, निर्युक्ति, तेमज टब्बा अने भाषानी दस बार प्रति भेगी करीने आ बालावबोधनो आरंभ कर्यो अने ते गुरुदेवनी असीम कृपाथी विक्रम संवत् १९४० वैशाख वदि २ मंगलवारना दिवसे निर्विघ्न पूर्ण थयो. पूर्ण थतांज आहोर जालोर, गुडाबालोतरा, हरजी, शिवगंज, सियाणा, बागरा, भीनमाल, थराद, धानेरा, राजगढ, राजपुर, कूकसी, रतलाम, जावरा, मन्दसोर आदि गामोना संघे पोत पोताना माटे खास लहियाओने रोकी एक, या अधिक प्रतियो लखावी लीधी अने ते वांची सौ संघ सन्तुष्ट थयो. परन्तु प्रतियो लखाववामां अधिक खर्च बेसवाथी छोटा छोटा गामोना जैनो तेवी प्रतियो लखाववा अशक्त थया त्यारे श्रीसंघे विचार कर्यो के ' आ बालावबोध पुस्तकाकारे छपावी देवामां आवे तो तेनाथी तेवा जैनो पण लाभ लेवा समर्थ थइ शकशे. ' एम धारी मारवाड वगेरे देशोना श्रीसंघे खर्चानो प्रबन्ध करी निर्णयसागरप्रेस बम्बईमां आ कल्पसूत्र-बालावबोधनी बे हजार कोपी

छपावी प्रसिद्ध करी अने पुनः छपाववा संबंधी सर्वप्रकारनो हक्क सरकारना कायदा प्रमाणे संवत् १९४४, सन् १८८८, शालिवाहनशाके १८०९ मिति फाल्गुनशुदि ८ सोमवारे रजिस्टर करावी स्वाधीन राखवामां आव्यो.

छपाइ प्रसिद्ध थतां वारज आ ग्रंथनी बे हजार कोपी हाथोहाथ खपी गई ए एनी उत्तमता अने उपयोगितानो प्रत्यक्ष प्रमाण जाणवुं. आ प्रस्तावनामां आमां आवेला विषयोनो स्पष्टीकरण न करतां आना आरंभमां आपेल 'विषयप्रदर्शन' अने कल्प-सूत्र—पीठिका' वांचवा वाचकोने भलामण छे.

आ बालावबोधमां अनेक विषयो ऊपर कथाओ आपेली छे ते जुदी जुदी प्रतियो ऊपरथी उतारी लेवामां आवी छे. तेमां जो फार फेर जोवामां आवे तो तेथी संदिग्ध थवुं नहीं. कारण के ग्रन्थ कर्त्ताओए पोत पोतानी कृतियोमां कोई ठेकाणे संक्षेपथी तो कोइ ठेकाणे विस्तारथी कथाओ आलेखेल छे ए परिपाटी परंपरागत छे तेथी वाचनान्तरमां कोइ प्रकारनो फेरफार जणाय तो तेमां संदेह राखवो नहीं केमके शास्त्रवचनमां संदेह राखवाथी सम्यक्त्वनो नाश थाय छे. सूत्र वचन पण छे के 'संकाए सम्मत्तनासं.'

पर्युषणपर्व सर्व पर्वोमां श्रेष्ठ, महा मांगल्यकारी अने परमपवित्र छे. तेमां आरंभ समारंभना व्यापारोने छोडी अने प्रमादकथाओने देशवट्टो आपी धर्माराधन तथा कल्पसूत्र श्रवण के वांचनमां तल्लीन रहेवुं जोइये. एम कर्याथी ज आ पर्वनी आराधनानो वास्तविक फल हांसिल थाय छे. भला ! जे पर्वदिवसोमां परस्पर मैत्री भाव राखवुं, प्रतिक्षण धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करवी, दरेक काम करतां जयणा राखवी अने शांतमनथी महान् आदर्श आत्माओना चरित्र सांभलवा जोइये त्यां तेम न करतां जो परस्पर वैर विरोध वधारवामां आवे, प्रतिक्षण व्यर्थ वाक्युद्ध करवामां आवे, दरेक कार्यमां जयणाने देशवट्टो अपाय अने कलहकारी वातो संभलाय त्यारे पर्वाराधननो फल केवी रीते मली शके ?, एम करवाथी फलनी आशा तो दूर रही. परन्तु बमणा कर्म बंधाय छे. कहेलुं छे के 'पर्वदिवसोमां कलह—कंकासथी जे कर्म बंधाय छे ते अनेक जन्मो सुधी रोतां रोतां पण छूटी शकतां नथी.' कल्पसूत्रना अन्तभागमां स्पष्ट कहेवामां आव्युं छे के 'जो उवसमइ तस्स अत्थि आराहणा, जो न उवसमइ तस्स नत्थि आराहणा'—जे उपशम पामे छे तेने आराधना थाय छे. जे उपशम नथी पामतो तेने आराधना थती नथी. माटे जैनधर्मनो परम ध्येय जे उप-शम छे तेनो ज्यां सुधी आश्रय न लेवामां आवे त्यां सुधी तप, जप, आदि धर्मकृत्यो सफल थइ शकता नथी. चित्तमां विवेक अने श्रद्धा बन्नेने सरखुं स्थान आपी तथा

वैर विरोध जनक हिंसाथी छेटे रही पर्वाराधनमां मशगुल रहेवुं एज श्रेयस्कर मार्ग छे. अस्तु. हवे अन्तमां केटलीएक प्रासंगिक सूचनाओ सूचवी विरमिये छिये—

(१) वीतरागना वचन ऊपर दृढ श्रद्धा राखनार होय, शास्त्र वांचननी रुचिवालो होय, शास्त्रना मर्मने सारी रीते समजाववामां दक्ष होय, प्रतिक्रमणादि क्रिया करवा–कराववामां आलसु न होय अने शांत प्रकृतिवालो सहनशील होय तेज गृहस्थ वाचनविधि प्रमाणे आ बालावबोधने संभलाववानो अधिकारी छे.

(२) संभलावनार गृहस्थे सामायिक के पोसह लइ, ऊंचा आसने पुस्तक राखी, मुख आगल मुखवस्त्रिका राखी अने ' पुरिम-चरिमाणकप्पो ' आ मांगलिक गाथा नवकार पूर्वक बोलीने श्रोता-ओने वांची संभलाववुं. उघाडे मुखे के नीचे आसने पुस्तक राखी वाचवुं के संभलाववुं नहीं.

(३) सांभलनार श्रोताओए पण पुस्तक आगल दीवो, धूप अने गुंहलि करी, विनय बहुमान पूर्वक कोलाहल कर्या विना स्थिर चित्त राखीने कल्पसूत्र श्रवण करवुं अने सांभली रह्या पछी सूत्रपूजा अने जयारवथी सूत्रनो बहुमान करवो.

(४) श्रोताओनी सभामां जेटला दिवस कल्पसूत्र बालावबोध वांची संभलाववुं होय तेटला दिवस सुधी संभलावनारे सचित्ततुं त्याग करवुं, गरम जल पीवुं, भूमि ऊपर शयन करवुं, ब्रह्मचर्य पालवुं, कलह कंकासथी अलग रहेवुं, कोइने माठुं लागे तेवुं वचन बोलवुं नहीं, चलम के बीडी पान न करवुं, आत्माने संवर भावमां वर्त्ताववो अने ओछामां ओछुं बीयासण तप करवुं.

(५) अनिवार्य कारणोना लीधे, प्रथम संभलावनार एक बे दिवस वांची-वांचवुं छोडी दे अने तेना ठेकाणे बीजो संभलावनार

वांचवा बेसे तो तेने पण ऊपरनी (४ कलमना) नियम प्रमाणेज वर्त्ती वांची संभलाववुं जोइये, तेथी विपरीतपणे नहीं.

(६) सवारना सात वाग्याथी अग्यार वाग्या सुधी अने एक वाग्याथी साडा चार वाग्या सुधीनो टाइम कालवेला कहेवाय छे. बाकीनो टाइम अकाल वेला छे. माटे कल्पसूत्रबालावबोध काल वेलामां ज वांची संभलाववो, पण अकाल वेलामां वांचवु के संभलाववुं नहीं.

(७) पर्युषणपर्वना दिवसोमां कल्पसूत्रने वांचवानी एवी परिपाटी प्रचलित छे के अमावसना दिवसे पीठिका सहित पहेलुं अने बीजुं, एकमना दिवसे त्रीजुं अने चोथुं, बीजना दिवसे पांचमुं अने छट्ठुं, त्रीजना दिवसे सातमुं अने आठमुं तथा चोथना दिवसे नवमुं व्याख्यान वांची पूर्ण करवुं. परन्तु उक्त नियम प्रमाणे पांच दिवसमां पूर्ण न थइ शके तो आठ व्याख्यान तो अवश्य पूर्ण करवाज जोइये. अने नवमुं व्याख्यान पांचम के छट्ठना दिवसे पूर्ण करी देवामां आवे तो पण कांइ हरकत नथी.

(८) बीजाओने संभलाववुं न होय अने पोताने एकलानेज आ ग्रंथ वांचवुं होय तो पण भक्ति बहुमानथी पवित्र थई, मुख आगल मुखवस्त्रिका के आडो पल्लो राखी अने अकाल वेला टाली वांचवुं जोइये.

(९) आ ग्रन्थनी वाचना शुरु कर्या पछी अधुरी छोडवी नहीं. कारण के अधूरी वाचना छोडी देवाथी तेना साराऽसारनो पत्तो लागतो नथी अने ते अमंगलकर पण थाय छे. कोइ पण ग्रन्थ आदिथी अन्त सुधी वांचवा के सांभलवाथीज हितकर थाय छे अने तेमांथी अनेक बाबतो सीखवा योग्य मले छे. ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

ग्रन्थकर्त्ता ।

संस्कृत-प्राकृतभाषामय अनेक जैन-ग्रन्थ रत्नोना संशोधक अने प्रकाशक,

तथा हिन्दी साहित्यना चालीस ग्रन्थोना सारा सुलेखक

व्याख्यानवाचस्पत्युपाध्याय-



मुनिराज-श्रीयतीन्द्रविजयजी महाराज।

जन्म-१९४०,	लघुदीक्षा-१९५४,	बृहदीक्षा-१९५५,	उपाध्याय पद १९८०.
मु० धवलपुर.	मु खाचरोद.	मु० आहोर.	मु० जावरा.
(बुंदेलखंड)	(मालवा)	(मारवाड)	(मालवा)

मधुराऽतिप्रिया चैव, भारती यस्य शोभते।
स श्रीयतीन्द्रविजयो, जयतान्मुनिसत्तमः ॥ १ ॥

आनंद प्री. प्रेस—भावनगर.

श्री सद्गुरुभ्यो नमः।

ॐ णमो अरहो समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

जैनाचार्य श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज सङ्कलित—

श्री कल्पसूत्र–बालावबोध ।

ग्रन्थरचनानो हेतु कहे छेः—

श्रीजिनशासनने विषे सर्व पर्व मांहे शिरोमणि श्रीपर्युषण पर्व छे. ते पर्वना दिवसोमां नगर नगरने विषे कल्पसूत्र वंचाय छे; पण योग वहन करनारा साधु मुनिराजनेज सूत्र वांचवानो अधिकार श्रीतीर्थंकर भगवाने दीधो छे. बीजा कोइथी सूत्रनी व्याख्या थाय नहिं. माटे तेवा मुनिराजोनुं आगमन सर्वस्थले होतुं नथी तेथी जे गाममां साधुमहाराज विराजमान न होय ते गाम निवासी श्रावकोने कल्पसूत्र श्रवण करवानो अंतराय पडे छे. ते अंतराय दूर करवाने वास्ते जेम पूर्वाचार्योए लोकोपकारने अर्थे पूर्वे अनेक प्रकरणोनी रचना करेली छे तथा वर्त्तमान कालमां पण करे छे ते प्रकरण पण सूत्रोना अर्थ रूपज छे अने तेनुं पठन पाठन चतुर्विध श्रीसंघ करे छे तेम हुं पण श्रीकल्पसूत्रना बालावबोधने प्रकरण रूपे बनावुं छुं के जे ग्रंथ साधु, साध्वी श्रावक अने श्राविका मली चारे प्रकारना श्री संघने वांचवाना उपयोगमां आवे. केमके ए बालावबोध पण सूत्रनो अर्थ रूप होवाथी प्रकरण सदृश समजवो.

श्री पर्युषण पर्वमां ग्रन्थ वांचवानी विधिः—

जे शहरमां श्रीमुनिमहाराज चोमासुं रह्या होय अने ते गामना

श्रावको एकठा थइ साधुजी पासेथी सूत्रनी पोथी मांगी लइ आवीने एक श्रावकना घरमां राखे, अने रात्रि जागरण करे. पछी बीजे दिवसे श्रावक श्राविका एकठां थइने एक कुंआरा छोकराने अबोट वस्त्र पहेरावी हाथी ऊपर बेसाडीने अथवा अश्वप्रमुख कोइ उत्तम वाहन ऊपर बेसाडी ते पोथी एक थालमां राखी ते थाल ते पेला छोकराना हाथमां आपी सर्वने बदाम, शाकर पतासा आदिकनी प्रभावना करी वाजते गाजते महोटा महोत्सव पूर्वक उपासरे आवीने ते पुस्तक गुरुना हाथमां आपे. गुरु वाचना करे ते सर्व श्रीसंघ सांभले अने गुरु आगल श्रीफलादिक मूके, अथवा आ पुस्तक जे श्रावकादिकनी पासे होय तेनी पासेथी मांगी लावीने पंचे ठरावेला बीजा कोइ श्रावकने घेर लइ जइ त्यां रात्रि जागरण करी पछी बीजे दिवसे सर्व संघ मली पूर्वोक्त रीते महोटा महोत्सव पूर्वक पौषधशालामां, किंवा उपाश्रयमां, अथवा कोइ श्रावकने घेर ज्यां सामायिकादिक करवानी कोइ स्वच्छ निर्मल जगा होय ते स्थानके, अथवा बीजी कोइ जीवादि उपद्रव रहित जगा होय, अथवा ज्यां सर्व संघे मली वांचवानो विचार कर्यो होय तेवी जगाए आवीने ज्ञानभक्ति पूर्वक घणाज यत्नथी सर्व प्रकारनी आशातना टाली पोथी कोइ विवेकी सुज्ञ श्रावकना हाथमां आपीने वंचाववी अने बीजा सर्वजनोए प्रमाद, निद्रा, विकथादिकनो त्याग करी विनयपूर्वक त्यां बेसीने एकाग्र चित्ते सांभलवी.

श्री पर्युषण पर्व, कल्पसूत्र अने श्रमणसंघनुं महत्त्व कहे छेः—

नैतत्पर्वसमं पर्व, न च कल्पसमं श्रुतम् ।
न धार्मिकसमः संघ—स्त्रिरत्नानि जगत्त्रये ॥ १ ॥

"आ जगतने विषे दीपमालिकादिक अनेक प्रकारना लौकिक पर्व छे तथा चोमासी, श्रीतीर्थंकर देवना पांच कल्याणक, अष्टमी, पाक्षिक अने तीर्थ यात्रादिक अनेक पुण्य पर्व छे, ते सर्व लोकोत्तर उत्तम पर्व

छे. ए सहु पर्वने विषे शिरोमणि चिंतामणि रत्न सदृश ज्येष्ट एवुं सांवत्सरिक पर्व छे. जेम सांवत्सारिक पर्व समान बीजुं कोई पर्व नथी, तेम कल्पसूत्र समान बीजुं कोइ सूत्र पण नथी. तथा चतुर्विध श्रीसंघ मांहे श्रीसाधु मुनिराजना संघ समुदाय समान बीजो संघ पण कोइ नथी, एटले सर्व पर्वमांहे सर्वोत्तम पर्युषण पर्व छे. तेने विषे कल्पसूत्र वंचाय ते पण एकादशांगादि सर्व सूत्रमां उत्तम छे तेम कल्पसूत्रना वांचनार साधु मुनिराज ते पण चारे प्रकारना संघमांहे उत्तम छे. एम ए जगतमां त्रणे साक्षात् रत्न समान जाणवा.

व्याख्या करनार पोतानी लघुता देखाडे छेः—

व्याख्या करनार कहे छे के हुं मंदमति, मूर्ख, अज्ञानी, महा जड छतां पण श्रीसंघनी समक्ष दक्ष थइने आ कल्पसूत्रनी व्याख्या करवानुं साहस करुं छुं–व्याख्या करवाने उजमाल थयो छुं. ते सर्व श्रीसद्गुरुनो प्रसाद अने चतुर्विध श्रीसंघनुं सांनिध्यपणुं जाणवुं. जेम अन्य शासनमां कहेलुं छे के श्रीरामचंद्रनी सेनाना वांदराओए महोटा महोटा पाषाण लइने समुद्रमां नांख्या ते पथरा पोते पण तर्या अने लोकोने पण तार्या ते कांइ पाषाणनो, समुद्रनो अने वांदराओनो प्रताप जाणवो नहीं परंतु ते प्रताप श्रीरामचंद्रजीनो जाणवो; केमके पत्थरनो तो एवो स्वभाव छे के पोते पण बूडे अने आश्रय लेनारने पण बूडाडे; तेम हुं पण पत्थर सदृश छतां श्रीकल्पसूत्रनी व्याख्या करुं छुं तेमां म्हारो कांइ पण गुण जाणवो नहीं; तेमज पोषधशाला अथवा पुस्तकना पानांनो पण कांइ गुण जाणवो नहीं. ए गुण मात्र श्री सद्गुरु अने श्रीसंघनो ज जाणवो तथा जेम कोइ भरहभावनी जाणवावाली गीतकला अने नृत्यकलामां विशारद, छप्पन्न कोडी ताल–भरह शास्त्रनी पारग एवी नर्त्तकी होय ते गीत–गान करते, मृदंगध्वनि वाजते, नृत्य करे; अनेक चक्र–गोला फेरवे अने हाव भावथी लोकोना मन रंजन करे,

तेमज कोई गामडीयानी गामडियात एक घेली स्त्री होय ते पण तालोटाना छंद पडते थके नृत्य करे तथा जेम कोइ महा गंभीर समुद्र होय ते पण लहेरो आपे अने कोइक गामनुं न्हानुं तलाव होय ते पण वर्षाऋतुमां पाणीथी पूरण भरायुं थकुं लहेरो आपे तेने पण कोई निवारे नहीं तथा जेम शुद्ध दूध मांहे अखंड चोखा नाखीने खीर रांधीये ते पण उभराय छे अने कूशकानी राबडी रांधीये ते पण उभराय छे; तेमां पण कांइ आश्चर्य नथी. तेम जे एकज स्थानके एकज क्षेत्रे अनेक गणधर, संपूर्ण श्रुतधर, महाशास्त्रना वेत्ता, नवरसावतार, महा व्याख्याननां करनारा व्याख्या करे अने हुं पण व्याख्या करूं तेमां अरस-परस एटलो फेर जाणवो एटले भरहभेदने जाणनारी नर्त्तकी तथा समुद्र अने शुद्ध खीरना सदृश ते गणधरादिक जाणवा अने गामडियात तथा गामनुं तलाव अने कूशकानी राबडी समान मन्हें जाणवो. ते हुं श्रीसद्गुरु अने श्रीसंघना प्रसादथी माननीय थयो छुं. जेम कोई पाषाण जड छतां तथा ज्ञान विवर्जित छतां पण तेनी ज्यारे प्रतिमाजी नीपजावीये; त्यारे ते सर्व जनोने माननीय पूजनीय थाय तेनी पेरे श्रीगुरु तथा श्रीसंघना प्रसादथी हुं पण माननीय थयो छुं.

श्रीदेवगुरु नमस्कार-लक्षण-मंगलाचरणम् :—

नत्वा श्रीमन्महावीरं, गौतमादिगणाधिपान् ।
कुर्वेऽहं कल्पसूत्रस्य, व्याख्यां बालोपकारिणीम् ॥१॥

प्रथम श्रीगुरु महाराजनो आदेश लइने जे क्षेत्रमां साधु चोमासुं रहे त्यां चोमासामां भाद्रपद मासने विषे पर्युषण पर्व आवे थके मांगलिक निमित्ते पांच दिवस पर्यंत श्रीकल्पसूत्र वांचे ते कल्प एवुं नाम आचारनुं छे ते साधुनो आचार दश प्रकारनो छे. यदुक्तम्—

आचेलुक्कुद्देसिय, सज्जायर-रायपिंड-किइकम्मे ।
वय-जिट्ठ-पडिक्कमणे, मासं पज्जोसवणा कप्पे ॥१॥

प्रथम अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो सय्यातर, चोथो राजपिंड, पांचमो कृतिकर्म, छठ्ठो व्रत, सातमो ज्येष्ठ, आठमो प्रतिक्रमण, नवमो मासकल्प अने दशमो पर्युषणकल्प; ए दश प्रकारना कल्प एटले आचारना नाम जाणवा.

१ प्रथम अचेलक कल्प कहे छे—जे वस्त्र नहीं राखवा तेने अचलक कहीये. त्यां श्रीऋषभदेव भगवान तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधु तो श्वेत मानोपेत जीर्णप्राय वस्त्रने धारण करे. तेमां डुंटीथी चार आंगुल नीचो अने गुदाथी चार आंगुल उंचो एवो साडा त्रण हाथनो चोलपट्टो राखे तथा साडाचार हाथनी चादर राखे तथा पोताना हाथथी एक वेंत ने चार आंगुलनी मुहपत्ति राखे एम अर्द्ध शरीर उघाडुं अने अर्ध शरीर ढांक्युं राखे. एवी रीते पहेरेलां वस्त्र तें अणपहेर्यां जेवां समजवां. माटे तेने अचेलक कहीये. ते ऊपर दृष्टांत कहे छेः— जेम कोई एक पुरुषे धोतीया बनावनारने कह्युं के म्हारा धोतीयां ताकीदथी आप, केमके हुं नागो फरुं छुं, एवुं वचन व्यवहारथी कह्युं. हवे ते पुरुषे जूना वस्त्रनुं धोतीयुं पहेर्युं छे तो पण नागो फरुं छुं एम कह्युं. वली बीजुं दृष्टांत कहे छेः—जेम कोइएक पुरुष पोतीयुं पहेरीने नदी ऊतर्यो तेने कोई एके पूछ्युं के भाई ! तुं नदी शी रीते ऊतर्यो ? तेवारे तेणे जवाब आप्यो के हुं नागो थइने नदी ऊतर्यो. वली त्रीजुं दृष्टांत कहे छेः—जेम कोईएक डोसी जूना वस्त्र पहेरी वणकरना पासे जइ कहेवा लागी के अरे भाई ! म्हारां वस्त्र तैयार थयां होय तो मने आप, हुं नागी फरुं छुं. एवी रीते साधुने पण जीर्णप्राय जूना श्वेत मानोपेत वस्त्र धारण करते छते पण वस्त्र रहित अचेलकज कहीये, तेम आ चोवीसीमां श्रीऋषभ देव अने श्रीमहावीरने जाजेरा एक वर्ष पछी इंद्रदत्त वस्त्रने अपगमे जावज्जीव पर्यंत अचेलकपणुं हतुं अने चोवीसे तीर्थंकर आश्रयी तो दीक्षा लेती वखते इंद्र महाराज तेमना खंभा

ऊपर देवदुष्य वस्त्र मूके ते ज्यां सुधी खंभा ऊपर रहे त्यां सुधी सचेलक कहीये अने पडी गया पछी अचेलक कहीये तथा आ चोवीसीमां बीजा श्रीअजितनाथ भगवानथी मांडीने श्री पार्श्वनाथ भगवान पर्यंतना बावीश तीर्थंकर मध्यना कहेवाय. तेने देवदुष्य वस्त्र शेष बे घडी आयुष्य थाकतां सुधी रहे छे. माटे तेने सचेलक (वस्त्रसहित) कहीये तथा ए बावीश तीर्थंकरना साधु पण ऋजु एटले शुभ मनवाळा सरल अने दक्ष एटले पंडित (घणा डाह्या चतुर) होय माटे महोटा मूलनां पांच रंगवालां मानोपेत रहित एवां वस्त्र राखे तेथी एने सचेलक कहीये; केमके एने ए अचेलक कल्पनी कांइ मर्यादा नथी माटे एमने ए कल्प अनियत छे अने पहेला तथा छेल्ला तीर्थंकरना साधु साध्वीने ए कल्प नियत छे एटले निश्चय छे.

२ बीजो उद्देशिक कल्प कहे छे–जे साधु अथवा साधवीने उद्देशीने कर्यो एवो जे आहारादिक तेने उद्देशिक कहीये. त्यां मध्यना बावीश तीर्थंकरना वखतमां जे साधु अथवा साध्वीने निमित्ते कोइ गृहस्थे भात पाणी, औषध, भैषज्य, वस्त्र, पात्र निपजाव्यां होय ते तेहज साधुने लेवा न कल्पे पण शेष बीजा साधुने ते आहारादिक लेवा कल्पे, केमके तेने आधाकर्मादिक दोष न लागे अने पहेला तथा छहेला तीर्थंकरना शासनने विषे तो एक साधु अथवा एक साध्वीने अर्थे जे आधाकर्मिक आहारादि निपजाव्यां होय ते सर्वथा प्रकारे कोइ पण साधुने अथवा साध्वीने लेवा कल्पे नहीं.

३ त्रीजो सय्यातरपिंड कल्प कहे छे–जे उपाश्रयनो धणी होय तेने सय्यातर कहीये अथवा जे साधुने रहेवानी (उतरवानी) जगा आपे एटले जेनी आज्ञा लइने साधु जे जग्यामां रह्या होय ते घरना स्वामीने सय्यातर कहीये. तेना घरनो पिंड जे आहारादिक बार वस्तु ते सर्व तीर्थंकरना साधुओने वहोरवी कल्पे नहीं. ते बार वस्तुना नाम कहे छेः–१ आहार, २ पाणी, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ कपडा, ६ पात्रा, ७ कंबल, ८

ओघो, ९ सूई, १० पिप्पलक, ११ नख ऊतारवानी नेरणी, १२ कानमांथी मेल कहाडवानी चाढुइ, ए बार चीज तथा बीजा पण छरी, कातरणी अने सरपला प्रमुख ते कोइ पण साधुने लेवां कल्पे नहीं. ए सय्यातर पिंड लेवामां अनेषणीय अशुद्ध दोषनो संभव थाय. प्रसंगादि महोटा दोष ऊपजे; केमके साधुना राग करी पारणा, अने उत्तरपारणाने अर्थे वारंवार जातां आवतां अशुद्ध आहारादिके करीने ते गृहस्थ दहिं दूध प्रमुख स्निग्ध वस्तु पण आपे तथा रसगृद्धि थाय अने मिष्टान्नना लोभे तेनुं घर न मूके. कदापि वेगलो बीजे गामे गयो होय तो पण त्यांथी मिष्टान्नने लोभे फरी आवे. वली वस्त्रादिक माग्यां थकां ते गृहस्थ तरत ज आपे, तेणे करी उपधिनी वृद्धि थाय. वली ते सय्यातरनो पिंड लेतां थकां गाममां फरवाथी छूटे तेथी ते साधुनुं शरीर जाडुं थाय. वली ते सय्यातरनो पिंड लेवाथी कदाच गृहस्थने एवो पण भय उपजे के जे उपाश्रय करावे के आपे तेने आहारादिक पण आपवा पडे तेने लीधे कोइ उपाश्रय पण न करावे अने रहेवाने कोई जगा पण आपे नहीं तेथी आहार शिष्यादिकनो मलवो दुर्लभ थइ पडे. इत्यादिक दोषना प्रसंगथी सय्यातरना घरनो आहार लेवो सर्व तीर्थंकरे निषेध्यो छे. कदाचित् कोई कारणे सय्यातरनो पिंड लेवो पडे तो रात्रिना चार पहोर क्रिया संज्झाय करतो जागरण करे पण निद्रा न करे अने प्रभातनुं पडिक्कमणुं बीजे स्थानके जइ करे तो उपाश्रयनो धणी सय्यातर न थाय अने जो रात्रे निद्रा करे अने प्रभातनुं पडिक्कमणुं बीजे स्थानके करे तो बेहु सय्यातर थाय एटले बेहु स्थानक आहारादि लेवा न कल्पे. तथा १ तृण २ माटीनुं ढेफुं, ३ भस्म, (राख) ४ मात्रानुं ठाम, ५ बाजोट, ६ पाट—पाटला, ७ सय्या, ८ संथारो, ९ लेप प्रमुख वस्तु, १० उपधि सहित चेलो एटले वस्त्रादिक सहित चेलो. ए दश वस्तु सय्यातरना घरनी लेवी कल्पे. ए कल्प सर्व तीर्थंकरोना साधुने निश्चय होय माटे एने नियत कल्प कहीये।

४ चोथो राजपिंड कल्प कहे छे-जे म्होटो छत्रपति चक्रवर्त्यादिक राजा होय अने जेने सेनापति, पुरोहित, श्रेष्ठि, प्रधान अने सार्थवाह ए पांच वानां होय, ए पांचनी साथे राज्य करे तेने राजा कहीये. तेना घरनो आहारादिक पिंड पहेला तीर्थंकरना साधु साध्वीने अने छहेला श्रीवीर भगवानना साधु साध्वीने लेवो कल्पे नहीं. केमके राजद्वारमां घणा लोक मले, त्यां घणो वखत लागे तथा कोइक अमंगालिक समजे अने त्यां हाथी, घोडा, रथ अने स्त्री प्रमुखने वारंवार जोतां थकां राग उपजे, वली कोइक चोर कहे, कोइक हेरू पण कहे इत्यादिक अनेक दोष उपजे. वली लोक निंदा करे के जुओ! आ साधु थइने राज्यपिंड लीये छे, अन्य दर्शनीयोना शास्त्रमां पण राज्यपिंड निवार्यो छे माटे पहेला अने छहेला तीर्थंकरना साधुओए राज्यपिंड न लेवो अने बावीश तीर्थंकरना साधु तो ऋजु अने पंडित छे माटे राजाना घरनो निर्दोष आहार जाणे तेवारे आहार लीये अने सदोष जाणे तो न लीये माटे तेमने ए कल्पनी मर्यादा नथी.

५ पांचमो कृतिकर्म कल्प कहे छे-जे वांदवुं तेने कृतिकर्म कहिये. ते बे प्रकारे छे. एक तो ऊभुं थावुं, बीजुं द्वादशावर्त्त वांदणे वांदवुं. तेमां श्रीजिनशासनने विषे सर्व तीर्थंकरोना साधुओनी एवी मर्यादा छे के जेणे पहेली दीक्षा लीधी होय ते साधुने पाछलथी दीक्षा लेनारो साधु वांदे पण बाप दीकरो अथवा राजा अने प्रधान इत्यादिक न्हानो म्होटो जुवे नहीं; परंतु दीक्षा जो दीकरे प्रथम लीधी होय अने पिताये पाछलथी लीधी होय तो पिता पुत्रने वंदन करे एमज राजा पोताना प्रधानने पण वंदन करे तथा सर्व साध्वीयो तो पुरुषोत्तम धर्म जाणीने सर्वे साधुने वांदे परंतु न्हानो म्होटो जुवे नहीं. जो सो (१००) वर्षनी दीक्षित साध्वी होय अने एक दिवसनो दीक्षित साधु होय तो पण ते साध्वी साधुने सामी जइने हे पूज्य! पधारो, एवी रीते विनयपूर्वक खमासमणा दइने वांदे, केमके धर्ममांहे मुख्य प्रधानपणुं ते पुरुषनेज कह्युं छे, माटे पुरुष अधिक छे तेथी

पुरुषे स्त्रीने वंदन करवुं नहीं, जो साधु थईने साध्वीने वांदे तो घणा दोष प्राप्त थाय, केम के स्त्रीजाति तुच्छ छे माटे अहंकार करे तो तेथी ते नीच गोत्रने बांधे, वली लोक निंदा करे माटे पुरुषे स्त्रीने वंदन करवुं नहीं ए कल्प सर्व चोवीशे तीर्थंकरोना साधु आश्रयी नियत जाणवो.

६ छट्ठो व्रतकल्प कहे छे :—प्राणातिपातादिक पांच महाव्रत छे. एटले प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन अने परिग्रह. ए पांचथी विरमवुं ते पांच महाव्रत कहीये. तेमां श्री ऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधु तथा साध्वीने तो तादृश जाणपणाना अभावथी पांचे महाव्रत व्यवहारथी छे अने मध्य बावीश जिनना वाराना साधु तो परिग्रह व्रतमांहे परिगृहित स्त्रीभोगनुं पच्चक्खाण जाणे छे तथा त्रीजा अदत्तादान व्रत मांहे अपरिगृहित स्त्रीभोगनुं पच्चक्खाण जाणे छे एटले स्त्रीने परिग्रह रूप गणीने पांचमा परिग्रह व्रत साथे ज लीये छे, केमके ज्यां स्त्री त्यां परिग्रह अने ज्यां परिग्रह त्यां स्त्री होय छे माटे बावीश तीर्थंकरना साधुने चोथुं मैथुन विरमण व्रत वर्जीने शेष चार महाव्रत जाणवा अथवा श्रीऋषभदेव अने महावीरना तीर्थे रात्रि भोजन व्रत मूल गुण मांहे गणे छे तेथी रात्रिभोजन विरमण व्रत साथे गणीये तो साधुने छ व्रत थाय अने बावीशजिनना तीर्थे तो रात्रिभोजन व्रत उत्तर गुणमां गणे छे माटे चारज व्रत जाणवा.

७ सातमो ज्येष्ठ कल्प कहे छेः—ज्येष्ठ एवुं म्होटानुं नाम छे. त्यां श्रीऋषभदेव अने महावीरना साधुओने तो म्होटी दीक्षा दीधा पछी लोड–वडाइ गणाय छे. माटे जेणे म्होटी दीक्षा पहेली लीधी होय ते म्होटो गणाय अने जेणे न्हानी दीक्षा पहेली लीधी होय पण म्होटी दीक्षा पछी लीये तो ते आगलानी अपेक्षाये लघु गणाय. जेम पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने चाकर तथा माता अने दीकरी एम अनुक्रमे दीक्षा लीये. पछी उठामणा आवे म्होटी

दीक्षा लीये तेवारे मुख्य प्रकारे तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार म्होटां छे ते भणवामां जो अधिक थाय तो तेहज म्होटां कहेवाय. नहीं तो पुत्र, प्रधान, चाकर अने दीकरी ए चार न्हानां छे परंतु तें भणवामां अधिक थइ जाय तो गुरु तेमने म्होटी दीक्षा आपी म्होटां करे अने बावीश तीर्थंकरना साधुने तो ए मर्यादा नथी; केमके ते तो बधाए प्रवीण डाह्या होय छे तेथी तरत ज भणी लीये छे माटे ते दीक्षाना दीवसथीज वृद्ध अने लघु गणाय छे तेथी तेमनामां प्रथम जे दीक्षा लीये तेहज म्होटो गणाय. जो पिता अने पुत्र तथा राजा अने प्रधान तथा शेठ अने वाणोतर तथा माता अने दीकरी ए सहु साथे दीक्षा लीये तो पिता, राजा, शेठ अने माता ए चार लोक रीतीथी म्होटा गणाय तथा पुत्र, प्रधान, वाणोतर अने दीकरी ए चारे लघु गणाय तेथी म्होटी दीक्षाने योग्य प्रधान अने पुत्र होय तो राजाने तथा पिताने पूछीने म्होटी दीक्षा आपे तेथी अप्रीति न उपजे ए रीते ए अनियत कल्प छे.

८ आठमो प्रतिक्रमण कल्प कहे छे—प्रतिक्रमण जे आवश्यकनुं करवुं ते जाणवुं. त्यां प्रथम अने चरम जिनना वारामां तो साधुने अतिचार दोष लागे किंवा न लागे तो पण निश्चयथी दैवसिकादिक पांचे प्रकारनां पडिक्कमणां करे अने बावीश तीर्थंकरना साधु तो जो पाप लाग्युं छे एवुं जाणे तोज दैवसिक अथवा राइ पडिक्कमणुं सांजे अथवा सवारे करे अने पाप लाग्युं न जाणे तो ते पण न करे. बाकी पाक्षिक चोमासी अने सांवत्सरिक ए त्रणे पडिक्कमणां तो बावीश जिनना वारामां होयज नहीं एम ए पण अनियत कल्प छे.

९ नवमो मासकल्प कहे छे—पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधु एक गाममां एक मास पर्यंत रहे उपरांत रहे नहीं. मात्र चोमासाना चार महीना पर्यंत एक गाममां रहे; परंतु अन्य दिवसोमां एक महीनाथी

उपरांत रहे तो घणा दोषोनो संभव थाय. एक तो गृहस्थ साथे प्रतिबंध थाय, हलवापणुं पामे, लोकनो उपकार करी शके नहीं, देश विदेशनुं ज्ञान न थाय, ज्ञाननुं आराधन न थाय माटे एक मास उपरांत रहेवानी साधुने आज्ञा नथी. कदाचित् दुर्भिक्षादिक कारणे रहेवुं पडे अथवा विहार करवाने असमर्थ होय तो पण वस्ति पालटण करे—पाडो पलटावे, घर पलटावे अने छेवट संथारानी भूमि पालटण करीने भावथी पण मास कल्प करे. जे माटे लोकमां पण कहेवत छे के 'स्त्री पीयर नर सासरे, संजमियां थिरवास। एतां होय अलखामणां, जो मांडे घरवास ॥ १ ॥' अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुओ तो विहार करवाने जो सामर्थ्यवान होय तो पण ते ऋजु अने पंडित छे माटे तेमने मासकल्पनो कांइ नियम नथी. जो दोष नहीं लागतो होय अने लाभ जाणे तो देसूणा पूर्वकोडी वर्ष पर्यंत पण एकज क्षेत्रमां एकज स्थानके रही जाय माटे ए अनियत कल्प छे.

१० दशमो पर्युषणा कल्प कहे छेः—जे एक जगाये रहेवुं तेने पर्युषणा कहे छे. ते पर्युषण बे प्रकारनां छे. एक तो गृहस्थ जाणे अने बीजो गृहस्थ न जाणे. ज्यां पर्युषण पर्वने पडिक्कमतां थकां साधुने लोक पूछे तेवारे रहेवाने विषे वर्त्तमान योग्य कहे पण पर्युषणा पर्व पडिक्कम्या पछी तो कार्त्तिकी पूनम पर्यंत रहेवानुं निश्चयथी ज कहे. त्यां गृहस्थनी आज्ञा थकी पांच दिवस यावत् रहेवुं. एम पांच पांच दिवस रहेतां पचास दिवसे पर्युषण पर्व करे. तेमां कल्पसूत्र गृहस्थ आगल वांचे पछी सीतेर दिवस निश्चयथी रहे एटले जे गृहस्थ जाणे ते तो भाद्रवा शुदि पांचमथी मांडीने कार्त्तिक शुदि पूर्णिमा सुधी रहे अने बीजो जे गृहस्थ न जाणे ते तो आषाढ शुदि पूर्णिमाथी मांडीने भादरवा शुदि पंचमी सुधी जाणवुं, केमके कदापि कोइ गृहस्थ साधुने पूछे के आप चोमासुं रह्या ? तेवारे साधु कहे के जेवी खेत्र फरसना अथवा पांच दिन छीए

एवो जवाब आपे तेथी आगलना दिवस गृहस्थ न जाणे अने पर्युषण कर्यां पछी तो अवश्य त्यां ज रहे माटे ते गृहस्थ जाणी शके ते जघन्यथी सीतेर दिवस अने उत्कृष्ट छ महीनानां पर्युषण जाणवां. ए कल्प श्रीऋषभदेव अने श्रीमहावीरना साधुओने निश्चयथी जाणवो अने बावीश तीर्थंकरना साधुओने निश्चय नहीं.

ए रीते दश कल्प कह्या. ते दशे कल्प श्रीऋषभदेव तथा श्रीमहावीर स्वामीना साधुओने निश्चयथी जाणवा अने मध्य बावीश तीर्थंकरना साधुओने तो ए दशमांथी एक सय्यातर, बीजो चार महाव्रत, त्रीजो ज्येष्ट अने चोथो कृतिकर्म एटले वांदणां. ए चार कल्प निश्चयथी होय छे अने एक अचेलक, बीजो उद्देशिक, त्रीजो प्रतिक्रमण, चोथो राज्यपिंड, पांचमो मासकल्प अने छट्ठो पर्युषण कल्प ए छ कल्पनो निश्चय नहीं. जेवी मर्यादा बावीश तीर्थंकरोना साधुओनी कही तेवीज मर्यादा महाविदेह खेत्रना तीर्थंकरोना साधु साध्विओनी पण जाणवी. इहां कोई कहे के साधु तो सर्वे सरखाज छे तो तेना आचारमां भेद केम पड्यो ? तेनो उत्तर कहीये छिये—श्रीऋषभदेवजीना वारे माणस ऋजु अने जड होय छे, तेमने धर्म समजाववो घणो कठण थाय छे तथा श्रीमहावीर भगवाननी वारे माणस वक्र अने जड होय छे, तेमने धर्म पालवो घणो दुर्लभ थइ पडे छे अने मध्यना बावीश तीर्थंकरना वारे माणस बधा ऋजु अने प्राज्ञ होय छे. माटे तेमने धर्म समजाववो पण सुलभ होय छे अने पालवुं पण सोहेलुं होय छे. एवी रीते मनुष्योना परिणाममां भेद होवाथी कल्पमां पण भेद थया छे एम जाणवुं, परंतु परमार्थथी भेद कांइ पण नथी मात्र पुरुषोना परिणामना भेद छे.

प्रथम तीर्थंकरना साधु जे ऋजु अने जड होय ते दृष्टांतथी समजावीये छीए—श्रीऋषभदेवना तीर्थमां कोइएक आचार्यनो शिष्य स्थंडिल

भूमिकाए गयो ते घणो वखत लगाडीने पाछो आव्यो तेने गुरुये पूछ्युं अरे ! शिष्य ! तने आटलो वखत केम लाग्यो ? त्यारे ते ऋजुपणाथी बोल्यो के स्वामिन् ! नाटकिया--लोक रमत करता हता ते जोवाने ऊभो रह्यो हतो तेथी वधारे वखत लाग्यो. ते सांभली गुरु बोल्याः--हे वत्स ! आपणे साधु थइने नाटक जोवा ऊभा रहेवुं नहीं, एथी पाप लागे छे. माटे आपणने ए अकल्पनीय छे. तेवारे शिष्ये 'तहत्ति' कही एटले जेम तमे कहो छो ते प्रमाण छे, आज पछी जोइश नहीं एम कह्युं. फरी कोइक दिवसे तेहज शिष्य बाहिर भूमि गयो हतो ते घणो वखत लगाडीने पाछो आव्यो जेथी गुरुये पूछ्युं के आटलो वखत केम लाग्यो ? तेवारे ते शिष्य बोल्यो के हे स्वामिन् ! रस्तामां नाटकणी नाचती हती ते जोवाने ऊभो रह्यो हतो तेने लीधे वखत थइ गयो. तेवारे गुरु बोल्या के तमने पूर्वे मनाई करी हती तेम छतां केम जोवाने ऊभा रह्या ? तेवारे ते शिष्य जड पणाथी एटले मूर्खपणाथी बोल्यो के महाराज ! तमे तो नाटकिया जोवाने मनाइ करी हती पण नाटकणी जोवाने तो मनाइ करी हती नहीं. तेवारे गुरु बोल्या--हे महाभाग्य ! नाटकणी तो वली नाटकिया करतां पण अधिक रागनुं कारण छे माटे ते तो सर्वथा नहींज जोवी. ते सांभली शिष्य बोल्यो--के स्वामिन् ! मन्हें प्रथम एवी समज पडी हती नहीं. हवे हुं क्यारे पण जोइश नहीं. इहां ऋजुपणाथी सत्य बोल्यो अने जडपणाथी जो नाटकिया वर्ज्या तो नाटकणी अवश्य वर्जवी जोइए एटलुं समज्यो नहीं. १

वली बीजुं दृष्टांत कहे छे--जेम कोइएक कोंकणादेशना वाणीयाए वृद्धपणामां कुटुंब परिवार छोडी धर्म पामी वैराग्यवान थइने स्थविर पासे दीक्षा लीधी तेने कोंकणा साधु कहीने सर्व बोलावे. एक दिवस ते थंडिल थकी आवी इरियापथिका क्रिया पडिक्कमवा लाग्यो, तेमां काउसग्ग पारतां घणो वखत लाग्यो, तेवारे गुरुए पूछ्युं के भो कोंकणिक साधु ! तमोने आटलो वखत काउस्सग्गमां केम लाग्यो ? ते सांभळी ऋजुपणे बोल्यो के स्वामीन् ! म्हें आज जीवदया चिंतवी, गुरुए पूछ्युं तमे केवा प्रकारनी जीवदया चिंतवी ? तेवारे साधु बोल्यो

जेवारे हुं घेर गृहस्थ अवस्थामां रहेतो हतो तेवारे वर्षाकाले खेत्रमां वृक्षोने कापी नाखी सूड करीने जमीनने अग्निथी बाली शुद्ध करी तेमां धान्य वावतो हतो तेथी करी मारा घरमां घणुंज धान्य नीपजतुं हतुं. तेथी मारुं सर्व कुटुंब सुखी रहेतुं हतुं अने हवे म्हें तो दीक्षा लीधी छे अने म्हारा छोकरा आलसु छे ते खेतीमां कांइ समजता नथी माटे जो निरुद्यमी थका निश्चितपणे घरमां बेठा हशे अने सूड नहीं करशे तो धान्य नीपजशे नहीं तेथी ते बापडा भूखे मरशे. एवा प्रकारनी म्हें जीवदया चितवी, एम ऋजुपणाथी साचुं बोल्यो ते सांभळी गुरु बोल्या—भद्र ! तमे माठुं विचार कर्युं छे, केमके ए खेतीनो धंधो पाप विना थाय नहीं माटे सावद्यनी अनुमोदना साधुने करवी युक्त नथी तेथी मिच्छामि दुक्कडं देइने शुद्ध थाओ, ते सांभळी साधुए मिच्छामि दुक्कडं दीधो.

वळी त्रीजुं दृष्टांत कहे छे—सोरठ देशने विषे एक ब्राह्मण रहेतो हतो तेनो पुत्र सासरे जवा लाग्यो तेवारे पिताए शिखामण आपी के बेटा ! एक वार हां कहेवी अने एकवार ना कहेवी, एवी पितानी शिखामण धारण करीने सासरे पोहोतो. त्यां सासु ससराए पूछ्युं के भट्टजी ! तमे आव्या ? तेवारे ब्राह्मण बोल्यो हांजी, फरी सासु ससरे पूछ्युं के घेर कुशल खेम छे ? तेवारे ब्राह्मण बोल्यो नाजी, फरी पूछ्युं के तमारा पिता देवलोक पहोता ? तेवारे कह्युं हांजी. फरी पूछ्युं, तेमनी पछवाडे कांइ खरच कर्यो ? तेवारे कह्युं नाजी, ते सांभळी सासु ससरे कह्युं के तमे तो म्होटा मूर्ख छो, तेवारे तेणे कह्युं हांजी, एटली वात थया पछी ते सर्व ब्राह्मण मलीने मोकाणे गया. त्यां जइने जुए छे तो जमाइनो पिता जीवतो बेठेल छे, तेने राम राम जुहार जुहार करीने सर्व मल्या. पछी जमाइना पिताए पूछ्युं के तमो सर्वेनुं शा माटे अहीं आववुं थयुं छे ? ते सांभळी सर्वे बोल्या के तमारे छोकरे तमे परलोक सिधाव्या एवी वात हमारी पासे कही तेथी अहीं आव्या छीये. तेवारे ते छोकराना पिताए कह्युं के ए छोकरो मूर्ख छे. एवा जीवने पण ऋजु एटले भोला अने जड एटले मूर्ख कहीए. एवा साधु प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेवना तीर्थे समजवा.

छेल्ला तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामीना साधु वक्र अने जड होय तेना ऊपर दृष्टांत कहे छे—जेम कोइएक महावीरस्वामीना तीर्थनो साधु स्थंडिल गयो. ते घणो मोडो आव्यो. तेने गुरुए घणो वखत लागवानुं कारण पूछ्युं तेवारे वक्रपणाथी कहेवा लाग्यो के बाहिर जाय तेने वखत तो लागेज एमां तमे मने शुं पूछो छो ? पछी जेवारे गुरुए घणुं पूछ्युं तेवारे कह्युं के नाटकिया नाटक करता हता ते जोवा ऊभो रह्यो हतो. गुरुए कह्युं के साधुए नाटक जोवुं नहीं ते तमे जोयुं तेथी पाप लाग्युं

माटे 'मिच्छामि दुक्कडं' दीधो, त्यारे मिच्छामि दुक्कडं दीधुं, फरी कालांतरे एक दिवस नटीनुं नाटक देखवा ऊभो रह्यो. तेथी घणो वखत लाग्यो. माटे गुरुए तेनुं कारण पूछवाथी वक्रपणाना योगथी वांका वांका उत्तर आपवा मांड्या पण साचुं कहे नहीं तो पण गुरुए ज्यारे घणुं पूछ्युं त्यारे बोल्यो के नाटकणी नाच करती हती ते जोवा ऊभो रह्यो हतो, ते सांभळी गुरु बोल्या के-म्हें ना कही हती तो पण तुं नाटक जोवा केम ऊभो रह्यो ? तेवारे शिष्य वक्रपणाथी बोल्यो के तमे तो नाटकीआनुं नाटक जोवाने वार्यो हतो; परंतु ते वखत नटीनुं नाटक जोवाने शा वास्ते वार्यो नही ? तो एमां म्हारो शो वांक छे ? ए तो तमारो ज वांक छे. एम वक्रपणाथी उलटो गुरुने ओलंभो दीधो. ए वक्रपणा आश्रयी प्रथम दृष्टांत कह्युं. १

बीजुं लोकोक्त दृष्टांत वक्र जडनुं कहे छे-कोइएक शेठनो छोकरो घणो दुर्विनीत हतो. ते पोताना मा-बाप साथे वढवाड कर्या करे. तेने मा-बाप घणां समजावे तो पण कोइनुं कह्युं माने नहीं. पछी कुटुंबना माणसोए तेने शीखामण आपी कह्युं के मा-बापनी सामुं तारे बोलवुं नहीं. तेवारे तेणे कह्युं हवे हुं बोलीश नहीं. एम करतां कोइएक दिवसे मा-बाप प्रमुख सर्व कुटुंब मळी पुत्रने घर भलावी कांइक कामसर बाहेर गयां तेवारे ते छोकरो पितानी शीखामण याद करतो घरनां कमाड जडीने खाटला ऊपर जइ सुतो, थोडीक वार पछी ते पितादिक आव्या, तेणे छोकराने घणा साद कर्या तो पण ते छोकरो खाट ऊपर बेठो बेठो सांभले, परंतु बोले नहीं अने कमाड पण उघाडे नहीं. एम घणो वखत थयो त्यारे तेनो बाप भींत ऊपरथी चढी घरमां आव्यो अने जुए छे तो पुत्र खाटला ऊपर बेठो बेठो हसे छे तेने बापे मार मारीने पूछ्युं के तने आटला साद कर्या तो पण केम जवाब आप्यो नहीं ? वली कमाड शावास्ते उघाड्यां नहीं ? तेवारे पुत्रे कह्युं तमेज मने शीखव्युं हतुं के म्होटानी सामुं न बोलवुं तो महारो एमां शो वांक छे ? तेवारे पिताए कह्युं के अरे मूर्ख ! काम होय त्यारे तो बोलवुं जोइये ते सांभळी छोकरो बोल्यो के हवे हुं काम हशे तेवारे बोलीश, फरी एक दिवसे शेठ घणा लोकोमां बेठा हता एटलामां घेर शेठाणीए रावडी बनावीने छोकराने कह्युं के तारा बापने बोलावी लाव तो रावडी शीरावीने पछी सुखेथी काम ऊपर जाय, त्यारे ते छोकरो ज्यां तेनो बाप घणा माणसोनी वचमां बेठो छे त्यां जइ म्होटे सादे हेला पाडीने कहेवा लाग्यो के—पिताजी ! आज आपणे घेर रावडी थइ छे ते म्हारी माताए कह्युं छे के एकवार शीरावी जाओ पछी सुखेथी काम काज करो. ते सांभळी शेठ लज्जा पामीने त्यांथी

उठ्यो आगल जइ पुत्रने एकांतमां कह्युं के हे कुपुत्र ! आपणी लोकोमां लाज जाय तेवी रीते तुं शा वास्ते बोल्यो तेवारे पुत्र बोल्यो—तमेज मने शीखाव्युं हतुं तो हुं शुं करुं ? तेवारे पिता बोल्यो के आज पछी जो एवुं काम होय तो धीरे धीरे बोलवुं, छोकराए कह्युं के हवे धीरे धीरे बोलीश. एटलामां वली एक दिवस ते शेठने घेर आग लागी तेवारे शेठाणीए शेठने तेडवा सारु छोकराने मोकल्यो. ते छोकरो त्यां आवीने जूए छे तो शेठ घणा लोकोनी वचमां बेठो छे तेवारे पोते दूर ऊभो रहीने धीरे धीरे बोल्यो. घणीवार थया पछी शेठे तेने जोयो तेवारे शेठे पूछ्युं के अरे ! तुं शा वास्ते अहींआं आव्यो छे ? तेवारे ते छोकरो शेठनी पासे जइने हलवे हलवे शेठना कानमां कहेवा लाग्यो के आपणे घेर लाय (आग) लागी छे. ते सांभळी शेठ बोल्यो के अरे मूर्खा ! घर तो वली गयुं हशे, तुं इहां आवतां वार ज केम बोल्यो नहीं ? तेवारे छोकरो बोल्यो के तमे शीखव्युं हतुं के धीरे धीरे बोलजे तो एमां म्हारो वांक कांइ नथी ए तमारी पोतानी ज भूल छे, पिताए कह्युं अरे ! एटलो म्होटो थयो तो पण हजी अक्कल आवी नहीं. ज्यारे धूआडा नीकल्या त्यारे तरतज धूल नाखवी हती तो अग्नि शांत थइ जात, एवुं शेठनुं कहेवुं ते छोकराए धारी राख्युं. एम करतां शीत ऋतु आवी तेवारे प्रभात समये एनो पिता दांतण करवा बेठो छे तेना मुखमांथी धूमाडा नीकल्या ते देखी धूलनो खोबो भरीने छोकराए पिताना मुखमां नाख्यो. तेवारे पिताए जाण्युं के ए छोकरो खरेखर मूर्ख छे. वली एक दिवस पिताए छोकराने कह्युं के आ घोडो तरस्यो छे तेने पाणी पीवरावजे अने नवरावी आवजे. छोकराए कह्युं बे काम तो नहीं करुं, पिताए कह्युं नवरावी आवजे. पछी ते छोकरो घोडा ऊपर चढी तलाव पासे जइ घोडानुं मुख बांधी नवरावीने पाछो घेर लाव्यो पण घोडो तरस्यो हतो माटे आकुल व्याकुल थतो देखी शेठे पुत्रने मूर्ख जाणी घरमांथी काढी मूक्यो अने कह्युं के वाटे जातां कोइ मले तो तेने म्होटे सादे जुहार करजे. पछी वाटे जतां कोइएक पारधी पाशो मांडी मृगलां एकठा करी ऊभो छे तेने छोकराए म्होटे सादे जुहार कर्यो. तेनो साद सांभळीने सर्व मृग नासी गया. पारधीए घणो मार मार्यो अने मूर्ख जाणीने कह्युं के—भूंडा ? मार्गे जतां छपतो चाल्यो जाजे. वली आगल जातां कोइक कोटवाल चोरनी शोध करवा नीकल्यो छे तेणे छोकराने छपतो देखी चोर जाणी पकड्यो ने मार मार्यो; पछी मूर्ख जाणी कह्युं के घणा माणस दीठामां आवे तेवारे एम कहेजे के तमारे एवुं कोइ वखते थाशो मां. वली आगल जातां कोइएक गाममां विवाह छे ते देखी पेला मूर्खाए कह्युं के तमारे घेर एवुं कार्य कोइ वारे म थाजो. एवुं वचन सांभलीने विवाह वालाए मार मार्यो. पछी छोकराए कोटवालना शीखाववा संबंधि वात कहे छते ते लोकोए मूर्ख जाणी शीखामण आपी कह्युं के—भोला ! जेवारे घणा माणस मले तेवारे एवुं कहेवुं के तमारे सदा एमज थाजो. ते वात याद राखीने छोकरो आगल चाल्यो. मार्गमां कोइ एक देशनो राजा मरण पाम्यो छे तेनी मैयत (वैकुंठी) ने लोको लइ जाय छे ते देखी छोकराए कह्युं के—

तमारे सदा सर्वदा एवुं ज होजो. त्यां पण लोकोए मार मार्यो अने मूर्ख जाणीने मूकी दीधो. एम रखडतो रझलतो केटलाएक दिवसे पाछो घेर आव्यो. ए श्रीवीरना साधु ऊपर वक्र—जडनुं बीजुं दृष्टांत कह्युं.

हवे मध्य बावीश तीर्थंकरना साधु ते सर्व ऋजु अने प्राज्ञ छे. तेना ऊपर दृष्टांत कहे छेः—जेम कोइएक अजितनाथ भगवानना साधु ते स्थंडिलथी घणो असुरो (मोडो) आव्यो माटे गुरुए तेनुं कारण पूछ्युं ते वारे ऋजुपणाथी कह्युं के नाटकीआनुं नाटक जोवा ऊभो रह्यो हतो, गुरु बोल्या के साधुए नाटक जोवुं नहीं. तेवारे तेणे मिच्छामिदुक्कडं देइने कह्युं के हवे कोईवारे जोवा ऊभो रहीश नहीं. वळी कोईएक दिवसे फरी बाहर गयो, त्यां रस्तामां नटवी नाचती हती ते जोई पंडितपणाथी विचार कर्यो के गुरुए मुजने नाटकीआनुं नाटक जोवा वर्ज्यो छे तो नाटकणी तो तेथी पण विशेष रागनुं कारण छे माटे ए मुजने सर्वथा जोवीज नहीं कल्पे एवुं विचारीने पाछो आव्यो. ए ऋजु अने प्राज्ञनुं दृष्टांत कह्युं ॥१॥ एम ए दृष्टांत जे कह्यां ते कांइ सर्वे साधुओ आश्रयी समजवा नहीं, परंतु कोईएक साधुना आश्रयी जाणवा.

हवे आजना समयना माणस वक्र अने जड छे ते प्रमाणे आज पांचमा आरामां चारित्रिया साधु नथी एम पण न कहेवुं, कदापि अनाभोगपणे अतिचार दोष घणा लागे तेवा पण साधु आजना समयमां छे; केमके साधु विना धर्म न होय. माटे व्यवहार भाष्यमां कह्युं छे के— श्रीभगवंतना भाषेला शास्त्रनी जे खरेखरी प्ररूपणा करे तेने पण साधु कहीये, तथाः—

"जो भणई नत्थि धम्मो, नय सामाईय न चेव य वयाइं ।
सो समणसंघवज्झो, कायव्वो समणसंघेण ॥ १ ॥"

माटे जो पूर्व साधुनी अपेक्षाए हीन कहो तो भले कहो; पण दुष्षम कालमां साधु नथी ज एम न कहीए जे माटे साधु तो आजे पण छे.

हवे ए दश प्रकारनो कल्प जे साधुनो आचार रूप धर्म छे ते त्रीजा वैद्यना औषध सरखो छे. एटले जेम त्रीजो वैद्य उपकारी थयो तेम आ कल्प पण उपकारी जाणवो. ते त्रीजा वैद्यनी कथा कही देखाडे छे:—

कोईएक राजाने एकज पुत्र अत्यंत वल्लभ हतो. माटे राजाए विचार कर्यो के आ पुत्रने रोग आव्या पहेलां ज एनुं हुं औषध करावुं तो पछी कोई वारे एने रोग ज थाय नहीं, एम चिंतवी वैद्यने बोलावी कह्युं के आ छोकरानुं एवुं औषध करो के जेणे करी एने कोई वखत रोग न थाय. तेवारे वैद्य बोल्यो के राजन्! म्हारी पासे जे औषध छे ते एवुं छे के जे खाधा थकी रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो वली नवो रोग प्रगट थाय, ते सांभळी राजाए कह्युं के सूता सिंहने जगाडवा सरखुं त्हारुं औषध अमारे करवुं नथी, एम कही तेने शीख आपी. पछी बीजा वैद्यने पूछ्युं तेवारे ते बोल्यो के हे राजन्! म्हारुं औषध खवराव्याथी जो रोग होय तो जाय अने जो रोग न होय तो गुण-दोष कांई न थाय. ते सांभली राजा बोल्यो के राखमां घृत ढोळवा जेवुं त्हारुं औषध अमारा कामनुं नथी, एम कही तेने पण विदाय कर्यो. पछी त्रीजा वैद्यने बोलावी पूछ्युं. तेवारे ते बोल्यो के हे राजन्! म्हारुं औषध एवुं छे के जे खवराव्याथी रोग होय तो जतो रहे अने रोग न होय तो वली बीजा कोई रोग आवे नहीं तथा बल, बुद्धि, रूप अने तेजनी वृद्धि करे ए वात सांभली राजाए प्रसन्न थइने ते वैद्यनुं औषध छोकराने अपाव्युं अने वैद्यने शिरपाव आपी विदाय कर्यो.

एवी रीते ए कल्पसूत्र पण त्रीजा वैद्य समान गुणकारी छे केमके एना श्रवण थकी जे पूर्वे कर्म बांध्यां होय तद्रूप व्याधि दूर थइ जाय अने नवा कर्मनो बंध पडे नहीं, सर्व आपदा निवारे, सुख संपत्ति करे, चारित्रना गुणनी पुष्टि करे अने वली मोक्षना सुख तरत आपे. ए कल्पसूत्रने विषे प्रथम श्रीवीर-चरित्र छे ते बीज समान छे, श्रीपार्श्वनाथ चरित्र छे ते अंकुरो छे, श्रीनेमीश्वर भगवाननुं

चरित्र छे ते थड छे, श्रीआदिनाथ चरित्र छे ते शाखा छे, थविरावली छे ते फूल छे, कथा छे ते सुगंध छे, फल छे ते मोक्ष छे, जे ए सूत्रना सर्व अक्षर सांभले ते जीव आठ भवमां मोक्ष जाय.

कारणे चातुर्मासमां विहार अने चातुर्मास योग्य क्षेत्रगुण—

हवे साधु जे गाममां चोमासुं रहे ते गाममां ए कल्पसूत्रनी वाचना करे अने चोमासुं पूर्ण थया पछी एटले कार्तिकशुदि पूर्णिमा थया पछी पण कदापि वर्षाद वरसवाथी मार्गमां कादव प्रमुख थया होय तो वधारे दिवस पण रहे तथा वली कदाच जे गाममां साधु चोमासुं रह्या होय अने हजी चोमासुं पूरुं न थयुं होय तेनी वचमां ते गाममां १ मरकी आदिक रोगोनो उपद्रव थाय, २ भिक्षा दुर्लभ मलती होय, ३ राजा दुष्ट होय तेणे कोप कर्यो होय, ४ कुंथु आदिक घणा जीवोनी उत्पत्ति थइ होय, ५ सर्प, अग्नि आदिकनो भय उत्पन्न थयो होय, ६ रोग अने वर्षाद विरमता न होय, दुर्भिक्ष पडे इत्यादिक कारणे चोमासामां पण विहार करवानी आज्ञा प्रभुए दीधी छे माटे विहार करवामां दोष नथी. हवे संयम निर्वाह करवाने अर्थे साधुने ज्यां चोमासुं रहेवुं पडे त्यां प्रथम ते क्षेत्रमां उत्कृष्टपणे तो तेर गुण जोवा जोइए ते कहे छे–१ जे गाममां कादव घणो न होय, २ जे गाममां बेइंद्रियादिक जीव घणा न होय, ३ स्थंडिल जवानी भूमि निरवद्य होय, ४ स्त्री, पशु, पंडकादिक दोष रहित उपासरो रहेवानो होय, ५ जे क्षेत्रमां दहिं, दूध घणां मलतां होय, ६ जे गाममां भद्रक अने श्रद्धावान श्रावकनां घणां घर होय, ७ जे गाममां वैद्य घणा निपुण रहेता होय, ८ ज्यां औषध घणां सुलभ मलतां होय, ९ ज्यां श्रावकोना घरमां धन धान्य प्रमुखनो घणो संग्रह होय पण कोई वातनी चिंता न होय, १० जे गामनो राजा अति भद्रक होय, साधुओनी भक्ति घणी करतो होय, ११ ज्यां ब्राह्मण, तापस, भुआ, भरडा, प्रमुख पाखंडी लोक जे छे ते साधुनो अपमान करी शकता न

होय, १२ ज्यां भिक्षा सुलभ मलती होय, १३ ज्यां सज्झाय (पठन पाठनादिक) सुखे थतां होय; ए तेर गुणवाला गाममां साधुए चोमासुं करवुं, कदाचित् एटला गुण न मले तो पण जघन्यथी चार गुण तो अवश्य जोवा. ते कहे छे. १ थंडिल भूमि घणीज सारी शुद्ध फासु होय, २ जेमां सज्झाय ध्यान सुखे थाय एवी रहेवाने जगा होय, ३ ज्यां श्रीजिनमंदिर होय, ४ ज्यां गोचरी रूडी रीते मलती होय. ए चार गुण खेत्रना जोइने चोमासुं करवुं एम ए तेर गुण उत्कृष्टथी अने चार गुण जघन्यथी कह्या तथा पांचथी मांडीने बार गुण सुधी सर्व मध्यम गुण जाणवा, एवुं खेत्र जोइने त्यां साधुए चोमासुं करवुं. कारण के साधुजन पृथ्वी पीठने विषे नवकल्पि विहार करे छे, तेमां अनेक तीर्थ-यात्राओ करतां, गामे गामे विचरतां, मिथ्यात्वे पडेला अनेक भव्य-जीवोना उद्धार करता थका विचरे, ते जेवारे चोमासुं आवे तेवारे धरा-मंडले सजलधाराए वर्षाद पडे तेथी पगले पगले पाणीनो प्रवाह चाले, कोमल किसलय फूटे, थानके थानके अनेक प्रकारना जंतुओ उत्पन्न थाय ते माटे जीवयत्न करनारा चारित्रियाए वर्षाकालमां विहार न करवो, एकत्र स्थानके रहेवुं, अनेक प्रकारना घोर अभिग्रह करवा, कारण के साधुने तो वीशविश्वा दया होय छे, परंतु श्रीकृष्ण महाराज जेवा सवा-वशानी दयाना पालनारा श्रावकोए पण चोमासामां सोल हजार राजा-ओने सभामां पधारवानी ना कही हती अने पोते पण सभा मांहे न आव्या, केमके वर्षाद मांहे घणा कीडी, कुंथु, आदिक जीव हणाय एवुं जाणी ठाकोर पोढ्या छे एवो जवाब श्रीकृष्णे आप्यो त्यांथी 'देव पोढणी अगीआरस ' लोकमां प्रसिद्ध थइ, ए रीते शुद्ध श्रावक पण वर्षाकाले पाप जाणीने देशांतरनो व्यापार न करे. माटे साधुने पण चोमासामां एक ठेकाणे रहेवुं. ते चोमासाने विषे पर्युषण पर्व आवे त्यारे मांगलिकने अर्थे कल्पसूत्र अवश्य वांचवुं.

पर्युषण पर्वनी सर्व पर्वोमां उत्कृष्टता देखाडे छे—

१ जेम मंत्र मांहे पंच परमेष्ठि–मंत्र, २ तीर्थ मांहे शत्रुंजय–तीर्थ, ३ दान मांहे अभय–दान, ४ गुण मांहे विनय गुण, ५ व्रत मांहे ब्रह्मचर्य व्रत, ६ संतोष मांहे नियम, ७ तपस्या मांहे इंद्रिय दमन, ८ दर्शन मांहे जैन दर्शन, ९ क्षीर मांहे गोक्षीर, १० जल मांहे गंगानीर, ११ पट मांहे हीर, १२ वस्त्र मांहे चीर, १३ अलंकार मांहे चूडामणि, १४ ज्योत्स्ना मांहे निशामणि, १५ तुरंग मांहे पंचवल्लकिशोर, १६ नृत्यकलावंत मांहे मोर, १७ गज मांहे ऐरावत, १८ दैत्य मांहे ऐरावण, १९ वन मांहे नंदनवन, २० काष्ट मांहे चंदन, २१ तेजवंत मांहे आदित्य, २२ साहासिक मांहे विक्रमादित्य, २३ न्यायवंत मांहे श्रीराम, २४ रूपवंत मांहे काम, २५ सती मांहे सीता, २६ शास्त्र मांहे गीता २७ वाजित्र मांहे भंभा, २८ स्त्री मांहे रंभा, २९ सुगंध मांहे कस्तुरी, ३० वस्तु मांहे तेज, ३१ पुण्यश्लोक मांहे राजा नल, ३२ फूल मांहे सहस्रदल कमल, ३३ धनुर्धर मांहे अर्जुन, ३४ इंद्रिय मांहे नयन, ३५ धातु मांहे सुवर्ण, ३६ दातार मांहे कर्ण, ३७ गाय मांहे कामधेनु गाय, ३८ स्नेह मांहे घृत, ३९ जल मांहे अमृत, ४० ज्ञान मांहे केवलज्ञान, ४१ सुख मांहे मोक्षनुं सुख, तेम सर्व पर्व मांहे पर्युषण पर्व महोटुं जाणवुं. ए भाद्रवा शुदि पंचमी जेम श्रीजिनशासनने विषे माननीय छे तेमज परशासनने विषे पण ए ऋषीपंचमीनो दिवस माननीय छे.

ऋषीपंचमीनो संबंध कहे छे—

पुष्पवती नगरीने विषे नीलकंठ नामा ब्राह्मण रहेतो हतो तेनी सोमा नामे भार्या हती तथा इंद्रदेव नामे पुत्र हतो ते जन्मथी दारिद्री हतो. केटलेक काले तेना माता पिता मरण पामीने एनाज घरमां पिता बलदीयो थयो अने माता कूतरी थई. एवामां श्राद्धपक्ष आव्यो तेवारे घरमां द्रव्य नहीं तेथी विचार करवा लाग्यो के माता पिताना श्राद्धनो दिवस म्हारे केवी रीते सांचववो ? पछी बलदीयो तेलीने घेर खेडवा

आप्यो. तेनुं भाडुं लइ दूध, चोखा, खांड, घृत अने गोदूम लइ आवीने खीर रांधी घणा ब्राह्मणोने नोतरुं दीधुं एवामां पूर्वला भवनुं पोतानुं घर देखीने कूतरीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं तेणे ते दूधमांहे ऊपरथी सर्पे गरल नाखी ते दीठी तेवारे कूतरीये विचार्युं के अज्ञाने करी आ खीरने ब्राह्मणो जमशे तो मरण पामशे तेथी महा अनर्थ थइ पडशे, ब्रह्महत्यानुं पाप लागशे ने म्हारो पुत्र तथा वहु बन्ने मरण पामशे एम विचारे छे एटलामां वहु आवी तेवारे तेने देखतां ते कूतरीए दूध मांहे पोतानुं मोहोडुं घाली दूध एठुं कर्युं. ते जोइ वहुने रीश चढी तेथी तेने मूसलना प्रहारे मार मारी केड भांगीने ज्यां गायनी शाला छे त्यां जइ हेठी पाडी दीधी तेथी ते तड फडवा लागी अने ब्राह्मणे बीजुं दूध लावी खीर रांधी सर्व ब्राह्मणोने जमाडी श्राद्धनो दिवस सांचव्यो. पछी ब्राह्मण थाको थको बाहेर गौशालामां खाटली पाथरी सूतो एवामां संध्या समय थयो तेवारे आखा दिवसनो भूख्यो, तरस्यो, थाकी गयेलो बलद ते पण पेला घांचीए लावीने तेनां स्थानके बांध्यो. एटलामां कुलदेवी आवीने बलदीया तथा कूतरीना शरीरमां संक्रमी. त्यारे कूतरी बलदीयाने कहेवा लागी के आज श्राद्ध तो आपणुं हतुं अने खावानुं ब्राह्मणोने मल्युं एटलुं ज नहीं पण आ पापिष्ट वहुए मारी केड भांगी नांखी तेथी महा दुःख पामुं छुं. त्यारे बलदीयो बोल्यो के आ पापिष्ट आपणो छोकरो पण कांई समजतो नथी, मने पण आजे घांचीने घेर मोकल्यो हतो तेणे आखो दिवस घाणीमां फेरव्यो अने चारो पाणी आप्या विना एमज भूखें मरतो अहीं आवी बांधी गयो छे. ए सर्व वात खाटलापर बेठेला ब्राह्मणे सांभली तेथी तेना मनमां दिलगीरी पेदा थई अने विचार्युं के आ तो म्हारा माता पिता देखाय छे. एवो निरधार करी त्यांथी उठीने कूतरीने खीरनुं भोजन कराव्युं अने बलदने सारी रीते चारो प्रमुख आप्युं. पछी पोते पोताना माता पितानी सद्गति करवाने अर्थे

परदेश जइ, अनेक तीर्थ करी, कोई महोटा ऋषीश्वरने पूछवा लाग्यो के महाराज! मारो बाप बलदीओ थयो छे अने माता कूतरी थइ छे तेनी रूडी गति केवी रीते थाय? ते प्रकार कहो. त्यारे ऋषि बोल्या के ए बेहु जीवें ऋषिपंचमीना दिवसे अप्रस्तावे काम क्रीडा करेली छे मैथुन सेवन कर्युं छे तेनुं पाप लाग्युं तेना योगे ए अवतार पाम्यां छे. माटे हवे तुं ज्यारे ऋषिपंचमी एटले भादरवाशुदि पंचमीनो दिवस आवे ते दिवसे बलदनुं खेडयुं धान्य खाइश नहीं, चउविहार उपवास करजे कदापि खाधा विना रहेवाय नहीं तो दस मुट्ठी अडदना बाकला खाजे एटले एमनी सद्गति थशे. पछी ते ब्राह्मणे तेमज कीधुं ते दिवसथी लोकोने विषे ऋषिपंचमीनुं नाम प्रसिद्ध थयुं छे. ए ऋषिपंचमीना पर्व आश्रयी कथा कही।

श्रीपर्यूषण पर्व आवे त्यारे महोटो महोत्सव करी जे पुरुष तेलानी तपस्यामां एटले अट्ठम तप करी श्रीकल्पसूत्रने सांभले ते पुरुष नागकेतुनी पेरे केवलज्ञान पामीने मोक्ष सुखने पामे छे.

नागकेतुनी कथा कहे छे—

चंद्रकांता नगरीने विषे विजयसेन नामे राजा राज्य करतो हतो ते नगरीमां श्रीकांत नामा शेठ रहेतो हतो. तेनी श्रीसखि नामे भार्या हती तेने घणा उपाय करतां देव देवीओनी मानताओ करतां एक पुत्र थयो. अनुक्रमे ते पुत्रनुं पालण पोषण करतां केटलो एक काल वीत्यो एटलामां पर्यूषण पर्वना दिवसो आव्या. ते समयमां ते बालकनी आसपास बेठेलां माणसो मांहोमांहे वातो करवा लाग्यां के आपणे संवत्सरीनो तेलो करीशुं एटले अट्ठम तप करीशुं. ए वात सांभलीने पेला बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. तेना योगे पोतानो पाछलो भव दीठो तेथी बाल्यावस्थामां पण तेणे पोताना मनमां अट्ठमनुं तप करवुं एवो निश्चय करीने स्तनपान करवुं मूकी दीधुं तेथी तेनुं शरीर कुमलाइ

गयुं. मरणतुल्य अवस्था दीठामां आवी. एवी पुत्रनी अवस्था जोइ तेनां माता पिता घणुंज दुःख धरवा लाग्या. तेणे अनेक प्रकारना औषधोपचार कर्यां तो पण ते बालके स्तनपान कर्युं नहीं, एम करतां भूखना योगे ते बालकने मूर्छा आवी गइ, छोकराने मरेला जेवो देखीने तेना बापनुं हैयुं फाटी गयुं. तेथी मरण पाम्यो, तेमज माता पण मरण पामी अने बालकने मृतक देखी तेना जातिवालाए धरतीमां भंडार्यो, पछी आपणा गाममां अपुत्रीयो श्रीकांतशेठ मरण पाम्यो छे एवी खबर पडतां राजाए ते शेठनुं धन लेवा सारु माणस मोकल्यां. एवा समयमां अठ्ठम तपना प्रभावे करी धरणेंद्रनुं आसन चलायमान थयुं. त्यारे अवधिज्ञाने करी सर्व वृत्तांत जाणी त्यां आवी बालकने अमृत संचारे सज्ज कर्यो अने पोते ब्राह्मणनुं रूप धारण करी ते शेठना घरना बारणा आगल ऊभो रहीने राजाना माणसोने धन लेतां अटकाव्यां, राजपुरुषोए जइ राजाने कह्युं के ब्राह्मण धन लेवा देतो नथी त्यारे राजा पोते उतावलो आवीने ब्राह्मणने कहेवा लाग्यो के अमारा राज्यमां जे अपुत्रीयो मरण पामे तेनुं धन राजा लइ जाय एवी परंपरा (रीत) छे माटे तमे शा वास्ते अटकाव करो छो? त्यारे ब्राह्मण बोल्यो के राजन्! ए शेठनो पुत्र जीवतो छे. राजाए कह्युं क्यां छे? त्यारे धरणेंद्रे ते बालक जमीनमांथी जीवतो काढीने राजाने देखाड्यो. ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या. राजाए ब्राह्मणने पूछयुं के आप कोण छो, अने आ बालक कोण छे तथा ए वात तमे केम जाणी? ब्राह्मण बोल्यो हुं धरणेंद्र नागराजा छुं, तेलाना प्रभावथी एनी सहाय करवाने आव्यो छुं. राजा बोल्यो ए बालके जनमतांज अठ्ठम तप केम कर्युं, धरणेंद्रजी बोल्या के राजन्! ए बालक पूर्व भवमां एक वाणीयानो छोकरो हतो त्यां बाल्यावस्थामांज एनी माता मरण पामी तेवारे एनो पिता बीजी स्त्री परण्यो. पछी ते ओरमान माता जो छोकरानो थोडो वांक होय

तो पण अवगणना करे, घणुं घणुं खींजे तथा मारवा कूटवा वगेरे घणुंज दुःख देवा लागी, एम ते छोकरो नित्य प्रत्ये दुःख पामतो थको तेनो एक श्रावक मित्र हतो तेनी पासे जइ तेणे पोताना दुःखनी वात कही त्यारे मित्र बोल्यो के हे भाई ! तें पूर्व भवमां धर्म कर्यो नथी तेना योगथी दुःखी थयो छे. एवो उपदेश सांभळी तेणे यथाशक्ति तप करवानो प्रारंभ कर्यो. पछी आठम, चौदश उपवास करतां अने बीजा दिवसोमां नवकारसी पोरसी प्रमुख तप करतां अनुक्रमे पर्युषण पर्व आव्युं त्यारे तेणे अठ्ठम तप करवानो निश्चय विचार करीने रात्रे तृणनी झूंपडीमां जइ सूतो, एटलामां तेनी नजीक आग लागी त्यारे अवसर जोइने ओरमान माताए घासनी झूंपडी ऊपर अग्नि नांख्यो तेथी झूंपडी बळी गइ अने छोकरो पण शुभध्याने मरण पाम्यो. तेणे अष्टम तप ध्यानना प्रभावथी इहां अपुत्रीया श्रीकांत शेठने घेर जन्म लीधो अने जातिस्मरण ज्ञान पामीने एणे अठ्ठम तप कर्युं, तेथी भूखने योगे मूर्च्छागत थयो हतो परंतु जीवतो हतो तथापि लोके अजाणपणे तेने मरेलो जाणी जमीनमां भंडार्यो ते में आवी अमृत संचार करी मूर्च्छा उतारी सज्ज कर्यो. हे राजन् ! ए महापुरुष छे, एहज भवमां मोक्ष जाशे माटे एने घणाज यत्नथी राखजो. तमोने पण महोटो ऊपकारनो करवावालो थाशे एम कही पोताना गळानो हार बालकना गळामां नाखी धरणेंद्र पोताने स्थानके गयो, राजाए ते बालकने हाथी ऊपर चढावी महोटा आडंबर सहित घेर आण्यो. पछी कुटुंबना लोकोए शेठनुं मृतकार्य करी छोकरानुं नाम 'नागकेतु' पाड्युं. ते बालपणाथीज जितेंद्रिय परम श्रावक थयो, अष्टमी, चतुर्दशीनो उपवास करे, चोमासिए छठ्ठ करे अने पर्युषणनो अठ्ठम करे. जिनपूजा, साधु सेवा नित्य करे, एक दिवसे नगरना विजयसेन राजाए कोइ पुरुषनी ऊपर चोरीनुं झूठुं कलंक आपी निरपराधी छतां तेने मार्यो ते मरीने व्यंतर देवता थयो, तेणे आवी

आखा नगरनो विनाश करवा सारु नगर प्रमाण एक शिला आकाशे विकूर्वी लोकोने बीवराववा लाग्यो अने राजाने पाटुवडे मारी मुखथी लोही वमतो करी जमीन ऊपर नाख्यो, ते कृत्य जोइने नागकेतुए जाण्युं के हुं जीवता छतां श्रीसंघनो अने श्रीजिनचैत्यनो विनाश केम जोइ शकुं ? एवुं विचारी मनमां जीवदया आणी भगवानना प्रासाद ऊपर चढीने शिलाने हाथ आडो आपी पडती शिला हाथें धरी राखी. व्यंतर पण नागकेतुना तपनी शक्ति सहन न करतो थको ते पोतानी विकूर्वेली शिलाने संहरण करीने नागकेतुने पगे लाग्यो अने नागकेतुना कहेवाथी राजाने पण शाता करीने व्यंतर पोताने स्थानके गयो. पछी नागकेतुनी घणी मानता थई राजाए तेने सन्मान आप्युं. नागकेतु पण पूर्वनी पेठे घणा तप जप करतो थको विचरे छे. एकदा नागकेतुने भगवंतनी पूजा करतां फूल मांहे रहेला 'तंबोली नागे' डश्यो तेथी शरीरमां झेर व्यापी गयुं पण शुभ ध्यान धरवा लाग्यो तेना योगथी केवलज्ञान ऊपज्युं, त्यां दीक्षा लीधी, शासन देवीए ओघो, मुहपत्ति प्रमुख साधुनो वेश आप्यो, घणा काल पर्यंत विहार करी घणा भव्यजीवोने प्रतिबोध आपी मोक्षे पोहोतो. एवो नागकेतुनो अधिकार सांभलीने जे भव्य प्राणी छट्ठ—अट्ठम तप करीने एटले बेला तेलानी तपस्या करीने श्री पर्युषणपर्वमां कल्पसूत्र सांभळशे ते जीव शाश्वत सुखने पामशे.

आ कल्पसूत्र पापनुं निवारक छे, मनोवांछित पूरनार छे, निकाचित जे चार घातिकर्म छे तेनुं जीपनार छे माटे भव्यजीवोए प्रमाद, निद्रा, विकथा छांडी बेला अथवा तेलानुं तप करीने कल्पसूत्र सांभलवुं तथा श्रीजीवाभिगम सूत्र मध्ये कह्युं छे के पर्युषण पर्व आवे त्यारे देवताना इंद्र पण भेला थइने श्रीनंदीश्वर द्वीपने विषे जइ अट्ठाइ महोत्सव करे छे तेम इहां रूडा श्रावक, श्राविकाओए पण कल्पसूत्रनो अट्ठाइ महोत्सव करवो एवा विधिए करी जो कल्पसूत्र सांभले तो बहु लाभ-

कारी थाय. ए कल्पसूत्र श्रीमहावीर स्वामीने छट्ठे पाटे चौद पूर्वधारी श्रीभद्रबाहुस्वामी युगप्रधान थया तेमने चौद पूर्व मांहेला नवमा प्रत्याख्यान प्रवाद नामा पूर्वनी मांहेथी दशाश्रुतस्कंध सूत्र तेना आठमा अध्ययन रूपे रच्युं छे ते जेम दधिनो सार घृत छे तेम सर्व शास्त्रनो सारंभूत ए सूत्र समझवुं.

प्रसंगप्राप्त चौद पूर्वनुं मान कहे छे—

प्रथम उत्पाद पूर्व छे ते अंबाडी सहित एक हाथी ऊभो करीए तेनो जेटलो ढगलो देखाय तेटली श्याहीनो एक ढगलो करी लखीए तेवारे पहेलो पूर्व लखाय, बीजो अग्रायणीपूर्व बे हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, त्रीजो वीर्यप्रवादपूर्व चार हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, चोथो अस्तिप्रवादपूर्व आठ हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, पांचमो ज्ञान प्रवादपूर्व सोल हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, छट्ठो सत्यप्रवादपूर्व बत्रीश हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, सातमो आत्मप्रवादपूर्व चोसठ हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, आठमो कर्मप्रवादपूर्व एकसो ने अठ्ठावीश हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, नवमो प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व बसो छप्पन्न हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, दशमो विद्याप्रवादपूर्व पांचसौ बार हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, अगीआरमो कल्याणप्रवादपूर्व एक हजार ने चोवीश हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, बारमो प्राणावायप्रवादपूर्व बे हजार ने अडतालीश हाथी जेटली श्याहीथी लखाय, तेरमो क्रियाविशाल पूर्व चार हजार ने छन्नुं हाथी जेटली श्याहीथी लखाय अने चौदमो लोक बिंदुसारपूर्व आठ हजार एकसो ने बाणुं हाथीओना प्रमाण जेटली श्याहीथी लखाय. एम चौदे पूर्वने लखवा मांडीए तो सरवाले १६३८३ हाथीओना ढगला जेटली श्याही जोइये. परंतु अद्यापि पर्यंत कोईए लख्या नथी अने हवे कोइ लखशे पण नहीं. मात्र प्रमाण आपीने श्री केवली भगवाने उपमा बतावी छे ए सूत्रथी मान कह्युं. हवे ए चौद-

पूर्वेनुं अर्थ थकी मान कहे छे—सर्व नदीओनी वेलुना कणीया जेटला थाय तथा असंख्याता समुद्रनां पाणीना बिंदुओ जेटला थाय तेथी पण अनंतगुणो एकेका सूत्रना पदनो अर्थ जाणवो.

व्याख्यानमां कल्पसूत्र वाचन समय—

कल्पसूत्र प्रथम तो भाद्रवा शुदि पंचमीना दिवसे रात्रिनुं सांवत्सरिक पडिक्कमणुं कर्या पछी अर्द्ध रात्रिमां कालग्रहण करी श्रीगुरुमहाराज ऊभा थका मुखथी सूत्रनो पाठ उच्चार करता अने बीजा साधुओ सर्व काउस्सग्ग करी सांभलता हता, तेमज दिवसना साध्वीओने पण संभलावता हता परन्तु श्रीमहावीर भगवाननां निर्वाणथी नवशे एंशीमां वर्षे पुस्तकारूढ थयो अने श्रीवीरनिर्वाणथी नवशें त्र्याणुमां वर्षे आनंदपुर नगर जेने हमणा वडनगर कहे छे तेने विषे ध्रुवसेन राजा राज्य करतो हतो. तेने अत्यंत वल्लभ सेनांगज नामे एक पुत्र हतो ते दैवयोगे मरण पाम्यो एटलामां पर्युषण पर्व पण आव्यां तेवारे राजा घणो शोकाक्रांत थयो तेथी धर्मशालाने विषे पण आवे नहीं. वली जेम राजा चाले तेम प्रजा चाले ए हेतुथी बीजा जे शेठ व्यवहारी प्रमुख लोक हता ते पण धर्मशालाने विषे आवे नहीं एवो राजाने शोकातुर थयो जाणी, धर्मनी हाणी थती देखीने गुरु ध्रुवसेन राजानी पासे वंदाववा गया. त्यां राजाने कहेवा लाग्या के हे राजन्! तमो शोकाक्रांत थया जाणीने नगरना लोक पण सर्व शोकाक्रांत थया छे माटे शरीर धनादिक सर्व अनित्य छे, आयुष्य चंचल छे, संसार असार छे ए प्रकारना संसार स्वरूपने तमे जाणोज छो. माटे जैनधर्म मांहे घणो शोक करवो अयुक्त कह्यो छे. तेथी तमे शोक निवारीने पंचमीना दिवसे पर्युषण छे माटे धर्मशाला मांहे पधारो तो श्री भद्रबाहु स्वामीए नवमा पूर्व मांहेथी उद्धरेलुं श्रीकल्पनामे सूत्र महामंगलिक प्राचीन कर्मना क्षयनुं करनार छे ते वांचीये; तेवारे राजाने पांचमने

दिवसे पुत्र मरणनो शोक निवर्त्ताववो हतो अने इंद्रमहोत्सव पण हतो तेथी राजाए कह्युं के छठ्ठनो दिवस अथवा चोथनो दिवस ठेरावो तो म्हाराथी आवी शकाय पण पंचमीने दिवसे म्हाराथी आवी शकाशे नहीं. तेवारे "अंतरावासे कप्पत्ति" एवो सूत्र पाठ–देखीने कारण विशेषे गुरुए चोथनी थापना करी चोथनुं कल्पसूत्र वांचवा कबूल कर्युं. कालिकाचार्यथी ओहरुं बलमित्र अने भानुमित्र ए बे भाणेज साथे वडनगरनो ध्रुवसेन राजा सभा सहित धर्मशाला मध्ये आव्यो. तेवारे नव वांचनाए करी प्रभावना सहित महोत्सव पूर्वक सर्वलोकनी समक्ष श्रीकल्पसूत्र गुरुए वांच्युं. ते दिवसथी चोथने दिवसे पर्युषण थवानी परंपरा चाली छे अने केटलाएक गच्छमां अद्यापि सुधी पांचमनां पण पर्युषण करे छे; तेमज ते दिवसथी महोत्सव पूर्वक प्रभावना सहित सर्वलोकनी समक्ष कल्पसूत्र वांचवानी प्रवृत्ति चाली ते श्रीगुरु परंपराए आज पर्यंत चाली आवे छे अने ते प्रमाणे सर्वस्थले कल्पसूत्र वंचाय छे. एना वांचवाना अधिकारी योग वहन करनारा साधुओ छे अने सांभलवानो अधिकार चतुर्विध श्रीसंघने छे.

---

१ एक प्रतिमां आम कहेलुं छे के वडनगरमां गुरुजी चोमासुं रह्या हता एवामां पर्युषण नजीक आवतांज ध्रुवसेन राजानो एकज पुत्र हतो ते दाहज्वरें पीडा पामवा लाग्यो. तेना योगे राजा चिंतातुर थयो थको गुरुने वांदवा आवी शक्यो नहीं अने पर्युषण पर्वमां धर्मध्यानमां प्रवृत्ति करनारा घणा जनो दीठामां न आव्या तेथी गुरुए तेनुं कारण पूछयुं तेवारे राजाने शोकमां पड्यो जाणी गुरु पोते राजसभामां पधार्या. त्यां राजाने धर्मोपदेश आपी समजावीने महोटा लाभनुं कारण जाणी मांगलिक निमित्ते कल्पसूत्रनी प्रथम वांचना करी ते सांभलतां राजाना पुत्रने शाता थई. एम करतां नव वाचनाए तो सर्व दाहज्वर उपशमी गयो तेथी राजाए हर्षवंत थईने महोटो महोत्सव कर्यो, धर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो, राजाए गुरुने विनंति करी के श्रीसंघना मांगलिक निमित्ते ए कल्पसूत्र वर्षोवर्ष श्रीसंघने वांची संभळाववुं. ते दिवसथी कल्पसूत्र चतुर्विध श्रीसंघनी आगल वांची संभलाववानी प्रवृत्ति चाली छे. ते रीते हमणां पण श्रावकोना आग्रहथी कल्पसूत्रनी वाचना साधु मुनिराज करे छे.

कल्पसूत्रना वाचन-श्रवणथी लाभ—

आ सूत्रना वांचवा थकी एना अक्षरना महात्म्यने योगे साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकानां कल्याण थाय ए वात निःसंदेह छे. तेना ऊपर कथा कहे छेः—कोइएक डोशीनो पुत्र वन मांहे गायो चारवा गयो, त्यां तेने सर्प्पे डश्यो तेथी मूर्च्छागत थयो. ते वात लोकोना मुख थकी सांभळीने डोसी वनमां गइ. त्यां पुत्रने मूर्च्छित थयो देखी मोहना वश थकी पुत्रनुं नाम वारंवार स्मरण करवा मांडयुं के रे हंस ! रे परमहंस ! ! एवी रीते चार पहोर सुधी पोकार कर्यो, तेथी डोशीना छोकराने झेर उतर्युं, साजो थयो, प्रभाते माता अने छोकरो बेहु जण गाममां आव्यां, नगरनां लोक सर्व विस्मय थया, त्यां डोशीने गारुडीओए पूछयुं—तमोए श्यो उपाय कर्यो, के जे थकी तमारो पुत्र निर्विष थयो ? त्यारे डोशी बोली—हुं कांइ मंत्र जाणती नथी, औषध जाणती नथी, पण आखी रात्रि, रे हंस! हंस ! ! अने रे परमहंस ! परमहंस ! ! एवुं रुदन कर्युं तेथी निर्विष थयो. म्हें पोकार कर्यो ते देवताए सांभल्यो. देवना प्रयोगथी छोकरो निर्विष थयो ते सांभली गारुडी बोल्या के ए मंत्र सत्य छे. अक्षरना प्रयोगथी मंत्र निपजे छे, तेम आ कल्प सिद्धांत वांचतां थकां, सांभलतां थकां, जन्म जन्मनां पातक जाय छे एवुं महोटुं महात्म्य कल्पसूत्रना अक्षरनुं जाणवुं. ए कल्पसूत्रने सांभलवा थकी घणा गुण थाय छे, घणा मांगलिकनी वृद्धि थाय छे.

पर्युषणमां साधु-श्रावकोने करवा योग्य धर्मकार्य—

परि=सामस्त्येन, उषणा=सेवना ते पर्यूषणा कहीये. ते पर्युषण पर्व आव्यां थकां साधुओए केटलां धर्मकार्य करवां ते कहे छे. १ चैत्य परिपाटी करवी एटले सर्व चैत्यने विषे श्रीअरिहंतनी प्रतिमानां दर्शन भक्तिभावे करवां, २ लोच करवो, ३ सांवत्सरिक पडिक्कमणुं करवुं, ४ सर्व श्रीसंघना मांहोमांहे खमत खामणां करवां, ५ तेलो करवो एटले अट्ठमनुं तप करवुं

तथा पांच दिवस सुधी कल्पसूत्र वांचवुं. ए पांच वानां करवां एम श्रीतीर्थंकर गणधरें कह्युं छे. वली पर्यूषण आव्यां थकां श्रावकोए आटलां धर्मकार्य करवां—१ आठ दिवस सुधी अमारि पलाववी, २ यथाशक्ति बेला—तेलानुं एटले छट्ठ—अट्ठमादिकनुं तप जपादिक करवुं, ३ आठ दिवस पर्यंत सुपात्रने अविच्छिन्न दान देवुं, ४ सोपारी नालीयेर प्रमुखनी प्रभावना करवी, ५ श्रीवीतराग देवनी प्रतिमानी पूजा करवी, चैत्य परिवाटी करवी, ६ सर्व साधुओने वंदन करवुं, ७ श्रीसंघनी भक्ति करवी, ८ सचित्त वस्तुनो परिहार करवो, ९ ब्रह्मचर्य पालवुं, १० सर्व प्रकारना आरंभ संबंधि कार्योनो त्याग करवो, ११ पोतानी शक्ति प्रमाणे सन्मार्गें द्रव्य खरचवुं, १२ श्रुतज्ञाननी भक्ति करवी, १३ अभयदान देवुं, १४ कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग करवा, १५ प्रतिदिवस उभय टंक पडिक्कमणां करवां, १६ मोटो महोत्सव करवो, १७ कल्पसूत्रना वांचनारने शुद्ध भक्त पानादिकनी सहाय आपवी, तेनी सुख समाधिनी खबर लेवी, १८ श्रीसंघे मांहोमांहे खमाववुं, १९ भावना भाववी, २० कल्पसूत्र सर्व अक्षरे अक्षर सांभलवुं. जे भव्य जीव होय ते कल्पसूत्र सांभले अने ते विधिपूर्वक सांभलनारो पुरुष बारमे देवलोके जइ देवतानां सुख भोगवे. परंपराए आठमा भवे मोक्षना सुख पामे. हवे व्याख्यान करती वेलाए प्रथम मंगल रूप गाथा कहेवी—

पुरिम—चरिमाण कप्पो, मंगलं वद्धमाण जिण तित्थं ॥
इह परिगहिया जिणहरा, थेरावली चरित्तम्मि ॥ १ ॥

—पहेला श्रीऋषभदेव तीर्थंकर अने छेल्ला श्रीमहावीर स्वामी तीर्थंकर थया तेमां श्रीवर्द्धमान जिनेश्वरना तीर्थने विषे मांगलिक निमित्ते ए कल्पसूत्र छे. तेमां त्रण अधिकार कह्या छे. त्यां प्रथम तो जिनावली एटले श्रीमहावीर भगवानथी मांडीने पश्चानुपूर्वीए श्रीजिनेश्वरोनां चरित्र कहेवाशे, बीजो स्थविरावली एटले स्थविरोनां चरित्र कहेवाशे,

त्रीजो चोशठ आलावे करी अट्ठावीश प्रकारनी साधु समाचारी कहेवाशे तेमां प्रथम श्रीजिनेश्वरोनां चरित्रो मांहे छेल्ला श्रीमहावीर स्वामी शासनना अधिकारी छे माटे तेमनुं चरित्र पहेलुं कहेवाशे. इति कल्पसूत्र–पीठिका.

हवे ए कल्पसूत्रनो अर्थ अत्यंत गंभीर छे. एकेका अक्षरनो अनंतो अर्थ छे ते सर्व अर्थ कहेवाने हुं समर्थ नथी; तथापि जेम पूर्वाचार्योए कर्युं छे तेम हुं पण ते महापुरुषोना ग्रंथोने अनुसरी गुरुकृपाथी स्वल्प अर्थ करुं छुं. यद्यपि ए कल्पसूत्र पोतेज सर्व विघ्नोपशांतिने माटे महामांगलिक रूप छे तो पण शिष्यने मंगलबुद्धि होवाने लीधे जेम लौकिक कार्यना प्रारंभमां पण प्रथम श्रीदेवगुरुनुं स्मरण करीने पछी ते कार्यनो आरंभ करीये छीए तेम आ कल्पसूत्र रचवा रूप कार्यनी आद्यमां पण सर्व मंगल मांहे महा मांगल्यकारी, चौदपूर्वनो सारभूत एवो पंच परमेष्ठि मंत्रनो उच्चार कराय छे ते लखीये छीए.

(नमो अरिहंताणं) नमस्कार हो विहरमान श्रीअरिहंत प्रत्ये, (नमो सिद्धाणं) नमस्कार हो जे आठकर्म क्षय करी मोक्ष गया एवा सर्व सिद्ध प्रत्ये, (नमो आयरियाणं) नमस्कार हो श्रीआचार्य भगवान प्रत्ये, (नमो उवज्झायाणं) नमस्कार हो श्रीउपाध्याय प्रत्ये, (नमो लोए सव्वसाहूणं) नमस्कार हो अढीद्वीप रूप मनुष्य लोकने विषे रह्या एवा सर्व साधु प्रत्ये, (एसो पंच नमुक्कारो) ए जे अरिहंतादिक पांच नमस्कार छे एटले ए नमस्कार पंचक जे छे ते कहेवो छे तो के (सव्वपावप्पणासणो) सर्व पापनो प्रकर्षे करी नाश करनार छे. (मंगलाणं च सव्वेसिं) अने सर्व मंगलमांहे (पढमं हवई मंगलं) प्रथम एटले मुख्य मंगल छे.

श्रीमहावीरप्रभुनो विस्तारथी चरित्र कहे छे—

ते कालने विषे एटले चोथा आरानां अंतने विषे, ते समय ने विषे एटले ते अवसरने विषे श्रमणभगवंत श्रीमहावीर स्वामीना पांच स्थान

उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रमां थया, ते कहे छे-एक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने देवानंदाजीनी कूंखे गर्भमां आवी उपन्या, बीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां देवानंदाजीनी कूंखथी लईने श्रीत्रिशला देवीनी कूंखमां संक्रमाव्या, त्रीजो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां जनम्या, चोथो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां गृहस्थ पणुं त्यागीने साधुपणुं अंगीकार कर्युं, पांचमो उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां अनंत अनुपम जेने बीजी कोई उपमा लागे नहीं तथा जेनो क्यांय पण व्याघात न थाय एवुं, आवरण रहित समस्त वस्तु प्रकाशक संपूर्णपुर्णिमाना चंद्र समान एवुं श्रेष्ट केवलज्ञान तथा केवलदर्शन भगवानने उत्पन्न थयुं ए पांच स्थान उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयां; तथा स्वाति नक्षत्रमां भगवंत निर्वाण एटले मोक्ष पद पाम्या ए पांच कल्याणक सामान्यपणे भगवंतना कह्या.

हवे विस्तारथी वर्णन करिए छीए—ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामी उष्णकालनो चोथो मास आठमुं पखवाडियुं अर्थात् आषाढ शुदि छठनी रात्रें महाविजय पुष्पोत्तर प्रधान पुंडरीक नामे दशमा देवलोकनुं विमान छे ते विमानमां वीश सागरोपमना आउखानो क्षय करीने, देवभव त्यागीने, देव संबंधि शरीर छांडीने, अंतर रहित चवे, चवन करीने एहज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमांहिला दक्षिणभरतमां ए अवसर्पिणी कालना "इहां अवसर्पिणी कोने कहे छे ते देखाडे छे—जे कालमां समय समय वस्तुनी हानि थती होय ते अवसर्पिणी काल कहेवाय अने जे कालमां समय समय वस्तुनी वृद्धि थती होय ते उत्सर्पिणी काल कहेवाय ते प्रत्येक (एकेका) कालना छ छ आरा होय छे तेनुं स्वरूप संक्षेपथी आ प्रमाणे—पहेलो सुखमसुखमा नामे आरो चार कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां मनुष्य तिर्यंचनो त्रण पल्योपमनो आउखो होय, त्रण कोशनुं देहमान होय,

वर्षेने छपन्न पांसली होय, कल्पवृक्षना फल तथा माटीनो तुवरनी दाल जेटलो आहार त्रण दिवसे करे, ओगणपचाश दिवस सुधी जोडलो जनम्यो पाले पछी देवलोके जाय ए अवसर्प्पिणीनो पहेलो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो छट्ठो आरो तेनी स्थिति मर्यादा सरखी जाणवी. बीजो सुखमा नामे आरो, त्रण कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां मनुष्य तिर्यंचनुं बे पल्योपमनुं आयु, बे कोशनुं शरीर, बोर प्रमाणे बे दिवसे आहार करे, एकसो अट्ठावीश पांसली होय अने चोसठ दिवस पर्यंत अपत्य पालना करी देवलोकमां जाय. ए अवसर्प्पिणीनो बीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पांचमो आरो तेनी स्थिति मर्यादा जाणवी. त्रीजो सुखम–दुखमा नामे आरो, बे कोडाकोडी सागरोपमनो, तेमां युगलीया मनुष्य तिर्यंचनुं एक पल्योपमनुं आयु, एक कोशनुं शरीर, एकांतरे आमला प्रमाणे आहार करे, चोसठ पांसली होय अने ओगण्यायंशी दिवस सुधी संतान पालना करी मरण पामी देवलोके जाय ए अवसर्प्पिणीनो त्रीजो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो चोथो आरो तेनी स्थिति मर्यादा जाणवी. चोथो दुखम–सुखमा नामे आरो बेतालीश हजार वर्षे न्यून एक कोडाकोडी सागरोपमनो तेमां मनुष्यनुं आयुष्य एक पूर्वकोडी वर्षनुं अने पांचसो धनुष प्रमाण शरीर होय, इहां युगलीया न होय माटे जे वखत जेटलुं जोइये ते वखत तेटलुं भोजन करे, मरण पामीने चारे गति मांहेली गमे ते गतिमां जाय, कोइक जीव कर्मक्षय करी मोक्ष पण जाय ए अवसर्प्पिणीनो चोथो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो त्रीजो आरो तेनी स्थिति मर्यादा समजवी. पांचमो दुखमा नामा आरो एकवीश हजार वर्षनो, तेमां मनुष्यनुं सात हाथ देह मान, एकसो वीश वर्षनुं आयु होय, मरण पामीनें चारगति मांहेली गमे ते गतिमां जाय परंतु ए आरामां सर्व कर्म क्षय करीने कोइ मोक्षने विषे जाय नहीं, ए अवसर्प्पिणीनो पांचमो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो बीजो आरो तेनी

स्थिति मर्यादा जाणवी. छट्ठो दुखम–दुखमा नामे आरो एकवीश हजार वर्षनो छे, एमां मनुष्यनुं शोलवर्षनुं आयु होय अने एक हाथनुं शरीर होय, बिलमां निवास होय, सर्व मनुष्य क्रूरकर्मी, न्यायमार्ग रहित, दुर्गतिमां जावा वाला जीव होय. एवो अवसर्प्पिणीनो छट्ठो आरो अने उत्सर्प्पिणीनो पहेलो आरो तेनी स्थिति मर्यादा जाणवी. ए रीते ए छ अवसर्प्पिणीना अने छ उत्सर्प्पिणीना मली छ दु बार आरा थाय तेनो सर्व मली वीश कोडाकोडी सागरोपम प्रमाण काल थाय छे.

एमां अवसर्प्पिणीनो सुषम–सुषमा नामा पहेलो आरो पण संपूर्ण थयो वली सुषमा नामा बीजो आरो पण संपूर्ण थयो तथा सुषम–दु-षमा नामा त्रीजो आरो पण व्यतिक्रम थइ गयो अने दुषम–सुषमा नामे चोथो आरो पण घणो वीती गयो एटले तेमांथी पण बेतालीश हजार ने पंचोतेर वर्ष अने साडा आठ महिना ऊपर एटला वरसे न्यून एक कोडाकोडी सागरोपम वीती गया तेमां एकवीश तीर्थंकर श्रीइक्ष्वाकु कुलमां थया जेमनुं काश्यप गोत्र हतुं तथा श्रीमुनिसुव्रत स्वामी अने श्रीनेमिनाथ भगवान ए बे तीर्थंकर श्रीहरिवंश कुलमां थया तेमनुं गौतम गोत्र हतुं ए रीते सर्व मली त्रेवीश तीर्थंकर तो थइ चूका अने जेवारे ए अवसर्प्पिणी संबंधी चोथा आराना पंचोत्तेर वर्ष ऊवर साडा आठ महीना शेष काल रह्यो। त्यारे श्रमण भगवान् श्रीमहावीर छेल्ला तीर्थंकर ते ब्राह्मण कुंडगाम नगरमां ऋषभदत्त नामा ब्राह्मण जेनुं कोडाल गोत्र छे तेनी देवानंदा नामे ब्राह्मणी भार्या छे तेनुं जालंधर गोत्र छे तेनी कूंखनेविषे मध्य रात्रिना समयमां उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे छते देव संबंधि आहार, देवनो भव अने देवनुं शरीर त्यागीने देवानंदानी कूंखमां अवतर्या. हवे भरत चक्रवर्तीना पूछवाथी श्रीऋषभदेव भगवाने कह्युं हतुं के

चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामी थशे ते वात कथा भवनी छे ते जाणवाने अर्थे प्रथम श्रीमहावीर स्वामीना सत्तावीश भव कहिए छैये.

आ श्रीजंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे प्रतिष्ठान पत्तनना राजाना गामनी चिंता करवावालो 'नयसार' नामे चाकर कणबार्यो हतो ते एक दिवसे राजाना हुकुमथी घणां गाडां अने चाकर साथे लइने काष्ठ लेवाने अर्थे वनमां गयो, त्यां पोते एक वृक्षनी नीचे जइ बेठो छे अने बीजा चाकर (माणस) लाकडां कापवानो उद्यम करवा लाग्या छे एटलामां साथ थकी भूला पडेला केटलाएक साधु त्यां आव्या ते तेणे दीठा तेवारे हर्षवंत थको तेमनी सन्मुख जइ वांदीने पोताने स्थानके तेडी लावीने आहार वोहोराव्यो, पछी साधुए तेने धर्मोपदेश आप्यो. ते सांभलीने त्यां समकेत पाम्यो, तेवार पछी ते साधु मुनिराजोने पाधरो रस्तो देखाड्यो ए नयसारनो पहेलो भव जाणवो १, ज्यांथी समकेत पाम्या त्यांथी भवनी गणतरी थाय समकेत पाम्याथी आगल तो संसारमां जीवे अनंत भव कर्या ते कांइ लेखामां गणाय नहीं पछी नयसार त्यांथी आयुक्षय करी अंतसमये नमस्कार सहित मरण पामीने पहेले देवलोके देवपणे उपन्यो ए बीजो भव जाणवो २, पछी देवभवमां एक पल्योपमनुं आयुष्य भोगवी त्यांथी चवी त्रीजे भवे श्रीऋषभदेव स्वामीनो पुत्र भरत चक्रवर्त्ती तेनो मरीचि नामे पुत्र थयो तेणे एक दिवस श्रीऋषभदेव भगवाननी देशना सांभलीने दीक्षा लीधी ते वखते बीजा पण भरत राजाना पांचसे पुत्र अने सातसें पोतरा मली बारशो पुरुषोए दीक्षा लीधी, एक दिवस उष्णकाले शरीरमां ताप घणो लागवाथी मरीचिने मनमां न्हावानी इच्छा थई तेवारे संयमनो निर्वाह दोहेलो तेथी दीक्षा पालवाने असमर्थ अने घरे पण जवाय नहीं एवुं विचारी साधुनो वेष छांडीने मनःकल्पनाथी नवो त्रिदंडीनो वेश धारण

कर्यो; लोक पूछे तेवारे एवुं कहे के साधु त्रणदंडथी रहित छे अने हुं त्रणदंड सहित छुं माटे महारे त्रणदंडनुं चिन्ह हो तथा साधु महाराज द्रव्य अने भावथी लोच करे छे हुं लोच करवाने असमर्थ होवाथी महारे मस्तके शिखा अने मुंडन एटले क्षुर मुंड हो तथा साधु सर्व प्राणातिपातादिकथी विरम्या छे महाराथी तेम पाळी शकातुं नथी माटे महारे स्थूल प्राणातिपातनी विरति हो तथा साधु शीलेकरी सुगंधित छे अने हुं तेम नथी माटे माहारे बावना चंदननुं विलेपन हो तथा साधु मोह रहित छे अने हुं मोहें करी ढांक्यो छुं माटे माहारे एक छत्र ढांकवा सारु हो तथा साधु पादुकाए करी रहित छे हुं तेम नथी माटे पगे पावडी हो तथा साधु कषायथी रहित छे अने हुं कषाय सहित छुं माटे महारे काषाईयां एटले गेरूना रंग्यां वस्त्र हो तथा साधु स्नानें करी रहित छे अने हुं तेम नथी माटे महारे स्वल्प पाणीयें स्नान हो ए रीते वेश लई हाथमां जलकमंडलु धारण करी प्रभुना समोसरणनी बाहेर बेसे परंतु एवो विरूप वेश छतां पण जे कोइ पूछे तेनी आगल खरेखरी हकीगत कहे अने एनी पासे आवनारने शुद्ध साधुमार्गनो उपदेश आपी श्रीऋषभदेव भगवान पासे दीक्षा देवरावे एवो थको भगवान साथे विचरे. एक दिवस श्रीऋषभदेव स्वामी अयोध्यायें पधार्या तेवारे भरत-चक्रवर्त्तिए परमेश्वरने वंदना करी पूछयुं के भगवंत ! आ समोसरणमां कोई तीर्थंकरनो जीव छे ? तेवारे भगवान बोल्या के समोसरणमां तो नथी परंतु समोसरणनी बाहेर त्हारो मरीचि नामे पुत्र जेणें त्रिदंडीनो वेष धारण करेल छे ते चोवीशमो 'श्रीमहावीर' नामा तीर्थंकर थाशे तथा एज मरीचिनो जीव आ भरत क्षेत्रमां पोतनपुर नगरें 'त्रिपृष्ठ' नामे पहेलो वासुदेव थाशे अने श्रीमहाविदेह क्षेत्रमां मूका नगरीमां 'प्रिय-मित्र' नामा चक्रवर्त्ती थाशे एवी वात सांभलीने भरत महाराज हर्षवंत थइ श्रीभगवान पासेथी मरीचिने वांदवानी आज्ञा लेइ समोसरणमांथी

उठीने समोसरणनी बाहेर ज्यां मरीचि बेठो छे त्यां आव्या अने त्रण प्रदक्षिणा आपी वांदीने कह्युं के हे मरीचि ! हुं तने तथा ताहरा त्रिदंडीना वेशने तथा तुं वासुदेव थाइश ते ताहरा वासुदेवपणाने तथा चक्रवर्त्तीपणाने नमतो नथी परंतु चोवीशमो श्रीमहावीर नामे तीर्थंकर थाशो माटे तेने वांदुं छुं एम कही भरत महाराज स्वस्थानके गया; पछी ए वात सांभलीने मरीचि घणा आनंदथी बोल्यो के एकतो महारो दादो तीर्थंकर तथा महारो पिता चक्रवर्त्ती अने हुं पोते पण पहेलो वासुदेव थइश, तथा चक्रवर्त्ती थइश वली छेल्लो चोवीशमो तीर्थंकर पण थइश माटे मने वासुदेवादिक अधिक पदवीओ मलशे तेथी अहो महारुं उत्तम कुल एम कहीने पोतानी भुजाए ताली ठोकी महा हर्षवंत थयो थको हाथें तालोटा देतो नाचवा लाग्यो, एवी रीते पोताना कुलनो मद कर्यो तेथी नीचगोत्र कर्म बांध्युं. कारण के १ जातिमद, २ कुलमद, ३ लाभमद, ४ ऐश्वर्यमद, ५ बलमद, ६ रूप-मद, ७ तपमद, अने ८ श्रुतमद ए आठ मदने करतो थको जीव हीन जात्यादिकने पामे. हवे कोइएक दिवस मरीचिना शरीरमां रोग उपन्यो तेवारे तेनो भिन्नवेष देखीने असंयतिपणाने लीधे कोइ पण साधु तेनो वैयावच्च करे नहीं ते जोइ मरीचिए मनमां चिंतव्युं के मने रोग मटी जाय अने सारो थाउं तो एक शिष्य करुं के जे मने रोगादिक उपने वैयावच्च करवा काम आवे एम निर्धारी राख्युं पछी केटलाएक दिवसे तेने रोग मट्यो अने शरीरे शाता थइ, एक दिवसे कोइ कपिल नामा राजपुत्र मरीचि पासे आवी धर्मोपदेश सांभली प्रतिबोध पाम्यो पछी मरीचिने कहेवा लाग्यो के मने दीक्षा आपो ते सांभली मरीचि बोल्यो के श्रीऋषभदेव स्वामी पासे जई दीक्षा ल्यो तेवारे कपिल राजपुत्र श्री ऋषभदेवजीना समोवसरणमां गयो त्यां प्रभुने समोसरणमां बेठा जोइ फरी मरीचि पासे आवीने बोल्यो के श्रीऋषभदेवजी तो राज्य

लीला भोगवे छे माटे तेमनी पासे तो धर्म कांइ पण नथी परन्तु तमारां पासे कांइ धर्म छे के नथी ? एवुं वचन सांभली मरीचिए तेने यथार्थ कह्युं तो पण बहुलकर्मीपणा माटे तेणे मान्युं नहीं तेवारे मरीचिये कषाय सहित मतिभ्रंशथी, मिथ्यात्वोदयना योगे, शिष्यना लोभथी, स्वधर्म थापवा विचार्युं के ए म्हारे योग्य छे एम चिंतवीने बोल्यो के हे कपिल ! कांइक जैनधर्म म्हारा पासे पण छे माटे तुं सुखे दीक्षा ले, हुं तुजने दीक्षा आपीश एवा प्रकारे पोताना स्वार्थे सारुं कपिलने दीक्षा दीधी ए उत्सूत्र भाषण कर्युं पछी ते कर्मने आलोयुं पडिकम्युं नहीं तेना योगथी एक कोडाकोडी सागरोपम संसारमां परिभ्रमण करवा संबंधि कर्म उपार्जन कर्युं. पछी ते मरीचि अनुक्रमे पोतानुं चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगवी समाधि मरण करीने (३) चोथे भवे पांचमे ब्रह्म देवलोके दश सागरोपमने आउखे देवतापणे उपन्यो ४, त्यांनुं आयुष्य पूरण करी चवीने पांचमे भवे कोल्लागसन्निवेशने विषे एंशी लाख पूर्वना आउखे कौशिक नामा विप्र थयो त्यां पण छेल्ली तापसी दीक्षा ग्रहण करी आयुष्य पूरुं करी मरण पामीने घणाकाल पर्यंत संसार परिभ्रमण करी (५) छठे भवे थूणापुरीमां पुष्पमित्र नामा ब्राह्मण थयो त्यां त्रिदंडी तापस थई बहोतेर लाखपूर्व आयु भोगवी (६) सातमे भवे पहेले सौधर्म देवलोके मध्यम आउखे देवतापणे ऊपन्यो (७) त्यांथी चवीने आठमे भवे चैत्य सन्निवेशें साठ लाख पूर्वना आउखे अग्निद्योति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदंडी तापस थई काल करीने (८) नवमे भवे बीजे ईशान देवलोके मध्यम आउखे देवता थयो (९) त्यांथी चवी दशमे भवे मंदिराख्य सन्निवेशे छप्पन्न लाख पूर्वना आउखे अग्निभूति नामा ब्राह्मण थयो त्यां पण त्रिदंडीपणुं ग्रहण करी मरण पामीने (१०) अगीआरमे भवे त्रीजे सनत्कुमार नामा देवलोके मध्यम आउखे देवतापणे ऊपन्यो ११, त्यांथी

चवी बारमां भवमां श्वेतांबिका नगरीने विषे चुम्मालीश लाख पूर्वना आउखे भारद्वाज नामा ब्राह्मण थयो अंते त्रिदंडीपणुं ग्रहण करी त्यांथी मरण पामीने (१२) तेरमे भवे चोथा माहेंद्र नामा देवलोकने विषे मध्यम आउखे देवतापणे उपन्यो १३, त्यांथी चवी घणुं संसार भ्रमण करी वली चौदमा भवे राजगृही नगरीने विषे चोत्रीश लाख पूर्वना आउखे थावर नामा ब्राह्मण थयो त्यां त्रिदंडी तापसपणुं अंगीकार करी मरण पामीने (१४) पन्नरमे भवे पांचमें ब्रह्म देवलोके मध्यम आउखे देवता पणे उपन्यो १५, त्यांथी चवीने वली पण घणुं संसार भ्रमण करी शोलमा भवने विषे राजगृही नगरीनो चित्रनंदी नामे राजा तेनी प्रियंगु नामा राणी तेनो पुत्र विशाखानंदी हतो अने ते राजानो बीजो न्हानो भाई विशाखभूति नामे युवराज हतो तेनी धारणी नामे राणीनी कूखने विषे ते मरीचिनो जीव आवी पुत्रपणे उपन्यो, तेनुं विश्वभूति नाम मावित्रे दीधुं, ते अनुक्रमे यौवन वय पाम्यो त्यारे तेना पिताए परणाव्यो पछी ते प्रतिदिन पोतानी स्त्रीने साथे लई वाडीमां रमवा जाय. एक दिवसे चित्रनंदी राजाना कुंवर विशाखानंदीए, विश्वभूतिने क्रीडा करतो देखीने मनमां विचार कर्यो के जुओ तो खरा के हुं तो राजानो पुत्र छुं अने आ तो युवराजनो पुत्र छे तो हुं आ माहारा बापनी वाडीमां कोइ दिवस पण क्रीडा करतो नथी अने आ युवराजनो पुत्र वाडी रोकीने बेठो छे ए अयुक्त छे माटे हवे हुं पण माहारी स्त्रीयो सहित इहां आवीने वाडीमां रमण करुं तोज म्हारो जन्म सफल थाय नही कां महारो जन्म व्यर्थ छे एवो निश्चय करी ते कुमारें पोताना पिताने कह्युं के विश्वभूतिने वाडीमांथी काहाडी मूको तो हुं जइ ते वाडीमां क्रीडा करुं तेवारे पिताए कह्युं के पुत्र ! हुं कोइ प्रपंच करीने विश्वभूतिने काहाडी तने वाडी आपीश ए प्रमाणे पोताना पुत्रने संतोष पमाडी पछी विश्वभूतीने वाडीमांथी कहाडवा निमित्ते राजाए कपट

करी एक पडहो वजडाव्यो के सिंहनामा राजाने पकडवा सारुं राजा चढे छे, आवो ढंढेरो सांभलीने विश्वभूति आवी राजाने कहेवा लाग्यो के स्वामिन्! तमे पोतेज ते बिचारा गरीबडा सिंहराजानी ऊपर शुं प्रयाण करो छो ? तेने तो हुं ज बांधी लावीश एम कही लश्कर लइने विश्व-भूति, सिंहराजा ऊपर चढाइ करी गयो, पाछलथी राजाए विश्वभूतिना अंतःपुरने राजवाडीमांथी काहाडीने विशखनंदीने वाडी सोंपी दीधी एम करतां केटलाएक दिवसे विश्वभूति पण सिंहराजाने पकडी लावीने राजाने आवी सोंप्यो, तेवारे तेनो लोको घणो यशवाद बोलवा लाग्या, हवे फरी विश्वभूति पूर्वनी पेठे पोतानी स्त्रीयोने साथे लइ रमवा सारुं राजवाडीए गयो. त्यां दरवाजा ऊपर विशाखनंदीना सुभट बेठा हता ते बोल्या के इहां विशाखनंदी पोतानी स्त्रीयो साथे रमण करे छे माटे बीजा कोइने आववानो हुकम नथी, राजाए वाडी एने दीधी छे. ते सांभली विश्वभूतिए जाण्युं के राजाए म्हारी साथे कपट कीधुं छे माटे धिक्कार पडो आ संसारने एम विचारी विरक्त थयो, पछी मात्र पोतानुं बल देखाडवा सारुं ते वाडीना दरवाजा पासे एक कोंठनुं झाड हतुं तेने एक मूठी मारी तेथी ते वृक्षना बधां कोंठ जमीन ऊपर पडी गयां पछी विश्वभूति बोल्यो के जेटलो वखत आ कोंठने जमीन ऊपर पाडतां लाग्यो तेटलोज वखत शत्रुने मारतां लागे परंतु लोको अपवाद बोले तेनी बीकथी ए काम हुं करतो नथी, एवुं कहीने संभूतिविजय मुनिनी पासे दीक्षा लइ मासक्षपणादि घणुंज तप कर्युं, एक दिवस ते विश्व-भूति मुनि विहार करतो करतो मथुरा नगरीमां आव्यो, त्यां मास-खमणनुं पारणुं करवा सारुं गोचरीने अर्थे गलीए फरतां थकां कोइएक नवी प्रसूता गाय हती तेणे ढींक मारी तेथी साधु भूमिका ऊपर पडी गयो. ए अवसरमां एना काकानो दीकरो विशाखनंदी ते पण पोताने सासरे एज गाममां आवेलो छे तेणे गोखमां बेठां थकां विश्वभूतिने जमीन

ऊपर पडतो जोयो तेवारे हास्यपूर्वक बोल्यो के—विश्वभूति ! जे बल पराक्रमथी तें एक मुष्टीए करी सर्व कोंठ पाडी नाख्यां हतां ते तारुं बल सर्वे क्यां जतुं रह्युं ? एवुं वचन सांभलीने मुनिए ऊंची दृष्टि करी तेने जोयो त्यारे मनमां अहंकार आणीने बोल्यो के अरे ! हजी पण हास्य करे छे, तो जो हमणां पण म्हारुं बल केटलुं छे ? एम कही पहेली गायने सींगडाथी पकडी आकाशे भमाडीने भूमि ऊपर मूकी दीधी ने विशाखनंदीने कहेवा लाग्यो के अरे ! तुं तो जाणे छे के—एनुं बल जतुं रह्युं हशे पण म्हारुं बल क्यांये गयुं नथी वली कहेवा लाग्यो के जो म्हारी तपस्यानुं फल होय तो हुं परभवमां घणो बलवंत थयो थको तुजने मारवावालो थाउं एवो नीयाणो करी कोडी वर्ष पर्यंत चारित्र पाली अंते अनशन करी त्यांथी मरण पामीने (१६) सत्तरमां भवे महा· शुक्र नामा सातमा देवलोकने विषे सतरे सागरोपमना पूरण आउखे देवतापणे उपन्यो १७, त्यांथी चवीने अढारमां भवे पोतनपुर नगरमां प्रजापति नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूंखमां चार स्वप्ने सूचित गौतमस्वामीनो जीव पुत्र थयो, तेनुं नाम अचल दीधुं तथा वली एज प्रजा- पति नामा राजानी मृगावतीनामे एक पुत्री थइ ते एक दिवसे विवाहनी चिंताने लीधे ते कुमारीनी माताए तेने शणगारी सुशोभित वस्त्राभूषण पहेरावीने राजा पासे मोकली अने विचार्युं के ए म्होटी कन्या यौवन वय पामेली देखीने राजा कोइ कुलवान् राजकुमारने परणावी देशे, परंतु राजा तो ते पोतानी सुरूपवाली पुत्रीने आवेली देखीने कामे करी पीडित थयो अने पोतेज पोतानी दीकरीने परणवानी इच्छा करतो थको लोको अपमान न करे एटला माटे सभामां बेठेला लोकोनी आगल कहेवा लाग्यो के हे भाइओ ! जे लोकने विषे सारामां सारी चीज होय ते कोनी कहेवाय ? तेवारे सभाजनो बोल्या के जे उत्तम चीज होय ते तमारी कहेवाय, राजा बोल्यो के तमारा मुखथी जे वचन नीकल्युं ते

निश्चयथी सत्य छे माटे आ सर्वोत्कृष्ट जे कन्यारत्न छे ते हुं बीजाने आपीश नहीं. एने हुं पोतेज परणीश एम कही ते पोतानी पुत्रीने पोतेज परण्यो अने तेनी साथे संसार संबंधी सुख भोगववा लाग्यो. एम करतां एक दिवस ते विश्वभूतिनो जीव देवलोकथी चवीने मृगावतीनी कूंखे आवी उपन्यो, तेवारे मृगावतीए सात स्वप्ना दीठां, पछी पूरण नव महीने पुत्र जन्म्यो, तेवारे राजाए म्होटो महोत्सव करीने ते बालकनुं नाम 'त्रिपृष्ठ' दीधुं अनुक्रमे ते बालक म्होटो थयो एवा अवसरमां शंखपुर नगरनी पासे तुंगी नामा पर्वत छे ते पर्वतनी गुफामां विशाखनंदीनो जीव सिंहपणे आवी उपन्यो छे ते वखतमां अश्वग्रीव नामे प्रतिवासुदेव हतो तेनुं शालिनुं खेत्र ते पर्वतनी नजीक हतुं ते शालिना खेत्रनो जे रखवालो रहेतो तेने ते सिंह मारी नाखतो हतो, तेवारे ते अश्वग्रीव पोताना सेवक राजाओनी ऊपर वर्षोवर्ष वारा प्रमाणे हुकुम लखी खेत्रनी चोकी करवा मोकलतो हतो एम करतां एक वर्षे वारा प्रमाणे ते प्रजापतिराजाने चोकी करवानो हुकम आव्यो तेवारे ते खेत्रनी रखवाल करवा सारु राजाए पोते जावा मांड्युं, तेने त्रिपृष्ठे वारी राख्यो अने पोते पोतानो अचल नामे भाइ जे गौतमस्वामीनो जीव छे अने आ भवमां बलदेव थाशे ते सहित खेत्रनी रखवाल करवा गयो, त्यां बख्तर टोप पहेरी, रथमां बेसी, अचलने सारथी करी शस्त्र लईने जे गुफामां सिंह रहे छे त्यां गयो; एटलामां तो रथनो अवाज सांभलीने सिंह पण गुफाथी बाहेर आव्यो तेने देखीने-त्रिपृष्ठे विचार्युं के ए सिंहने बेसवा रथ नथी तो म्हारे पण रथमां बेसी लडवुं नहीं, वली एनी पासे शस्त्र तथा कवच नथी तो म्हारे पण शस्त्र तथा कवच नहीं राखवां, पछी शस्त्र तथा कवचने रथमां मूकी पोते रथथी हेठो उतरी सिंहने कहेवा लाग्यो के अरे ! ढांढीना खानार उठ, ऊभो थइने म्हारी सामो आव ? एटलुं कह्युं के तरत ते

सिंह पण उठ्यो अने मुख फाडी स्हामो लडवा आव्यो के तरतज त्रिपृष्टे ते सिंहना होठ पकडी बे कटका करी चीरी नाख्यो, तो पण ते सिंहनो जीव जाय नहीं, तेवारे त्रिपृष्ठनो सारथी सिंहने कहेवा लाग्यो के हे सिंह! जेम तुं मृगराज छे तेम आ त्हारो मारनार पण नरराज छे माटे तने कोइ साधारण माणसे मार्यो नथी, एवी वात सांभली सिंह मरण पामीने नरके गयो, पछी ते सिंहनुं कलेवर लइ गाममां आवी लोकोनी वचमां कलेवर नाखीने त्रिपृष्ठ बोलवा लाग्यो के आ उपद्रव करनार सिंहने हुं मारी आव्यो छुं माटे हवे म्हारा प्रतापथी अश्वग्रीव प्रतिवासुदेव सुख समाधिथी चावल खाओ. ए वात लोकोना मुखथी सांभलीने अश्वग्रीवने महा क्रोध उपन्यो तेथी पोतानी सेना लइने लडवा आव्यो, ते त्रिपृष्ट साथे युद्ध करतां कोई पण रीते पोहोची शक्यो नहीं; तेवारे चक्र फेरवीने तेना ऊपर नाख्युं ते चक्र पण त्रिपृष्टना हाथमां आवी बेठुं पछी तेज चक्र त्रिपृष्टे अश्वग्रीव ऊपर चलाव्युं तेणे जइ अश्वग्रीवनुं मस्तक छेदी लावीने त्रिपृष्ट आगल हाजर कर्युं, ते जोइ देवो आकाशमां रही जय जय शब्द कही बोल्या के आ भरतक्षेत्रमां ए त्रिपृष्ठ नामनो पहेला वासुदेव थयो, पछी ते त्रिपृष्ठ अनुक्रमे त्रण खंड साधीने वासुदेवनी राजलीलाना सुख भोगवतां थकां एक दिवस नाटक थातुं हतुं तेवामां राजाने निद्रा आववा लागी तेवारे शय्यापालकने कह्युं के मने निद्रा आवी जाय तेवारे ए नाटक करनाराओने शीख आपी देजो तो पण ते शय्यापालके श्रोत्रेन्द्रियना रसे करी तेमने गीत गान करतां वारी राख्या नहीं, एटलामां त्रिपृष्ठ जागृत थइने बोल्यो के अरे! आ नाटकीआने शा वास्ते रजा आपी नहीं? तेवारे शय्यापालके कह्युं के प्रभो! श्रोत्रेन्द्रियना रसे करी हुं रजा आपतां चूकी गयो. ते सांभली त्रिपृष्टने क्रोध चड्यो पछी सीशुं गरम करी तेनो ऊनो ऊनो रस शय्यापालकना कानमां रेडाव्यो तेथी ते मरण

पामीने नरके गयो. ए रीते ते वासुदेवना भवमां घणा म्होटां पापोपार्जन करी चोराशी लाख वर्षनुं आयुष्य भोगवीने एंशी धनुष प्रमाणना शरीरनो त्याग करी मरण पामीने ओगणीशमां भवे सातमा नरकने विषे नारकीपणे जइ उपन्यो १९, त्यांथी मरण पामीने वीशमां भवे सिंह थयो २०, त्यांथी मरण पामीने एकवीशमां भवे चोथा नरकने विषे नारकीपणे जइ उपन्यो २१, त्यांथी मरण पामी घणुं संसार भ्रमण करी बावीशमां भवे रथपुर नगरे प्रियमित्र नामे राजानी विमला नामे राणी, तेनी कूंखने विषे पुत्रपणे उपन्यो, मावित्रे विमल एवुं नाम दीधुं. अनुक्रमे सर्व कलानो पारगामी थयो, पिताये तेने राज्य सोंप्युं. एक दिवस वनमां क्रीडा करवा गयो त्यां पाशमांहेथी हरण छोडाव्यां, ते दयाना प्रभावे भद्रक परिणामे करी मनुष्यायु बांध्युं, छेवटे दीक्षा लइ उग्र तपश्चर्या करी, चक्रवर्तीनी पदवी उपार्जी, अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी चवीने त्रेवीशमां भवे पश्चिम महाविदेहमां मूका नगरीनो धनंजय नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूंखे आवी उपन्यो, माताए चौद स्वप्नां दीठां, पछी पूरण मासे पुत्र जन्म्यो तेवारे मातपिताए म्होटा महोत्सवपूर्वक तेनुं 'प्रियमित्र' एवुं नाम दीधुं; ते अनुक्रमे छ खंड साधी चक्रवर्त्तीनी पदवी भोगवी अंते श्रीपोटिलाचार्य पासे दीक्षा लइ क्रोड वर्ष पर्यंत चारित्र पाली, चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पूरण करी, त्यांथी मरण पामी चोवीशमां भवे शुक्र नामा सातमे देवलोके सतरे सागरोपमने आयुषे देवतापणे ऊपन्यो २४, त्यांथी चवी पच्चीशमां भवे एहज भरतक्षेत्रमां छात्रिका नामे नगरीनो जितशत्रु नामे राजा तेनी भद्रा नामे राणीनी कूंखने विषे पचीश लाख वर्षने आयुखे 'नंदन' नामे राजपुत्र थयो, त्यां चोवीश लाख वर्ष सुधी गृहस्थावासे रहीने पछी पोटिलाचार्य पासे दीक्षा लइ एक लाख वर्ष पर्यंत दीक्षा पाली जावज्जीव सुधी मासखमण करी वीशस्थानकनुं तप

आराध्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म निकाचित उपार्जी अंते एक मासनुं अनशन करी त्यांथी काल करीने छवीशमा भवे दशमा प्राणत देवलोकने विषे 'पुष्पोत्तरावतंसक' नामना विमानमां वीश सागरोपमने आउखे देवतापणे उपन्यो २६, पछी त्यांथी चवीने मरीचिना भवमां जे कुलनो मद कर्यो हतो ते नीचगोत्रकर्मना उदयथी सत्तावीशमां भवने विषे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी देवानंदा नामे स्त्रीनी कूखे आवी उपन्यो. ए रीते प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषभदेव भगवाने भरत चक्रवर्त्तीनी आगल कह्युं हतुं के मरीचिनो जीव तीर्थंकर थाशे ते निश्चयथी थयो २७, हवे भगवान् श्रीमहावीर देवानंदानी कूखे अवतर्या ते समयने विषे त्रण ज्ञान सहित गर्भपणे आव्या, त्यां हुं देवलोकथी चत्रीश एवुं जाणे पण चववाना वखतनो जे वर्त्तमान एक समय सूक्ष्म काल छे ते न जाणे अने त्यांथी चव्या पछी हुं देवलोकथी चवीने देवानंदानी कूखे उपन्यो छुं एवुं जाणे. हवे जे रात्रिमां श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामी देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखे ऊपन्या, ते रात्रिमां देवानंदा ब्राह्मणी सुखशय्यामां कांइक सूती कांइक जागती अर्थात् थोडी निद्रामां रही थकी, उदार कल्याणकारी, उपद्रव रहित, धनकारी, मंगलकारी शोभाकारी एवां चौद म्होटां स्वप्न देखीने जागी; ते चौद स्वप्नानां नाम कहे छेः—पहेले स्वप्ने हाथी दीठो, बीजे वृषभ, त्रीजे सिंह, चोथे लक्ष्मी, पांचमे फूलनी माला, छट्ठे चंद्र, सातमे सूर्य, आठमे ध्वजा, नवमे कुंभ (कलश) दशमे पद्मसरोवर, अगीआरमे क्षीरसमुद्र, बारमे देव विमान, तेरमे रत्नोनो ढगलो (राशी), चौदमे निर्धूम अग्नि ए चौद स्वप्न कल्याणकारी, महामंगलनां करनारां देखीने जागी थकी हर्ष संतोष पामी, चित्तमां आनंद पामी, म्होटा प्रेम सहित मन थयुं, परम हर्ष ऊपन्यो, हर्षने विषे पसरतुं छे मन जेनुं, उत्कृष्ट सौम्य मन छे जेनुं, जेनां मनमां हर्ष उल्लास थयो छे, मेघनी धाराए करी हणायुं

एवुं कंदब–पुष्प जेम विकस्वर थाय तेम जेनां रोमे रोम विकस्वर थयां छे एवी थइ थकी, पूर्वे दीठेला स्वप्नोने याद करे, याद करीने सूवाना पलंग ऊपरथी उठे, उठीने पादपीठ थकी पण उतरे, उतरीने नही उतावली, नहीं धीरी एवी बे गतिनी वचमां ठहेरती थकी राजहंसीनी गति सरखी चालती थकी ज्यां ऋषभदत्त ब्राह्मण छे त्यां आवी, आवीने ऋषभदत्त ब्राह्मण प्रत्ये जय विजय शब्द करीने वधावे, वधावीने भद्रासन घटले बाजोठ ऊपर बेठी, त्यां मार्गमां आववानो खेद मटावीने, परसेवो उपशमावीने, बे हाथ जोडी दश नख एकठा करी मस्तके अंजली चढाने कहेवा लागी के हे स्वामिन् ! में आज रात्रे शय्यामां कांइक सूतां थकां हस्ति आदिक चौद स्वप्नां दीठां, तेनुं शुं फल थशे अने ते कया प्रकारना कल्याणने करनारां थशे ? तेवारे ऋषभदत्त ब्राह्मण देवानंदाना मुखथी एवुं सांभलीने पोताना हैयामां घणो खुशी थयो, जेवां पाणीनी धाराथी कदंब–पुष्प खिले तेवी तेनी रोमराजि प्रफुल्लित थई, ते स्वप्नोना अर्थ विचारवा लाग्यो, विचारीने देवानंदा ब्राह्मणीने कहे–उदारकारी हे देवाणुप्रिया ! तमे स्वप्नां दीठां ते मंगलकारी छे, तमे जे स्वप्नां दीठां तेनुं फल एवुं छे के धननो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे. निश्चे तमारे नव महीना ने साडा सात दिवस गया थकां सुकुमार छे हाथ पग जेना, हीन अंग रहित, संपूर्ण पांच इंद्रिय सहित शरीर जेनुं छे, लक्षण व्यंजन, अने गुणेकरी सहित तथा मानोन्माने करी सहित संपूर्ण भलुं शरीर जेनुं छे एवो पुत्र थाशे.

हवे लक्षण कोने कहीये ते कहे छे—

जे पुरुषनो ज्यारे जन्म थाय त्यारे तेना अंगमां पुण्यनी रेखा प्रमुख पडे तेने लक्षण कहीए.—'सहजं लक्षणं इति वचनात्' त्यां चक्रवर्त्ती तथा तीर्थंकरोने तो एक हजार ने आठ लक्षण होय अने बलदेव

तथा वासुदेवने एकसो ने आठ लक्षण होय, तथा बीजा सामान्य भाग्यवंत पुरुषोने बत्रीश लक्षण होय, तेनां नाम कहे छे—१ छत्र, २ वींजणो, ३ धनुष, ४ रथ, ५ वज्र, ६ काचबो, ७ अंकुश, ८ वावडी, ९ स्वास्तिक, १० तोरण, ११ तलाव, १२ सिंह, १३ वृक्ष, १४ चक्र, १५ शंख, १६ हाथी, १७ समुद्र, १८ कलश, १९ प्रासाद, २० मत्स्य, २१ यव, २२ यूप 'यज्ञनुं अंग', २३ थांभलो, २४ कमंडलु, २५ पर्वत, २६ चामर २७ काच, २८ बलद, २९ पताका, ३० लक्ष्मी, ३१ माला, ३२ मयूर; ए बत्रीश लक्षण पूर्वकृत पुण्यनां योगवाला पुरुषना हाथ पगना तलीयाने विषे होय ए आदि देइने एक हजार ने आठ लक्षण पण एवाज उत्तम प्रकारनां जाणी लेवां तथा वली प्रकारांतरे बत्रीश लक्षण कहे छेः—जेना नख, पग, हाथ, जीभ, होठ, तालु अने आंखोना खूणा; ए सात वानां रक्त होय 'सारां होय' ते पुरुष भाग्यवान जाणवो, ते सप्तांग लक्ष्मी भोगवे, तथा जेनी कांख, छाती, कोट एटले गलानी हडवटी तथा गलानो मण्यो, नाक, नख अने मुख ए छ वानां उंचां होय तो ते पुरुष सर्व प्रकारे उन्नति पामे. तथा दांत, चामडी, केश, आंगुलीना पर्व एटले आंगलीनी रेखा अने नख ए पांच जेनां पातलां होय 'सूक्ष्म होय' तो ते पुरुष घणो धनवान थाय तथा नेत्र, स्तननां अंतर, नाक, गलानो मण्यो अने भुजाओ ए पांच जेना लांबा होय ते पुरुषनुं आयुष्य म्होटुं होय, घणुं धन पामे अने पराक्रमी; होय, तथा ललाट, पेट अने मुख ए त्रण जेनां म्होटां होय ते पुरुष राजा थाय. वली ग्रीवा, जंघा अने पुरुष चिन्ह, ए त्रण जेनां लघु होय, 'टुंका' होय ते पुरुष राजा थाय, तथा बोलवानो स्वर, डुंटी एटले नाभी अने सत्व ए त्रण जेना गंभीर होय ते पुरुष पृथ्वीनो धणी थाय, अथवा प्रधान थाय एम जे पुरुषमां जेवां लक्षण होय ते पुरुषमां तेवो आचार पण होय, जेवुं रूप होय तेवुं धन पण होय, जेवो स्वभाव होय तेवो गुण पण होय ए प्रकारांतरे बत्रीश लक्षण कही देखाड्यां.

बीजां पण केटलाएक लक्षण कहे छे:—पद्म, वज्र, अंकुश, छत्र, शंख अने मत्स्य ए जेना हाथ पगमां देखाय ते पुरुष लक्ष्मीपति थाय; तथा जेना चीकणा आंबाना वर्ण जेवा नख होय ते पुरुष सुखी होय, तथा जेना चलकता उज्ज्वल अनारवत् स्नेह निविड एवां बत्रीश दांत पूरेपूरा होय ते राजा थाय अने जेना एकत्रीश दांत होय ते भोगी थाय, तथा त्रीश दांतवालो मध्यम कहेवाय अने त्रीशथी पण ओछा दांत जेना होय ते सामान्य पुरुष गणाय. जे पुरुष अत्यंत ठींगणो तथा अत्यंत लांबो तथा अत्यंत जाडो होय तेमज जे अत्यंत दुर्बल, अत्यंत कालो अथवा अत्यंत गौर वर्णवालो होय ए छ ने विषे सत्वपणुं होय सर्वं सत्त्वे प्रतिष्ठितमिति वचनात्. जेना मस्तकने जमणे भागे सवलो भमरो होय तो शुभ जाणवो अने अवलो भमरो होय तो अशुभ जाणवो, तथा जेना हाथने विषे एक पण रेखा न होय अथवा घणी रेखाओ होय ते पुरुषनुं आयुष्य अल्प होय, तथा जेने देवपूजानी आंगुलीनां छहेला वेढाथी अधिक कांइक उंची टचली आंगुली होय ते पुरुष धनवान् होय, तेनी मातानो पक्ष घणो होय, तथा जेना मणीबंधथी वापनी रेखा तथा करतलथी वित्तनी रेखा अने आयुष्यनी रेखा जेनी संपूर्ण होय ते पुरुषनुं गोत्र, धन तथा आउखुं संपूर्ण होय, अथवा आयुषनी रेखा जेटली आंगुली अतिक्रमे तेटली पचवीशी आउखाना वरसनी जाणवी, तथा जेना अंगुठाने मध्यभागे यव होय ते पुरुष विद्यावंत यशस्वी होय अने अजवाला पक्षमां तेनो जन्म जाणवो. तथा जेनां नेत्र रक्त होय तेनुं पासुं स्त्री मूके नहीं, तथा जेनां नेत्र पीलां होय तेने धन मूके नहीं, तथा जेनी भुजा दीर्घ होय तेने ईश्वरपणुं होय, तथा जेनुं दृढ शरीर होय तेने सुख घणुं होय, जेना हाथ पगने विषे कमल, छत्र, अंकुश, शंख, मत्स्य प्रमुख होय ते पुरुष म्होटा लक्षणवालो होय, तथा जेना नख राता होय तेने धननुं

सुख घणुं होय, तथा जेना नख ऊजला होय ते भिक्षुक होय, तथा जेनां नख लुखा होय ते अनाचारी होय. वली शरीरमांहे मुख प्रधान छे, ते मुखमां वली नासिका छे ते प्रधान छे, वली नासिकामां नेत्र छे ते प्रधान छे माटे जेनां जेवां नेत्र होय तेनो तेवो शील एटले आचार पण होय तथा जेवी नासिका तेहवुं आर्यपणुं होय, जेवुं रूप होय तेवुं वित्त होय, जेवुं शीयल होय तेवा गुण होय, उक्तंच—

यथा नेत्रं तथा शीलं, यथा नासा तथाऽऽर्ज्जवं ।
यथारूपं तथा वित्तं, यथा शीलं तथा गुणाः ॥ १ ॥

हवे व्यंजननुं स्वरूप कहे छे–जे जन्म्या पछी अंगमां प्रगट थाय तेने व्यंजन कहीए. जेमके मसो, तिल अने लसण इत्यादिक सर्व व्यंजन जाणवां, ते पुरुषने जमणी बाजुए होय तो सारां जाणवां अने स्त्रीने डाबी बाजुए होय तो सारां जाणवां, हवे गुणनुं स्वरूप कहे छे–जेमां सोभाग्यपणुं, उदारपणुं, शान्तपणुं, गंभीरपणुं अने धैर्यपणुं इत्यादिक होय ते सर्व गुण जाणवा.

हवे मानोन्माननुं स्वरूप कहे छे–पुरुष प्रमाणे पाणीथी भरेली कुंडीमां पच्चीश वर्षनां पुरुषने बेसाडवो पछी ते पुरुषना बेसवा थकी जो एक द्रोण भार पाणी कुंडीमांथी बाहेर नीकले तो ते पुरुष मानोपेत एटले प्रमाण सहित जाणवो अने जो त्राजवामां तोलतां ते पुरुषनो अर्द्ध भार प्रमाण तोल थाय तो ते उन्मानोपेत पुरुष जाणवो. इहां तोलनी वार्तांना प्रसंगमां भारनुं प्रमाण कही देखाडे छे–प्रथम छ सरसवे करी एक यव थाय, त्रण यवे एक चिणोठी थाय, त्रण चिणोठीये एक वाल थाय, सोल वाले एक गदीयाणुं थाय, दश गदीयाणे एक पल थाय, दोढसो पलनो एक मण थाय, दशमणनी एक धडी थाय, दश धडीए एक भार प्रमाण थाय, एवा अर्द्धभारे तोलाय ते पुरुष उन्मानोपेत (मान–रहित) जाणवो. ए रीते पोणा चार मण उन्मानना थाय छे.

वली जे पुरुषनुं पोताने आंगले भरतां पोतानुं शरीर एकसो ने आठ आंगलनुं होय ते उत्तम पुरुष जाणवो, तेमां बार आंगलनुं मुख होय तेने नवे गुणीये तेवारे १०८ थाय ते मानोपेत पुरुष जाणवो तथा जेनुं छन्नुं अंगुलनुं शरीर होय ते मध्यम (सम) पुरुष जाणवो, जेनुं चोराशी आंगुलनुं शरीर होय ते हीन पुरुष जाणवो अने श्रीतीर्थंकरनुं तो एकसो वीश आंगुलनुं शरीर होय केमके तीर्थंकरने माथे बार आंगुलनी उष्णीष राखडीने ठामे होय ते माटे एवो सर्व अंगे सुंदर, चंद्रमा समान सौम्य आकार वालो, जेनुं मनोहर प्रीतिकारी दर्शन छे एवा सुरूपवंत देवकुमार समान पुत्रने तुं जणीश.

ते बालक केवो थाशे ते कहे छे—ते पुत्र युवान अवस्था पामे थके ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ए चार वेद तथा पांचमो इतिहास पुराण शास्त्र, छठो नाम कोश निघंटु नाम माला ए सर्व छ ए शास्त्रने अंग उपांग सहित तेना तात्पर्यनो जाणवा वालो थशे, चार वेदनो भणाववा वालो थशे, जे भूलशे तेने बताववा वालो भूल देखाडवा वालो थशे, जूठुं बोलशे तेने वर्जवा वालो थशे, शुद्धनो धारण करनारो थशे, पारगामी थशे, छ अंगनो जाण थशे, साठ अर्थ छे जिहां एवा सृष्टि तंत्र शास्त्र तथा कपिलशास्त्रनो जाणनार थशे, गणित शास्त्रनो जाणनार थशे, अक्षर शिक्षमां निपुण थशे, क्रिया शास्त्रमां निपुण, व्याकरणनो जाणनार, छंद जोडवामां दक्ष, टीकानो जाणनार, ज्योतिष शास्त्रमां प्रवीण एम बीजा पण ब्राह्मणोनां शास्त्रोमां अने परिव्राजकोनां शास्त्रोमां अत्यंत निपुण (डाह्यो) त्हारो पुत्र थाशे. माटे तमे रूडा स्वप्नां दीठां, जावत् आरोग्यकारी स्वप्ना तमने आव्यां एवुं वारंवार केहेतो हवो अने पोते पण अनुमोदना करतो हवो.

हवे देवानंदा ब्राह्मणी ऋषभदत्त ब्राह्मणनां मुखथी एवा अर्थ सांभलीने, तेने मनमां धारी राखीने, हर्ष संतोषयुक्त हृदय वाली थइ थकी

हाथ जोडी, दश नख भेला करी मस्तके चडावी कहेती हवी के देवा-णुप्रिय ! जे ए वात जेम तमे कही ते तेमज छे, ए सत्यज छे खोटी नथी, जे तमे कहो छो ते सर्व संदेह रहित छे एवुं कहीने ते स्वप्नो रूडा प्रकारे अंगीकार करीने, ऋषभदत्त ब्राह्मणनी साथे मनोहर मनुष्य संबंधि सुख भोगवती थकी विचरे छे. ते कालने विषे शक्रेन्द्र देवताओ-नो राजा जेना हाथमां दैत्योने विदारण करनारुं वज्र छे जेणे पूर्वना भवमां श्रावकनी पांचमी प्रतिमा सो (१००) वार वहन करी तेणे करी शतक्रतु एवुं बीजुं नाम ते पूर्वना कार्त्तिकशेठना भवनी अपेक्षाथी छे. ते कार्त्तिक शेठनी कथा कहीये छैयें–पृथ्वीभूषण नामे नगरने विषे प्रजापाल नामे राजा हतो, ते नगरमां राजानो घणो मानीतो अने घणो धनाढ्य जैनधर्मी, परम श्रावक एवो कार्त्तिक नामा शेठ रहेतो हतो, तेणे श्रावकनी अगीआर प्रतिमा माहेली पांचमी प्रतिमा सो वार वही तेथी तेनुं शतक्रतु नाम लोकोमां प्रसिद्ध थयुं, एम करतां एक समये गैरिक नामा तापस महिने महिने पारणुं करे छे ते परिव्राजके नगरनी बाहेर आवी उतारो कर्यो राजा आदिक सर्व लोक तेने वांद्वा गया पण एक कार्त्तिकशेठ शुद्ध समकिति छे माटे वांद्वा गयो नहीं तेथी तेना ऊपर तापस क्रोध करवा लागो, एवामां ते ताप-सने राजाये पोताने घेर जमवाने नोतरुं दीधुं, तेवारे तापसे मनमां विचार्युं के बीजा तो सर्व लोक मने वांद्वा आव्या पण एक कार्त्तिक शेठ जैनधर्मी छे ते मने पगे लाग्यो नथी माटे हवे तेने नमावुं एम चिंतवी राजाने कहेवा लाग्यो के राजन् ! कार्त्तिक शेठ पोतानी पीठ ऊपर खीरनी थाली राखीने भोजन करावे तो हुं तमारे घेर जमवा आवुं. ए वात राजाए कबूल करी तापसने पारणुं करवानुं कहीने, पछी राजा कार्त्तिकशेठ पासे आवीने कहेवा लाग्यो के म्हारो गुरु गैरिक नामे तापस म्हारे घेर जमवा आवशे तेने तमे पीरसवा आवजो ते सांभळी

शेठ बोल्यो के हुं सम्यक्त्व धारी छुं माटे म्हारे ए वात योग्य नथी पण तमारी वस्तीमां रहुं छुं माटे शास्त्रमां "रायाभिओगेणं" ए आगार छे ते आगारे करी तमारी आज्ञाथी जमाडीश परंतु म्हारा भक्तिभावे करी जमाडीश नहीं, पछी तापस जमवा आव्यो तेवारे शेठे खीर पीरसी, पण तापस जम्यो नहीं अने कहेवा लाग्यो के शेठ वांसो मांडे तो पात्र मूकी भोजन करुं पछी राजाना कहेवाथी शेठे आडो थइ वांसो मांड्यो शेठना हाथनी अंगुलीमां वींटी पहेरी हती तेमां जिन-प्रतिमा हती तेने नमस्कार कर्यो. हवे तापस शेठनी पीठ ऊपर ऊनुं ऊनुं खीरनुं पात्र मूकी भोजन करतो जाय छे अने आंगुलीए करी शेठनुं नाक पण घसतो जाय छे ने शेठने चेष्टामां कहेतो जाय छे के जो मुजने पगे लागवा न आव्यो तो हुं आ त्हारुं नाक कापुं छुं अने हमणा वारंवार तुजने म्हारा आगल नमावुं छुं एम चेष्टा करतो तापस पारणुं करीने पोताने स्थानके गयो अने पाछलथी गरम थाल शेठनी चामडीमां चोंटी गयो ते घणे कष्टे राजाए छोडाव्यो. हवे शेठे विचार्युं के जो म्हें पहेलांज दीक्षा लीधी होत तो आज एवी हेलना थात नहीं एवुं चिंतवी वैराग्य पामीने शेठ एक हजार ने आठ वणिक्पुत्रोनी साथे श्रीमुनिसुव्रत स्वामीनी पासे दीक्षा लइ द्वादशांगी भणी, बार वर्ष चारित्र पाली सौधर्मेन्द्र थयो अने गैरिक तापस पण अज्ञान तप करी मरण पामीने इंद्रनुं वाहन ऐरावत नामा हाथी थयो पछी ते देव हाथीनुं रूप करी इंद्रनी पासे आव्यो, जेवारे इंद्र तेना ऊपर चढवा लाग्यो तेवारे ऐरावते देखीने अवधिज्ञाने करी जाण्युं के अरे! आ तो कार्त्तिक शेठ छे एवुं जाणी नासवा मांड्यो पण इंद्र तेने पकडीने ऊपर चढ्यो तेवारे शक्रेन्द्रने बीवराववा सारुं हाथीए बे रूप कर्यां ते देखी इंद्रे पण बे रूप कर्यां, वली हाथीए चार रूप कर्यां त्यारे इंद्रे पण चार रूप कर्यां, पछी इंद्रे अवधिज्ञानथी पूर्वनो भव जोइ, हाथीने तर्जना करी चलाव्यो

अने कह्युं के अरे गैरिक ! हवे तुं क्यां छूटी जाइश तुं पूर्वनो भव जाणतो नथी ? जे म्हारी पीठ ऊपर थाल राखी जम्यो हतो ? तो हमणा तुं म्हारुं वाहन थयो छे माटे जे बांध्या कर्म ते भोगव्या विना छूटको नथी एवुं सांभली, अपराध खमावी मूलगुं रूप धारण करीने हाथी शांत थयो ए इंद्रमहाराजना पूर्वला भव संबंधि कार्त्तिक शेठनी कथा कही.

शक्रेंद्रनी स्वाभाविक तो बे आंख्यो छे परंतु पांचशो देव ते इंद्रना काम करवा वाला छे ते पांचसो देवोनी हजार आंख्यो एना काममां आवे माटे सहस्राक्ष एवुं नाम छे, तथा महामेघ जेने वशमां छे माटे मघवा एवुं नाम छे, तथा पाक नामा दैत्यने शिक्षा दीधी माटे पाकशासन एवुं नाम छे एवो शक्रेन्द्र दक्षिणार्द्ध लोकनो ठाकुर, स्वामी, ऐरावत जेनुं वाहन छे, सुरनो इंद्र, बत्रीश लाख विमाननो मालेक, रजरहित स्वच्छ निर्मल एवो वस्त्रनो धारण करनारो, लंबायमान माला मुकुट नवा सुवर्णना कुंडल तेणे करी घसाता एवा गाल छे जेना वली म्होटी ऋद्धि, म्होटो यश, म्होटी कांति, म्होटुं महात्म्य, म्होटुं सुख, म्होटो बल लांबी पुष्पोनी माला धारण कर्याथी देदीप्यमान छे शरीर जेनुं एवो इंद्र ते सौधर्म देवलोकमां, सौधर्मावतंसक विमानमां सौधर्म नामे सभाने विषे, शक्र नामा सिंहासन ऊपर बेठो थको, बत्रीश लाख विमानोमां वसनारा देवो, चोराशी लाख समानिक देवो, तेत्रीश त्रायत्रिंसक गुरुस्थानीया देवो तथा सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए चार लोकपाल देवो, आठ अग्रमहीषी ते शोल हजार देवीना परिवार सहित, त्रण परषदा, सात कटक, सात कटकना स्वामी, प्रत्येक एकेकी दिशामां चोराशी चोराशी हजार गिणतां चार दिशामां मली त्रण लाख ने छत्रीश हजार आत्मरक्षाकारी देवो तथा बीजा पण घणा सौधर्म देवलोकना वसवा वाला देव तथा देवीओ तेमनी ऊपर

रक्षाकारी पणुं, अग्रेसर पणुं, नायक पणुं, पोषक पणुं, सर्वमां म्होटाइपणुं, सर्वने पोतानी आज्ञा मनावतो थको, सेनापति पणुं करतो थको, पोते पालतो थको तथा बीजाने पलावतो थको, तथा म्होटा स्वरसहित नाटक गीत, वाजित्र वीणा, करताल अने बीजा पण घणा वाजित्र जेवा के मृदंग पडह प्रमुख वाजाओना शब्द तेणे करी सहित दिव्य देव संबंधि भोग भोगवतो थको विचरे छे एवा समयने विषे आ प्रत्यक्ष जंबूद्वीप नामा द्वीपने विस्तीर्ण एवो म्होटो अविधिज्ञान तेणे करी देखतो थको विचरे छे ते कालने विषे ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने ऋषभदत्तनामा ब्राह्मण कोडालगोत्रनो धणी, तेनी देवानंदानामे भार्या जालंधर गोत्रनी तेनी कूखने विषे गर्भ पणे उपन्या देखीने मनमां घणो आनंद पाम्यो, हृदयमां घणो हर्ष पसर्यो, मेघ धाराए हणायुं एवुं कदंब-वृक्षनुं फूल तेनी पेरे रोमाञ्च विकस्वर थयां, प्रधान कमलनी पेरे नयन अने वदन प्रफुल्लित थयां, भगवंतनुं अवतरवुं देखीने तेना दर्शनथी उत्पन्न थयो जे हर्ष तेना वश थकी प्रकर्षे करी चलायमान थया छे प्रधान कडां, कंकण, बेरखा बाजुबंध, मुकुट, कुंडल, हार अने म्होटां घरेणां जुमखां प्रमुख जेनां एवो इंद्र, ते तत्काल सिंहासनथी उठी ऊभो थइने चलकतो मणिरत्ननो बाजोट ते ऊपरथी उतरीने भला वैडुर्यरत्न, मरकतरत्न, अरिष्टरत्न, अंजनरत्न, तेणे करीने निपुण कारीगरे घडेली देदीप्यमान मणिरत्ने जडेली एवी पावडी (चांखडी) पगथकी उतारी, पछी अखंड वस्त्रनो एगसाडी उत्तरासंग करीने, बे हाथ जोडीने तीर्थंकर श्री महावीर देवने साहामो सात आठ पगलां जइ पोताना विमानमांहे रह्यो थको डाबो ढींचण भूमिकाने विषे थापे, थापीने लगारेक नमीने त्रण वार मस्तक धरतीये लगाडे, लगाडीने वली चोथीवार लगारेक नमीने थोडो उंचो थइने कडां, कंकण, बेरखा, बाजुबंध, झुंमणां तेणे करी सहित थंभायली एवी भुजाओने संहरीने (वालीने)

दशनख भेला करी, बे हाथ जोडी मस्तके अंजली करीने शक्रस्तवनो पाठ बोल्यो—

नमस्कार होजो श्री अरिहंत भगवंत प्रत्यें, आदिनां करवा वाला, चतुर्विध श्रीसंघ रूप तीर्थना करवा वाला, श्री संघने तारवा वाला, बीजाना उपदेश विना पोतानी मेले बोध पाम्या, पुरुषोमांहे उत्तम, पुरुषोमां सिंह समान, पुरुषोमां प्रधान पुंडरीक कमल समान, पुरुषोमां गंधहस्ति समान जेम गंधहस्तीने देखी बीजा हस्ति नाशी जाय तेम श्रीतीर्थंकर भगवानने देखी परवादी रूप हाथीओ नाशी जाय एवा भगवान, लोक मांहे उत्तम, लोकनां नाथ, लोकना हित करनार, लोकमां दीपक समान, लोकने विषे उद्योत करनार; अभयदानना दातार, ज्ञान चक्षुना देवा वाला, मोक्षमार्गना दातार, कर्मथी बीक पामनारा—जीवोने शरणना दातार, संयम रूप जीवितव्यना दातार, बोधबीज जे सम्यकत्व तेना दातार, सर्व मरणना मटाववा वाला, धर्मना दातार, धर्म उपदेश देवावाला, धर्मना नायक, धर्ममां सारथी समान जेम सारथी रथने शुद्धमार्गमां लइ जाय तेम भगवान धर्ममार्गथी भ्रष्ट थयेला लोकोने धर्म मार्गमां लइ जाय. एना ऊपर मेघकुमारनुं दृष्टांत कहे छे—

पुत्रः श्रेणिकधारिण्योः, श्रुत्वा वीरविभोर्गिरः ।
प्रबुद्धोष्टौ प्रिया स्त्यक्त्वा, मेघो दीक्षामुपाददे ॥ १ ॥

राजगृही नगरीने विषे श्रेणिकराजानी धारिणी नामे राणीनी कूंखे मेघकुमार, पुत्रपणे ऊपन्यो, ते वखत गर्भना प्रभावे करी राणीने एवो दोहोलो उपन्यो के वर्षाकालमां आपणे राजा, तथा राणी, बेहु जण हाथी ऊपर बेशीने वनमां जइ क्रीडा करीये? ते अभयकुमारे पूर्व भव संगति देवतानुं आराधन करीने दोहोलो संपूर्ण कर्यो, पछी नव मासे पुत्रजन्म थयो, तेनो जन्ममहोत्सव करी, स्वजन कुटुंबने जमाडी ' मेघकुमार ' नाम पाडयुं, अनुक्रमे यौवन अवस्था पाम्यो,

तेवारे पिताए आठ कन्या परणावी, तेमनी साथे विषयसुख भोगवतो विचरे छे, एहवा समयमां राजगृही नगरीने विषे श्रीमहावीर समोसर्या, श्रेणिकादिक सर्वलोक वांद्वा गया, तेमनी साथे मेघकुमार पण गया, त्यां भगवंतनी देशना सांभली, प्रतिबोध पामी, आठ कन्या त्यागी, माता पितानी आज्ञा लेइ दीक्षा लीधी. पछी भगवाने पण ग्रहण, आसेवना, साधुनो आचार शीखववा निमित्ते स्थविरोने भलाव्यो. रात्रीमां संथरवानी वेलाये अनुक्रमे सर्व साधुने छेडे मेघकुमार ऋषिनो संथारो आव्यो, त्यां साधु, मात्रुं करवाने उठ्या, तेवारे मेघकुमारने वारंवार पगनी ठोकर लागवा लागी, तेथी एक क्षण वार पण निद्रा न आवी, धूलथी भराइ गयो, आखी रात जाग्यो अने विचार कर्यो के क्यां म्हारी सुखशय्या, अने क्यां आ भूमिने विषे लोटवुं, अने वली एक रात्रिमां केटलो उपसर्ग थयो, तो ए कदर्थना हुं केटलाक काल सुधी सहन करुं, माटे ए दीक्षा म्हाराथी तो पले नही, तो हवे प्रभात समये भगवंतने पूछी हुं म्हारे घेर जइश? हजी कांइ बगडयुं नथी एम विचारी प्रभाते ओघो, मुहपत्ती लइ, भगवंत पासे आव्यो, तेवारे भगवंत पण मीठा वचने बोल्या के हे मेघर्षि! आज रात्रिमां तमाराथी साधुना पग न खमाया, निद्रा न आवी, तेथी मनमां माठुं ध्यान ध्यायुं के हुं प्रभातमां घेर जाइश ए वात सत्य छे? मेघकुमार बोल्यो हा महाराज! सत्य छे प्रभु बोल्या के मेघकुमार! ए तमने योग्य नथी जे भणी नरक तिर्यंचनां दुःखो तो जीवे अनंतिवार दीठा छे तेनी आगल आ दुःख, कोण लेखामां गणे? एवो कोण मूर्ख छे जे चक्रवर्त्तीनी रुद्धि मूकीने दासपणुं वांछे? माटे मरवुं सारुं छे पण चारित्र भंग करवो सारो नथी ए चारित्रनुं ज्ञान सहित कष्ट छे, ते आगल घणां फल देनारुं थाशे तथा जोके तें पूर्व भवे पण धर्मने अर्थे घणां अकाम कष्ट भोगव्यां छे, ते पण महाफलादायक थयां ते पूर्व भव तुं सांभल. आ भवथी त्रीजा

भवने विषे वैताढ्य पर्वतनी पासे छ दंतोशल सहित श्वेत वर्णे एक हजार हाथणीनो नायक 'सुमेरुप्रभ' नामे तुं हस्ती हतो, त्यां एकदा दावानल लाग्यो देखी, भय पामीने त्यांथी नाठो तृषाए पीड्यो थको एक सरोवरमां कादव घणो हतो अने पाणी स्वल्प हतुं तेमां मार्गने अजाणतो पाणी पीवाने पेठो, त्यां कर्दममांहे खूतो, पाछो निकली शक्यो नहीं, एटलामां एक पूर्व भवनो वैरी बीजो हाथी त्यां आव्यो तेणे दंतोशलने प्रहारे करीने तुजने हण्यो, तेथी सात दिवस पर्यंत महा वेदना भोगवी, एकशो वीश वर्षनुं आयु पूर्ण करी, मरण पामी, विंध्याचल पर्वतनी भूमिकाए तुं चार दंतोशलवालो, रातेवर्णे सातशे हाथणीनो नायक, 'मेरुप्रभ' नामे हस्ती थयो, त्यां पण एक समये दावानल लाग्यो देखी तेने जातिस्मरण उपज्युं, तेथी पूर्वभव दीठो, पछी दावानलनो भय टालवासारुं चार गाउ लगे भूमिकानुं मांडलुं बनावी शुद्ध कीधुं; तेमां तृणवेलि मात्र राखतो हतो नहीं उगतां पहेलांज उखेडी नाखतो हतो, एम घणां वर्ष वीत्या पछी, एकदा वली म्होटो जंगी दावानल लागो, तेवारे सर्व वनचर जीव, आवी मांडलामां रह्यां, तुं पण तत्काल आवी मांडलामां रह्यो, मांडलामां तिल जेटलो पण मार्ग रह्यो नहीं, एवुं संकीर्ण थयुं, एटलामां तें खरज खणवाने पग ऊंचो लीधो, ते पगने स्थानके निराली भूमिका देखी एक शशलो त्हारा पग नीचेनी भूमिये आवी बेठो पछी पग नीचो मूकतां नीचे शशलो दीठो एटले तुजने दया आवी तेथी पग अधर राख्यो, अढी दिवसे दावानल उपशम्यो, तेवारे शशला प्रमुख सर्व जीव, पोत पोताने स्थानके गयां, त्हारो पग लोहीये भराणो तेने नीचो मूकतो थको पर्वतना कूटनी पेरे तुं हेठो पड्यो. त्रण दिवस सुधी भुखतृषाए पीडातो सो वर्षनुं आयु भोगवी दया सहित मरण पामी, हे मेघकुमार! तमे राजकुले उपन्या छो. अकाले मेघवृष्टिनो दोहोलो त्हारी माताने

थयो माटे त्हारुं नाम मेघकुमार स्थाप्युं, जे वखते तुजने हाथियोए मार्यो, ते वखते तो तिर्यंचनुं करेलुं दुःख हतुं, तो ते दुःख आगळ आ साधुना संघट्टथी तुं शुं दुःख धरे छे ? ते साधु तो जगद्वंद्य छे, एमना चरणनी रज तो पुण्यवान् जीवने लागे माटे साधुना पग लागवाथी दुःख न आणवुं. एवां भगवाननां वचन सांभली जातिस्मरण उपन्युं, तेणे करी पूर्वला भव दीठा, पछी प्रभुने पगे लागी चारित्रने विषे स्थिर थइने एवो अभिग्रह लीधो के आज पछी म्हारे बे नेत्रनो जापतो राखवो माटे ते टालीने बीजा शरीरनी शुश्रूषा, गमे तेवुं संकट पडे तो पण न करवी एवो जावजीव सुधीनो अभिग्रह करी, निरतिचार पणे शुद्ध चारित्र पाली, अंते एक मासनी संलेषणा करी. विजयनामा अनुत्तर विमानमां देवपणे उपन्यो, त्यांथी चवी महाविदेह क्षेत्रमां उपजी मोक्ष पामशे, माटे भगवंतने धर्मसारथि सरखा कहिये ।

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते—
श्री कल्पसूत्र-बालावबोधे प्रथमं व्याख्यानं समाप्तम् ।



अथ द्वितीय व्याख्यान प्रारंभः ।

इन्द्र नमस्कार करे छे—

धर्मना चार अंत कर्या एवा चक्रवर्त्ति समान भगवान छे जेम चक्रवर्त्ति त्रण बाजु समुद्र अने एक बाजु चुल्लहेमवंत पर्वत पर्यंत राज्य करे तेम भगवान दानादि चार प्रकारनो धर्म प्ररूपे माटे धर्म चक्रवर्त्ति कहीये, संसार समुद्रमां डूबता प्राणीओने द्वीप समान शरणागत वत्सल, क्यांय हणाय नहीं एवा ज्ञान अने दर्शनना धरवावाला, जेमने छद्मस्थ पणुं रह्युं नथी, पोते राग द्वेषने जीत्या, बीजाने जीतावे, पोते संसार समुद्रथकी तर्या, बीजाने संसार समुद्रथी तारे, पोते तत्त्वने जाण्या छे,

बीजाने तत्त्वनो बोध करे, पोते कर्म रहित थया, बीजाने कर्मथी मूकावे; सर्वज्ञ सर्वदर्शी, शिव एटले निरूपद्रव, अचल, रोग रहित, जेनो अंत नहीं अने क्षय पण नहीं, बाधा रहित, ज्यांथी फरी पाछुं संसारमां आववुं नथी एवुं जे सिद्धिगति नामक स्थानक तेने पाम्या एवा जिनेश्वरने म्हारो नमस्कार होजो, जीत्या छे भय जेमणे एवा भगवंतने नमस्कार हो, श्रमण भगवंत श्री महावीर छेला तीर्थंकर, आदिना करनार पहेला तीर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामीए देखाड्या थावत् मोक्षमां जावावाला तेमने हुं वांदुं छुं; भगवान तो त्यां गर्भमां छे अने हुं देवलोकमां छुं माटे त्यां रह्यां थकां आपे मने देखवो एवुं कहीने भगवानने नमस्कार करे, करीने सिंहासन ऊपर पूर्वदिशानी स्हामुं मुख करीने बेठो तेवारे शक्रेंद्रनां मनमां एवो विचार उत्पन्न थयो—

श्रीअरिहंत भगवंत, अथवा चक्रवर्ति, अथवा वासुदेव, अथवा बलदेव आदि उत्तम पुरुष छे, ते अंतकुल जे क्षुद्रजाति तेने विषे, तथा प्रांतकुल ते अधमाचारीना कुलने विषे, तथा अल्प परिवारवाला तुच्छ कुलने विषे, तथा निर्धन ते दरिद्रीना कुलने विषे, तथा अदातार ते कृपणनां कुलने विषे, तथा चारण प्रमुख भीखारीना कुलने विषे, तथा ब्राह्मणना कुलने विषे आव्या, आवे अने आवशे. निश्चयथी ए वात पूर्वे थइ नथी, वर्तमान काले थाती नथी अने आगामिक काले थाशे पण नहीं एटले ए शिलाका पुरुष तो निश्चे थकी पूर्वोक्त अंत कुलादिकने विषे आव्या पण नथी, आवता पण नथी अने आवशे पण नहीं ए पूर्वों-

---

१ एम सर्वे तीर्थंकरोना एक चवन कल्याणक, बीजुं जन्मकल्याणक त्रीजुं दीक्षा कल्याणक, चोथुं ज्ञानकल्याणक, अने पांचमुं निर्वाणकल्याणक, ए पांच कल्याणके सदा कालें शक्रस्तव कहे एटले शक्र जे इंद्र ते स्तव एटले थुणे माटे तेने शक्रस्तव कहीये। ते इंद्र महाराज शक्रस्तव कहीने रोमांचित थाय, आनंद पामे, वली ए पांच कल्याणके चोशठे इंद्र भेला थइने अठाइ महोत्सव प्रमुख करीने प्रत्येक कल्याणकनो महिमा करे एवी सदा शाश्वत मर्यादा छे.

क अरिहंतादिक शिलाका पुरुष तो, निश्चय थकी श्रीऋषभदेव-जीये आरक्षक पणे जेने राख्या तेने उग्रकुल कहीये ते कुलने विषे, तथा जेने गुरुस्थानीया पणे राख्या तेने भोगकुल कहीये तेने विषे, तथा जेने मित्रस्थाने राख्या तेने राजन्य कुल कहीये तेने विषे, तथा प्रजा लोक-पणे थाप्या तेने क्षत्रियकुल कहीये तेने विषे, तथा इक्ष्वाकु कुलने विषे, तथा हरिवर्ष क्षेत्रना युगलीयानो जे परिवार तेने हरिवंश कुल कहीये एवा बीजा पण तथा प्रकारनां विशुद्ध जातिनां उत्तम कुलने विषे आव्या छे, आवे छे अने आवशे, ए मर्यादा छे. तथापि ए श्रीमहावीर स्वामी ब्राह्मणना कुलमां आवी उपन्या ए लोकने विषे अच्छेराभूत वात थइ एटले अनंती उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी जेवारे व्यतिक्रमे तेवारे कोइक काले एवा अच्छेरा थाय छे तेम आ अवसर्पिणीमां पण एवा दश अच्छेरा एटले आश्चर्यकारी वातो थयेली छे. एम इंद्र महाराज विचारे छे. दश आश्चर्य

हवे अवसर्पिणीने विषे जे दश अच्छेरां थयां ते वखाणे छे—त्यां प्रथम कोइ तीर्थंकरने केवलज्ञान उपन्या पछी उपसर्ग थाय नहीं अने श्रीमहावीर देवने केवलज्ञान उपन्या पछी गोशालाए उपसर्ग कर्यो, ते आवी रीते एकदा भगवंत श्रीमहावीर स्वामी विहार करतां सावत्थी नगरीये समोसर्या, तेवारे गोशालो पण, हुं तीर्थंकर छुं. एम लोकोमां कहेतो थको सावत्थीमां आव्यो, ते समये गौतमस्वामी गोचरीये गया. त्यां लोकोना मुखथकी एवुं सांभल्युं के आज नगरीमां एक महावीर-स्वामी अने बीजो गोशालो, ए बे तीर्थंकर आव्या छे. पछी संशयवंत थइने श्रीगौतम स्वामीये भगवंत पासे आवीने गोशालानी उत्पत्ति पूछी तेवारे प्रभुये कह्युं के शरवण ग्रामनो रेवासी मंखली भरडानी जाति शनिश्चरनो दान लेनारो तेनी सुभद्रा स्त्रीनो ए पुत्र छे, ब्राह्मणनी गाय-नी शालामां जन्म्यो तेथी मातापिताये 'गोशालो' नाम पाड्युं छे. ए

भिक्षा मागतो हतो ते आवीने म्हारो शिष्य थयो, छद्मस्थावस्थामां म्हारी साथे छद्मस्थ पणे छ वरस रह्यो हतो, म्हारी पासेथी भणीने कांइएक बहुश्रुत थयो छे, तेजोलेश्या पण शीख्यो छे, बीजुं वली दिशाचरो पासेथी निमित्तविद्या शीखीने ए मिथ्या जिननाम धरावे छे, परंतु ए तीर्थंकर नथी, एवी वात प्रभु पासेथी सांभलीने श्रीगौतमस्वामीए बीजा घणा लोको पासे वात करी, के गोशालो मंखली पुत्र छे, ते वात गोशालाने काने गइ, तेवारे गोशालो क्रोधायमान थयो. एवा समये भगवंतनो आनंदनामा शिष्य गोचरीये गयो तेने गोशाले बोलावीने कह्युं के हे आनंद! तने एक दृष्टांत कहुं ते सांभलो, "कोइएक चार वाणीया व्यापार करवाने अर्थे विविध प्रकारनां करियाणानां गाडां भरी परदेशे चाल्या मार्गमां कोइएक म्होटी अटवीमां पेठा, त्यां तृषा लागी तेथी उज्जाडमां पाणीनी गवेषणा करतां पाणी तो क्यांय दीठुं नहीं पण चार वाल्मिक एटले उदेहीनां शिखर (ढीम) दीठां अने तेना ऊपर नीलां वृक्ष उगेलां दीठां, तेथी जाण्युं के अहीआं अवश्य पाणी हशे? एवुं जाणी शिखर फोडयुं तेमांथी घणुं निर्मल शीतल जल नीकल्युं, ते सर्वजनोये पीने तृषा भांजी, वली बीजा वासणोमां पण पाणी भरी लीधुं, पछी बीजुं शिखर भांगवा मांड्युं, तेवारे तेमांथी एक वृद्ध वाणीयो बोल्यो के आपणुं काम थयुं, माटे हवे बीजुं शिखर फोडशो मा; एम वार्या थका पण तेओए बीजुं शिखर फोड्युं, तेमांथी सोनुं नीकल्युं, तेवारे लोभ लागो तेथी जो पण वृद्धे वर्ज्या तो पण त्रीजुं शिखर फोडयुं, तेमांथी रत्न नीकल्या वली वृद्धे घणो वार्या तो पण चोथुं शिखर फोड्युं, ते मांहेथी महा विकराल भयंकर दृष्टिविष सर्प नीकल्यो, ते सर्पे दृष्टिविषे करी सूर्य स्हामुं जोइने सर्वने बाली भस्म कीधा, एक सुशिक्षाना आपनार वृद्धने दया आणी जीवतो मूक्यो, ए दृष्टांते त्हारा धर्माचार्यने एटली संपदा प्राप्त थइ तो पण

असंतुष्ट थको म्हारो अपवाद लोको आगल बोलीने मने रोषवंत करे छे तेथी हुं त्यां आवी म्हारा तेजथी सर्वने बाली भस्म करीश, माटे तुं उतावलो जइने त्हारा धर्माचार्यने कहेजे, हुं वृद्धवाणीयानी पेरे मात्र एक तनेज जीवतो मूकीश, ए वात सांभली आनंदमुनि भयभ्रांत थयो थको भगवंत पासे आवीने गोशालाना सर्व समाचार कह्या, तेवारे भगवंते कह्युं के आनंद ! तमे गौतम प्रमुख सर्व साधुओने कहजो के अहींआं म्हारो कुशिष्य गोशालो आवशे, ते उपसर्ग करशे माटे तमे कोइ पण तेनी साथे भाषण करशो मा, जो बोलशो तो बाली भस्म करशे तेथी अरहा परहा टली रहेजो ते सांभली सर्व साधुओ एकांते बेशी रह्या; तथांपि सर्वानुभूति अने सुनक्षत्र ए बे साधु, भगवंत पासेज रह्या, एटलामां गोशालो आवीने भगवानने कहेवा लाग्यो के हे काश्यप ! तुं कहे छे जे म्हारो शिष्य गोशालो छे ते खरी वात छे पण त्हारो शिष्य जे गोशालो हतो ते तो मरण पाम्यो अने हुं तो बीजो छुं मात्र ते गोशालानुं शरीर परीषह सहन करवा सरखुं हतुं माटे में तेना शरीरमां प्रवेश करेल छे ते सांभली भगवान बोल्या के अरे गोशाला ! कोइ चोर चोरी करी नाठो होय तेनी पछवाडे वार चढी होय ते जोइने पहेलो चोर नाशी जवाने असमर्थ छतो एक तरणुं लइने पोताने ढांकवा सारुं आडुं आपे अने मनमां जाणे के हवे मने कोइ देखी शकशे नहीं तेथी शुं ते छानो रही जाशे ! तेम तुं पण म्हारी आगल केवी रीते छिप्यो रहीश तुं तेहज म्हारो शिष्य गोशालो छे ! एवुं सांभली गोशालो रोष आणीने भगवानने कहेवा लागो के अरे ! तुं जीवतो रहीश त्यांसुधी मने सुख थाशे नहीं एवा तेना तुच्छ बोल सांभलीने सुनक्षत्र मुनि बोल्या के अरे गोशाला ! तुं पोताना गुरुने सामुं बोले छे एतो तुं संसारमां अनंता भव भ्रमण करवानुं काम करे छे एटलुं बोल्यो तेटलामां गोशालाये तेनां ऊपर तेजोलेश्या न्हांखी तेथी

ते मुनि बली भस्म थइ गयो. फरी पण भगवानने गोशालो कडवां वचन कहेवा लाग्यो तेवारे सर्वानुभूति मुनि बोल्या तो तेने पण तेजोलेश्याये करी बाली भस्म कीधो ते बन्ने साधु मरण पामीने देवलोकमां गया. हवे भगवाने गोशालाने कह्युं के तुं चोरनी पेठे कां छिपतो रहेशे तेवारे भगवान ऊपर पण तेजोलेश्या मूकी ते तेजोलेश्या भगवानने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछी गोशालाना शरीरमां पेठी तेथी गोशालो दाझ्यो, तेना ताप थकी सात रात्रि सुधी विविध वेदना भोगवीने गोशालो मरण पाम्यो अने तेजोलेश्याना तापथी भगवाननां शरीरे वेदना थवा लागी, छ महीना सुधी लोहीठाण थयो, रेवती श्राविकानां घेरथी बीजोरापाक सिंह अणगार पासे मगावी भगवंते खाधो, तेथी शरीरे शाता थइ. एवी रीते जेनो नाम मात्र लीधाथी पण सर्व उपद्रव मटी जाय तेमने पण महा पीडा थइ एम तीर्थंकरने जिनपद लह्या पछी घटले केवलज्ञान उपन्या पछी उपसर्ग न थाय, ते थयो ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं.

हवे बीजुं अच्छरुं जे आ वर्त्तमान चोवीशीमां श्रीमल्लीनाथ ओगणीशमा तीर्थंकर स्त्रीदेवपणे उपन्या, तेनो संबंध कहे छे—आ जंबूद्वीपना श्री महाविदेह क्षेत्रने विषे सलिलावती विजयमां वीतशोका नामे नगरीनो बल नामे राजा तेने धारिणी नामे स्त्री छे, तेनो महाबल नामे पुत्र छे, ते यौवन अवस्था पाम्यो, तेवारे राजाये तेने पांचसो स्त्री परणावी, पछी वृद्धावस्थाये पुत्रने राज्य आपी, पोते दीक्षा लइ, चारित्र पाली मोक्षे पोहोतो, हवे महाबल राजा राज्य करे छे, तेने एक अचल, बीजो धरण, त्रीजो अभिचंद्र, चोथो पूर्ण, पांचमो वसु, छठो वैश्रमण, ए छ मित्र हता. एकदा ते साते जणे गुरु पासे धर्म सांभली दीक्षा लीधी, अगीआर अंग भण्यां अने ते साते जणे मांहोमांहे एवो संकेत कर्यो के आपण सर्वे जणाए छट्ठ अट्ठमादिक जे तप करवुं ते सरखुं

बराबर करवुं पण एक बीजाथी अधिकन्यून तप कोइए करवुं नहीं. ते प्रमाणे ते साते जण सरखुं तप करे, तेमां एक दिवस महाबल ऋषिना मनमां एवो विचार थयो के हुं एनाथी कांइ अधिक तप करुं के जे थकी हुं ए सर्वथी अधिक थाउं एवो निश्चय करी, कपट थकी ते छ जणथी छानो " जेवारे पारणुं करवानो दिवस आवे तेवारे छ जणने एम कहे के म्हारुं तो माथुं दुःखे छे, हुं आज पारणुं करीश नहीं तमें सुखे पारणुं करो. बीजे दिवसे वली तेमना सरखुं तप करे. " ए प्रमाणे कपट थकी वीशस्थानकतप कर्युं तेथी तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्युं; परंतु कपटने लीधे स्त्रीपणानुं कर्म बांध्युं. छेवट साते जणा बे मासनी संलेषणा करी चोराशी लाख पूर्वनुं आयु पाली मरण पामीने बत्रीश सागरोपमने आउखे विजयंतनामा अनुत्तर विमाने जइ उपन्या, पछी त्यांथी चवी एक अचलनो जीव तो अयोध्यानो 'सुप्रतिबद्ध' नामे राजा थयो, बीजो धरणनो जीव, चंपानगरीए 'चंद्रयशा' नामे राजा थयो, त्रीजो अभिचंद्रनो जीव, काशी नगरीए 'शंख' नामे राजा थयो, चोथो पूरणनो जीव, सावत्थी नगरीए 'रुक्मि' नामे राजा थयो, पांचमो वसुनो जीव कुरुदेशे 'अदीनशत्रु' नामे राजा थयो, छठ्ठो वैश्रमणनो जीव कपिला नगरीए 'जितशत्रु' नामे राजा थयो, अने सातमो महाबलनो जीव मिथिला नगरीए 'कुंभ' राजा तेनी प्रभावती राणीनी कूखे आवी 'मल्लीकुमरी' पणे उपन्यो, तेवारे माताए चौदसुपनां दीठां, आशु शुदि अगीआरशे पुत्रीपणे जन्म्या. अनुक्रमे यौवन अवस्था प्राप्त थइ, पछी अवधिज्ञाने करी पोताना छ मित्र, जूदे जूदे ठेकाणे उपन्या देखी, तेओने प्रतिबोध करवाने अर्थे अशोकवाडीमां रत्नजटित घर कराव्युं, तेनां छ बारणां कराव्यां, तेमां पोताना रूप सरखी रत्नजटित सोनानी एक पूतली करावी, हवे मल्लीकुमरी जेवारे भोजन करे, तेवारे ते रत्ननी पूतलीने माथे बारणुं कराव्युं छे ते बारणानी ऊपरथी एकेको कवल न्हां-

खती जाय अने फरी पाछुं ढांकणुं लगावी दीये, एम नित्य करती जाय.

एकदा अयोध्या नगरीना सुप्रतिबद्ध राजाए यक्षने देरे पूजा रचावी छे, त्यां फूलनी माला देखीने दूतने पूछयुं के तमे एवो फूलनो श्रीदाम क्यांहिं पण दीठो छे ? तेवारे दूत बोल्यो के राजन् ! मल्लीकुमरी घणी चतुर छे घणी रूपवती छे, ते जेवो फूलनो श्रीदाम बनावे छे तेहना लाखमां अंशे पण ए श्रीदाम नथी. हवे पूर्वभवना प्रेमथकी सुप्रतिबद्ध राजाए मल्लीकुमरीनी याचना करवाने कुंभराजा ऊपर दूत मोकल्यो अने कहेवराव्युं के तमारी बेटी मुजने परणावो इति प्रथम दूत. (१) तेवार पछी चंपानगरीना अरहन्नक प्रमुख व्यवहारिया प्रवहण भरी गंभीरपत्तने (द्वीपांतरे) चाल्या, एवा समयमां इंद्र महाराज अरहन्नक श्रावकनी प्रशंसा पोतानी सभाने विषे करवा लाग्या के 'धन्य छे अरहन्नकने, आज भरतक्षेत्रमां एना समान बीजो कोइ दृढ श्रावक नथी ?' ते इंद्रना वचनने कोइएक मिथ्यात्वी देवता अण सद्दहतो थको त्यां अरहन्नक पासे आवीने, ते देवताए समुद्रमां म्होटो उत्पात कर्यो ते जोई अरहन्नक तो सागारी अणशण करीने निश्चल मने श्रीवीतराग देवनुं स्मरण करवा लाग्यो, तेने देवताए घणोए चलाव्यो अने एवुं कह्युं के तुं श्रीवीतराग देवनुं स्मरण मूकीने हरि हरादिक देवोनुं स्मरण कर, तो उपसर्ग निवारण करूं, नहींतर त्हारां जहाज समुद्र मध्ये बूडावी दइश, एम कही जहाज समुद्रमां बूडाववा लाग्यो, ते जोइ सर्व लोक एकठा मली अरहन्नकने कहेवा लाग्या के देवताए कह्युं तेम करो, तो पण अरहन्नक श्रावकनुं समकित दृढ छे, तेथी चलायमान न थयो, ते जोइने देवता तुष्टमान थइ कुंडलाभरणनो जोडो आपी, अर्हन्नकने पगे लागीने कह्युं के अहो अर्हन्नक ! तमोने धन्य छे, हे कृत पुण्य ! तमारुं जीवितव्य सफल छे, तमोने इंद्र महाराजे सभा समक्ष वखाण्या ते अणमानता में तमारो अपराध कर्यो, ते म्हारो अपराध

तमे समजो, ते सांभली अर्हन्नक बोल्यो के आ लोक अने परलोकनुं साधन एवो श्रीजिनधर्म पामीने बीजो धर्म हुं अंगीकार न करूं, तेवारे देवताए फरी बे कुंडल आप्यां, अने पोताने स्थानके गयो, पछी ते व्यावहारीयो कुशलक्षेमे गंभीरपत्तने गयो त्यां व्यापार करी, फरी मिथिला नगरीए आव्यो तेवारे देवताए आपेला चार कुंडलमांथी राजाने बे कुंडल आप्यां, ते राजाए मल्लीकुमरीने दीधां, पछी व्यापारीए पोतानी चंपानगरीये आवी, त्यां चंपानगरीना राजाने बाकी रहेला बे कुंडल आप्यां. राजाए पूछ्युं के हे व्यवहारीया ! तमे परदेशमां कोई तमासो दीठो ? ते सांभली व्यवहारीयो बोल्यो के अमे मल्लीकुमरीनुं रूप अद्‌भुत दीठुं, एवुं रूप बीजे क्यांहि पण दीठुं नथी, पछी चंद्रयशा राजाए पण कुंभराजा पासे दूत मोकलीने कहेवराव्युं के तमारी पुत्री मल्लीकुमरी मुजने परणावजो इति द्वितीयदूत. (२)

एक दिवसे मल्लीकुमरीनां बे कुंडल त्रूटी गयां, तेवारे कुंभराजाए सोनीओने बोलावीने कह्युं के आ कुंडलनो जोडो सांधी आपो, तेवारे सोनी कुंडल जोइने बोल्या के महाराज ! ए संधाय नहीं एतो देवतानां कुंडल छे, ते अमे केवीरीते सांधिए ? तेथी राजाए सर्व सोनीओने देशनिकालो दीधो, ते सोनी वाणारसी नगरीए गया, तेवारे त्यांना शंखराजाए पूछ्युं के तमे देश केम छोड्यो ? सोनी बोल्या के महाराज ! मल्लीकुमरीनां कुंडल देवता संबंधी छे, ते अमारा थकी संधाणां नहीं, तेथी देश छोडवो पड्यो छे अने मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तवारे वाणारसीना राजाए पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थे कुंभराजाना पासे दूत मोकल्यो इति तृतीयदूत. (३)

हवे रुक्मी राजाए पोतानी पुत्रीने चार महीना सुधी पीठी करावीने अने अलंकार पहेरावीने दूतने पूछ्युं के हे दूत ! तें आवुं रूप क्यांही पण दीठुं छे ? तेवारे दूत बोल्यो के मल्लीकुमरीना लाखमां अंशे पण ए रूप नथी, ते

सांभली रुक्मी राजाए पण कुंभराजा ऊपर दूत मोकली, मल्लीकुमरीनी याचना करावी इति चतुर्थदूत. (४)

कुंभराजानो पुत्र छे, तेणे पोतानी चित्रशाला चित्रावी, त्यां चितारे मल्लीकुमरीनो अंगुठो दीठो, तेथी मल्लीकुमरीना सर्व अंगनुं स्वरूप चित्री काढयुं, हवे एकदा मल्लीकुमरीना भाईए क्रीडा करतां मल्लीकुमरीनुं रूप चित्रशालामां जोयुं, तेने रीश चढी तेथी चिताराना हाथनो अंगुठो कापीने काहाढी मूक्यो, चितारो हस्तिनापुरे अदीनशत्रु राजाने मल्यो, त्यां मल्लीकुमरीनुं रूप वर्णन कर्युं, ते सांभली तेणे पण मल्लीकुमरीनी याचना करवा कुंभराजाने पासे दूत मोकल्यो, इति पंचम दूत. (५) एक दिवस धर्मचर्चा करतां एक परिव्राजिकाने मल्लीकुमरीए जीती, मानभ्रष्ट करी, तेथी ते रीषाणीथकी कपिलानगरीए जइ जितशत्रुराजाना मुख आगल मल्लीकुमरीना रूपनुं वर्णन कर्युं, तेणे पण मल्लीकुमरी याचवाने अर्थे कुंभराजा ऊपर दूत मोकल्यो इति षष्ठदूत. (६)

ए रीते छ दूत कुंभराजा पासे समकाले आव्या, कुंभराजाए सर्व दूतोने कह्युं के हुं म्हारी कन्या कोईने आपवानो नथी, एवी रीते अपमान करी काढी मूक्या, पछी ते छए राजाओ पोतपोतानुं लश्कर लइने समकाले आवी मिथिला नगरीने वींटी लीधी, कुंभराजाए पण बाहिर आवी युद्ध करवा मांडयुं, युद्ध करतां हार्यो अने पाछो नगरीमां पेठो, तेवारे मल्लीकुमरीए छए राजाओने कहेवराव्युं के तमे म्हारा रत्नघरमां आवजो, पछी ते छए राजा छ बारणामांथी जूदा जूदा आव्या, मल्लीकुमरीनी मूर्त्ति देखी व्यामोह पाम्या, एटलामां मल्लीकुमरीए आवीने ते पूतलीना माथा ऊपरथी ढांकणुं उघाडयुं तेवारे ते सडी गयेला अनाजमां कीडा पड्या हता ते मांहेथी दुर्गंध नीकल्यो एटले सर्व जणे मोढा पासे लूगडुं आपी थुथुकार कीधो अने दुःखी थवा लाग्या. तेवारे मल्लीकुमरी बोल्यां के भद्रो ! आ रत्नमय पूतली छतां नित्यप्रत्ये एक

केवल आहारना संयोगथी एवी दुर्गंध (वास) आपे छे, तो म्हारा शरीरमां तो नित्यप्रत्ये शेर धान्य पडे छे. तेथी मलमूत्रनो भंडारज छे. तेमां तमे शुं रागांध थया छो ? एवो प्रतिबोध करीने पछी पूर्वला भव संभलाव्या, तेथी ते छए राजाने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं, पूर्वभव दीठा. पछी ते छए कहेवा लाग्या के हवे अमने तारो, तेवारे मल्लीकुमरीए कह्युं के हमणां तो तमे घेर जाओ, जेवारे मने केवलज्ञान उपजे, तेवारे तमे आवजो, हुं तमोने दीक्षा आपीश, पछी ते छए राजा पोतपोताने स्थानके गया, मल्लीकुमरीए पण संवत्सरी दान आपीने त्रणसो राजपुत्र साथे मार्गशिरशुदि अगीआरशने दिने दीक्षा लीधी, तेज दिवसे केवलज्ञान उपन्युं, पछी ते छए मित्रे आवी श्रीमल्लीनाथ पासे दीक्षा लीधी, ते छएने गणधर कर्या ते तेहज भवे मोक्ष गया, ए श्री मल्लीनाथ स्त्रीवेदे ओगणीशमां तीर्थंकर थया, तेमना समोसरणमां स्त्रीनी परषदा आगल बेसती हती अने पुरुषनी परषदा पाछल बेसती हती. स्त्रीवेदे कोई तीर्थंकर थाय नहीं ते थयुं ए बीजुं अच्छेरूं जाणवुं.

त्रीजुं कोइ तीर्थंकरने गर्भपालटो थयो नथी, ते अहीं श्री महावीर स्वामीने ब्याशी रात्रि पछी देवानंदानी कूंखथी हरणिगमेषी देवताए अपहरीने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूंख मांहे मूक्या अने त्रिशलानी कूंखे पुत्री हती, ते महाणकुंडनगरे देवानंदानी कूंखे मूकी. तेवुं कोइवारे थाय नहीं, माटे ए त्रीजुं गर्भपालटन आश्चर्य जाणवुं. चोथुं श्रीवीर भगवानने जेवारे केवलज्ञान उपन्युं, तेवारे देवताए मली समोसरणनी रचना कीधी, त्यां घणी म्होटी परषदा भेली थइ, तेवारे भगवाने धर्मदेशना दीधी; परंतु प्रभुनी देशना सांभलीने कोई समकेत पाम्यो नहीं, तेमज व्रत पच्चक्खाण पण कोइये लीधा नहीं. ए रीते देशना निःष्फल गई, एम तीर्थंकरनी देशना कोइ वखते खाली न जाय ते खाली गइ, माटे ए चोथुं आश्चर्य जाणवुं.

पांचमुं जे एक द्वीपनो वासुदेव होय ते बीजे द्वीपे जाय नहीं, श्रीकृष्णजी द्रौपदी लाववाने अर्थे धातकीखंडे गया तेमज कपिल वासुदेवनो शंख अने श्रीकृष्ण वासुदेवनो शंख ए बे शंखेशंख मल्या ते पण कोइवारे मले नहीं माटे आश्चर्य जाणवुं. तेनी कथा कहे छेः— कांपिल्यपुर नगरमां द्रुपदराजानी चुलणी पटराणीनी कूंखे द्रौपदी नामे पुत्री थइ तेना विवाह सारुं स्वयंवर मंडप मांड्यो, सर्व देशोना राजा तेडाव्या, हस्तिनागपुरथी पोताना युधिष्ठिरादिक पांच पुत्रने तेडी पांडुराजा पण आव्यो, अर्जुने राधावेध साध्यो तेवारे द्रौपदीए अर्जुनना गलामां वरमाला न्हांखी, ते वरमाला पूर्वभवमां द्रौपदीए पांच भरतारनो नियाणो कर्यो हतो तेना प्रभावथी पांचे पांडवोना गलामां जइ पडी; पूर्वला भवमां द्रौपदीनो जीव नागिला नामे ब्राह्मणी हती, तेणे एक दिवस धर्मरुचि मुनिने कडवी तुंबडीनुं शाक वोहोराव्युं ते मुनिए अनशन करी खाधुं, तेनां योगथी मुनि मरण पाम्या. पछी 'नागिला साधुनी घात करनारी छे' एवुं आचार्ये साधुओने गाममां मोकली कहेवराव्युं, तेवारे ब्राह्मणे नागिलाने घरमांथी काहाडी मूकी, ते भमती भमती मरण पामीने नरके गइ, त्यांथी चवी अनेक तिर्यंचादिकना भव करी एक शेठने घेर घणी स्वरूपवाली सुकुमालिका नामे पुत्रीपणे उपनी. तेने तेज गाममां एक बीजा शेठना दीकराने परणावी ते रात्रे सुवा गयो त्यां सुकुमालिकानो स्पर्श थतांज तत्काल तेने दाहज्वर चढ्यो तेथी ते पडती मूकी चाल्यो गयो, पाछलथी सुकुमालिकाने शोक करती जोइने तेना बापे एक भिक्षुकने परणावी ते पण तेमज मूकी भागी गयो; पछी सुकुमालिका दुःखगर्भित वैराग्य पामीने साध्वी थइ, तेने गुरुणीए नाकारो कर्यो तो पण ते वनमां तप करवा गइ, त्यां एक वेश्याने पांच पुरुष हाजरीमां रह्या छे तेने जोइने सुकुमालिकाए "म्हारा तपनो प्रभाव होय तो आगला भवमां मुजने पण पांच भरतार होजो" एवुं नियाणुं कर्युं. अंते अनशन करी ईशान देवलोके

त्यांथी चवीने अहीं द्रौपदी थयेली छे ते पूर्वकृत नियाणाना योगे वरमाला पांच जणानां कंठमां पडी, देवोए आकाशथी एवी वाणी करी के द्रौपदी पांच भरतारी छतां पण सती छे, पांच पांडव द्रौपदीने परणी हस्तिनागपुरमां आव्या त्यां सुखे रहे छे, एक दिवस जेनी मुखाकांति सौम्य छे, परंतु मनमां कपट घणुं राखे छे, वल्कल चीर पहेरे छे, काला मृगना चामडानो उत्तरासंग करेलो छे, जेनो जटाजूट महाकांति वालो छे, जे कलह कोलाहलनो लगाडनार छे, एवो नारद ऋषि आकाशमार्गथी ते पांडुराजानी सभामां आव्यो, तेवारे पांडवो सहित सर्व सभाजनोए ऊभा थइने आदर सन्मान आप्युं, परंतु ते नारद जेवारे द्रौपदीने जोवा गयो तेवारे द्रौपदीए तेने असंयती जाणी वांद्यो पूज्यो नहीं, तेम उठीने ऊभी पण थइ नहीं, अने बोलाव्यो पण नहीं, तेथी नारदने रीष चढी अने विचार करवा लाग्यो के आ द्रौपदी पांच भरतार पामीने मस्त थइ गइ छे, तेथी गर्वित थकी बेठी छे तो हवे हुं एने संकटमां न्हांखुं एम चिंतवी, धातकीखंडना पूर्व भरतक्षेत्रमां अमरकंका नामे नगरी छे त्यां कपिलवासुदेवनो सेवक पद्मनाभ नामे राजा राज्य करे छे, ते राजा पोतानी सातसे (७००) राणीओ साथे वाडीमां रमतो हतो तेवा समयमां नारद पण त्यां गयो, तेने पद्मनाभ राजाए वांदीने पूछ्युं के कहो नारदजी! म्हारो जेवो अंतेउर छे तेवो अंतेउर बीजे क्यां तमे जोयो छे? तेवारे नारदजीए जाण्युं के आ स्त्रियोनो लोलुपी छे, एम जाणी अवसर जोइने नारदजी कहेवा लाग्या, के—

राजन्! तुं कूवानां देडका सरखो देखाय छे, जेम कोइएक समुद्रनो देडको कूवाना देडकानी पासे आव्यो, तेवारे तेने कूवानां देडकाए पूछ्युं के तुं क्यां रहे छे अने क्यांथी आव्यो छे? तेणे कह्युं के हुं समुद्रमां रहुं छुं अने त्यांथीज आव्यो छुं तेवारे कूवाना देडकाए पूछ्युं के त्हारो समुद्र केटलो म्होटो छे? तेणे कह्युं घणो म्होटो छे

तेवारे कूवानो देडको हाथ पग पसारीने बोल्यो के आटलो म्होटो छे ? समुद्रना देडकाए कह्युं पृथी तो घणोज म्होटो छे, तेवारे कूवानो देडको पोताना कूवानी चारे बाजुए कूदका मारीने बोल्यो के आटलो म्होटो छे ? तो पण तेणे कह्युं के एनाथी तो घणो घणो म्होटो छे, तेवारे कूवानो देडको रोष आणीने बोल्यो के अरे असत्यवादिन्! तुं इहांथी दूर जा, म्हारी फालथी पण वली कोइ म्होटो हशे ? माटे तुं जुठुं बोले छे, तेम हे राजन् ! तें पण कूवाना देडकानी पेरे आटलीज स्त्रीयो दीठी छे तेथी एनाज वखाण करे छे, परंतु पांच पांडवनी स्त्री द्रौपदी एवी छे के तेना एक अंगुठाना नखाग्रना रूप सरखुं पण त्हारी कोइ राणीनुं रूप नथी, त्रण लोकमां ए द्रौपदी समान कोइ स्त्रीनुं रूप नथी एम कहीने नारद चालतो थयो, पाछलथी पद्मोत्तर राजा कामे पीडित थको चिंतववा लाग्यो के एवी स्त्री विना जन्म निष्फल छे पण द्रौपदीने पामवानो कोइ उपाय सूज्यो नहीं तेवारे अट्ठम तप करी, पूर्वभव संगाति देवतानुं आराधन कर्युं. देवता प्रत्यक्ष आवी ऊभो रह्यो अने कहेवा लाग्यो के राजन् ! मने केम संभार्यो माटे जे काम होय ते फरमावो, पद्मोत्तर राजाए द्रौपदी लेइ आववानी याचना करी, तेवारे देवताए कह्युं ते महासती छे माटे शील भंग करशे नहीं तो तुं फोकट शा वास्ते तेने तेडावे छे ? तो पण पद्मोत्तरे घणो हठ कर्यो त्यारे देवताए द्रौपदीने अवस्वापिनी निद्रा आपी, ज्यां सूती हती त्यांथी पलंग सहित उपाडीने पद्मोत्तर राजानी अशोकवाडीमां लावी मूकी अने राजाने कह्युं के तें म्हारा हाथे माठुं काम कराव्युं छे, माटे हवे कोइ पण दिवसे तुं मने याद करीश नहीं, कदापि बोलावीश तो पण हवे हुं आवीश नहीं एम कही देवता स्वस्थानके गयो, केटलिकवार पछी द्रौपदी निद्रामांथी जाग्रत थइने विचारमां पडी के हुं इहां क्यां आवी छुं ? तेवारे पद्मनाभ बोल्यो के में तुजने

म्हारी साथे भोग करवा सारुं देवतानी मारफते इहां मंगावी छे, तो हवे तुं म्हारी साथे विषयसुख भोगव, हुं रहारो दास छुं, तेवारे द्रौपदी बोली के तुं छ महीना सुधी म्हारुं नाम लइश नहीं, म्हारी व्हार करवा वाला पांच पांडव तथा श्रीकृष्ण छे ते जो छ महीनामां आंही आवशे नहीं तो तुं कहीश तेम थाशे, पद्मनाभे पण हां कही अने विचार्युं के इहां पनी खबर लेवा कोण आवनार छे ? वली जोरावरीथी प्रीति पण न थाय एम जाणी, द्रौपदीने पोताना महेलमां तेडी गयो. द्रौपदीए छट्ठ छट्ठनुं तप अने पारणे आयंबील करवा मांड्युं, हवे प्रभाते हस्तिनापुरमां द्रौपदीने महेलमां दीठी नहीं, तेवारे पांडवोए घणो शोध कराव्यो पण क्यांये पतो लाग्यो नहीं, तेवारे पांडवोनी माता कुंताजीए द्वारिकामां जइने श्रीकृष्ण-वासुदेवने कह्युं के पुत्र ! द्रौपदीने रात्रिए सुतां थकां कोइ देव, दानव, राक्षस, अथवा विद्याधर अपहरी गयो छे, अमे सर्व जग्याए जोइ पण मली नहीं तेवारे श्रीकृष्णजी कांइक हास्य पूर्वक बोल्या के पांच पांडव एक द्रौपदीने पण राखवाने समर्थ न थया, हुं तो म्हारी बत्रीश हजार स्त्रीयोनी रक्षा करूं छुं, ते सांभली कुंताजी बोल्यां के वत्स ! आ अवसरमां हास्य करवानुं काम नथी, तुं तरत द्रौपदीनी खबर कराव पछी श्रीकृष्णजीए पण घणो शोध कराव्यो; परंतु क्यांय पतो लाग्यो नहीं, अंते चिंतातुर थइ बेठा. एटलामां नारदऋषि त्यां आव्या तेणे आवी कृष्णजीने चिंतामां बेसवानुं कारण पूछ्युं, त्यारे कृष्णजीए कह्युं के तमे कोइ स्थानके द्रौपदीने दीठी ? नारदजी बोल्या ते पापणी कोइ साधुने पण बोलावती न हती माटे दुःखमां पडी हशे, तथापि हुं तो कांइ ओलखतो नथी, परंतु धातकीखंडमां अमरकंका नगरीए द्रौपदी सरखी एक स्त्री दीठी छे पछी कोण जाणे तेहज होय तो होय एम कही, नारदजी चाल्या गया. पछी श्रीकृष्णे विचार्युं के आ अकृत्य अवश्य नारदनुंज करेल छे माटे अमरकंका मांहेज द्रौपदी हशे

एवुं जाणी पांडवोने लइ, सेना सहित श्री कृष्णजी समुद्र तटे आव्या, समुद्र ओलंघवाने अर्थे अट्ठम तप करी लवणाधिप देवताने बोलाव्यो ते पण प्रगट थइ बोल्यो के कहो! शुं काम छे हुं करवाने तैयार छुं, तेवारे कृष्णजीए सर्व वृत्तांत निवेदन करी कह्युं के अमारे धातकीखंडमां जावुं छे, माटे अमने अने अमारी सेनाने समुद्रमांथी जावानो मार्ग आपो, त्यारे देवता बोल्यो के तमे शा वास्ते त्यां जवानो श्रम करो छो हुं पोते जइ द्रौपदी लावीने तमोने आपीश, वली तमारो हुकम होय तो अमरकंका नगरी सहित पद्मनाभ राजाने समुद्रमां नाखी दउं, तेवारे श्रीकृष्ण बोल्या के देव! तमे एवाज शक्तिवान छो एमां कांइ संशय नथी तथापि अमोने पांच पांडव सहित छ जणने जवानो मारग आपो तो अमारे त्यां जवानी इच्छा छे; ते सांभली सुस्थित देवे ते छ जणाना छ रथ चालवानो मार्ग आप्यो. पछी पांडवो सहित श्रीकृष्ण समुद्र ओलंघीने अमरकंका नगरीना उद्यानमां जइ दारुक नामा सारथीने दूत बनावीने श्रीकृष्णे पद्मनाभ पासे मोकल्यो, तेणे जइ पग उपर पग आपी त्रिवडी ललाट चडावी, कह्युं के हे पद्मनाभ! श्रीकृष्णवासुदेवे तमोने कहेवराव्युं छे के पांडवोनी स्त्री द्रौपदीने तमे लाव्या छो ते एणुं अयोग्य काम करेल छे तथापि हजी कांइ बगडयुं नथी माटे तमे आवी द्रौपदी अमोने आपी जाओ, तेवारे पद्मनाभ बोल्यो के हुं तमोने पाछी आपवा सारुं द्रौपदीने लइ आव्यो नथी, हुं तो म्हारा बलथी लाव्यो छुं माटे तुं त्हारा स्वामीने जइ कहेजे के तमारे युद्ध करवुं होय तो सुखें करो, हुं पण क्षत्रिय छुं एम कही दूतने निर्भ्रंछीने काहाडी मूक्यो, दूतें आवी श्रीकृष्ण आगल सर्व वात निवेदन करी, श्रीकृष्णे जाण्युं के असाध्य रोग कांइ औषध विना जाय नहीं माटे युद्ध करवा तैयार थया, पद्मनाभ पण सेना लइ लडवाने स्हामो आव्यो, पांडवो बोल्या के अमे एनी साथे युद्ध करीशुं कदापि जो हारी जइये तो आपे स्हाय

करवी त्यारे श्रीकृष्णे कह्युं के तमे म्होटा योद्धा छो पण तमारी आवी वाणी सांभलतां लागे छे के तमारे जीतवुं कठण थइ पडशे, तो पण पांडवो श्रीकृष्णनी आज्ञा लइ युद्ध करवाने गया, पद्मनाभे पण म्होटुं लश्कर लइने पांडवो साथे युद्ध कर्युं, त्यां भवितव्यताना वशथी पांडवो हारी गया अने भागतां थकां सिंहनाद कर्यो ते सांभली पांडवो हार्या जाणी, एकलाज श्रीकृष्ण रथ ऊपर बेशीने पद्मनाभनी सेनाने मथन करवा लाग्या, त्यां धनुषना टंकारवथीज पद्मनाभनी सर्व सेना नाशी गइ अने पद्मनाभ पोते पण नाशीने नगरमां पेसी गयो, नगरना दरवाजा बंध करी मूक्या, तेवारे श्रीकृष्णे नरसिंह रूप धारण करीने हाथल मारी अमरकंका नगरीनो सर्व कोट भांजी न्हांख्यो, सर्व नगर धुजवा लाग्युं, घणा महेल पडी गया, पद्मनाभ राजा श्री कृष्णजीनुं एवुं पराक्रम देखीने भयभीत थयो थको द्रौपदीने शरणे गयो अने कहेवा लाग्यो के हे सति ! तुं म्हारी रक्षा कर, द्रौपदी बोली हे कंगाल ! में तुजने प्रथमथीज कहेलुं हतुं के म्हारी पछवाडे श्रीकृष्णादिक घणा बलवंत राजाओ वार करनारा छे तो पण तें मान्युं नही. हवे पण जो तुं जीववानी चाहना राखतो होय तो स्त्रीनो वेश पहेरी मुखमां तृण लइ म्हारी पछवाडे बेसी रहे, एटलुं जो म्हारुं कह्युं करीश तो हुं तुजने पगे लगाडी दइश, केमके श्रीकृष्ण सत्पुरुष छे तेनी आगल जे नमी जाय तेने मारे नहीं माटे त्हारे जीवतो रहेवानो एज उपाय छे, पद्मनाभे पण तेमज कर्युं, एटलामां श्रीकृष्ण पण आव्या, त्यां जूवे तो पद्मनाभ स्त्रीनुं रूप करी द्रौपदीनी पछवाडे बेठल छे, श्रीकृष्णे द्रौपदीने पूछ्युं के आ कोण बेठो छे, द्रौपदीये कह्युं पद्मनाभ राजा तमारा भयथी नाशीने म्हारे शरणे आव्यो छे एम कही द्रौपदिए पद्मनाभने श्रीकृष्णने पगे लगाड्यो तेवारे श्रीकृष्णे तेना ऊपर दया आणी जीवतो राख्यो अने पद्मनाभने कह्युं

के अरे ! तुं जाणतो न्होतो के आ द्रौपदीनी पछवाडे म्होटा म्होटा वार करवा वाला छे ? पण मूर्खोना माथामां जेवारे पडे छे तेवारे अक्कल आवे छे, तो हवे त्हारुं कर्युं कर्म तें भोगव्युं, द्रौपदीना प्रतापथी तुं जीवतो रह्यो एवुं कही अखंड शीलवंती द्रौपदीने लइने पांच पांडव सहित श्रीकृष्णजी पाछा वल्या अने जयनो शंखपूर्यो, एवा वखतमां ते खेत्रमां श्रीमुनिसुव्रत तीर्थंकर पासे त्यांनो कपिल-वासुदेव वखाण सांभले छे, तेणें शंखनाद सांभल्यो, मनमां शंका ऊपनी के कोइ बीजो वासुदेव उत्पन्न थयो छे ? तेथी भगवंतने पूछ्युं के महाराज ! ए बीजो वासुदेव कोण थयो छे केणे म्हारो शंख वजाव्यो ? भगवंत बोल्या के हे कपिल ! एक खेत्रमां बे तीर्थंकर अने बे वासुदेव, न थाय पण एतो जंबुद्वीपना भरत क्षेत्रनो श्रीकृष्ण नामे वासुदेव त्हारा सरखी ऋद्धिनो धणी छे, पद्मनाभ राजा द्रौपदी हरण करीं लाव्यो हतो, तेने लेवाने आव्यो हतो, ते पद्मनाभने जीतीने पाछो जाय छे, तेणे शंखनाद कर्यो, ते सांभली तीर्थंकरनी आज्ञा लइने कपिल वासुदेव तरत त्यांथी उठीने पोताना सरखो वासुदेव जोवा सारुं समुद्रने कांठे आव्यो, पण श्रीकृष्ण तो दूर नीकली गया, मात्र समुद्रमां नीली, पीली रथनी ध्वजाओ देखीने, शंखनो शब्द कर्यो, तेमां एवुं जणाव्युं के हे मित्र ! आप ऊभा रहो हुं तमोने मलवा सारुं आव्यो छुं माटे एकवार पाछा अहीं आवो, तमारा दर्शननी मने अभिलाषा छे, एवो शंखनो शब्द सांभलीने श्रीकृष्णे पण पाछो शंखनो शब्द कर्यो तेमां आवी रीते बोल्या के हे मित्र ! अमो घणा समुद्रनुं उल्लंघन करी गया माटे पाछा अवाशे नहीं तमे अमारा ऊपर कृपादृष्टि राखजो एवुं कहीने चालता थया, पाछलथी कपिल-वासुदेवे जइ, पद्मनाभने कह्युं के आ त्हारी नगरीना गढ मढ कोट केम पडी गया ? पद्मनाभे कह्युं के अत्रे जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रनो वासुदेव म्हारी राजधानी लेवा आव्यो हतो

तेनी साथे म्होटुं युद्ध थयुं तेणे ए गढादिक त्रोडी नाख्या छे, कपिल-वासुदेवे कह्युं के अरे अन्यायी ! म्हारी पासे तुं जुठुं बोले छे एम कही घणो निभ्रंछीने देशमांथी काढी मूक्यो अने तेना पुत्रने राज्यपाटे थापी कपिल पोताने स्थानके गयो, पछी श्रीकृष्ण पांडवो सहित समुद्र उल्लंघन करी पांडवोने कहेवा लाग्या के हुं लवणाधिप सुस्थित-देवने मळवा जाउं छुं एटलामां तमे नावो लइ गंगानदी उतरीने पछी एक जण साथे तरत नाव मोकली देजो, पछी पांडव द्रौपदी सहित नाव लइ गंगानदी उतर्या अने विचार्युं के जोइये तो खरा के श्री कृष्णजी पोते एकला गंगानदी उतरी आवे छे के नहीं, एम निरधार करीने नाव मोकली नहीं, त्यां श्रीकृष्ण घणो वखत थोभ्या, पण नाव आव्युं नहीं तेवारे मनमां जाण्युं के पांडवो डूबी गया देखाय छे एवुं विचारी च्यार भुजाओ करीने एक हाथमां सारथी सहित रथ उपाड्यो, एक हाथमां शस्त्र राख्या, एक हाथमां घोडाने पकड्यो अने एक हाथथी गंगा नदी तरवा लाग्या; गंगानदी साडी बासठ योजन पोहोळी छे तेनी मध्य भागमां जेवारे आव्या तेवारे श्रीकृष्ण घणा थाकी गया ते वखत गंगादेवीये सहाय आपीने मध्यमां स्थल कर्युं त्यां केटलोएक वखत विश्राम लइने वली पोतानी भुजाओथी गंगानदी तरीने तट ऊपर आव्या त्यां आवीने जुवे छे तो पांडवो नाव सहित बेठा बेठा हसे छे, तेवारे श्रीकृष्ण रीष चढावीने पांडवोने पूछवा लाग्या के अरे दुष्टो ! तमे नाव पाछी केम न मोकली ? पांडवो बोल्या, तमारी बल-परीक्षा करवाने न मोकली, तेवारे श्रीकृष्ण बोल्या के अरे में बे लाख योजन समुद्र ओलंघन करी पद्मनाभथी तमे भाग्या तेने जीती द्रौपदी आणी आपी, ते वखते मारी शक्ति न दीठी? जे हमणा म्हारुं बळ जोवा बेठा ? एम कही क्रोध चढावीने पांचे पांडवोने मारवा सारु लोहदंड ऊपाड्यो वली दया आवीने जाण्युं के म्होटो अनर्थ थाशे ? एम विचारी पांचे

पांडवना रथ भांगी चूर्ण कर्या अने कह्युं के जाओ रे पापीओ ! हवे म्हारी नजरे आवशो नहीं अने म्हारा देशमां पण रहेशो नहीं एम कही पांचे पांडवने देशनिकाल दीधो अने ज्यां रथ भांग्यो, त्यां रथमर्द्दन कोट थयो, श्रीकृष्ण पोतानी सेना लइ द्वारकामां गया अने पांडव पण द्रौपदीने लइ सेना सहित हस्तिनापुरे आवी कुंताजीने देशनिकालनी वात कही, तेवारे कुंताजी द्वारकामां आवी श्रीकृष्णने मीठे वचने संतोषी, पांडवोने बोलावी श्रीकृष्णने पगे लगाड्या पछी श्रीकृष्णे आज्ञा आपी के ज्यां में तमारा रथ भांग्या त्यां तमे पांडवरथनुपुर नगर वसावीने रहो पछी पांडवो त्यां श्रीकृष्णजीनी सेवा करता थका रह्या छेवटे पांडुसेन नामे पोताना पुत्रने राज्य पाटे थापी पांच पांडव अने छट्ठी द्रौपदीये दीक्षा लीधी, छट्ठ अट्ठमादिक तप करी, चौद पूर्व भणी ते पांचे पांडव श्रीशत्रुंजय तीर्थ ऊपर मोक्षे गया, अने द्रौपदी पण अगीआर अंग भणी मासनी संलेषणा करी पांचमा ब्रह्मदेवलोके गइ. त्यांथी चवी महाविदेहक्षेत्रे मोक्ष पामशे. ए रीते जंबूद्वीपनो वासुदेव, धातकीखंडमां न जाय, ते गयो. ए पांचमुं अच्छेरूं जाणवुं. वली केटलाएक आचार्य एम कहे छे के बे वासुदेवना शंखेशंख पण भेगा न थाय अने इहां शंखेशंख मल्या, माटे ए पण अच्छेरूं जाणवुं.

हवे छट्ठो आश्चर्य कहे छेः–युगलिया मरण पामीने नरके न जाय, अने अहीं हरि तथा हरिणी, ए बे युगलिया मरण पामीने नरके गयां. माटे ए अच्छेरूं थयुं. यथा–जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे कौशंबी नगरीनो सुमुख नामे राजा हतो. एकदा प्रस्तावे वसंत ऋतुये ते राजा हाथी ऊपर आरूढ थइ नगरीनी नजीकना वनमां रमवाने अर्थे जतो हतो. मार्गमां वीरक नामे कोलीनी वनमाला नामे भार्या अत्यंत स्वरूपवती छे ते पोताना धणीने घणी वल्लभ छे तेने देखीने मांहोमांहे सराग दृष्टिथी जोतां प्रीतिभाव उत्पन्न थयो तेथी राजा त्यां थकी आगल

जाय नहीं. तेवारे सुमतिनामा प्रधान कहेवा लाग्यो के स्वामिन्! समस्त सौजन आव्यां छतां तमो आगल केम चालता नथी ? ते सांभली राजा पोताना प्रधाननी लाज आणी आगल वनमां गयो. पण शून्यचित्तथको मनमांहे केवल ते स्त्रीनुं चिंतवन करतो क्यांये पण चेन पामतो नथी. ते जोइने प्रधाने पूछ्युं के महाराज ! तमे आज आवा शून्यचित्त केम देखाओ छो ? एम फरी फरी घणो आग्रह करी पूछवाथी पोताना मननी सर्व वात राजाये प्रधानने कही. ते सांभली प्रधान बोल्यो के तमे कांइ चिंता करशो नहीं, हुं तमने ए स्त्री मेलवी आपीश. पछी घेर आवी प्रधाने आत्रेयिका नामे परिव्राजिकाने बोलावी सर्व वात समजावी वनमालानी पासे मोकली, ते पण त्यां जइ जुए छे तो वनमाला पण विरहविव्हलथकी मुखें निःश्वास न्हांखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे, ए रीते महाविरहिणी देखी तेने ते परिव्राजिका केहेवा लागी के वत्से ! तुं आज एम दुःखित केम देखाय छे ? त्हारुं दुःख मुने कहे तो हुं ते दुःखथी तने पार उतारुं. ते सांभली वनमालाए पोताना मननी गुप्त वात कही. तेवारे परिव्राजिका बोली के हुं तने राजानी साथे काले मेलवीश, तुं कांइ चिंता करीश नहीं, पछी ते परिव्राजिका हर्षवंतथकी त्यांथी जइ सर्व वात प्रधानने कही. प्रधानें जई राजाने सर्व वृत्तांत सभलाव्युं. त्यार पछी प्रभाते परिव्राजिका वनमालाने राजा पासे तेडी आवी. राजाए हर्षवंत थइ अंतःपुरमां तेने राखी, अने तेनी साथे पंचविध विषयसुख भोगववा लाग्यो. हवे वीरक कोली घेर आव्यो, त्यारे तेणे स्त्रीने दीठी नहीं. पछी पाडोशी प्रमुखने पूछतो थको भार्याना विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममां हे वनमाला ! हे वनमाला ! करतो फरतो फरतो एक दिवसे चोमासामां राजाना प्रासाद नीचे आवी ऊभो रह्यो; तेवामां राजा पण वनमालाने साथे लइ गोंखमां आवी बेठो. राजाए वीरककोलीने देखीने मनमां विचार्युं के में पापिष्ठें

पारकी स्त्री लइ लीधी ए अत्यंत लोक विरुद्ध अनार्य कार्य कीधुं. माटे मने धिःकार छे एम मनमां घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो. अने वनमालाए पण विचार्युं के में पापणीए स्नेहवंत भरतारने त्याग्यो ए म्हारा विरहथी ग्रंथिल थयो माटे म्हारी शीगति थाशे ? एम बन्ने जण पश्चात्ताप करे छे. तेवामां अकस्मात् ऊपरथी विजली पडी तथी बेउ जणां शुभध्यानें मरण पामी हरिवर्ष क्षेत्रे युगलिया पणे उपन्यां. त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूर्ण करे छे अने सुखें रहे छे. पछी वीरक कोली पण ते बेहुनुं मरण जाणी, ग्रंथिलभाव त्यागी, अज्ञान तपस्या करी, सौधर्म देवलोके किल्बिषिया देवमां जइ उपन्यो, त्यां अवधिज्ञानथी जोयुं त्यारे जाण्युं के अरे ! म्हारा पूर्वभवना वैरी तो युगलीया थया छे, ते त्यांथी मरण पामीने वली देवता थशे माटे ए देवता न थाय एवो उपाय करुं एम विचारी ते युगलने त्यांथी उपाडीने चंपानगरीमां इक्ष्वाकुवंशनो चंडकीर्ति राजा अपुत्रीयो मरण पाम्यो छे त्यां नगरनां लोक सर्व आपणो कोण राजा थशे एवी चिंतामां पड्या छे एटलामां ते देवताए ते युगलीयाने लावीने नगरीना लोकोने सोंप्या अने कह्युं के हुं तमारे माटे ए राजा लाव्यो छुं, एने जेवारे भूख लागे तेवारे ए कल्पवृक्षनां फल खाय छे, तेनी साथे मांस मेलवीने खवरावजो तथा आहेडो करवा शीखावजो, देवताए मनमां विचार्युं के ए मांस भक्षण करशे अने मांसना लोलुपी थाशे तेथी मरण पामीने नरके जाशे तो म्हारुं वैर वलशे एम चिंतवी हरि अने हरिणी एवुं तेनुं नाम आपी देवता पोताने स्थानके गयो, लोकोए पण देवताना कह्या प्रमाणे तेने मांस मदिरा खावता शीखव्युं तेथी ते मांसना लोलुपी थयां, पछी ते हरिराजाना पुत्रादिक जे थया तेनो हरिवंश (कुल) कहेवाणो; ते हरि ने हरिणी मरण पामी नरके गया. ए रीते युगलीया नरकमां जाय नही ते गया माटे ए आश्चर्य जाणवुं.

हवे सातमुं अच्छेरुं कहे छे.–आ भरतक्षेत्रने विषे बिभेलनामा सन्निवेशे एक पूरण नामा शेठ रहेतो हतो ते एक दिवसे पाछली रात्रे जाग्यो थको कुटुंब जागरण करतां मनमां विचारवा लाग्यो के, म्हारा घरमां घणुं धन परिवार छे ते में पूर्वला भवमां कोइ सारी धर्मकरणी कीधी छे तेना योगथी पाम्यो छुं माटे फरी हमणा पण कांइक धर्म करुं तो वली आगल पामीश, एम चिंतवी, प्रभाते स्वजनादिकने पूछी, पुत्रने कुटुंबनो भार सोंपी, पोते तापसी दीक्षा लइने एवो अभिग्रह कर्यो के जावज्जीव सुधी म्हारे छठ्ठ छठ्ठ एटले बे बे उपवासना अन्तरे पारणो करवो अने पारणाने दिवसे चारखूणानुं पात्रुं लइने भिक्षा मांगवी तेमां पहेला खूणामां जे भिक्षा मले ते जलचर जीवोने खवरावी देवी पण म्हारे खावी नही, तथा बीजा खूणामां जे भिक्षा पडे ते पंखीने खवरावी देवी, तथा त्रीजा खूणामां जे भिक्षा पडे ते अभ्यागतने खवरावी देवी, अने चोथा खूणामां जे भिक्षा पडे ते जलमां धोइने म्हारे पोते खाइ लेवी; ए रीते बार वरस पर्यंत तपस्या करी मरण पामीने चमरचंचा राज्यधानीमां चमरेन्द्रपणे भुवनपति देवोमां जइ उपन्यो त्यां उपजतांज अवधिज्ञाने करी जोयुं तो सौधर्मेंद्रना पग पोताना मस्तक ऊपर दीठा तेथी महाक्रोध उपन्यो तेवारे सर्व सामानिक देवोने बोलावीने कह्युं के हे देवो! आ कोण दुष्ट मांठा पुण्यनो धणी छे? जे महारा मस्तके पग देइने बेठो छे, तेवारे देवो बोल्या स्वामिन्! पूर्व जन्मने विषे संपादन करेला पुण्ये करी सर्वना करतां अतिशय समृद्धि अने पराक्रम छे जेनुं एवो आ सौधर्माधिप छे ए अनादिकालनी मर्याद छे माटे इहां तमारे कोप न करवो, तमारा सरखा इंद्र पूर्वे थइ गया तेना ऊपर पण एमज पग रहता आव्या छे माटे इर्ष्या म करो इत्यादिक देवोए कह्युं तो पण चमरेन्द्र क्रोधे भर्यो थको बोल्यो के जेनी ऊपर सौधर्मेंद्र पग राखे एवा पूर्वे थयेला चमरेन्द्र ते जूदा अने हुं जूदो माटे हुं त्यां जइ सौधर्मेन्द्रने

पग पकडी हेठो न्हांखीश, एवुं कही आयुधशालामां आवी, परशु—शस्त्र हाथमां लइने सौधर्मदेवलोके जावा लाग्यो. तेवारे सर्व देवोए वर्ज्यो तो पण कोइनुं मान्युं नहीं, ते वखत सुसुमारनगरने विषे श्रीमहावीर प्रभु प्रतिमा स्थित रह्या हता तेनुं शरण लइने लाख योजननुं रूप विकुर्व्वी ब्रह्मांड फूटी पडे एवो शब्द करतो, पगथी धरती कंपावतो, हाथे तालोटा देतो, मेघनी परे गर्जारव करतो, वीजलीनी पेरे झबकार करतो, ज्योतिष्चक्रने त्रास पमाडतो, देवताओने भयभ्रांत करतो, देवीओने बीक पमाडतो, कोलाहल करतो, अने परिघायुध फेरवतो, गर्वे करी अंध थयो थको सौधर्मेन्द्र स्हामो धायो त्यां पोतानो एक पग सौधर्मावतंसक विमाननी पद्मवर वेदिकाने विषे अने बीजो पग सौधर्मसभामां राख्यो. तेवारे सर्व सौधर्मदेवलोकना देवता भयभ्रांत थइने ज्यां त्यां नाशी गया. चमरेन्द्र बोल्यो अरे देवो ! तमारो इंद्र क्यां छे ? काली अमावासना जन्म्या तेने मने बतावो तो हमणा फरसुथी मारी नाखुं एवुं देवताओने कहीने मुखमांथी अग्निज्वाला काहाडतो थको, लांबाहोठ, कूवा सरखा गाल, खाड सरखा नाकना फोरणां, अग्नि सरखां नेत्र, सूपडा सरखा कान, कुसी सरखा दांत, गलामां सर्प, हाथमां वींछीना घरेणा, क्यांक तो उंदरो बांधेला, क्यांक तो नोलीया घोह बांधेली, कालुं रूप धारण करेलुं एवो देखी, देवदेवीए कोलाहल कर्यो, ते कोलाहल सांभलीने इंद्रे अवधिज्ञाने जोयुं तेवारे जाण्युं के एतो चमरीयो अर्धा भरेला घडानी जेम उछले छे माटे हवे एने हुं शिक्षा आपुं एम विचारी, हजार देवताओथी उपडी शके नहीं एवुं अग्निज्वाला करतां पण देदीप्यमान वज्र चमरेन्द्र ऊपर मूक्युं ते पोतानी ऊपर आवतुं देखीने चमरेंद्र बीक पामतो थको माथो नीचुं अने पग ऊंचा करेला एवो थको, त्यांथी न्हाठो तेना क्यांएक घरेणा पड्या, क्यांएक पोते पडतो थको नासवा मांड्यो पण स्वभावे चमरेन्द्रनी नीचे आववामां शक्ति घणी होय अने वज्रनी ऊंचे चडवामां

शक्ति घणी होय तेथी छेटुं रही गयुं त्यारे चमरेन्द्र पोताना लाख योजन वाला विकूर्वेला शरीरनो संहार करी, "शरणं शरणं" एवुं बोली, कुंथुआ जेवो सूक्ष्म थइने श्रीमहावीरस्वामीना चरणनी वचमां प्रवेश करतो हवो. एवीरीते वज्रथी डरतो थको श्रीमहावीरस्वामीने शरणे बेठो एटलामां शक्रेन्द्रे जाण्युं के चमरीयानी एटली शक्ति नथी जे विना शरणे इहां चाल्यो आवे माटे निश्चेथी ए श्रीअरिहंतनुं, अथवा अरिहंतनी प्रतिमानुं, अथवा भावित अणगारनुं शरण लेइने इहां आव्यो हशे? तो रखे आशातना थाय नहीं? एवुं विचारी अवधिज्ञाननो उपयोग आपी जोयुं तो श्रीमहावीरस्वामीनुं शरण लेइ आव्यो हतो एवुं जाणी तत्काल वज्रनी पाछल शक्रेंद्र पण आव्यो ते श्रीमहावीरस्वामीथी चार अंगुल छेटे रहेला वज्रने पाछुं खेंची लीधुं, कारण के महावीरस्वामीथी चार आंगुल छेटे वज्र परिभ्रमण करतुं हतुं पण तीर्थंकरनी आशातना टालवा माटे तीर्थंकरनी पासे वज्र जाय नहीं ए रीते चमरेन्द्रने श्रीमहावीरना शरणे आव्यो जाणी छोडी दीधो अने भगवानने कह्युं के हे प्रभु! म्हारो अपराध खमजो एवुं कही लगारेक दूर जइने पगथी जमीकूटीने बोल्यो अरे चमर! हवे श्रीवीरभगवाननी कृपाए तुं म्हारो भय म राखजे एवुं कही, भगवानने वांदी, तेमनी आज्ञा लइ शक्रेन्द्र पोताने स्थानके गयो, चमरेंद्र पण नाना प्रकारे भगवाननी स्तुति करी, वांदीने पोतानी चमरचंचा राजधानीए गयो, त्यां पोताना सिंहासन ऊपर उदास थइ बेठो त्यारे सामानिक देवोए आवी वधाव्यो अने कह्युं के शोच कां करो छो? तेवारे चमरेन्द्रे पोतानी वीतक वात सर्व कही अने कह्युं के हे देवानुप्रियो! हुं जीवतो आव्यो ए सर्व श्रीवीरभगवाननो उपकार छे माटे वांदवाने चालो एम कही, सर्व देव देवीयोने लइ, म्होटी ऋद्धि सहित आवीने श्रीमहावीरने वांदी, नाटक करी, पोताने स्थानके गयो. ए रीते पातालवासी चमरेन्द्र ऊंचो सौधर्मदेवलोके जाय नहीं ते आ अवसर्पिणी काले गयो माटे ए सातमुं चमरोत्पात नामे आश्चर्य जाणवुं.

आठमुं अच्छेरुं कहे छे—अष्टापद पर्वत ऊपर उत्कृष्ट पांचसो धनुष अवगाहना वाला एक श्रीऋषभदेव पोते, अने भरत विना नवाणुं भगवंतना पुत्र, तथा आठ भरतना पुत्र मली एकसो ने आठ पुरुष एक समयमां सिद्धि पाम्या, मध्यम अवगाहना वाला सीझे पण उत्कृष्ट अवगाहना वाला एक समये एकसो ने आठ न सीझे, मात्र बेज सीझे अने इहां एकसो आठ सिद्ध थया माटे ए आठमुं अच्छेरुं जाणवुं.

नवमुं अच्छेरुं कहे छे—श्रीमहावीर देव कोशंबी नगरीए समोसर्या, त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेनां शाश्वतां विमान, ज्योतिषचक्रमां छे. ते तेज विमानमां बेसीने पश्चिम पोरसिमां श्रीमहावीरने वांदवा माटे आव्या, अहिंआं कोइएक एवुं कहे छे के उत्तर वैक्रिय विमानमां बेसीने आव्या परंतु तेम न जाणवुं. ए मूलगा विमानमां बेसीनेज वांदवा आव्या छे, ते मूलगा विमाने कोइवारे न आवे, पण आव्या माटे ए अच्छेरुं जाणवुं.

हवे दशमुं असंयती, आरंभी, परिग्रहवंत, अब्रह्मचारी गृहस्थना वेषें रहेला, तेनी पूजा, सत्कार ते असंयतिपूजा नामे दशमुं अच्छेरुं छे, ते आवी रीते के श्रीसुविधिनाथना निर्वाण पछी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानन्तर हुंडावसर्पिणीना दोषने लीधे साधुओनो विच्छेद थयो, सर्व साधु काल करी गया कोई साधु रह्यो नहीं, तेवारे लोक बोल्या हवे कोने पूजीए, त्यारे ऋषभदेवजीनी वारमां श्रावक ब्राह्मण कहेवाता तेनो दाखलो लइ जे स्थविर श्रावक हता तेनी पासे जइ लोको धर्म पूछवा लाग्या ते पण जेवुं जाणता हता, तेवुं तेओने कहेवा लाग्या. लोक पण तेमने धन वसनादिक दान देवा लाग्या, तेथी तेओ गर्वित थया थका पोतानां मनःकल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के—जे कोई पृथ्वी, शय्या, मंदिर, सुवर्ण, रूपुं, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अने गज, अमने आपे, ते आ लोके तथा परलोके महा फल पामे अने अमे ज सुपात्र छिये, एवो उपदेश सांभली

लोके तेमने गुरु करी मान्या. एवी असंयतीनी पूजा चाली. एम केटलाएक काले तो वली साधुनो धर्मज विच्छेद गयो अने जैन विना पांखडी, संन्यासी प्रमुख विपरीत दर्शनीज पूजाववा लाग्या, प्रथम सदा सर्वदा संयतीनी पूजा थती हती. पण ते विच्छेद थवाथी असंयतिओनी पूजा श्रीशीतलनाथ जिननां तिर्थे बेसतां सुधि चाली. ते आश्चर्य थयुं. इहां जे साधु न होय अने साधुपणे पूजाय ते आश्चर्य जाणवुं तेमज श्रीतीर्थंकरोनुं तीर्थविच्छेद न थाय ते विच्छेद थयो ते पण आश्चर्य जाणवुं ए दशमुं अच्छेरुं छे ए रीतें ए दश आश्चर्य आ चोवीशीमां थयां. वली अनंते काले थशे. हवे दश अच्छेरां कया कया तीर्थंकरनी वारे थयां ? ते कहे छे—श्री ऋषभदेवना वारामां एकसो ने आठ सिद्ध थया, श्री शीतलनाथना वारामां हरिवंश कुलनी उत्पत्ति थइ, श्री मल्लीनाथना वखतमां स्त्री तीर्थंकर थइ, श्री नेमिनाथना वखतमां अमरकंका नगरीए श्रीकृष्णनुं गमन थयुं, अने श्री सुविधिनाथना शासनान्तराले असंयती ब्राह्मणोनी पूजा थइ. ए असंयतीनी पूजा तो श्री आदिनाथना वखतमां पण मरीचि कपिलादिकनी सांभलिये छिये. एम घणुं करीने बीजा तीर्थंकरोना वारामां पण प्रवाहे थाय छे अने पांच अच्छेरां श्री महावीरस्वामीने वारे थयां.

हवे इंद्र महाराज विचारे छे के—भगवान श्रीमहावीर स्वामी ब्राह्मणकुंड नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदानी कूखमां उपन्या ए आश्चर्य थयुं, जे माटे तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, अने वासुदेव एमनो जो नीचगोत्रकर्मक्षय न थयो होय, वेद्यो न होय, निर्जर्यो न होय, ते कर्म उदय आवे, तेना उदये करीने श्रीअरिहंत, चक्रवर्त्ती, बलदेव अने वासुदेव पण अंतप्रांत, तुच्छ, दरिद्री, प्रमुख कुलमां आव्या, आवे अने आवशे. कूखने विषे गर्भपणे उपन्या छे. ऊपजे छे अने उपजशे पण योनी मार्गे जन्म पणे निकलवुं ते कोइ निकल्या पण नथी,

निकलता पण नथी अने नीकलशे पण नहीं एटले जन्म्या पण नथी, जन्मता पण नथी अने जन्मशे पण नहीं एवी रीत छे परन्तु भगवान श्रीमहावीरस्वामी, माहणकुंडनगरमां ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदानी कूखमां आव्या. ते आश्चर्य रूप छे माटे ए आचार छे के—जे वखते जे इंद्र होय ते इंद्र ते वखते अरिहंत, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव जो अंतप्रांत, तुच्छ, दरिद्री प्रमुख यावत् ब्राह्मणना कुलोमां आवी उपन्या होय तो तेने अंतप्रांतादिक नीच कुलोमांथी लइने उग्र, भोग, राजन्य, क्षत्री, हरिवंश प्रमुख उत्तम कुलोमां संहरावे, ए कुलोमां लावी मूके, नीच कुलमां जन्म थवा दे नहीं, ए सर्व त्रणे कालनां जे इंद्र होय तेमनी मर्यादा छे तो निश्चे हुं पण भगवान श्री महावीरस्वामीने देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमांथी लइने ज्ञातक्षत्रिय सिद्धार्थराजा, तेमनो काश्यप गोत्र, तेनी भार्या त्रिशला क्षत्रीयाणीनी कूखमां गर्भपणे मूकुं, एवुं तेमना भाग्य प्रमाणे विचारीने इंद्रमहाराजे, हरणीगमेषी नामा देव जे पायदल कटकनो मालेक छे तेने बोलावीने एवी रीते कह्युं के निश्चे हे देवानुप्रिया ! आ वात थइ नथी, थाती नथी अने थाशे पण नहीं के श्रीअरिहंतादिक शिलाका पुरुषो छे ते अंतप्रांतादिक नीच कुलोमां आव्या, आवे अने आवशे अने जो कोइ नीच कुलमां आवे तो ते, लोकोमां अच्छेरो कहेवाय, अनंता उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी कालथी जो कोइ अरिहंतादिकनो नीचगोत्रकर्मनो क्षय न थयो होय, वेद्युं भोगव्युं न होय ते उदय आवे तो श्रीअरिहंतादिक नीचकुलमां आवे खरा पण तेनो ते नीचकुलमां योनि मार्गे जन्म न थाय अने ए भगवान् श्रीमहावीरस्वामी, जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां ब्राह्मणकुंडगामे ऋषभदत्तब्राह्मणनी भार्या देवानंदा ब्राह्मणीनी कूखमां उपन्या छे, माटे अतीत, अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणेकाले जेवारे जे इंद्र होय तेनो ए आचार छे के श्री अरिहंतादिक जो नीचकुलमां आवी

उपजे तो तेने उग्रादिक ऊंच कुलोमां जइ मूकवा ते माटे हे देवानु- प्रिया ! तमे जाओ भगवान श्रीमहावीर स्वामीने ब्राह्मणकुंडगाम नगरने विषे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदानी कूंखमांथी लइने, क्षत्रीयकुंड नगरने विषे सिद्धार्थक्षत्रिय राजा तेनी भार्या त्रिशला क्षत्रियाणी छे तेनी कूंखमां गर्भ पणे जइ मूको अने त्रिशला क्षत्रियाणीनो जे पुत्रीरूप गर्भ छे ते देवानंदा ब्राह्मणीनी कूंखमां मूको आ म्हारी आज्ञा तत्काल करीने पाछी सोंपो अर्थात् ए काम करीने पाछुं मने आवी कहो के जे आपे आज्ञा करी ते काम हुं करी आव्यो छुं.

इहां कोइ प्रश्न करे के इंद्रमहाराजने एज विचार केम उपन्यो के देवानंदानी कूखमांथी अपहरीने त्रिशला राणीनी कूखमां संक्रमण करो केमके ते वखतमां बीजा पण श्रेणिक प्रमुख म्होटा म्होटा राजा हता तेमने तो संभार्या नहीं अने ए सिद्धार्थ तो सामान्य राजा हतो तेने याद कर्यो तेनुं शुं कारण हशे ? एनो उत्तर एम छे के सहु जीवोनां पोत पोतानां भाग्य (कर्म) प्रमाणे देवोने पण कार्य करवानी बुद्धि उपजे छे, कर्मथी उपरांत करवानी शक्ति देवोमां पण नथी इहां पण पूर्वला भवमां त्रिशलाराणीनो जीव देराणी हतो अने देवानंदानो जीव जेठाणी हती बन्ने एक घरमां रहेती हती, परंतु कषाय महा बलवान छे जो जीव रुडुं करवानी चाहना करे तो कषाय माठुं करी न्हांखे हवे, लोभना वशथी जेठाणीए देराणीनो रत्नकरंडीयो चोरी लीधो, देराणीए संभाल्यो पण लाध्यो नहीं तेवारे बे जणीयोने घरनी अंदर मांहोमांहे घणाघणी बोलाचाली थइ तो पण जेठाणीए करंडीयो आप्यो नहीं तेना प्रभावथी कर्म बंधाणुं ते कर्म देवानंदाने उदय आव्यो, त्रिशलानी देवादार हती तेथी इंद्रने पण एवोज विचार स्वाभाविक पणे आवी गयो के त्रिशलाराणीनेज पुत्र रत्न देवरावुं ते माटे भव्यो ! तमे जुओ के जे जीव जेवुं शुभाशुभ करशे ते जीवने तेवुं शुभाऽशुभ मलशे इहां

कदापि कोइ अन्यदर्शनी पूछे के ए भगवानने गर्भमां जे आघा पाछा कर्या ते तमे दीठा तो नथी तेवारे अमे केम मान्य करीये? त्यारे उत्तर आपवुं के तमारा मतमां पण भागवतना दसमस्कंधना बीजा अध्यने बलदेवना गर्भनो परावर्त्तन लखेल छे वली पुराणने विषे पण पुरुषोने गर्भ उत्पन्न थयो छे ते देवताए काढ्या छे ए ऊपर मांधाता राजानी कथा कहे छेः—विशाला नगरीए वनराजा महाबलवान छे परंतु ते अपुत्रीयो छे माटे पुत्र थवा सारुं शोलसो स्त्री परण्यो तो पण तेने पुत्र थयो नहीं तेथी ते राजा घणो चिंतातुर थयो पुराणोमां कह्युं छे के—

अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गो नैव च नैव च।
तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, स्वर्गं गच्छन्ति मानवाः ॥ १ ॥

अपुत्रियाने गति न होय ते अवगतियो थाय, तेवारे ते राजाये कोइकना उपदेशथी अठ्याशी हजार तापस ऋषियोने नोतरीने भोजन कराव्युं, तेत्रीशक्रोड देवता आराध्या, तथापि कोइमां पुत्र आपवानी शक्ति न दीठी. तेवारे ते रुषियोने कह्युं के अरे! तमें बधा पेटज भरी जाणो छो पण म्हारुं काम करता नथी एवुं राजानुं बोलवुं सांभली एक तापस बोल्यो के हे राजन्! त्हारे पुत्र थाय एवो उपाय हुं जाणुं छुं, हुं तुजने सोनाना कचोलामां पाणी मंत्रीने आपुं ते पाणी त्हारी स्त्रीने पीवरावजे तेथी त्हारे पुत्र थाशे. पछी राजा पाणी मंत्रावीने कचोलो भरी घेर लइ आव्यो, एटलामां तो सर्व राणीयोए पुत्र संबंधी वात सांभलीने प्रत्येक (जुदी जुदी) राणी राजाने कहेवा लागी के पाणी अमने आपो, एम मांहोमांहे क्लेश थवा लाग्यो, राजाए विचार्युं के हवे हुं कोने पाणी आपुं अने कोने न आपुं! एम चिंतवी कोइने पाणी आप्युं नहीं, पछी ते कचोलुं लइ वस्त्रथी ढांकी पाणीयारा ऊपर राखीने राजा पोताने आवासे आवी सूइ रह्यो, एटलामां रात्रीमां राजाने तृषा लागी त्यारे पाणी मंगाववा सारुं पासे कोइ माणस हतो नहीं, पण एक

दासी तेनी शय्या पासे सूती हती, तेने कह्युं के–अरे दासी ! तृषा लागी छे, माटे पाणी लइ आव, ते दासीए जइ मंत्रेलुं कचोलुं पाणीनुं भरेलुं हतुं ते आणी आप्युं, राजाए पण अजाणतां पीधुं, ते पाणीना प्रभावथी राजाए गर्भ धारण कर्यो. दिवसे दिवसे पेट वधतुं गयुं तेथी राजा लज्जायमान थयो थको. सभामां पण आवे नहीं, प्रधाने विचार्युं के–ए घणुं खोटुं काम थयुं, पछी राजाने कही पाछा अठ्याशी हजार ऋषीओने नोतर्या अने ओलंभो दीधो के तमे आ शुं कर्युं ? हवे सारो उपाय करो. पछी ऋषीओए तेत्रीश कोटी देवतानुं आराधन कर्युं, तेवारे इंद्रे आवी, पोताना सेवकोने हाथे राजानुं उदर विदारीने मांहेथी बालकने काढ्यो, सर्वे बोल्या के ए धावी शकशे नहीं, पछी इंद्रे स्त्रीनुं रूप करी धवराव्यो, क्रमे क्रमे वधवा लाग्यो, तेनुं 'मांधाता' एवुं नाम दीधुं. इत्यादि अनेक वार्त्ता छे माटे गर्भ पण परावर्त्तन थाय छे ए वात निःसंदेह छे.

इंद्रे हुकुम कर्यो पछी हरणेगमेषी देवता पायदल(कटक)नो मालेक ते खुशी थइने हाथ जोडीने मस्तके अंजली करीने आज्ञा ने विनय सहित प्रणाम करीने इंद्रमहाराजनी पासेथी निकलीने, उत्तरपूर्वनी वचमांनी ईशानकोणमां आवीने, वैक्रियसमुद्घात करे, ते केवी रीते तो के पोताना आत्म प्रदेश शरीरमांथी बाहेर काहाडीने संख्याता योजननो उंचो दंड करे, आत्म प्रदेश कर्मपुद्गलनो समूह दंडरूप करीने प्रगट करे, ते दंड रत्नमय करे, ते रत्न केवी जातिओना होय ते कहे छे–१ कर्केतकरत्न, २ वैडूर्यनीलरत्न, ३ वज्ररत्न, ४ लोहिताक्षरत्न, ५ मसारगल्लरत्न, ६ हंसगर्भरत्न, ७ पुलकरत्न, ८ सौगन्धिकरत्न, ९ ज्योतिःसाररत्न, १० अंजनरत्न, ११ अंजनपुलकरत्न, १२ जातरूपरत्न, १३ सुभगरत्न, १४ अंकरत्न, १५ स्फटिकरत्न, १६ अरिष्टरत्न; ए शोल जातिनां रत्न तेना असार पुद्गलने छांडीने सार पुद्गल ग्रहण करे, करीने

उत्तर वैक्रिय धारण करे, मूलरूप त्यांज राखे, नवुं रूप करीने, मनुष्यलोकमां आवे, केवी गतिथी मनुष्यलोकमां आवे? ते कहे छे–एक चंडा, बीजी चपला, त्रीजी जयणा अने चोथी वेगा ए चार गतिए करीने चालतां तो केटलोएक काल वीती जाय तो पण मनुष्यलोकमां आवी शके नहीं ? ते चारगतिनुं प्रमाण आवीरीते के–२८३५८० एटले बे लाख त्रियाशीहजार पांचशेने एंशीयोजन अने एक योजनना साठ भाग करीये तेवा छ भाग उपर, एटला क्षेत्रनुं एक डगलुं भरतो चाले ते प्रथम चंडा गतिनुं प्रमाण जाणवुं. तथा ४७२६३३ एटले चारलाख बहोंतेर हजार छशेने तेत्रीश योजन अने त्रीश कला ऊपर, एटला क्षेत्रनुं एक डगलुं भरतो चाले ते बीजी चपलागतिनुं मान जाणवुं. तथा ६६१६८६ एटले छ लाख एकसठ हजार छशे छयाशी योजन अने चोपन कला ऊपर, एटला क्षेत्रनुं एक डगलुं भरतो चाले ते त्रीजी जयणागतिनुं मान जाणवुं. तथा ८५०७४० एटले आठ लाख पचाश हजार सातसे चालीश योजन अने अढार कला ऊपर, एटला क्षेत्रनुं एक डगलुं भरतो चाले ते चोथी वेगागतिनुं मान जाणवुं. हवे ए गतियोना प्रमाणथी जो देवता चाले तो छ महीना सुधीमां पण आ मनुष्य क्षेत्रमां आवी शके नहीं माटे दिव्य देवगतिए करी असंख्याता द्वीप, समुद्र उल्लंघन करतो थको ज्यां जंबूद्वीपनुं भरतक्षेत्र, ज्यां ब्राह्मणकुंड गाम नगर तेमां ऋषभदत्त ब्राह्मणनो घर तेमां ज्यां देवानंदा ब्राह्मणी सुती छे त्यां आव्यो, आवीने भगवानने देखी प्रणाम करीने, देवानंदा ब्राह्मणीना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा देइने, अशुभ पुद्गल दूर करीने, शुभ पुद्गल प्रक्षेप (घालीने) करीने के 'भगवन् ! आज्ञा आपो' एवुं कहीने, भगवानने पीडा रहित देवप्रभावे करीने हाथमां ग्रहण करी करसंपुटमां लइने, क्षत्रियकुंडनामानगरे ज्ञातकुल सिद्धार्थक्षत्रिय राजाना घरमां

ज्यां त्रिशला क्षत्रियाणी छे त्यां आवीने, तेना सर्व परिवारने अवस्वापिनी निद्रा आपीने, अशुभ पुद्गल बाहेर काहाडीने, शुभपुद्गल प्रक्षेपीने, भगवानने पीडा रहित त्रिशलाराणीनी कूखमां मूक्या. दशमा-द्वारथी देवे प्रवेश कर्यो अने नाभिथी पाछो निकल्यो एवुं वृद्ध वाक्य छे. पछी त्रिशलाना गर्भमां पुत्री हती तेने त्यांथी लइने देवानंदानी कूखमां गर्भपणे मूकीने, जे दिशाथी देवता आव्यो हतो ते दिशाए पाछो चाल्यो गयो. त्यां चंडा चपलादिक चार गतिथी अधिक दिव्य देव-गतिए करीने तीच्छों असंख्याता द्वीप समुद्रमांथी थइने लाखयोज-नना प्रमाणवाला शरीर सरखा पग मूकतो थको ऊंचो ज्यां सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतंसक नामे विमान छे तथा शक्रसिंहासन छे अने शक्रेंद्रनामे देवताओनो राजा छे त्यां आव्यो, आवीने शक्रेंद्रने पाछी आज्ञा सोंपी अर्थात् एम कह्युंके तमे कह्युं ते सर्व काम करी आव्यो छुं.

ते कालने ते समयने विषे, श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीने वर्षाकालनो त्रीजो महीनो पांचमुं पखवाडियुं आशोज वदि तेरशने दिवसे ब्याशीमी रात वीतीगइ अने त्र्याशीमी रातना वर्त्तमानमां पोताना हितने लीधे अथवा भगवाननी अनुकंपाने लीधे इंद्रे मोकलेला हरिणे-गमेषी देवता तेणे ब्राह्मणकुंडगाम नगरमां ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदा ब्राह्मणी छे तेनी कूखमांथी लइने ज्यां क्षत्रियकुंड गामनगरे सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी त्रिशला क्षत्रियाणी राणी छे तेनी कूखे मध्य-रात्रिने विषे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आव्यां थकां पीडा रहित मूक्या. ते कालने समयने विषे भगवान त्रणज्ञान सहित आवी ऊपन्या; मुजने इहांथी संहरण करशे एवुं जाणे पण संह-रणनी वेला सूक्ष्म छे माटे ते जाणे नहीं अने संहरण कर्यां पछी जाणे के मने संहरण कर्युं. जे रात्रिमां श्रमणभगवंत श्रीमहावीर

स्वामीने देवानंदानी कूंखथी लइने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कूंखमां गर्भपणे मूक्या ते रात्रिमां देवानंदा ब्राह्मणी पोतानी सुकोमल शय्यामां सूति कांइक जागतीने सुपनुं आव्युं के म्हारा जे महामंगलकारी चौद स्वप्नां हतां ते त्रिशलाक्षत्रियाणीए खेंची लीधां एटले हरण कर्यां एवुं सुपनुं देखीने जागी. जे रात्रिमां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने देवानंदानी कूंखमांथी लइने त्रिशलाक्षत्रियाणी वासिष्ट गोत्रवाली तेनी कूंखमां मूक्या ते रात्रिमां त्रिशला क्षत्रियाणी शय्यामां सूती हती.

ते शय्यानुं स्वरूप कहे छे—प्रथम तो जेनुं स्वरूप कहेवामां आवे नहीं एवुं तो वसवानुं घर छे ते घर कहेवुं छे तो के ते घरनी मध्य एटले भींतनी मांहेनी बाजु चित्रें चित्रित छे अने भींतनी बाहेरनी बाजुने घसीने धोली चलकादार करी छे एवुं ते घर छे जेमां ऊपरनो भाग चित्राम सहित छे अने जमीननो भाग तो जेवो मणिरत्नोनो उद्योत होय तेवो छे तेथी ते घरमां सर्व अंधकारनो नाश थइ गयो छे, अने नित्य उद्योत रहे छे वली जेने विषे जमीन ऊपर अनेक मांडणा मांड्या छे एवुं आंगणुं छे वली आंगणे सरस सुगंधि पांच वर्णना फूलनां पुंज मूकेला छे ते फूलोनी रचना सहित छे तथा कृष्णागर भलो कुंदरु शिलारस तेनो धूप तेणे मघमघायमान छे तेणे करी मनोहर छे सुगंध प्रधान चूर्णनो गंध छे ज्यां, गंधवट्टी समान छे. अने पुण्यवंतने योग्य जेनुं वर्णन करवामां न आवे एवी शय्या छे तेने विषे शरीर प्रमाणे बे पासे ओशीसा (तकीया) राख्या छे, बे पासे गालमसूरीयां मूकेलां छे, बे पासे ऊंची छे, मध्यमां ऊंडी छे, जेम गंगानदीनी रेतिमां पग मूकीये ते नीची जाय तेम जेमां पग मूकतां नीचो जाय ते समान नीखार्या अतलसना पटकूल वस्त्रें ते पलंग ढांकी छे, भली मच्छरदानीथी रचित, रजरक्षाना वस्त्र लाल रमणीक सुकोमल वस्त्रे ढांकी छे; आकडानां फल मांहेलो कपास तथा माखण ते सरखो ते शय्यानो स्पर्श छे, भलुं



चित्रकार. धीरजलाल टो. शाह] [रायपुर, अहमदाबाद.

त्रिशला माता को अल्प निद्रा में आये हुए चौदह स्वप्न

सुगंधित चूर्ण तथा फूलो जेने विषे बिछाव्यां छे, एवी शय्या ते शय्याने विषे मध्यरात्रिना अवसरमां त्रिशलाक्षत्रियाणी अल्पनिद्रामां सुती छे ते वेलाए ते गजवृषभादिक चौद स्वप्नां देखीने जागी.

त्रिशलाक्षत्रियाणी चौद स्वप्नामांथी पहेले स्वप्ने हाथी देखे ते हाथी कहेवो छे तो के ? चार दांत वालो छे, घणो ऊंचो छे, जेवा मेघना छांटा धोला थाय तेवो धोलो छे, तथा जेवो मोतीनो हार, क्षीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरणो, पाणीना कणीयां, अने रूपानो पर्वत होय तेवो सरखो धोलो छे, वली ते हाथीना कुंभस्थलमांथी मद झरे छे तेथी तेना कपोल पासे भमरा गुंजारव करी रह्या छे, इंद्रना ऐरावत सरखो म्होटो देखाय छे, ते हाथी मेघनी पेरे गंभीर शब्दोथी गाजतो थको छे, शुभ उत्तम सर्व लक्षणे करी सहित, म्होटा पेट वालो एवो हाथी पहेले स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणीए दीठो.

बीजे स्वप्ने त्रिशलाक्षत्रियाणी वृषभ देखे ते वृषभ कहेवो छे तो के ? धोला कमलना समूह सरखो श्वेत छे, तथा पोताना शरीरनी कांतिए करी सर्वदिशाओमां उद्योत करतो थको छे, तथा घणी शोभाना समूहे करी शोभित एवी खांधानी थूभि छे जेनी एवो छे, वली तेना शरीरमां पातला केश छे ते केश जाणे तेलें चोपड्या होय नहिं ? एवा छे, घणो रूडो स्थिर शरीर छे, वली ज्यां जेवुं अंग जोइये त्यां तेवुं अंग छे, जेनुं एटले ज्यां पातलुं अंग शोभे त्यां पातलुं छे अने ज्यां जाडुं अंग शोभे त्यां जाडुं अंग छे, तथा दृढ गोल शोभायमान मल-रहित तैलादिकें चोपड्या तीखां एवा बे शींगडा छे, तथा मोती सरखा ऊजला बरोबर सरखा शोभता दांत छे जेना, एवो वृषभ ते जाणे अनेक मंगलनुंज मुख होय नहिं ? तेने बीजा स्वप्नामां त्रिशलाए दीठो.

त्रीजा स्वप्नामां त्रिशलाराणी सिंहने देखे ते सिंह कहेवो छे तो

के ? मोतीनो हार, खीरसमुद्रनुं पाणी, चंद्रमाना किरण, पाणीना कणीया, तथा रूपानो पर्वत तेना सरखो धोळुं शरीर छे जेनुं, वळी ते सिंह रमणीक देखवा योग्य छे, तथा दृढ छे हाथ प्रमुखना अवयव जेना, वळी उज्ज्वल गोळ अने तीक्षण एवी जेना मुखमां दाढा छे तेणे करी मुख शोभतुं छे जेनुं, वळी कमळ सरखा सुकोमळ राता एवा जेना होठ छे, राता कमलना पत्रनी परें सुकोमल तालवुं छे, जीभ बाहेर काहाडतो थको लपलपायमान करतो थको शोभे छे, वळी पीळा अने वीजली सरखा चळकतां चंचल जेनां नेत्र छे, वळी विस्तीर्ण पुष्ट अने माता एवा साथल छे जेना, स्कंध जेनुं दृढ परिपूर्ण निर्मल छे, वळी सुकोमल छे भला विस्तीर्ण एवां जे सिंहकेसरा (मुखना केश) तेने आटोपे करी शोभित छे मुख जेनुं, वळी जमीन ऊपर पछाडीने (फटकारीने) ऊंचुं कर्युं छे पूंछ जेणे एवा पूछडानो अंत एटले छेडो काननी वचमां छे, वळी सौम्याकारवाळो लीला करतो थको आकाशमांथी उतरतो थको त्रिशलाना मुखमां पेसतो थको तीक्षण नखवाळो सिंह त्रिशलाए त्रीजा स्वप्नामां दीठो.

चोथा स्वप्नामां त्रिशलाक्षत्रीयाणी संपूर्ण पूर्णिमाना चंद्रमा सरखुं छे मुख जेनुं एवी लक्ष्मीदेवताने देखे ते लक्ष्मी किहां रहे छे ते कहे छे–ऊंचो हिमाचल पर्वत तेनी ऊपर एक पद्मद्रह छे ते द्रहमां एक कमल छे त्यां रहेवा वाली लक्ष्मी देवता तेनो पगथी लइने सर्व अंगनी शोभानुं वर्णन श्रीभद्रबाहुस्वामी करे छे केमके प्रायें देवताना रूप वर्णनमां पगोथी वर्णन कराय छे माटे अहीं पण पगोथी मांडीने वर्णन करे छे, ते लक्ष्मीदेवीना पग भले प्रकारे करी सोनाना काचबा सरखा जाणे लाखने रसे रंग्या मांस सहित एवा वचमां अति ऊंचा अने पछवाडे नम्या एवा छे, तथा त्रांबा सरखा नख छे, कमल सरखा कोमल आंगळां छे, पिंडिओ केळ सरखी गोळ छे, नीचे नीचे पातली अने

ऊपर ऊपर जाडी एवी जंघापिंडियो छे, गोडा मांसथी भरेला छे माटे गुप्त छे हाड देखाय नहीं, तथा ऐरावत हाथीना सरखो जंघानो वचलो प्रदेश शोभे छे, सोनानी कटिमेखला छे केडमां जेनी, वली लक्ष्मी-देवीनी नाभीथी लइने स्तन सुधी रोमराजी छे, प्राये स्त्रीयोना शरी-रमां रोमराजी होती नथी तेमां वली देवताने तो सर्वथा नहीज होय तो पण कवीश्वर श्रृंगाररस वर्णन करतो बोले छे. हवे ते रोमराजी कहेवी छे तो के कज्जलनी पेरे तथा भमरानी श्रेणीनी पेरे श्याम छे; मेघ-घटा सरखी काली छे, सरल भलेला थका सुकोमल, मनोहर-विलास सहित सरस सूका फूल सरखा कोमल छे, वली नाभिमंडल भलुं छे जेनुं, मुष्टीमां समाइ जाय एवी कटि छे, पेटमां त्रण सल पड्या तेथी शोभायमान छे, वली सर्वांगोपांगमां घरेणा आभूषण पहेरेलां छे ते घरेणा कहेवां छे तो के अनेक प्रकारना मणियोथी जडेला छे, रत्नोए करी सोनामां मढ्या छे, वली हृदयमां बे स्तन छे ते जाणे सोनाना कलश ज होय नहि ! एवां छे, वली ते स्तन हारें करी तथा कुंदमालाए करी व्याप्त छे तथा भलां मोतीयोनां जालीयां तेणे करी विराजमान सोनैयानी माला क्यांएक मणिसूत्रनो दोरो छे तेणेकरी कंठ शोभायमान छे, बे कानोमां कुंडल बे शोभे छे, एवा घरेणाना समुदायथी लक्ष्मी देवतानुं मुख शोभे छे, जेम राजा कुटुंबथी शोभे छे तेम लक्ष्मीदेवीनुं मुख घरेणाथी शोभे छे, वली निर्मल कमलनी पांखडी सरखा दीर्घ तीखां अने अणीयालां एवां महोटां नेत्र छे जेनां बे हाथमां कमल छे तेमांथी पाणी छटकावती थकी छे, वली लीलाने वास्ते हाथमां कमलवींजणो धारण करेलो छे, ते जेवारे कमल लीलाने सारुं हलावे तेवारे कमलमांथी सुगंध निकले, वली लक्ष्मीदेवीने मस्तके वेणीदंड घणो निर्मलता भर्यो कालो छे लांबो केड सुधी शोभे छे. ए नखथी मांडीने माथानी वेणीसुधी वर्णन कर्युं. एवी लक्ष्मीदेवता पद्म-

द्रहना कमलमां वसती हिमाचलनामा पर्वत ऊपर बेठी थकी दशदिशाथी शोभायमान छे, वली हाथी आवी सूंढमां पद्मद्रहथी जल भरीने लक्ष्मीदेवीने स्नान करावे एवी लक्ष्मीदेवताने त्रिशलाक्षत्रियाणीए चोथा स्वप्नमां दीठी. हवे हिमाचल पर्वत ऊपर लक्ष्मी देवतानो निवास छे त्यां ए देवीनो परिवार केटलो छे तथा निवास केवा प्रकारनो छे? ते कहे छे–आ भरतक्षेत्रना छ खंड छे तेना अंतमां उत्तरदिशा तरफ एक चुल्लहिमवंत पर्वत सोनानो छे ते एकसो योजन ऊंचो छे, तथा एक हजार बावन योजन अने बार कला ऊपर, एटलो पोहोलो छे, ते मध्ये पद्मद्रह छे, ते दश योजन ऊंडो, हजार योजन लांबो, पांचशे योजन पोहोलो छे, संपूरण जलेकरी भर्यो शाश्वतो छे, तेनुं तलीयुं वज्ररत्नमय छे, चोफेर पण वज्रमय छे, ते द्रहना मध्यभागें एक कमल छे, ते कमलनुं नाल दश योजननुं दीर्घ छे, जलथी ऊपर बे कोश ऊंचुं छे, एक योजन पोहोलुं छे, एक योजन दीर्घ छे, कांइक जाजेरा त्रण योजननी परिधी छे, दश योजन पाणीमां नाल छे, तेनुं वज्र रत्नमय मूल छे, रिष्टरत्नमय मूलनो कांदो छे, इंद्रनील रत्नमय नाल छे, राता सुवर्णमय बाहेरना पांदडां छे, कांइक जांबूनद (सुवर्ण) मय अभ्यंतरनां पांदडां छे, तेमां सुवर्णमय कर्णिका छे, एटले वचली डोडी छे, ते बे कोश पोहोली अने एक कोश ऊंची छे, तेमां रातां सोनानां केसरां छे ते कर्णिकामां श्री लक्ष्मी देवीनुं भवन छे, ते एक कोश लांबु, अर्द्धो कोश पोहोलुं अने चउदशें चालीश धनुष ऊंचुं छे, ते घरनां बारणां पूर्व, दक्षिण अने उत्तर एवी त्रण दिशाए छे, ते बारणां पांचशें धनुष ऊंचा अने अढीशे धनुष पोहोलां छे, वली ते घरमां अढीशे धनुष प्रमाण एक मणिमय पीठिका छे, ते पीठिका ऊपर लक्ष्मी देवीनी शय्या छे, हवे त्यां ए देवीनां मुख्य कमलनी पांखडिये लक्ष्मी देवीने आभरणादिक मूकवानां वलयाकारे एकशो ने आठ कमलो छे, ते कम-

लोनुं सर्व ऊंच नीचपणुं मुख्य कमलथी अर्धो जाणवुं. ए एकसो ने आठ कमले करी ते मूल कमल वींटायेलुं छे, जेम गढें करी नगरी विंटायेली होय छे, तेम जाणवुं. हवे ते मूलगा कमलना बीजा वलयनी पूर्व दिशाए महर्द्धिक चार देवीओने वसवानां चार कमल छे, तथा वायव्य कोण, उत्तर दिशा, अने ईशानकोण, ए त्रणे दिशाए देवीना सामानिक देवताने वसवानां चार हजार कमल छे, तथा श्रीदेवीनी अभ्यंतर पर्षदानां जे आठ हजार गुरुस्थानीय देवता छे, तेने वसवानां आठ हजार कमल अग्निकोणे छे, तथा मध्य पर्षदाना दश हजार मित्र स्थानीय देवताने वसवानां दश हजार कमल दक्षिण दिशाए छे, तथा श्रीदेवीनां बाह्य पर्षदाना किंकर स्थानीय बार हजार देवताने वसवानां बार हजार कमल नैऋतकोणे छे, अने श्रीदेवीना हाथी, घोडा, रथ, पायक, महिष, नाट्य, गंधर्व. ए सात कटकना स्वामीने रहेवानां सात कमल पश्चिम दिशाए छे. वली लक्ष्मीदेवीना अंगरक्षक शोल हजार देवताने वसवानां शोल हजार कमल, ते त्रीजा वलयनी चार दिशामांहेली प्रत्येक दिशाने विषे चार चार हजार कमल गणतां शोल हजार कमल छे, तथा चोथा वलयने विषे श्रीदेवीना अभ्यंतर आभियोगिक बत्रीश लाख देवताने वसवानां बत्रीश लाख कमल छे, तथा पांचमा वलयने विषे श्रीदेवीना मध्यम चालीश लाख आभियोगिक देवतानां चालीश लाख कमल छे, तथा छठ्ठा वलयने विषे श्री देवीना अडतालीश लाख बाह्य आभियोगिक देवतानां अडतालीश लाख कमल छे, एवं मूल कमल सहित सर्व मली छ वलयनां एक क्रोड, वीश लाख, पचास हजार, एकसो ने वीश कमल जाणवां. ते कमलनां मान मुख्य कमलथी मांडी अनुक्रमे अर्द्ध अर्द्ध प्रमाण लेवां. ए सर्व कमलवासी देवता श्रीदेवीनो परिवार जाणवो. ए देवी भवनपति मांहेली जाणवी.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते—
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे द्वितीयं व्याख्यान समाप्तम् ।

अथ तृतीय व्याख्यान प्रारंभः ।

पांचमा स्वप्नमां फूलोनी माला देखे, ते मालामां रस सहित कल्पवृक्षना फूल, तेणे करी घणी मनोहर छे; वली चंपाना फूल, अशोकनां फूल, पुन्नागनां फूल ते नागप्रियंगु सरखा ए फूलनां झाड थाय छे; मोगरानां फूल, मालतीनां फूल, जायनां फूल, जूइना फूल, कोल्लज फूल ते कोइ वेलि विशेषना फूल, कोजनां फूल, कोरंटनां फूल, दमणाना फूल, नवमालिकानां फूल, बकुलवृक्षनां फूल, तिलवृक्षनां फूल, वासंतिकाना फूल, पद्मकमलनां फूल, उत्पल ते पुंड-रीकनां फूल, कुंदमचकुंद वृक्षनां फूल, अगथियाना फूल, आम्रमांजर एवा प्रकारनां फूलोनी घणी सुगंध छे जेमां एवी बे फूलोनी माला तेनी मनोहर सुगंधथी खेंचाणा थका आव्यां एवां जे भमरा भमरीयो तेनो गुंजारव शब्द जेने विषे थइ रहेलो छे. वली ए बेउ मालामां सर्व ऋतुनां फूल सुगंधी पांच वर्णा छे, परंतु तेमां धोलो वर्ण विशेष छे, ते ज्यां ज्यां जे जे फूल शोभे त्यां त्यां ते ते फूल गुंथ्यां छे एवी बे माला पांचमा स्वप्ने त्रिशलादेवीए दीठी.

छठ्ठा स्वप्नमां चंद्रमा देखे ते चंद्रमा केवो छे ? तो के गायना दूधना फीण सरखो ऊजलो छे, रूपानां कलश सरखो धोलो छे, वली हृदय अने नेत्रने वल्लभ, संपूर्ण पूर्णिमाना अंधकारने हरवावालो, वली शुक्लपक्षमां शोभायमान, कुमुदवननो बोध एटले उघाडवा वालो, रात्रिनी शोभाने करवा वालो, भली रीते उजला काचनी परे शोभाय-मान, आकाश रूप तलावनो हंस, बेउ पक्षे करी पूर्ण, सर्व ज्योतिषि-योना मुखनुं मंडन, अंधकारनो वैरी, कंदर्पबाणनो पूरवा वालो, समु-द्रनां जलनो वधारवा वालो केमके ज्यारे शुक्लपक्षमां चंद्रमा ऊगे त्यारे समुद्रनी वेल वधे छे. विरहिणी स्त्रीने चंद्रना उदयथी अधिक विरह जाग्रत

थाय ते माटे विरहिणीयोने किरणोए करी शोषण करवावालो, आकाशनुं तिलक, रोहिणीना हृदयने वल्लभ केमके चंद्रमा रोहिणीनो भरतार छे एवी लोकोमां केवत छे; परंतु रोहिणी तो नक्षत्र छे ते बने नहीं. एवो पूर्णिमानो चंद्र त्रिशलादेवीए छट्ठा स्वप्नामां दीठो.

सातमे स्वप्ने सूर्य देखे ते सूर्य केवो छे ? तो के अंधकारनां पडलने फोडवावालो, वली रातो वर्ण छे ते वर्ण केवो छे ? तो के राता अशोक सरखो, केशूडानां फूल सरखो लाल छे, जेवुं पोपटनुं मुख लाल होय, जेवी अर्द्धि चिणोठी लाल होय तेवो सूर्य लाल छे, वली कमलनां वननो उघाडवा वालो छे, ते माटेज कमलनी शोभा करवा वालो छे, ज्योतिषशास्त्रनो तथा ज्योतिषचक्रना चिह्न सरखो ओलखाणनो करवा वालो छे, आकाशमां दीवानी पेरे शोभे छे, ऊगतो थको हेमना समूहने हाथथी गरदन पकडीने कहाडवावालो, वली ग्रहोनो राजा छे, रात्रिनो नाश करवावालो छे, वली ऊगती वेलाए तथा आथमती वेलाए बे घडी पर्यंत सुखे दीठामां आवे पछी सुखे दीठामां आवे नहीं, वली रात्रिना विचरवावाला जे चोर आदिक तेमनुं भ्रमण मटाडवा वालो, वली शीतने मथन करवावालो, मेरुपर्वतने पाखति निरंतर म्होटा मंडल सहित भमवावालो, वली सूर्यना हजार किरणोए करी सर्व ज्योतिषीओनी प्रभा मटाडवावालो. इहां सूत्रकार सूर्यनी हजार किरणो कहे छे ते जघन्यआश्रित जाणवी अने लोकमां पण सहस्र किरण कहेवानी रूढी छे; परंतु सूर्यना किरणोमां तो महीने महीने वधघट थाय छे ते आ प्रमाणे—चैत्रमां १२०० किरणो, वैशाखमां १३०० किरणो, ज्येष्ठमां १४०० किरणो आषाढमां १५०० किरणो, श्रावणमां १४०० किरणो, भाद्रवामां १४०० किरणो, आसोजमां १६०० किरणो, कार्त्तिकमां ११०० किरणो, मार्गशिरमां एक हजार ने पच्चास किरणो, पोषमां हजार किरणो, माघमां साडादशसो किरणो, फाल्गुनमां अगीआरसो किरणो छे. एवो सूर्य लोकोना चक्षु समान त्रिशलादेवीए सातमे स्वप्ने दीठो.

आठमे स्वप्ने ध्वजा देखे. ते ध्वजा केवी छे ? तो के सोनानो जेने दंड छे ते ऊपर रहेली छे, पांच वर्णना वस्त्रनी ध्वजा छे, वली ते ध्वजानी ऊपर सुकोमल अनेक रंगनां मोरपीछ धर्यां छे ते चोटी सरखा शोभायमान छे तथा घणो श्रीकार छे, तथा ते ध्वजामां सिंहनुं रूप लख्युं छे तेणेकरी वली बहुज शोभे छे, ते सिंह केवो छे के जेवो शंख ऊजलो, कुंदवृक्षनुं फूल ऊजलुं, जलनो कणीयो ऊजलो तथा रूपानो कलश ऊजलो होय तेवो श्वेतवर्णवालो छे; जे सिंहने देखीने लोक एवुं समजे छे के–आ सिंह आकाशमंडल भेदवाने उद्यम करे छे के शुं ? एवी ते सिंहनी मुखाकृति तथा शरीराकृति छे, जे ध्वजानुं वस्त्र वायरानी लहेरोथी थोडुं थोडुं चलायमान थइ रह्युं छे, वली घणो ऊंचो लोकोने देखवा योग्य एवो ध्वज आठमा स्वप्नामां त्रिशलादेवीए दीठो.

नवमा स्वप्नमां पूरण कलश देखे. ते कलश केवो छे? तो के उत्तम देदीप्यमान छे रूप जेनुं, निर्मल जलथी भर्यो थको घणोज सुंदर छे, सूर्यमंडल सरखी जाज्वल्यमान शोभा छे जेनी, वली जे कलशनी पासे कमलनी वाडी छे एटले कमलोथी वींटायेलो छे, वली ते कलश सर्व मंगलोनो मलाववा वालो छे, वली ते पूरण कलश, प्रधान रत्नोनुं कमल तेना ऊपर धरेलुं छे, नेत्रोने आनंद आपवा वालो छे, सर्व दिशाओमां उद्योत करतो थको सर्व लक्ष्मीनो घर तेनी परे सर्व पाप रहित सर्व शोभा सहित लक्ष्मीनो निवास छे, वली जे कलशने गलामां छ ऋतुना सुगंधि फूलोनी माला छे, एवो पूर्णकुंभ (कलश) भलो रूपामय ते नवमे स्वप्ने त्रिशलाराणीए दीठो.

दशमा स्वप्नामां पद्मसरोवर देखे. ते पद्मसरोवर केवुं छे ? तो के जे सरोवरमां ऊगता सूर्यथी उघड्यां एवां हजार पांखडीनां कमलो छे, ते विकस्वरमान कमलनी वासनाओथी जेनुं पाणी सुगंधमय थयुं छे, वली ते कमलोनी प्रभाओथी पाणी लाल पीला रंग जेवुं देखाय छे,

वली जे पद्मसरोवर जलमत्स्य कच्छपादिक अनेक जलचर जीवोथी सेवा-थमान छे, वली जे पद्मसरोवरमां कमलपत्र ऊपर पड्यो जलनो छांटो तेणे करी जाणे नीला आंगणामां मोती जड्यां होय नहिं ? एवुं देखाय छे, वली ते म्होटुं सरोवर छे तेमां सूर्यविकासी कमल, चंद्रविकासी कमल, नील कमल, महापद्म (श्वेत) कमल, रातां कमल, इत्यादिक कमलनी शोभा बनी रही छे तेथी घणुंज रमणीय थयुं छे, वली ते कमलो ऊपर प्रसन्न थया एवा भमरा भमरीयो आवीने गुंजारव करी रह्यां छे वली तिहां कादंबक हंस, चकवा, राजहंस, बगला, सारस, एवा पंखीयोथी ते करी शोभायमान छे, अर्थात् ए जातियोना पंखीयो त्यां रहे छे, एवो पद्मसरोवर त्रिशलादेवीए दशमा स्वप्नामां दीठुं.

अगीआरमां स्वप्नामां खीरसमुद्र देखे. ते खीरसमुद्र केवो छे ? तो के चंद्रमाना किरणोनी जेवी शोभा तेवी शोभा ते समुद्रमां छे, वली चारे बाजु समुद्रनुं जल वृद्धि पामेलुं छे, वली तेमांथी चंचलथी पण घणा चंचल एवा घणा ऊंचा कल्लोल उठी रह्या छे, ते कल्लोले करीने पाणी घणुंज चंचल थयुं छे, वली मंदमंद वायराथी चलायमान थया जे कल्लोल ते समुद्रना तट ऊपर आवीने भफाका खाइ रह्या छे, तेनो शब्द थइ रह्यो छे जेनेविषे, ते कल्लोलोथी समुद्र शोभी रह्यो छे, वली ते कल्लोल मल्या थका दोडता छे एटले एक कल्लोलनी पछवाडे बीजो कल्लोल दोडी रह्यो छे, पहेलो एक न्हानो कल्लोल चाले, वली म्होटो कल्लोल चाले, एवी कल्लोलोनी शोभा छे जेने विषे, वली जे समुद्रमां जलचर जीव कल्लोल करी रह्या छे, ते केवा जातिनां तो के महा-मगरमच्छ, तिर्मिंगलमच्छ, लघुमच्छ ते सर्व परस्पर मल्या थका रमत करे त्यारे तेमनां पूंछना उछालवाथी उछल्युं जे पाणी तेमांथी फीण प्रगट थइ ते फीण कल्लोलोथी तणाइने किनारा पर आवी पडे छे, तेनां ढगला थइ गया छे ते ढगला सर्व कपूरना ढगला सरखा देखाय छे, वली जे समुद्रमां

गंगा प्रमुख नदीयोनां पाणी पडे छे तेमां चौद चौद हजार नदीयोना परिवार साथे गंगा अने सिंधु ए बे भरतक्षेत्रनी नदीयो पडे छे. एमज चौद चौद हजार नदीयोना परिवार साथे ऐरवतक्षेत्रनी रक्ता अने रक्तवती ए बे नदीयो पडे छे, तथा अट्ठावीश अट्ठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे रोहिता अने रोहितासा ए बे नदीयो हेमवंतक्षेत्रनी पडे छे, तथा अट्ठावीश अट्ठावीश हजार नदीयोना परिवार साथे सुवर्णकुला अने रूपकुला ए बे नदीयो ऐरण्यवतक्षेत्रनी पडे छे, तथा छप्पन्न छप्पन्न हजार नदीयोना परिवार साथे हरिकंता अने हरिसलिला ए बे हरिवर्ष क्षेत्रनी नदीयो पडे छे. तथा छप्पन्न छप्पन्न हजार नदीयोना परिवार साथे नरकांता अने नारिकांता ए बे नदीयो रम्यकृक्षेत्रनी पडे छे, तथा पांच पांच लाखनी ऊपर बत्रीश बत्रीश हजार नदीयोना परिवार साथे सीता अने सीतोदा ए बे नदीयो महाविदेह क्षेत्रनी पडे छे, सर्व मली चौद लाख ने छप्पन्न हजार नदीयोनुं पाणी जे समुद्रमां पडे छे, इहां कोइ प्रश्न करे के सूत्रमां तो खीरसमुद्र स्वप्नमां दीठो एवो पाठ कह्यो छे अने तमे तो नाना प्रकारनी वेलाए वधतो पाणी कहो छो तथा नदीयो मांहे भले छे एवो कहो छो तेनुं शुं कारण छे ? तेनें उत्तर कहे छे के-खीरसमुद्रनो पाठ कहेवा थकी लवणसमुद्र लेवो कारण के जो लवणसमुद्र नहीं कहेशो तो गंगा अने सिंधु नदीयो पडे छे ए पाठ पण सूत्रकारेज कहेलो छे ते पाठ मलशे नहीं माटे इहां एम समजवुं के लवणसमुद्रनुं पाणी डोलुं छे ते स्थानके त्रिशला माता ए लवणसमुद्रनुं पाणी खीरसमुद्र सरखुं देखे छे एवो अगीआरमे स्वप्ने खीरसमुद्र त्रिशलादेवीए दीठो.

बारमे स्वप्ने-देवविमान दीठुं. ते केवुं छे ? तो के पुंडरीक उत्कृष्ट विमान छे तेमां उत्तम सुवर्णमणीनां एकहजार ने आठ थंभो लागेलां छे, वली ते विमान आकाशमां दीपकनी पेरे दीपी रह्युं छे,

उद्योतमां सूर्यमंडल सरखी शोभा छे जेनी, वली जे विमानमां सोनानी भींतोमां नागफणा खीला ठोक्या छे, वली स्थानके स्थानके दिव्यफूल मालाओ, अने सुवर्ण पत्रेकरी लंबायमान एवी मोतीयोनी मालाओ लटके छे, वली ते विमाननी भींतमां मृग हरणनां रूप, नाहारनां रूप, बलदनां रूप, घोडानां रूप, मगरमच्छ, भारंडपंखी, गरूड, मयूर एमनां रूप, सर्पनां रूप, किन्नरदेवोनां रूप, कस्तुरीया मृगनां रूप, शार्दूलसिंहनां रूप, हाथीनां रूप, वनलता, पद्मलता, एमनां रूप चित्रामणमां छे, वली जे विमानमां नाटक थइ रह्यां छे ते नाटकमां जे वाजिंत्रो वाजी रह्यां छे तेना शब्दे करी पूराणुं एवुं ते विमान छे, वली जे विमानमां मेघ गाजे तेना सरखो देवदुदुंभीनो शब्द थइ रह्यो छे तेथी जाणीये छिये के सर्व जीवलोक (संसार) ते शब्दथी पूरण कर्यो छे अर्थात् ते शब्द सर्वत्र फेलाइ गयो छे, वली ते विमानमां, अगर, कुंदरु, शिलारस, एमनां धूपनो मघमघायमान सुगंध पसरी रह्यो छे, वली जे विमानमां देवोने योग्य सदा उद्योत थइ रहेलो छे, देवोने योग्य सर्वदा सात सुखना निवास रूप एवुं देवविमान त्रिशलामाताए बारमा स्वप्नमां दीठुं.

तेरमे स्वप्ने रत्नोनो ढगलो दीठो तेमां कयां कयां जातना रत्न छे—१ पुलकरत्न, २ वज्ररत्न, ३ नीलरत्न, ४ शशाङ्करत्न, ५ कर्केतकरत्न, ६ लोहितरत्न, ७ मरकतरत्न, ८ प्रवालरत्न, ९ स्फाटिकरत्न, १० सौगंधिकरत्न, ११ हंसगर्भरत्न, १२ मसारगल्लरत्न, १३ अंजनरत्न, १४ चंद्रप्रभरत्न एवा बीजां पण अनेक जातिनां उत्तम रत्न ते सोनानां म्होटा थालोमां भरेलां ते रत्नोनो ढगलो कहेवो छे? तो के मेरुपर्वत जेटलो उंचो, आकाशमां देदीप्यमान एवो रत्नोनो ढगलो त्रिशलादेवीए तेरमा स्वप्नामां दीठो.

चौदमे स्वप्ने निर्धूमअग्नि दीठो. ते अग्नि केवो छे? तो के घणो-

ऊजलो निर्मल पीलो अने लाल वर्णवालो, वली मधु अने घृतथी सींच्यो थको, निर्धूम धगधगायमान जाज्वल्यमान शिखावालो, वली ते अग्निमां अनेक न्हानी शिखाओ छे, वली तेथी कोइक शिखा अधिकी वली ते अधिकथी पण वली कोइक शिखा ऊंची केटलीक शिखाओ, वली घणीज न्हानी एवी अनेक ज्वालाये करी अग्निनी शिखा मली रही छे, वली जे अग्निमां अनेक ज्वालाओ मांहोमांहे मली रही छे, एवा धूम्र-रहित अग्निनी ज्वालाओ ते कोइ आकाशप्रदेशमां चालती होय तेनी पेरे घणी चपल अग्निनी शिखा त्रिशलादेवीए चौदमां स्वप्नामां दीठी. आ स्वप्नामां बारमे स्वप्ने देवतानुं विमान कह्युं ते जे तीर्थंकरनो जीव देवलोकथी चवीने मातानी कूखमां आव्यो होय तेनी माता विमान देखे अने जे तीर्थंकरनो जीव नरकथी निकली मातानी कूखमां आव्यो होय तेनी माता बारमा स्वप्नामां भुवन देखे एवो रहस्य छे.

एवा चौद स्वप्नां देखीने त्रिशला राणी जाग्रत थइ. ए स्वप्नां केवां छे ? तो के शुभ छे, सौम्य भलां छे, घणुं रूडुं वल्लभ छे दर्शन जेमनुं, भलुं रूप छे जेमनुं, एवां स्वप्नां देखीने त्रिशलामाता जागी ते केवी छे ? तो के जेवां कमल उघडे तेवां नेत्र विकसित थयां छे जेनां, हर्षना वशथकी सर्वअंग हर्ष सहित थयुं, सर्व रोमराजी उल्लासित थइ. ए चौद स्वप्नां सर्व तीर्थंकरोनी माताओ ज्यारे तीर्थंकर गर्भमां आवे त्यारे देखे, तेम त्रिशलादेवी पण श्रीमहावीरस्वामी कूखमां आव्या तेना योगे चौद स्वप्नां देख्यां. तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी पूर्वे कह्यां एवां चौद स्वप्न देखीने जागती थकी घणीज पोतानां हृदयमां खुशी थइ, संतोष पामी, जेवुं मेघनी धाराए करी हणायुं कंदब वृक्षनुं फूल तेनी पेरे उल्लास पाम्या छे रोमकूप जेनां, अर्थात् रोमरोम हर्ष पाम्या पछी ते स्वप्नाने याद करे के अनुक्रमे में अमुक अमुक स्वप्नां दीठां एवी रीते याद करीने उठे, उठीने बाजोट ऊपर पग आपीने हेठी

उतरे, उतरीने नहीं उतावली एटले मनमां उतावल नथी तथा कायाथी चपलपणुं नथी, रस्तामां ठोकर रहित, विलंब रहित, भींत प्रमुखना ओठींगणने न लेती थकी, राजहंसी सरखी गतिये करी चालती थकी ज्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय राजानी शय्या छे, ज्यां सिद्धार्थक्षत्रिय राजा पोढ्या छे, त्यां आवी, आवीने, सिद्धार्थक्षत्रियराजाने एवी वाणीथी जगावती हवी ते केवी तो के--जे सिद्धार्थराजाने वल्लभ लागे, सिद्धार्थराजा एवी वाणीनी सर्वदा चाहना करे, एवी वाणी तथा द्वेषरहित, सर्वना मनने गमती, वल्लभपणानी चेतवणी करवा वाली, स्वर अक्षरे करी स्पष्ट, कल्याणनी करवा वाली, वृद्धिनी करवा वाली, निरुपद्रव अर्थात् उपद्रव रहित, धनना लाभनी करवावाली, मंगलनी करवावाली, श्रीकार अलंकारादि शोभा सहित, हृदयमां कोमल लागे, जे वाणी सांभलवाथी मनमां आनंद थाय, अने कोमल, मीठी, रसयुक्त जेमां वचन थोडा अने अर्थ घणो एवी वाणीथी त्रिशलादेवी पोताना भरतारने जगावती हवी, सिद्धार्थराजा जाग्यो, त्यारे त्रिशला राणी सिद्धार्थराजानी आज्ञाथी नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जड्यो एवो सोनानो बाजोट ते ऊपर पलोठी वालीने बेठी, रस्तानो खेद मटाडीने सुखे बेठी, बेसीने सिद्धार्थराजा प्रत्ये जेवी रीते पूर्वे वर्णन करी आव्या एवी वाणीये बोली--हे स्वामिन्! निश्चे आज पूर्वोक्त शयामां कांइक सुतां कांइक जागतां में गज वृषभ आदि जे पूर्वे कही आव्या ते चौद स्वप्नां दीठां. देखीने जागी, ते म्होटा स्वप्नानुं फल मन्हें शुं थाशे? तेवारे सिद्धार्थराजा त्रिशलाना मुखथी एवा स्वप्न सांभलीने, हर्ष संतोष पामीने, चित्तमां आनंद पाम्यो थको, प्रीतिकारी परम सौम्य हर्ष हृदयमां फेल्यो, जेम मेघनी धाराए छंटायेलुं एवुं कंदबवृक्षनुं फूल तेनी पेरे उल्लासित थयो थको, सांभलीने तेनो विचार कर्यो, पोताना स्वभाव प्रमाणे, पोतानी बुद्धि विज्ञाने करी ते स्वप्नोनो अर्थ ग्रह्या

कर्यो, अर्थ ग्रहण करीने त्रिशलाराणीने मीठे वचने करी एवुं कहेवा लाग्यो के–देवानुंप्रिया ! तें मनोहर स्वप्नां दीठां, तें कल्याणकारी स्वप्नां दीठां, शिवकारी, धनकारी, आरोग्यकारी, घणा दीर्घायुना करवा वाला तें स्वप्नां दीठां तेनुं फल आवी रीते छे–तमोने अर्थनो लाभ थाशे, भोगनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, राज्यनो लाभ थाशे, ए निश्चय नवमहीना ऊपर साडा सात दिवस गये थके अमारा कुलमां ध्वजा समान, अमारा कुलमां द्वीप समान, अमारा कुलमां दीवा समान, अमारा कुलमां पर्वत समान स्थिर, अमारा कुलमां मुकुट समान, अमारा कुलमां तिलक समान, अमारा कुलमां सूर्यसमान, कुलनो आधार, कुलनी वृद्धिनो करवावालो, कुलनी कीर्त्तिनो करवा वालो, कुलना निर्वाहनो करवा वालो, कुलना यशनो वधारवा वालो, कुलमां वृक्षसमान, घणा लोकोने छत्रछायामां राखवाथी कुलनी विशेष वृद्धिनो करवा वालो राजाओनो राजा एवो पुत्र थाशे. वली सुकोमल छे हाथ पग जेना, संपूर्ण पांचेंद्रिय परवडी छे जेनी. लक्षण, व्यंजन अने गुणे करी सहित, मानोन्मान प्रमाण सर्व शरीर सुंदर, चंद्रमानी पेरे सौम्याकार, मनोहर दर्शन करवा योग्य, एवो पुत्र तुजने थाशे ते पुत्र बालक अवस्था छांडीने जेवारे विज्ञान अवस्थामां आवशे तेवारे सर्व कलाओने मात्र देखवाथीज जाणी लेशे पण तेने शीखाववुं पडशे नहीं. वली युवान अवस्थामां शूर वीर, महादानेश्वरी, स्वप्रतिज्ञा निर्वाहक एटले पोते अंगीकार करेली वातनो निर्वाह करवावालो, संग्राममां वीर एटले पाछो भागे नहीं, जमीन ऊपर राज्य करवावालो, घणा हाथी, घोडा, रथ, पायदल, प्रमुखनो मालक एवो राजाओनो राजा थाशे तेमाटे तमे उदारकारी स्वप्नां दीठां. एवी रीते सिद्धार्थराजा बेवार त्रणवार त्रिशलाराणीने कहे, प्रशंसा करे, तेवार पछी त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थराजाना मुखथी आ वात सांभलीने

हर्ष संतोष पामी, यावत् हाथ जोडीने, मस्तकें अंजली करीने, एवुं बोली स्वामिन् ! ए अर्थ एमज छे, तमे कह्युं ते तहत्त छे, संदेह रहित छे, जे प्रमाणे म्हे वांछयो हतो, तेज प्रमाणे म्हे आपना मुखथी ग्रहण कर्यो, एम जे तमे कहो छो ते अर्थ सत्य छे एवी रीते वारंवार कहीने, स्वप्नोनां अर्थने रूडीरीतथी अंगीकार करीने, सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने, नाना-प्रकारना मणीए जटित एवा सोनाना बाजोट ऊपरथी उठीने, नहीं उतावली नहीं धीरी एवी पूर्वें कहेली रीत मुजब चालती थकी ज्यां पोतानुं शयन घर छे त्यां आवीने जे म्हारे उत्तम स्वप्नां दीठामां आव्यां तो हवे म्हारे सूवुं नहीं, जो सुइ जाउं तो वली कदापि बीजा कोइ पाप रूप खोटा स्वप्नां आवी जाय तो ए रूडा स्वप्नानुं फल जातुं रहे तेमाटे देव गुरु संबंधि रूडी मंगलकारी, शुभकारी, धर्म कथा कहीने रात्रि पूरण करुं एवुं जाणीने स्वप्न जागरण करती थकी, पोते जागती बीजाने जगावती विचरे.

तेवार पछी प्रभात समये सिद्धार्थराजा कौटुंबिक सेवक पुरुषने बोलावीने एम कहेतो हवो के उतावलथी जाओ हे देवानुप्रिय ! आज सारी रीते बाहिरनी उवट्ठाणशाला (कचेरी) छे तेने गंधोदकथी सींचो, कचरो कांटो काहाडीने साफ करो, लींपो, लींपीने पछी प्रधान सुगंधि पांचवर्णना फूल तेना ढगला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस तेना धूप उखेवो अने सुगंधना चूर्णनी गोली, अगरबती उखेवो, सुगंधे अभिराम करो, सुगंधे वासित करो, गंधनी वाट मूको, आ काम तमे करो, बीजा कोइनी पासे करावो, आ म्हारी आज्ञा पाछी तत्काल सोंपो. तेवारे कौटुंबिक पुरुष एवुं सांभली घणोज खुसी थइने, हाथजोडी तहत्ति करीने, सिद्धार्थ राजा पासेथी निकलीने ज्यां बाहेरनी सभा छे त्यां आवीने गंधोदक छांटनादि सर्व काम राजाना हुकम प्रमाणे करीने यावत् त्यां सिंहासन मांडीने ज्यां सिद्धार्थ क्षत्रियराजा छे त्यां

आवीने, हाथ जोडी मस्तके अंजली करी बोल्यो के स्वामिन्! जे आपे फरमाव्युं ते सर्व काम अमे करी आव्या एम कही आज्ञा पाछी सोंपी.

तेवार पछी कांइक रातुं धोळुं पीळो प्रभात थयुं. सूर्यविकासीकमळ फूल्यां, चंद्रविकासी कमळ कुमलाणा, उज्ज्वल प्रभात थयुं, सूर्य ऊग्यो ते सूर्य केवो छे? तो के राता अशोक सरखो लाल छे, केसुना फूल सरखो लाल छे, सूडाना मुख सरखो लाल, अर्द्ध चिणोठी सरखो लाल ममोलीयो जीव थाय छे तेना जेवो रातो. बफोरीयाना फूल सरखो लाल, कबूतरना पग नेत्र सरखो लाल, जासूसना फूल सरखो लाल हिंगलुना ढगला सरखो लाल ए पूर्वे कही जे वस्तु तेवी कोइ पण लाल वस्तु होय तेथी पण अधिक लाल कमलाकर नामे तलावने विषे घणा कमलोने उघाडतो थको एवो सूर्य ऊग्यो, हजार किरणनो धरनार, दिवसनो करवावालो, तेजेकरी जाज्वल्यमान, जेना किरणोथी अंधकार नाश पाम्यो छे, चोरना प्रचारने टालनारो, कुंकुमनी प्याली ते सरखो, लाल ते सूर्यनो नवो तावडो (तडको) ते तावडे करी जाणे कुंकुम सरखो सर्व मनुष्यलोक लाल थयो छे, एवुं प्रभात थयुं, तेवारे राजा शय्याथी उठीने बाजोट ऊपर पग मूके, बाजोटथी हेठो उतरे, उतरीने, ज्यां मल्लयुद्ध करवानी शाला छे त्यां आवीने मल्लयुद्धशालामां प्रवेश करीने, अनेक प्रकारनी मल्लयुद्धनी कळाओ करीने थाका पछी, सो औषधीना पाकनुं तेल, हजार औषधीना पाकनुं तेल, सुगंध प्रधान तेल प्रमुख बीजा पण तेल जे धातुनी वृद्धि करवावाला, जठराग्निने दीपाववावाला, कामदेवनी वृद्धि करवावाला, मांसने पुष्ट करवावाला, बलवृद्धि करवावाला, सर्व इंद्रिय शरीरने उल्लास करवावाला, जेना अभ्यंगन थकी चामडीमां तेजनी वृद्धि थाय एवां अनेक जातिनां तेल ते तेलना मसलवावाला कहेवा छे के घणा चतुर, जेमना हाथ पग घणा सुकोमल छे, ते तेलने मसलता थका हाथना तळांनो

जे मल ते शरीरमां समावी आपे, एवी क्रियामां दक्ष, परिपूर्ण छे हाथ पग जेना, अवसरना जाण, उतावलथी कार्यना करनार, सर्व मर्दन करवावालामां उत्कृष्ट, विवेकवंत, बुद्धिवंत, डाह्या, पंडित, मसलतां थकां हारे नही, एटले परिश्रमना जीतवावाला इत्यादिक गुणना जाण पुरुषो ते केवी रीते तेल मसले तो के जे थकी हाडने सुख थाय एटले हाडने सुखकारी, मांसने सुखकारी, चामडीने सुखकारी, रोमने सुखकारी ए चारेने सुखकारी एम ए पूर्वोक्त तेल ते ऊपर कह्या प्रमाणे मसलवाथी राजाने थाक मट्या पछी, सिद्धार्थराजा मल्लशालाथी निकलीने ज्यां स्नान करवानुं घर छे त्यां आवीने स्नानघरमां पेठा, ते स्नानघर कहेवुं छे ? तो के मोतीयोनी जालीयोनां गोखला छे जेमां, विचित्र मणिरत्ने जटित धरती तल छे जेनुं, त्यां रमणिक स्नान करवानो मंडप छे तेमां अनेक प्रकारना मणिरत्नोए करी जड्या चित्रया एवा कनेक बाजोट छे तेना ऊपर राजा सुखें बेठो. हवे स्नान करवानुं जल, कहेवुं छे के—फूलना गंधवालुं जल, चंदन कपूरादि वासित जल, उष्णजल, शुभजल, गंगा प्रमुखनुं निर्मलजल, एवा जलथी कल्याणकारी प्रधान मज्जनना विधिये स्नान करे, त्यां घणा प्रकारनां जल उछालवा प्रमुख कौतुक करीने कल्याणकारी स्नानना अंतमां कमल सरखा सुंवाला गंधवस्त्रथी अंग लूह्युं पछी घणां मोघां वस्त्ररत्न पहेर्यां, भला रस सहित गोशीर्ष चंदनथी शरीरने लेपन कर्युं, पवित्र माला पहेरी, वर्ण कुंकुमादि विलेपन कर्यां, पछी मणि जटित सोनाना घरेणा पहेर्या, वली अढार सरो हार, नवसरो हार, त्रीशसरो हार, लांबा झूमखां प्रमुख घरेणां तथा कनदोरो पहेर्यो. गलामां कंठीओ प्रमुख पहेरी, आंगुलीओमां वींटी, वेढ प्रमुख पहेर्यां, केशोमां फूल प्रमुखना घरेणां धारण कर्यां, रूडा जडाव कडा, जडाव बहेरखा पहेर्यां, भुजा प्रमुखमां भुजबंधादिक पहेर्यां तेणे भुजा थंभित थइ छे, तेथी घणुं श्रीकार रूप छे तथा कानोमां

कुंडल पहेर्यां तेणे करी शोभायमान मुख थयुं, मस्तकें देदीप्यमान मुकुट धार्यो, हारप्रमुखे करी सुशोभित थइ छे छाती जेनी, वींटीयोथी पीली थयेली छे अंगुलीओ जेनी तथा लांबा वस्त्रे करी कर्यो छे उत्तरासंग जेनुं, अनेक प्रकारना मणिरत्न निर्मल घणा मूल्यना डाह्या कारिगरोनां घडयां देदीप्यमान भली रचनाए करी एकमां बीजा घरेणां मलेला तेथी मनोहर देखाय छे तथा वीरवलयने धारण कर्यो ए घरेणो जे शूर वीर होय तेने राजा बक्षीश आपे छे एटले मान आपवानुं घरेणुं छे ते कोइक तो कहे छे के ए घरेणुं हाथमां पहेराय छे वली कोइ कहे छे के ए वीरवलय कानमां पहेराय छे. हवे घणुं शुं वर्णन करीए ते सिद्धार्थराजा साक्षात् कल्पवृक्ष सरखो थयो, जेम कल्पवृक्ष पत्र, पुष्प, फल सहित शोभे तेम सिद्धार्थराजा घरेणाथी शोभे छे तथा पुरुषोमां इंद्र समान, कोरंट वृक्षनां फुलोनी माला सहित एवुं छत्र मस्तकें धरावतो थको, श्वेत चामरोथी वींजातो थको, ज्यां लोकोए मंगलिकना जय जय शब्द कर्या छे; वली १ अनेक गणनो नायक एटले पोताना घरमां जे मनुष्य छे तेनो मालक, २ दंडनायक देशनी चिंतानो करवावालो, ३ हाथीयोनो ईश्वर, ४ राजानो पुत्र, ५ कोटवाल, ६ मांडवीया, ७ कुटुंबना स्वामी, ८ न्हाना प्रधान, म्होटा प्रधान, ९ मंडलिक, १० महामंडलिक, ११ ज्योतिषी, १२ दरवान, १३ जे राजा साथे जन्म्या ते अमात्य, १४ पीठी मर्दन करवावाला, १५ नगरना चोवटीया, १६ चोधरी, १७ वाणीया, १८ शेठ, १९ सेनापति, २० सार्थवाह, २१ दूत, २२ देशनी संधीना रखवाला एटले संधिपालक तथा व्यवहारीया, २३ अंगरक्षक,

---

१ आंहीं संधिपालक कह्युं ते राजाना सीमाडीया राजा साथे सीमनां वांधा पडवाथी राजाने विरोध थाय तेवारे सीम काढी निवेडो करी आपे तेने संधिपालक कहीए. तेना ऊपर कथा कहे छे—कौशांबीनगरीमां जितशत्रुराजा राज्य करे छे. तेने प्रधान, पुरोहित, शेठ, सेनापति, भंडारी, संधिपाल इत्यादिक घणो परिवार छे सर्वे पोत पोताना अधिकारमां सावधान छे, हवे कोइक पुरुषे राजाने कह्युं के तमारा बधा सेवको काम

२४ पुरोहित, २५ वृत्तिनायक, २६ वहिवाहक, २७ थइआयत, २८ पडु-पडिआयत, २९ टाकटमाली, ३० इंद्रजाली, ३१ फलमाली, ३२ मंत्रवादी, ३३ धनुर्वादी, ३४ दंडधर, ३५ धनुर्धर, ३६ खड्गधर, ३७ छत्रधर, ३८ चामरधर, ३९ पताकाधर, ४० नेजाधर, ४१ दीवीधर, ४२ पुस्तकधर, ४३ झारीधर, ४४ तांबूलधर, ४५ प्रतिहार, ४६ शय्यापालक, ४७ गज-पालक, ४८ अश्वपालक, ४९ अंगमर्द्दक, ५० आरक्षक, ५१ मिष्टवचन बोलनारा, ५२ कथा कहेनारा, ५३ सत्य बोलनारा, ५४ गुणना बोल-नारा, ५५ समस्याना बोलनारा, ५६ पारसीभाषा बोलनारा, ५७ वैया-करण पाठी, ५८ तर्कपाठी, ५९ साहित्य बंधक, ६० लक्षण बंधक, ६१ छंद बंधक, ६२ अलंकारना जाण, ६३ नाटक बंधक.

करे छे पण संधिपाल तो तमारुं अनाज खाइने खोटुं करे छे माटे एनी तपास करवी जोइए. तेवारे राजाए संधिपालकने कह्युं के तमे मनचिंतित द्रव्य खाओ छो अने कार्य तो कांइ करता नथी तेवारे संधिपालक बोल्यो, हुं म्होटा काम करी आपुं, परस्पर वैरभाव होय तेने मित्राइ करावी आपुं अने मित्रता होय तेमां विरोध पाडी आपुं, अनेक बुद्धिना काम करुं, एवा म्हारामां गुण छे, पछी राजाए परिक्षा निमित्ते पोतानो दुशमन अरिमर्द्दन राजा के तेनी साथे मेलाप करवा माटे भेटणा सारुं एक डाबलो सीवी आप्यो ते राजाने आपजो अने वैर टाली आवजो एवुं कही संधिपालकने मोकल्यो, ते पण त्यांथी चालतां केटलेक दिवसे अरिमर्द्दनराजा पासे जइ भेटणुं मूकी, पगे लागीने कहेवा लाग्यो के हे राजन्! जितशत्रुराजाए तमोने प्रणाम कहेल छे अने भेटणुं आप्युं छे, राजाए ते भेटणुं छोडयुं तेमांथी डाबडो निकल्यो ते ऊघाड्यो तेमां वली थणे बंधने बांधेली एक सोनानी डाबली निकली तेना बंधन छोड्या तेवारे मांहेथी राख निकली; त्यारे प्रधाने कह्युं तमारा वैरीए राख मूकी छे, ते राख चोपडी तमे जोगी थाओ, ते सांभली राजा क्रोधातुर थयो तेवारे संधिपालके जाण्युं के राजाए वैर सांभ्युं एवुं चिंतवी औत्पातकी बुद्धिए करी कहेवा लाग्यो के राजन्! तमे उलटो विचार म करो, ए राख बहु गुणकारी छे, राजाए पुछयुं एमां श्यो गुण छे? संधिपालक बोल्यो–अमारा राजाए यज्ञ कीधो हतो तेना ऊपर असंख्य द्रव्य खरच्युं ते यज्ञ पूर्ण थयाथी तेनी भस्म तिलक करवाने अर्थे सर्व राजाओने मोकली छे एमां कांइ विरोध नथी एवुं प्रभातकाले तिलक करतां जन्मांतरनां पातक टले अने सौभाग्य वधे, ते सांभली राजा प्रसन्न थयो अने जाण्युं के

एमना परिकर साथे परवर्यो थको सिद्धार्थराजा स्नानघरथी निकलीने सभामंडपमां आवे छे ते केवो शोभे छे तो के धवलमेघनी घटामां जेवो सूर्य निकले तेनी पेरे शोभे छे वली जेवा नक्षत्र ग्रह प्रमुख तारामां चंद्र शोभे तेवो लोकोमां राजा शोभे एवो मज्जनघरथी निकलतां शोभायमान थयो थको नरपति, नरोमां इंद्र, नरोमां वृषभ समान, नरोमां सिंहसमान, घणी अधिक राजतेजनी लक्ष्मीए करी दीपतो थको, स्नानघरथी निकलीने ज्यां सभानी शाला छे त्यां आवीने, सिंहासन ऊपर पूर्वदिशानी सन्मुख मुखडुं करीने बेठो. बेशीने पोताथी उत्तर अने पूर्वदिशानी वचमांनी ईशानकूणमां आठ बाजोठ श्वेत वस्त्रथी ढांकेला श्वेत सरसव अने श्वेत द्रोभ कुंकुमथी मंगल अर्थे पूजीने थापे

में वैरभावथी अवलुं विचार्युं पण एणे तो वैर टालवा ए उपकार कर्यो छे पछी राजाए ते संधिपालकने घणुं सन्मान आपी, एक महीना सुधी पोतापासे राखी घणा हाथी घोडा आभरण देइ पहेरामणी करीने शीख आपी, तथा हवे तमारा राजा साथे अमारे परम मित्राइ छे एवो पत्र लखी आप्यो; ए सर्व भेट लइ संधिपालक पोताना राजा पासे आव्यो, राजाने पत्र दीधो सर्ववस्तु पण आपी तेवारे राजा विस्मय पाम्यो, वली एकदा राजाए पटराणीने कह्युं के–तुं त्हारे पीयरे जा, ज्यारे हुं नामांकित मुद्रिका मोकलुं तेवारे तरत आवजे पण बीजा कोइना कहेवाथी आवीश नहीं, पछी ते राणी पीयर गइ, पाछलथी राजाए संधिपालकने कह्युंके म्हारी राणी रीसाणी थकी पीयरे गइ छे तेने तमे तेडी लावो तो तमारी अकल खरी जाणुं, पछी संधिपाल तीर्थवासीनो वेश करी राणीना पीयरनां गाममां गयो, राणीने खबर पडी त्यारे राणीए तेडाव्यो अने कह्युं के–तुं मुजने मलवा केम नाव्यो ? तेणे कह्युं हुं तीर्थवासी थयो छुं तेथी संसार संबंधि कोइ कार्यमां पडतो नथी, राणीए कह्युं धन्य त्हारा अवतारने तो पण मन्हे राजाना समाचार कहो तेवारे संधिपालक माथुं धूणावीने कहेवा लाग्यो के–राजाए हमणां कोइक राजानी पुत्री परणवानो विचार कर्यो छे ते कन्या घणी रूपवती छे तेने पटराणी करवा धार्युं छे एवी वात सांभली राणी उतावली पाछी पोताने घेर आवी, राजाए पुछ्युं तमे तेड्या विना उतावलां केम आव्यां ? तेवारे राणी रीश आणीने बोली के तमे नवी पटराणीने घेर आणो छो तो हवे मन्हे शा वास्ते तेडो ? एवो ओलंभो सांभली राजा विस्मय पाम्यो पछी राजाए संधिपालकने तेडावी भ्रांति भांगी, राणीने मनावी राजा हर्ष पाम्यो, संधिपालकने घणा वस्त्र आभूषण आपी सन्मान आप्यो.

अने एक पडछि एटले पडदो बांधे ते पडछि केवी छे तो के ? नाना प्रकारना मणिरत्नोथी जडेली छे, सर्व लोकने देखवा योग्य, घणा मूल्यनी, भला पाटणमां नीपजेली, रेशमना वस्त्रनी, अनेक चित्रामवाली एटले मृग, वृषभ, घोडा, मनुष्य, मत्स्य, पंखी, सर्प्प, किंन्नर, अष्टापद, चमरीगाय, हाथी, वनलता, पद्मलता, इत्यादिक अनेक रूप जे पडछिमां मांड्या छे एवी पडछी बांधी, ते पडछीनी मांहेली बाजुए, अनेक जातिना मणिरत्ने करी जटित रूडा सुंवाला गादलां सहित मशरुंनो वस्त्र ढाक्युं तेनी ऊपर श्वेत वस्त्र ढांक्यो, सुकोमल अंगने सुखकारी स्पर्श छे जेनो एवो रूडो एक बाजोठ त्रिशलाक्षत्रियाणीने वास्ते रचावे, रचावीने पछी सिद्धार्थराजा कौटुंबिक पुरुषने बोलावीने एम कहे के— शीघ्रमेव एटले तत्काल हे देवानुप्रिया, अष्टांग महानिमित्तना जाण, सूत्रअर्थना धरवावाला, अनेक प्रकारनां शास्त्रमां चतुर अने स्वप्न शास्त्रमां कुशल एवा स्वप्न लक्षण पाठकोने बोलावो; इहां आठ अंगनां नाम कहे छे—प्रथम अंगस्फुरण विचाराङ्ग—तेमां शरीर फरके तेनो विचार जेमके स्त्रीनुं डावुं अंग फरके तो सारुं इत्यादिक वातो जाणवी, बीजुं स्वप्नविचाराङ्ग—तेमां उत्तम, मध्यम अने कनिष्ट एवा स्वप्नांनो विचार, त्रीजो स्वरविचाराङ्ग—तेमां काली चिडी, रूपारेल, शीयाल प्रमुख बोले ते मुजब फल विचार जाणवुं, भूमिकंपवाथी शुभाशुभफल कहेनारां शास्त्र ते भौमविद्या नामे चोथुं अंग जाणवुं, मसा, तिल, लसण इत्यादिकोनो विचार जेमां छे ते व्यंजनविद्या नामे पांचमुं अंग जाणवुं, हाथ पगनी रेखा जोवानो विचार जेमां छे ते लक्षणविद्या नामे छट्ठुं अंग जाणवुं, उत्पातविद्या ते उलकापात तारा त्रूटे, मंडल मंडे इत्यादिकोनो विचार जेमां छे ते सातमुं अंग जाणवुं, आठमुं अंतरिक्ष- विद्यानुं अंग ते ग्रहोनां अस्त, उदय, वक्र तेना फल जेमां छे ते आठमुं अंग जाणवुं, एना जाण स्वप्नपाठक पुरुषोने बोलावो. एवुं सिद्धार्थ-

राजाए कह्युं त्यारे ते कौटुंबिक पुरुष सांभलीने घणो खुशी थयो पछी हाथ जोडी यावत् सांभलीने तहत्ति करीने सिद्धार्थक्षत्रिय राजानी पासेथी निकलीने खत्रिय कुंड गाम नगरनी वचमांथी थइने ज्यां स्वप्न पाठकोनां घर छे त्यां आवीने स्वप्नलक्षण पाठकोने कहेवा लाग्यो–हे स्वप्न पाठको ! तमोने सिद्धार्थक्षत्रिय राजा याद करे छे तेमाटे हुं तमोने बोलाववा आव्यो छुं तेवारे स्वप्नलक्षणपाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाना कौटुंबिक पुरुषनी वाणी सांभलीने, घणाज हर्ष संतोष हृदयमां पामवा लाग्या पछी स्नान मज्जन करीने, पोताना घरना इष्टदेवने पूजीने, शरीर ऊपर कौतुकने अर्थे तिलक छापा प्रमुख करीने, दहीं, डाभ अने सरसवने मांगलिक माटे ग्रहीने, दुष्ट स्वप्न प्रमुखनो नाश करवारूप प्रायश्चित्त करीने, शुद्ध मांगलिक वस्त्र पहेरीने, घणा मूल्यनां घरेणां पहेरी, सर्व शरीर शोभायमान करीने, वली पण सरसव अने दर्भ मंगल निमित्ते मस्तके धारण करीने, उछालीने, पोतपोताना घरथी निकलीने, क्षत्रियकुंड गामनगरनी वचमांथी थइने, ज्यां सिद्धार्थराजानो मुख्य महेल छे तेने बारणे आवी सर्व एकठा थया, पछी सर्व भेगा थइने मांहोमांहे विचार करवा लाग्या के–आपणा बधायमां कोइने म्होटो थाप्यो नथी माटे एक जणने म्होटो थापो, केमके म्होटाविना तो अप्रतिबंध टोलुं वाजे माटे मांहोमांहे स्वप्ननो अर्थ विचारीने एक

१ इहां कोइ प्रश्न करे के सिद्धार्थराजाना स्नानना वर्णनमां तो देवपूजा करवी आवी नही अने आ निमित्तियाओना संक्षेप पाठमां देवपूजा आवी तो शुं सिद्धार्थराजा देवपूजा नही करता होय ? तेनो उत्तर कहे छे के–आ वखत तो सिद्धार्थराजा शणगार करीने सभामां आवता हता तेथी त्यां दही, डाभ अने सरसवनी पेरे पाठ नथी तेथी जाणवामां आवे छे के निमित्तियाओने पूछी विदाय करीने पछी पूजा करी हशे ! केमके सिद्धार्थराजा पण श्रीपार्श्वनाथ भगवानना श्रावक छे तेथी श्रीपार्श्वनाथजीनी मूर्त्ति तेमना घरमां अवश्य होवी जोइए; वली आगल "न्हायाकयबलिकम्मा" ए पाठ त्रिशलाजीना अधिकारमां चाल्यो छे अथवा कदापि पण ए पाठ सहजनो जाणी नही लख्यो होय ? एम पण संभवे छे पछी केवली जाणे.

म्होटाना मुखथी राजा आगल कहेवराववुं, पण जणे जणे जुदुं जुदुं बोलवुं नहीं जो जणेजण जुदुं बोलवा जाशो तो आदर पामशो नहीं. नीतिशास्त्रमां कह्युं छे के-

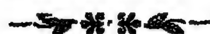
यत्र सर्वेपि नेतारः, सर्वे मत्सरवादिनः ।
सर्वे महत्वमिच्छंति, तेऽवसीदंति वृंदवत् ॥ १ ॥

ज्यां सर्वजण अग्रेसर थावा जाय अने सर्व अहंकार सहित बोलवावाला होय, परस्परे ईर्ष्या करवावाला होय, सर्व म्होटाईपणाने वांछवावाला होय, तेमनो समुदाय जेम पांचशे सुभट अनादर पामी दुःखी थया तेम दुःखी थाय. पांचसो सुभटनी कथा कहे छे-कोई समये ज्यां त्यांथी आवीने पांचसो सुभट भेगा थइने रोजगार करवा सारुं देशांतरे गया त्यां कोइ कोइ राजानी पासे बे चार दिवस रही रही चाल्या जाय एम करतां एक महर्द्धिक (म्होटा) राजाने जइ मल्या, तेवारे ते राजाए घोडा, वस्त्र, घरेणां, शस्त्र इत्यादिक सामग्री तेमनी पासे दीठी तेमज ते सुभटो सर्वे सुरूपवान हता तेने देखी राजा तेमने सन्मान आपी बोल्यो के तमे कोण छो अने क्यांथी आव्या छो ? त्यारे ते पुरुषोए राजाने प्रणाम करीने कह्युं के हे राजन् ! अमे नोकरी रहेवा सारुं आव्या छैये यावत् तेमनी वातो सांभलीने राजा प्रमुख सर्व सभा खुशी थइ तेवारे राजाए प्रधानने बोलावीने कह्युं के आ सुभटो सारा देखाय छे, आबरुदार छे, काम पडतां संग्राममां पाछा हटे तेवा नथी एवां राजानां वचन सांभली प्रधान बोल्यो के स्वामी ! ए सुभट देखवामां तो सारा छे पण असंबंध छे केमके एमनामां कोइ मालेक नथी तेथी काम पडशे त्यारे भागी जाशे तो तमे ओलंभो कोने आपशो ? एवुं प्रधाने कह्युं तो पण राजा समज्यो नहीं; तेवारे प्रधाने जाण्युं के राजानुं मन ए सुभटोने नोकरी राखवानुं छे एवुं समजीने प्रधाने कह्युं महाराज ! एनी परीक्षा करीने आपणे नोकरीमां राखीशुं. राजाए पण कह्युं के सुखेथी परीक्षा करो, पछी प्रधाने तेमने कोइ सारी जगा जोइने तेमां उतारो आप्यो अने रातनी वखते एक ढोलीयो, एक गादलुं अने

एक ओसीसुं ते सुभटोने उतारे मोकल्यो वली भोजनादिक सामग्री पण घणी मोकली ते सुभटोए भोजन कर्युं पछी ज्यारे सुवा लाग्या त्यारे एकज ढोलीयो देखीने मांहोमांहे वधा जण लडवा लाग्या. तेमांथी एक बोल्यो के 'मेरा दादा बडा था और मेंभी बडाहूं, इससे मैं इस पर सोऊंगा' बीजो बोल्यो के 'एकादिन बनमें सिंह बोला था, उसका साद घरमें बैठे बैठे सुनके मेरे बाबाकूं सातदिन तक ताव आया था, इससे मैं ही बडा हूं,' वली त्रीजो बोल्यो के 'मेरे बडे भ्राताने सेके हूए सत्ताइस पापडोंको एक लातसे भांजि डारेथे, इससे मैंही बडाहूं.' वली चोथो लोल्यो के 'मेरे मामाने एक उंदरेको हरा दीया था सो मैं ही बडाहूं' वली पांचमो बोल्यो के 'मेरा मामाने सातसेर की खीचडी खाइथी' छट्ठो बोल्यो के 'मैं तो छ गोलीकी छाश पीताहूं,' सातमो बोल्यो के 'मैं तो घरमें ही जंगल जाता हूं,' आठमो बोल्यो 'मैं तो सात दिन तक सो रहता हूं जागता नहीं,' नवमो बोल्यो 'मैं तो बिल्लीसे भी डरता हूं' दसमो बोल्यो 'मैं कुत्ता भसे जब भाग जाता हूं,' एवी रीते एक कहे हूं सोऊं, बीजो कहे हूं सोऊं तुं कांइ मालेक नथी, एम अर्द्धरात्र सुधी लड्या तेवारे तेमां पांच सात जण समजु हता ते बोल्या अरे तमे लडाइ म करो, ए शय्यानी स्हामां पगराखीने सूइ जाओ, ए न्याय सर्वने बराबर जाणवामां आव्यो तेथी सर्वे जणा ढोलीया स्हामा पग राखीने सूइ गया अने बीजी पण सर्व चीजो पांती प्रमाणे व्हेंची लीधी पछी प्रभात थयुं त्यारे राजाना माणसो जे निगाह करवा रह्यां हतां तेणे जइ राजा आगल सर्व वात कही, तेवारे राजाए निर्भ्रंछीने सर्वने शीख आपी, क्यांइ आदर पाम्या नहीं. एवुं स्वप्न पाठके परस्पर विचारीने एक जणाने मालेक थाप्यो अने ज्यां सिद्धार्थक्षत्रिय राजा छे त्यां आव्या, आवीने सिद्धार्थराजाने जय विजय शब्दोथी वधाव्या.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते-
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे तृतीय-व्याख्यानं समाप्तम् ।

अथ चतुर्थ व्याख्यानः प्रारंभः ।



स्वप्न लक्षण पाठक सिद्धार्थक्षत्रिय राजाने हाथ जोडीने जय विजय शब्दे करी वधावे अर्थात् बोल्या के-राजन्! तमे दीर्घ आयुष्यवाला हो, घणी आजीविकाना धणी हो, लक्ष्मीवान् हो, जशवान् हो, बुद्धिमान् हो, कीर्त्तिमान् हो, वली सिद्धार्थराजाने पार्श्वनाथ स्वामीनो सेवक जाणीने श्रीपार्श्वनाथजीनी स्तुति गर्भित आशिर्वाद आप्यो के-

दशावतारो वः पायात्, कमनीयाञ्जनद्युतिः ।
किं तु दीपो न हि श्रीपः, किंतु वामाङ्गजो जिनः ॥ १ ॥

दश छे अवतार जेना तेने दशावतार कहीए एवा, वली मनोहर श्यामकांतिवाला एवा कोण छे? त्यारे बीजो कोइ बोल्यो के दीप एवुं नाम दीवानुं छे अने दशा एवुं बत्तीनुं नाम छे वली काजलनी श्यामकांति छे, तेवारे कहेछे के ए दीवो तो नही, परंतु श्रीपः एटले श्रीकृष्ण तेना पण दश अवतार थया तेथी कृष्ण हशे? केम के कृष्ण काला पण छे अने तेना दश अवतार पण छे, तेवारे कवि कहे छे के-दीवो अने श्रीकृष्ण ए बेउ नथी त्यारे ए कोण छे के? श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वामादेवीना पुत्र छे केमके ए दशभव करीने तीर्थंकर थया इहां अमरभूतिनां भवथी दश भव गणवा, वली एमनी श्यामकांति पण छे तेथी पार्श्वनाथ स्वामी छे ते तमारी रक्षा करो.

आशिर्वाद सांभलीने सिद्धार्थ क्षत्रियराजाए ते स्वप्नलक्षण पाठकोने वांद्या, वस्त्रादिक देवाथी पूज्या, सद्गुणे करी स्तव्या, सन्मान आप्युं, अने पूर्वे तैयार करेला जे आठ भद्रासन छे तेनी ऊपर जुदा जुदा बेसाड्या. इहां " कोइ कहे के श्रीपार्श्वनाथजीनो श्रावक सिद्धार्थ-

राजा समकेती छे तेणे मिथ्यात्वी एवा स्वप्न पाठकोने केम वांद्या ? एनो उत्तर कहे छे के-ए तो लोकोपचार विनय छे ते तो सांसारिक पणानो छे पण पूज्यपणाने तथा धर्मना कामने माटे नथी. जेम लौकिकमां जुहार करे तेने पण वंदन कहे छे तेम ए पण जाणवुं." तेवार पछी सिद्धार्थराजा त्रिशलाक्षत्रियाणीने पडिच्छमां बेसाडे, ते पण पोताना हाथमां फूल फल लेइने बेशे पछी उत्कृष्ट विनयथी सिद्धार्थराजा स्वप्न लक्षण पाठकोने कहे के-देवानुप्रिया ! आज त्रिशलाक्षत्रियाणीए पूर्वे वर्णवी आव्या एवां म्होटा गजवृषभादि चौद स्वप्नां ते यावत् अल्पनिद्रामां सुतां थकां देख्या तेथी ए चौद स्वप्नानुं कल्याणकारी फल शुं थाशे ? तेवारे स्वप्नलक्षणपाठक, सिद्धार्थक्षत्रियराजाना मुखथी ए अर्थ सांभली घणाज खुशी थया, ते स्वप्नांने हृदयमां धारण कर्यां, अने अर्थ विचारवा लाग्या, मांहोमांहे विचार कर्यो, ते स्वप्नांनो अर्थ ग्रहण कर्यो, मांहोमांहे एक बीजाने पूछीने निश्चय कर्यो, पछी सिद्धार्थराजानी आगल स्वप्नशास्त्रोनो विचार कहेवा लाग्या. ते शास्त्रांतरथी लखे छे-मनुष्योने नव प्रकारे स्वप्न आवे छे तेमां प्रथम तो जाणेली वात स्वप्नामां आवे, बीजी सांभलेली वात स्वप्नामां देखे, त्रीजो दिवसे दीठेली वस्तु स्वप्नामां देखे, चोथुं वात, पित्त, कफना विकारथी स्वप्न आवे, पांचमो सहज स्वभावथी स्वप्न देखे अथवा मलमूत्रादिकनी पीडाथी स्वप्न देखे, छट्ठो चिंतामां पड्यो थको स्वप्न देखे, ए छ कारणथी जे स्वप्न आवे ते निष्फल छे एनुं कांइ शुभाऽशुभ फल प्राप्त थाय नहीं. सातमो देवतानी सानिध्यथी स्वप्नुं देखे, आठमो धर्म कर्ममां रहेलो प्राणी घणो धर्म करे तेने धर्मना प्रभावथी उत्कृष्ट पुण्यना योगे स्वप्नुं आवे, नवमो घणा उत्कृष्ट पापनां उदयथी स्वप्न आवे ए पाछला त्रण स्वप्नां तो प्राणी देखे तो तेनुं शुभाऽशुभ फल अवश्य थाय, खाली न जाय. तथा धातुप्रकोपथी

वायुनुं जोर होय त्यारे वृक्ष, पर्वत, टूंक ऊपर चढवुं तथा आकाशमां उडवुं एवा स्वप्नां आवे तथा पित्त प्रकोपथी सोनुं, रत्न, सूर्य अने अग्नि प्रमुख स्वप्नामां देखे तथा श्लेष्म अधिक होय तेना योगथी अश्व, नक्षत्र, चंद्र, शुक्लपक्ष, नदी, सरोवर, समुद्र इत्यादिक उल्लंघन करता देखे ते निष्फल जाणवां.

गाय, बलद, हाथी, महेल, पर्वत, टूंक एमनां ऊपर चढ्यो एवुं स्वप्न देखे तो म्होटाइ पामे, तथा विष्टाविलेपन शरीर देखे तो निरोगी थाय, स्वप्नमां रुदन करे तो हर्षनी प्राप्ति थाय, स्वप्नमां राजा, हाथी, घोडो, सोनुं, बलद, गाय, कुटुंब देखे तो कुलनी वृद्धि थाय, तथा प्रासाद ऊपर चढीने जाणे जमुं छुं एवुं स्वप्न देखे तथा समुद्र तरुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो जो नीचकुलमां तेनो जन्म थयो होय तो पण ते राजा थाय. वली दीपक, मांस. फल, कन्या, पद्म, छत्र अने ध्वजा एटला वाना स्वप्नमां देखे तो जय पामे, तथा पोताना इष्टदेवनी प्रतिमाने जो स्वप्नमां देखे तो आयुर्वृद्धि थाय, तेमज कीर्त्ति, यश अने धननी पण वृद्धि थाय. वली जे कपास, भस्म, हाड अने छास ए चार श्वेतवस्तु वर्जीने बीजी कोइ पण सफेत वस्तु स्वप्नामां देखे तो भली जाणवी तथा जे हाथी, देवता, घोडो अने राजा ए चार चीज विना बीजी कोइ काली वस्तु स्वप्नमां देखे तो ते सारी जाणवी नहीं. तथा स्वप्नमां गायन करे तो रुदन करवुं पडे, स्वप्नमां नाचे तो बंदीखाने पडे, स्वप्नमां हसे तो शोचमां पडे, स्वप्नमां भणे तो कलह थाय, वली जो स्वप्नमां देवता, साधु, ब्राह्मण, राजा, पितृ, वृषभ एटला मांहेलो कोइ आवीने कोइ प्रकारनी वात कहे ते वात अवश्य सत्य थाय. तथा स्वप्नमां धोलो सर्प भुजाने डसे तो हजार सोनैयानो लाभ थाय, वली कोइ फल्युं फूल्युं वृक्ष तथा रायणनुं वृक्ष तेना ऊपर पोते चढ्यो एवुं स्वप्नमां देखे तेने घणुं धन मले, वली

गधेडो, ऊंट, भैंस, भैंसो एमना ऊपर एकलो हुं चढ्यो छुं एवुं स्वप्न देखे तो ते तत्काल मरण पामे, वली जे पुरुष धोला कपडावाली, धोला चंदननुं विलेपन करेली एवी स्त्रीने हुं भोगवुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेने सर्व प्रकारनी लक्ष्मी मले, वली जे रातां वस्त्रवाली, रातो चंदन कृष्णगंध विलेपनवाली स्त्री भोगवुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो तेनुं लोही सुकाइ जाय, वली जे रत्ननां, सोनानां अने सीसानां ढगलाओ ऊपर हुं चढ्यो छुं एवुं देखे तो ते अवश्य समकेत पामीने मोक्षे जाय, तथा जे स्वप्नमां दारु प्रमुखनो घडो जाणे म्हें उपाड्यो छे एवो पोताना आत्माने माने तो ते समकेत पामीने बीजा भवमां मोक्ष जाय.

हवे त्रिशला माताए जे चौद स्वप्नां दीठां तेनुं फल तो आ प्रमाणे छे—प्रथम स्वप्नमां चार दंतोसलवालो हाथी दीठो ते देखवाथी ए पुत्र महा पराक्रमी थाशे, वली दान, शील, तप अने भावरूप चार प्रकारनां धर्मनी प्ररूपणा करशे, वली चोसठ इंद्र तथा गजपति जे राजाओ ते एनां चरणकमलने सेवशे१, बीजे स्वप्ने वृषभ दीठो तेथी तमोने धर्मधोरी पुत्र थशे एटले भरतक्षेत्रने विषे जेम कर्षणीओ वृषभ थकी धान्यनुं बीज वावे तेम ए पुत्र बोधरूप धान्यनुं बीज वावशे२, त्रीजे स्वप्ने सिंह दीठो तेथी निर्भय अने शूरवीर त्रण भुवनमां पोतानी आज्ञा मनावशे एवो ए पुत्र थाशे एटले जेम सिंह होय ते श्वापद जीवोथी विनाश पामतुं एवुं जे वन तेनुं रक्षण करे तेम ए पण सम्यक् प्ररूपणा रूप सिंहे करी कुदृष्टि जे मिथ्यात्वरूप श्वापद जीवो ते थकी नाश पामतुं एवुं जे भव्यजीवरूप वन तेनुं रक्षण करशे, अने मिथ्यात्वरूप आपदाथी भव्य जीवोनुं रक्षण करशे अथवा आठ कर्म अने आठमदरुप श्वापदोनो नाश करशे, वली त्रण भुवनने विषे पोतानी आज्ञा मनावशे ३, चोथा स्वप्नमां लक्ष्मी देवता दीठी तेथी त्रण जगतनी तीर्थंकर लक्ष्मीनो भोक्ता थशे एटले वरसीदान दइ दीक्षा पाली

केवलज्ञान रूप लक्ष्मी पामीने आठ प्रातिहार्यरूप तीर्थंकरनी लक्ष्मीने भोगवशे ४, पांचमां स्वप्नमां फूलनी बे मालाओ दीठी तेथी सत्पुरुषोने माथे पूज्यपणुं भोगवशे एटले जेम फूलनो तोरो मस्तके धराय छे तेम एनी आज्ञा पण सर्व भव्य जीवो मस्तके धारण करशे तथा बे माला दीठी माटे एक श्रावकनो अने बीजो साधुनो एवा बे प्रकारना धर्म कहेशे ५, छट्ठा स्वप्नमां चंद्रमा दीठो तेथी ए सौम्यदर्शन वालो थशे, शीतल परिणामवालो थशे, भव्यजीवरूप कुवलयनो बोध (प्रकाश) करवाने चंद्रमा सदृश थशे ६, सातमा स्वप्नमां सूर्य दीठो तेथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनो हर्त्ता थशे तथा पोते प्रभामंडलें करी अलंकृत थशे ७, आठमां स्वप्नमां ध्वजा दीठी तेथी कुलमां ध्वजा समान उत्तम थाशे अने धर्मध्वजाए करी बिराजमान थाशे, जगतने चारे दिशामां धर्मध्वजाथी शोभावशे ८, नवमा स्वप्नमां पूरण कलश दीठो तेथी संपूर्ण गुणी थशे तथा धर्मरूप प्रासाद ऊपर कलश चढावशे ९, दशमा स्वप्नमां पद्मसरोवर दीठुं तेथी जगतना तापने हरवावालो थाशे तथा चालतां थकां एनां पगतले देवताओ सुवर्ण कमल थापशे १०, अगीआरमां स्वप्नमां क्षीरसमुद्र दीठो तेथी गंभीर हृदयवालो थाशे तथा केवलज्ञानरूप रत्न पामीने चौद राजलोकना भाव जाणशे ११, बारमां स्वप्नमां देवविमान दीठुं तेथी देवताओनो पूजनीक थाशे एटले वैमानिक पर्यंत चार निकायनां देवताओ एनी सेवा करशे १२, तेरमां स्वप्नमां रत्ननो राशि दीठो तेथी देवता त्रण गढवालो समवसरण रचशे तेमां बेशी भव्यजीवोने धर्मदेशना आपशे १३, चौदमां स्वप्नमां निर्धूम अग्नि दीठो तेथी दीप्तिवंत (तेजवंत) थाशे तथा जेम अग्नि कंचनने शुद्ध करे छे तेम ए तमारो पुत्र आत्माना शुद्ध स्वभावनी शुद्धि करनारो थाशे, भव्यजनोनां मन शुद्ध करशे, अने कर्ममलने बाली न्हांखशे. तथा ए चौद स्वप्न दीठां तेथी चौद राजलोकनो स्वामी थाशे. एवां उत्तम गुणवालो तमारो पुत्र थशे.

स्वप्नपाठको कहे छे के–देवानुप्रिया ! अमारा स्वप्नशास्त्रमां बेतालीश स्वप्नां सामान्य (अशुभ) फल दायक कह्यां छे अने त्रीश स्वप्नां उत्तम (म्होटा) फलनां देवावालां कह्यां छे सर्वे मली बहोतेर स्वप्नां कह्यां छे; तेमांथी श्री अरिहंत अने चक्रवर्त्तिनी माता, अरिहंत अने चक्रवर्त्ति गर्भमां आव्यां थकां त्रीश म्होटा स्वप्नामांथी गज वृषभादिक चौद म्होटा स्वप्नां देखे अने वासुदेव गर्भमां आवे त्यारे वासुदेवनी माता चौद म्होटा स्वप्नां मांहेला कोइ पण सात स्वप्नां देखे, बलदेव गर्भमां आवे त्यारे बलदेवनी माता ए चौद म्होटा स्वप्नां मांहेला गमे ते चार स्वप्नां देखे, अने मांडलिक राजानी माता ए चौद स्वप्नां मांहेलुं गमे ते एक स्वप्न देखे.

हवे बेंतालीश मध्यम स्वप्ननां नाम कहे छे–गंधर्व, राक्षस, भूत, पिशाच, बुक्कस, महिष, अहि, वानर, कंटकद्रुम, नदी, खर्जूर, स्मशान, ऊंट, खर, मार्जार, श्वान, दौःस्थ, संगीत, धीज, भस्म, अस्थि, वमन, तम, कुब्जी, चर्म, रक्त, अश्म, वामन, कलह, विविक्तदृष्टि, जलशोष, भूकंप, ग्रहयुद्ध, निर्घात, भंग, भूमज्जन, तारापतन, सूर्यचंद्र–स्फोट, महावायु, महाताप, विस्फोटक, दुर्वाक्य. ए बेंतालीश माठां स्वप्न अशुभफल दायक जाणवां. अर्हन्, बौद्ध, श्रीकृष्ण, शंभु, ब्रह्मा, स्कंद, गणेश, लक्ष्मी, गौरी, नृप, हस्ती, गौ, वृषभ, चंद्र, सूर्य, विमान, गेह, अग्नि, स्वर्ग, समुद्र, सरोवर, सिंह, रत्नराशि, गिरि, ध्वज, पूर्णकलश, पुरीष, मांस, मत्स्य, कल्पद्रुम, ए त्रीश उत्तम स्वप्न शुभफल दायक जाणवां. ए बधां मली बहोंतेर स्वप्ननां नाम श्री वर्द्धमानसूरिकृत 'स्वप्नप्रदीप' ग्रंथने अनुसारे लख्यां छे.

जे पुरुष स्थिरचित्तवालो होय, जितेंद्रिय होय, सदाचारी अने सत्त्वशाली होय, शांत मुद्रावालो होय, धर्मरुचि होय, धर्मानुरागी होय, धर्म ऊपर श्रद्धावंत होय, अने दयावंत होय, इत्यादिक उत्तम गुणनो

धणी होय, तेने जे स्वप्नुं दीठामां आवे, ते सारुं अथवा मांठुं फल तरत आपे. वली रात्रिने प्रथम प्रहरे स्वप्न देखे, तो एक वर्ष मांहे फल आपे, रात्रिने बीजे प्रहरे स्वप्न देखे तो छमास मांहे फल आपे, रात्रिने त्रीजे प्रहरे स्वप्न देखे तो त्रण मास मांहे फल आपे, रात्रिने चोथे प्रहरे स्वप्न देखे, तो एक मास मांहे फल आपे, रात्रिना अंतनी छेहेली बेघडी रात्रि रहे तेवारे स्वप्न देखे, तो तेनुं फल दश दिवस मांहे पामे, सूर्य ऊगती वेलाए स्वप्न देखे तो तत्काल फल पामे. तथा जो मांठुं स्वप्न दीठामां आवे तो पाछा सुइ रहेवुं अने कोइनी आगल कहेवुं पण नहीं. तथा उत्तम स्वप्न देखी गुर्वादिक आगल कहेवुं, जो संभलाववा योग्य कोइ जन न मले तो गायना कानमां पण संभलाववुं, भलुं स्वप्न देखी पछो सुवे तो निष्फल थाय, भलुं स्वप्न देखी मूर्ख जन आगल तो सर्वथा न ज कहेवुं. केम के जेवुं फल सांभले, तेवुं फल पामे माटे उत्तम पुरुष आगलज कहेवुं ते ऊपर मूलदेवनुं दृष्टांत कहे छे–

कोइएक राजानो पुत्र अणमानीतो थको छे तेनुं नाम मूलदेव छे पण तेने दान आपवानुं घणुंज व्यसन छे तेथी राजाए तेने काहाडी मूक्यो, ते फरतो फरतो कोइक गामे आव्यो पोते महा धर्मवंत जैनमति छे परंतु खावाने न हतुं तेथी शहेरमां याचवाने गयो त्यां फरतां फरतां एक वाणीयाए भैंशने अर्थे अडद रांध्या हता ते मूलदेवने आप्या तेने लइ वाडीमां आव्यो अने मनमां चिंतववा लाग्यो के कोइ अतिथि आवे तो तेने भोजन आपीने पछी हुं भोजन करुं. एटलामां एक तपस्वी साधु त्यां आव्यो, तेवारे मूलदेवे ते ऋषिने देखी बाकला वोहोरावी दीधा, अने पोते आनंदपणे सुइ रह्यो निद्रामां निराबाध पणे बधो चंद्रमा म्हें गल्यो एवुं स्वप्नुं दीठुं, ते स्वप्न देखीने जाग्यो अने वली जे वाडीमां ए मूलदेव सूतो हतो तेज वाडीमां एक बावानो मठ छे, ते बावानां चेलाए पण तेहज स्वप्नुं दीठुं, देखीने जाग्यो प्रभाते पोताना गुरुने कह्युं तेवारे

गुरुए कह्युं के तुं आज गाममां भिक्षा लेवा जइश त्यारे तुजने चंद्रमा जेटलो म्होटो घृते चोपडेलो रोटलो गोल सहित मलशे ते सांभली चेलो राजी थइने भिक्षा लेवा गयो त्यारे तेने गुरुना कह्या प्रमाणे रोटलो मल्यो.

हवे ते वात राजकुमार मूलदेवे सांभलीने विचार्युं के—हुं एनी आगल म्हारा स्वप्ननी वात जो कहीश तो मने पण एटलुंज फल कहेशे केम के जे स्वप्न एना चेलाए दीठुं छे तेज म्हें पण दीठुं छे माटे एनी आगल तो वात करवी नही एम विचारी हाथमां श्रीफल लइने शहेरमां निमित्तिया पासे गयो त्यां स्वप्ननी वात कही. निमित्तियो बोल्यो के प्रथम तुं म्हारी दीकरी परणीश तो हुं तुजने स्वप्ननुं फल कहीश; मूलदेवे कह्युं म्हारी नात जात तो तुं जाणतो नथी अने त्हारी पुत्री केम परणावे छे ? निमित्तिए कह्युं म्हें सर्व वात जाणी छे एम कही तेने पुत्री परणावीने पछी स्वप्ननुं फल कह्युं के—आ गामनो अपुत्रीओ राजा आजथी सातमे दिवसे मरण पामशे अने तमे आ गामनां राजा थाशो, ते वात साची मानीने मूलदेव फरी तेहज वाडीमां गयो; एम करतां सातमां दिवसे गामनो राजा पण मरण पाम्यो तेवारे राजा विना कोइने चाले नहीं तेथी पंच एकठा थइने एवो ठराव कर्यो के पाटवी घोडो, पाटवी हस्ती अने पाटवी प्रधान इत्यादिकने शणगारीने कह्युं के जेने ए राजा करी थापे तेने राजगादीए बेसाडीए केमके एम कर्याथी पित्राइ गोत्राइ जे होय ते आगल कोइ वांधो करी शकशे नहीं. हवे हाथी अने घोडो ए बे बाहेर नीकलीने जे वाडीमां मूलदेव सूतो छे ते वाडीमां आवी, हाथीए गललाट करी मूलदेवना मस्तके कलश ढोल्यो अने घोडे हणहणाट कर्यो पछी हाथी तेने शूंढथी उपाडी पोतानी पीठ ऊपर बेशाडीने शहेरमां लइ आव्यो, लोकोए तेने राजपाटे थाप्यो. माटे सारुं स्वप्न दीठुं होय तो उत्तम डाह्या पुरुष आगल कहेवुं पण मूर्ख आगल नज कहेवुं.

उत्तम स्वप्न मूर्ख आगल कहेवाथी जे दुःख थाय ते आश्रयी वणिक्-स्त्रीनुं बीजुं दृष्टांत कहे छे—कोइएक वणिकस्त्रीए स्वप्नमांहे समुद्र पीधो, प्रभाते गुरु समीपे पूछवा जतां मार्गमां एक सहियर मली तेणे पूछयुं के—बेहेन! गहुंली लइ क्यां जाओ छो? एम घणा बलात्कारे पूछयुं, तेवारे तेने कह्युं के म्हें स्वप्नमां समुद्र पीधो, तेनुं फल गहुंली करी गुरुने पूछीश, एवुं सांभलतांज सहसात्कारे सहियर बोली के—एवडो म्होटो समुद्र पीतां त्हारुं पेट केम फाटयुं नहीं? एम मश्करीमां बोलीने चालती थइ, पछी गहुंली करी गुरुने स्वप्ननुं फल पूछयुं, तेवारे गुरुए इंगित आकार देखीने कह्युं के ए स्वप्न तमे प्रथम कोइ आगल प्रकाश्युं देखाय छे? तेणीए सहियरनी वार्ता कही, ते सांभली गुरु बोल्या के तमे पूर्वे कोइ आगल जो न कह्युं होत, तो तमोने भाग्यवंत पुत्र थात, हवे तो आजथी सातमां दिवसे त्हारे शरीरे कष्ट थशे, ते माटे तमे घेर जइ आत्मसाधन करो, पछी बाइ घेर आवी आत्मसाधन करी देवगत थइ, माटे रूडुं स्वप्न ज्हेना त्हेना आगल कहेवुं नहीं, तथा कोइ कहेवा योग्य न मले तो गायना कानमां कहिए, पण कह्या विना फल न होय.

प्रथम शुभ स्वप्न देखी पछी माठुं स्वप्न देखीए, तो माठा स्वप्ननुं फल पामीए, एम परावर्त्ते जाणवुं. तथा कोइ सिंहे अथवा घोडे अथवा वृषभे जोतर्यो रथ तेना ऊपर पोते बेठो छे एवुं स्वप्न देखे तो राजा थाय. घोडा, वाहन, वस्त्र, घर, कोइ लइ जाय छे एवुं स्वप्न देखे तो राजभय, शोक, बंध, विरोध, अर्थहानि थाय. सूर्य-चंद्रनुं बिंब गल्युं (पीधुं) देखे, तो समुद्र पर्यंत पृथ्वीनो धणी थाय. तथा ऊजले गजे बेठो, नदीतीरे शालनुं करुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो समस्त देशनो पति थाय. पोतानी स्त्रीनुं हरण देखे तो धननो नाश थाय, ऊजला सर्प्पे जमणी भुजाए डंक दीधो एवुं स्वप्न देखे तो रात्रिमां सहस्र सोनैया पामे. मनुष्यनां मस्तक, चरण, भुजा, खाउं छुं एवुं

स्वप्न देखे तो राज्य पामे. काली गाय, अश्व, गज, प्रतिमा देखे तो सारुं थाय अने बीजी काली वस्तु देखे, तो माठी जाणवी. तथा माठुं स्वप्न देखी देवनी पूजा देखे तो सारी वस्तु पामे, द्रोभ, अक्षत, चंदन देखे, तेने मांगलिक थाय. वली राजा, हाथी, घोडो, सुवर्ण, वृषभ, गाय, एटलां वानां स्वप्नमां देखे, तेनी कुटुंबवृद्धि थाय. रथे बेठो जाय ते राजा थाय, तांबूल, दधि, वस्त्र, चंदन, जाय, बकुल, कुंद, मचकुंद, फूल, वृक्ष, एटला वानां देखे, तो धनागम थाय. दीप, पन्ना, फल, पद्म, कन्या, छत्र, ध्वज अने हारादिक आभरण देखे, तो लक्ष्मीनो लाभ थाय. हरण, प्रहरण, भूषण, मणि, मोती, कनक, रूपुं तथा कांस्य-पात्रनुं हरवुं देखे, तो तेने धननी हानि थाय. बारणां, भोगल, हींडोलो, पावडी, घर, भांग्यां देखे, तो तेने स्त्रीनो नाश थाय. पगरखां तथा छत्र लीधां देखे अथवा तीक्ष्ण तरवार देखे, तेने मार्ग चालवुं थाय, जे वाहाणमां चढ्यो, ते वाहाण भांग्युं ने पोते तरी नीकले एवुं स्वप्न देखे, ते परदेशे जाय अने त्यां धन पामी आवे. अंजने नेत्ररोग, रोमच्छेद देखे, तो धन क्षय थाय. भेंशो, ऊंट ऊपर चढी दक्षिण दिशाए जाय, तेनुं शीघ्र मरण थाय. कमलाकर, रत्नाकर, जलपूर्ण नदी, तथा मित्रनुं मरण देखे, तो घणुं द्रव्य पामे, क्काथ पीयुं छुं एवुं देखे, ते अतिसार रोगे मरण पामे. वली जात्राए जाय, पूजा करे, तो तेनी कुलवृद्धि थाय. ह्रद, सरोवरे कमल उग्यां देखे, ते कोढ रोगे मरण पामे. हाथी, घोडो, गादलुं, सिंहासन तथा घरनां वस्त्र; एटलां वानां गयां देखे, तो राजानो भय थाय. हथीयार, आभरण; मणि, मोती, सोनुं अने रूपुं एटला-वानांनो नाश थतो देखे तो तेनुं धन अने मान दोनुं चाल्या जाय, जे पोतानी भार्याने कोइ लइ जाय छे एवुं देखे तो तेनी संपदानो नाश थाय, पोतानी स्त्रीने कोइ पराभव करे छे एवुं देखे तो क्लेश उपजे, गोत्र मांहेली स्त्री कोइ लई जतो देखे तो तेना भाइ प्रमुख बंदीखाने पडे.

नो ढोलीयो अने धोळुं वस्त्र स्वप्नमां देखे तो पोताने पीडा उपजे. ई मनुष्यना पगनुं हुं मांस भक्षण करुं छुं एवुं स्वप्न देखे तो राजा थाय. पद्मसरोवर, समुद्र अने नदी उतरतो देखे तो घणुं द्रव्य पामे वली उन्हुं पाणी, गायनुं छाण गोलमां भेलवेलुं पीधुं देखे तेने अतिसार रोग थाय तेथी मरण पामे, देवमूर्त्तिनी पूजा करुं छुं, यात्रा करुंछुं एवुं देखे तेने सर्व प्रकारे वृद्धि थाय, हृदय ऊपर कमल ऊगेल देखे तो तेनुं शरीर कोढरोगथी विनाश पामे इत्यादि.

माटे हे राजन्! त्रिशलाक्षत्रियाणीए जे चौद म्होटा स्वप्ना दीठां ते उदारकारी, मंगलकारी छे तेनुं फल—अर्थनो लाभ थाशे, भोगनो लाभ थाशे, पुत्रनो लाभ थाशे, सुखनो लाभ थाशे, माटे निश्चे ए त्रिशला क्षत्रियाणीने नव महीना अने साढा सात दिवस व्यतिक्रम्यानंतर तमारा कुलमां ध्वजा समान, दीपकसमान, मुकुटसमान, पर्वतसमान, तिलकसमान, कुलनी कीर्त्तिनो करवावालो, कुलना निर्वाहनो करवावालो, कुलमां सूर्यसमान तेजवंत, कुलनो आधार, कुलना यशनो करवा वालो, कुलमां वृषभ समान, कुलपरंपरानी वृद्धि करवा वालो, जेना हाथ पग घणा सुकोमल छे एवो वली कोइ इंद्रिय हीन नहीं, लक्षण व्यंजन गुण सहित, मानोन्मान सहित, संपूर्ण सर्व अंग भलो सौम्याकार, वल्लभकारी जेनुं दर्शन छे एवो पुत्र थाशे, वली ते बालक बाल्यावस्था छोडीने ज्यारे विनय विज्ञान वाली युवान अवस्था पामशे त्यारे शूर वीर, पराक्रमवंत, घणा हाथी घोडा रथ प्रमुख सेनानो मालक, चार अंत पृथिवी सुधी राज करवावालो एवो चक्रवर्त्ती राजानो राजा थाशे अथवा त्रण लोकनो नाथ धर्मचक्रवर्त्ती एवो तीर्थंकर थाशे माटे त्रिशलाक्षत्रियाणीए लाभ, सुख, महामंगल अने कल्याणकारी सर्वोत्तम स्वप्नां दीठां छे.

सिद्धार्थराजा ते स्वप्न लक्षण पाठकोनां मुखथी एवो अर्थ सांभ-

लीने हृदयमां हर्ष संतोष पाम्यो थको हाथ जोडी अंजली करीने स्वप्न लक्षण पाठकोने कहेतो हवो के—एमज थवानुं छे, हे देवाणुप्पिया! एवोज ए अर्थ छे, झूठो नथी, म्हें वांछयो तेज प्रमाणे तमारा मुखथी ग्रहण कर्यो, जे तमे कहो छो ते सत्य छे. आ वचन ऊपर कोइक टीकाकारे भोजराजानी वारमां एक गांगो तेली थइ गयो छे तेनुं दृष्टांत आपेलुं छे परंतु ते पाछलथी थएलो छे अने आ वात तो प्रथमनी छे तेथी ए दृष्टांत मलतुं नथी पण उपनयनमां मलती वात छे वली दृष्टांत होय ते एक देशीय होय छे. जो पण अंतर्वांच्यादिकोमां ए दृष्टान्त नथी तो पण लखीए छिए. सिद्धार्थराजा कहे छे के—सुसिद्धिनुं कहेवुं ते सर्व स्थानके सिद्धज थाय छे जेम गांगा तेलीने थयुं. जेम के कोइएक विद्यार्थी दक्षिणदेशमां प्रतिष्ठानपुर नगरने विषे कोइ एक भट्टनी पासेथी त्रीश वर्ष पर्यंत विद्या भणीने अहंकारमां आव्यो तेवारे माथा ऊपर अंकुश धारण कर्यो तथा रखेने विद्याए करीने म्हारो पेट फाटी जाय तेना गर्वथी पोताना पेटने पाटो बांध्यो, वली जो कोइ वादी म्हारा साथे वाद करतां नाशिने आकाशमां जाय तो तेने निसरणी ऊपर चढी नीचो पटकी न्हाखुं एवा गर्वे करी एक नीसरणी पण पोतानी पासे राखी, वली वादी जो नाशिने पातालमां प्रवेश करी जाय तो तेने खोदीने बाहेर काहाढीश एवा अभिमानथी एक कोदाल पण पोतानी पासे राखी अने निसरणी तथा कोदाल एक चाकरना माथा ऊपर आपी वली जो कोइ वादी म्हारा साथे वादमां हारी जाय तो तेना मुखमां तृण रखावी देवुं एवा विचारथी एक माणस घासनो पुलो लइने तेनी पछवाडे पछवाडे चाले एवा आडंबर सहित चालतो थको दक्षिण, गुजरात, मारवाड, मेवाड इत्यादिक देशोनां पंडितोनी साथे वाद करी, तेओने जीतीने सरस्वतीकंठाभरण आदि बिरुदावली बोलावतो थको सर्व गामोना पंडितोने

जीततो थको, अनुक्रमे मालवदेशमां उज्जेनी नगरीना भोजराजानी सभामां पांचशे पंडित छे एवी वात सांभळीने ते पंडितोनी साथे वाद करवा सारु उज्जेनीए आव्यो तेने राजाए म्होटा आडंबरथी नगरमां प्रवेश कराव्यो, अने रूडा महेलमां उतारो आप्यो, पछी ते पंडिते राजानी सभामां आवी पंडितोनी साथे वाद करीने राजानी समक्ष कालिदास माघ आदिक पांचशे पंडितोने जीती लीधा,तेवारे राजाए विचार्युं के आ म्होटुं आश्चर्य थयुं के परदेशी भट्ट आवीने म्हारा सर्व पंडितोने हरावी दीधा तेथी म्हारा पंडितोना माननी हानि थइ एवो चिंतातुर थइने क्रीडा करवाने अर्थे जवा लाग्यो. मार्गमां जतां एक आंखवालो गांगो तेली घाणी ऊपर बेठो छे, ते घाणीमांथी तेल लइने बीजो एक जुदो घडो हतो तेमां न्हांखे पण तेलनुं एक टीपुं मात्र बाहेर पडवा दीए नही एवा काणा घांचीने देखीने राजाए विचार्युं के आ काणानी बुद्धि जुओ केवी छे ? तो ए काणानी अक्कलनो तो पारज नहीं होय एम कहेवुं तेज सत्य छे पछी राजाए तेने बोलावीने पूछयुं के अरे ! तुं विदेशी भट्टाचार्य साथे संवाद करीश ? त्यारे ते बोल्यो हां महाराज ! हुं वाद करीश एमां म्हारुं शुं जवानुं छे ? भट्टाचार्यनी साथे वाद करवो कांइ म्होटी वात नथी जो जोरावर (जबर) देखीश तो पण अटपटा न्यायथी तेने जीती लइश; पछी राजाए आदित्यवारने दिवसे भट्टाचार्यने बोलावीने कह्युं के म्हारा जे साधारण भट्टो हता तेने तमे जीत्या पण हजी म्हारा सर्व पंडितोनो जे आचार्य (गुरु) छे तेनी साथे जो वाद करो अने जीतो तो हुं जाणुं के तमे खरा पंडित छो. तेवारे दक्षिण भट्टाचार्ये कह्युं के--राजन् ! हुं तेनी साथे पण वाद करीश माटे ते क्यां छे तेने आंही बोलावी ल्यो; त्यारे राजाए भट्टाचार्यने आसन आपी बेसाड्यो पछी कालीदास,क्रीडाचंद्र माघ प्रमुख भट्टोने एकठा करीने कह्युं के जाओ ते पंडितजीने लइ आवो तेओए जइ गांगा तेलीने भट्टाचार्यनो

वेश कराव्यो, घरेणां पहेराव्यां अने शरीरमां तो ते, प्रथमथी ज मातेलो मदोन्मत्त हाथी सरखो हतो तेने पालखीमां बेसाडी पांचशे पंडितोना परिवार साथे राजसभामां लाव्या, राजाए उठी आदर दीधो, सर्व सभाए ऊभा थइने म्होटा सन्मानथी सिंहासन ऊपर बेसाड्यो त्यारे दक्षिण भट्टाचार्ये तेने जोइने विचार्युं के "आ तो मातेलो छे अने हुं तो शरीरे दूबलो छुं तेथी एनी साथे वाद करतां पार आवे नहीं माटे एनी साथे वचननो कलह करवो नहीं, मात्र तत्त्वज पूछवुं" एम चिंतवीने एक आंगुली ऊंची करी त्यारे भोजराजाना भट्टे क्रोध करी बे आंगुली ऊंची करी; ते जोइ दक्षिण भट्टाचार्ये चमत्कार पामीने पांच आंगुली ऊंची करी बतावी ते जोइ गांगातेलीए मुठी ऊंची करी बतावी त्यारे दक्षिण भट्टाचार्ये पोताना मस्तक ऊपरथी अंकुश उतारी न्हांख्यो, पेटे पाटो बांध्यो हतो ते छोडी न्हांख्यो अने निसरणी तथा कोदाली पण न्हांखी दीधी, तृणनो पूलो पण न्हांख्यो, समस्त माननो त्याग करी सर्व सभा समक्ष भोजराजाना भट्टना पगे लाग्यो अने कहेवा लाग्यो के म्होटी आश्चर्यनी वात छे के म्हने कोइए पण जीत्यो नहीं पण तुं म्होटो पंडित छे माटे त्हें मुजने जीत्यो; ते जोइ भोजराजाए विस्मय पामीने दक्षिण भट्टाचार्यने पूछ्युं के तमे केवा प्रकारनो वाद कर्यो ? त्यारे भट्ट बोल्यो के तमारो भट्ट महा ज्ञानवान् छे कारण के म्हें एनी साथे समस्याए वाद कर्यो के आ जगतमां एक शिव छे एवुं स्थापन करवा सारुं एक आंगुली तमारा भट्टने बतावी त्यारे तमारा भट्टे बे आंगुली देखाडी तेथी हुं समजी गयो के एक मात्र शिव ज नथी पण शिव अने शक्ति ए बेउ छे. वली म्हें कह्युं के इंद्रियो पांच छे तेथी पांच आंगुली बतावी त्यारे आपना भट्टाचार्ये मुट्ठी बतावी तेथी हुं समजी गयो के पांच इंद्रियो तो खरी पण तेने वश राखवी जोइए. त्यारे म्हें जाण्युं जे ए पंडित त्यागी, ज्ञानी अने जितेंद्रिय छे; एवी रीते वाद थयो तेमां

हुं हारी गयो, एना समान बीजो पंडित म्हें क्यांय पण दीठो नहीं. एवुं कहीने दक्षिणभट्टाचार्य मानभ्रष्ट थयो थको पोताने देशे चाल्यो गयो, पाछलथी भोजराजाए गांगातेलीने पूछ्युं के त्हें केवा प्रकारनो वाद कर्यो अने केवी रीते जीत्यो ? त्यारे तेली बोल्यो के महाराज ! दक्षिणभट्टाचार्य घणो खराब माणस छे म्हने कहेवा लाग्यो के त्हारी एक आंख छे ते हुं फोडी न्हांखीश एवुं मनमां लावीने एक आंगुली ऊंची करी त्यारे म्हें बे आंगुली ऊंची करीने समजाव्यो के तुं तो एक आंख फोडतो पण रही जइश परंतु हुं तो त्हारी बे आंखो फोडी नाखीश, त्यारे मने पंजो देखाडी बोल्यो के हुं तने थाप मारीश तेथी त्हारुं म्होढुं फरी जाशे, त्यारे म्हें मुट्ठी बतावी के हुं तुजने एक मुट्ठी मारीश तो तुं पाताळमां पेसी जइश एवी वात तेलीना मुखथी सांभळीने राजा प्रमुख सर्व सभाने हसवुं आव्युं अने बोल्या के ए म्होटो भाग्यशाली सुसिद्धिवालो छे एवुं कही वस्त्रादिक पहेरामणी आपी, सन्मान दइ, गांगातेलीने घेर पहोंचतो कर्यो.

एनी पेरे सिद्धार्थराजा कहे छे के हे स्वप्नपाठको ! तमे पण सुसिद्धिवाला छो तेथी म्हारे तो तमारुं कहेवुं सत्य थाओ एवुं सिद्धार्थराजाए स्वप्न पाठकोने कह्युं, कहीने ते स्वप्नोने रूडी रीते धारण करीने स्वप्नलक्षण पाठकोने घणा अशन पान खादिम अने स्वादिमादिक चार आहार जमाडीने फूल, फल, गन्ध, माला, घरेणादिकोथी सत्कार सन्मान आप्युं, अने जीवे त्यां सुधी खाया करे एवी घणी आजीविका दीधी अर्थात् गाम नगर प्रमुख आपीने शीख आपी. त्यार पछी सिद्धार्थ क्षत्रियराजा सिंहासन थकी उठीने ज्यां त्रिशलाक्षत्रियाणी पडिच्छमां बेठी छे त्यां आवीने कहे छे. के हे देवाणुप्पिया ! स्वप्नशास्त्रमां बेंतालीश सामान्य स्वप्नां अने त्रीश महा स्वप्नां, सर्व मळी बहोतेर स्वप्नां कह्यां छे ते त्रीशमांथी चौद म्होटां

स्वप्नां तीर्थंकर अने चक्रवर्त्तिनी माता देखे अने एज चौद स्वप्न मांहेला सात स्वप्नां वासुदेवनी माता देखे, अने चार बलदेवनी माता देखे, एक मंडलिकराजानी माता देखे, एवुं स्वप्नपाठके कह्युं छे. जे तमे चौद स्वप्नां दीठां माटे तमारे चक्रवर्त्ति तथा तीर्थंकर होवावालो पुत्र थशे. ते पछी त्रिशलादेवी ए अर्थ सांभलीने हृदयमां खुशी थइ यावत् स्वप्नांनो अर्थ धारण करीने सिद्धार्थराजानी आज्ञा लइने नाना प्रकारना मणिरत्नोना बाजोठथी उठीने ताकीद रहित यावत् राजहंस सरखी गतिए चालती थकी ज्यां पोतानुं भुवन छे त्यां आवीने पोताना मंदिरमां प्रवेश करती हवी.

गुणनिष्पन्ननाम थापवानो मनोरथ—

जे दिवसथी श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी ते राजाना कुलमां हरणिगमेषी देवे संहर्या ते दिवसथी वैश्रमणनामे इंद्रमहाराजनो जे भंडारी जेनुं लोकोमां धनद एवुं नाम छे ते भंडारीना हुकमना उठाववावाला एवा जे तिर्यक्लोक निवासी वैताढ्य पर्वतनी मेखलाए रहेनारा व्यंतरनिकायना तिर्यग्जृंभक देवता ते शक्रेंद्रना हुकुमथी घणाज घणा एवा जे जूना धन, एट्ला महानिधान ते केवा धन तो के—जे धनना स्वामी हीण थइ गया, जे धनना संचय करवावाला घडाववा वाला मरण पामी गया छे, तेमनो कोइ गोत्री पण रह्यो नथी, सर्वथा ते धनना स्वामी विच्छेद पाम्या, डाटवावाला विच्छेद गया, डाटवावालानां कुलगोत्र पण विच्छेद पाम्यां तेमनुं धन. ते हवे जे स्थानके घालीने मरी गया ते स्थानकोनां नाम कहे छे—बुद्धिनां गुण ज्यां जता रहे तेने 'गाम' कहीए त्यां घडावीने मरी गया ते धन त्यांज रही गयुं, ते धन तथा ज्यां कर नहीं लागे तेने 'नगर' कहीए, धूलनो कोट ज्यां होय तेने 'खेट' कहीए, खोटुं नगर ते 'कर्बट' कहीए, शहेरथी बे कोश ऊपर जे गाम होय ते 'मंडप' कहेवाय, जेने चारे बाजुए गाम वसे ते 'द्रोणमुख' कहेवाय, जलमां अने थलमां थइने मार्ग जाय ते 'पट्टण' कहीए,

ज्यां तापसोनुं वसवुं होय तेने 'आश्रम' कहीए, तीर्थस्थानके जे गाम होय तेने 'संवाह' कहीए, सार्थवाहने उतरवानुं स्थानक होय तेने 'सन्नि-वेश' कहीए. एवा प्रकारनां गामोने विषे, सिंघोडाना आकारे रस्ता होय तेने विषे, तथा त्रिवाटाने विषे, चोवाटाने विषे तथा घणा मार्ग ज्यां भेला थता होय तेने 'चच्चर मार्ग' कहीए तथा चौमुखां देवोनां मंदिरमां, म्होटा पंथवाला राजमार्गने विषे, देवकुलमां, सभामां, पाणीना स्थान-कमां, बागमां, उद्यानमां, वनमां, वनखंडमां, एक जातिनां वृक्ष, होय तेने 'वनखंड' कहीए, मसाणमां, सूनाघरमां, पर्वतनी गुफाओमां, होमना स्थानके, पर्वतनी शिला खोदेली होय तेमां, बेसवानी शालामां, लोकोने वसवाना स्थानकोमां एटला स्थानके घालेलां जे धन ते सर्व जगाओनां धन लइ जइने सिद्धार्थ राजानां घरमां न्हांखो. एवो इंद्र-महाराजनो हुकुम थयो त्यारे तिर्च्छालोकना वसवावाला तिर्यग्जृंभक देवता ते सर्व धन लइ जइने सिद्धार्थराजानां घरमां न्हांखे. जे रात्रिमां श्रमणभगवान श्रीमहावीरस्वामी ज्ञातकुल जे सिद्धार्थराजा तेना कुलमां आव्या ते रात्रिथी मांडीने सिद्धार्थराजा, सोने करी, रूपे करी, धने करी, धान्ये करी, राज्ये करी, देशे करी, वाहने करी, कटके करी, पालखी प्रमुखे करी, भंडारे करी, धान्यना कोठारे करी, पुरे करी, अंतेउर जे राणीयोनो परिवार तेणे करी, देशवासी लोकोए करी, यशवादे करी, घणा घणा वध्या—वृद्धि पाम्या तथा गणवामां आवे एवां चोवीश प्रकारनां धान्य तेनां नाम कहे छे—जव, घउं, शालि, व्रीहि, साठी, कोद्रवा, सामो, कांग, राल, तिल, मग, अडद, अलशी, चणा, तिउडा, वाल, सिलिंद, राजउडद, उच्छू, मसूर, तुअर, कुलथ, धाणा, कलायरो, इत्यादिक २४ प्रकारनां धान्यथी तथा बीजां पण सोनुं, रूपुं, रत्न, मोती, मणि, दक्षिणावर्त्त-शंख, राजवर्त्त, शिला, मूंगिया, लाल रत्न, पद्मराग आदिके करी वृद्धि पाम्या तथा प्रीति, सत्कार, बल, वाहन समुदाये करीने घणा घणा ज

वृद्धि पाम्या, तेथी श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीनां माता पिता मनमां एवो विचार उपन्यो के जे दिवसथी अमारे आ पुत्र कूंखमां आव्यो छे ते दिवसथी लइने अमे सर्व प्रकारे पूर्वे कह्यां एवां सोनां रूपां प्रमुख वस्तुए करी वध्या, प्रीति सत्कारे करी घणा घणाज वध्या, माटे ज्यारे अमारे घेर आ पुत्रनो जन्म थाशे त्यारे अमे ए पुत्रनुं नाम जेवा एमां गुण छे तेवुं आपीशुं, अर्थात् वृद्धिपणाना गुणे करी 'वर्द्धमान' एवुं नाम स्थापन करीशुं.

मातना ऊपर अनुकंपा लावी प्रभु निश्चल रह्या—

श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामीए पोतानां मातानी ऊपर अनुकंपा एटले दया लावीने विचार्युं के हुं ज्यारे गर्भमां हालुं चालुं छुं त्यारे माताने दुःख उपजे छे एम चिंतवीने मातानी कूखमां निश्चल रह्या, हाल्या चाल्या, नहीं, कंप्या नहिं, पोतानां अंगोपांग गोपवी राख्यां एवा थया थका रह्या; इहां कवि उत्प्रेक्षा करे छे के—जाणे भगवान् मोहराजाने जीतवा सारु एकांते विचार करता रह्या छे के शुं ?, अथवा कोइ परब्रह्मनुं अगोचर ध्यान करे छे के शुं ?, अथवा कल्याणरस प्रत्ये पोताना आत्मगुण साधवा रह्या छे के शुं ?, अथवा कामदेवनो निग्रह करवाने अर्थे रूपपरावर्त्तन विद्या साधता रह्या छे के शुं? एवी रीते श्रीभगवान् मातानी कूंखने विषे रह्या ते तमोने कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थे थाओ.

प्रभुनी निश्चलताथी माताने शोक—

त्यारे त्रिशलामातानां मनमां एवुं थयुं के म्हारो गर्भ कोइ देवता लइ गयो, म्हारो गर्भ मरण पाम्यो, म्हारो गर्भ चवी गयो, म्हारो गर्भ गली गयो, म्हारो गर्भ प्रथम हालतो चालतो हतो ते हमणां हालतो चालतो नथी तेथी जाणु छुं के गर्भने कुशल नथी एवुं विचारीने मनमां संकल्प थयो, चिंतारूप समुद्रमां बूड्यां, अने हाथ ऊपर म्होडुं धरी नीची दृष्टि राखीने आर्त्तध्यान ध्याववा लागी, ते आ प्रमाणे के म्हारो जे गर्भ जतो रह्यो ते हुं निश्चे अभागणी छुं, हीणपुण्यवाली

छुं, अभागीयाना घरमां चिंतामणीरत्न रहे नहीं अथवा दारिद्रीनां घरमां निधान केम रहे ? जेम मारवाडमां कल्पवृक्ष रहे नहीं तेम पुण्यहीणने तृषा लागे त्यारे अमृतपान करवानी इच्छा थाय तो ते इच्छा केवी रीते पूरण थाय ? हे दैव ! हे कर्म ! तुं महा निर्दय छे, निर्लज्ज छे, तुजने करुणा नथी, अरे पापिष्ट दुष्ट ! निरपराधि लोकने मारवा वाला, तुं म्हारो विना मतलब वैरीं केम थयो ? त्हारो म्हें श्यो अपराध कर्यो के जे थकी त्हें म्हारो मनोरथरूप कल्पवृक्ष उखेडी न्हांख्यो, म्हें त्हारो कोइ अपराध कर्यो होय तो हे पापी ! तुं प्रगट थइने शा वास्ते कहेतो नथी ? त्हें मुजने दुःखनी खाण प्राप्त करी दीधी, त्हें मुजने आंखो आपीने पाछी खेंची लीधी, त्हें मुजने हाथमां निधान आपीने पाछो खेंची लीधो, त्हें मुजने मेरुपर्वत ऊपर चढावीने पाछी जमीन ऊपर नाखी दीधी, त्हें म्हारा मुखमां आवेलो कोलीयो खेंची लीधो, त्हें म्हारा निपजेला–पाकेला धान्यना क्षेत्रने बाली दीधुं, त्हें म्हारी रसकुंपिका भांजी दीधी, त्हें म्हारुं जहाज भरसमुद्रमां डुबाडी दीधुं, अथवा वली दैवने ओलंभो देवाथी शुं थाय ? अरे जीव ! त्हें आगला भवमां एवाज कर्म बांध्या हशे ते कर्म तुजने हमणां उदयमां आव्यां छे. पूर्वभवमां म्हें माताओनी पासेथी बालकोने दूर कर्यां हशे तथा गाय प्रमुखनां वाछरुने दूध पीवा दीधुं नहीं होय, वृक्षनी डालीयो भांगी, सरोवरनी पाल फोडी, दव लगाव्या, अणगल पाणी पीधां, उंदरोना बिल खोद्यां, धूलथी भर्यां, नोलीयां अने गोहनां दरोमां गर्भनुं पाणी तथा तेल रेडयुं, कीडी मकोडाना दरमां उष्ण पाणी रेड्यां, पोपट मेना प्रमुखने पांजरामां घाल्यां तेमनी माताना वियोग कर्या, चिडा प्रमुख पंखीओनां माला पाड्या, ईंडा फोड्यां, जूं लीख मार्यां, लोकोना गर्भ ऊपर द्वेष कर्यो, गर्भ पडाव्या, गर्भस्तंभन कराव्या, वशीकरण, उच्चाटन कराव्यां. त्हारो पुत्र मरण पामजो एवा श्राप दीधा, पापना मंत्र अने औषध कर्या,

कोइने विष दीधुं, कोइना रत्न चोरी लीधां, कोइनुं शील भंगाव्युं, अथवा व्रत लइने भांग्या, कोइनां गाम बाल्यां, म्होटा वृक्ष धरतीमांथी उखेडी नांख्यां, म्होटा तालावनां शोषण कर्यां अथवा देवद्रव्य भक्षण कर्यां, जैनमंदिर पाड्यां, गुरुना अवर्णवाद बोल्या, देवगुरु ऊपर द्वेष कर्यो, दान देताने वर्जना करी, वृक्षनां फल विदार्यां अथवा अनंतकाय भक्षण कर्यां, काचां फल तोड्यां, घणुं शुं कहुं ! एवा म्हारे जीवे पाप कर्यां हशे ते पाप हमणां मुजने उदय आव्यां छे के जे थकी म्हारो आवो गर्भ गळी गयो, माटे हुं तो पारविनानी दुःखिनी थइ, म्हारो ए चौद स्वप्न सूचित गर्भ गयो तो हवे म्हारे संसारमां बीजुं शुं सुख छे, हुं राजपाटने शुं करुं वधारे शुं कहुं, ? त्रण लोकथी पूजित एवा पुत्र विना सर्व म्हारे सुनुं छे, हवे हुं क्यां जाउं, शुं करुं, कोनी आगल जइ पोकार करुं, एवा विलाप करती थकी त्रिशलादेवी यूथभ्रष्ट हरणी सरखी थइ, ज्यां त्यां भमे, निश्वासा न्हांखे, एवी अव्यवस्थित थयेली त्रिशलादेवीने देखीने सखीयो पूछवा लागी के स्वामिनि ! आज तुं एवी थइ केम रही छे ? अमे तने पूछीए छीए के आ दुःखनुं शुं कारण छे ? त्यारे त्रिशलादेवी आंखमांथी आंसु नाखीने निश्वासा मूकती बोली के हे सखीयो ! हुं तमोने शुं कहुं, हुं निर्भागणी छुं, म्हारुं जीवितव्य गयुं, त्यारे सखीयो बोली के सखि ! आवा अमंगलिक वचन म बोल, बीजुं सर्व रह्युं पण त्हारा गर्भने तो कुशल छे ? त्यारे त्रिशला बोली के सखियो ! जो म्हारा गर्भने कुशल होय तो बीजुं म्हारे शुं दुःख छे ? म्हारो गर्भ जतो रह्यो एज दुःख छे. एवुं कहेतां मूर्च्छा खाइने जमीन ऊपर पडी गइ, तेवारे सखीयोए चंदनजल छांटी छंटकावीने अने पवनथी सचेतन करीने फरी पुछ्युं के त्हारा गर्भने शुं थयुं ? तेवारे राणी गद्‌गद स्वरथी बोली के म्हारो गर्भ जतो रह्यो एवुं सांभली सखीयो पण सर्व दुःखी थइ थकी राजाने जइ ए हकीगत कही, तेथी राजा

पण दुःखी थयो, नाटक वाजित्र सर्व निषेध कर्यां, सर्व शोकाकुल थइ बेठा के हवे शुं करीए. एवा थया के तेने कांइ पण सूजे नहीं, त्यारे कोइक तो निमित्तियाने पूछवा गया, कोइ ज्योतिषीया जोगीने पूछवा लाग्या अने वृद्ध स्त्रीयो; शांति पुष्टि करवा लागी, कुलदेवीने ओलंभा देती थकी के हे देवी ! आ वखत तुं किहां गइ, एवा एवा विलाप करे छे पण त्यां कोइ शब्दथी बोले नहीं, स्तब्ध थया, सर्व शोकनी राजधानी सरखां थयां. आंसुथी मुख धोतां थकां, निसासा मूकता थकां, दुःखे पीडातां थकां, कोइने खावुं पीवुं पण सूजे नही एवा स्वरूपे थयां.

गर्भमां भगवान एक देशथी हाल्या—

थोडी वार पछी भगवाने जाण्युं के प्रथम वाजित्र प्रमुख वाजतां हतां ते हमणा केम नथी वाजतां ? एवुं जाणी अवधिज्ञाने जोयुं त्यारे सर्व व्यतिकर जाणीने विचार्युं के—

किं कुर्म्मः कस्य वा ब्रूमः, मोहस्य गतिरीदृशी ।
दुष्धातोरिवास्माकं, दोषनिष्पत्तये गुणाः ॥ १ ॥

आ मोहराजानी गति केवी छे के म्हें तो गुण कर्युं तो आंही उलटुं अवगुण थयुं ते ऊपर कलिकालनुं दृष्टांत कहे छे—जेम कोइक पंथी परदेशथी घणुं द्रव्य उपार्जन करी पोताने घेर आवतो हतो तेवामां रस्ते चालतां कोइक अटवी आवी तेमां दव लागो दीठो ते दवमां कोइ सर्प्प दाझे छे, ते सर्प्पे पहेला वटमार्गुने कह्युं के मुजने आ दवमांथी बाहेर काहाढ्य ? तेवारे तेणे बाहेर काहाड्यो त्यारे सर्प्पे कह्युं ऊभो रहे हुं तुजने भक्षण करीश ते पुरुष बोल्यो म्हें तुजने बलतो राख्यो, उपकार कर्यो, अने मरणमांथी उगार्यो तो उलटो तुं मुजने भक्षण करीश ? सर्प्पे कह्युं आजे कलिकाल वर्त्ते छे आजना समयमां गुणनो दोष थाय तेमाटे हुं तुजने करडीश तेवारे पंथी बोल्यो हुं घणा वर्षे घेर जाउं छुं

वळी म्हारी पासे द्रव्य छे माटे घेर जइ म्हारी स्त्रीने द्रव्य आपी तेनी शीख मांगी आवुं छुं एवो कोल आपी पोताने घेर आव्यो, स्त्रीने सर्व वात कही, शीख मांगीने ते पुरुष अटवीमां पाछो आव्यो, स्त्री पण पाछळ पाछळ आवी, सर्प्पने स्तुति करी कहेवा लागी के अहो ! नागराज म्हारा भरतारनुं भक्षण करशो तो म्हारी शी गति थशे, म्हारे पाछळ शत्रु घणा छे त्यारे सर्प्पे कह्युं ते शत्रुनिवारण उपाय तुजने बतावीश, तेनी तुं चिंता म करजे, आ औषध म्हारा राफडा पासे छे तेनुं मूळ लइ पाषाण ऊपरे घसीने तेना छांटा वैरी ऊपर न्हांखशे तो बळी भस्म थाशे. स्त्री ते औषधीनुं मूळ लइ अमृतमूळीने पाषाण ऊपर घशीने सर्प्प ऊपर छांटा न्हांखवा तैयार थइ त्यारे सर्प्प बोल्यो म्हें तुजने औषधी देखाडी तो वळी म्हनेज बाळे छे, उलटो गुण ऊपर अवगुण करे छे, तेवारे स्त्री बोली के गुणनो भाइ अवगुण (दोष) छे, एवुं तमेज तमारा मुखथी कह्यो छो, माटे हवे तमारे बोलवुं नहीं एम कही सर्प्प ऊपर छांटा न्हांख्या ते बळी भस्म थयो (इति कलिकाल दृष्टांत) एम विचारी गर्भमांहे रह्यां थकां भगवान टचली अंगुली हलावीने एक देशथी हाल्या.

गर्भना हालवाथी माताने प्रमोद—

त्रिशलाजीए जाण्युं अरे म्हारो तो गर्भ छतो छे, अने म्हें फोकट खोटो शोक कर्यो एवुं चिंतवन करीने कहेवा लागी के हे सखीयो ! म्हारा गर्भने कुशल छे, म्हें अज्ञानथी विलापात कर्यो, म्हारा भाग्य म्होटां, हुं धन्य, कृतपुण्य, हुं त्रण भुवनमां मान्य, म्हारुं जीववुं प्रशंसनीय, अने मन्हे जैनधर्म फल्यो, म्हें पूर्वे जे धर्म सेव्यो हतो ते प्रगट थयो, म्हारुं जीववुं सफल, सखीयो जय जय करवा लागी, अष्टमंगल मांड्या कुंकुम छांट्या, राजाने वधाइ दीधी, राजा पण खुशी थयो, वाजित्र वाज्यां, नाटक महोत्सव थयां, तोरण बांध्या, बंदीजन जय जय शब्द बोल्या, बंदीखानां छोड्यां, अनेक लोक मल्या, मंगलिकनी वातोथी

कोलाहल थयो, महा दान आप्यां, ए प्रमाणे आनंदथी राजानी राज-धानी हर्ष रूप थइ, सूत्रकार कहे छे के–ते गर्भनुं कुशल न जणायाथी सिद्धार्थराजाना घरमां मृदंग, ताल, वीणा, हस्तताल, नाटक इत्यादि लोकवल्लभ सर्व कार्य आनंद रहित थया हता तेथी महावीर स्वामी माताने शोकातुर जाणीने एक देशथी हाल्या त्यारे त्रिशला हृदयमां हर्ष पामीने बोली म्हारो गर्भ हरण थयो नथी, यावत् गल्यो नथी, आ म्हारो गर्भ प्रथम हालतो न हतो ते हमणा हाले छे, एवुं कहीने हर्ष पामीने आनंद मनाववा लागी.

गर्भमांज प्रभुए अभिग्रह लीधो—

हवे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामीने विचार थयो के म्हारा मा बाप हमणाथीज एवा प्रकारनो मोह करे छे तो ज्यारे हुं दिक्षा लइश त्यारे तो ए घणुं दुःख पामशे माटे हवे म्हारे म्हारा माता पिता जीवे त्यां सुधी दीक्षा लेवी कल्पे नहीं एवुं ज्यारे साडा छ महिना गर्भने थया त्यारे भगवाने अभिग्रह लीधो.

गर्भप्रतिपालन—

त्यार पछी त्रिशलामाताए स्नान कर्युं, देवपूजा करीने मंगल कर्यां, सर्व घरेणां आभूषण पहेर्यां, गर्भप्रतिपालन करवाने अर्थे घणो ठंडो आहार लीए नहीं, घणो उन्हो आहार लीए नहीं, घणो तीखो सूंठ मिरचादिकनो आहार लीए नहीं, घणो कडवो ते निंबादिक, घणो कशा-यलो ते हरडे प्रमुख, घणो खाटो ते आंबली प्रमुख, घणो मीठो ते गुडा-दिक, घणो चोपड्यो ते घी प्रमुख, घणो लूखो ते चणा प्रमुख, घणो सूको ते पूडला पापडी प्रमुख, घणो लीलो ते फल फूल कंदमूलादिक भोजन खाय नहीं, जे भोजन करे ते पण विधि सहित करे, वस्त्र पण विधिथी पहेरे, गंधादिक विधिए लीए, माला प्रमुख विधिथी पहेरे,

गर्भनी रक्षाने वास्ते पोताने रोग थवा दीए नहीं, शोक करे नहीं, मोह करे नहीं, भय राखे नही, घणा काम करे नही, जे जे काम गर्भने हितकारी होय ते ते काम करे, मानोपेत पथ्य आहार करती थकी गर्भने पोषे, जे कालमां जे चीज पाचन थती होय, अने गुणकारक होय ते चीज वापरे, कोमल शय्याए शयन करे, सुखासनने विषे बेसे, ऊंची नीची फरे नही, वली वाग्भट्टादिक ग्रंथोमां कहेलुं छे के-गर्भिणी स्त्री जो वायडुं खाय एटले वायुज चीजो खाय तो गर्भ कूबडो थाय, आंधलो थाय, वामन थाय, पित्तकरनारी चीज खाय तो गर्भ पडी जाय तथा तेनुं अंग पीलुं थाय, कफ करनारी चीज खाय तो पांडुं रोग (श्वेत वर्णवालो) थाय अथवा काबरचीतरो थाय, तथा जो गर्भवाली स्त्री लूण घणुं खाय अने आंखमां काजल घणुं आंजे तो छोकरो नेत्र रहित आंधलो थाय, घणो ठंडो आहार करे तो वायु घणो थाय, घणुं ऊनुं खाय तो छोकरो निर्बल थाय, मैथुन सेवन करे तो गर्भ मरण पामे, घोडा प्रमुख ऊपर चढे, घणी दोडे, घणी चाले, चालती पडे, पेट मसलावे, खाल प्रमुख उल्लंघे, उंची नीची सूवे, मेडी प्रमुख ऊपर चढे उतरे, ऊभडक बेसे, उपवास करे, वमन विरेचन जुलाब लीए एटलावानां करे तो गर्भ पडी जाय, घणुं रुदन करे तो छोकरो चीपडी आंखवालो थाय, घणा गीत गाय तो छोकरो बहेरो थाय, घणी वातो करे तो वाचाल थाय, घणुं हसे तो मश्करो थाय, घणी गालो बोले तो छोकरो लंपट थाय, तथा ऋतु ऋतुमां शुं शुं पथ्य करवुं शुं खावुं ? ते कहे छे-वर्षा ऋतुमां लूण गुणकारक छे, शरद ऋतुमां जल गुणकारक छे, शिशिर ऋतुमां खाटो रस गुणकारी छे, वसंत ऋतुमां घृत गोल इत्यादिक गुणकारक छे. वली कोइ म्होटी वृद्धावस्थावाली सहियर कहे छे के-बाइ धीरजथी बोलो, धीरजथी चालो, क्रोध म करो, पथ्य खाओ, घणो आकरो घाबरो अने कांचली

बांधो नहीं, घणुं हसवुं म करो, चांदणीमां सुओ नहीं, केमके अमासिए सुवा थकी पुत्र बांडो (रावणखंडो) थइ जाय वली घणुं नीचुं न चालवुं, घणी ऊंची चडीशमां, दिवसे सुवाथकी छोकरो ऊंघण थाय, आलसिओ थाय, नख कापवा थकी पुत्र कुशीलियो थाय, घणुं दोडवाथी पुत्र चंचल थाय, घणुं हसवाथी होठ, दांत, तालु अने जीभ काळां थाय, घणा गीत गावाथी बहेरो थाय, वींजणे वायु कर्याथी उन्मत्त थाय, अति बोलवाथी वाचाल थाय, अतिशोक कर्याथी उच्चाटीयो थाय, मूर्च्छाथकी निर्बुद्धि थाय, अतिभय राख-वाथी गर्भ बीकण थाय, अति परिश्रम करवाथी मंदशक्ति वाळो अने आळसु थाय इत्यादिक वातो सर्व वडेरी कहे ते प्रमाणे त्रिशलाराणी पोताना गर्भनी प्रतिपालना करे.

त्रिशलामाताने उपजेलां दोहला—

हवे त्रिशला माताने भला डोहोला उपजे छे के—पूजा करुं, दान आपुं, साह्मी वात्सल्य करुं इत्यादिक डोहोला सर्व सिद्धार्थराजा पूरण करे, हर्ष सहित सन्मान करीने पूरा करे पण एवुं न कहे के तुं तो बेठी बेठी फंद करे छे एवी रीते डोहोलानुं अपमान करे नही, एम त्रिशला-देवीने उपजता डोहोलानी इच्छा सर्वथा तेना मनमां रहे नही, रथवाडी प्रमुख वनक्रीडा प्रमुखनां डोहोला तो सर्व सिद्धार्थराजाए पूरण कर्यां परंतु एक दिवसे त्रिशलादेवीने एवो डोहोलो उपन्यो के इंद्राणीनां कुंडल लेंची लइने हुं पहेरुं ते डोहोलो राजाथी पूरण थयो नहीं तेथी मनमां दुमणी (खिन्न) थइ तेवारे सिद्धार्थराजा डोहोलानी हकीगत राणीना मुखथी सांभलीने कहेवा लाग्यो के ए डोहोलो पूरण करीश पण ए वात म्हारा हाथमां नथी एटलामां इंद्र महाराजनुं आसन चलायमान थयुं त्यारे इंद्रे अवधिज्ञानथी जोइने भगवाननी माताने डोहोलो पूरण करवा सारुं इंद्राणी प्रमुख देवांगनाओना समूहने लइने

क्षत्रियकुंड नगरनी समीपे एक महादुर्गम–पर्वत छे त्यां इंद्रपुरनामे नगर वसावीने परिवार सहित आवी रह्यो, सिद्धार्थराजाए सांभल्युं के इंद्र महाराज आपणा पर्वतमां रहे छे त्यारे सिद्धार्थराजाए इंद्र महाराजने कहेवरावी मोकल्युं के अमारी राणीने कुंडल जोइए माटे तमारी इंद्राणीनां कुंडल आपो, ते सांभली इंद्रे कुंडल आप्यां नहीं त्यारे सिद्धार्थराजा सेना लइ इंद्र साथे युद्ध करवा गयो त्यां इंद्रमहाराज तो जीतवाने समर्थ छे तथापि जाणीबूजी हार खाइने भागी गया, पाछलथी सिद्धार्थराजाए पोकार (रुदन) करती अप्सरानां वृंदमां बेठेली इन्द्राणीना कुंडल लूटीने त्रिशलाराणीने आपीने डोहोलो पूरण कर्यो. वली बीजा पण सत्तरभेदी पूजा रचावुं, तीर्थयात्रा करुं, देवगुरुनी भक्ति करुं, सुपात्रे दान आपुं इत्यादिक अनेक डोहोला त्रिशलाने उपन्या ते राजाए पूर्ण कर्या एवी रीते पूरित दोहला–त्रिशलाराणी सूवे, बेसे, ऊभी रहे, सघली ऋतुने विषे सेववा योग्य, गर्भने सुखनां करनार, एवां भोजन, आच्छादन, वस्त्र, गंध, माला प्रमुख लीए, गर्भना हित कारक पथ्ये करी देशकाल योग्य आहार करती थकी, गर्भपोषण करती थकी पोताना परिजन जे दासी सहेलीओ प्रमुख तेमनी साथे विचरती थकी, फरती थकी, पोताना आवासमां सुखपूर्वक रहे छे.

भगवान श्रीमहावीरस्वामीनो जन्म—

ते काल ते समयने विषे श्रमणभगवंत श्रीमहावीर–स्वामी उन्हालानो पहेलो चैत्र महीनो तेनुं बीजुं पखवाडीयुं एटले चैत्रशुदि तेरशने दिवसे नव महीना ऊपर साडा सात दिवस गयां (इहां नवमहीना ने साडा सात दिवस गर्भावासनो अधिकार छे परंतु ओछो अधिको होय तो पण पाठ एवो बोले तो तेनी कांइ हरकत नथी गर्भमां रहेवानो काल तो चोवीश तीर्थंकरनो आ प्रमाणे छेः–श्रीऋषभदेवजी नव महीना ने चार दिवस रह्या, श्रीअजितनाथजी आठ महीना

ने पच्चीश दिवस रह्या, श्रीसंभवनाथ नव महीना ने छ दिवस रह्या, अभिनंदन आठ महीना ने अठ्यावीश दिवस, सुमतीनाथ नव महीना ने छ दिवस, पद्मप्रभ नव महीना ने छ दिवस, सुपार्श्वनाथ नव महीना ने छ दिवस, चंद्रप्रभ नवमहिना ने आठ दिवस, सुविधिनाथ आठ महीना ने छव्वीश दिवस, शीतलनाथ नव महीना ने छ दिवस, श्रेयांसनाथ नव महीना ने छ दिवस, वासुपूज्य आठ महीना ने वीश दिवस, विमलनाथ आठ महीना ने एकवीश दिवस, अनंतनाथ नव महीना ने छ दिवस, धर्मनाथ आठ महीना ने छव्वीश दिवस, शांतिनाथ नव महीना ने छ दिवस, कुंथुनाथ नवमहीना ने पांच दिवस, अरनाथ नव महीना ने आठ दिवस, मल्लीनाथ नव महीना ने सात दिवस, मुनिसुव्रत नव महीना ने आठ दिवस, नेमिनाथ तथा नेमनाथ नव महीना ने आठ दिवस, पार्श्वनाथ नव महीना ने छ दिवस, श्रीमहावीरस्वामी नव महीना ने साडा सात दिवस गर्भमां रह्या ए चोवीश तीर्थंकरनी गर्भस्थिति कही) उच्च राशिना सात ग्रहमां पहेलो चंद्रयोग होते छते, निर्मल दशदिशाओ ते वादला अने धूल रजे करी रहित होते छते, जन्म वेलाए अंधकार रहित, अग्नि दावानल प्रमुख उपद्रव रहित दिशाओ होते छते, एवा वखतमां पक्षीयो सर्व जयकारी शब्द बोली रह्यां छे, प्रदक्षिणावर्त्त सानुकूल शीत मंद मंद सुगंध सहित एवो पवन भूमिमां चाली रह्यो छे, पृथ्वीमां सर्व जातिनां धान्य नीपज्यां छे तेना योगे करी हर्षवंत थया थकां सर्वदेशोना लोक क्रीडा करता थका विचरी रह्यां छे, ते काले मध्य रात्रिना समयमां उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रना त्रीजा पाया साथे चंद्रमानो योग होते छते रोग रहित एवी त्रिशलाराणी रोग रहित अने त्रण ज्ञान सहित एवा पुत्रने प्रसवती हवी.

जन्मकुंडली स्थापना—स्वस्तिश्री ऋद्धिवृद्धिजयोमांगल्याभ्युदयश्च संवत् २६९१ वर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ



भौमवासरे घटी. ५५ पल. ११, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र घटी. ६०, ध्रुवयोग घटी. ४५ पल, ५९, तैतल कर्णं एवं पंचांग शुद्धौ श्री इष्टघटी. ४५ पल, १५, इक्ष्वाकुवंशे श्रीक्षत्रियकुंडपुरनयरे सिद्धार्थनृपगृहे भार्या त्रिशलाक्षत्रियाणी कुक्षौ पुत्ररत्नमजीजनत्, त्रण भुवनना दीपक श्रमण भगवंत श्रीमहावीर जन्म्या तस्य जन्म कुंडली स्थापना.

जैनाचार्य श्रीमद्भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते—
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे चतुर्थ-व्याख्यानं समाप्तम् ।

अथ पञ्चम व्याख्यान-प्रारंभः ।

जे रात्रिमां श्रीमहावीर स्वामी जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता अने देवीयो ते स्वर्गमां जातां आवतां जाणे घणाज आकुल व्याकुल थइ रह्या होय तेनी पेरे जाणवामां नही आवे एवो अव्यक्त (कोलाहल) शब्द थयो एटले जेवारे घणा जनो बोले त्यारे शब्द थाय पण मालम पडे नहीं. जे समयमां श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो त्यारे त्रण जगतमां उद्योत थयो अने साते नरकमां पण उद्योत थयो. वली आकाशमां देवदुन्दुभी वाग्यां, वली नरकना जीवोने पण क्षणमात्र आनंद थयो, केमके भगवंतना अतिशय

१ पहली नरके सूर्यसमान, बीजीमां वादलोथी ढांकेल सूर्य सरखो, त्रीजीमां चन्द्रसमान, चोथीमां वादलाओथी ढांकेला चन्द्रमा सरखो, पांचमीमां ग्रह सरखो, छठीमां नक्षत्र सरखो अने सातमीमां तारा सरखो उद्योत (तेज) थाय छे. एम भगवानना पांचे कल्याणके नरकादि सर्व चौद राजलोकमां उद्योत थाय छे.

थकी नारकी जीवोने पण मुहूर्त्त मात्र शाता उपजे. वली स्थावरजीवोनुं पण विशेष छेदन भेदन न थाय तेथी तेने पण सुख उपजे, जन्मती वेलाए सर्व जमीन उल्लासमाननी परे थइ.

छप्पन दिग्कुमारी अने सुरेन्द्रकृत जन्मोत्सव—

भगवाननो जन्म थवाथी छप्पन्न दिग्कुमारिकाओनां आसन चलायमान थयां त्यारे अवधिज्ञान प्रयुंजी भगवाननो जन्म थयो जाणी, प्रथम भोगंकरा[१], भोगवती[२], सुभोगा[३], भोगमालिनी[४], तोयधरा[५], विचित्रा[६], पुष्पमाला[७] अने आनंदिता[८], ए आठ दिग्कुमारिकाओ अधोलोके गजदंताकार पर्वतनी हेठे वसनारी छे, ते आवीने भगवंतने तथा भगवंतनी माताने नमस्कार करीने, ईशानकोणे एक सूतिका घर बनावे, एक योजन प्रमाण भूमिने संवृतक वायुथी शुद्ध करीने कांटा, कांकरा, दूर करीने सुगंधित करे. त्यार पछी मेघंकरा[९], सुमेघा[१०], मेघवंती[११], मेघमालिनी[१२], सुवत्सा[१३], वत्समित्रा[१४], वारीषेणा[१५] अने बलाहिका[१६], ए आठ दिग्कुमारिकाओ ऊर्ध्व लोके सुमेरु ऊपरना नंदन वनना कूटोने विषे वसनारी छे, त्यांथी आवीने प्रभुने तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करीने ते सूतिका घरने विषे सुगंधित जल सहित फूलनो वरसाद वरसावीने गीत गाती ऊभी रहे. पछी नंदोत्तरा[१७], नंदा[१८], आनंदा[१९], नंदीवर्द्धना[२०], विजया[२१], वैजयंती[२२], जैयंती[२३] अने अपराजिता[२४], ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी पूर्वदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे. ते त्यांथी आवीने भगवान् तथा भगवाननी माताने नमन करीने मुख देखवाने प्रभु आगल दर्पण हाथमां लइने गीत गाती ऊभी रहे. तथा समाहारा[२५], सुप्रदत्ता[२६], सुप्रबुद्धा[२७], यशोधरा[२८], लक्ष्मीवती[२९], शेषवती[३०], चित्रगुप्ता[३१] अने वसुंधरा[३२], ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी दक्षिण दिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे ते त्यांथी आवी जिनने तथा

जिननी माताने नमस्कार करीने सोनाना भृंगार कलश सुगंधित पाणीथी भरी, हाथमां धारण करी भगवाननी माताने स्नान करावे अने प्रभु आगल गीत गान नाटारंभ करे तथा इलादेवी[33], सुरादेवी[34], पृथिवी[35], पद्मावती[36], एकनासा[37], नवमिका[38], भद्रा[39] अने सीता[40], ए आठ रुचकद्वीपनी पश्चिम दिशाना पर्वतने विषे रहेनारी छे ते त्यांथी आवीने प्रभु तथा प्रभुनी माताने नमस्कार करी भगवाननी मातानी आगल पवन करवाने अर्थे वींजणा हाथमां लइ ऊभी रहे, तथा अलम्बुशा[41], मितकेशी[42], पुंडरीका[43], वारुणी[44], हासा[45], सर्वप्रभा[46], श्री[47] अने ह्री[48], ए आठ दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी उत्तरदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे ते आवी भगवंत तथा भगवंतनी माताने नमन करीने भगवंतनी बे बाजुए चार चार ऊभी रही, चामर हाथमां लइने प्रभुना ऊपर ढोले. तथा चित्रा[49], चित्रकनका[50], तारा[51] अने सौदामिनी[52] ए चार दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी विदिशाना पर्वतने विषे वसनारी छे, ते आवीने भगवंत तथा भगवंतनी माताने वांदीने हाथमां दीवा ग्रहण करीने ऊभी रहे. तथा रूपा[53], रूपासिका[54], सुरूपा[55] अने रूपकावती[56], ए चार दिग्कुमारिकाओ रुचकद्वीपनी विदिशिमां वसे छे ते आवीने भगवंत तथा भगवंतनी माताने नमन करीने भगवंतनुं चार अंगुल प्रमाण वर्जीने नाल कापे, पछी भूमिमांहे खाडो खोदीने डाटे, तेना ऊपर वैडूर्य रत्ननो चोखंडो चोतरो करे, तेनी ऊपर दर्भ वावे पछी सूतिका गृह थकी वेगलां एक पूर्वदिशे, एक दक्षिणदिशे अने एक उत्तर दिशे, एम त्रण ठेकाणे त्रण केलीनां घर बनावे, अने तेमां सिंहासन रचे, पछी दक्षिण दिशाना केलीगृह मध्ये भगवंत तथा भगवंतनी माताने लावीने सिंहासन ऊपर बेसाडीने तेमने सुख उपजे एवुं सुगंधी तेलोनुं मर्दन करे. पछी पूर्वदिशिना केलीगृहमां लइ जइ सिंहासन ऊपर बेसाडी स्नान करावे, चंदन लेपन करे. पछी उत्तर दिशाना कदली

गृहमां सिंहासन ऊपर बेसाडी अरणीकाष्ठथी घसीने अग्नि जगाडी, चंदनना काष्ठथी शांति पुष्टिकारी होम करी, ते होमनी रक्षा पोटली भगवंत तथा भगवंतनी माताना हाथमां बांधे, बांधीने 'हे भगवान् ! पर्वतायुर्भव' एवी आशीष आपीने बे मणिमय गोला उछाले पछी ते भगवानने रमवा सारुं पल्यंक ऊपर बांधीने गीत गान करी भगवंत तथा भगवंतनी माताने जन्मस्थानके मूकी पाछी पोत पोताने स्थानके गई. ए एकेकी दिग्कुमारिकाने चार चार महत्तरादेवी छे, चार हजार सामानिक देवो छे, सोल हजार अंगरक्षक देवो छे, सात अनीकाधिपति छे, तथा बीजा पण घणा देवदेवियोना परिवारथी एक योजनना विमानमां बेशीने प्रभुनो जन्ममहोत्सव करवाने जेम आवे, तेम महोत्सव करीने पोताने स्थानके पाछी जाय छे. ए देवी भवनपति मांहेली एक पल्योपमायुवाली जाणवी. ए देवीयोनो एज आचार छे के तीर्थंकरनो जन्म थयाथी प्रथम एमनुं आसन चलायमान थाय, त्यारे प्रभुनो पहेलो जन्ममहोत्सव ए देवीयो करे, पछी बीजा इन्द्रादिक देवो करे.

इन्द्रकृत जन्मोत्सव कहे छे—

दिग्कुमारिकाओनो महोत्सव थया पछी, चोसठ इन्द्रोना आसन चलायमान थाय त्यारे श्रीमहावीर भगवाननो जन्म थयो एवुं अवधि ज्ञानथी जाणीने प्रथम सौधर्मेन्द्र, हरणैगमेषी-देवताने बोलावी बार योजन पोहोली अने छ योजन ऊंची तथा एक योजन (मतान्तरे चार योजन) नालवाली एवी 'सुघोषा' नामे घंटा वजाववानो हुकुम आपे, ते पांचसो देवोनी साथे सुघोषा घंटा वजावे. ते घंटाना शब्दथी सौधर्म देवलोकनां बत्रीश लाख विमाननी सर्वे घंटा आपोआप वाजवा लागे त्यारे सर्वे देवता सावधान थइ जाय. तेमज शंखनो नाद सांभलीने भवनपति-देवो, पटहनो नाद सांभलीने व्यन्तरदेवो अने

सीयनादनो नाद सांभलीने ज्योतिष्कदेवो सावधान थइ जाय छे, कहेल छे के—

सुणिऊण संखसद्दं, मिलंति भवणा य विंतर पडहं।
जोइसियं सीयनायं, घंटेण विमाणिया देवा ॥ १ ॥

त्यार पछी ईशानेन्द्र लघु पराक्रम नामा देवता पासे सुघोषा घंटा वजडावे, एम बाकीना इन्द्रो सहु पोतपोताना देवोनी पासे घंटा वजडावे त्यारे सर्व देवो इन्द्र महाराजनुं कांइ कार्य छे एवुं जाणीने इन्द्रमहाराजनी पासे आवी हाजर थाय, पछी सौधर्मेन्द्र पालकनामा देवताए बनावेल लाख योजननुं पालकनामा विमान, तेना मध्यभागमां पूर्वदिशानी स्हामो सिंहासन ऊपर बेसे, तेनी आगल इन्द्रनी आठ अग्रमहिषी, आठ भद्रासन ऊपर बेसे, अने इन्द्रने डाबे पासे चोराशी हजार सामानिक देवो भद्रासनो ऊपर बेसे. जमणे पासे त्रण पर्षदा बेसे—तेमां बार हजार अभ्यंतर पर्षदाना, चौद हजार मध्यम पर्षदाना तथा सोल हजार बाह्य पर्षदाना मली बेंतालीश हजार देवो भद्रासन ऊपर बेसे, तथा इन्द्रनी पछवाडे सात कटकना देवो भद्रासन ऊपर बेसे, चारे दिशाए चोराशी चोराशी हजार आत्मरक्षक देवता भद्रासनो ऊपर बेसे, एवीज सजावटथी सर्व इन्द्रो पोतपोताना विमानमां बेसी नन्दीश्वर द्वीपे आव्या. तेमां केटलाएक देवो इन्द्रनो हुकुम राखवा सारुं, केटलाएक देवो मित्रना प्रेर्या थका, केटलाएक पोतानी देवीओना प्रेर्या थका, केटलाएक तीर्थंकरनी भक्ति करवा माटे, केटलाएक कौतुक जोवा सारुं, केटलाएक अपूर्व आश्चर्य जोवाने अर्थे आवे. ते देवो पोतपोताना जुदा जुदा वाहन ऊपर चढ्या, आपस आपसमां सिंहना वाहन ऊपर चढेला देवता हस्तिना वाहन ऊपर चढनारा देवोने कहे छे के त्हारो हाथी दूर राख, नहीं तो म्हारो सिंह जबरजस्त छे ते तारा हस्तिने

मारी न्हांखशे. एमज पाडाना वाहन ऊपर चढेला देवता घोडाना वाहन वालाने, गरुड ऊपर असवारी करनार देव सर्प ऊपर असवारी करनाराने अने व्याघ्रना वाहन ऊपर बेठेला देवो छागना वाहन ऊपर बेसनाराने कहे छे. एम वचन विवाद करता कोटान कोटी देवताओ सहु पोत पोताना वाहननी प्रशंसा करता चाले छे, ते वखते देवसमुदायथी आकाश यद्यपि घणुं म्होटुं छे तो पण सांकडुं थइ गयुं, वली मार्गमां कोइ एक देवता मित्रने छोडी आगल चाल्या. जाय त्यारे तेनो मित्र कहे के अरे! थोडी वार ऊभा रहो? हुं पण आवुं छुं. त्यारे ते देवता कहे प्रथम भगवानने वांदवानो म्होटो लाभ कोण चूके? एवुं कहीने चाल्यो जाय. एवी रीते जे जबरजस्त होय ते आगल निकली जाय अने कोइ एक नबला होय ते पडता थका बोले के भाई! आ मार्ग घणो सांकडो छे त्यारे बीजो कहे के चूप रहो. 'पर्वना दिवस सांकडा ज होय छे' कोइ कहे घणुं नहीं बोल खबर पडशे तो इन्द्र मारशे. एवी रीते आकाशथी नीचे उतरतां थकां ज्यारे ज्योतिषीना तारा पासे आव्या त्यारे ताराओना किरणो लागवाथी कवि उत्प्रेक्षा करे छे के—जो पण देवता सर्व निर्जर छे तो पण जरा सहित थया, मस्तकमां जाणे धोला केश उग्या के शुं? एवा देवताना मस्तके ताराना विमान शोभे ते जाणे रूपानो घडोज होय नहिं?, वली शरीरे तारा लाग्या तेना योगे परसेवाना बिंदु सरखा दीसवा लाग्या. एवी रीते सर्व इन्द्र अने देवो नंदीश्वरद्वीपमां पोत पोताना विमान संकोचीने आव्या.

हवे सौधर्मेन्द्र भगवानना जन्मघरने विषे आवीने, भगवान तथा भगवाननी माताने नमस्कार करीने, त्रण प्रदक्षिणा आपी भगवाननी माताने कहे के—हे रत्नकुक्षिधारिणी! हे रत्नगर्भे! हे रत्नदीपक! हे माता! पहेला देवलोकनो हुं इन्द्र छुं. त्हारो पुत्र चोवीशमो तीर्थंकर छे

तेनो जन्ममहोत्सव करवा सारुं आव्यो छुं माटे तमे लगार मात्र पण डरशो नहीं एम कही " नमोऽस्तु रत्नकुक्षिधारिके तुभ्यम् " बोलीने, भगवंतनी माताने अवस्वापिनी निद्रा आपीने, अने बीजुं भगवान जेवुंज स्वरूप करी मातानी पासे राखीने, इन्द्रे पोतानां पांच रूप बनाव्यां. तेमां एक रूपथी बे हाथे करसंपुटमां भगवानने उपाड्या अने एक रूपथी भगवंतना ऊपर छत्र धर्युं अने बे रूपथी बे पासवाडे चामर ढोलवा लाग्यो अने एक रूपथी वज्र उछालतो भगवाननी आगल चाल्यो, एम बधां मली पांच रूप इन्द्र महाराजे वैक्रिय कर्यां, तेमां आगलो पाछला रूपने वखाणे अने पाछलो आगला रूपने वखाणे, एम पांच रूपथी इन्द्रमहाराज मेरुपर्वत ऊपर ज्यां पांडुक वन छे, त्यां भगवंतने लइ आवीने, मेरुनी चूलिकाथी दक्षिण दिशाए अतिपांडु कमला शिलाने तले शाश्वतुं सिंहासन छे, तेनी ऊपर भगवानने उत्संगमां लइने इन्द्रमहाराज पूर्व सन्मुख बेठा, त्यारे त्यां बार देवलोकना दस इन्द्र, भवनपतिना वीश इन्द्र, व्यंतरना बत्रीश इन्द्र, अने चन्द्रमा तथा सूर्य, ए बे ज्योतिषीना इन्द्र, एम सर्व मली चोसठ इन्द्र सपरिवार प्रभुने स्नात्र करावंवा माटे भेगा थया. पछी सर्वे इन्द्रोए पोत पोताना सेवक देवताओ पासे तीर्थोदकपूर्ण आठ जातना कलश मंगाव्या, तेमां सोनामय १, रूपामय २, रत्नमय ३, सुवर्णरोप्यमय ४, सुवर्णरत्नमय ५, रत्नरौप्यमय ६, सुवर्णरौप्यरत्नमय ७, अने मृत्तिकामय ८, ए आठ जातिना प्रत्येके एक हजार ने आठ कलश जाणवा. सर्वे मलीने आठ हजार चोसठ कलश थया. इन्द्र चतुर्वृषभनो रूप करी, पोताना आठ सींगडाओथी अभिषेक करे छे अने दरेक शृंगमां आठ हजार चोसठ कलशानो जल होय छे माटे तेने आठथी गुणा करतां चोसठ हजार पांचसो बार (६४५१२) कलशा थाय.

भवनपतिना इन्द्रना २०, व्यन्तरेन्द्रना ३२, वैमानिकेन्द्रना १०, अढी द्वीपना सर्वे सूर्य-चंद्रना १३२; धरणेन्द्र-भूतानेन्द्रनी इन्द्राणि-

योना १२, चमरेन्द्रनी इन्द्राणियोना १०, ज्योतिष्केन्द्राणियोना ४, सौधर्मेन्द्रनी इन्द्राणियोना ८, ईशानेन्द्रनी इन्द्राणियोना ८ अने व्यन्तरेन्द्रनी इन्द्राणियोना ४ तथा सामानिक देवोनो एक, त्रायस्त्रिंशकदेवोनो एक, लोकपाल देवोना चार, अंगरक्षक देवोनो एक, पारिषद्देवोनो एक, प्रजाना देवोनो एक अने सात कटकना देवोनो एक, एम सर्व मली बसौ ने पच्चास (२५०) अभिषेक थाय छे, तेमां एकेक अभिषेके चोसठ हजार पांचसो बार कलशा होय छे. माटे तेने अढीसो गुणा करतां, एक क्रोड, एकसठ लाख अने अठावीस हजार कलशा थया. ए एकेका जातिना दरेक कलश, पच्चीस पच्चीस योजन ऊंचा, बार योजन पोहोला अने एक योजननां नाल वाला जाणवा, तेमज भृंगार, दर्पण, रत्नकरंडीआ, थाल, पात्रिका, पुष्प-चंगेरी; इत्यादिक पूजाना उपकरण प्रत्येके एक हजार ने आठ जाणवां तथा देवता मागधादिक तीर्थोनां जल, गंगा प्रमुख नदीओनां जल, तथा पद्म द्रहनां जलथी कलशा भरी लाव्या, अने चुल्लहिमवंत, वर्षधर, वैताढ्य, विजय वक्षस्कार, देवकुरु, उत्तरकुरु, भद्रशाल अने नंदनवन प्रमुखना सर्व फल, प्रधान गंध, सर्व औषधि, प्रमुख अभिषेक वस्तु पण लई आव्या. पछी सर्व देवताओ पोताना हाथमां कलश लई आगल ऊभा रह्या. ते केवा शोभे छे के-जाणे संसार समुद्रने तरवाने अर्थे कुंभ धर्यो होय नहीं ? तथा भाववृक्षने सींचे छे ? किंवा पोतानां पापरूप मलने धुवे छे ?, अथवा धर्मरूप प्रासाद ऊपर कलश चढावे छे के शुं ? हवे सर्व देवताओ विचार करे छे के इन्द्रमहाराज आज्ञा आपे तो कलशोथी अभिषेक करिए. एज अवसरमां, इन्द्र महाराजना मनमां एवो सङ्कल्प (संशय) उत्पन्न थयो के ' आ न्हाना बालक श्रीवीर भग-

---

१ कल्पसुबोधिका वगेरे केटलाक ग्रन्थोमां दरेक जातना एक एक हजार कलश कहेलां छे ते हिसाबे आठ जातना आठ हजार कलश थया तेने आठे गुणा करतां ६४००० थाय, तेने २५० अभिषेक साथे गुणा करतां एक क्रोड साठ लाख कलश थाय छे.

वान्, एटला कलशोनी जलधाराथी म्हारा खोलामांथी क्यांय वही जशे ? एवडा जलाभिषेकने केम सहन करी शकशे ? ' एवुं जाणी इन्द्रे अभिषेकनो आदेश न आप्यो, त्यारे भगवंत अवधिज्ञानना बलथी इन्द्रनुं शंकित मन जाणीने अरिहंतपणानुं अतुल बल जणाववा निमित्ते खोलामां बेठा थकांज बालरूपे डावा पगना अंगुष्ठथी सिंहासन फरश्यो, (दबाव्यो) त्यारे शिला कंपायमान थइ. तेना कंपवाथी मेरुचूलिका कंपायमान थइ, त्यारे लाख योजननो मेरु कंप्यो, तेना कंपवाथी सर्व पृथ्वी कंपी, सकल धरती थरहरवा लागी, पर्वतनां शिखर त्रूटवा लाग्यां, समुद्रजल क्षोभ पाम्यो (चलाऽचल थयो) ब्रह्मांड फाटवा सरखो शब्द थयो, सर्व देवो भय पाम्या, देवांगनाओ भयना लीधे देवोना गला साथे वलगी, त्यारे क्रोधथी धमधमायमान इन्द्र कहे छे के अरे ! आ हर्षना ठेकाणे आवो उत्पात विषाद कोणे कर्यो ? वली प्रभुना जन्म महोत्सवमां एवो विघ्न करवावालो आ कोण दुष्ट छे ? एम विचारी हाथमां वज्र लइने अवधिज्ञान प्रयुंजीने जोयुं तो प्रभुनी शक्ति जाणी के ए तो भगवाने पोतेज सर्व कर्युं छे. म्हें अज्ञानथी तीर्थंकरनुं बल नहीं जाण्युं, एवुं जाणीने इन्द्र पगे लागी, अने खमावीने स्तुति करवा लाग्यो के—

भुजंगप्रयातछन्दसि—

" सुणो वीर्य बोलुं विशालो विबुधो, नरें बार योधे मली एक गोधो ।
दशे गोधले लेखवो एक घोडो, तुरंगेण बारे मली एक पाडो ॥१॥
दशे पंच महिषो मदोन्मत्त नागो, गजे पांचसौ केसरी वीर्य तागो ।
हरि वीशसौ वीर्य अष्टापदेको, दश लक्ष अष्टापदे राम एको ॥२॥
भला रामयुग्मे समो वासुदेवो, द्वितीय वासुदेवे गणी चक्रि लेवो ।
भला लक्ष चक्री समो नाग शूरो, वली कोडि नागाधिपे इन्द्र पूरो ३
अनंते सुइन्द्रे मली वीर्य जेतुं, टची अंगुली वीरने वीर्य तेतुं ।
नमो वीर अर्हन् ! सदा भूत भव्य, भविष्यत्सुरेन्द्रातिवीर्यातिसव्य ४ "

मेरुपर्वते विचार्युं के अनंता तीर्थंकरना जन्माभिषेक म्हारा ऊपर

थया, परंतु मुजने कोणे पगे फरश्यो न हतो, ते हमणां श्रीवीरप्रभुये फरश्यो, तथा हुं पण धन्य छुं. एम समजीने जाणे हर्षथी नाच्यो थको चिंतवे छे के हुं सर्व पर्वतनो राजा ते खरे खरो छुं. वली पांच मेरुमां पण हुं म्होटो अग्रेसर ते पण खरे खरो छुं. हवे शक्रेंद्रना आदेशथी प्रथम बारमां देवलोकनो अच्युतेंद्र अभिषेक करे, ते पछी अनुक्रमे उतरता उतरता इंद्रादिको अभिषेक करे. छेल्ला चंद्र सूर्य अभिषेक करे एम सर्व अढीसो अभिषेक थाय पछी ईशानेंद्र, भगवानने खोळामां लेइने बेसे अने सौधर्मेंद्र चार धवल वृषभना रूप विकुर्व्वीने तेना आठ सींगडांए करी खीर समुद्रना पाणीनी धाराथी अभिषेक करे. एवा विधिथी सर्व देवो पोतपोतानी भक्ति करी स्नात्र करावे. पछी भगवंतनुं शरीर गंधकाषाय्य वस्त्रथी पोंछीने फूल, बावना चंदननो विलेपन, अक्षत ढोकन, दीप, फल, धूप, पाणी, नैवेद्य ए आठ प्रकारनी पूजा करीने भगवानमी आगल श्रीवत्स, मत्स्ययुग्म, दर्प्पण, पूरण कलश, स्वस्तिक नंद्यावर्त्त, भद्रासन, सरावसंपुट ए आठ मंगल रूपानां अक्षतोथी आलेखे, पछी आरति करे, गीत गावे, नृत्य करे, अने वाजित्र वजावे, पछी अपूर्व एकसो आठ काव्यनी रचना करी स्तुतिरूप भावपूजा करे, ते करीने पछी भगवानने भगवाननी माता पासे पाछा मूके, अवस्वापिनी निद्रा दूर करे, वली भगवाननो प्रतिबिंब प्रथम थापन करेलो हतो ते पण दूर करीने रत्नजटित कुंडल युगल तथा देवदुष्य युगल, त्रिशलामाताने आपीने सुवर्णजटित दडो भगवानने रमत करवाने अर्थे मूकीने तथा बार क्रोड सोनैयानी वृष्टि करीने, कोइ कोइ प्रतिना लख्या प्रमाणे ऊपर रत्नजटित चंद्रुओ बांधी, रत्नजटित बे कुंडल तथा श्रीदाम (रत्नजटित सुवर्णनो दडो) ए सर्व ओशीसे मूकी बत्रीश क्रोड सोनैयानी वृष्टि करी पछी सौधर्मेंद्र सर्व देवोमां एवो हाको करीने कहे के भो भो देवो ! हुं कहुं छुं ते तमे सांभली लेजो के जे कोइ देव

अथवा असुर—दानव, भगवान् ऊपर तथा भगवाननी माता ऊपर माठी चिंतवणा करशे तेनो मस्तक अर्जुनवृक्षनी मांजरनी पेरे आ वज्रथी छेदी नाखीश. ए प्रमाणे कहीने भगवानना अंगूठामां अमृत संचार करी सर्व इंद्र नंदीश्वरद्वीपमां आवी अट्ठाइमहोत्सव करीने पछी पोत पोताने स्थानके जाय. त्यां पण अट्ठाइ महोत्सव करे.

सिद्धार्थराजाना भवनमां वसुधारादि वृष्टि—

जे रात्रिमां श्रमणभगवंत श्रीमहावीर स्वामीनो जन्म थयो ते रात्रिमां घणा वैश्रमण देवना आज्ञाधारक तिर्यक्जृंभक देवताओए, सिद्धार्थराजाना महेलने विषे रूपानी वृष्टि करी, सोनानी वृष्टि करी, वज्र—हीरानी वृष्टि करी, वस्त्रनी वृष्टि करी, आभूषणनी वृष्टि करी, नागरवेलना पत्र, फल, फूल तथा शालि प्रमुख बीजनी वृष्टि करी, माला, गंध, वास, सुगंधि—चूर्ण तथा हिंगलु प्रमुख रंग अने सोनाम्होरोनी वृष्टि करी, ते अगणित वृष्टि करी, कोइक ठेकाणे एवुं लखेलुं छे के—पन्नर मास पर्यंत त्रण क्रोड रत्न वरसाव्या अने मुकुट, कुंडल, हार, अर्द्धहार, बाजुबंध, बेरखा, त्रिसरा, चोसरा, छसरा, सातसरा, आठसरा, नवसरा, अढारसरा, एकावली, कनकावली, टकावली, रत्नावली, मुकुटावली, चंद्रावली, हीरावली, प्रवाली नक्षत्रावली, श्रोणिसूत्र, कटीसूत्र, रसना, खूंप, पट्टशिखर, चूडामणि, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रानंदक, दशमुद्रक, मुद्रिका, अंगुलीयक, कर्दंबक, पुष्पक, तिलभंगक, कर्णपीठिक, चत्रक, अजर, मेखला, मुंदक, पदक, पडकडि, सांकलुं, सांकली, विशिष्ट—मौक्तिकभंग, उतरी, दोरा, हांसडी, कर्णपाल, संकपाल, गेयथक, हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, रत्नजाली, गोपुच्छक, उरस्तका, मर्मक, वर्ण, वरिका, हांस, झांझर, नेपुर, घूघरा, पागडां, वींछीआ, अंगूथली, बालाजाली, झूमणा, अंकोटा, रूपालहेरिआ, राखडी, गोफणो, फूली, सीथो, त्रसंटीओ,

ओटी, बोरडां, कडी, वेढला, मुरकी, मोती, नरगंठोडा, नागफणां, तुंगल, चंपकली, पानडी, दुलरा, वाली, मोतीसर, तांति, गांठिआ, बरघली, पोंची, गलसिरि, टीली, चांदला, आडी, नवग्रह, मुद्रडी, अंगूठी, वेढ, वींटि, वांकडा, छाप, करजालुं, मादलिआं; कंदोरो, खेल-मादलियां, पाटीआलो कंदोरो, लटकण, मउड, नागफूली, नाग नागलां, मोर, वैसण, नथ, कांटो, मयोदय, आंजण, ओगानियां, हिंगलो, कुंकुम, एला, जवला, चूडी, चूडली, थर, कंकण, कारेली, लालि, पंच-मेखला, हाथसांकली, सोनानां लहेरिआं, तावीत, कडलां, सालिआलुं; कलाडी, अणवट्ट, लोलिआं, कुंची; पाईल, सात ग्रैवेयक, नव ग्रैवेयक, पलवींटी, मकोडांखली, जेदेह; इत्यादिक अनेक जातनां आभरणोनी पुष्टि करी.

पुत्रनी वधाई अने बन्दीमोचनादि—

पुत्र जन्म थया पछी प्रियंवदा नामनी दासीए सिद्धार्थराजाने पुत्रजन्मनी वधाई आपी, ते सांभली सिद्धार्थराजाए रोमेरोम हर्षवंत थइने, एक मुकुट विना पोताना अंग ऊपर पहेरेला सर्वे आभूषण दासीने आपी दीधां अने तेनुं माथुं धोवरावीने दासीपणुं दूर कर्युं. सात पीढी सुधी खातां खरचतां न खूटे तेटलुं पुष्कल धन दासीने आप्युं. पछी प्रभात समये सिद्धार्थराजाए नगरनां रखवालाने बोलावीने आज्ञा आपी के देवानुप्पिया! तमे उतावला क्षत्रियकुंडनगरमां बंदि-वानोने छूटा करी मूको अने तोल–मापां वधारो तथा क्षत्रियकुंडनग-रनी मांहेली कोरे अने बाहेर कचरो कांटो काहाडी साफ करावो, लींपावो; तेनी ऊपर सुगंधी जलनो छंटकाव करावो, त्रिखूणामार्ग–त्रणमार्ग, त्रवाटा, चोवटा तथा ज्यां घणा मार्ग भेला होय ते चच्चर (चतुर्मु-खमार्ग) अने राजमार्ग ए सर्वे रस्ताने पवित्र करावो, कचरा कांटा काहा-डीने साफ करावीने रस्ताने बरोबर करो, तथा जेनी ऊपर बेसीने

सुखथी सर्व लोको महोत्सव जोइ शके एवा म्होटा मांचा ऊपर मांचा बंधावो, अनेक प्रकारना रंगनी ध्वजा पताकाओ करावी स्थानके स्थानके बंधावीने नगर शोभायमान करो, शहेरना मार्गोने लींपावो, धोवरावो, वली गोशीर्षचन्दन, रक्तचन्दनना पांच आंगुलीआ छापा देवरावो, घरमां चंदनना कलश थापन करावो, चंदनकलशघटित तोरणोने घरोना बारणे बंधावो, लांबी म्होटी अने गोल तथा लटकती एवी पुष्पमालाओनो समूह लटकावो, पांचवर्णा फूलोना ढगला करावो, कृष्णागर, कुंदरु, शिलारस, धूप घमघमायमान उखेवो अने मनोहरगंध सुगंधगंधित अगरबती उखेवो, मनोहर गंध करो, वली नाटक करवा वाला जे पोते नाटक करे ते, रसी ऊपर नाचे ते, मल्लयुद्ध करनारा, मुठीयोथी युद्ध करनारा, भांड भवाइया, कथाना करवा वाला, रास बोलवा वाला, ऊंट अने हाथी ऊपरथी कूदी जाय तेने प्लवक कहे छे ते, राजानी वंशावलीनां बोलनारा, सवैया–कवित कहेनारा, कोटवाला, शुभाशुभ निमित्तना कहेवा वाला, वांसनी ऊपर नाचनारा, चित्रामणना पाटीया देखाडनारा, जेने मंख कहे छे ते, तथा चामडानी मसकने वायराथी भरीने वजावे तेने तूणयल्ला कहे छे ते, तुंबिनी वीण बजावनारा, हाथ ताल देइने नाचनारा, अने अनेक तालना बजावनारा, ए सर्वेने बोलावीने ठेकाणे ठेकाणे बेसाडी आपो. ए सहु पोतपोतानी कलाओ लोकोने देखाडे ए काम तमे करो तथा बीजा पासे करावो. वली हजारो गमे धूंसरा एटले विवाहना मंडपमां घाले छे ते, तथा हजारो गमे मूसल ऊंचा करावीने म्हारी आज्ञा मने पाछी सोंपो. त्यारे ते कौटुंबिक पुरुष घणा खुशी थइने राजाना हुकुम प्रमाणे सर्व काम करीने राजानी आज्ञा राजाने पाछी सोंपी. त्यार पछी सिद्धार्थ राजा मल्लयुद्धनी शालामां आवी, युद्ध करी, तेल मसलावी, स्नान करीने सर्व वस्त्र घरेणां माला प्रमुख पहेरीने म्होटा तेज सहित, म्होटा बल सहित,

सर्वे वाजा वाजतां थकां, म्होटी ऋद्धि म्होटी कांति, म्होटी सेना, घणां वाहन, घणो समुदाय, म्होटां म्होटां वाजित्र ते सर्वे भेला समकाले साथे वजाड्यां, तेथकी शंख, पडह (ढोल), भेरी, जल्लर, खरमुखी (कालही), रणसिंगो कोइ वाजानुं नाम छे, मांदलनी जात, मृदंग, देववाजुं (दुंदुभी) ए नव जातनां वाजानां शब्द प्रतिशब्द तेणे करी सिद्धार्थराजा हर्ष करतो रहे, वली क्षत्रियकुंड गाम नगरमां दश दिवस सुधी दाण कोइनी पासेथी लेवुं नहीं, गायो ढोर प्रमुखनुं जे कर लागे ते दश दिवस पर्यंत न लेवो, खेत्र प्रमुखनुं जे कर लागे ते दश दिवस सुधी नहीं लेवो. दश दिवस सुधी कोइ हाटमां मूल्यलइने वस्तु वेचे नहीं, जेने जे वस्तु जोइती होय ते दुकानदारो पासेथी मफत लइ जाय तेना पैसा राजाना भंडारमांथी देवाय, दश दिवस सुधी कोइ चीज मापवी नहीं वगर मापे आपवी, दश दिवस लगे कोइ राजानो माणस जोर करीने जोरावरीथी कोइना घरमां प्रवेश करी कोइ चीज वस्तु लीए नहीं, कोइए अपराध कर्यो होय तेनी पासेथी गुनाह प्रमाणे दंड लेवो जोइए ते दंड दश दिवस सुधी लेवो नहीं. कोइए अपराध अल्प कर्यो होय अने दंड वधारे लेवो तेने कुदंड कहीए ते कुदंड दश दिवस पर्यंत लेवो नहीं, अने दश दिवस सुधी कोइ उधारे लइने ऋण करे नहीं, एटला वाना सिद्धार्थराजाए मूक्या (बक्षीस कर्या) वली अत्यंत स्वरूपवान् एवी वेश्याओना नाटक थाते, तथा अनेक ताल वाजा सहित नाटक थाते, पछी उत्कृष्ट मृदंग बजाववा सारुं सज्ज कर्या छे मृदंग ज्यां, कुंमलाणी नथी एवी विस्तार सहित फूल मालाओनो समूह छे ज्यां, हर्षवान थया थका ते देशना सर्व लोक क्रीडा करे छे. ए प्रमाणे दश दिवस पर्यंत स्थितिपतिका एटले पोताना कुल परंपरानी मर्यादा पुत्रजन्मनी ते सिद्धार्थराजा क्षत्रियकुंड नगरमां करे. पछी सिद्धार्थराजा दशदिवसनी कुल मर्यादामां जिनपू-

जामां सो सोनैया लागे तथा हजार सोनैया लागे तथा लक्ष सोनैया लागे एवुं जे पूजन तेना निमित्ते द्रव्य राखे एटले पछी पूजा करावीशुं एवो अभिप्राय करीने पूर्वोक्त द्रव्य कहाडे, वली आठम, चौदशना दिवसे पोसह करनारा श्रावकोनी भक्ति करवा निमित्ते द्रव्य राखे ते एवा अभिप्रायथी के जाणे पोसह करवावालाने पारणे स्वामिवात्सल्यना काममां आवशे, वली बीजुं पण देवायोग्य द्रव्य धर्मने अर्थे कल्प्युं एवुं द्रव्य पोते सिद्धार्थराजा देतो थको, बींजाओनी पासेथी देवरावतो थको विचरे. वली पूर्वोक्त रीते सौ, हजार अने लाख सोनैया प्रमाणे वधामणाने अर्थे भेट लोको लइ आवे छे ते लेतो थको, बीजा पासे लेवरावतो थको दश दिवस सुधी कुलमर्यादा करे.

बालकने चन्द्र सूर्यना दर्शन कराववानी विधि—

श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीना माता पिता भगवानना जन्मदिवसथी पहेला दिवसे तो कुलस्थिति करे अने त्रीजे दिवसे चंद्रमा तथा सूर्यना दर्शन करावे. हमणां आजना कालमां तो त्रीजे दिवसे कॉंच देखाडे छे. परंतु मूल विधि आवो छे के–गृहस्थगुरु आवीने श्री अरिहंतनी प्रतिमा आगल स्फाटिक अथवा रूपानी चंद्रमूर्त्ति करावे ते प्रतिष्ठावी, पूजीने मांडे. पछी बालक तथा बालकनी माताने स्नान करावी भला वस्त्र पहेरावी चंद्रोदयनी वेलाए पुत्रने हाथमां लइने माता सहित पुत्रने बेसाडी प्रत्यक्ष चंद्रमा स्हामे आणी, आवी रीते मंत्र भणे छे– "ॐ अर्हं चन्द्रोऽसि निशाकरोऽसि नक्षत्रपतिरसि सुधाकरोऽसि औषधिगर्भोऽसि अस्य कुलस्य ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु" एवा मंत्रनो गुरु उच्चार करे, माता पुत्रने चंद्रमा देखाडी नमाडे वली पुत्रने लइ गुरुने पगे लगाडे, त्यारे गुरु आशिर्वाद आपे ते आवी रीतेः–

सर्वौषधिमिश्रमरीचिराजी, सर्वापदां संहरणे प्रवीणः ।
करोतु वृद्धिं सकलेऽपि वंशे, युष्माकमिन्दुः सततं प्रसन्नः ॥ १ ॥

त्यार पछी चंद्रमानी स्थापेली मूर्त्तिने विसर्ज्जन करे. कदाचित् कालि चौदश, अमावास्या होय अथवा वादला होय तेथी चंद्रमा न देखाय तो तेज रात्रिए तेज चंद्रमानी मूर्त्ति आगल तो जरुर करे. पछी ते दिवसे प्रभाते सूर्य उदयनी वेलाए सोनानी अथवा त्रांवानी सूर्यमूर्त्ति करीने पूर्वनी पेरे स्थापन करी ते मूर्त्तिनी आगल पुत्र सहित माताने बेसाडी गृहस्थ गुरु आवी रीते मंत्र बोले " ॐ अर्हं सूर्योऽसि, दिनकरोऽसि, तमोपहोऽसि, सहस्रकिरणोऽसि, जगच्चक्षुरसि, प्रसीदास्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं मोदं कुरु कुरु " ए सूर्यमंत्र उच्चारीने माता सहित पुत्रने सूर्यनुं दर्शन करावे. पछी माता पुत्रने लइ गुरुने पगे लगाडे त्यारे आशीर्वाद आपे के-

सर्वसुरासुरवंद्यः, कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम् ।
भूयात्रिजगच्चक्षुः, मङ्गलदस्ते सपुत्राय ॥ १ ॥

पछी थापन करेली सूर्यमूर्त्तिने विसर्ज्जन करे. वली छट्ठे दिवसे धर्म जागरण करे, अगीआरमां दिवसे अशुचिकर्म निवर्त्तन करे, माटीना जूना भाजन कहाडी न्हांखे, नवा वस्त्र पहेरे, बारमो दिवस आव्या थकां अशन ते अन्न विगय प्रमुख, तथा पान ते मीठा पाणी प्रमुख, तथा खादिम ते खारेक टोपरा प्रमुख, तथा स्वादिम ते लविंग पान प्रमुख, ए चार प्रकारनो आहार रंधावे, रंधावीने सिद्धार्थराजा पोताना मित्रोने, न्यातिने एटले पोताना जातिवालाने, पोताना पुत्र-पौत्रादिकोने, काकाने, ससरा प्रमुखने, पोताना दास दासीओने, वली पोतानाज गोत्र-वालाओने, वली क्षत्रियोने तथा गामना क्षत्रियोने, एवा बीजा पण म्होटा लोकोने निमंत्रण करे अर्थात् नोतरा आपे. पछी भगवानने तथा त्रिशलाजीने स्नान करावे, घरे देवपूजा करावीने पछी विघ्न निवारवाने अर्थे कौतुकथी काजलना टीलां टबकां करे, मांगलिकने अर्थे सरसव, दही, दर्भ, चावलनुं तिलक मस्तके धारण करे, नवा वस्त्र पहेरे, वली

जेमां भार अल्प अने मूल्य घणुं एवां घणा मूल्यनां घरेणा पहेरे, पहेरीने भोजननी वेलाए भोजन मंडपमां सुखे बेसे. वली पूर्वे नोतरेला मित्रादिकोने अशन, पान, खादिम, स्वादिमादिक चार प्रकारनां आहार जमाडे. हवे तेमां केटलाएक आहार स्वाद करवा योग्य तेना स्वाद करतां थकां अशनादिक मोदक प्रमुख सर्व चीज खवाइ जाय तथा केटलीएक सेलडी प्रमुख चीज थोडी खाय अने घणी न्हांखी देवाय वली केटलीएक खजूर प्रमुख चीज घणी खाय अने थोडी न्हांखी दीए एवी रीते चारे प्रकारनो आहार साधर्मिकादिकोने सिद्धार्थराजा जमाडता थका विचरे.

भोजननो विधि कहे छे—

केलिपत्रे छायेला मांडवा नीचे मध्यान्ह वेलाए कुंकुमछांटित मंडपमां सर्वने बेसाड्या, मखमलनां पांतिया नाख्यां, ते ऊपर सर्व पवित्र थइने आवी बेठा, तेना पेट पाताले पेठा, आगल स्वर्णरत्नजटित बाजोट मेल्या, तिण ऊपर सोनाना थाल, जमवावाला थया उजमाल; कन्हे मेली कटोरियां, निर्मल जलसे धोवे, मांहे मुखडा जोवे, ते केवा छे ? तो के–फांदाला, फुंदाला, दुंदाला, सुंहाला, आंखे अणिआला, मुछाला केइ जमाइ केइ साला, इसी पांति बेठी, त्यां पीरसणवाली पेठी, ते घणी रूपाली, भला वस्त्र पहेर्यां, शोले सणगार कर्यां, हाथमां म्होटी झारी, युवानोंनी निजरो ठारी; हाथ धोवाया, मनमें काम जुराया; पहेलां ते फल पिरसे, देख्यासे मन विकसे, ते कहेवा फल पिरस्यां तेनां नाम कहे छे–अखोड, मिसरीकीपात, चोपडी चारोली, केला, रायण, लीलां नालिएर, बदाम, पिस्ता, द्राख, आखा आंबा तथा स्याग दाल पक, सेवां, सेतुत, दाडिम, नारंगी, मीठां लींबु, पाकां किरणां खारेक, खजूर, सेव, जांबु, गुंदा, पेमदीबोर, लीलीद्राख, छोलेली सेलडी, कांगटा, जामफल, रामफल, सीताफल, बीजोरां, इत्यादिक उदार मनथी

पिरस्यां, ढेरकीया खातां हीया हर्ष्यां। किस्याक खावे, के–पिरसवा वाली तेना मुख सामा जोइ मोहमां पच्या खायां जावे, पण पेटफाटे ते नजर न आवे। मालवानी जमीनमां नीपज्या घउं हाथथी मसल्या धोइने दल्या भला वस्त्रथी मेंदो छाण्यो ' तेना पिरस्या खाजा, दांतोमां करे अवाजा; हवे कहुं पकवान, खावा थया सावधान; पिरसण वाळी सुंहाली, मान करे रढीयाली; पहेली पिरसे लाडू, जिमे बेठा जाणे साडू; सिंहकेसरीया मेल्या, मसाला अधिका भेल्या; कंसार मगदरा मोदक, किटिया जसरीया दालिया, इस्या मोदक खावे, बूढो मरद हो जावे; अच्छी पिरसी मुरकी, खाता जीभडी फुरकी; जलेबी मुखमां घाले, रसना गटका चाले; पेडा पेटमां पडिया, मुख मेलंता गुडिया; मखाणा मुखमां घालें, बड बड जाणे बोले, घेवर मुखमां धरिया, खातां घृत बहु झरिया; झीणा तारनी फीणी, आणी सेवां झीणी; दहीथरां दीठा खावे, मनमां हसता जावे; सांकली तिलनी खाधी; सिंघोडा सेवसुं साधी; आवे सांकर सीरो, डोकरा मन थयो धीरो; लापसी आछी आवे, मेवा खीचडी खावे; इम अनेक पकवान, जीमे बेठा राजान; देवसुगंधी साल, खावा थया उजमाल; मगदालने भेली, घी सुगंधी ठेली; खीचडी पतली पोली, थाये इकवीशनी एक कोली; सालणा मुखमां भावे, जीभ फर-फरी थावे; मूंगीया केर रायडोडी, वालोल, करमदा काचा, केलां, चोरानी फली, मगनी फली, नीलाचणा, मिरच, पीपल, सांगरी, काचरी, पावल्या, करेलां, भींडी, तरोइ, वेंगण, मोगरी, काकडी, तडुंबा, तीडुसी इस्या जातना साग, जीरा मिरच समभाग; गरम मसाला पडिया, घृतमांहे पहेला छमकिया; हिंग वघार सुगंधा, खातां तज्या सब धंधा; जीभ फरफरी होवे, कलीकंदने जोवे; भाजी–चिणारी, मेथीरी, चंदलेवारी, पालखारी, सुआरी, थेगरी, खातां जीभ शोभाधरी; मिसरीमां भेल्यो दूध, पीतां न रही सूध; भर्यो पेट बोल्या सहु एम, हवे

खावानो नेम; दही देखीने मुखडे चाल्यो पाणी, जीरावण शुद्ध त्यां आणी; करबो खाधो पूर, राइपडी रायता पूर; मीठा पाणी पीधां, पाप-ढमुख शुद्ध कीधां; शुद्ध पाणीसे चलु करीजे, न मावे पेटमें उत्तर दीजे; वली दीधा पान तंबोल, केशर छांटे रंगरोल; हीरचीर मखमल पटंबर, वस्त्र दीधां ते पहिरे सुंदर; फूलमाला पहेरावे, हर्ष मने बहु लावे; आभूषण पहेरामणी देवे, एम सिद्धार्थ जस बहु लेवे.

प्रकारान्तरे भोजन अने आभरणनी विधि—

प्रकारांतरे कच्छ-गुजरादि देशोमां जे प्रमाणे भोजनविधि कहेवानो चाल प्रवर्त्ते छे ते मुजब आहीं लखीए छीए—मांड्यो तोरण उत्तंग मांडवुं, सरत आंगणुं बेसवानुं नवुं; तेतो नीलां रत्नज तणुं, त्यां सरखा मांड्यां आसन, बेसतां किसी विमासण; वली आगल मूकी सोनानी आंडणी, ते केम जाए छांडणी; ऊपर सोनाना थाल, अत्यंत घणा विशाल; विचमां चोसठ वाटकी, लगार नहीं जास काटकी; गंगोदक दीधा थाल, कचोलामां हाथज लाल; हवे सघली पंक्ति बेठी, एटले पीरसण हारी पेठी। ते कहेवी छे ?—शोल शणगार सज्यां, बीजां काम तज्यां; हावभावनी रूडी, खलके हाथे सोनानी चूडी; लघु लाघवनी कला, मन कीधां मोकला; चित्तनी उदार, अति घणी दातार; बोलती हाथ, परमेश्वर देजो तेहना साथ; धसमसती आवे, सघलाने मन भावे; पहेलां फल हवे पिरसे, सघलांनां मन हर्षे; एवी छे पिरसनारी भली मृगनयनी, होंसनी पूरी, धर्मनी शूरी; शीलवंति, शक्तिवंती एवी पिरसनारीयो छे ते प्रथम फल खावानां लावे छे—पाका आंबानी कातली, ते पूरा खांडशुं भली; वली पातलां पाका केलां, ते खांडशुं कीधां भेलां; सखरां करणां, वली पीला नरग्यां; लीलां नारंगा, दीसे महाखुरंगा; नीलीरा-यण, पिरसी भली भायण; दाडिमनी कली, खातां पूगे मन रली; लींबजा ने अखोड, खातां पूगे मनना कोड; द्राख ने बदाम, कइ कागदी ने कइ श्याम; सिलेमी खारेक ने खजूर, ते पिरश्यां भरपूर; नालियेरी नगरी, ते मालवी गोलशुं भरी; लींबु खाटां ने मीठां, एहवां ते कदी न दीठां; चारोली ने पिस्तां, लोक जमे हसतां; वली शेलडी ने सीताफल, ते पण पिरश्यां परिघल; हवे पकवान आवे, ते कहेवां वखाणे; सतपडा खाजां, ते तुरत कीधां ताजां; सदलां ने साजां, जाणे प्रसादनां छाजां; एहवां पवित्र प्रधान, मालवी घउं, तेहने दल्यां तेहनी पडशुदी, महाचतुरे शोधी; घीर्ये करमोद, तेहनां खाजां घीर्ये तल्या फल्यां, महाविशाल, एवा सातपुडां खाजां, वली फगफगता

केथा, दुधवर्यां दहीथरां; घृतवर्षी सुंवाली, अमृतजेवी जलेबी; घीना घेवर, पतासा, मोतीचूर, गुंदवडां, एलचीदाखा सहित साकरीया चणा, खांडसाकरनां दहीथरां, अनेक भातिनी सुखडी पिरसे, विशुद्धदलें केलव्या, सारमिश्र खांडथी मेलव्या; मांहे एलचीना चमत्कार, पछी पिरश्या लाडु, जाणे नाना गाडु; कुण कुण तेहनां नाम; जमतां मन रहे नही एक ठाम; वली लाडुनां नाम कहे छे—मोतीआ लाडु, दलिया लाडु, सेवैया लाडु, चूरमानां लाडु, तिलना लाडु, तिगडुना लाडु; मगना लाडु, जगरीनां लाडु, सिंहकेसरीया लाडु, कीटीना लाडु, तेजाना लाडु, खसखसीयाना लाडु, आंबरीया लाडु, चोंटीया लाडु, अडदीया लाडु, अमृतिया लाडु, दीठां दाढ गले, पूरणपुन्याइयें ए मले; भोजनने अर्थें पिरसे, लक्ष्मी एवा मोदक, जातजातना दीसे, जमतां वाधे सुखनो वान, तेनां हैयडा हीसे; दातारना हाथे परीघल, कृपणना हाथ धूजे। वली बीजां आपयां पकवान, जमतां वाधे सुखनुं वान; कुण कुण जाति, नव नवि भांति; सखरा साटां, तेमांहे नही खाटां; बरफीनी जाति, फीणीनी जाति, मरकीनी जाति, घूघरपिडीनी जाति, साकरीयां मोतिचूरनी जाति, मसूरनी जाति, जलेबीनी जाति; सक्करपारानी जाति, गोलपापडीनी जाति, हवे आव्यां वडां गुंदवडां, फीणी सखरी सोट, ते मांहे नही खोट; दहीवडां, फेण वडां, मंथीयावडां, कांजीयावडां, सालियावडां पातली सेव, पिरश्यानी रूडी टेव; ताजो गुंद, तव्यो गुंद, कुंडलाकृत जलेबी, शीरो, लापसी, जिण दीठे दाढा गले, स्वर्गथुंति देव देवी टलवले. वली मीठां मगद, सारो माल नगद; खांडनुं चूरमुं, साकरनुं चूरमुं. पछी पिरशी सालि, ते जमीयें विशाल, ते कुण कुण भेद, सांभलतां उपजे उमेद; सुगंध सालि, सुवर्ण सालि; धवली सालि, राती सालि, नीली सालि, पीली सालि, महा सालि, शुद्ध सालि, कुमुद सालि, मालवी सालि, कलम सालि, कुंकणी सालि, तिलवासी सालि, जीरा सालि, कंद सालि, रायभोग सालि, कुंवारी सालि, चंद्रायण सालि, निकी सालि, गुलडा सालि, वली साठु चोखा, अखंड चोखा ने वली खांड्या, सबला छांड्या, हलवा हाथथी सोधा, नख थकी वीण्या, उत्तम खीरें ओर्या, सुजाण खीये ओसाव्या, एवा अणीयाला सुगंधि फरहरा, ऊंचा कूर पीरश्या। वली ऊपर दाल पीरशी, तेनां नाम कहे छेः—मंडोरनी दाल, मगनी दाल, कामली चणानी दाल, गुजराती तुवरनी दाल, अडदनी दाल, आलरनी दाल, मठनी दाल, वर्णे पीली, परिणामें सीली, वली परिघलघृत पिरस्यां ते कहेवां छे ? तो के आजना ताव्यां, एवा गायनां घी, भेंशनां घी, पीलावरखनां घी, नाके पीयां घी, मजीठवर्णां घी, हवे पोली पिरसी, ते कहेवी छे ? तो के आछी पोली, घीमांहे जबोली; फूंकनी मारी फलसी जाय, पकवीश पोलीनो एक कोलीओ थाय. छप्पो—" सुरकी मोतीचूर, सेव फिणी साकर सरखी। खाजां खुरमां खांड, भिमा शिरां पिरसें हरखी ॥ केला तखी कापली, अंबरस चूके चोली । घस

भेळ घीनी नाल, पिरसे पातळी पोळी ॥ साळ दाल बहु सालणां, भोरस करवे चित्र ठर्युं । ऋषभ कहे ए जमण कर्युं, बाकी सघलुं एजो वर्युं ॥ १ ॥ चोखा मरटी तेल, साक विविध नित्यें सारे । पिरसे भूंडी नार, पेट कहो केणी परे ठारे ॥ ऊपर ढीली घेंश, छाश घण पिरसे पाणी । सिंधव नहीं लगार, किशुं कहे कर्मनी कांणी ॥ आहार सेर अढी तणो, सेर सवा दोहिलो लहे । कवी ऋषभ कहे एजो वर्युं, भोजन एहने कुण कहे ॥ २ ॥" हवे शाक पिरस्यां तेनां नाम कहे छे, नीली डोडीनां शाक, टिंडसीनां शाक, चीभडानां शाक, कोल्हा, कंकोडा, करमदां, कालिंगडां, केलां, कारेलां, आरियां, तुरियां, खडबुजां, वेंगण, मोगरी, नींबु, अंबोलीया, वालोल, चोलानी फली, सरगवानी शिंग, सांगरी, फाचरी, आमलां, केरनां फूल, केरडां, लीलां मरचां, लीली पीपर, लीली रायण, खाटां, खारां, मोळां, गल्यां, तल्यां वघार्यां, फुगार्यां, छमकार्यां, वली पिरसी भाजी, ते उपरे सहु को राजी; ते कोण कोण जातनी ते कहे छे—सरसवनी भाजी, सुवानी भाजी, मूलानी भाजी, चणानी भाजी, चीलनी भाजी, मेथीनी भाजी, वेगीनी भाजी, अफीणनी भाजी, तांदूलनी भाजी, हवे वडीनां शाक कर्यां तेना नाम कहे छे—दाळवडी, डबकावडी, चूथरावडी, घासवडी, घारवडी, दहींवडी, घोलवडी, पापडवडी, मरियालावडी, घणा झोले भीना, घणा वघार मसालाना चमत्कार सबडका देतां अंगुली चाटता मनमां विशेषे भावतां, हवे रायतानां नाम कहे छे—खारेकना रायतां, टोपरानां रायतां, द्राखना रायतां, बदाम प्रमुख मेवानां रायतां, हवे वडां कइ कइ जातनां पिरस्यां ? ते कहे छे—मरचानां वडां, तल्या वडां, कोरां वडां, काजीघोल वडां, घोल वडां, मगनी दालनां वडां, चोलानी दालनां वडां, अडदनां वडां, दहींवडां, मूंदवडां, फेणवडां, मेथीया वडां, सालीया वडां, घणे झोलें भीनां, घणे तेले सीनां; मरचांना घणा चमत्कार, अत्यंत घणा सुकुमार; हाथें लीधा उछले, मुखें घाल्यां तरत गले; घणुं शुं कहिये ? ए वडां एवां तो छे, के जेने खावाने अर्थे घणा देव देविओ पण टलवले छे. हवे पलेव पिरसी, ते कहेवी छे ?—चोखानी पलेव, जुआरनी पलेव, बाजरीनी पलेव, गहुंनी पलेव, हलदीया पलेव, पींपलीया पलेव, सुंठीया पलेव, सबडकीया पलेव, हवे भोजन जमतां वचमां पीवानां पाणी आवे छे, ते कहे छे—साकरनां पाणी, द्राखनां पाणी, खांडनां पाणी, गंगानां पाणी, पालर पाणी, कपूरे वास्यां पाणी, एलचीये वास्यां पाणी, टाढां सीतल पाणी, हीमनां पाणी. हवे दहीं अने दहींनां घोल आवे, ते कहेनां छे ? ते कहे छे—गायनां दहीं, भेंशनां दहीं, काठा जाम्यां दहीं, मधुरां, सखरां, सजीरालां, सलवणां, जाडो, घोल, तेनां भर्यां कचोल, चावलशुं जिमतां, थया रंगरोल । वली सखरां करंबा भरी आणीने पिरस्यां, ते करंबा माहे घणी राइ, जमतां ढील न कांइ, ऊपर जीरा लूणनो प्रतिभास करबहारी पत्र खास । एम भोजन कराव्या पछी एकांते तेडज आणाने रचा थका ने

मज्जन कराव्या ते मज्जन कराववानां पाणी केवां आण्यां, ते कहे छे—केवडानी वासनां पाणी, कायानां पाणी, कपूरें वास्यां पाणी, चंदने वास्यां पाणी, पाडले वास्यां पाणी, सुगंधी पाणी, गंगोदकनां पाणी, चंदने निवास्यां पाणी, एलचीयें निवास्यां पाणी, इत्यादिक पाणीयें करी मज्जन कर्या. पछी तृणशला प्रमुखथी मुख सोधी दांतोनी शुद्धि करीने परम शोच्य थया. हवे मुखवास दीधां ते कहे छे—वांकडी सोपारी, चीकणी सोपारी ते पण केशर वरणी, कपूरें वासित, वली तीखां, लविंग, जावंत्री, जायफल, मोटा डोडा एलची, पाकां नागरवेलनां पान, ते वली काथा चूना सहित दीधां, वली घणां आदर सन्मान, घणां गीत गान, घणां तान ने मान, हवे कइ कइ जातिनां, कइ कइ भांतिनां वस्त्रोनी पहेरामणी करी, ते कहे छे—देवदुष्यवस्त्र, रत्नकंबलवस्त्र, पांमडी, खीरोदक, अटाणां, सेलां, अघोतर, मूलकसबी, जरबाप, मखमल, चिखीयां, बुलबुल, चसम, पाडु, टसरिया, शणीया, मेरव, नारीकुंजर, पट्टहीर, पटसीओली, पंचसइयां. फूलपगर, फूलकारी, दोरीयां, जादर, चादर, नेत्रपट्ट, घोतीपट्ट, राजपट्ट, गजवडी, सुवर्णवडी, हंसवडी, कालवडी, सुअखिआ, पटकूल, पट्टहीरसाडी, घाटडी, चीर, कुंमखाब, अतलशताहि, खाराचीनी, पापडीआंचीनी, सथीआ, गुआगरी, आसखिआ, आगराइ, सवालींपट्टणी, मशरु, तास्ता, शालु, दोपट्टा, त्रपट्टा, वास्ता, दुकडी, सुगटां, कामल नारीकुंजर, साडला, रत्नकंबल, चूनडी, घाटडी, इत्यादिक पांचरंगी वाघा पहेराव्या, वली काशमीरी केशरना छांटणां कीधां, भलां भलां सुगंध बावना चंदननां विलेपन कीधां, अरगजा, चूआ, चंपेल, फुलेल, केवडो, मोगरो, जाइ, जुइ, कुंद, मचकुंद, चंपो, मरुओ, दमणो, केतकी अने मालती प्रमुख फूलोनी मालाओ पहेरावी. पछी मुकुट, तिलक, बाजुबंध, हार, चीर, बेरखा, रत्नावली, मुक्तावली, चंद्रावली, हीरावली, प्रवालावली, सूर्यावली, ग्रहावली, नक्षत्रावली, ओघिसूत्र, कटीसूत्र, पट्टशीखर, चूडामणि, कुंडल, कटक, कंकण, अंगद, मुद्रनंदक, दशमुद्रक, चक्रक, अजर, मेखला, मुदक, पदक, सोंकलुं, सांकली, चिचिष्ट, मंगउत्तरी, दारा हांसडी, कपाली, ग्रैवेयक, हेमजाली, मणिजाली, मौक्तिकजाली, वर्णसरीका, भांभर, नेउर, घुघरा, पीगडां, वींछीया, अंगुठडी, नालाजाल, झूमणां, अफोटा, रूपाला, हरीयाराखडी, गोफणा, उलसीयो, त्रिसंथीयो, त्रोटी, बोरकांकरी, वेढला, मुरकी, मोतीदर, गंठोडा, डुंगल, चंपकली, पानडी, होलेरवाली, मोतीसर, सरलीया, टीलां, टीली, चांदला, आड, नवग्रह, मुद्रडी, अंगूठी, वींटी, वांकडं, गलसरी, छापकरजाली, हेमजाली, मादलीयां, खेलमादलीयां, कंदोरा, पाटीआला कंदोरा, लटकणमोड, नागफणी, नागला, मोरवेसर, नथवाली, सिंदूर, कुंकुमंरीली, अवलाचूडी, घरचूडी, चूडा, कांकणी, कारेली, लाख, पोंची, बेरखा, हाथसां कडी, सोना वहेरीयां, शामीत, कडलां, कडली,

चांकडी, वेढीयां, छोलीयां, इत्यादिक आभरण पहेराव्यां. ए रीते मित्र, ज्ञाति पोताना क्षत्रियो तथा कुटुंब, सगा संबंधीनी भक्ति विविध प्रकारनी कीधी. इति भोजन तथा आभरण विधिः

प्रभुनो नाम स्थापन—

बालकनुं श्रीवर्द्धमान एवुं नाम दीधुं, ते वखाणे छे. ते मित्र, न्याती, गोत्री, स्वजन, पितरीया प्रमुखने सत्कार, सन्मान आपीने त्रिशलादेवी तथा सिद्धार्थ राजा एवुं कहेवा लाग्या के—हे देवानुप्रियो ! अमारे घेर ए पुत्र गर्भने विषे आवी उपन्या पछी अमे रूपे करी, अणघड्या सोने करी, धान्ये करी, राज्ये करी, वाहने करी, मनुष्यना सत्कारे करी, अत्यंत (घणा) वृद्धि पाम्या, तथा सामंत जे सीमाडाना राजा अने चंडप्रद्योतनादिक राजा, ते पण अमारे वश थया, तथा अमारी चाकरी करवा आव्या तेथी अमारा मनमां एवुं चिंतव्युं हतुं के ज्यारे अमारे घरे बालकनो जन्म थाशे त्यारे ए बालकनुं नाम रूप गुणे करी प्रधान 'श्रीवर्द्धमान' एवो आपीशुं, ते अमारा मनोरथ सिद्ध थया, अमारी इच्छा पूरण थइ माटे अमे ए कुमारनुं 'वर्द्धमान' एवुं नाम आपीए छिए. तमें पण ए कुमारने 'श्रीवर्द्धमान—कुमार' एवा नामे बोलावजो. ए रीते संबंधी सर्वने शिरपाव पहेरामणी करीने सर्व सज्जननी साखे बालकनुं नाम स्थापन कर्युं पछी ते सर्वने विदाय कर्या.

श्रीवर्द्धमान भगवान् कहेवा छे ? तो के सात हाथनुं म्होटुं शरीर छे जेनुं, वली समचोरस संस्थान छे, सुवर्णवर्ण देहनी निर्मल कांति छे, वज्रऋषभनाराच संघयण छे, एवा भगवान् छे. हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनां सर्व मली त्रण नाम थयां ते कहे छे—एक तो माता पिताए आपेलुं नाम श्रीवर्द्धमान छे अने बीजुं रागद्वेष रहित तपस्यामां खेद सहन करवाथी 'श्रमण' एवुं नाम जाणवुं अने त्रीजुं जे अकस्मात् उपजे

ते भय अने सिंहादिकोना उपद्रवथी जे भय उत्पन्न थाय ते भैरव कहीए ए भय भैरवोथी चलायमान थया नहीं, निर्भय पणे रह्या थका भूख तृषा प्रमुख परिषहोथी क्षोभ पाम्या नहि. एम परिषह उपसर्ग सहन कर्या तथा सर्वतोभद्र प्रमुख प्रतिमाना पालवावाला, चार ज्ञान सहित, धैर्यवान, अरति रति परिषहने वेठीने राग द्वेष रहितपणे सुख दुःख सहन कर्यां तेथी द्रव्यवीर्य पाम्या. मोक्ष जवानो निश्चय कर्यो छे तो पण चारित्र पालवामां तत्पर रह्या, एवा वीरपणाना गुणोथी देवताओए 'श्रीमहावीरस्वामी' एवुं नाम दीधुं, तथा भगवान् आमलकी क्रीडा करती वेलाए देवता क्षोभ पमाडवा आव्यो तेनाथी बीक पाम्या नहीं तेथी पण देवताए महावीर एवुं नाम दीधुं. भगवान् श्रीमहावीरस्वामी दिवसे दिवसे चंद्रकलानी परे वधता थकां, घणा दासदासीयो साथे परवर्या थकां, अत्यंत रूपवान, मस्तके भमरानां सरखा काला केश छे जेना, कमल सरखां नेत्र छे, परवाला समान बिंबोष्ठ छे, धोला दांत छे, गर्भ सरखो गौर वर्ण छे, कमलना गंध सरखो श्वासोश्वास छे, सर्व देवताओना रूपथी पण घणुंज रूप छे जेनुं एटले सर्व देवोनुं रूप जो एकठुं करीए तो भगवानना डाबा पगना अंगूठानी एक कलाने पण पहोंचे नहीं. केमके त्रणे लोकमां सर्वथी अधिक रूप श्रीतीर्थंकर भगवाननुं होय छे. तेथी ओछुं गणधर महाराजनुं रूप, तेथी ओछुं आहारक शरीरवाला साधुनुं रूप, तेथी ओछुं अनुत्तर विमानवासी देवोनुं रूप जाणवुं, तेथी ओछुं नव ग्रैवेयकना देवोनुं रूप, त्यार पछी बारमो देवलोक, अगीयारमो, दशमो, नवमो, आठमो, सातमो, छट्ठो, पांचमो, चोथो, त्रीजो, बीजो, पहेलो देवलोक ए सर्व क्रमे करी एक बीजाथी उतरता उतरता रूपवाला कहेवा. त्यार पछी जोतिषि देवोनुं, पछी भवनपतिदेवो, पछी व्यंतर देवो, पछी चक्रवर्त्तिराजा, पछी वासुदेव, पछी बलदेव, पछी मांडलिक सामान्य राजानुं रूप जाणवुं. ए सर्व अनुक्रमे एकेकथी हीन हीन रूपवाला जाणवा.

प्रभुनी आमलकीक्रीडा अने देवनो जय—

भगवान जातिस्मरण ज्ञान सहित अप्रतिपाति—मति, श्रुत अने अवधि मली त्रण ज्ञाने करी सहित, सर्वथी उत्कृष्ट देहनी कांति छे जेनी, एवा भगवान अबीह, बलवंत, बुद्धिमंत, सुरूपी, दिव्यस्वरूप धारी, साहसिक, रूपाला, रंगीला, रढीयाला, रेखाला, रतीला, मतिला एवा भगवान् रमतां रमतां ज्यारे आठ वर्षनां थयां त्यारे सरखे सरखा राजकुमारो साथे क्रीडा करता थका ते देशमां प्रसिद्ध पामेली एवी आमलकी क्रीडा रमवा सारुं नगरनी बाहिर एक पीपलीनुं वृक्ष छे त्यां सर्व कुमारो एकठा थइने सर्व छोकरा दोडवा लाग्या ते आवी रीते के बे बे छोकरा साथे दोडे तेमां पहेलो जे पीपलीना वृक्षने जइ पकडे ते जीत्यो अने जे पाछल रही जाय ते हार्यो. पछी जे हारे ते पोताना खांध ऊपर जीतेला छोकराने बेसाडीने जे स्थानकथी होड करीने दोड्या होय ते स्थानके पाछो जइ मूके एवी रीतनी रमत पोताना जेवडा छोकरा साथे भगवान् करे छे; एवामां सौधर्मेन्द्र सभामां बेठा थकां अवधिज्ञाने करी भगवाननुं महाबल जाणीने सभामां कहेवा लाग्या के—आजना समयमां जेवा श्रीमहावीर भगवान् बलवान् छे तेवो कोइ बीजो बलवान नथी जो म्हारा सहित सर्व देवो मलीने तेने डराववा जाय तोपण डरे नहीं एवा छे. ते इंद्र महाराजना वचनने अणसद्दहतो थको एवो कोइ मिथ्यात्वी देवता त्यांथी उठीने ज्यां भगवान रमे छे त्यां आव्यो अने छोकरानुं रूप करी भगवान् साथे रमवा लाग्यो. त्यारे भगवान अत्यंत वेगथी दोडीने तरत जइ पीपलीना झाडने हाथ लगाडीने आगल चाल्या अने देवताए पीपलीना नीचेनी डालीयोमां सर्वत्र फूत्कार करता एवा सर्पनुं रूप बनाव्युं ते भगवाननी सामो फणाटोप करीने डराववा लाग्यो पण भगवाने सर्पने पोताना हाथथी दूर करीने पोते पीपली ऊपर चढी गया अने मनमां ते सर्पनो

कांइ पण भय आण्यो नहीं, ज्यारे ते देवकृत बालक हार्यो अने श्रीवर्द्धमान जीत्या त्यारे ते देवरूप बालके पोतानी खांध ऊपर भगवानने चढावीने तेने डराववा सारुं सात ताडवृक्ष जेटलुं उंचुं रूप कर्युं. तेने जोइने बीजा सर्व बालको भय पामीने नाशी गया अने प्रभुना मातापिताने जइ सर्व वृत्तांत कह्युं; माता पिता चिंता करवा लाग्यां. तेमनी चिंता टालवाने माटे भगवाने वज्रप्रहार जेवी पोतानी मुष्टि, देवनी पीठ ऊपर मारी तेथी ते देव अरराट करतो अने चीस पाडतो जमीन ऊपर पडी गयो. पछी घणो लज्जायमान थइ पोतानुं रूप प्रगट करीने कहेवा लाग्यो के हे प्रभु! जेवा तमोने इंद्र महाराजे वखाण्या हता तेवाज तमे धीरजवाला महा बलवान छो. ए अवसरमां इंद्र महाराज पोते पण त्यां आव्या अने ते देवताने भगवानने पगे लगाड्यो. देवताए पण भगवानने पगे लागी अपराध खमाव्यो, ते देव मिथ्यात्वपणुं त्यागी समकिति थयो. पछी इंद्रमहाराज तेने पोतानी साथे देवलोकमां लइ गया इति आमलकी–क्रीडा.

लेखकशाला–महोत्सवः—

भगवान आठ वर्षना थया एटले माता पिताए मोहना वशथकी विचार्युं के—

'लालयेत् पंचवर्षाणि, दशवर्षाणि ताडयेत् ।
प्राप्ते षोडशके वर्षे, पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥
'माता वैरी पिता शत्रुः, पुत्रो येन न पाठितः ।
शोभते न सभा मध्ये, हंसमध्ये बको यथा ॥ २ ॥

'छोकराने पांच वर्ष रमाडवो–रमत करावधी अने दश वर्षनो थाय त्यारे धाकमां राखवो, तथा शोल वर्षनो थाय त्यारे तेने मित्र

सरखो जाणवो १, तथा जो पुत्रने भणावे नहिं तो माता तेनी वैरिणी जाणवी अने पिता तेनो शत्रु जाणवो. केमके जो भणे नहीं तो ते पंडितोनी सभामां जेम हंसोनी पंक्तिमां बगलो शोभे नही तेम ते पण शोभा पामे नहीं २' एवो विचार करी, सारुं मुहूर्त्त जोइने शुभ दिवसे पोताना स्वजन क्षत्रियोने जमाडी, वस्त्राभरण आपी, केशर कस्तूरीनां छांटणा करी, हाथी रथ घोडा शणगारी, गीत वाजित्र सहित महा महोत्सवथी निशालियाओने आपवा सारुं गोलधाणी मेवा प्रमुख लीधां. तेनां नाम कहे छे—वरसोला, गुंदवडां, खारक, टोपरां, द्राख, खजूर, सिंघोडा, अखोड, बदाम, चारोली, नालियेर, साकर, सेव, पेडा, फल—फूल, साकरिया चणा, एलचीपाक, धाणी, गोलधाणी, बीजोरां, चणा, सोनाना खडीया, रत्नजटित लेखणो, रूपानी पाटीओ, पाननां बीडां प्रमुख अनेक वस्तुओ साथे लइने, तथा पंडितने आपवा योग्य वस्त्राभूषण साथे लइने सोहागण स्त्रीयो गीत गाती थकी श्रीवर्द्धमानने स्नान करावी, शणगार पहेरावी, हाथी ऊपर बेसाडी, मेघाडंबर छत्र चामरो सहित, याचकोने दान देतां थकां, भाट स्तुति करतां थकां, ब्राह्मण वेदध्वनि भणतां थका, अने वन्दीजनो आशिर्वाद बोलतां थकां भणाववा वाला पंडितनी पासे आव्या. त्यारे पंडित पण सिद्धार्थराजानो छोकरो सकल देशनो अधिपति म्हारी पासे भणवा आवे छे एवुं जाणी अहंकार आणी म्होटुं आसन मंडावी शणगार करीने बे मणिबंध, बे बाहु, बे कक्षा, बे कान, बे काननी मूलमां, एक ललाटमां अने एक कोटमां एवा बार स्थानके तिलक करी पोताना परिवारने सर्व शणगारी वाट जोतो जोतो बेठो छे. ए अवसरमां इंद्रमहाराजनुं आसन पण ध्वजानी परे कम्पायमान थयुं अथवा जलमां चंद्रबिंबनी परे चपल थयुं अथवा हाथीना काननी परे चपल थयुं, त्यारे इंद्रमहाराजे अवधिज्ञाने जोयुं तो भगवान भणवा जाय छे एवुं देखी, कौतुक पामी इन्द्र

चिंतववा लाग्यो के–आ मोहनीयनो चमत्कार जूओ केवो छे. माटे माता-पिता जाणे छे के एने भणावीए पण भगवान तो त्रण ज्ञाने सहित छे, महा गंभीर छे, एने शुं भणवुं छे ? एतो भण्या गुण्या स्वयंबुद्ध छे, अमृतमां वली मिठाश शी करवी छे ?, सरस्वतीने वली पोथी शी देखा-डवी छे ?, चंद्रमाने वली उज्ज्वलता शी करवी छे ?, आंबाने विषे तोरण शुं बांधवुं ?, तथा मातानी आगल मोसाल वर्णव करवो तेम एओ अज्ञानना वशथी भगवानने निरर्थक भणवा लइ जाय छे. माटे हवे भग-वानी आशातना न होवी जोइए, एवुं विचारी शक्रेन्द्र ब्राह्मणनुं रूप करी ज्यां भगवान निशालमां आव्या छे त्यां ब्राह्मणने सिंहासन ऊप-रथी उठाडी भगवानने ऊंचा सिंहासन ऊपर बेसाडी प्रथम तो उपा-ध्यायनी समीपे बेसी तेने केटलाएक शास्त्रार्थना प्रश्न पूछया; परंतु उपाध्याये बराबर तेनो जवाब आप्यो नहीं त्यारे तेज प्रश्न भगवानने पूछया. तेना उत्तर भगवाने तत्काल निःसंदेहपणे आप्या. ते जोइ अध्या-पक (भणावनारो) मनमां विचार करवा लाग्यो के–आ वातोना तो म्हारा मनमां पण आज सुधी संदेह हता, म्हें पूर्वे घणा पंडितोने एनां अर्थ पूछेला हता पण कोइए म्हारी शंकाओनुं समाधान कर्युं नहीं अने आ न्हाना बालके म्हारा संदेह दूर कर्या. ए म्होटो आश्चर्य जणाय छे वली पण इन्द्र महाराजे भगवानने शब्दोनी उत्पत्ति पूछी त्यारे भग-वाने संज्ञासूत्र, परिभाषा सूत्र, विधि सूत्र, नियम सूत्र, प्रतिषेध सूत्र, अतिदेश सूत्र, अधिकार सूत्र, अनुवाद सूत्र, विभाषा सूत्र अने निपात सूत्र ए दश सूत्रना अर्थ सर्व पृथक् पृथक् कही बताव्या, अने शब्दसाधनिका पण बतावी. त्यारे लोकोए जाण्युं के आ कोइ परदेशी ब्राह्मण आवेलो छे ते बालकने प्रश्न करे छे अने बालक तेना उत्तर आपे छे; पण एवा उत्तर तो आ भणावनार पंडितनां मातापिता पण आपी शके नहीं. एम सर्वे लोको साश्चर्य कहेवा लाग्यां के

आटलां शास्त्र आ बालक क्यां भण्यो हशे ? अने उपाध्याय पण चमत्कार पामीने कहेवा लाग्यो के आ ते कोण ब्रह्मा पोते साक्षात् अहीं आव्या छे के शुं ? त्यारे सर्व लोकना मननां संशय मटाडवा सारुं इन्द्र महाराज बोल्या के—अरे लोको ! आ वर्द्धमान—कुमार छे, एने सामान्य पुरुष जाणशो नहीं, ए त्रण लोकनो नाथ छे, सर्व पदार्थोनो जाण छे, परंतु महा गंभीर छे माटे पूछ्या विना उत्तर आपे नहीं. लोकोमां कहेवत छे के "ठाला ते वाजणा, ठाला बोला पोला ढोल, जेवो आश्विन अने कार्त्तिकनो मेघ, जेवो असति स्त्रीनो स्नेह अने जेवो शरदृऋतुनो गर्जारव तेवो ठालो जाणवो पण जे पंडित छे ते तो वर्षादना मेघ सरखा. ठाला बोले नहीं, जे मूर्ख होय ते पोते पोताने जाणे के हुं पंडित छुं पण म्होटा पुरुष जे छे ते विना पूछे बोले नहीं." एवुं कहीने भगवाने प्ररूप्यां जे व्याकरण संबंधि दश प्रकारना सूत्र तेनी वृत्ति तथा उदाहरण गोठवीने व्याकरण बनाव्युं. ते जिनेन्द्र व्याकरण नामा आठ व्याकरणनी आदिमां थयो. पछी इन्द्र महाराज पंडित प्रमुख लोकोमां भगवान सर्वज्ञ छे एवुं जणावी पोतानुं रूप प्रगट करीने स्वर्गमां गया. उपाध्याय भगवानने पगे लागीने बोल्यो के—प्रभो ! तमे ज्ञानसमुद्र छो, हुं तो अपूर्ण कलशनी पेरे छुं माटे तमे म्हारा गुरु छो. पछी प्रभुए उपाध्यायने घणुं दान आप्युं. भगवानना माता पिता घणां राजी थया थकां भगवानने हाथी ऊपर बेसाडी उत्सव सहित गाजते वाजते घरे तेडी आव्या. इति लेखकशालामहोत्सवः ।

अथ सार्थं भलेप्रकरणम्—

श्रीवीरप्रभुने नीशाले बेठा जाणीने सौधर्मेन्द्रे ब्राह्मणना रूपे आवी प्रभुने नमस्कार करी सर्व लोकने चमत्कार पमाडवा सारु प्रथम भलेना अर्थ पूछ्या, प्रभुजीए आ प्रमाणे अर्थ कह्या–१ 'बे लीटी'—जीवनी बे राशि छे. तेमां एक सिद्धना जीव ते निष्कर्मी अने बीजा संसारी जीव ते सकर्मी जाणवा. २ 'भले'—अरे जीव ! तुं सिद्धना जीवनी राशिमां भलवानी इच्छा

राखजे. ३ ' मींडुं '–संसार रूप गोलाकारे ऊंडो कूप छे ते मांहेथी निकलवानुं धर्मरूप छिद्र छे माटे नीकलीश तो सिद्धमां भलीश. ४ ' बिलाडी '–जेम कूवामां वस्तु पडी होय तेने लोढानी बिलाडीथी बाहेर कहाडीए तेम संसारी जीवने संसार रूप कूपमांथी काहाडवानी एक देशविरति अने बीजी सर्वविरति रूप बे बिलाडी जाणवी. हवे ते सिद्धना जीव क्यां रहे छे ? ते कहे छे—५ ' ओगण चोटीओ माथे पोटीओ ' एटले चौद राजलोकना एक अधोलोक, बीजो मध्यलोक अने त्रीजो उर्ध्वलोक एवा त्रण भाग छे तेमां उर्ध्वलोकने चोटीने स्थानके बार योजन विस्तार वाली, ईषत्प्राग्भारा नामे पृथ्वी छे त्यां एक योजनना चोवीशमा भागे ३३३ धनुष ऊपर बत्रीश अंगुल जेटला विस्तारमां लोकने मस्तके अलोकने अडी रह्या थका सिद्धना जीव रहे छे. ६ ' ननो वीटालो '—हे जीव ! तुं संसारना कामभोगमां मग्न थइ वीटाइ रह्यो छे, तेथी अधोगति एटले नीचीगति पामीश. ७ ' ममो माऊलो '—आ संसार जे छे ते जीवनुं अनादि घर छे तेमां मोह नामे माउलो एटले मोसालीयो छे. ८ ' ममा हाथ बे लाडवा '—पूर्वे कहेलो जे मोह नामे मोसालीयो छे ते जीवने कामभोग रूप बे लाडवा हाथमां आपीने मोलवी राखे छे संसारमांथी नीकलवा देतो नथी. ९ ' सेरी-राणी चोकडी '—सिद्धिरूप राणीना मंदिर चढतां चार कषाय रूप चोकडीनी चोकी राखी छे ते चोकीने वंचीने कदापि कोइ ऊंचो चढे तो पण तेने चढवा देती नथी. १० ' पाछी चार कुंडावालि '—अगीआरमी पावडीथी पाछो डोलीने तेने ते चोकडी संसारकूपमां न्हांखे छे. ११ ' ढांउं ढांउं ढोकलो माथे छोकरो ' एटले हे जीव ! तुं संसारमां धाइ धाइने गर्भावासमां पडीश त्यां ढोकलानी परे सीजाइ रहीश. वली छोकरां छैयां ते त्हारे माथे विटंबना पाडशे. माटे जो तुं धर्मना चक्रवर्त्ती महाराजनुं सिद्ध नगर छे तेने जोवाने वांछतो होय तो प्रथम तेनो सम्यक्त्व नामे महामंत्रीश्वर छे तेनी साथे मलजे एटले ते तुजने धर्म महाराजथी मेलाप करावी देशे. हवे ते सम्य-क्त्व नामा प्रधानना घर सुधी जातां थकां वचमां घाट छे त्यां लूंटारा रह्या छे तेने निवारण करवानो उपाय कहे छे–१२ ' हाथमां डांगडी '—धर्मकथावार्त्ता रूप यथा प्रवृत्ति करण करी, अपूर्वकरणना शुभ परिणाम रूप डांगरी एटले महामुद्गर हाथमां लइने. १३ ' भाइडा दो भाइडा बडो भाइ कांनो ' एटले राग द्वेष रूप बे भाइडाने अलगा करजे तथा बीजो पण सात प्रकृति रूप चोरनो क्षय करी अपूर्वकरण रूप मुद्गरथी मिथ्यात्वनी गांठ भांगीने एटले ग्रंथीभेद करी आगल जाजे. त्यां सम्य-क्त्वनामा महामंत्रीश्वर पांच रूप करी रह्यो छे तेनां तुं दर्शन पामीश. पछी तेनी सेनामां रहेतां थकां ते त्हारामां योग्यता जाणीने १४ ' इडिकेवली इडिउकारु ' एटले धर्मचक्रवर्त्तिनी बे पुत्री छे, तेमां एक देशविरति नामे लघु पुत्री छे अने बीजी

सर्व विरति नामे म्होटी दीकरी छे ते तुजने परणावी देशे परंतु जो सम्यकत्व मंत्रीनी सेवा एकाग्रचित्ते सन्मुख रही करीश तो ते प्रसन्न थाशे केम के—१५ 'आउ आउ आंकोडा वडे आंकड फांकोडा' एटले त्यां शंका कंखा कषाय रूप आंकडा फांकडा म्होटा छे तेनी जो तुं संगत करीश तो सम्यकत्व मंत्रीना चित्तमां शङ्का पडशे तेथी ते त्हारो साथ करशे नहीं. १६ 'निली तोडवे कांठोला वडे' एटले त्यां वली विषय कषाय रूप अथवा ममता माया रूप एवी बे विषनी वेलडी छे. ते मांहे काम अने भोग रूप बे सर्प सूता छे तेने जगाडीशमां—छेडीशमां. एम करवाथी स्वामी सुप्रसन्न थयो थको तुजने सिद्ध नगरीए जवानो सथवारो करी आपशे. १७ 'एनवेन बे गाडी' एटले समिति अने गुप्ति रूप बे गाडीयोमां बेसाडीने. १८ 'ओरखवाला बलदिया' एटले तेमां ज्ञान अने चारित्ररूप बे बलद जोतरी आपशे तेने. १९ 'अमीयां बे रासडी' एटले संवर अने निर्जरा रूप बे रासडी बांधीने गाडली शिवपुर नगरना मार्ग भणी चलावजे. २० 'कको केवडो' एटले केवलज्ञान रूप बोलावा विना सिद्ध नगरे पहोचातुं नथी ते केवलज्ञान तो अणाहार मार्गथी उपजे छे माटे. २१ 'खरको खाजलो' एटले तुं चार प्रकारना आहारनो लोलुपी थाइश मा—रसेन्द्रियनो लंपटी थाइश मा. २२ 'गगा गोरी गाय वीयाणी' एटले ते अणाहारी जे तपादिक मार्ग छे तेना बतावनारा तो गुरु छे माटे गुरुनी भक्ति बहुमान करजे. केम के गुरु म्होटा उपकारी छे संसार समुद्र तरवाने बोधबीज धर्मनुं आलंबनादिक गुरु आपे छे माटे गुरुनुं गौरवपणुं करजे. २३ 'घघो घरट पलाण्यो जाय' एटले अरे जीव ! तुं घरनो धंधो जे आरंभ समारंभ तेना भारे करी अहर्निश पलाण्यो थको वहे छे ते भारथी तुजने गुरु छोडावशे. २४ 'ननीओ आमण दूमणो' एटले गुरुए जे घरनो भार छोडाववा माटे पांच अणुव्रत अने पांच महाव्रत रूप अभिग्रह नियमादिक अंगीकार कराव्या ते पालतां थकां आमण दूमणो (भग्नचित्तवालो) थइने पश्चात्ताप करीश मा. २५ 'चचा चिनीचोपडी' एटले गुरुदत्त चारित्रधर्म पालवानी चित्तमां चोंप राखजे. २६ 'छच्छा वदियापोटला' एटले छद्मस्थपणे गुरु समीपे श्रुतज्ञान—चौदपूर्वनी विद्यानुं पोटलुं बांधजे—ज्ञाननो अभ्यास घणो करजे. २७ 'जज्जो जेसलवाणीउं' एटले निनिदाशल्य, मायाशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्य त्हारा अंतरंगने विषे छे तेने टालवानो वणिज (व्यापार) करजे. २८ 'झझो झारी सारिखो' एटले तुं झारी सरखो स्वभाव राखजे जेम झारीनुं मुख सांकडुं होय अने पेट पोहोलुं होय तेम तुं पण पेट म्होटुं राखजे अने मुखथकी कोइना दोष (मर्म) प्रकाशीश मा. एवी रीते मुखने सांकडुं राखजे. २९ 'अञीयो खांडो चांदो' एटले अर्द्धचंद्रमा जाणवो तेना जेवा आकार वाली सिद्धशिला छे ते स्थानके जावानुं तुं

निरंतर साधन करजे. ३० 'टट्टो पोलिखांडेषु' एटले तुं पोताना व्रत नियमादिक जे कांइ गुरु समीपे लीधां छे ते खंडित करीश नहीं अर्थात् पच्चरकाणनी पोल जे बारणा तेने दृढ राखजे. ३१ 'ठठ्ठा ठोबर गाडुओ' एटले तुं ठोबर ते भांगेलो घडो तेनी पेरे थाइश मा, गुरुए आपेली श्रुत–शिक्षा ते हृदयरूप घटने विषे संग्रह करी राखजे. ३२ 'डड्डा डामरगांठे' एटले तुं बाह्य आडंबर करी अभ्यंतर कर्मनी गांठे बंधाइश मा. ३३ 'ढड्डा सुणो पूंछे' एटले तुं सुणो ते श्वान तेना पूंछडानी पेरे वक्रस्वभाव राखीश नहीं परंतु सरल स्वभाव राखजे. ३४ 'राणो ताणोसेले' एटले जो तुं मोहराणा साथे युद्ध करे तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा त्रणगुप्तिरूप त्रण सेल हाथमां राखजे. ३५ 'तत्तो तावे तेले' एटले तुं तप जप करतो थको कोइनां आक्रोश वचन सांभलीने तप्त तेलनी पेरे तातो थाइश मा. ३६ 'थथ्था थै रखवाली' एटले कदापि त्हारुं मन वश न थाय तो पण वचन अने काया ए बेने तो थिरथाप करी राखजे. ३७ 'ददीयो दीवटो' एटले समकित (दर्शन) रूप दीवो तेने हृदयरूप घरमां राखजे वली दया दमन ने दान तेनी अभिलाषा धरजे. ३८ 'धद्धीयो धाणको' एटले तुं धन कमाववानुं–परिग्रह मेलववानुं ध्यान राखीश मा, केवल धर्मध्यान त्हारा हृदयमां राखजे. ३९ 'ननीयो पुलायरो' एटले तुं नास्तिकमति अंगीकार करीने हृदयमांथी समकितने पोलुं एटले पातलुं करीश मा. ४० 'पप्पा पोलीपाटे' एटले पाप आववानी पोल जे पांचे इन्द्रियना आश्रवद्वार छे तेने संवर रूप कमाड जडीने बंध करी राखजे पण पोलां राखीश नहीं. जेम अढार पापस्थानकनो प्रचार तेमां प्रवेश करी शके नही एवां दृढ मजबूत बंध करी राखजे. ४१ 'फफ्फा फगडे जोडे' एटले फोकट फांसीया, अशुद्ध, अविनीत, अनाचारीनी जोडे संगत करी विचरीश मा. ४२ 'बब्बामांहे चांदणुं' एटले बोधबीजनो वधारो करजे. जेम जेम बोध वधतो जाशे तेम तेम हृदयने विषे ज्ञानरूप चांदणुं एटले चंद्रमा प्रगट थाशे. ४३ 'भभ्भो भारी भेंसको' एटले भेंस जेम सूकुं लीलुं भक्षण करीने पेटे भारी थाय तेम तुं पण बावीश अभक्ष अने बत्रीश अनंतकाय जे कंदमूल कहेवाय छे ते पामीने तेनुं भक्षण करी पेटे भारी थाइश मा. कदापि देवादिक आवीने चलावे तो पण चलायमान थाइश नहीं. प्रतिज्ञा मूकीश मा, अर्हन्नक श्रावकनी पेरे दृढता राखजे तथा वली व्रत नियमादिक पालतो थको मनमां म्होटो अभिमान धरीश मा, फरी कहे छे. 'मभीयो भाटचूलेतरो' एटले जेम चूलानी भाट धगधगती रहे छे तेम तुं कोइना आक्रोश (असह्यमर्मवेधाला) वचन सांभलीने अंतरंग हैयामां क्रोध रूप अग्निये धगधगतो रहीश मा एटले क्रोधाग्निये भेटाइश मा. ४४ 'ममयीयो मोचक' एटले आठ कर्मने मूकजे, मोक्ष मार्ग म्होटो छे तेने आदरजे. ४५ 'ययीयो

जाडो पेटको ' एटले संसारमांहे यम जे कृतांत तेनुं पेट म्होटुं छे ते सर्व जगतने ग्रास करे छे तो पण तेनुं पेट भरातुं नथी माटे एनो भय म्हारा हृदयमां राखीने धर्मने विषे आलस करीश मा. ४६ ' रायरो कटारमल्ल ' एटले राग अने द्वेष ए बे म्होटा मल्ल छे. तेमां रागना वली बे प्रकार छे.—एक प्रशस्तराग अने बीजो अप्रशस्तराग. ए बेहु मल्लने जीतीश तो कर्मथी हलवो थइ केवलज्ञान उपार्जन करीने अक्षयपद जे मोक्षपद तेनो भोगी थइश. ४७ ' लल्ला घोडो लातवा ' एटले लोभरूप घोडानी लातथी वेगलो रहेजे. ४८ ' वव्वा विंगण वासदे ' एटले कामादिक व्यंग छे तेने म्हारा मनरूप घरमां वास एटले वसवा देजे नहीं, केम के जो कामादिक म्हारा मनरूप घरमां प्रवेश करशे तो आत्माना उत्तम गुण रूप धनने सर्व चोरी लइ जशे. ४९ ' शशा कोटा मरडीया ' एटले शसलानी पेरे कोट अने कांनथी ढंकाइने गलीयार थइ बेसी रहीश मा पण धर्मने विषे उद्यमी थाजे, नहीं तो शसलानीपरे एक दिवसे कालरूप पारधी दुर्गतिमां लइ जाशे. जेम ससलाने आहेडी लइ कोट एटले गलुं मरडी न्हांखे तेम तुजने पण काल आहेडी मरडी न्हांखशे. ५० ' षष्षा खूणे फाडिया ' एटले खरुं बोलजे खोटुं बोलीश मा. केमके एक पण मृषावाद वचन बोलवाथी सर्व गुण अने सर्व व्रतनो नाश थइ जाय छे. जेम कोइक वस्त्रनो कोथलो खूणे फाट्यो पछी तेमां जे वस्तु भरेली होय ते हलवे हलवे निकलती अनुक्रमे सर्व खाली थइ जाय, तेम मिथ्याभाषणथी म्हारा गुण तथा व्रत जता रहेशे. तथा खूणे बेशी एटले कोइ नहीं देखे एवी रीते एकांते बेशी पाप करीश तो पण ते आगल उदयिककाले प्रगट थाशे. ५१ ' सारसे दंती लोक ' एटले जो तुं मोहराजानी साथे युद्ध करे तो दंती एटले हाथीनी परे साहसिक थाजे, जेम हाथी साहसिक थको सर्वनी आगल आगेवान थइ किल्लानां कपाट, गढ, कोट सर्वने भांगी न्हांखे तेम तुं पण मोह राजानो मिथ्यात्वरूप गढ भांगी न्हांखीश. ५२ ' हाहोलो हरिणेकलो ' एटले तुं मोहरूप पारधीनां पाशमां पडीश मा, पण हरण जेम पारधीने देखी नाशी जाय तेम तुं पण फाल मारीने नाशी जाजे; परंतु जो मोहना पाशमां पड्यो तो संसारना बंधनथी छूटीश नहीं. ५३ ' लावे लच्छी दो पणिहार ' एटले जो तुं मोक्षनो अभिलाषी थइने संसारनां बंधन छेदीश तो एक द्रव्यलक्ष्मी अने बीजी भावलक्ष्मी ए बे प्रकारनी लक्ष्मी त्हारे घेर पाणी भरशे एटले जो अनुत्तरविमाने देवता पणे उपजीश अथवा मनुष्यभवे नरदेव (चक्रवर्त्ति) पणे उपजीश तो भरतादिक जेम द्रव्यलक्ष्मीना सुखय भोगवीने सिद्धने विषे भावलक्ष्मी भोगवे छे तेम तुं पण पामीश. हवे एवां सिद्धनां सुख केवी रीते पामीए ते कहे छे—५५ ' खडीया खाटक मोर पालें बांध्या बे चोर ' एटले संसारने विषे षट्काय जीवोना आत्माना जे ज्ञानादिक गुण छे तेने

लूंटवाने माटे राग अने द्वेष रूप बे चोर खडा छे एटले ऊभा छे तेने, पकडी बांधीने तेनुं बीजमात्र काहाडी न्हांखजे के जे थकी कर्मरूप वृक्षनी उत्पत्ति फरी थाय ज नहीं. ए बेने टालीने चार घनघातीया कर्मने टालजे के जेम केवल-रूप लक्ष्मी पामे. पछी ते केवलश्री भोगवीने अंते चौदमां गुणठाणे योग-निरुंधी शैलेशी करण करी शुक्ल ध्याननां चोथा पाये कार्मण शरीर छेदी क्रिया रहित थइ सिद्धना जीवोनी राशिमां मलजे, जेथी ५५ 'मंगलमहाश्री, द्वेविधा परमेश्वरी' एटले मंगलिक रूप म्होटी भावलक्ष्मी पामीश अर्थात् पोताना आत्मानां अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य, अगुरु लघु, अरूपी, अखंड, अक्षय; एवी महामंगलिक रूप भावलक्ष्मी पामी सादिअनंतभांगे अजर, अमर, अविनाशी पणे, महानंद, परमानंद पद पणे रहीश. इति तत्त्वं. वली एनो अर्थ प्रकारांतरे जुदा जुदा महापुरुषोनो करेलो घणा प्रकारनो दीठामां आव्यो छे परंतु अत्रे ग्रंथगौरवना भयथी मात्र आ एक ज प्रकारनो अर्थ दाखल करेल छे.

प्रभुनो विवाह अने परिवार—

भगवान ज्यारे बाल्यावस्थाए करी रहित थया अने यौवनवय पाम्या त्यारे मातापिताए रूडुं मुहूर्त्त जोवरावीने घणा आडंबर सहित समरवीर नामा सामंतनी पुत्री 'यशोदा' नामे हती ते प्रभुने पर-णावी. घणी प्रतोमां नरवर्मराजानी पुत्री यशोदा परण्या, एवा अक्षर लखेला छे. पछी ते यशोदा राणी साथे विषयसुख भोगवतां 'प्रियद-र्शना' नामे एक पुत्री थइ. ते पुत्री भगवाननी व्हेननो पुत्र जमाली नामे हतो तेने परणावी. एम करतां भगवानने गृहस्थपणामां अठ्ठा वीश वर्ष वील्यां. महावीरस्वामीनां पिता काश्यपगोत्रीय छे तेनां त्रण नाम छे—एक सिद्धार्थ, बीजुं श्रेयांस, त्रीजुं यशस्वी । भगवाननी मातानुं वासिष्ट गोत्र छे अने तेमना पण त्रण नाम छे—एक त्रिशला, बीजुं विदेहदिन्ना, त्रीजुं प्रीतिकारिणी । भगवानना काकानुं सुपार्श्व एवुं नाम छे, तथा भगवानना म्होटा भाइनुं नंदीवर्द्धन नाम छे, अने व्हेननुं नाम सुदर्शना छे तथा स्त्रीनुं नाम यशोदा छे. तेनुं कोडिन्न गोत्र छे तथा भगवाननी पुत्रीनुं काश्यप

गोत्र छे अने तेनां अणोज्या अने प्रियदर्शना एवां बे नाम छे. भगवाननी दौहित्री तेनुं काश्यप गोत्र छे अने शेषवती तथा यशस्वती एवां बे तेनां नाम छे. भगवान श्रीमहावीरस्वामी कहेवा छे ? तो के–सर्व कलाओमां निपुण छे, भली रीते निर्वाह करवा वाला, भला रूपवंत, सर्व गुणे संपूर्ण, सरल परिणामी, विनयवान, ज्ञात राजाना पुत्र प्रसिद्ध एवा जे सिद्धार्थराजा तेना कुलमां चंद्रमा समान, भलो छे देह एटले शरीर जेमनुं, वज्रऋषभनाराच–संघयण, समचउरंस–संस्थान, त्रिशलामाताना पुत्र, महा कोमल शरीर वाला, कांतिवंत, ममता रहित, दीक्षानी वांछा करनार, त्रीश वर्ष गृहस्थावासे रह्या, प्रभुना मातापिता तो प्रभुनी अट्ठावीश वर्षनी वयमां देवलोके[1] पहोंच्या ते वखते दीक्षा लेवाने माटे पोताना म्होटा भाइ नंदीवर्द्धननी आज्ञा मांगी अने भाइने कह्युं के 'मातापिता जीवता रहे त्यां सुधी म्हारे घरमां रहेवुं' एवी म्हारी प्रतिज्ञा हती ते पूर्ण थइ. त्यारे नंदीवर्द्धन बोल्या के भाइ ! तुं दाझ्या ऊपर लूण न्हांखे छे. केमके मातापिता मरण पाम्यां तेनो वियोगरूप दुःख तो हालमां मने कायम छे तेना ऊपर वली त्हारा वियोगरूप लूण न्हांखवुं ते म्हाराथी सह्युं जाय नहीं. हजी तो माता पितानो शोक पण मट्यो नथी. माटे हुं दीक्षा लेवानी रजा हमणा आपीश नहीं. भगवान बोल्या के माता, पिता, भाई, व्हेन एतो जीवने अनंतिवार थयां, ते सर्वने मूकीने वली जीव तो एकलोज आवे छे, एकलोज जाय छे, अने एकलोज पोतानां करेलां शुभाशुभ कर्मोने

---

१ आवश्यकनिर्युक्तिमां तो चोथे देवलोके गया एवुं लख्युं छे. ए वातनुं समाधान करवा सारुं केटलाएक एवी कल्पना करे छे के देवोनी बधी मली चार निकाय छे तो ते चार देवनिकाय आश्रयी ए चोथी निकाय वैमानिक देवोनी छे माटे ए चोथो देवलोक ते चोथी निकाय वैमानिक देवोनी समजवी. तो ते चोथी निकायमां बारमो देवलोक आवी गयो. तेथी आचारांगमां कह्या प्रमाणे बराबर वात मली आवे छे. ए प्रमाणे समाधान करे छे, पछी तत्त्व केवलीगम्य छे.

भोगवे छे, एवी रीते संसारमां कोइ कोइनो सगो नथी तो हवे कोनो कोनो शोक करीए अने कोनी कोनी साथे प्रतिबंध राखीए ?; नंदीवर्द्धन बोल्या के भाई ! एवुं हुं पण जाणुं छुं तो पण हुं शुं करुं ? म्हारे मोहनीय कर्मनो बंध हजी घणो भारे छे, तेथी त्हारो विरह हुं खमी शकतो नथी. माटे हजी म्हारा कहेवाथी तुं बे वर्ष घरमां रहे तो ठीक छे. उत्तम पुरुषनी चाल छे के–दुःखियाओने देखी तरत करुणा आवे. माटे भाइनुं एवुं कहेण सांभलीने कह्युं के हे भाई ! हुं बे वर्ष रहीश पण भातपाणी सर्व फासु लइश, म्हारा वास्ते आरंभ करीने कांइपण बनाववुं नहीं. त्यारे भाइए कह्युं के सुखे एमज रहो; अमे तमारा वास्ते कांइ करीशुं नहीं, त्यारे भगवान फरी पण बे वर्ष गृहवासे रह्या. ज्यारे भगवान जन्म्या हता त्यारे लोकमां एवी प्रसिद्धि थइ हती के चौद स्वप्न माताए दीठां छे माटे ए चक्रवर्त्ति थाशे; एवुं जाणीने श्रेणिक अने चंद्रप्रद्योतन राजाए पोताना कुमारोने बालक ठाकोरनी सेवा करवा निमित्ते मोकल्या हता ते सहुए प्रभुने आवा घोर अनुष्ठान करता देखीने विचार्युं के ए चक्रवर्त्ति तो नथी, एतो संयम ग्राही तीर्थंकर छे एवुं जाणी ते सर्व पोत पोताने स्थानके गया. भगवान पण एवी स्थितिमां वली बे वर्ष गृहस्थावासे रह्या, सर्व सचित्त वस्तुनो त्याग कर्यो, ब्रह्मचर्य पाल्युं पण जे वखत दीक्षा लीधी छे ते वखत सचित्त जलथी स्नान कर्युं छे. केमके एवी मर्यादा छे के दीक्षा लेती वखतनुं स्नान उष्ण जलथी करवुं तीर्थंकरने न होय तेथीज प्रतिमाने पण उष्ण जल चढावता नथी.

भगवाने आपेलो वार्षिकदान—

ज्यारे एक वर्ष बाकी रह्युं त्यारे नवलोकांतिक देवो आव्या तेनां नाम कहे छे–१ सारस्वत, २ आदित्य, ३ वह्नि, ४ वरुण, ५ गर्द्दतोय, ६ तुषित, ७ अव्याबाध, ८ अग्नि, ९ अरिष्ट ए नव आवीने जो पण

भगवान स्वयंबुद्ध छे तो पण एमनी एवीज मर्यादा छे माटे प्रभुनी पासे आवीने बोल्या के जय जयवंत होवो, हे समृद्धिमान ! हे कल्याणवान ! तमारुं भलुं थाओ, हे क्षत्रियोमां वृषभ समान ! तमारो जय होवो. बोध करो, बोध करो, बूझो बूझो, हे भगवान् ! हे लोकनाथ ! सर्व जगतना जीवने हितकारी प्रवर्त्तो, हे भगवान् ! तमे धर्मतीर्थ प्रवर्त्तावो, ते धर्मतीर्थ सर्व लोकने हितकारी, सुखकारी, मोक्षकारी थाशे एवुं कहीने जय जय शब्द करे. श्रमण भगवान श्रीमहावीरस्वामीने मनुष्य योग्य गृहस्थधर्मथी—गृहस्थना व्यवहारथी पहेला पण अनुपम उपयोग ते अप्रतिपाति एवुं अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन हतुं ते अनुत्तर अवधिज्ञान अने अवधिदर्शने करी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणीने, रूपानो त्याग करीने, सोनानो त्याग करीने, धननो, राजनो, देशनो, वाहननो, कोठारनो, भंडारनो, अंतेउरनो, देशवासी लोकनो, धन, कण, धान्य, मणिरत्न, मोति, दक्षिणावर्त्त—शंख, शिला, प्रवालं, रातां रत्नादिक जे पोतानी पासे छतां छे, हाजर छे ते सर्वनो त्याग करीने अर्थात् तेना ऊपरथी मन उतारीने सर्व रूपादिक छोडीने जे चांदी प्रमुख धरतीमां दाटेला होय तेने बहार काडीने ते सहु आपणा गोत्रिओने वांटी आपीने वरसीदान आप्युं. तेनो अधिकार एवो छे के—भगवान दीक्षाना दिवसथी एक वर्ष पहेलां वरसीदान देवा मांडे, ते सूर्य ऊग्याथी मांडीने जमवानी वेला पर्यन्त प्रतिदिवसे प्रभातना सवा पहोर दिवस चढतां सुधी नित्यप्रत्ये एक क्रोड ने आठ लाख सोनैया भगवान दानमां आपे अने गाममां एवी उद्घोषणा करे के जेने जे वस्तु जोइए ते धणी ते वस्तु मांगे त्यारे जे धणी जे मांगे तेने ते आपे. ते सर्व शक्रेंद्रना आदेशथी देवता पूर्ण करे. एवी रीते एक वर्षमां त्रणसो क्रोड एटले त्रण अब्ज, अट्ठासी क्रोड, ने एंशी लाख, एटला सोनैया दानमां आपे. ते सोनैयो एक एंशी रतीभार जेटलो होय अने

तेना ऊपर तीर्थंकरनां मा बापनुं तथा पोतानुं नाम होय छे. बारसो सोनैयानो एक मण करता नव हजार मण सोनैया दिनप्रत्ये दान देवाय, तेना आजना समय प्रमाणे एक गाडलामां चालीश मण भार न्हांखतां बसो ने पच्चीश गाडलां थाय. ते सोनैया शक्रेंद्रना आदेशथी वैश्रमण देवता देवमायाए करी आठ समयमां निपजावीने, तीर्थंकरनां घरमां भरे, ए दान देवानो अतिशय छे, अने तीर्थंकरना हाथने विषे सौधर्मेन्द्र एवी स्थिति करे के दान देतां थकां तीर्थंकरनो हाथ थाके नहीं अने ईशानेन्द्र रत्ने जटित सुवर्णनी लाकडी लइ ऊभो रहे ते चोसठ इन्द्र वर्जीने बीजा सामान्य देवताओने दान लेतां वर्जे, तथा जे मनुष्यनां ललाट मांहे जेवी प्राप्ति होय, तेवुं तेना मुखमांथी ईशानेन्द्र वचन कहेवरावे, तथा चमरेन्द्र अने बलेन्द्र ए बे इन्द्र जो तीर्थंकरनी मुठीमांहे अधिक द्रव्य आव्युं होय तो पाछुं पडावी लेवे अने ओछुं द्रव्य आव्युं होय तो पूर्ण करे. मांगनारनी प्राप्ति माफक पामे तथा भुवनपति देवता भरतक्षेत्रना मनुष्यने दान लेवा सारुं तेडी लावे अने वाणव्यंतर देवो ते मनुष्यने पाछा तेना स्थानके मूकी आवे तथा ज्योतिषी देवता विद्याधरोने दान लेवानी खबर आपे. ए सर्व तीर्थंकरनां अतिशय जाणवा. ए प्रस्तावे तीर्थंकरना पिता म्होटी त्रण शालाओ करावे. अहीं भगवानना माता पिता देवलोक गयां छे माटे तेना ठेकाणे एमनो म्होटो भाई नंदीवर्द्धन छे ते त्रण शालाओ करावे; तेमां पहेली शालाए भरतक्षेत्रनां मनुष्यने अन्नपानादिक आपे, बीजी शालामां वस्त्र आपे अने त्रीजी शालामां आभरण आपे.

तीर्थंकरना हाथनां दाननो महिमा कहे छे—

चोसठ इन्द्रने दानना प्रभावे बार वरस पर्यंत मांहोमांहे क्लेश उपजे नहीं, तथा राजा अथवा चक्रवर्त्ति प्रमुख तीर्थंकरनुं दान

लइने ते सोनैया पोतानां भंडारमां मूके तो बार वर्ष सुधी तेमनो भंडार अखूट रहे, तथा शेठ सेनापति आदिकने दान मले तो तेना महिमा थकी बार वर्ष पर्यंत यशःकीर्त्ति घणी वधे, तथा रोगी पुरुषने दान मले तो तेना प्रभावथी रोग सर्व मटी जाय अने फरी बार वर्ष पर्यंत तेना शरीरमां कोइ नवो रोग पेदा थाय नहीं इत्यादिक दाननो महिमा जाणवो. "छ घडी दिवस चढ्या पछी दान देवा मांडे ते पोणा बे पोहोर दिवस चढ्या सुधी दान आपे एवो पाठ घणी प्रतोमां लखेलो छे, परंतु आमां सूर्य-ऊग्याथी ते जमवाना वखत सुधी आपे एवो प्रथम लेख आव्यो छे." एवी रीते प्रभुजी वरसीदान रूप वर्षाद एक वर्ष सुधी वरसावीने मनुष्योना दारिद्र्य रूप दावानलने उपशमावे. आ दानना प्रभावथी जे दारिद्री हता ते सर्व धनवंत थया, घोडे करी वध्या, वस्त्रे करी वध्या, आभरणे करी वध्या, अने लक्ष्मीए करी सहित थया. ए प्रभुना हाथनुं दान लइने ज्यारे पोताने घेर पाछा आवे त्यारे तेना घरनी स्त्रीयो सरखी पण पोताना स्वामीने ओलखे नहीं. पछी इन्द्र महाराज आवी ओलखाण करावे त्यारे तेने सर्व प्रकारनी ओलखाण पडे. ए प्रभुना हाथनुं दान सर्व भव्य जीवोने मले परंतु अभव्यने सर्वथा मले नहीं.

प्रभुनो दीक्षा महोत्सव वर्णवे छे—

भगवाननो दीक्षा समय जाणीने नंदीवर्द्धन राजाए दीक्षानो महोत्सव करवाने अर्थे प्रथम तो क्षत्रियकुंडपुर नगरने विषे ध्वजाओ बंधावी, हाट शणगार्यां, घरघर तोरण बंधाव्यां. एवी रीतें नगर शणगारीने पछी चोसठ इन्द्र अभिषेक करवा आवे त्यारे देवोना प्रभावथी देवोए करेला जे आठ जातिना अभिषेक कलश ते कलश नंदीवर्द्धन राजाना करावेला अभिषेक कलशमां प्रवेश करी मली जाय. पछी नंदीवर्द्धन राजा भगवानने पूर्व सन्मुख बेसाडीने देवताए लावेला जलथी

भगवानने अभिषेक (स्नान) करावे ते वखते इन्द्रादिक देवो सर्व भृंगार दर्पण हाथमां लइ जय जय शब्द कहेता थका आगल ऊभा रहे. पछी भगवानना शरीरने लूंछी बावनाचंदने करी लेपे, अमूल्य वस्त्र, मुकुट, मोतीना हार, कंठसूत्र, केयूर, बाजुबन्द, बहिरखा अने कुंडलादिक सर्व जातनां आभरण पहेरावे, पुष्पादिके करीने कल्पवृक्ष समान करे. पछी नंदीवर्द्धनना कहेवाथी अनेक सेवक पुरुष पचास धनुष लांबी, पच्चीश धनुष पोहोली अने छत्रीश धनुष ऊंची माणिकनक रचित एवी एक 'चंद्रप्रभा' नामे पालखी बनावे तेमज देवता पण एवीज एक पालखी बनावे. ते पालखी दिव्यानुभावे नंदीवर्द्धनकृत पालखीमां प्रवेश करे पछी ते पालखी प्रभुना मुख आगल मूके. प्रभु ते पालखीमां पूर्व सन्मुख सिंहासन ऊपर आवीने बेसे अने भगवाननी जमणी बाजु कुलमां वडेरी कुलमहत्तरिका हंसलक्षणा स्त्री साडी लेइने बेसे, तथा डावी बाजु भगवाननी धाव्यमाता आवी दीक्षानां उपकरण लइने बेसे, तथा भगवाननी पछवाडे शोल शणगार पहेरीने एक घणीज स्वरूपवान् भली स्त्री छत्र धरीने बेसे, तथा ईशानकोणे एक स्त्री जले पूर्ण कलश हाथमां लइ ऊभी रहे, अग्निकोणे एक स्त्री मणिमय विचित्र वींजणो करती ऊभी रहे, ए सर्व स्त्रीयो शणगार करेली अने युवान अवस्थावाली जाणवी. त्यार पछी नंदीवर्द्धन राजानी आज्ञाथी एक हजार सेवक पुरुषो जेटलामां ते शिबिकाने उपाडे एटलामां ते वखतमां शक्रेन्द्र ते पालखीनी जमणी बाजुनी आगली ऊपरली तरफनी बाहा उपाडे, तथा ईशानेन्द्र डाबी बाजुनी आगली ऊपरनी बाहा उपाडे, तथा चमरेन्द्र जमणी बाजुनी पाछली तरफनी ऊपरनी बाहा उपाडे तथा बलीन्द्र डावी बाजुनी पाछली तरफनी ऊपरनी बाहा उपाडे अने बीजा भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषी अने वैमानिक देवोना जे इन्द्र छे ते ज्यां देखे त्यांथी उपाडे, केटलाएक देवदुंदुभी वजावे, केटलाएक पंचवर्णी

फूलनो वर्षाद् करे, पछी शक्रेन्द्र अने ईशानेन्द्र बाहाने छोडीने चामर ढोले त्यारे शिबिकाने बीजा इन्द्रो उपाडे. एम शिबिकाने प्रथम तो मनुष्य उपाडे पछी सुरेन्द्र, असुरेन्द्र, अने नागेन्द्र उपाडे. बीजा सर्व देवो हर्ष पाम्या थका केटलाएक आकाशे रह्या थका नृत्यादिक करे. आ ठेकाणे जेम वनखंड फूले करी शोभे, जेम पद्मसरोवरमां शरद्काले कमल शोभे, तेम देवता आकाशे रह्या थका शोभे छे तथा जेम अलसीनुं वन, कणेरनुं वन, चंपानुं वन, फूले करी शोभे तेम क्षत्रियकुंड नगरथी मांडीने देवताना भवन सुधी देवदेवीओथी आकाश संकीर्ण थयुं थकुं शोभे छे. प्रधान पडह, भेरी, झल्लरी, दुंदुभी इत्यादिक करोडोगमे वाजित्र आकाशे तथा धरतीए वाजी रह्यां छे, घरना व्यापारधंधा मूकीने मनुष्यना वृंद जोवा मल्या छे, हवे पालखी चालतां देवदेवी तथा नरनारी पोतपोतानी खुशी प्रमाणे मनमां आवे तेवा प्रकारनां हर्षनां वाजां वजावे छे, गाय छे, नाचे छे, फूल फल मोती प्रमुखने वरसावे छे. वरघोडामां भगवाननी आगल अनुक्रमे सहुथी पहेला तो आठ मंगल चाले, पछी पूर्ण कलश (भृंगार कलश) चाले, पछी म्होटी वैजयंति ध्वजा चाले, पछी छत्रधर चाले, पछी मणीपीठ (सिंहासन) चाले, पछी शणगारेला पण अस्वार विनाना एवा एकसो ने आठ हाथी चाले, पछी एकसो ने आठ घोडा चाले, पछी एकसो ने आठ शस्त्रोथी भरेला रथ चाले, पछी एकसो ने आठ पुरुष चाले, पछी घोडा, हाथी, रथ, अने पाला ए चार प्रकारनी सेना चाले, पछी एक हजार योजन ऊंचो अने न्हानी न्हानी एक हजार ध्वजाओथी मंडित महेन्द्रध्वज चाले, पछी अनुक्रमथी कुंतग्रहा, बाणग्रहा, तीरग्रहा, गोफणग्रहा, हास्यकारिका, कर्मकारिका, वशकारिका, ज्ञानकारिका, विनोदकारिका, खड्गधर, धनुर्धर, एवा पुरुषो चाले, पछी पाटीया धरवावाला पुरुष चाले, पछी घणा चारण, भिखारी मागता थका चाले, पछी घणा उग्र–भोगकुला-

दिकना क्षत्रिय, मांडविक, कोडुंबिक, शेठ, सेनापति, सार्थवाह, देव, देवी, प्रजालोक चाले, भगवाननी पछवाडे घणी सेनाये परवर्यो थको, छत्र चामर धरावतो थको, घणा आडंबर सहित नंदीवर्द्धन राजा चाले, बीजा पण घणा लोक चाले, ते वखत अनेक प्रकारनां वाजां वाजे तेनो शब्द सांभलीने नगरनी स्त्रियो पोतपोतानुं काम मूकीने त्यां आवे ते केवी रीते आवे ? तो के—

त्रण वातो स्त्रीयोने वल्लभ छे. एक झगडो, बीजुं काजल, त्रीजो सिंदूर. वली त्रण वातो बीजी अत्यंत वल्लभ छे. एक दूध, बीजो जमाइ, अने त्रीजुं वाजुं. यतः—" तिन्निवि तियां वल्लहा, कलि कज्जल सिंदूर । ए पुण अतिहि वल्लहा, दूध जमाई तूर ॥ १ ॥" माटे ते स्त्रीयो वाजानो शब्द सांभलीने उतावलथी आवी तेथी कोइएक स्त्री तो काजल आंखमां आंजती हती ते आंखने बदले गालोमां लगावी दीधुं अने गालोमां कस्तूरी लगाडवी हती ते आंखोमां आंजी दीधी, केटलिएक स्त्रीयो पगोमां झांझर पहेरवां हतां तेना बदले गलामां झणणाट करतां झांझर पहेरी लीधां, केटलिएक स्त्रीयोए गलामां पहेरवानां घरेणां हतां ते पगमां पहेरी लीधां, केटलीएक स्त्रीयोए कटीमेखला गलामां पहेरी लीधी अने गलानो हार ते कटीमेखलाने स्थानके केडमां बांधी दीधो, केटलिक स्त्रीयोए चंदन घसीने पगे चोपडयुं अने अलतो मस्तके चोपडी लीधो, केटलिएक स्त्रीयो अर्धुं स्नान कर्युं न कर्युं एवी थकी दोडती आवी, कोइक तो घाघरा ओढीने चालती आवी तेथी नीचेना भागमां नागीज दीसवा लागी, कोइक बीजी पारका पुरुषनी स्त्रीयोनां छोकरा ते भूलथी पोतानी काखमां तेडीने दोडी आवी, केटलिएक पोतानां रडतां बालकने पडतां मूकी चाली आवी, केटलिएक स्त्रियोए पहेरवानुं वस्त्र ताणीने बांध्युं नहीं तेथी वायराना योगे ते वस्त्र उडी गयुं. तेना योगे नववधू बालकुमारी सरखी दीसवा लागी, कोइ एक

स्त्रीए एक कानमां आभूषण पहेर्युं अने बीजा कानमां पहेरतां भूली गइ, कोइ एक स्त्री जमी तो खरी पण चलु करवुं रही गयुं, कोइक स्त्रीए एकज पग धोयो बीजो धोवो रही गयो, कोइक कांचली पहेरतां वीसरी गइ. एवी उतावलथी जोवा नीकली. केटलिएक स्त्रियो चावल उछाले छे, केटलिएक नाचे छे, अने केटलीएक गान करे छे. एवा आडंबरथी भगवाननो दिक्षामहोत्सव थयो ते क्या दिवसे थयो ? के-

ते काल ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी हेमंतऋतु एटले शीयालानी ऋतुनो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडीयुं, मागशिर वादि दशमीने दिवसे दिवसनी पाछली छाया एटले पोरिसी (एक पहोर) दिवस चढ्यां तथा सुव्रतनामा दिवसनुं नाम ते दिवसने विषे, विजयमुहूर्त्त आवे थके, चंद्रप्रभा नामा पालखीमां बेठा थका, जेनी आगल पाछल देवता अने मनुष्य चाली रह्या छे, शंखना वजाववा वाला, सोनानां चक्रना धरवावाला, हलना धरवा वाला तथा मंगल शब्द बोलवावाला एवा भिक्षु प्रमुख, चारण प्रमुख अने भाट प्रमुख; तथा घंटाना वजाववा वालाओनो समुदाय आशीष आपे छे के-हे समृद्धिवंत! तमारो जय जय होवो, हे कल्याणवंत! तमारो कल्याण थाओ, तमारां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र अतिचार रहित होवो, एमां भंग म थाजो, नहीं जीतवामां आवे एटले जीतवाने घणी कठण एवी जे इंद्रियो तेने तमे जीतो, साधुधर्म पालो, सर्व-विघ्न रहित होवो, उग्र-विहार करवामां तमारुं नाम थाओ, रागद्वेषरूप बे मल्लोने तमो हणो, तथा तपरूप धैर्य अने संतोष रूप लंगोटाने कसीने आठ कर्मरूप शत्रुओनुं मर्दन करो, उत्तम शुक्लध्यानथी अप्रमत्तपणे रह्या थका विचरो, हे वीर ! तमे आराधना पताका ग्रहण करो, त्रण लोकरूप रंग एटले मल्लनो अखाडो तेमां अंधकार रहित एवुं अनुपम केवलज्ञान, ते तमे पामो. मोक्षरूप परमपद पामवाने केवली भगवाने देखा-

क्यो जे सीधो मार्ग ते मार्गे तमे जाओ. केवी रीते जाओ ? तो के- बावीश परीषह रूप फोजने हणीने जाओ, हे क्षत्रियोमां वृषभ समान ! तमारो जय थाओ, घणा दिवस, घणा पक्ष, घणा मास, घणा वर्ष, जय पामो वली बे पक्षनो एक मास, बे मासनी एक ऋतु थाय, त्रण ऋतुए एक अयन थाय अर्थात् छ मासे एक अयन थाय एवा घणा अयन लगें, वली बे अयने एक वर्ष थाय छे, पांच वर्षनो एक संवत्सर थाय छे, एवा घणा संवत्सर पर्यंत परीषह तथा उपसर्गोथी डर नहीं राखो, वीजली सिंहादिकोना बीहामणा भय भैरवोने क्षमा सहित सहन करो, तमोने धर्ममां कोइ विघ्न म करो, एवुं कहीने जय जय शब्द करे; पछी भगवान श्रीमहावीर स्वामी दीक्षा लेवा नीकल्या ते वखते हजारो नेत्रोथी लोको देखी रह्या छे, देखी देखीने हर्ष पामी रह्या छे, हजारो लोको वचने करी स्तवना करी रह्यां छे, हजारो लोकोना मनमां एवुं छे के घणा काल पर्यंत ए जीवता रहो, हजारो लोको विस्तारी विस्तारीने मनमां एवा मनोरथ करी रह्या छे के-ए तीर्थंकर थाशे त्यारे एनी सेवा करीशुं, एमना कांति रूप गुण देखीने लोको एवुं चिंतवन करे छे के-ए अमारो स्वामी थाओ, हजारो लोको पोताना जमणा हाथनी आंगुलीथी देखाडी रह्या छे के-ए भगवान विराज्या छे एवो कहेते थके, हजारो लोकोना एटले हजारो पुरुष, हजारो स्त्रीयो अंजली सहित हाथ जोडी जोडीने प्रणाम करे छे ते जमणा हाथे लेते थके, हजारो गमे घरोनी श्रेणी प्रत्ये उल्लंघते थके, रूडा प्रकारे वीणा, हस्तताल, वाजित्र, गीत, शब्द ते मीठा मनोहर जयजय शब्दनी साथे मलेला एवा लोकोना स्वरोथी सावधान होते थके, सर्व ऋद्धि सहित, सर्व आडंबर सहित, सर्व बल सहित, सर्व सेना सहित, सर्व वाहन सहित, सर्व समुदाय सहित, सर्व आदर सहित, सर्व संपदा सहित,

सर्व उत्सव सहित, देखवाने मनमां आवे एवा सर्व मेलाप सहित, सर्व लक्ष्मी सहित, संभ्रम सहित, सर्व नगरलोक सहित, सर्व नाटक सहित, सर्व तालेवर सहित, सर्व अंतेउर सहित, सर्व पुष्प गंधमाला घरेणाए सुशोभित, सर्व वाजानां घोष सहित, म्होटी ऋद्धि, द्युति, बल, वाहन, समुदाय सहित, म्होटा भलां वाजां समकाल वाजतां थकां, शंख, ढोल, पडह, झालर, खरमुखी, हुडुक्क, देवदुंदुभी प्रमुख वाजानां प्रतिशब्द सहित, क्षत्रियकुंडपुर नगरनी वचमां थइने निकले, नीकलीने ज्यां ज्ञातखंडवन नामे उद्यान छे ज्यां अशोकवृक्ष घणुंज रूडुं छे, त्यां आवे, आवीने अशोकवरवृक्षनी नीचे पालखी राखे, राखीने पालखीथी उतरे, उतरीने पोतानां हाथथीज घरेणां माला प्रमुख अलंकारादि उतारे, उतारीने ते घरेणां जे तेमनां कुलमां वडेरी हंसलक्षण स्त्री ते पोताना वस्त्रमां लीए, पछी पोतानां हाथथीज पंचमुष्टि लोच करे ते केश इन्द्र महाराज पोते लइजइने खीरसमुद्रमां मूके. लोच करीने चउविहार छट्ठ एटले बेलानी तपस्या करे थके उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रनी साथे चंद्रमानो योग आवे थके एकज शक्रेन्द्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र लइने, एकला रागद्वेष रहित तथा साधुना सथवारा रहित थका द्रव्यथी अने भावथी मुंडित थइने, गृहस्थपणानो त्याग करीने अणगारपणो (साधुपणो) अंगीकार कर्यो.

जे वखते भगवान सामायिकनो उच्चार करे ते वखते शक्रेन्द्र सर्व कोलाहल वाजित्र प्रमुख बंध करे. पछी भगवान् 'नमोसिद्धाणं' एवुं कहीने 'करेमि सामाइयं' यावत् 'तस्स पडिक्कमामि' इत्यादि पाठ कहे. इहां बीजो गुरु करवानो अभाव छे. पोते स्वयं बुद्ध छे माटे 'भंते' ए पद कहे नही. तीर्थंकरनो एवोज कल्प छे, सामायिक उच्चार करतां ज भगवानने चोथुं मनःपर्यवज्ञान उपन्युं पछी सर्व इन्द्र तथा देवो ते भगवानने नमस्कार करीने नन्दीश्वरद्वीपे

जइ अट्ठाइ महोत्सव करीने पोत पोताने स्थानके गया, अने भगवाने पण पोताना भाइ नन्दीवर्द्धन प्रमुखने पूछीने विहार कर्यो. हवे स्वजनादिको पण ज्यां सुधी भगवान नजरे देखाता हता त्यां सुधी त्यांज ऊभा रह्या पछी सर्वे भगवानना गुण याद करता सशोक पोताने घेर आव्या.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक–विजयराजेन्द्रसूरीश्वर–सङ्कलिते
श्रीकल्पसूत्र–बालावबोधे पञ्चम–व्याख्यानं समाप्तम् ।



अथ षष्ठः व्याख्यान–प्रारंभः ।



भगवाने दीक्षा लइने पछी विहार कर्यो ते वखतमां बे घडी दिवस शेष बाकी रह्यो हतो त्यारे भगवान कुमारगामनी बाहेर काउस्सग्ग रह्या ते वखत एक हाली आव्यो तेणे पोताना बलदो भगवानने भलाव्या अने पोते घेर जइ जमीने केटलिएक वार पछी पाछो त्यां आव्यो, एटलामां आखो दिवस खेडवाथी थाकी गएला बलदीया तो वनमां चरता चरता क्यांय चाल्या गया पछी हालीये चोमेर घणा जोया पण बलद मल्या नही त्यारे भगवानने पूछवा लाग्यो के बलद क्यां गया ? ते वखते भगवान मौन रह्या थका कांइ पण बोल्या नहीं. पछी ते हालीए वनमां जइ आखी रात्रि बलदोने शोध्या परंतु तेने बलद जड्या नहीं अने बलद तो वनमां चरी चरीने पाछली रात्रे पोतानी मेळे त्यांज आवी बेशी रह्या. हाली पण पाछो आवीने जूएछे तो बलद त्यांज बेठा छे ते देखीने क्रोध पाम्यो थको बोलवा लाग्यो के हे पापी ! हे पाखंडी ! आ बलद त्हेंज संताडी मूक्या हता. ए बधुं त्हारुंज काम करेलुं देखाय छे. मने आखी रात्रि निरर्थक भमवुं पड्युं एम कही हाथमां रासडी लइने भगवानने मारवा दोड्यो ते वखतमां इन्द्र महाराजे पण अवधिज्ञाने करी भगवानने थतुं उपसर्ग

जाण्युं अने पोते त्यां आवीने हालीने कहेवा लाग्या के अरे दुष्ट ! तुं जाणतो नथी के आ श्रीवर्धमान–स्वामी नंदीवर्द्धन राजाना भाई छे, सिद्धार्थराजाना पुत्र छे एणे दीक्षा लीधेली छे एम कहीने हालीने हलकारी कहाड्यो. पछी इन्द्र महाराजे भगवानने कह्युं के–हे भगवन् ! आपने बार वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणुं छे तेमां उपसर्ग घणा थवाना छे माटे आप आज्ञा करो तो हुं आपनी पासे हरहमेश रहुं अने आपनी सेवा करुं तथा उपसर्ग निवर्त्तन करुं एवो म्हारा मननो मनोरथ छे. त्यारे भगवान बोल्या, के इन्द्र ! आ वात थइ नथी, थाती नथी अने थशे पण नहीं के श्रीअरिहंत भगवंत इन्द्रनी सहायथी केवलज्ञान पामीने मोक्षे जाय । अरिहंत तो पोताना बलवीर्यथीज केवलज्ञान पामीने मोक्षे जाय. एवुं सांभल्युं तो पण इन्द्रे मरणांतिक उपसर्ग टालवा सारुं भगवाननी माता त्रिशलादेवीनी बहेनना पुत्र सिद्धार्थनामे व्यंतरदेव तेने आज्ञा आपीने भगवान पासे मूकी गयो. अत्रे सिद्धार्थ व्यंतरने मासीनो दीकरो कह्यो पण कोइक स्थानके एने काको पण लखेल छे. पछी इन्द्रमहाराज देवलोके गया अने हाली पण पोताने घेर गयो इति हालीकृतोपसर्गः ।

हवे प्रभातमां भगवान त्यांथी विहार करीने कोल्लाग सन्निवेशे गया, त्यां 'बहुल' नामे ब्राह्मणना घरे कांस्यपात्रमां खीर लइने प्रभुए परमान्नथी पारणुं कीधुं. पात्र–धर्म बतावचा सारुं गृहस्थना कांस्यपात्रमां खीर लीधी त्यां पांच दिव्य प्रगट थया ए भगवंतनो अतिशय छे. ते पांच दिव्य कहे छे–एक तो देवता आकाशमां ध्वजा विस्तार करे, बीजो सुगंधि जल वर्षावे, त्रीजो फूल वर्षावे, चोथो देवदुंदुभी बजावे, पांचमो 'अहो दानमहो दानम्' एवो ध्वनि करे, प्रकारांतरे पांचमा दिव्यने विषे साडी बार क्रोड सोनैया वरसावे एवो पण लखेल छे. इहां पण कोइक आचार्यना मते पांचमुं वखाण पुरुं थयुं कहेवाय छे.

हवे प्रभुए ज्यारे दीक्षा लीधी, त्यारे इंद्रादिकोए सुगंधित बावना चंदनादिके करी भगवंतना शरीरे लेप कर्यो छे, तेनो गंध, चार मास जाजेरा पर्यंत न जाय, ते वासनाथी हजारो गमे भ्रमरादिक मदोन्मत्त थया थका भगवंतना अंगोपांगने वेधे छे, म्होटो उपद्रव करे छे कोनी पेरे ? तो के–जेम कामी पुरुष कामांध थया थका स्त्रीने आलिंगन देता तेना गलस्थल होठादिकने विषे अनुकूल पणे चुंबन करे, डंख मारे तेम भमरा पण वासनाए अन्ध थया थका, भगवंतना शरीरना अवयवे डंख मारे छे. ए दृष्टांत कह्युं पण अहींआं एटलो फेर छे, के स्त्री तो कामी पुरुषथी हारी जाय, परंतु भगवान् तो भमरानो एटलो बधो उपद्रव छतां पण वज्रऋषभनाराच संघयणना प्रतापथी मेरुना पेरे अडग रहे छे. अथवा अजाण्या कामी पुरुष, गंध ऊपर मूर्च्छा पाम्या थका गंध लेवाने अर्थे, भगवानना शरीर साथे पोतानुं शरीर घसवा लाग्या, तथा कामी स्त्रीयो आवीने आलिंगन करवा लागी एम भगवान पासेथी सुगंध मागवा लाग्या एवो उपसर्ग चार महीना जाजेरा रह्यो तो पण भगवान डग्या नहीं मेरुनी पेरे अकंप (अचल) रह्या.

हवे भगवान त्यांथी विचरता मोराक–सन्निवेशना विषे सिद्धार्थ राजा प्रभुना पिता तेनो मित्र कुलपति, 'दुरइज्जंत' नामा तापसना आश्रमे आव्या, तापस पण भगवानने देखी सहामो मलवा आव्यो, तेने भगवंत पण नजीकमांज पूर्वपरिचयाभ्यास थकी हाथ पसारीने मल्या, पछी तेना आग्रह थकी नीराग चित्त थका एक रात्रि त्यां रह्या, फरी प्रभाते विहार करवा लाग्या, त्यारे ते तापस, पहोंचाडवा साथे चाल्यो अने आठ मास अन्यत्र विहार करीने चोमासुं पोताना आश्रमे रहेवानी प्रभुने विनंति करी, घणो आग्रह कर्यो त्यारे प्रभुए देशकाल विचारीने कह्युं के एमज थाओ एवुं कही पछी चार ज्ञाने सहित एवा प्रभु

ते पृथिवीने विषे विहार करतां ज्यारे चोमासुं आव्युं त्यारे ते तापसनी झूंपडीमां रहेवाने आव्या, कुळपतिए तृणनुं झूपडुं प्रभुने रहेवा सारुं आप्युं. भगवान तेमां रह्या पण दैवयोगे वर्षाद न थयो त्यारे गामनी गायो प्रमुख ढोर भूखें मरतां थकां झूंपडीना तृणखलां खावा आवे ते जोइ बीजा तापसो तो पशुना समूहने हांकी काढे पण प्रभु तो मौनपणे रहे, कोइ जानवरने तृणखलां खातां दूर करे नहीं, एम करतां सर्व तृण पशुओ खाइ गयां त्यारे झूंपडुं उघाडुं देखी कुलपति बोल्यो के प्रभो! पंखीओ पण पोताना माळा सांचवे छे अने तमे तो राजपुत्र थइ पोतानो आश्रम पण सांचवी शकता नथी? एवी रीते कुलपतिने अप्रीति उपजी देखी भगवाने निर्धार्युं के म्हारे अहींआं रहेवुं नहीं, पछी आशाढी पूनमथकी पंदर दिवसे एटले श्रावणवदि अमावास्याए चोमासाना पन्नर दिवस जातां प्रभुए त्यांथी विहार कर्यो. तेथी ' उपज्या भगवंत न गणे चोमासुं ' एवुं कहेवाणुं. त्यां भगवंते पांच अभिग्रह लीधा–ते कहे छे. एक अप्रीति उपजे त्यां न रहेवुं. बीजुं ज्यां सुधी छद्मस्थपणुं छे त्यां सुधी निरंतर काउस्सग्गमांज रहेवुं, त्रीजुं गृहस्थनो विनय न करवो, चोथुं यथासंभव मौनपणे रहेवुं, तथा कायाए करी ऊभाज रहेवुं पण सुवुं नहीं, अने पांचमुं सर्वदा हाथमां भोजन करवुं.

शूलपाणियक्ष–कृतोपसर्ग; अने प्रभुने आवेलां दश स्वप्न—

एवा अभिग्रह सहित विचरतां थकां शूलपाणि यक्षने देहरे अस्थिग्रामे प्रथम चोमासुं रहेवा पधार्या, त्यां अत्यंत उपसर्ग सहन करीने शूलपाणि यक्षने प्रतिबोध्यो, तेनी कथा कहे छे–धनदेव नामे सार्थवाह पांचशे गाडां मालनां भरी, व्यापार करवा कोइ गामांतरे जतो हतो, मार्गमां वेगवती नामे बहुवालुकावाली नदी वर्द्धमान गाम पासे आवी, त्यां उन्हाळाना दिवस हता तेथी कोइ बलद ते रेती

भरेली नदीमांथी गाडुं ताणीने चाली शके नहीं, पण ते बलदोमां एक बलद् घणो जोरावर हतो तेणे ते पांचशे गाडां नदी थकी उतारी पहेले पार कर्यां, परंतु पोते त्रूटी पड्यो, तेथी चाली न शक्यो त्यारे सार्थ-वाहे चारा पाणीने अर्थे वर्द्धमान गामना अधिकारि शेठ, पटेल, गामोद, पटवारी, प्रमुख पंचने ते धोरी भलाव्यो. तेने घृत, गोल, तृण, जला-दिक सारुं घणुं धन आप्युं, वली ते बलद्नी चाकरी करवानी घणी भलामण आपीने शेठ त्यांथी चाल्यो गयो. पछवाडेथी ते गामना लोकोए ते बलद्नी सार संभाल कांइ पण कीधी नहीं, शेठनुं धन आपेलुं सर्व वांटीने खाइ गया. पछी ते बलद् भूख-तृषाथी पीड्यो थको अकाम निर्जराए मरण पामीने व्यंतर देवोमां शूलपाणी नामे यक्ष थयो. तेणे अवधिज्ञानथी पाछलाभवनुं वृत्तांत जोयुं,अने गामनां लोको ऊपर रूठ्यो थको मरकी विकूर्व्वी, तेथी घणां माणस अने ढोर मरवां लाग्यां. त्यां कोइ माणसने बालवावालो पण मले नहीं. जे कोइ मरे तेने लोको गामनी बाहेर न्हांखी जाय तेथी त्यां हाडकांना ढगला थइ गया. आव-जाव करनारा लोकोए तेनुं ' अस्थिगाम ' नाम पाडी दीधुं. पछी घणा माणसोने मरता देखीने गामनां लोके मली तेने आराध्यो त्यारे यक्ष प्रगट थइ आकाश वाणीथी बोलवा लाग्यो के-"हुं बलद्नो जीव छुं, तमे म्हारुं द्रव्य खाइने कांइ पण चाकरी करी नहीं तेथी तमे मन्हे कुमरणथी मारेल छे, माटे हुं कोप्यो छुं. तो तमे हवे म्हारा नामनुं हाडका ऊपर देहेरुं करावो, तेमां वृषभना रूपे शूलशस्त्र हाथमां आपीने म्हारी मूर्त्ति थापो, तेनी पूजा करो तो रोग पण मटशे, अने जीवता पण रहेशो, नहीं तो सर्व मरण पामशो." एवी वात सांभलीने लोकोए मरण भयथी देहेरुं करावी तेमां तेनी प्रतिमा थापी पूजा करी, तेथी मरकी उपशम थइ. हवे भगवान् ते शूलपाणी नामा यक्षने प्रतिबो-धवा ते देहेरे आव्या त्यारे ते यक्ष महा दुष्ट छे, कोइने पोताना

देहेरे रात्रे वास करवा दिए नहीं, तेथी ते यक्षना देरानो पूजारी इंद्र-शर्म्मा नामे विप्र हतो, तेणे भगवंतने रहेवानी मनाइ करी, तेम बीजा लोकोए पण वार्या, तो पण प्रभु मौनपणे त्यां रात्रे काउस्सग्ग रह्या, त्यारे यक्ष रूठ्यो अने संध्या समयथी उपसर्ग करवा लाग्यो, प्रथम तो प्रभुने डरावया सारुं अट्टाट्टहास्य कर्युं. पछी हस्तीनुं रूप करी उछाल्या, पिशाचनां रूप करी छरी कहाडी बीवराव्या, तेमज सर्प्प थइने डंक मार्यो इत्यादि घणा उपसर्ग करवा मांड्या पण भगवंत लगार मात्र क्षोभ पाम्या नहीं; ते पछी मस्तक, कान, नासिका, आंख, दांत, होठ, पूंठ, नख, ए आठ स्थानके विविध वेदना उपजावी. तथापि भगवंतने अक्षोभ जाणी, यक्ष प्रतिबोध पाम्यो अने प्रभुनी भक्ति करवा लाग्यो, एटलामां सिद्धार्थ व्यंतर आव्यो, तेणे कह्युं के–अरे यक्ष! आ तें शुं कर्युं? तुं नथी जाणतो के ए सिद्धार्थ राजानो पुत्र छे, म्होटी समतानो भंडार छे, जो इन्द्र महाराज जाणशे, तो तने बाहिर काढी मूकशे, ते सांभली भगवानना शांत मुद्रा देखी यक्षे पोतानो अपराध खमाव्यो अने ते प्रभु आगल गीत गान करवा लाग्यो अने समकित पण पाम्यो. भगवंतने पण रात्रिना चार प्रहर पर्यन्त कदर्थना थई तेना श्रमे करी काउस्सग्गमां ज पाछली रात्रे बे घडी निद्रा आवी गई, निद्रामां प्रभुए दस स्वप्न दीठां, ते कहे छे–एक ताल पिशाच हण्यो, बीजुं उज्ज्वल कोकिला पक्षी अने त्रीजुं पंचवर्ण विचित्र कोकिलानुं जोडुं सेवा करतुं दीठुं. चोथी फूलनी बे माला दीठी. पांचमुं गायनो वर्ग दीठो, छट्ठुं पद्मसरोवर दीठुं, सातमुं समुद्र भुजाए तर्यो दीठो, आठमुं सूर्य ऊगतो दीठो, नवमुं आंत्रडे वींट्यो मानुषोत्तर पर्वत दीठो, दशमुं पोते मेरुपर्वते चढ्या, एवुं दीठुं. ए दश स्वप्न देखीने भगवंत प्रभाते जाग्या, ते वखते लोक पण एवुं जाणता हता के ए साधु रात्रे मरी गयो हशे. तेथी प्रभाते जोवा

आव्या त्यां भगवाननो महिमा देखीने लोकोए भगवंतने पूज्या, घणां हर्ष पाम्यां, अने स्वामीनो घणो महिमा कर्यो, एवा समयने विषे श्रीपार्श्वनाथनो श्रावक उत्पल नामा निमित्तियो पण त्यां आव्यो प्रभुने वांद्या, अने कहेवा लाग्यो के हे स्वामिन् ! तमे पाछली रात्रे स्वप्नमां ताल पिशाच हण्यो, तेथी तमे तरत मोहनीय कर्मने हणशो. वली श्वेत कोकिल पंखी दीठो, तेथी अक्षोभपणे शुक्लध्यान ध्यावशो. पांचवर्णां विचित्र कोकिल पंखीनुं जोडलुं दीठुं, तेथी द्वादशांगी प्ररूपशो तथा गायनो वर्ग दीठो तेथी अनुपम चतुर्विध संघनी थापना करशो, वली तमे देवताओथी सेवित पद्मसरोवर दीठुं, तेथी चार निकायना देवता तमारी सेवा करशे. वली मेरुपर्वतनी चूलिका ऊपर तमे चढ्या एवुं दीठुं, तेथी तमे देवोथी रचित सिंहासने बेसी, धर्मोपदेश देशो, धर्मनी प्ररूपणा करशो, वली सूर्यनुं मंडल दीठुं, तेथी केवलज्ञान पामशो, तथा मानुषोत्तर पर्वत आंत्रडे वींट्यो दीठो, तेथी जगत्मां यशः कीर्त्तिनुं मंडाण पामशो, तथा प्रतापवंत देवनिकायथी सेवनीय थशो. पोतानी भुजाबले समुद्र तर्यो दीठो तेथी तमे संसाररूप समुद्रने तरशो. हे भगवन् ! तमे फूलनी मालानुं युगल दीठुं तेनो अर्थ हुं नथी जाणतो. माटे तमेज उपकार करीने कहो, त्यारे भगवंत मौनी छे माटे छद्मस्थावस्थाने विषे बोलय नहीं, तेथी सिद्धार्थ व्यंतरो भगवानना मुखमां प्रवेश करीने कहेवा लाग्यो के फूलनी बे माला दीठी माटे श्रावकनो अने यतिनो ए बे प्रकारना धर्मनी प्ररूपणा हुं करीश. एवी रीते फल सांभलीने सर्व लोक भगवानने वंदन करी पोतपोताने स्थानके गया. हवे भगवान् निर्विघ्न पणे पन्नर दिवस न्यून प्रथम चोमासुं पूर्ण करीने मेरुनी परे धैर्य धरता समता रूप रसमां रमता थकां चोमासी पारणुं करी त्यांथी विहार कर्यो. ए प्रथम चोमासुं १

अच्छंदक-निमित्तियानो वृत्तान्त—

त्यांथी विहार करी मोराकसन्निवेशे उद्यानमां आवी काउस्सग्गे रह्या, त्यां भगवाननो महिमा करवा सारुं सिद्धार्थे व्यंतरो स्वामीना शरीरमां संक्रमीने लोक आगल भूत, भविष्यत् अने वर्त्तमान संबंधि निमित्त भाषे छे, तेथी त्यांना लोक भगवाननी सेवा करवा लाग्या. ते गाममां ' अहच्छंदक ' नामा निमित्तियो रहे छे ते भगवाननी ईर्ष्या करवा लाग्यो. केमके लोक तेने कहेवा लाग्या के देवार्य सरखो तुं निमित्त जाणतो नथी. म्हे काले खेत्रमां सर्प्प दीठो, ते तेणे कही दीधो तथा हुं जमीने गयो हतो ते कही दीधुं त्यारे ते अहच्छंदक नामा निमित्तियो क्रोध करी भगवाननुं निमित्त असत्य करवा सारुं हाथमां तृण लइने प्रभुने पूछवा लाग्यो के हे आर्य ! आ तृण छेदाशे, किं वा नहीं, ते सांभली सिद्धार्थे ना कही, त्यारे ते छेदवा लाग्यो. एटलामां इंद्रे अवधिज्ञानथी जोइने भगवंतनो महिमा राखवाने ते निमित्तिआनी आंगली छेदी न्हांखी तेथी तृण त्रुटयु नहीं. निमित्तिओ विलखो थयो. पछी सिद्धार्थे लोक आगल कह्युं के ए निमित्तिओ चोर छे, कांइ भण्यो नथी. एणे ' वीराघोष ' कर्मकरनो दश पलनो कांसीनो पात्र चोरीने खजूरी वृक्ष हेठे दाट्यो छे तथा इन्द्रशर्मा ब्राह्मणनो बोकडो मारीने तेनुं मांस एणे खाधुं छे, तेनां अस्थि एना घरनी पछवाडे बोरडीना झाड नीचे दाट्यां छे तथा त्रीजुं दूषण जे एमां छे ते हुं नहीं कहुं. एनी स्त्रीज कहेशे. एवुं सांभली लोके सर्व वात सांची मानी एनी स्त्रीने जइ पूछ्युं, त्यारे ते स्त्री बोली के ए पापिष्ट, पोतानी भगिनीने भोगवे छे, एवी पोतानी निंदानी वातो प्रसिद्ध थवाथी अहच्छंदक लज्जा पाम्यो अने गाममां फिट् फिट् थयो थको प्रभु पासे आवी विनंति करवा लाग्यो के तमे त्रैलोक्य पूजनीक छो, हुं अहींआंज सुखे उदरपूरणा करुं छुं ने जीवुं छुं. भगवंत अप्रीति थई जाणी त्यांथी विहार करी गया.

निर्भाग्य-सोमदेवविप्रनी कथा—

भगवान श्रीमहावीरस्वामी एक वर्ष ऊपर एक महीना सुधी तो इंद्रे आपेला देवदुष्य वस्त्र सहित रह्या अने त्यार पछी वस्त्र रहित अचेलक थया, पण अतिशयना योगथी नागा देखाय नहीं. हवे वस्त्र रहित शी रीते थया? ते कहे छे-भगवाने ज्यारे वरसीदान दीधुं त्यारे सिद्धार्थराजानो मित्र सोमदेव नामा ब्राह्मण जन्मथी दरिद्री छे ते परदेश धन कमाववा गयो हतो पण क्यांए धन पाम्यो नहीं. जेवो गयो तेवो ठाले हाथे पाछो पोताने घेर आव्यो, पण एक कोडी मात्र कमाइ आव्यो नहीं, दरिद्रीज रह्यो. त्यारे तेनी स्त्रीये तेने घणो निर्भंछ्यो अने कहेवा लागी के-अरे निर्भाग्य! श्रीमहावीरस्वामिए वरसीदान दई दीक्षा लीधी ते वखते तुं क्यां मरी गयो हतो? तुं ज्यां त्यां आवो ने आवो दरिद्री रह्यो. जेम घडो ज्यां जाय त्यां पाणी भरे, तथा कपासीयो ज्यां जाय त्यां लोढाय तेम तुं पण दरिद्री रह्यो. पण दारिद्रय ह्हारो केडो मूकतुं नथी, जेम कोइ दरिद्री पुरुष धन कमावाने अर्थे परदेशे जवा तैयार थयो त्यारे ते पुरुषे दारिद्र्यने कह्युं के-"रे दालिद्दवियक्खणा, वत्ता इक्क सुणिज्ज। हम देसांतर चल्लिया, तुं थिर घेर रहिज्ज ॥ १ ॥" एटले हे दारिद्र्य! हे विचक्षण! तुं एक म्हारी वात कहुं ते सांभल के हवे हुं देशांतर जाउं छुं अने तुं घरमां ज थिर थइ रहेजे. एवां तेनां वचन सांभली दारिद्र्य बोल्युं-"पडिवन्नो गिरुआ तणो, अविहड जाण सुजाण। तमे देशांतर चल्लिया, तो अमे आगेवान ॥ १ ॥" हे भाई! सांभलो हुं तो म्होटानो विनय मूकीश नहीं केमके जे उत्तम पुरुष अंगीकार करे ते अविचल जावज्जीव अंगीकार करे माटे जो तमे देशांतर जाशो तो हुं पण आगेवान थइने तमारी साथे आगलनुं आगल चालीश. तेम हे निर्भाग्य! ह्हारी पछवाडे पण एमज दारिद्र रहे छे. तुं हमणा घरमां आव्यो छे पण घरमां तो कांइ

नथी, खावाने अन्न नथी, पीवाने पाणी नथी, भूखे मरती बेठी छुं, क्यांथी त्हारा वास्ते खावा सारुं लइ आवुं, घरमां तो शाकमां न्हांखवाने मिरची अने मीठुं पण नथी, मात्र दारिद्रनी लहेरो आवे छे. यतः— " जिणघर भेंस न रीके पाडो, जिणघर बलद न दीसे गाडो। जिणघर नारि न चूडी खलके, तिणघर दारिद्र लेहेरी लहके ॥ १ ॥ " जेना घरमां भेंस सहित पाडो रींकतो न होय, वली जेना घरमां बलद अने गाडुं दीसतुं न होय, अने जेना घरमां स्त्रीना हाथमां चूडी खलकती न होय, तेना घरमां दारिद्र लहेरे लहकतुं जाणवुं. माटे तुं घरमां आवीश नहीं, आवीश तो भूखे मरीश. अरे दरिद्री ! हजी पण तुं भगवान पासे जइश तो कांइक मलशे. एवां स्त्रीनां वचन सांभली ते ब्राह्मण, भगवान पासे आव्यो अने बे हाथ जोडी हीन स्थिति देखाडतो थको पगे लागीने दीन वचने विनंति करवा लाग्यो के—कृपानाथ! हे परदुःखभंजक ! हे परमार्थना करनार ! हे म्हारा मित्रना पुत्र ! हे दारिद्रय रूप वेलडीनां छेदक ! तुं म्हारी मूल थकी विनंति सांभलीने म्हारो निस्तार कर, आ म्हारो दारिद्ररूप बांधव, म्हारो सहायी, म्हारी साथे जन्म्यो, म्हारी साथे वध्यो, वली परणवाना समयमां पण म्हारा पहेलां म्हारी स्त्रीने परण्यो, शुं घणुं तमारा आगल कहुं ? ए दारिद्रय म्हारा शरीरनी छायानी परे तथा पोतानी बांधेली कर्मप्रकृतिनी परे एक क्षण मात्र पण म्हारो केडो मूकतो नथी. म्हें धन उपार्जन करवा निमित्ते परदेश चालवाना समये एने घणो घणो वर्ज्यो तो पण ए म्हारी साथेज चाल्यो, म्हें गंगामां स्नान कर्युं तो पण एणे साथेज स्नान कर्युं; म्हे यमुना, नर्मदा संबंधि तीर्थो कर्यां तो एणे पण म्हारी साथेज तीर्थ कर्यां, माटे एनां प्रभावथी परदेशमां घर घरने विषे लोकोनी आगल भिक्षा मागती वखते हुं तो सर्वने देखुं परंतु दारिद्रय बांधवना प्रतापथी हुं प्रत्यक्ष (प्रगट) छतां पण म्हने कोइ पण देखे

नहीं. यदुक्तम्–"दीसंति जोगसिद्धा, अंजनसिद्धा य केइ दीसंति। दारिद्दजोग सिद्धा, पासेवि ठिया न दीसंति ॥ १ ॥" पुनरपि–"भो दारिद्र्य! नमस्तुभ्यं, सिद्धोऽहं तव दर्शनात्। अहं सर्वं प्रपश्यामि, न मां पश्यति कश्चन ॥ २ ॥" मतलब के योग साधीने सिद्ध थया ते पण नजरे देखाय छे, वली जे आंखोमां अंजन करी अदृश्य थया एवा सिद्ध जे होय ते पण कोइएक प्रयोगथी प्रगट नजरे देखाय, परंतु दारिद्र्यरूप योगे करीने जे सिद्ध थया ते पुरुष जो पासे ऊभा रह्या होय तो पण देखाय नहीं. माटे हे दारिद्र्य ! तुजने नमस्कार थाओ. जे हुं तारा दर्शनथी सिद्धपुरुष थयो तेथी हुं तो सर्वने देखुं छुं पण म्हने तो कोइ पण देखतो नथी, माटे हे स्वामिन् ! ते दारिद्र्य बांधवना प्रसादथी हुं परदेशने विषे घणो भम्यो, घणो उद्यम कर्यो, घणा शेठ साहुकारोनी चाकरी करी पण हुं भाग्यहीन तेथी एक फूटी कोडी मात्र पण धन पाम्यो नहीं. जेवो घरथी गयो हतो तेवोज घेर पाछो आव्यो. तेथी म्हें हजी म्हारा घरमां प्रवेश न कर्यो तेनी पहेलां ज तेणे म्हारा घरमां प्रवेश कर्यो, तेना प्रतापथी अनार्यिका एवी जे म्हारी स्त्री ते क्रोध करी, मुसल लइने म्हारी सन्मुख मने मारवाने दोडी त्यारे म्हें जाण्युं के मंगलिक करीने मुजने वधावे छे पण तेणे तो पासे आवीने एवां कठोर अने निष्ठुर वचन बोलवा मांड्यां अने कह्युं के हे निर्भाग्य–शिरोमणी! अरे जन्मदरिद्री ! अरे निर्गुणनाथ ! अरे ढोला ! हुं तुजने धन विना साक्षात् दारिद्री रूपने शुं करुं ! तुं परदेशे गयो, तो पण कांइ लाव्यो नहीं. म्हारे पण त्हारा दारिद्र्य रूप भाइना सहायथी " अन्नं नास्त्युदकं नास्ति, गृहे नास्ति युगन्धरौ। शाकमध्ये लवणं नास्ति, तन्नास्ति यत्तु भुज्यते ॥ १ ॥" अर्थात् घरमां खावाने अन्न पण नथी अने पीवाने पाणी पण नथी, जुवार पण नथी, शाकमां न्हांखवाने मीठुं पण नथी एवुं कांइ पण घरमां नथी के जेथी तुजने

आदर करी घरमां बेसाडीने जमाडुं. घरमां तो एक दारिद्रय लहके छे. वली ब्राह्मणी कहे छे-रे ढोला ! धनथीज जगतमां मानीता थाय छे, पण धन विना जगतमां कोइ कोइने पूछतुं नथी, यदुक्तम्-"धनैर्दुष्कुलीनाः कुलीना भवन्ति, धनैरेव पापात्पुनर्निस्तरन्ति । धनिभ्यो विशिष्टो न लोकेऽपि कश्चित्, धनं प्रार्जयध्वं धनं प्रार्जयध्वम् ॥ १ ॥' धनथी हीन-कुलवालो पण उत्तम कुलवालो कहेवाय छे, वली धने करीने पापथकी निस्तार पामे, धनवान होय तेज जगतमां म्होटो कहेवाय माटे धन उपार्जन करवानो उद्यम पुरुषने श्रेष्ठ छे. वली धन विना जीवतो थको पुरुष पण मडदा समान छे. यदुक्तम्-" धनमर्जय काकुत्स्थ ! धनमूलमिदं जगत् । अन्तरं नैव पश्यामि, निर्धनस्य मृतस्य च ॥ १ ॥" ज्यारे रामचंद्रजीने वनवास थयो त्यारे विचार्युं के वसिष्ठ-ऋषिने नमस्कार करीने चालीए त्यारे ज्यां कदलीवनमां वसिष्ठ ऋषि बेठा छे त्यां जइ रामचंद्रजीए नमस्कार कर्यो. परंतु वसिष्ठ ऋषिए नेत्र उघाडीने सामुं पण जोयुं नहीं. कारण के रामचंद्रजीनी पासे ते वखते कांइ पण धन न हतुं. पछी ज्यारे लंका जीतीने चतुरंगिणी सेना लइ धनधान्य सहित पाछा आव्या ते वखते वसिष्ठ ऋषि सात आठ पगलां स्हामा चाली आव्या, त्यारे रामचंद्रजी बोल्या के-त्हेज हुं रामचंद्र छुं अने आ तेनुं तेज कदलीवन तथा तमे वसिष्ठऋषि पण तेना तेज छो परंतु पहेलां हुं तमारी पासे आव्यो हतो त्यारे तो तमे नेत्र उघाडीने सामुं पण जोयुं न हतुं अने हमणा उठीने सात आठ पगलां स्हामा आव्या तेनुं शुं कारण ? वसिष्ठजी बोल्या के 'हे काकुत्स्थ ! (रामचंद्र !) एक धननुं उपार्जन करो, आ जगतमां धनथी ज प्राणीओ शोभे छे, परंतु निर्धनने अने मडदाने कांइ पण अंतर देखातुं नथी ' तुं प्रथम आव्यो हतो त्यारे निर्धन हतो तेथी म्हें त्हारा स्हामुं न जोयुं अने हमणां तो तुं सर्व विभूति सहित छे माटे हुं स्हामो

आव्यो छुं. वली स्त्री कहेवा लागी के हे मूर्ख ! धन विना हुं तने शुं करुं ? कह्युं छे के--" पुत्ता य सीसा य समं विभत्ता, रिसी य देवा य समं विभत्ता । मुक्खा तिरिक्खा य समं विभत्ता, मुया दरिद्दा य समं विभत्ता ॥ १ ॥ " पुत्र अने शिष्य ए बे बरोबर जाणवा, ऋषी अने देव ए बे बरोबर जाणवा, वली मूर्ख अने तिर्यंच ए बे समान जाणवा, तेमज मूवेला अने दरिद्री ए पण सरखाज जाणवा. ' अरे भाग्यहीन ! श्रीवीरभगवाने वरसीदान आपीने सर्वनां दारिद्र्यदुःखनो विनाश कर्यो, ते वेलाए तुं परदेश गयो ते व्हारे जेम द्राख पाकवाना समये कागडानी चांच पाकी जाय तेनी पेरे थयुं अथवा नदी तटे जवासाना झाड तुल्य तुं थयो. अथवा रात्रि दिवस मेघ वर्षतां छतां पण पलाशवृक्षनां पानडां त्रणज होय माटे रे अनिष्ट ! पापिष्ट ! रे पांडुरपृष्ट ! तुं इहांथी चाल्यो जा, इत्यादिक निष्ठुर वचनोथी घणो निर्भ्रंछीने, गलहत्थो देइने म्हने घरथी बाहेर काढ्यो. माटे ' आगे दारिद्र्य पाछे दारिद्र्य, डावे जमणे पासि । पंडियाणी मुज मारण मांड्यो, तेणे हुं आयो नासि ॥ १ ॥ ' स्वामिन् ! म्हारे आगल पण दारिद्र्य चाले छे, पाछल पण दारिद्र्य चाले छे अने बे बाजुए पण दारिद्र्य चाले छे एम म्हारे चारे बाजु दारिद्र्य चाल्युं आवे छे तेथी ब्राह्मणीए म्हने मारवा मांड्यो, परंतु हुं नाशिने तमारी पासे आव्यो छुं. अने म्हें विचार्युं के श्रीवीरप्रभु अगम्यगतिवंत छे, जो पण दीक्षा लीधी छे तो पण परमकृपालु छे, तेथी मुजने अवश्य कांइक आपशे, एवुं चिंतवीने प्रतीति पूर्वक निरधार करीने तमारी पासे आव्यो छुं माटे म्हारा दारिद्र्यने चूरीने मनोरथ पूर्ण करो. पण हे स्वामिन् ! एवुं मनमां आणशो नहीं के म्हारा वर्षीदानने अवसरे सर्व लोक मनवांछित दान पामी गया अने तुं कांइ पण केम पाम्यो नहीं, एवो विचार आणशो

मा. यतः—" स्वामिन् ! कनकधाराभि–स्त्वयि सर्वत्र वर्षति । अभाग्य-च्छत्रसंछन्ने, मयि नायान्ति विन्दवः ॥ १ ॥ " हे स्वामिन् ! तमे कनक रूप धाराथी सर्वत्र वरस्या पण म्हारा मस्तक ऊपरे अभाग्य रूप छत्र ढंकायुं हतुं तेथी एक बिंदु मात्र पण म्हारे माथे पड्युं नही त्यारे म्हें एवुं विचार्युं के ' रे मन अप्पा खंति धर, चिंताजाल म पाड । फल तित्तो-हिज पामीए, जित्तो लख्यो लिलाड ॥ १ ॥ ' एम चिंतवी बेसी रह्यो पण हे स्वामिन् ! एक तो तमारुं दान न पाम्यो ने वली तमारा दाननो व्यति-कर सांभलीने स्हामो मुजने म्हारी स्त्रीए घरथी काढी मूक्यो. कह्युं छे के ' त्वयि वर्षति पर्जन्ये, सर्वे पल्लविता द्रुमाः । अस्माकमर्कवृक्षाणां, पूर्वपत्रेषु संशयः ॥ १ ॥ '–स्वामिन् ! तमारा रूप मेघवर्षतां छतां सर्व-जन रूप वृक्ष नवपल्लवयुक्त थयां अने म्हारा सरखा अर्क वृक्षोने पूर्व-पत्रनो संशय थयो.

इत्यादि ललित पल्लवित वचन सांभलीने, कृपासागर भगवंत विचारवा लाग्या के हुं निर्ग्रंथ छुं, म्हारी पासे कांइ पण नथी अने ब्राह्मणने नहीं देवाथी प्रार्थना भंग थाय ते प्रार्थना भंग करवाथी लघुता थाय छे. यतः—" तणलहुयं तूस लहुयं, तणतुस लहुयं च पत्थणा लहुयं। तत्तोवि सो लहुओ, पत्थण भंगो कओ जेण ॥ १ ॥" सर्व थकी तृण लघु छे ते थकी तुष लघु छे अने तृण तथा तुष थकी पण प्रार्थना करवा वालो लघु जाणवो अने वली प्रार्थनानो भंग करवा वालो जे छे ते तो सर्व थकी लघु जाणवो. पुनरपि–" परपत्थणापवत्ति, मा जणणी जणउ एरिसं पुत्तं । उयरोवि मा धरिज्जओ, पत्थण भंगो कओ जेण ॥ १ ॥" पर पासे प्रार्थनानो करवा वालो एवो पुत्र हे माता ! तुं जणीश नहीं अने वली प्रार्थना भंग करनारने तो उदरने विषे पण धारण करीश मा. पुनरपि–" यान्तु यान्तु बत प्राणाः, अर्थिनि व्यर्थतां गते । पश्चादपि हि गन्तव्यं, क सार्थः पुनरीदृशः ॥ १ ॥ "–जाओ रे म्हारा

प्राण जे अर्थिप्राणी व्यर्थ घरथी जाय तेनी साथे तमे पण जाओ. केमके पाछल पण तमने कोइक दिवसे जावुं तो छेज तो एवो साथ वली तमोने मलवो मुस्केल छे माटे हमणाज जाओ. इत्यादिक शिष्टाचार आचारनो विचार जाणीने श्रीमहावीर देवे कृपा करी अरधुं देव दुष्य वस्त्र फाडीने ब्राह्मणने दीधो. विप्रने चीवर दीधाथी बीजा प्राणीओने एवुं जणाव्यो के—' जा सत्ति ता देहु धन, इणपरि अरकइ वीर। पितामित्र बांभण भणी, आधो दीधो चीर ॥ १ ॥ '—ज्यां सुधी घरमां संपत्ति होय त्यां सुधी धन, चीवर, अने अन्नादिकनुं दान देवुं, एवुं जणाववा प्रभुए पिताना मित्र ब्राह्मणने अरधुं चीर आप्यो.

ते ब्राह्मण अरधुं चीर लइने पोताने घेर गयो तेने चीवर सहित घरना समीपे आवतो देखीने ब्राह्मणी हर्षित थइ थकी उठीने सन्मुख आवी, बे हाथ जोडी एवी रीते कहेवा लागी के प्राणनाथ ! हे मम जीवन ! हैयाना हार ! हे कांत ! सुभग ! हुं तमारी मेघनी परे वाट जोती हती अने जेम जल विना माछली टलवले छे तेम तमारा विना हुं टलवली रही छुं इत्यादिक मीठां मनोहर वचन रचना कथन पूर्वक अपूर्व रीते, घणी प्रीतिथी स्नान मज्जन करावी, भोजन पान तांबूल आपीने वली घणा सन्मान पूर्वक सुखशय्या शयन प्रमुख सुख उपचार करीने स्त्री घणो प्रमोद पमाडवा लागी. त्यार पछी ब्राह्मण ते वस्त्रनी दशीयो बंधाववाने वास्ते तन्तुवाय पासे गयो. तन्तुवाय पण ते वस्त्रने अणत्रुटथुं जाणीने सोमविप्रने कहेवा लाग्यो के—' हे ब्राह्मण ! आ वस्त्रनो बीजो कटको लइ आव तो एने सांध्या थका ए लाख मूल्यनुं थाशे. तेथी त्हारा अने म्हारा बेहुना दारिद्र्यनो नाश थइ जशे.' त्यारे ते विप्र लोभथी पाछो फरीने श्रीवर्धमान-स्वामी पासे आव्यो, पण मनमां विचारवा लाग्यो के हुं वारंवार केवी रीते याचना करुं, अति लोभ करवो पुरुषने युक्त नथी अने भगवान पण एवुं जाणशे के

आ विप्र लोभी छे. एवुं जाणीने लज्जाथी मौन पणे रह्यो, पण मुखथी मांगे नहीं. यतः—" लज्जा वारेइ मुहं, असंपया भणइ मागि रे मग्ग। दिन्नं मानकवाडं, देहित्ति मग्गिया वाणी ॥ १ ॥ " लज्जा छे ते मुखने वारवा लागी, अने असंपदा बोली के मांग रे मांग! पण मानरूप कमाड देवराणा तेथी ' आपो ' एवी वाणी मुखथी न निकली. अने जाण्युं के क्यांइ पण खभा ऊपरथी वस्त्र पडी जाय तो उपाडी लइश ? ज्यारे भगवंतने दीक्षा लीधे एकवर्ष ने ऊपर एक मास थयो त्यां सुधी भगवाननी पाछलनी पाछल ते ब्राह्मण फरतो रह्यो, पछी एक दिवस ते देवदुष्य, भगवानना खभा ऊपरथी वायराना गोटाथी उडीने उत्तरवाचाला गामनी पासे सुवर्णवालुका नदीना कांठे बोरडीना वृक्षना कांटामां जइ पड्युं, तेने विप्र लइ चालतो थयो. भगवाने पण सिंहावलोकन दृष्टिथी देख्यो[1].

कंटके लाग्युं तेथी भगवाने विचार्युं के ' म्हारी पछवाडे जे साधु स्वसंतानिक थाशे ते सर्व बहुल कषायी, कंटकी, कलहकारी प्रायः असमाधिकारक थाशे, मुंडा घणा थशे अने साधु थोडा थाशे ' एवुं जाणी वस्त्रने निर्ममत्वथी ग्रहण न कर्युं. हवे विप्र पोताना आत्माने धन्य कृतार्थ मानतो अने संपूर्ण मनोरथवंत थयो थको तुंनारा पासे बे खंड संधावी—तूणावीने ते देवदुष्य वेच्युं तेना लक्ष सोनैया आव्या. तेमांथी अर्द्धा तुंनाराने दीधा अने अर्द्धा पोते राख्या. बेहुनुं दारिद्र्य गयुं. अने ते जावज्जीव सुधी सुखी थया.

---

१ इहां कोइक तो कहे छे के ममत्वे करीने देख्यो, कोइक कहे छे के शुभ स्थानके पड्युं के अशुभ स्थानके पड्युं ते जोवाने माटे देख्यो. वली कोइक कहे छे के सहसात्कारे देख्युं, कोइक कहे छे के म्हारी पाछल म्हारा शिष्योने वस्त्रपात्र सुलभपणे मलशे के नहीं एवा कारणथी देख्युं.

चंडकोशिक नागनो उपसर्ग अने तेने प्रतिबोध—

ते दिवसथी भगवान अचेलक थया अने बीजा त्रेवीश तीर्थंकरोनां देवदुष्य वस्त्र जावज्जीव रह्यां हतां. केटालिक प्रतोमां वचला बावीश तीर्थंकरोना देवदुष्य जावज्जीव रह्यां कह्यां छे तेथी ते सचेलक जाणवा. हवे श्रीमहावीर स्वामी बार वर्ष ऊपर साडा छ महीना छद्मस्थपणे रह्या कायाने वोसरावी, अने कांइपण शुश्रूषा कर्या वगर विचरता रह्या. तेमां जे कांइ देवताना करेला, मनुष्यना करेला, तिर्यंचना करेला, अनुलोम अने प्रतिलोम एवा बे प्रकारनां उपसर्ग थया. नाटक देखाडवां आलिंगन करवां, इत्यादिक देवादिकोना करेला उपसर्ग ते सर्व अनुलोम उपसर्ग जाणवा अने देवादिकोए भय बताव्या, प्रहार कर्या, कूट्या, मार्या एवा उपसर्ग ते सर्व प्रतिलोम उपसर्ग जाणवा. ए बन्ने प्रकारना उपसर्ग सर्व पोतानी खुशीथी सहन कर्या पण चारित्रथी लगार मात्र चलायमान थया नहीं, तेमज कोइ ऊपर रागद्वेष पण लाव्या नहीं, तथा कोइनी पासे दीन वचन पण बोल्या नहीं, तेमज कोइथी भय पण पाम्या नहीं; एवी रीते अनेक प्रकारना उपसर्ग सहन कर्या. एकदा भगवान् उत्तरवाचाल सन्निवेशे जातां मार्गे वर्द्धमान गामे आव्या, त्यां एक सुवर्णवालुका, बीजी रूपवालुका, ए बे नदीओ आवी, ते उतरी आगल चालतां एक वक्रमार्ग अने बीजो सरल मार्ग, एवा बे मार्ग आव्या, त्यारे लोको बोल्या के सरल मार्गमां सर्पनो भय छे माटे जशो नहीं, तो पण भगवंत वक्रमार्ग मूकीने सरल मार्गे चंडकोशीया सर्पने प्रतिबोध देवा सारु चाल्या. ते मार्गमां 'कनकखल' नामा वनमां तापसनो आश्रम छे, त्यां एक महा जोरावर घणो डंशीलो चंडकोशीयो' सर्प रहे छे.

चंडकोशीया नागनी कथा—

कोइक गामना विषे बे साधु गुरु-चेला चोमासुं रह्या हता,

ते एक दिवस मासखमणना पारणाने अर्थे बे जणा गोचरीए गया, त्यां वर्षाऋतुना लीधे घणा जीवोनी उत्पति थए छते मार्गमां गुरुना पग नीचे सूक्ष्म देडकी आवी, ते चंपाइ मरण पामी. त्यारे चेलाए कह्युं के महाराज ! तमारा पग नीचे देडकी आवी ते मरण पामी छे. एवुं सांभली गुरु बोल्या—घणी देडकी मरेली पडेल छे माटे बीजा कोइनो पग आववाथी मरण पामी हशे. त्यारे त्यां चेलो मौन रह्यो. वली गोचरी आलोवतां शिष्य बोल्यो के देडकीनो मिच्छामि दुक्कडं ल्यो. ते सांभली गुरुने रीस चढी अने चेलाने कहेवा लाग्यो के अरे ! ते देडकी तो प्रथमथी ज मरेली हती, म्हे तो मारी नथी, चेले घणुं कह्युं तो पण मान्युं नहीं. त्यारे चेले विचार्युं के सांजे पडिक्कमणामां आलोयण लेशे. गुरुए पण सांजे पडिक्कमणामां सर्व आलोयण लीधी, पण देडकीनी आलोयणा न लीधी. त्यारे चेले कह्युं के महाराज ! देडकीनी आलोयणा ल्यो. त्यारे पण गुरुए रोष करीने तेवोज जवाब आप्यो, फरी रात्रे संथारानी वेलाए कह्युं के महाराज ! देडकीनी आलोयणा ल्यो. एवुं सांभलतां गुरुने रोष चढ्यो तेथी हाथमां ओघानी डांडी लइ चेलाने मारवा दोड्यो, रातनी वेला हती तेथी चेलो नाशी गयो, गुरु तेनी पाछल दोड्या अने उपासराना थांभला साथे अथडाया तेथी गुरुनुं मस्तक फूटयुं. तेथी ते मरण पामी बीजे भवे ज्योतिषी देवता थयो. त्यांथी चवीने चंडकोशी नामे तापस थयो. तेने पांचसो शिष्य थया परंतु पोते घणो क्रोधी हतो तेथी एक दिवसे राजकुमारोने वाडीमां फूल लेतां देखीने हाथमां फरसी लइ तेमने मारवा दोडतां पग लपसी गयो तेथी मार्गमां एक अंध कूप हतो, तेमां पड्यो. पोताने फरसी वागी तेथी आर्त्तध्याने मरण पामीने तेज आश्रमना विषे चोथा भवे चंडकोशीओ सर्प्प थयो. जे कोइने देखे, तेने बाली भस्म करे छे, घणा तापसोने बाल्या, बीजा केटलाएक

नाशी गया. लोके पण ए मार्गे जवानुं छोडी दीधुं, एक कोश प्रमाण भूमिमां रहेला जीव मात्रने बाली न्हाखे छे. त्यां ते सर्प्प कोइने रेवा देतो नथी. ते सर्प्पना बिल ऊपर भगवंत काउस्सग्गध्याने रह्या, ते देखी सर्प्पें क्रोध आणीने प्रभुने डंख मार्यो, त्यारे प्रभुना पगमांथी दूध सरखुं लोही मांस नीकल्युं, तेने देखी सर्पे विचार्युं के हुं जेना स्हामुं जोउं, तेने पण बाली भस्म करुं अने एने तो डंख मार्यो तो पण धोलुं लोही नीकल्युं माटे ए कोइ म्होटो पुरुष छे. एम चिंतवीने भगवाननां मुख सामुं जोयुं. त्यारे भगवान् बोल्या के 'अरे चंडकोशिया! बुज्झह बुज्झह (बुध्यस्व बुध्यस्व) तुं नथी जाणतो?' एवुं केतां थकां ते सर्प्पने विचार उपन्यो के आवुं रूप म्हें क्यांय दीठेल छे. एटलामां मूर्च्छा आवी गइ अने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं त्यारे पाछलो भव दीठो. पछी प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइ विनति करी के हे करुणासागर! दुर्गति रूप कूपथी त्हमे मुजने ऊद्धर्यो. पछी वैराग्य पामी पन्नर दिवसनुं अनशन करी परोपकारार्थे ते सर्प्प पोताना बिल मांहे मुख राखी अने आखुं शरीर बाहेर राखीने रह्यो. पछी ते मार्गे दूध, दही, घृतनी वेचनारी अहिरणीओए नागराज संतुष्ट थयो एवुं जाणी दूध, दही, घृत शर्करादिकथी सर्प्पने पूज्यो. तेनी गंधथी कीडीओ शरीर ऊपर चढी. पछी सर्पे विचार्युं के हुं म्हारा शरीरने फेरवीश तो कीडीयो मरी जशे. एवुं जाणी शरीर हलाव्युं नहीं. कीडीओए ते सर्प्पने फोली चालणी सरखो कीधो, ते सर्प्प शुभ ध्याने मरण पामीने आठमे देवलोके देवता थयो. प्रभु त्यांथी विचरता उत्तरवाचाल—सन्निवेशे पहोता अने नागसेन श्रावकने घेर परमान्नथी पारणुं कर्युं, देवताए पंचदिव्य प्रगट कर्यां.

प्रभुने सुदंष्ट्र नामा देवनो उपसर्ग—

त्यांथी विहार करीने भगवान श्वेतांबिका नगरीए गया, त्यां परदेशी राजाए प्रभुनो महिमा कर्यो. त्यांथी विचरता थका भगवान

सुरभिपुरनगरना मार्गमां गंगा नदी आवी ते उतरवाने अर्थे घणा लोक सिद्धदत्त खारुआनी नावमां बेठा तेनी साथे प्रभु पण बेठा. एवामां घूवड बोल्यो. तेनुं शुकन जोइ क्षेमिल नामे निमित्तिओ बोल्यो के-हे लोको ! आज ' आपणने मरणांत कष्ट उपजशे. परंतु आ साधु महात्मा पुरुषना प्रभावथी जीवता रहीशुं-मरशुं नहीं.' एवामां भगवंते त्रिपृष्ठ वासुदेवना भवमां जे सिंहने विदार्यो हतो ते सिंह घणा भवभ्रमण करीने भुवनपति देवोमां 'सुदंष्ट्र' नामे नागकुमार देवता थयो ते अवधिज्ञानथी प्रभुने जोइ, पूर्व वैर संभारी त्यां आवीने नाव डूबाडवानो उपद्रव करवा लाग्यो. ते वखते नवा उपन्या एवा कंबल अने संबल नामे बे नागकुमार देवता तेणे आवीने एक देवताए तो नाव डूबती राखी अने बीजा देवताए पहेला सुदंष्ट्रदेवनी साथे लडाइ करी. तेमां सुदंष्ट्र हारी गयो. तेथी भगवान सुखे गंगा नदी उतर्या.

कंबल-संबलनी पूर्वभव संबंधि कथा—

मथुरा नगरीमां जिनदास नामे श्रावक रहे छे, तेनी साधुदासी नामे स्त्री ते पण श्राविका छे. ते बन्ने जणाए पांच अणुव्रतमां चतुष्पद जीवो राखवानो त्याग करेलो छे तेथी दूध, दही जे घरमां वापरवा सारुं जोइए ते एक अहीर पासेथी मूल्य आपीने वेचातुं लीए छे. तेना लीधे ते अहिरने अने शेठने मांहोमांहे प्रीति थइ. ते अहिर साथे लेवड-देवडनो संतोष व्रतमां राखेलो छे. हवे एक दिवस ते अहिरने घेर विवाह आव्यो त्यारे अहिरे शेठ पासेथी विवाहने माटे केटलिएक चीजो मांगी. शेठे पण तेने चंद्रवा प्रमुख सर्व उपकरण तेना मांगवा मुजब आप्या. तेथी तेनो विवाह घणो श्रीकार थयो. त्यारे ते अहिर खुशी थइने सरखी अवस्थावाला घणा रूपवंत एवा बे बाल-वृषभ लावीने शेठने घेर बलात्कारे बांधी, चाल्यो गयो. ते यद्यपि शेठने तो राखवानी इच्छा हती

नहीं, तो पण शेठे विचार्युं के पाछा आपीश तो ए बीजे क्यांय वेचाशे त्यां ए बापडा दुःखी थशे, बांध्या रहेशे, भार ताणशे, एवुं विचारीने पोताने घेर राख्या, तेमने पुत्रनी पेरे फासु घास जल प्रमुख खवरावीने पोष्या. तेनां कंबल अने संबल एवां नाम दीधां. हवे शेठ पाखीने दिवसे पोसह करे, धर्मचर्चा करे, पुस्तक वांचे, ते वातो सांभलतां सांभलतां ते बलदीया घणीज रूडी समजण वाला थया. एवा भद्रिक परिणामि थया के शेठ ज्यारे उपवास करे त्यारे ते पण उपवास करे, तृणादिक चारो बिलकुल खाय नहीं, एवी रीते शुभभावनायुक्त विचरे छे. एक दिवस शेठ पोसहमां बेठा हता, एटलामां कोइ एक शेठनो मित्र आव्यो. ते पुष्ट वृषभनुं जोडलुं देखी शेठने पूछ्या वगर पोताना रथमां जोडीने भंडीरवनमां यक्षनी यात्राए लइ गयो. मार्गमां घणा दोडाव्या तेथी ते बलदोनी नाडियो त्रूटी पडी. पछी ते छानो आवीने पाछा शेठने घेर बांधी गयो. पण तेओना हाडकां भांगी गयां तेथी ते चारो पाणी त्यागी बेठा. शेठे पोताना पुत्र जेवा बलदोने दुःखी थयेला देखी घणो विषाद करीने तेओने अनशन कराव्युं, अने चार आहारना पच्चक्खाण करावी नवकार संभलाव्युं. तेथी ते बलदीया शुभ ध्याने मरण पामीने नागकुमार देव थया. तेओए अवधिज्ञानथी जोयुं. तेथी नावमां भगवानने उपसर्ग थतो जोई, तेमनो उपसर्ग मटाड्यो अने भगवान आगल नाटक गीतगान करी, पूजा सत्कार करी स्वस्थानके गया. इति कंबल—संबल दृष्टांत.

पुष्पनिमित्तियो अने गोशालानो वृत्तान्त—

एक दिवसे भगवान् विहार करतां गंगा नदी उतरतां सूक्ष्म वेलुं मांहे प्रतिबिंबित पगलानी श्रेणीने विषे चक्र, ध्वज, अंकुश प्रमुख लक्षण थया. एवामां पाछलथी कोइ एक पुष्प नामा सामुद्रिकशास्त्रनो

जाण आव्यो. तेणे मनमां चिंतव्युं के आ कोइ एक चक्रवर्त्ती थनारो जीव छे चक्रवर्त्ति विना एवा पग बीजानां न होय. ते हमणां एकाकी जाय छे माटे हुं जइ एनी सेवा करुं. पछी ते चरणानुसारे त्यां आव्यो अने भगवानने वस्त्र रहित दिगम्बररूपे देखीने विचारवा लाग्यो के हुं सामुद्रिकशास्त्र फोगट भण्यो छुं. जो एवा लक्षणनो धणी भिक्षुकरूपे एकाकी छे तो ए म्हारां पुस्तक खोटां छे–पाणीमां बोलवा लायक छे. एम चिंतवी पुस्तकने पाणीमां बोलवा लाग्यो, एटलामां इन्द्रमहाराजे ए वृत्तांत जाण्युं त्यारे त्यां आवीने प्रभुनी सेवा सांचवी. पुष्पनिमित्तिया आगल प्रभुनुं स्वरूप वर्णवी, शास्त्र पाणीमां बोलवा न दीधां, पछी भगवंतना गुणग्राम करी, इन्द्र स्वस्थानके गया. पुष्प पण इन्द्र पासेथी मणि कनकादिक धन पामी हर्ष पामतो पोताने स्थानके गयो. प्रभुए परोपकारार्थे गंगानदी उतरी विहार कीधो. गंगानदी उतरीने भगवान बीजे चोमासे राजगृही नगरीए नालंदा नामा पाडामां वणकरनी (तंतुवायकनी) शाला छे तेना एक देशने विषे खूणामां आज्ञा लइने रह्या अने त्यां प्रथम मासखमण कर्युं. अहींआ शरवणग्रामे मंखलीपुत्र सुभद्रानो अंगज, बहुल द्विजनी गोशालाने विषे उपन्यो छे ते माटे तेनुं नाम पण गोशालो राखेलो छे. ते अनुक्रमे भमतो भमतो भगवंत पासे आव्यो, भगवाने त्यां चार मासमां चार मासखमण करीने चार पारणा कर्यां. तेमां पहेला मासखमणने पारणे प्रभुने विजयशेठे क्षीरादिक विपुल भोजनथी पारणुं कराव्युं. त्यां देवताए पंच दिव्य प्रगट कर्यां. पछी ते सरस क्षीरादिक, कूरादिक, अने मोदकादिकनो आहार देखीने गोशालाए विचार्युं के एने घेर घेर व्होरावे छे, माटे हुं पण जूदो भिक्षाए फरीश, तो म्हारी पण मान्यता वधशे, त्यारे भगवंतने जेणे व्होराव्यो तेना पाडोसीने घरे गोशालो पण व्होरवा गयो, ते देखी पाडोसी हर्ष पाम्यो के म्हारे घरे भगवान् पधार्या, तेथी उठी बेठो थयो.

पछी वांदीने कह्युं. के हे महाराज ! म्हारे घेर पारणो करो, त्यारे गोशालाए बे हाथ पसार्या. गृहस्थे ऊनी ऊनी रसोइ पीरसी अने ऊंचुं माथुं करी जोवा लाग्यो के म्हारे घरे सोनैयानो वर्षाद थाय. एम करतां वायस आवी माथे बेठो. त्यारे मेडा ऊपरथी गोशालाना हाथ ऊपर एक बाइए देवता न्हाख्यो. ते जोइ शेठे विचार्युं के पाडोसीने घेर तो सोनैयानो वर्षाद वरस्यो. अने म्हारे घरे तो कोयला वरष्या, गोशालाना हाथ बल्या, त्यांथी उदास थइ गोशालो निकल्यो. हवे भगवानने बीजुं पारणुं नंदे पक्वान्नादिकथी कराव्युं. त्रीजे मासखमणे त्रीजुं पारणुं सुनंदे परमान्नादिकथी कराव्युं. त्यां पण सर्वत्र पंच दिव्य प्रगट थयां, ते जोइ गोशाले मनमां विचार्युं के " एना पासे कोई सारविद्या छे जेथी घरो घर सोनुं वरसावे छे, ए विद्या हुं पण शीखुं. तो म्हारी पण शोभा वधे " एम विचारी गोशालो बोल्यो. हे भगवन् ! हुं आपनो शिष्य छुं, एम कही भगवंत साथे फरवा लाग्यो. भगवाने त्यांथी जइ चोथुं पारणुं कोल्लागसन्निवेशे बहुल नामा ब्राह्मणने घेर केवल खीरना भोजनथी कर्युं. त्यां पांच दिव्य प्रगट थयां. ए बीजुं चोमासुं जाणवुं.

पाछलथी गोशाले भगवानने दीठा नहीं, सर्व नगरमां फरी जोयुं तो भगवान मल्या नहीं. त्यारे सर्व उपकरण ब्राह्मणने आपी क्षुरमुंड थइने चाल्यो. पछी कोल्लागसन्निवेशे भगवानने देखी बोल्यो के आपनी दीक्षा मुजने हो, हुं आपनो चेलो छुं. ए वात भगवाने पण मानी. पछी गोशाला सहित भगवान विहार करी एक दिवसे स्वर्णखल ग्रामे चाल्या, मार्गमां कोइ गोवालीआने खीर पकावतां देखी गोशालो बोल्यो, भगवन् ! ए खीर थाशे ते खाइने जइशुं. माटे थोडीवार बेसो, त्यारे सिद्धार्थ बोल्यो ए खीरनुं पात्र भांगशे. पछी गोशालाए जइ गोवालीयाने कह्युं. हांडी फुटी जशे. गोवालीयाए घणा यत्न कर्या तो पण हांडी

फूटी गइ त्यारे गोशालाए "जे थनार होय ते थायज." एवुं निर्धारी, हठ पकडी नियतवादीपणुं पडिवज्युं. त्यांथी भगवान विहार करी ब्राह्मण गाम गया. त्यां एक नंद अने बीजो उपनंद ए बे भाइना बे पाडा छे. तेमांथी भगवाने नंदना पाडामां पारणुं कर्युं. अने गोशालाने उपनंदने घेर वाशी सात-दिवसनी घेंस मली, तेथी कोपायमान थइने गोशालो बोल्यो के म्हारा धर्माचार्यना प्रभावथी त्हारुं घर बली भस्म थाओ. एवुं कहेतां ज व्यंतरदेवोए भगवाननुं महत्व राखवा माटे तेनुं घर बाली न्हांख्युं. त्रीजे चोमासे बे बे मासनी तपस्याए प्रभु चंपा-नगरीए रह्या. त्यांथी छेल्लुं पारणुं करी, कोल्लाग सन्निवेशे गया. त्यां शून्य गृहमां काउस्सग्ग रह्या. त्यां सिंह रजपुत चोधरीनो पुत्र विद्युन्मती दासी साथे क्रीडा करतो हतो. तेने रमतो देखीने गोशालो हस्यो, त्यारे तेणे गोशालाने कूट्यो. गोशालो प्रभुने कहेवा लाग्यो के म्हने मार मारे छे, माटे तमे एने कां वारता नथी ? प्रभु मौन छे तेथी सिद्धार्थ बोल्यो के आज पछी एवुं हास्यनुं काम म करीश. ए काम करीश तो एवांज फल पामीश, त्यार पछी प्रभु कुंभार-मोराकसन्निवेशे रमणीय नामा उद्यानमां काउस्सग्ग रह्या, त्यां कुंभार-शालामां श्रीपार्श्वनाथना शिष्य मुनिचन्द्रसूरि घणा शिष्यो साथे रह्या छे. ते साधुओने देखी गोशाले पूछ्युं-तमे कोण छो ? ते बोल्या अमे साधु छीए, गोशालो बोल्यो, तमे क्यां अने म्हारो धर्माचार्य क्यां ! त्यारे ते साधु बोल्या-जेवो तुं छे, तेवो त्हारो गुरु पण हशे. त्यारे गोशालो क्रुद्ध थइने बोल्यो के म्हारा धर्माचार्यना तपतेजना प्रभावथी तमारो आश्रम बली भस्म थाओ. त्यारे ते साधु बोल्या-एथी अमे कांइ डरता नथी. आश्रम बल्यो नहीं. त्यारे गोशाले आवीने प्रभुने कह्युं के स्वामिन् ! आगल जेवो तमारो प्रभाव हतो, तेवो हमणां नथी. तपतेज घटी गयुं जणाय छे. त्यारे सिद्धार्थ बोल्यो-अरे ! ए साधु-

ओने शाप लागे नहीं. ए साधु नहीं बले, पछी ते पार्श्वनाथना शिष्य मुनिचंद्रसूरि जिनकल्पनी तुलना करता काउस्सग्गमां ऊभा छे तेने कुंभारे चोर जाणीने मार मार्यो. मुनिचंद्रने अवधिज्ञान उपन्युं, मरण पामी देवलोक गया. तेनो देवताओए महिमा कर्यो. त्यां अजवालुं थयुं ते देखीने गोशालो बोल्यो, जुओ! साधुनो आश्रम जले छे, म्हारा गुरु सांचा छे. त्यारे सिद्धार्थ व्यंतरो बोल्यो के-अरे कुपात्र! ए तो मुनिचंद्र देवलोके गया तेनो महोत्सव थाय छे, ते सांभली गोशालो विलखो थयो. ते पछी प्रभु चोरा नगरीए गया. त्यां गोशालो गाममांहे हेरतो फरे त्यारे त्यांना लोकोए हेरु जाणी प्रथम गोशालाने कूप जेवा खाडामांहे घाल्यो. पछी भगवंतने पण न्हांखवा लाग्या, एवामां उत्पलनामा विप्रनी व्हेन सोमजयंति नामे ते चारित्र त्यागीने सन्यासणी थइ छे, तेणे आवी भगवानने ओलखीने छोडाव्या. गोशालाने पण छोडी मूक्यो. त्यार पछी त्यांथी विहार करीने चोथुं चोमासुं स्वामी पृष्ठचंपाए चार मासी तप करीने रह्या. त्यां चोमासुं संपूर्ण करी बाहेर पारणुं कर्युं.

त्यांथी विहार करी भगवान कयंगलसन्निवेशे गया. त्यां माघ मासे जागरणाना दिवसे दारिद्र अने स्थविर पाखंडिणी नाचे छे, गाय छे तेनी गोशाले हांसी करी, तेथी तेओए गोशालाने मार मार्यो. वली प्रभुनो शिष्य जाणी छोडी मूक्यो. त्यांथी विहार करी भगवान सावत्थीनगरीए आवीने काउस्सग्गमां रह्या. त्यां पितृदत्त वणिकनी स्त्री श्रीभद्रा छे तेने पुत्र जीवता नथी, त्यारे शिवदत्त निमित्तिए तेने पूर्वे कह्युं हतुं के-मृतक पुत्रनुं मांस खीरमां रांधीने कोइ भिक्षुकने खवरावजो तो तमारा पुत्र जीवता रहेशे, हवे ते स्त्रीने ज्यारे मृतक पुत्र थयो त्यारे तेनां मांसनी खीर तैयार करी, अने आ वखतेज गोशाले सिद्धार्थ व्यंतरने पुछ्युं के म्हने आज केवुं भोजन मलशे? सिद्धार्थे कह्युं त्हने आज मनुष्यनुं मांस

मलशे, ते खाइश. पछी सिद्धार्थनुं वचन खोटुं करवा सारुं गोशालो श्रावक वाणीयाने घेर व्होरवा गयो, मनमां विचार्युं के वाणीयाने घेर मांस होय ज नहीं, एवुं जाणी त्यां खीर जमी, फरी पाछो आवी सिद्धार्थने कहेवा लाग्यो के हुं खीर जम्यो छुं. सिद्धार्थे कह्युं तुं मांस जम्यो छे, त्यारे गोशालाए गलामां आंगली घाली वमन कर्युं, मांहे मांसना कटका दीठा त्यारे गोशालो क्रोध करीने तेने घेर गयो, परंतु ते श्रीए आपना भयथी पहेलांज घरनुं बारणुं फेरवी न्हांख्युं हतुं तेथी गोशालाने घर लाधुं नहीं त्यारे कहेवा लाग्यो के म्हारा स्वामीना तपना प्रभावथी तमारो पाडो बली भस्म थाओ, तेथी पाडो बल्यो. त्यांथी भगवान दरिद्र सन्निवेशनी बाहेर काउस्सग्गे रह्या, त्यां पंथीओए भगवानना पग पासे आग बाली तो पण भगवान किंचिन्मात्र सरक्या नहीं. भगवानना पग बलता देखीने गोशालो नाशी गयो. त्यांथी प्रभु गलगामे जइ वासुदेवने देहरे काउस्सग्गे रह्या. त्यां गोशालो आंख्यो काढीने बालकोने बीवराववा लाग्यो त्यारे लोकोए मार्यो, कूट्यो, वार्यो, भगवाननो शिष्य जाणी छोडी मूक्यो. त्यांथी विहार करीने भगवान आवर्त्त गाममां बलदेवनां मंदिरने विषे काउस्सग्गे रह्या, त्यां गोशालाए छोकराओने बीवराववा सारुं म्होढुं मरडी बताव्युं, तेथी छोकरा सर्व भय पामीने, पोताना माता पितानी आगल कहेवा लाग्या. त्यारे तेओना माता पिता त्यां आवीने कहेवा लाग्या के आ चेलाने शुं मारवो? एना गुरुनेज मारो एटले फरी चेलाने सारा मार्गे चालवानो उपदेश करशे, एवुं कहीने जेटलामां भगवानने मारवा तैयार थया छे तेटलामां तो बलदेवनी मूर्त्तिए हल लइने लोकोने बीवराव्या. तेथी सर्व लोक भगवानने नमवा लाग्या. पछी त्यांथी विहार करी घणा क्लिष्ट कर्मोनी निर्ज्जरा करवाने अर्थे भगवान लाट देशे गया, त्यां अनार्य लोकोए घणाज उपद्रव कर्या, ते प्रभुए शांतिथी सहन कर्या. त्यांथी पूरणकलश



नाम अनार्य गामे जतां भगवानने मार्गमां बे चोर मल्या. ते भगवानने देखी अपशुकन थया एवुं मानीने खड्ग लइ मारवा दोड्या. तेने इन्द्र महाराजे वज्रथी मारी न्हाख्या. (केटलिक प्रतोमां इंद्र महाराजे ते चोरोनां पग थंभ्या तेथी ते वृक्षनी पेरे त्यांज ऊभा रह्या एम लखेलुं छे) एवी रीते उपसर्ग निवारण थयो. पछी प्रभु चोरांगे आव्या. त्यां मांडवे धान रंधातुं देखी गोशालो नीचो थइ जोवा लाग्यो. तेने लोकोए चोर जाणी मार्यो, गोशालो क्रोध करी बोल्यो के म्हारा स्वामीना तप बले तमारो मंडप बलजो, तो तेमज थयुं. त्यार पछी भगवंत हरिवृक्ष नीचे काउस्सग्गे रह्या, त्यां कोइ पंथीए आगल भूमिका बाली हती तेमां गोशालानां पग बल्या त्यारे त्यांथी गोशालो भाग्यो. त्यार पछी पांचमुं चोमासुं प्रभु भद्रिकानगरीए रह्या. त्यां चोमासी तप प्रभुए कीधुं. ए पांचमुं चोमासुं चार मासी तपनुं जाणवुं.

पछी पारणुं करी त्यांथी भगवान कुदिक सन्निवेशे गया, त्यां लोकोए चोर जाणीने पकड्या. पछी श्रीपार्श्वनाथजीनी एक विजया, अने बीजी प्रगल्भा ए बे साध्वियो परिव्राजिकणी थयेली छे तेमणे छोडाव्या. अहीं गोशाले जाण्युं के एनी पछवाडे फरवाथी घणां दुःख सहन करवा पडे छे, एवुं विचारी भगवंतथी जूदो विचरवा लाग्यो. मार्गमां जातां पांचसो चोर मल्या, ते मामो मामो कहीने, गोशालानी खांध ऊपर चढी आगल पाछल फेरववा लाग्या, तेथी दुःख पाम्यो. वली बीजे पण ज्यां जाय त्यां तोफान करे, त्यारे लोक मार मारे तेथी गोशालाए विचार्युं के भगवंत साथेज रहेवुं भलुं छे, एवुं जाणी भगवानने शोधवा लाग्यो. भगवंत विशाला नगरिए गया, त्यां लोहकारनी शालामां काउस्सग्गे रह्या, लोहार पण छ महीनाथी आजारी (रोगी) हतो ते पण ते दिवसे साजो थयो छे, तेथी लोह घडवानां उपकरण लइने आव्यो, प्रभुने मुंडा देखी अपमंगलिक थयुं जाणी घण लइने मारवा उठ्यो,

एटलामां इंद्रे अवधिज्ञानथी जाणी, त्यां आवी, लोहारने निवार्यो. (कोइक स्थानके इन्द्र महाराजे लोहारने तेहेज घणथी मारी न्हाख्यो, एम पण लखेलुं छे.) पछी त्यांथी भगवान ग्रामाक सन्निवेशे आव्या, वनमांहे विभेलेक यक्षे प्रभुनो महिमा कर्यो. त्यांथी शालिशीर्ष ग्रामनी बाहेर आवी काउस्सग्गे रह्या. ते वखते माघ मासनी ऋतुं हती तेथी अत्यंत टाड पडती हती. ए वखते भगवाने शीत उपसर्ग सहन कर्यो.

प्रभुने कटपूतना देवीनो थयेल उपसर्ग—

त्रिपृष्ट–वासुदेवना भवमां भगवाननी अपमानिती स्त्री हती ते स्त्री अनेक भव भमती थकी ते वखते 'कटपूतना' नामा व्यंतरी थयेली छे, भगवानने देखी तेने द्वेष उपन्यो. तेथी तापसणीनुं रूप करी, पोतानी जटा मांहे पाणी भरीने भगवानना शरीर ऊपर छांटयुं. घणो कठण शीत उपसर्ग कर्यो. एक तो शीयालानी ऋतु हती, तेमां वली व्यंतरिए मेघवृष्टि करी, घणो ठंडो पवन विकूर्व्यो. एवा एवा विकट उपसर्ग कर्या, ए सर्व प्रमाण विनानां पूर्वकृतकर्म प्रभुनां हतां ते अत्रे आवी नड्यां, तेने कठण उपसर्ग सहन करीने दूर कर्यां. व्यंतरीनां उपसर्गथी प्रभु अडग रह्या. एवा धैर्यवंत प्रभुने जाणी पोतानो अपराध खमावीने व्यंतरी स्वस्थानके गइ. अने त्यां शीतवेदना सहन करतां थकां भगवंतने छट्ठना तपे यथार्थ लोकावधि ज्ञान उपन्युं.

गोशालो फरी प्रभुने आवी मल्यो—

त्यांथी भगवाने फरी छट्ठुं चोमासुं भद्रिका नगरीए कर्युं, त्यां चार महीना सुधी अनेक प्रकारना दुःसह अभिग्रह कर्या. अहीं छ महीना बाहेर भटकीने गोशालो पण फरी आवी प्रभुने मल्यो. हवे चोमासुं पुरुं थया पछी शेषकाल आठ महीना सुधी भगवान मगधदेशमां विचर्या. ते आठ महीनामां भगवानने कोइ पण उपसर्ग थयो नहीं. त्यार पछी सातमुं

चोमासुं आलंभिका नगरीनी बाहिर देवकुले चारमासी तप करीने रह्या. त्यां गोशालाए बलदेवनी प्रतिमाना मुखमां लिंग धर्युं, ते लोके दीठुं, त्यारे गोशालाने मार मार्यो. (कोइक प्रतमां बलदेवनी मूर्त्ति ऊपर पुरुषचिन्ह राखीने सूतो तेथी पूजारीए मार मार्यो एम पण लखेलुं छे.)

त्यांथी विहार करी प्रभु मर्दनग्रामे वासुदेवना दहेरे काउस्सग्गमां रह्या. अहीं पण गोशालाए मूर्त्ति ऊपर पुरुषचिन्ह धर्युं तेथी मार खाधो. पछी प्रभु उन्नागगामे जतां रस्तामां कोइ एक नवपरिणीतवधूने तेडी जाय छे. तेमां वरनां दांत बहार निकलेला म्होटा हता अने वहु कांणी हती, ते जोइ गोशालो हसीने बोल्यो के आ–तो दैवे ठीक सरखी जोड मेलवी आपी छे, तेणे गोशालाने मार मारीने वंशजालमां न्हांखी दीधो. एक दिन विचरता थका भगवान पुरिमताल नगरनी बाहेर शकटमुख उद्यानमां काउस्सग्गे रह्या, ते वखत ते नगरनो वग्गुर नामा शेठ तेनी सुभद्रा नामे भार्या ते बेहु जणे पुत्र थवा सारुं ओगणीसमां तीर्थङ्कर श्रीमल्लीनाथजीनी मानता करी हती, ते ज्यारे पुत्र थयो त्यारे उद्यानमां श्रीमल्लीनाथजीनुं नवुं मंदिर करावीने त्यां नित्य पूजा करे छे. जे वखते शेठ स्त्री सहित पूजा करवा आव्यो छे ते वखते भगवाननी आगल इन्द्रमहाराज बेठा छे तेणे भगवाननो महिमा करवा माटे शेठने कह्युं के— शेठ ! ' जेनी तुं पूजा करे छे ते हुं तुजने प्रत्यक्ष देखाडुं ' एवुं कही शेठने तेडी भगवानने पगे लगाड्यो. शेठे पण भाव सहित भगवानने पूजीने पछी श्रीमल्लीनाथजीनी पूजा करी. त्यार पछी आठमुं चोमासुं भगवाने राजगृही नगरीमां कर्युं. त्यां चार मास पर्यन्त चोमासी तप कर्युं, पछी चोमासी तपनुं पारणुं बाहेर जई कर्युं.

अनार्यदेशमां प्रभुनो विहार—

चोमासा पछी प्रभु अनार्यदेशमां गया, त्यां विचरता थका

भगवाने घणा घणा कठण उपसर्ग सहन कर्या अने नवमुं चोमासुं पण अनार्यदेशमां ज व्यतीत कर्युं. ते वली चारमासी तप सहित कर्युं. वली त्यां प्रभुने रहेवाने जग्या पण मली नहीं, तेथी विचरताज रह्या. वली पाछल पण भगवान बे महिना सुधी अनार्यदेशमांज तप सहित विचर्या. ते पण आहार विनानुं बे मासी तप थयुं. पछी अनार्यदेशमांथी विहार करीने सिद्धार्थगामथी कूर्मगामे जतां मार्गमां एक तलनुं झाड ऊभुं देखीने गोशाले भगवानने पूछ्युं के— ' आ थंभ थाशे के नहीं थाय ? ' भगवाने कह्युं ए तिलनां फूल सात छे तेना जीव मरण पामीने एक सांकलीमां (शींगमां) तलपणे उपजशे. ते सांभली गोशाले भगवाननुं वचन झुंठुं करवा सारुं ते झाडने उखेडीने फेंकी दीधुं. त्यारे निकट रहेला व्यंतर देवताए चिंतव्युं के भगवाननुं वचन झुंठुं म थाओ, एवुं जाणी वर्षाद वरसाव्यो. पछी गायना खुरथी ते तलनुं झाड चंपाणुं तेथी धरतीमां पेठी थिर थयुं अने वर्षादनां योगे पाछुं ऊभुं थयुं. भगवान कूर्मगाम गया, त्यां एक वेश्यायन नामा तापस छे तेनुं नाम वेश्यायन केम पड्युं ? तेनी कथा कहे छे—

वेश्यायन तापसनी कथा—

राजग्रही नगरी अने चंपानगरी ए बेनी वचमां गूर्वर नामा एक गाम छे तेमां कोशंबी नामे एक कुटुंबी रहे छे, ते गूर्वर गामनी पासे वली एक बीजुं गाम छे, ते गामनी बाहेर कोइएक राजानी फोज आवी पडी तेथी गामनां लोक सर्व नाशी गया. तेमां एक स्त्री पोताना पुत्र सहित भागती थकी जाय छे. ते स्त्रीने मार्गमां चोर लोकोए पकडी लीधी अने बालक गूर्वरगामने बाहेर पड्यो रह्यो, तेने कोशंबी नामा कुटुंबीए बाहेर भमतो देखीने उपाडी लीधो, ते कुटुंबीने पुत्र हतो नहीं माटे तेने पुत्रनी परे राखीने म्होटो कर्यो. अने ते छोकरानी माताने

चोर लोकोए जइ चंपानगरीमां कोइ वेश्यानी पासे वेची तेथी ते वेश्यानो धंधो करवा लागी. पछी अनुक्रमे ते छोकरो ज्यारे म्होटो थयो त्यारे एक दिवसे चंपानगरीमां व्यापार करवाने अर्थे आव्यो. त्यां पोतानी माता जे वेश्यानो धंधो करे छे, तेनी साथे अजाणपणे भोग भोगववा लाग्यो. एक दिवस तेनी कुलदेवी गाय अने वाछडानुं रूप करीने रस्तामां आवी बेठी, एटलामां ते छोकरो पण वेश्याने घेर जाय छे तेणे रस्तामां वाछडानां पूंछ ऊपर पग दीधो. त्यारे वाछडो बोल्यो. जूओ माताजी! आ म्हारा पूंछ ऊपर पग आपीने चाल्यो जाय छे, पण रस्तो देखतो नथी. त्यारे गाय बोली के बेटा! तुं एनुं नाम लइश नहीं, एतो पोतानी सगी माता साथे भोग करतां पण कांइ डरतो नथी तो वली त्हारुं शुं सांभलशे? ए वात सांभली छोकरो चमक्यो. पछी सर्व हकीकत कुलदेवीए कही. ते सांभलीने तापस थयो. लोकोए तेनुं 'वेश्यायनऋषि' नाम आप्युं. ते झाडमां ऊंधे मुखे लटकतो नीचे अग्निकुंड कर्यो छे तेमां तापे छे तेने तेजोलेश्या उपजी छे. एवामां त्यांथी भगवान चाल्या जाय छे, पछवाडे गोशालो पण चाल्यो जाय छे. ते वखते वेश्यायन पोतानी जटाजूटमांथी जूंओ निकलीने जमीन ऊपर पडी छे तेने उपाडीने पाछी पोतानी जटामां मूके छे ते जोइने गोशालो बोल्यो—अरे! तुं तो केवल जूंनोज सय्यातर छे के तापसमुनि? एवुं हास्यनुं वचन बे-त्रणवार बोल्यो एटले वेश्यायनने क्रोध आव्यो तेथी गोशाला ऊपर तेजोलेश्या मूकी. ते जोइ भगवानने करुणा आवी त्यारे भगवाने तेनी सामे शीतलेश्या मूकी तेथी गोशालो बल्यो नहीं. तापसे पण भगवाननो प्रताप जाणी प्रभुने खमाव्या. पछी गोशालाए भगवानने पूछ्युं के तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय तेनो उपाय बतावो? त्यारे भगवान बोल्या के बेलानी तपस्या करे एटले छट्ठ करीने पारणे एक मुट्ठी अडदना बाकुला खाइने तेना ऊपर एक पसलीभर उष्ण-

पाणी पीये, सूर्य स्हामो ऊभो रहे, ए रीते छ महीना सुधी करे तो छेवट तेजोलेश्या पुरुषने उपजे. (केटलाएक कहे छे के सिद्धार्थ व्यंतरे ए विधि कह्यो छे.) गोशाले पण ए सामान्य विधि धारण करी लीधी. हवे भगवान कूर्मगामथी सिद्धार्थपुरे आवतां रस्तामां पूर्वे कहेला तलना झाडने उगेलुं स्तंभरूप देखी तेने गोशाले विदार्युं, तेमां सात पुंज तल दीठा त्यारे सर्व सत्य मानीने गोशाले विचार्युं के 'जे थवा वालुं होय ते अवश्य थाय' एवी रीते मानी लइने निश्चयवादी थयो. ए मत निरधार करी लीधो. त्यार पछी गोशालो भगवानथी जूदो रह्यो, अने सावत्थीनगरीए आवी तेजोलेश्या साधी ते पण सिद्ध थइ, तथा दिशाचरोनी पासेथी अष्टांग निमित्त शीख्यो. ते जिन नही एटले तीर्थंकर न हतो, तो पण लोकोने कहेके 'हुं तीर्थंकर छुं' एम फोगट तीर्थंकर नाम धरावतो पोतानी सिद्धाइ लोकोनी आगल देखाडतो थको भगवानथी न्यारो सावत्थीनगरीमां फरे छे. एवामां भगवान पण विचरता विचरता दशमुं चोमासुं सावत्थी नगरीमां आवीने रह्या, अने त्यां अनेक प्रकारनां तप कर्यां.

प्रभुने संगमदेवनो थयेल उपसर्ग—

'दढभूमि बहु मिच्छा, पेढालुज्जाणमागओ भयवं ।
पोलास चेइयंमि, ठि एगरायं महापडिमं ॥ १ ॥
सक्कोय देवराया, सभागओ भणइ हरिसीउ वयणं ।
तिन्निवि लोग समत्था, जिणवीरं नमणं चालेउं ॥ २ ॥
सामाणिय संगमओ, देवो सक्कस्स सो अमरिसेण ।
अह आगओ तुरंतो, मिच्छादिट्ठि पडिनिविट्ठोय ॥ ३ ॥"

चोमासो पूरो थया पछी भगवान दृढ एटले कठणभूमिने विषे बहु म्लेच्छ ज्यां वसे छे एवा म्लेच्छना देशमां गया, त्यां भगवानने कूतरा प्रमुखे करड्या, एवा बीजा पण अनेक प्रकारना कठण उपसर्ग

थया. ते सर्व सहन कर्या. पछी एक दिवस भगवान पेढालनामा ग्रामना उद्यानमां पोलास नामा कोइ एक देवनो चैत्य छे तेने विषे अट्ठमतप सहित एक रात्रिं महाप्रतिमाए रह्या. एवामां शक्रेन्द्र देवताओनो राजा ते पोतानी सभाने विषे रह्यो भगवानना धीरपणानी प्रशंसा करे छे के 'जो त्रण लोक भेगा थाय तो पण श्रीवीरप्रभुने चलाववाने कोई समर्थ थाय नहीं, एवुं प्रभुनुं सत्त्व छे' एवुं इन्द्रमहाराजनुं वचन सर्व देवताए सत्य करी मान्युं. परंतु एक संगम नामे सामानिक देव मिथ्यादृष्टि अभव्यजातिनो छे तेणे अमर्ष आणीने विचार्युं के मनुष्यने चलाववुं--डगाववुं ए कांइ म्होटी वात नथी. एवुं चिंतवी इन्द्रमहाराज पासे बोल्यो के 'हुं एक क्षणवारमां चलावी आवुं' एवुं कही इन्द्रनां वचन अणमानतो थको चलाववानी प्रतिज्ञा करीने तुरत प्रभु पासे आव्यो. तेणे आवीने एक रात्रिमां म्होटा वीश उपसर्ग प्रभुने कर्या. प्रथम धूल उडावी धूलनो वरसाद करीने प्रभुनां श्वासोश्वास रूंध्या. बीजो वज्रना जेवी मुखवाली कीडीओ विकूर्व्वीने प्रभुना शरीरने चुंटाव्युं--करडाव्युं, अने चालणी जेवुं शरीर कर्युं. त्रीजुं वज्रना जेवा मुखवाला डांस, मच्छर विकूर्व्वीने प्रभुना शरीरने करडाव्यां. चोथुं घीमेल कीडीओ बनावीने चुंटाव्युं. पांचमुं वींछी बनावीने शरीरने करडाव्यो. छट्ठुं सर्प्पनां रूप करीने डसाव्युं. सातमुं नोलीयानां रूप बनावीने मुख अने नखथी शरीरने विदारण कराव्युं. आठमुं उंदरोनां रूप बनावीने शरीरने करडाव्युं. नवमुं हाथी अने हाथीनियोना रूप करीने शूंढथी ऊंचा उछाल्या. दशमुं दांत अने पगथी शरीर मर्दन एटले शरीरने कचराव्युं. अगीआरमुं पिशाचोनां रूप बनावीने अटट्टहास्य करी व्हीवराव्यां. बारमुं सिंहनुं रूप करी नख मार्या, शरीर फाड्युं. तेरमुं सिद्धार्थ पिता तथा त्रिशला मातानां रूप करीने विलाप करतो बोल्यो के--हे पुत्र ! अमे त्हारां माता पिता

आव्यां छियें माटे तुं दुःख देखीश मा, अमारी साथे आव. अमो तने सुख करी आपीशुं. चौदमुं तीक्ष्ण चांचवाळां पंखीनां रूप विकूर्व्वीने प्रभुना कान अने मुखनुं मांस खवराव्युं. पन्नरमुं चांडालनां रूप करीने तर्जना करी. सोलमुं लाकडाना कटका बाली करीने बेहु पग ऊपर हांडी चडावी ऊपर खीर रांधी, अग्निथी बाल्या. सत्तरमुं प्रचंड वायु विकूर्वीने भगवंतने ऊंचा उछालीने पाछा नीचे जमीन ऊपर पटकी दीधा. अढारमुं कलिकाल वायु विकूर्व्वीने ते वायुवडे भगवानने चक्रनी परे भमाड्या. ओगणीशमुं हजार भार प्रमाण लोखंडनो गोलो बनावीने भगवानना मस्तक ऊपर न्हांख्यो, तेणे करी भगवान केड सुधी, (केटलिक प्रतोमां ढीचण सुधी) भूमिमांहि पेसी गया. ए उपसर्गथी जो बीजो कोइ गमे तेवो बलवान होय तो पण चूर्ण थइ जाय, पण आ तो तीर्थंकरनुं शरीर छे तेने कांइ पण थयुं नहीं. वीशमुं रातनी वखते दिवस करी देखाड्यो. अने बोल्यो के–हे देवार्य ! प्रभात थयुं छे माटे हवे विहार करी, गोचरी जाओ, ते वखते भगवाने अवधिज्ञानथी रात्रि जाणीने विचार्युं के ए देवकृत चरित्र छे. वली संगमाए देवतानी ऋद्धि देखाडी देवांगनानां रूप करी हावभाव देखाडी अनुकूल उपसर्ग कर्या. अने वली बोल्यो के–तमोने जोइए ते वर मांगो. जो स्वर्ग मांगो तो स्वर्ग आपुं, एवुं कह्युं तो पण कोइ रीते भगवान लगार मात्र डग्या नहीं. चलायमान थया नहीं. एम महा विकट एवा वीश उपसर्ग एक रात्रिमां संगमे कर्या. पछी ज्यारे भगवान गाममां गोचरी करवा जाय त्यारे ते घरनो आहार अशुद्ध करी आपे. जे भगवानने लेवो कल्पे नहीं, एवो करी न्हांखे. तथा हरहमेश गाममांथी चोरी करीने ते चीज भगवान पासे मूकी जाय, तेथी लोक भगवानने मार मारे, कलंक चडावे. वली भगवाननो चेलो बनीने गाममां कोइ कोइ लोकोनां छिद्र जोवा जाय, ज्यारे लोक पूछे के तुं शावास्ते अहीं आइुं अवलुं

जोयां करे छे. त्यारे तेने कहे के म्हारो गुरु रात्रिए चोरी करवा आवशे ते माटे हुं आगलथी जोइ राखुं छुं. ते सांभली लोक आवीने भगवानने मार मारे, एवो उपसर्ग थयेलो जोइने भगवाने अभिग्रह कर्यो के ज्यां सुधी आ उपसर्ग मने थाय छे त्यां सुधी म्हारे आहार-पाणी लेवो नहीं. वली ते संगमो केटलिएक गामनी स्त्रीयो भगवान साथे मलती छे, एवुं लोक माने तेवुं करी देखाडे तेवुं छतां पण त्यां भगवान एकांत स्थाने रह्या. एवा छ महीना सुधी उपसर्ग कर्या. तो पण इन्द्रमहाराजे तेने उपसर्ग करताने वार्यो नहीं. केमके इन्द्रमहाराजे एवुं विचार्युं के हुं एने वारीश तो ए कहेशे के-हुंतो भगवंतने चलायमान करत पण शुं करुं तमे मने वर्जी दीधो तेथी लाचार थयो, एवो अपवाद टालवा सारू इन्द्रे तेने कांइ पण कह्युं नहीं. तो पण ज्यां सुधी एणे उपद्रव कर्या त्यां सुधी इन्द्रे श्वास लीधो नहीं, मनमां घणोज उदास रह्यो. बीजा पण सर्व देव-देवीयो शोकमां निस्तेज थकां बेसी रह्यां. एम करतां छ महीनानी अंते ते संगमो देवता पोतानी मेले पोतेज हार खाइने बोल्यो, के-हे आर्य ! तमे सुखेथी गोचरी करो. हुं हवे बिलकुल उपसर्ग करीश नहीं. त्यारे भगवाने कह्युं के-' हुं म्हारी इच्छाए गोचरी जइश. कोइना कहेवाथी जवानो नथी ' अंते हारीने संगमो स्वर्गमां गयो, इन्द्रमहाराजे तेनुं मुख पण जोयुं नहीं. लाकडीयोथी कुटावी मार मराव्यो ने स्वर्गमांथी काढी मूक्यो. ते स्वर्गथी निकलीने पोतानी देवांगनाओ साथे मेरुपर्वतनी चूलिकाए आवी रह्यो. एनुं एक सागरोपमनुं आयुष्य छे. अने ए अभव्य जीवनी जाति छे, एवुं कहेवाय छे. एम प्रभुने दशमा वर्षने विषे घणा उपसर्ग थया. पछी प्रभुए छमासी तपनुं पारणुं वज्रगाममां गोपालकने घेर जइ खीरनां भोजनथी कर्युं. (घणी प्रतोमां गोकुलने विषे वत्सपाली नामे वृद्ध स्त्रीये परमान्ने पारणुं कराव्युं कह्युं छे) त्यां पांच दिव्य प्रगट थयां. वली चोसठ इन्द्रोए तथा

देवोए आवीने प्रभुने सुखशाता पूछी, सावत्थी नगरीमां शक्रेन्द्रे यक्षप्रतिमामां प्रवेश करीने प्रभुने वांद्या, लोकोए देखीने भगवाननो घणो महिमा कर्यो.

जीर्णसेठ अने चन्दनबालानो अधिकार—

अगीआरमुं चोमासुं भगवाने विशाला नगरीमां कर्युं. त्यां जीर्णशेठे भावना भावी के—भगवन्! 'भातपाणीनो लाभ देजो' एवी रीते चार महीनां पर्यंत भावना भावी तो पण मिथ्यात्वी पूरणशेठे दासीने हाथे अडदना बाकुला आप्या ते लइने भगवाने तेने घेर पारणुं कर्युं. त्यां पंचदिव्य प्रगट थयां त्यारे सर्व लोक पूरणशेठने धन्य छे धन्य छे एम कहेवा लाग्या. अने जीर्णशेठे जाण्युं के हुं भाग्यहीण छुं तेथी म्हारे एवो योग क्यांथी मले, एम पश्चात्ताप करतो रह्यो. पछी केटलेक दिवसे केवली भगवान ते गाममां पधार्या. त्यारे राजा प्रमुखे पूछ्युं के—म्हारा नगरमां भाग्यशाली कोण छे? केवली बोल्या के जीर्णशेठ भाग्यशाली छे. राजाए पुछ्युं भगवानने दान तो पूरणशेठे दीधुं छे? केवली बोल्या एणे भाव विना दान दीधुं छे, माटे तेने द्रव्यथी लाभ थयो छे. अने जीर्णशेठे भावथी दान दीधुं छे माटे तेणे बारमा देवलोकनुं आयुष्य बांध्युं छे. भगवान त्यांथी विहार करीने सुसमारपुरे आवी प्रतिमापणे काउस्सग्गे रह्या ते वखते चमरेन्द्रनुं सौधर्म देवलोके जावुं थयुं छे अने ते चमरेन्द्रे प्रभुनुं शरण लीधुं छे. ए अधिकार दश अच्छेरामां सविस्तर आवी गयेल छे माटे अत्रे लखेल नथी. त्यार पछी अनुक्रमे चंदनबालाए प्रभुने पडिलाभ्या छे एटले भगवंते कांइक कर्म शेष रह्यां जाणी कोशंबीनगरीने विषे पोषवदि एकमना दिवसे पोतानी इच्छाथी एवो अभिग्रह लीधो के "१—द्रव्यथी तो सूपडानां खूणामां अडदनां बाकुला राखेला होय. २—क्षेत्रथी एक पग घरनी डेलीनी मांहेली कोरे होय अने एक पग डेलीनी बाहेर रह्यो होय. ३—कालथी

सर्व भिक्षुक लोक भिक्षा मांगी जाय ते पछी ४-भावथी राजानी पुत्री होय परंतु दासपणुं पामेली होय. ५-माथुं मुंडेलुं होय. ६-जेनां पगमां बेडीयो पडेली होय. ७-अट्ठम तप करेल होय अने वली रुदन करती बेठी होय एवी स्त्री जो बे पहोर दिवस चढे मध्यान्ह पछी भिक्षा आपे तो म्हारे पारणो करवो " एवो अभिग्रह करीने श्रीवीरभगवान् गोचरीए नित्य भ्रमण करे, पण कोइ ठेकाणे एवो योग बने नहीं, राजाना मंत्रीश्वर प्रमुखे अनेक उपाय कर्या. पण कोइ रीते प्रभुनो अभिग्रह पूर्ण थयो नहीं. एवा अवसरमां चंपानगरीनो दधिवाहन नामे राजा तेनी धारणी नामा स्त्रीनी वसुमति नामा पुत्री छे. तेनुं अपर नाम चंदनबाला छे. हवे कोशांबी नगरीनो शतानिक नामे राजा छे तेणे राज्यविरोधना लीधे चढाई करीने चंपानगरीने लूंटी त्यारे दधिवाहन राजा नाशी गयो अने धारणी राणी तथा चंदना ए बे कोइ एक शतानिक राजानो पायदल सेवक हतो तेना हाथमां आवी. तेणे धारणीने कह्युं के-' तने हुं म्हारी स्त्री करीश ' ते सांभली धारणी राणी तो पोतानी जीभ चांपीने मरण पामी. पछी सुभटे विचार्युं के ' रखेने आ छोकरी पण मरी जाय ' तेथी तेने विश्वास आपीने कोशांबी नगरीना चौटा मांहे चंदनबालाने वेचवा गयो, तेने वेश्या लेवा आवी त्यारे चंदनाए पूछ्युं. ' तमारो शो आचार छे ? ' वेश्या बोली, उत्तम पुरुष साथे प्रीति करवी, भलां मन मान्यां भोजन करवां, ए अमारो आचार छे. त्यारे चंदना बोली,' ए म्हाराथी न थाय' तथापि ते वेश्याए बलात्कारे लेवा मांडी. त्यारे शासनदेवीए वेश्याना कान अने नाक छेदी न्हाख्यां. वेश्या नाशी गइ, पछी धनावह नामे शेठ जिनधर्मी हतो तेणे मूल्य आपीने चंदनाने वेचाती लइ पोताने घेर तेडी आव्यो अने चंदना एवुं नाम आपी पुत्रीपणे थापी, पण चंदनानुं सुरूप देखी धनावह शेठनी मूला नामा वांजणी फूहड स्त्री छे ते मनमां द्वेष राखवा लागी

के 'रखेने ए म्हारी शोक थाय ! माटे प्रथमथी ज कांइ ऊपाय करुं तो सारुं.' पछी एक दिवस शेठना पग पखालतां चंदनाना माथानी वेणी धरती ऊपर पडी, तेने शेठे उपाडीने ऊंची करी, ते पेहली दुराचारिणी मूला स्त्रीए दीठी अने मनमां चिंतववा लागी के शेठ एनी वेणी ऊपर मोह्यो देखाय छे. मुखथी तो पुत्री कहे छे; पण कालांतरे एने स्त्री करी राखशे, एमां संदेह नथी. केमके हुं हवे बुढ्ढी थइ छुं अने ए स्वरूपवती छे. पछी एक दिवसे शेठ कोइ एक गामे गयो हतो, पाछलथी मूलाए चंदनानुं मस्तक मूंडावी, हाथ पगमां बेडी घाली, घूसानुं वस्त्र पहेरावीने क्षाण प्रमुखना ओरडामां बेसाडी अने पोते घरने बारणे तालुं लगावीने पोताने पीयरे जती रही. चंदना तो ओरडामां बेठी नवकार गणे छे. पोताना करेलां कर्मने निंदे छे. एम करतां चोथे दिवसे शेठ ज्यारे पोताने घेर आव्यो त्यारे चंदनबालाने दीठी नहीं, जेथी पाडोसीने पूछवा लाग्यो. पण पहेली कजीयाखोर मूलानी व्हीकथी कोइ जवाब आपे नहीं. पछी एक डोकरीए सर्व वात कही. त्यारे शेठे तालो उघाडी, ओरडामांथी बाहेर काहाडी, डेलीमां बेसाडीने कह्युं के हुं लोहारने बोलावी लावुं छुं, ते त्हारी बेडीयो उघाडशे. चंदनाए कह्युं हुं भूंखे मरुं छुं, त्यारे शेठे अडदना बाकला एक सूपडाना खूणे न्हांखी चंदनाने आपीने कह्युं के तुं त्रण दिवसनी भूंखी छे, माटे आ बाकला खाजे. हुं बेडी कहाडवा सारुं लोहारने तेडी आवुं छुं. एम चंदनाने पूर्वली अवस्था सहित उंबरे बेसाडी पोते लोहारने तेडवा गयो. हवे शुद्ध सम्यक्त्वनी धरनारी चंदना सती चिंतवे छे के–कोइ अतिथी आवे तो तेने ए वहोरावीने खाउं. एवामां मध्यान्ह काल थयां पछी प्रभु पधार्या. तेने देखी चंदनबाला हर्षवंत थइ थकी बाकला देवा लागी, परंतु प्रभुए लीधेला अभिग्रहना चार भेद तो मलता दीठा, पण पांचमुं रुदन दीठुं नहीं तेथी पाछा वल्या, त्यारे चंदना दुःख धरती थकी रुदन करवा लागी के

'साधु पण म्हारा हाथनो आहार लेता नथी माटे मने धिःकार छे.' पछी भगवंते रुदन करती देखी पोतानो संपूर्ण अभिग्रह थयो जाणी ते अडदना बाकला लीधा. देवताए पंचदिव्य प्रगट कर्यां, तेज वखते बेडी भांगीने नेउर थयां, मस्तके वेणी पाछी आवी, इन्द्रमहाराज आव्या, चंदनानी मातानी व्हेन मृगावती ते चंदनानी मासी थाय. तेना संबंधथी शतानिक नामे राजा धन लेवा आव्यो. तेने इन्द्रे वार्यो अने कह्युं के चंदनाने दीक्षा लेवानी वखते ए धन काम आवशे. चंदनाए कह्युं ए धन धनावह शेठने स्वाधीन करो. त्यारे तेने आपीने इंद्र बोल्यो, 'आ चन्दना भगवाननी प्रथम साध्वी थशे' एम कही इन्द्र स्वस्थानके गयो. अहींआ पांच दिवसे ऊणा छम्मासी तपनुं प्रभुने पारणुं थयुं.

प्रभुने थयेल गोपालककृत कर्णकीलोपसर्ग—

पछी भगवान षड्जृंभिका गामे कायोत्सर्गे रह्या त्यारे इन्द्रमहाराज वांदवा आव्या अने बोल्या के–हे भगवन्! आपने आटला दिवस पछी अमुक दहाडे केवलज्ञान उपजशे, एवुं कहीने गया. हवे प्रभु विचरता अनुक्रमे चंपा नगरीए स्वातिदत्त ब्राह्मणनी शालाए बारमुं चोमासुं रह्या. त्यांथी पारणुं करीने भगवान विचरता षण्मानिक गामे आवी बाहेर उद्यानमां काउस्सग्गे रह्या. ते अवसरमां भगवंतना कानमां गोवालिए खीला ठोक्या ते उपसर्ग कहे छे–प्रभुए त्रिपृष्ठ वासुदेवना भवे शय्या पालकना कानमां सीसुं उष्ण करी रेडाव्युं हतुं ते कर्म अहींआं प्रभुने उदयमां आव्युं, ते शय्यापालक अनेक

१ कोइक प्रतमां एम पण कह्युं छे के वसुधारानी वृष्टि आपणे घरे थइ एवुं सांभलीने मूला पोताना पियरथी दोडीने त्यां आवी. पछी उतावलथी खोलामां धन उपाडवा मांडयुं. ते उपाडतां अग्निज्वाला उठी. तेथी तेना सर्व वस्त्र वली भस्म थयां. पछी ते श्याम वदन थइ थकी त्यांथी चालती थई. तेने देवताए तर्जना करी कह्युं के– ए द्रव्य चंदनबालानुं छे, चंदनाए ते धन शेठने अपाव्युं. शेठे ते सर्व धन चंदनानी दीक्षाना महोत्सवमां खरच्युं.

भवभ्रमण करी गोपालक थयो छे, वैरना लीधे तेणे गोवालीए प्रभुने बलद् भलाव्या, पोते गाममां गयो, त्यांथी पाछो आव्यो. त्यारे बलद् न दीठा, पछी बलद् जोवा सारुं चार प्रहर रात्रि भम्यो, प्रभाते आव्यो तो भगवंत पासे बलद् बेठा दीठा. ते वखते ते गोवालीयाने पूर्वभवना वैरथी द्वेष उपन्यो तेथी भगवंतना कानमां खीला बेसाड्या, जेम कोइ देखे नहीं, कोइने खबर पडे नहीं, तेवी रीते बाहेरथी कापीने सरखा करी दीधा. ते खीला जेना तीर थाय छे एवा शरकट वृक्षना अग्र कापीने कानमां ठोक्या तेथी भगवंतने महावेदना उत्पन्न थइ. तेना योगे प्रभु अत्यंत कृश थइ गया. पछी भगवंत त्यांथी विहार करता मध्यम अपापानगरीमां सिद्धार्थ वणिकना घेर गोचरीए पधार्या. त्यां खरक वैद्य बेठो हतो, तेणे मार्गानुसारे प्रभुने सशल्य दीठा, त्यारे शेठने केहवा लाग्यो के भगवानने व्यथा छे. शेठे कह्युं तो ए व्यथा मटाडी आपवानो लाभ तमे कां लेता नथी ? पछी शेठ अने वैद्य बेहु प्रभुनी पछवाडे गया. त्यां वैद्ये विचार करी बे साणसा लइ बे वृक्षोनी डालीयो रेशमथी बांधी कान मांहेली खीली साणसामां पकडीने रेशमनी दोरीयोथी बे बाजुए बे वृक्षोनी डालोमां बांध्यां. पछी ते बेहु डालीयो नमावीने एकज वखते साथे ज छोडी तेथी बेहु कानना खीला तरत साथेज नीकली आव्या. एम बुद्धिना प्रपंचे करी खीला तो कढाव्या, पण ते वखते प्रभुने वेदना एटली थइ के ते वेदनाना योगथी हांक मारी अरडाट मूक्यो, तेथी वनमां घोराकार शब्द थयो. पर्वत फाटी पड्या. ते पर्वत हालमां बंभणवाड गामनी पासे छे, त्यां बंभणवाड तीर्थ थयुं. प्रभु मूर्च्छा पामी धरतीपर पड्या. तेने बे पुरुषे उपाडी बेसाड्या एम लोको कहे छे. परंतु तीर्थंकरने एवुं संभवे नहीं ते उपरथी अनुमान करीए छिए के कायाना व्यापारथी हांक थइ हशे पण भावथी थयेली जणाती नथी. एवो " अनंत बलित्वात् " ए वचनथी

निरधार थाय छे. पछी कानोनी ऊपर व्रणसंरोहिणी औषधी लगावी, तेथी ते घाव मळी गयो. समाधि थइ. ते शेठ अने वैद्य बेहु मरण पामी देवलोके गया. गोवालीयो मरी सातमी नरके गयो. ए रीते भगवानने ए छेल्लो म्होटो उपसर्ग गोवालीए कर्यो.

प्रभुने जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट; एवा त्रण प्रकारना उपसर्ग थया. तेमां क्या क्या जातिना उपसर्गमां म्होटामां म्होटो उपसर्ग कयो कयो थयो, ते देखाडे छे–प्रथम जघन्य उपसर्गोमां तो शीत परीषहनो म्होटो उपसर्ग कटपूतना व्यंतरीये कर्यो, तथा मध्यम उपसर्गोमां संगम देवताये म्होटो उपसर्ग कर्यो. अने उत्कृष्ट उपसर्गोमां म्होटो उपसर्ग कानमां खीला ठोकाणा तथा खीला काढ्यानो थयो. ए रीते भगवाने बार वर्ष सुधी काया वोसरावी, जेम कोइ पुरुष गाय दोहोवाने बेसे तेवे आसने प्रभु बेठा पण कोइ दिवसे धरती ऊपर बेठा नहीं. तेमां मात्र बे घडी शूलपाणि यक्षना देहेरे निद्रा करी, बाकी सर्वकाल निद्रा विनानो गयो. एम श्रीवीरप्रभुने घणा उपसर्ग सहन करवा पड्या अने श्रीऋषभदेव तीर्थंकरने एक वर्ष सुधी भिक्षा मळी नहीं. एटलो उपसर्ग थयो, तथा मध्यम बावीश तीर्थंकरने स्वल्प उपसर्ग थया छे.

प्रभुनी आचार-विचार दिनचर्या—

भगवान ज्यारे आगार एटले घर तेणे करी रहित एवा अणगार थया त्यारे एक चालवानी ईर्या–समिति एटले जोइने चाले, बीजी भाषा–समिति एटले विचारीने बोले. त्रीजी एषणा–समिति एटले दोष रहित आहार लीए. चोथी आदाण–भंडमत्त–निक्खेवणा–समिति एटले भंड मात्रां प्रमुखने जोइने जयणाए ग्रहण करे तथा जयणाए मूके. पांचमी उच्चार–प्रश्रवण–खेलजल्ल–सिंघाणपारिष्ठापनिका–समिति एटले ठलो, मात्रो, खंखार अने सेडो ए सर्व निर्जीवस्थानके परठवे. ए पांच

समितिए समता थया, पण श्रीतीर्थंकरनो आहार निहार कोइनां दीठामां आवे नहीं, कोइना जाणवामां आवे नहीं. खेळ, नाकमळ, खंखार, होयज नहीं. केमके एने रोगनो अभाव छे. वळी भगवाने मन, वचन अने कायाने कुकर्ममां न चलाव्या. मन, वचन, कायाने भली रीते वर्त्ताववाथी त्रण समिति सहित थया. वळी भगवान मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्तिए गुप्त थया. वळी भगवान इंद्रियोने गोपवी नववाड सहित शीलवंत थया. वळी क्रोध, मान, माया अने लोभरहित, घणाज शीतळ स्वभाववाळा, जेमने क्रोधादिक उपशांत थइ गया छे एवा, वळी जेणे पापने रोधि मूक्यां, निराश्रव थया, ममत्त्व रहित, धनरहित, ग्रंथरहित होवाथी निर्ग्रंथ थया. जेम कांसीना पात्रने पाणी लागे नहीं तेम भगवान पण निर्लेप स्नेह रहित छे, जेम शंखने रंग लागे नहीं तेवा निरंजन छे तथा कोइ उपर राग नहीं, द्वेष नही माटे रागद्वेष रहित, जेम जीवनी गति क्यांय रोकाती नथी तेम भगवानने क्यांय जातां गति हणाती नथी. एटले भगवानने विहार करवामां कोइ रोकी शके नही. आकाश जेम निरालंब छे तेम भगवान पण कोइनो आधार राखता नथी, वायरानी परे अप्रतिबद्ध विहार करे, शरदऋतुना मेघ समान जेनुं हृदय निर्मल छे, कमळनां पत्रनी परे निर्लेप छे, काचबानी परे इंद्रियोने गोपवी राख्यां छे, वळी खड्गी नामनुं जानवर थाय छे तेना सींगडानी परे एकलाज छे, पंखी जेम पोतानी पासे कांइ पण परिग्रह राखे नहीं, तेम भगवान पण पोतानी पासे कांइ पण परिग्रह राखे नहीं. भारंडपंखीनी परे अप्रमत्त, हस्तिनी परे कर्मरूप शत्रुओने मथन करवामां महापराक्रमवंत, वृषभनी परे संयमरूप भार निर्वाह करवाने सामर्थ्यवान, सिंहनी परे परीषह जीतवामां दुर्द्धर, मेरुनी परे अचल अकंप (चलायमान थाय नहीं) एवा छे, समुद्रनी परे गंभीर छे, चंद्रमानी परे सौम्य लेश्यावंत छे.

वली सूर्यनी परे दीपतुं तेज छे जेनुं, तपाव्या कुंदनना सोना सरखा जातरूप छे, पृथ्वीनी परे सर्व फरस सहन करनार छे, घृते होमेला अग्नि सरखा तेजे करी जाज्वल्यमान छे, तेथी भगवानने क्यांये प्रतिबंध नथी. प्रतिबंध चार प्रकारनो छे ते कहे छे–प्रथम द्रव्यथकी प्रतिबंध त्रण प्रकारनो छे. तेमां एक तो मातापिता पुत्रादिक ते द्रव्य थकी सचित्त प्रतिबंध जाणवो. बीजो घरेणा प्रमुखनो प्रतिबंध–ते द्रव्यथी अचित्त प्रतिबंध जाणवो. त्रीजो शणगार करेली स्त्री प्रमुखनो प्रतिबंध ते मिश्रप्रतिबंध जाणवो. ए रीते द्रव्यथकी त्रणे प्रकारनो प्रतिबंध जेने नथी माटे ममत्व रहित छे. वली बीजो खेत्रथकी प्रतिबंध–ते गाम, नगर, उद्यान, खेत्र, खलां, घर, घरनां आंगणां, आकाश इत्यादिक कोइनी ऊपर म्हारापणुं नथी. त्रीजो कालथी प्रतिबंध–ते समयने विषे आवलिका, श्वासोश्वास, सात श्वासोच्छ्वासे एक स्तोक (त्तण) सात स्तोकनो एक लव, बे घडीनुं मुहूर्त्त, त्रीश मुहूर्त्ते एक अहोरात्रि, पन्नर अहोरात्रीए एक पक्ष, बे पक्षे एक मास, बे मासे एक ऋतु, त्रण त्रण ऋतुनुं एक अयन, बे अयननुं एक वर्ष, पांच वर्षनो एक संवत्सर, इत्यादिक बीजा पण दीर्घ कालने विषे कोइ वखत आ अमुक काम हुं करीश एवो प्रतिबंध नथी. तथा चोथो भावथी प्रतिबंध–ते क्रोध, मान, माया, लोभ, भय, हास्य, राग, द्वेष, वचन युद्ध, खोटुं कोइने कलंक आपवुं, चुगली करवी, परना दोष प्रगट करी कहेवा, अरति–द्वेष, रति–प्रीति, कपटथी बोलवुं, मिथ्यात्वशल्य. ए काम करे तो भावथी प्रतिबंध कर्यो कहेवाय. ते मांहेलो भगवानने विषे एके पण नथी. वली भगवंते वर्षादना काल विना शेष उन्हाला अने शीयालाना आठ महीनामां गामने विषे एक रात्रि अने नगरने विषे पांच रात्रि लगण रहेवुं एवो विहार कर्यो. तथा जेम कुहाडो चंदनने कापी न्हांखे, पण चंदन तो उलटो कुहाडानी धारने

सुगंध ज आपे अने जे नहीं छेदे तेने पण सुगंध आपे छे, तेम भगवानने कोइ वांसले छेदे, कोइ चंदने लेपे ते बेहुनी ऊपर समान (सरखुं) मन छे, वली तृण अने मणी तथा पाषाण अने सोनुं ए बेहु समान छे जेने, दुःख अने सुख बेहु समान छे जेने, इहलोक अने परलोकनी गरज नथी जेने, जीववा अने मरवानी इच्छा नथी जेने, संसार समुद्रथी पार थवा वाला, कर्म रूप शत्रुने मारवाने उजमाल थया एवा थका विचरे छे. भगवाननां उत्कृष्ट ज्ञान दर्शन अने चारित्र छे, आदि रहित, स्थान विहार, पराक्रम, आर्जव, मार्दव, अल्प उपधी, क्षमा, निर्लोभता, शुचि, मनःप्रसन्नता, ए सर्व काम उत्कृष्ट छे. साचो संयम तप करवाथी उपचय करेलुं फल निर्वाणमार्ग तेने विषे आत्माने भावता थका विचरे एवी रीते भगवानने बार वर्ष वीत्या.

प्रभुए करेल तप अने पारणानी संख्या—

हवे भगवाने बार वर्षमां जे कांइ तप कर्युं, तेनी संख्या तथा पारणां कर्यां, तेनी संख्या कहे छे—एक संगम देवना उपसर्गमां छ मासी तप तेनुं पारणुं एक. बीजुं पांच दिवसे न्यून छमासी तप तेनुं एक पारणुं, नव वखत चारमासी तप कर्युं तेनां नव पारणां, बे त्रिमासी तपनां बे पारणां, बे अढीमासी तपनां बे पारणा, छ दोढमासी तपना छ पारणां, बे दोढमासी तपनां बे पारणां. बार एकमासी तपनां बार पारणां. व्होतर अर्द्धमासी तपनां व्होतेर पारणां, बसेने ओगणत्रीश छट्ठ तप कर्यां. तेनां बसेने ओगणत्रीश पारणां, ए बेलानी तपस्या करतां पन्नर महीना ने आठ दिवस तपस्यामां गया, भद्रप्रतिमा दिन बे महाभद्रप्रतिमा दिन चार, सर्वतोभद्र प्रतिमा दिन दश. ए त्रण प्रतिमानां त्रण पारणां अने तपना दिवस सोल जाणवा तथा एक रात्रिकी प्रतिमा बार तेनां पारणां बार. ए रीते सर्व तपना दिवसो मेलवतां सरवाले अगीआर वर्ष छ महीना ने पचीश दिवस थया एटला सर्व दिवस

निराहार पणे चउविहार जाणवा. एना तपयंत्रमां बशोने उगणत्रीश छट्ठ करेल छे तेनां पारणा बशे ओगणत्रीश थयां तेमांथी एक छट्ठनुं छेलुं पारणुं केवली पणे थयुं. बाकी बशे अठ्ठावीश पारणां लख्यां छे तथा बार एक रात्रिकी प्रतिमाने स्थानके बार अट्ठम तप लखीने सरवाले ४१६५ दिवस चउविहार तपना थया अने ३५० दिवस प्रथम पारणा सहित आहारना थया, सर्व मली ४५१५ दिवस छद्मस्थपणे रह्या, तेना एक वर्षमां ३६० दिवसनी संख्या करतां बार वर्ष ने साडा छ महीनां थाय. ए रीते भगवाने नित्य भोजन तो रह्युं, पण चतुर्थभक्त तप एटले एक उपवास करीने पण पारणुं कोइ वखते कर्युं नही, थोडामां थोडुं तप कर्युं, ते पण छट्ठनुं एटले बे उपवासनुंज कर्युं छे.

तपसंख्यायंत्र-स्थापना—

तपनाम.	केटला कर्या.	एकंदर दिवसनी संख्या.	पारणांनी संख्या.	तपनाम.	केटला कर्या.	एकंदर दिवसनी संख्या.	पारणांनी संख्या.
छमासी (पूर्ण)	१	१८०	१	एक मासी.	१२	३६०	१२
पंचदिनन्यून छमासी	१	१७५	१	अर्ध मासी.	७२	१०८०	७२
चार मासी.	९	१०८०	९	अठ्ठमतप (तेला)	१२	३६	१२
त्रण मासी.	२	१८०	२	छठ्ठतप (बेला)	२२९	४५८	२२८
अढी मासी.	२	१५०	२	भद्रप्रतिमा.	१	२	१
बे मासी.	६	३६०	६	महाभद्र प्रतिमा.	१	४	१
दोढ मासी.	२	९०	२	सर्वतोभद्र प्रतिमा.	१	१०	१

सरवाले-१२ वर्ष, ६ महीना अने १५ दिवस तपना, तथा ३५० दिवस पारणाना जाणवा. सर्वे पारणा पण एकलठाणाना समजवा.

चातुर्माससंख्या, अने केवलज्ञान—

छद्मस्थपणामां एक अस्थिग्रामे, बीजुं नालंदी पाडे, त्रीजुं चंपानगरीए, चोथुं पृष्ठचंपाए, पांचमुं अने छठ्ठुं भद्रिकाए, सातमुं आलं-

भिकाए, आठमुं राजगृहीए, नवमुं वज्रभूमीए, दसमुं सावत्थिए, अगी-आरमुं विशालाए, बारमुं चंपानगरीए, ए रीते बार चोमासां प्रभुनां थयां. तेरमा वर्षने विषे वर्त्तमान थका उन्हालानो बीजो महीनो, चोथुं पखवाडीयुं एटले वैशाखशुदि दशमना दिवसे पाछलो एक पोहोर दिवस शेष रहतां सुव्रतनामा दिवसे, विजयमुहूर्त्तमां जृंभिक गामने बाहेर ऋजु-बालुका नदीना तीर ऊपर वैयावर्त्तनामा चैत्यथी घणुं दूर नहीं, तेम घणुं नजीक पण नहीं. एवा स्थानके श्यामाक नामे गाथापतिना खेत्रमां शालिवृक्षनी नीचे भगवान गोदुह (गायने दोहोवा बेसीए तेवा आसने) उत्कडु बेसी आतापना लेता थका पाणी रहित बेलानी तपस्यामां आत्माने भावता थका उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे ध्यानमां वर्त्तमान अर्थात् शुक्लध्यान ध्यावता थका भगवानने जे समान बीजुं कोइ ज्ञान नथी एवो व्याघात रहित, आवरण एटले ढांकणा रहित. सर्व द्रव्य पर्यायोने ग्रहण करवावालुं, अने संपूर्ण पूर्णिमाना चंद्रनी परे केवल एटले एकज पण बीजो कोइ जेने सहाय नहीं, एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं. पछी भगवान श्रीमहावीरस्वामी अर्हन् एटले पूजनीय थया, राग द्वेष रहित थया, केवली थया, सर्व जाण थया, सर्वना देखवावाला थया. सर्व देव, मनुष्य, असुर लोकना पर्यायोने जाणे-देखे, सर्व लोक, सर्व जीवोनी आगति, गति, भवांतरमां जावुं, आयुष्य, देवलोकादिथी चववुं, देवलोकादि-कोमां जइ उपजवुं, ते जीवोना मनमां चिंतवे ते, अन्न प्रमुख खाय ते, चोरी प्रमुख करे ते, मैथुनादिक सेवे ते, प्रकटकर्म करे ते, छानुं कर्म करे-करावे ते, इत्यादिक सर्व वातो मांहेली कोइ पण वात जेनाथी छानी रहे नहीं एवा ज्ञानवान थया. जेनी जघन्यथी पण एक क्रोड देवता सेवा करे एवा थया. अने त्रणे काल संबंधि मन, वचन, कायाना योगमां वर्त्तमान सर्व जीवोना सर्व भाव जाणवावाला थया.

प्रथम देशनानी निष्फलता अने रात्रि-विहार—

भगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थया पछी चोसठ इंद्रोनां आसन चलायमान थयां त्यारे चोसठे इंद्र दिक्षा महोत्सवनी परे केवलज्ञाननो महोत्सव करवा आव्या. ते महोत्सव करीने जृंभिका गामनी बाहेर समोसरणनीं रचना करी त्यां, प्रभुए क्षणेक वार देशना आपी पण ते देशना निष्फल गइ, कोइए सामायिकादिक व्रत पण ग्रहण कर्यां नहीं तथा देव सर्वे अव्रति छे तेथी तेओए नवकारशी प्रमुख पच्चक्खाण पण कर्युं नहीं. तीर्थङ्करनी देशना कोइ वखते खाली जाय नहीं, पण वीरप्रभुनी देशना खाली गई. माटे "इदमप्याश्चर्यम्" एटले ए पण आश्चर्य जाणवुं. भगवाने लाभनो अभाव अने आगल लाभ थवानो अवसर जाणी तेज वखते त्यांथी विहार कर्यो. कह्युं छे के— 'तत्रादिश्य क्षणं धर्मं, देवोद्योते जगद्गुरुः। लाभाऽभावान्मध्यमायां, महीसेनवनेऽगमत् ॥ १ ॥' ज्यां केवलज्ञान उपन्युं त्यां तीर्थंकरनो आचार पालवा माटे एक क्षणमात्र धर्मदेशना आपीने देवोना उद्योतने विषे जगतना गुरु श्रीमहावीरस्वामी लाभनो अभाव जाणी त्यांथी बार योजन छेटे मध्यम पावानगरी तेनो महसेन नामक वन त्यां आव्या.

रात्रिमां विहार करवानी मर्यादा नथी, अने एमणे विहार कर्यो. ते कल्पातीत पणुं जणाववा माटें जाणवुं. परंतु छद्मस्थ साधु तो तीर्थङ्कर भगवंतोए जे प्रमाणे आज्ञा आपेल होय, तेज प्रमाणे चाले, पण जो तेथी विपरीत चाले तो प्रायश्चित्तने पामे. वली रात्रिनो विहार जीवनी जयणाने अर्थे वर्ज्यो छे, केमके रात्रिमां कोइ पण जीव जोवामां आवे नहीं. ऊपरना श्लोकमां 'देवोद्योते' एवो पाठ कह्यो ते व्यवहार मात्रथी जाणवुं. अन्यथा तीर्थंकरने तो केवलज्ञानरूप उद्योत सदा सर्वदा विद्यमान छे. अने प्रभु देवरचित कनक कमल ऊपर पगला देतां चाले छे माटे एमनुं चालवुं सदा रात्रि-दिवस सरखुंज छे. पण

प्रभुनो दृष्टांत आपीने जे साधु रात्रिमां विहार करे छे ते सुखशीलिया, तीर्थंकरनी आज्ञा बाहिर अने चारित्रथी भ्रष्ट जाणवा.

गणधरादिसंघस्थापना, श्रीगौतमगणधर १—

ज्यारे वीरप्रभु मध्यम पावापुरीये पधार्या, त्यारे देवोए विशेष समवसरणनी रचना करी त्यां भगवंत पूर्वना बारणे पेसी अशोकवृक्षने त्रण प्रदक्षिणा आपी अने सिंहासने बेसी " नमोतित्थस्स " एम कही प्रभुए धर्मोपदेश आप्यो, तीर्थ–एवुं सूत्रनुं नाम छे, तेने नमस्कार कर्यो ते मंगलाचार जणाववा माटे जाणवुं. एज अरसामां त्यां एक यज्ञार्थि–सोमिलनामा ब्राह्मण यज्ञ एटले होम करावे छे तेमां घणा ब्राह्मणो एकठा थयेला छे, अने

" अपापायां महापुर्यां, यज्ञार्थी सोमिलो द्विजः ।
तदाहूताः समाजग्मु–रेकादशद्विजोत्तमाः ॥ १ ॥ "

अपापा नामनी महाननगरीना विषे रहेनारो सोमिल नामा ब्राह्मण तेणे यज्ञ करवाने अर्थे अगीयार म्होटा ब्राह्मण पंडितो बोलाव्या. तेनां नाम कहे छे–१ इंद्रभूति, २ अग्निभूति, ३ वायुभूति, ४ व्यक्त, ५ सुधर्म्मा, ६ मंडित, ७ मौर्यपुत्र, ८ अकंपित, ९ अचलभ्राता, १० मेतार्य, अने ११ प्रभास; ए अगीयारे महापंडित, चौदे विद्यानां जाण, वेदपाठी, अने महा अभिमानी होवाथी एवुं जाणे छे के अमारा जेवो जगतमां कोइ पंडित नथी, तेम सर्वज्ञ जे लोक कहे छे ते अमेज छिये. ते अगीयारे जणना मनमां अगीयार जुदा जुदा संदेह छे ते कहे छे–पहेला इंद्रभूतिना मनमां जीव छे के नथी ? एवो संदेह छे, बीजा अग्निभूतिना मनमां कर्मनो संदेह छे, त्रीजा वायुभूतिना मनमां जीव अने कर्म जुदां छे के एक छे ? एवो संदेह छे, ए त्रणे संदेहवाला त्रणे जण सहोदर एटले सगा भाइ छे, एमनुं गौतमगोत्र छे. चोथा व्यक्तना मनमां पंचभूतनो संदेह छे, पांचमा सुधर्मना

मनमां जे व्हेवो ते व्हेवो एटले जे स्त्री होय ते मरीने बीजे भवे पण स्त्रीज थाय. अने जे पुरुष होय ते मरीने पुरुष ज थाय? एवो संदेह छे, छट्ठा मंडितना मनमां बंध मोक्ष छे के नथी? एवो संदेह छे, सातमा मौर्यपुत्रनां मनमां देव छे के नथी? एवो संदेह छे, आठमा अकंपितना मनमां नरक छे के नथी? एवो संदेह छे, नवमा अचलभ्राताना मनमां पुण्य-पाप छे के नथी? एवो संदेह छे, दशमा मैतार्यना मनमां परलोक छे के नथी? एवो संदेह छे, अने अगीआरमा प्रभासना मनमां मोक्ष छे के नथी? एवो संदेह छे. एवा अगीयारे जणने वेदना अर्थ विपरीत समजवाथी संदेह रही गया छे. पोता पासे पंडितपणानुं बल घणुं छे माटे अभिमानथी बीजानी वात चालवा देता नथी. ए अगीआरनी पासे जे छात्र भणे छे तेनी संख्या कहे छे-" पंचण्हं पंचसया, अद्धुट्ठसयाइं हुंति दुन्निगणा । दुन्नं तु जुअल सयाणं, तिसओ तिसओ हवइ गच्छो ॥१॥ "-पहेला पांच पंडितोनी पासे पांच पांचसौ छात्र भणे छे. ते पांचेनां पचीशसो छात्र थया, तथा छट्ठा अने सातमा पासे साडात्रणसौ (३५०) साडात्रणसौ (३५०) छात्र भणे छे एम बेउनां मली सातसौ थया, आठमो अने नवमो ए पहेलो युगल अने दशमो तथा अगीयारमो ए बीजो युगल मली चारजणनी पासे त्रणसौ त्रणसौ छात्र भणे छे. ते चारना मली बारसो थया, एम सरवाळे अगीआरेनां मली चुमालीशसो (४४००) छात्रोनो समुदाय थयो. एटले अगीआरे पंडितोने चुमालीशसो विद्यार्थीओ छे एम घणा विप्र त्यां यज्ञमां मल्या छे ते सर्व यजन, जापन, अध्ययन अध्यापन, दान, प्रतिग्रह ए षट्कर्म साधे छे, प्रभाते ब्रह्म गायत्री जपे छे, मध्यान्हे विष्णुगायत्री जपे छे, अने संध्याये शिवसरस्वती जपे छे. एमां उपाध्यायोनां नाम कहे छे-शंकर, शिवंकर, ईश्वर, महेश्वर, धनेश्वर, सोमेश्वर, शुभंकर, सीमंकर, क्षेमंकर, करुणाकर इत्यादि. जानीना नाम कहे छे-गंगाधर, गयाधर, विद्याधर, महीधर,

श्रीधर, लक्ष्मीधर, धरणीधर, भूधर, दामोदर, वृषोदर इत्यादि; दुवेनां नाम कहे छे-महादुवे, शिवदुवे, रामदुवे, धामदुवे, कामदुवे, सहदुवे, हरदुवे, वासुदुवे, श्रीदुवे, बलदुवे, धनदुवे, चंद्रदुवे. व्यासनां नाम कहे छे-श्रीपति, उमापति, गणपति, प्रजापति, विद्यापति, भूपति, महिपति, लक्ष्मीपति, गंगापति, पृथ्वीपति, देवपति, दानवपति. धनपति. पंडितोनां नाम कहे छे-नागार्जुन, गोवर्द्धन, गुणवर्द्धन, विष्णु, कृष्ण, मुकुंद, गोविंद, आनंद, परमानंद, उद्धव, माधव, केशव, पुरुषोत्तम, नरोत्तम. जोषीनां नाम कहे छे-खिमाइत, भीमाइत, रामाइत, प्रभाइत, गुणाइत, विख्याइत, सोमाइत, धनाइत, कर्माइत, धर्माइत, देवाइत, चंद्राइत, सूराइत. त्रिवाडीनां नाम कहे छे-हरिशर्म, अग्निशर्म, महाशर्म, देवशर्म, नरशर्म, सोमशर्म, सूरशर्म, राजशर्म, वासशर्म, गुणशर्म, धर्मशर्म, कर्मशर्म, कुमारशर्म, धनशर्म, जयशर्म, नागशर्म, विष्णुशर्म, शिवशर्म. चतुर्वेदीना नाम कहे छे-हरि, हरिहर, नरहरि, नारायण, नीलकंठ, कालकंठ, वैकुंठ, श्रीकंठ, मुरारि, हरिराम, जगन्नाथ, विश्वनाथ, श्रीराम, रामकृष्ण, शुकदेव, वामदेव, चंद्रदेव, स्वयंभू. शुकलनां नाम कहे छे-कमलाकर, दिवाकर, प्रभाकर, शंकर, यशस्कर, शोभाकर, गुणाकर, रत्नाकर, श्यामदास, रामदास, गोकुलदास, कृष्णदास, देवीदास, हरदास, द्वारिकादास, इत्यादिक जुदी जुदी शाखानां नामवाला ब्राह्मण ते देवलोकनां सुख पामवानां अर्थी थया थका यागकर्म करी रह्या छे. एवा अवसरमां श्रीवीरस्वामी पूर्व सन्मुख बेठा थका मिथ्यात्वकर्दम दूर करे एवी मेघसमान गंभीर ध्वनिथी देशना आपी रह्या छे ते सांभलवा सारुं वैमानिक देवता आकाशे देवदुंदुभि वजाडता थका आवे छे, ते दुंदुभिनो नाद सांभली सर्व ब्राह्मण हर्ष पाम्या अने चिंतववा लाग्या के अमारा यज्ञमंत्र केवा छे के-अमोए हमणा एवा मंत्रो भण्या के

जेथी देवो पण आव्या. एटलामां तो जेम चांडालनो पाडो वेगलो मूकीने माणस बीजे रस्ते चाले तेम ते देवो पण विप्रोनो यागमंडप मूकीने श्रीवीरना समोसरणे जावा लाग्या. अने ते देवो मांहोमांहे एवुं कहेता चाल्या जाय छे के जलदी उतावला जइ सर्वज्ञ-देवने वांदीए.

देवोना मुखथी आवी वाणी सांभलीने इंद्रभूति मनमां अमर्ष लावीने बीजा ब्राह्मणोनी आगल केहवा लाग्यो के जूओ, भाइ! ए आश्चर्य जेवी वात छे के मनुष्य तो अजाण छे मूर्ख छे माटे भूले; पण आ देवो ज्ञानवान थइने पण भूले छे. माटे ए आश्चर्य लागे छे के आवो म्होटो यज्ञमंडप छांडीने न जाणे देवो क्यां जाय छे? वली म्हाराथी उपरांत बीजो सर्वज्ञ ते कोण छे, के जेनी पासे ए जाय छे? त्यारे ते ब्राह्मणमांथी एक ब्राह्मण केहवा लाग्यो के–हे स्वामिन्! ए कोइक म्होटो ढोंगी इंद्रजालीओ आ नगरनी बाहेर आव्यो छे. ते इंद्रजाल काढीने पोते ज्ञानी थइ बेठो छे. बीजा लोकोने कहे छे के हुं पारका मननी वात बधी जाणुं छुं, एम घणा लोकोने भरमाव्या छे तेथी देवता पण त्यां जोवा जाय छे. एवुं सांभली इंद्रभूतिने अत्यंत मान सहित क्रोध चढ्यो त्यारे केहवा लाग्यो के एवो कोण छे जे म्हारा छतां ज्ञानीनुं अभिमान धारण करीने इहां आवे. शुं ते मने जाणतो नथी? माटे जूओ भाइ! ए देव जे भूला ते पण एनां जेवाज अणसमजु हशे. जेवो ए ज्ञानी तेवा ए देव पण जाणवा. यतः–'अहो! सुराः कथं भ्रांत्या, तीर्थांभ्रश्च इव वायसाः। कमलाकरवद्भेका, मक्षिका चन्दनं यथा॥ २॥"–आश्चर्य छे के ए देव थइने भ्रांतिथी जेम कागडा तीर्थप्रत्ये छोडी जाय छे, तेम ए पण यज्ञ छोडीने जाय छे. माटे ए देव कागडा सरखा छे. अथवा जेम देडका समुद्र तजी जाय छे तेम ए पण समुद्र जेवो यज्ञ तजीने जाय छे माटे ए देव देडका जेवा छे.

अथवा जेम मक्षिका चंदनने छोडी जाय तेम ए देव पण यज्ञरूप चंदनने छोडी जाय छे. अथवा 'करभा इव सद्वृक्षान्, क्षीरान्नं शूकर यथा। अर्कस्यालोकवद् घूका, त्यक्त्वा यागं प्रयान्ति यत् ॥ ४ ॥"- जेम ऊंट भला वृक्षोने छोडीने कांटाना वृक्ष ऊपर जाय तेम ए देवो पण यज्ञने छोडी चाल्या जाय छे, माटे ऊंट जेवा छे. अथवा जेम क्षीरना भोजनने मूकीने भूंड विष्टा ऊपर जाय, तेम ए देवो पण यज्ञरूप क्षीर–भोजन मूकीने विष्टाना भोजन समान इन्द्रजालीया पासे जाय छे, माटे ए देव भूंड जेवा छे. अथवा जेम सूर्यना तेजने मूकीने घूड अंधारामां जाय तेम ए देव यज्ञरूप सूर्यने मूकीने अंधकाररूप इन्द्रजालीया पासे जाय छे माटे घूड समान छे. वली एवी पण रीति छे के जे भूंडो माणस होय ते भूंडा पासे जाय. कह्युं छे के–' अहवा जारिसो चिय, सो नाणी तारिसा सुरा बेंति । अणुसरिसो संजोगो. गाम नडाणं च मुक्खाणं ॥ १ ॥ '–अथवा जेहवो ए ज्ञानी छे तेवा ए देव छे तेथी ए बेहुनो सरखो संयोग मल्यो छे. जेम ग्रामनट मूर्ख छे, तेम गामना लोक पण मूर्ख छे. ए बेनो सरखो संयोग मले छे तेम ए देवता जे जाय छे ते पण मूरख छे अने जे ए ज्ञानी छे ते पण मूरख छे. माटे जे पोते जेवो होय ते पोताना सरखा बीजा पासे जाय, एम सरखे सरखा एक बीजानी पासे जाय आवे एवी रीत छे. वली ' रे हिल्ली विहिल्ली करेली, मम चढीस पायवे निंबे। अहवा तुज्ज न दोसो, सरिसा सरिसेण रच्चंति ॥ १ ॥ '–कोइ एक माणस कारेलीनी वेलिने लिंबडाना वृक्ष ऊपर चढती देखीने बोल्यो के–हे कारेली ! तुं ए निंबना वृक्ष ऊपर चढीश नहीं, केमके तुं पोते कडवी छे. अने निंब वृक्ष पण कडवो छे. माटे रे भूंडी ! तुं वली अधिक कडवी थइश, एवुं केण तेणे मान्युं नहीं अने निंबना वृक्षनी ऊपर चढती बंध थइ नहीं. त्यारे ते माणस बोल्यो के भोली ! ए म्हारो

दोष नथी केमके जगतमां सरखे सरखा मले त्यारे राजी थाय तेम तमे पण बे सरखे सरखा छो तो एमां कांइ आश्चर्य नथी; तेवीज रीते ए देवता अने ए ज्ञानी पण बेहु सरखे सरखा मल्या छे. एवा इन्द्रजालीयाने जइ देवो वांदे छे, तो शुं ए देवो पण भूला पड्या न कहेवाय ? वली पण इन्द्रभूति चिंतववा लाग्यो के म्हारा जेवा पंडितनी आगल ए लोकोने ठगे छे अने ज्ञानी नाम धरावे छे, ते म्हाराथी केम सहन करी शकाय ? म्हाराथी तो एनुं खोटुं अभिमान सह्युं जाय नहीं, अने ए ढोंगीनो ढोंग पण म्हारा शिवाय बीजो कोइ उतारी शकशे नहीं. माटे हुं जइने एनुं अभिमान उतारुं. जेम एक आकाशमां बे सूर्य होय नहीं, एक गुफामां बे सिंह एकठा रहे नहीं, तथा एक म्यानमां बे तरवार समाय नहीं तेम ए पण सर्वज्ञ अने हुं पण सर्वज्ञ एम कोइ वारे थायज नहीं. ए इन्द्रजालियो तो विदेशमां कला शीखीने आवेल छे ते सर्वज्ञनुं नाम धरावी लोकोने अने देवताओने भोलवे छे अने हुं तो सर्व विद्याओमां निपुण छुं एवो विचार करे छे. एवामां प्रभुने वांदीने समोसरणथी केटलाएक लोक आव्या तेमने इंद्रभूति पूछवा लाग्यो के लोको ! तमे जेनी पासे गया हता, ते सर्वज्ञ कहेवोक छे ? त्यारे लोक बोल्या के एनी वात कांइ कहेवामां आवती नथी. परंतु तमे पोते सर्वज्ञ नाम धरावीने अमने शुं पुछो छो, ते सर्वज्ञ तो मननी वातो जाणे छे पण तमे तो एटलुं पण नथी जाणता, अने फोकट सर्वज्ञ कहेवरावो छो. ते सांभली इंद्रभूतिए जाण्युं के ए निश्चय मायानुं घर छे माटे सर्वलोक तो एने मानवा लाग्या. परंतु ज्यारे हुं जइश त्यारे तो ए म्हारा आगल बोली शकशे पण नहीं. यतः—" घरसूरा मठ पंडिया, गाम गमारां गोठ । भरी सभामां बोलता, थरथर धूजे होठ ॥ १ ॥ " पोताना घरमां तो बधाय कहे के अमे शूरवीर छिये अने पोताना मठमां पण बधाय कहे के

अमे पंडित छिये, वली पोताना गाममां जे गमार होय ते पण पंच थाय छे. परंतु ज्यारे पंडितोनी भरी सभामां बोलवुं पडे त्यारे तो तेना होठ पण थर थर ध्रूजवा मंडी जाय छे; तेम ए पण सर्वज्ञ एवुं नाम बीजानी आगल कहे छे पण म्हारी आगल ते बोली शकशे नहीं. अरे ! जे अग्निए पर्वतोने बाली नाख्या, ते अग्निनी आगल वृक्षनो शो भार ?, जे वायुए हाथी जेवाने उडाडी मुक्या, ते वायुनी आगल पुणीनुं शुं जोर चाले ? अने जे नदीमां हाथी तणाइ गया, ते नदीमां कीडी बापडी शा हिसाबमां गणाय ? एम इंद्रभूति चिंतवे छे एटलामां अग्निभूति बोल्यो के–भाइ ! तमे ए इन्द्रजालीयाने जीतवा माटे एटलोवधो विचार शुं करो छो, ए कीडी ऊपर कटक शो करवो ? अलसीयानी ऊपर गरुडने तेडवो ते शुं ? तृणनी ऊपर कुहाडो उपाडवो ते शा कामनो, कमलनी नालने कापवा सारुं फरशी उपाडवी ते शा कामनी, वेलडी उखेडवा माटे हस्तिनुं शुं काम पडे ! तेम ते विचारा गरीबडा सर्वज्ञ पासे तमे वाद करवा शुं जाओ छो ? मनेज आज्ञा आपो तो हुंज एने जीती आवुं. एवां भाइनां वचन सांभली इंद्रभूति बोल्यो के–भाइ ! एने शुं जीतवो छे? एने तो म्हारा पांचशे शिष्य मांहेलो कोइ एक शिष्य जाय ते पण जीती आवे, तथापि म्हाराथी रह्युं जातुं नथी, केमके थोडुं पण शल्य कामनुं नहीं. माटे हुं पोतेज जइश, कारण के बीजा तो सर्ववादी मात्रने में जीत्या छे; पण ए क्यांइ रही गयेलो देखाय छे. जेम हाथीना मुखमांथी कोइक कण पडी जाय, जेम मग रांधतां कोइक करडु रही जाय, जेम घाणी पीलतां कोइक तलनो दाणो रही जाय, जेम अगस्ति ऋषिने समुद्रनां त्रण चलु करतां कोइक जलबिंदु रही जाय, जेम चणा भूंजतां कोइक चणो बाहेर पडी जाय, तेम ए पण रही गयेल छे. माटे हे भाइ ! ए एकने अणजीते सर्वने न जीत्या एम लोकोमां कहेवाय.

जेम एकवार जे स्त्रीनुं शील खंडन थयुं ते स्त्री असती कहेवाय, तेम एने जीत्या विना लोकमां म्हारो यश रहे नहीं. माटे एना साथे म्हारे पोतानेज वाद करवा जवुं पडशे अने एने हुं हरावुं तोज म्हारो यश जगतमां रहे. वली पण अभिमानथी इंद्रभूति कहे छेः—" हंहो ! वादिगणा भोटाः, कर्णाटादि–समुद्भवाः । कस्माददृश्यतां प्राप्ता, यूयं मम पुरः सदा ॥ १ ॥ "—अरे कर्णाटादिक देशोमां उत्पन्न थयेला वादिओ ! तमे म्हारा आगल केम नथी देखाता ? शा माटे अदृश्य थइ रह्या छो ? तमे बधाय वादियो म्हारा आगल हारेला छो, तेथी छुपी रह्या छो, शा माटे ? के—में आटला देशोना पंडितोने हराव्या छेः—

लाटा दूरगताः प्रवादिनिवहा मौनं श्रिता मालवाः,
मूकत्वं मगधागता गतमदा गर्ज्जन्ति नो गुर्ज्जराः ।
काश्मीराः प्रणताः पलायनकरा जातास्तिलङ्गोद्भवाः,
विश्वे चापि स नास्ति योहि कुरुते वादं मया सांप्रतम् ॥ १ ॥

भोट कर्णाटक देशना वादि म्हारी आगल अदृश्य थया, तो बीजां देशोना वादिओनो म्हारा आगल शो भार (तेज) छे, लाटदेशना वादिओना समूह ते तो म्हारुं नाम सांभलीने एवुं विचार्युं के जइशुं तो हारीने पाछुं आववुं पडशे. एम जाणी दूर चाल्या गया, तथा एक लाख ने बाणुं हजार मालव देशना वादि हता ते हारी जवाना भयने लीधे म्हारी आगल मौनपणुं धारण करी रह्या, वली मगध देशना दश लाख वादि ते तो म्हारा आगल मुंगा थया एटले एक बोल पण बोली शक्या नहीं, तथा सत्तर हजार गुजरात देशना वादि ते म्हारी आगल मद रहित थइ गया, परंतु हाथीनी परे गाजीने एक शब्द पण कही शक्या नहीं. एटले दीन थइ गया. वली ज्यां सरस्वतीनो वास छे एवा श्रीकाश्मीर देशना वसनारा वादी तो आवीने म्हारे पगे लाग्या, तेथी जे तैलंग देशमां उत्पन्न थयेला नवलाख वादि हता ते तो मात्र म्हारुं नाम सांभ-

लीने नाशी गया. बीजी कोइ पण बुद्धि तेमने उपनीज नहीं. वधारे शुं कहुं? जगतमां एवो कोइ पण पंडित नथी जे म्हारी साथे आवीने हमणा वाद करे! एटले में सर्व वादियोने जीत्या पण मने जीतनारो जगतमां कोइ नथी, तो ए इन्द्रजालीयानो शो भार छे? हुं ज्यां सुधी प्रमादमां छुं त्यां सुधी ए सर्वज्ञ कहेवाय छे; पण ज्यारे हुं वाद करवाने स्हामो थयो, त्यारे ए तेज वखते भागी जशे. कह्युं छे के–'तावद्गर्ज्जन्ति खद्योता–स्तावद्गर्ज्जति चंद्रमाः। उदिते तु सहस्रांशौ, न खद्योतो न चंद्रमाः ॥ १ ॥' खजुआनो उद्योत क्यां सुधी रहे के ज्यां सुधी चंद्रमानो उद्योत न थाय अने चंद्रमानो उद्योत पण क्यां सुधी रहे के ज्यां सुधी सूर्यनो उदय न थाय, पण ज्यारे हजार किरणोने धरनार सूर्य उदय पामे त्यारे खजुआनो अने चंद्रमानो ए बेहुनो उद्योत रहे नहीं. तेम बीजा वादीयोने हरावनाने तो ए इन्द्रजालियो समर्थ छे, पण म्हारी आगल एनो प्रभाव चाले नहीं. एणे ज्यां सुधी मुजने दीठो नथी त्यां सुधी बीजा लोकोने भरमावे छे. तो हवे म्हारे फोकट घरमां बेशी मान करवुं ते शा कामनुं! हुं पोते त्यां जइने तेनुं बल पराक्रम जोउं के ए शुं भण्यो छे? अरे! मुजने एटलां शास्त्र तो भलेना पाठनी परे आवडे छे–" लक्षणे मम दक्षत्वं, साहित्ये संहिता मतिः। तर्के कर्कशता नित्यं, क शास्त्रे नास्ति मे श्रमः ॥ १ ॥" लक्षण शास्त्रमां म्हारुं दक्षपणुं छे. एटले लक्षणशास्त्र तो हुं सारी पेठे जाणुं छुं. स्त्री पुरुषादिकोनां बत्रीश लच्चण रुडी रीते कही देखाडुं छुं तथा पदार्थनां लच्चण तो एवां प्रतिपादन करुं के जेमां अव्याप्ति प्रमुख दोष रहे नहीं, साहित्य शास्त्र जे काव्यादिक ते तो सर्व म्हारे अस्खलित छे, तथा तर्कशास्त्रमां तो हुं एवो निपुण छुं के म्हारा स्हामो कोइने जवाब देतां आवडेज नहीं, एवा कठण तर्कने हुं जाणुं छुं माटे तर्कशास्त्र म्हारे कठण नथी–एतो सदा अकर्कश छे. घणुं शुं कहिये?

एवुं कयुं शास्त्र छे के जेमां म्हारो श्रम न थयो होय ? अर्थात् अढार व्याकरण, अगणित कोश, छंद रत्नाकरादिक अलंकार ते काव्यनी शोभा अतिशयालंकारादिक, नवरसादिक ते वात्स्यायनादिक, धर्मशास्त्र ते सर्व पुराण, मीमांसादिक, ज्योतिष शास्त्र ते चूडामणि प्रमुख, वैद्यकशास्त्र कालज्ञानादिक, ए बधां शास्त्र म्हाराथी अजाण्यां नथी तो ए इन्द्रजालीयो शुं म्हाराथी जीते एवो छे ? माटे हवे हुं त्यां जइ देव, दानव, मानव सर्वने देखतां एने हरावीने एनुं सर्वज्ञ-पणानुं मान उतारी नाखुं एवो मनमां गर्व आणी पांचसौ छात्रोने लेइ जेम जाणे इन्द्र खेंची लइ जतो होयनी ? ते शा माटे के भगवाननी देशना प्रथम खाली गइ हती, तेथी भगवान एक रात्रिमां बार योजन चालीने आव्या तेथी इन्द्रमहाराजे जाण्युं के एमने शिष्यनी प्राप्ति थाय तो रुडुं थाय ते माटे इंद्रनो प्रेयोंज जाणे इन्द्रभूति समोसरण तरफ जतो होयनी ? एवी कवीश्वर घटना करे छे, अन्यथा तो एमज थनारुं छे.

इन्द्रभूति पांचसौ छात्रथी परवर्यो थको वाद करवानी इच्छाथी श्रीवीर भगवानना समोसरण तरफ चाल्यो. ते वखते पांचसो छात्रो इन्द्रभूतिनी विरुदावली बोले छे के–" सरस्वती कंठाभरण, वादिविजय–लक्ष्मीशरण, ज्ञात–सर्व पुराण, वादिकदली–कृपाण, पंडितश्रेणी–शिरोमणि, कुमतांधकार–नभोमणि, जितवादिवृंद, वादि-गरुड–गोविंद, वादिघटमुद्गर, वादिघूकभास्कर, वादिसमुद्र– अग-स्ति, वादिवृक्षहस्ति, वादिमुखभंजन, सकलभूपालरंजन, षट्भा-षावलीमूल, परवादिमस्तकशूल, वादिगोधूमघरट्ट, मर्दितवादि-मरट्ट, वादिकंदकुद्दाल, वादिवृंदभूपाल, वादिगजसिंह, वादि-शिरलीह, वादिवेश्याभुजंग, शब्दलहरी, गंगातरंग, सरस्वतीभंडार, चौदविद्या अलंकार, वादिहृदयशाल, वादियुद्धमाल, बहुराजसमाज-

मुकुट, बहुबुद्धिविकट, ज्ञानरत्नाकर, शब्दादिवाकर, महाकवीश्वर, कृत-शिष्य बृहस्पति, निर्जितभार्गवमति, कौजंगमसरस्वती, प्रत्यक्षभारती, जितानेकवाद, सरस्वतीलब्धप्रसाद. " इत्यादि अनेक प्रकारनी बिरुदावली छात्रो बोली रह्या छे अने इन्द्रभूति चाल्यो जाय छे. वली रस्तामां विचार करवा लाग्यो के अरे जुओ तो खरा के आ मूर्खे शुं कर्युं ? एणे सर्वज्ञपणाना आटोपथी मने नाहक क्रोध चढाव्यो तो हवे एथी ए शुं सुखी थवानो छे ? जेम कोइ अग्निमां पडे तो वली भस्म थया विना रहे नहीं, तेम एणे पण कर्युं छे, एम चिंतवतो चालतो चालतो ज्यारे समवसरणनी पहेली पावडी छे त्यां चढीने जोयुं तो त्रण गढ दीठा. ते गढ कहेवा छे के त्यां प्रथम रूपानो गढ छे तेना सुवर्णमय कोशीशा छे, चार दिशामां चार पोल छे. बीजो सुवर्ण गढ छे तेना रत्नना कोशीशा छे. त्रीजो रत्ननो गढ छे. तेने मणिकांतना कोशीशा छे. एक योजनने विस्तारे छे. तेनी वचमां अशोकवृक्ष छे. ऊपर त्रण छत्र सहित, सुवर्णनुं सिंहासन छे. तेनी ऊपर स्वामि बेठा छे ते इन्द्रभूतिए पोतानी नजरे दीठा त्यारे मनमां विचार्युं के में घणाय वादी दीठा छे; परंतु आवो तेजस्वी वादी क्यांइ पण दीठो नथी तो ए शुं ब्रह्मा छे ? ना ए ब्रह्मा पण देखातो नथी केमके ब्रह्माने तो सावित्री नामे स्त्री छे, हाथमां पवित्री अने कमंडल छे, हंसवाहन छे, पांचमुं गर्दभनुं मुख छे एटला एमां मलतां नथी माटे ए ब्रह्मा नथी, तो शुं ए विष्णु छे ? ना ते पण नथी; केमके विष्णुने तो लक्ष्मी नामे स्त्री छे, चार हाथ छे, शंख, चक्र, गदा अने धनुष ए आयुध छे, गरुड वाहन छे, वरणे श्याम छे, माटे ए विष्णु पण नथी. तो ए शुं ब्रह्मज्ञानी छे ? ना ते पण नथी; केमके ते तो अरूपी छे. वली चंद्रमा सोले कलाए संपूर्ण छे. परंतु कलंक सहित छे माटे चंद्रमा पण नथी, तथा जो एने सूर्य कहुं

तो सूर्यथी पण एनुं तेज तो घणुं अधिक छे, परंतु तेना किरण उष्ण छे ते उष्ण किरण एने नथी माटे सूर्य पण केम संभवे ?, वली इंद्र छे एम जो कहुं तो ते पण नथी, कारण के तेने सहस्त्र नेत्र छे ते एने नथी. वली जो ए मेरु हशे एम कहुं तो मेरु कठण छे ते एमां कठणपणु देखातुं नथी माटे ए मेरु पण नथी. तो ए सर्वगुण संपूर्ण सर्वथी अधिक जे तीर्थंकर कहेवाय छे ते ए तीर्थंकर छे. केमके एवा गुण तो तीर्थंकर विना बीजा कोइमां होयज नहीं. माटे समस्त पापहर, सर्व लोकना शिवकर, षट्कायना रक्षक, अनाथना नाथ, अशरण-शरण, तरण तारण, एवा श्रीवर्धमान सर्वज्ञ तीर्थंकर जे कहेवाय छे ते संभवे छे. सूर्यनी परे तेजवंत, चंद्रमानी परे सौम्य, समुद्रनी परे गंभीर एवा श्रीमहावीर तीर्थंकर विना बीजो केम संभवे ?, इन्द्रभूति श्रीवीरप्रभुने देखीने चिंतवे छे–

' किं नंदी किं मुरारिः किमुरतिरमणः किं नलः किं कुबेरः,
किं वा विद्याधरोऽसौ किमिह सुरपतिः किं विधुः किं विधाता ।
नायं नायं न चायं न खलु न हि न वा नापि नासौ न चैव,
तीर्थं कर्तुं प्रवृत्तो निजगुणविभवैर्वीरदेवाधिदेवः ॥ १ ॥ '

शुं ए महादेव छे?, शुं ए कृष्ण छे ?, शुं ए बहु रूपवंत कामदेव छे ?, शुं ए नलराजा छे ?, शुं ए इंद्रनो भंडारी कुबेर छे ?, शुं ए विद्याधर छे ?, शुं ए इंद्र छे ?, शुं ए चंद्र छे ? अथवा शुं ए विधाता छे ?, एवी रीते कल्पनाओ करीने पछी विचारपूर्वक निर्णय करवा लाग्यो के, ए महादेव तो नथी; केमके-ते तो लंगोट्यो छे, तथा एनो सुवर्ण सरखो वर्ण छे माटे ए कृष्ण पण नथी, राजचिन्हे करी वर्जित होवाथी ए नलराजा पण नथी, त्यागी छे माटे कुबेर भंडारी पण नथी, पादचारी छे माटे विद्याधर पण नथी, भग रहित छे माटे इंद्र पण नथी, कलंक रहित छे माटे

चंद्र पण नथी, अने घटना विवर्जित छे माटे विधाता पण नथी, ए तो सर्वथी अधिक लक्षणधारी देखाय छे तो ए कोण छे एम विचार करतां जाणवामां आव्युं के—अरे! ए तो तीर्थ करवाने अर्थे पोताना अतिशयादि गुण रूप धनवडे करीने प्रवर्त्तित छे एवा देवाधिदेव 'श्रीवीर—जिनेन्द्र' जे लोक कहे छे ते एज छे बीजो कोइ नथी. एम जणाय छे.

हा! ए में शुं कर्युं. आ हुं केवा संकटमां आवी पड्यो, हवे हुं शुं करुं? एनी आगल म्हारुं मान केम रहेशे? 'कथं मया महत्वं मे, रक्षणीयं पुरार्जितम्। प्रासादं कीलिका हेतो—र्भंक्तुं को नाम वांछति ॥ १ ॥" हवे म्हारुं पूर्वे उपार्जेल म्होटाइपणुं हुं केम राखीश? एटले में पूर्वे घणा वादियोने जीत्या छे तेथी हुं लोकमां प्रसिद्ध थयो छुं. पंडित कहेवाउं छुं, तो हवे म्हारे म्हारा पंडितपणाने राखवानो उपाय श्यो करवो के जे थकी ए म्हारी पंडिताइ लोकोमां कायम रहे अने जो एनाथी वाद न करुं तो लोको कहेशे के ए वाद करवा गयो हतो ते पाछो केम भागी आव्यो, माटे म्हें मूर्खाई करी तो पण वाद कर्या वगर म्हारे पाछुं जावुं ठीक नथी. केमके मारे तो हवे ए एकज जीतवो रह्यो छे, तो हवे अल्पने माटे म्हारो वधो यश न गुमाववो ' जेम कोइने एक खीलो जोइतो होय तो ते एक खीलाने माटे आखो प्रासाद भांगी खीलाने काढवा वांछे नहीं, एवो मूर्ख कोइ होय नही ' वली " सूत्रार्थी पुरुषो हारं, कस्त्रोटायितुमीहते। कः कामकलशस्यांशं, स्फोटयेत् ठिक्करीकृते ॥ २ ॥ "—एवो कोण पुरुष होय जे सूत्र एटले तांतणाने अर्थे हारने त्रोडवानी वांछा करे एटले सूत्रनो त्राग जोइतो होय तेटला माटे हार त्रोडवो एम कोइ वांछे नहीं तेम म्हारे पण ए एकने हराव्या विना म्हारो यश रूपी हार त्रोडी नाखवो नहीं. तथा कोण पुरुष ठीकरी जोइती होय तेना

अर्थे मनोवांछितने पूरनार एवो जे कामकुंभ तेने फोडी नाखे अर्थात् ठीकरीने अर्थे कामकुंभने कोइ फोडी नाखे नहीं, तेम हुं पण एनी साथे वाद कर्या विना जो एमज पाछो फरी जाउं तो कामकुंभ जेवो म्हारो यश रूप घट ते फोडी नाख्या जेवुं थइ पडे, तेथी हुं मूर्खोनी गणातीमां थाउं माटे म्हारे एम न करवुं. वली " भस्मने चंदनं को वा, दहेद् दुःष्प्राप्यमप्यथ । लोहार्थी को महाम्भोधौ, नौ भङ्गं कर्तुमिच्छति ॥ ४ ॥ " कोण डाह्यो पुरुष भस्म एटले राखने अर्थे दुःखे प्राप्त थाय एवा चंदनने बाले एटले भस्मने अर्थे मलयागिरि चंदनने कोइ बाले नहीं, तथा एवो कोण मूर्ख होय जे लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रनी मध्ये नाव एटले वहाण तेने भांगी न्हांखवानी वांछा करे अर्थात् कोइ पण भांगे नहीं. परंतु जो मूर्ख होय तो भांगी न्हांखे तेम जो हुं एनी साथे वाद न करुं तो म्हारुं यशरूप मलयागिरि चंदन ते बलीने भस्म थाय, तथा म्हारी यश रूपी नौका महासमुद्रमां भांगी नाख्या जेवुं गणाय. माटे एवो मूर्ख हुं न थाउं अथवा ए पूर्वोक्त श्लोकोनो अर्थ आवी रीते मेलववो के—इंद्रभूतिए भगवानना अतिशय दीठा तेथी चिंतववा लाग्यो के ए कोइ महापुरुष छे माटे एनी साथे हुं वाद करीने अवश्य हारी जइश, तेथी में पण एनी पासे आवीने एक खीलाने माटे म्हारो यशरूपी प्रासाद भांगी न्हांखवा जेवी मूर्खाई करी, तथा एक तांतणाने माटे हार त्रोडी न्हांखवानी इच्छा करी. वली एक ठीकरीने माटे कामकुंभने फोडी न्हांखवा जेवुं कर्युं, तथा राखने अर्थे चंदन बालवा जेवुं कर्युं, तथा लोखंडना कटकाने अर्थे महासमुद्रमां म्हारा संपादन करेला यशरूपी ज्हाजने भांगी न्हांखवा जेवुं कर्युं, एम चिंतवी प्रभुना वचननो अतिशय जोवा मांड्यो.

सारङ्गी सिंहशावं स्पृशति सुतधिया नन्दिनी व्याघ्रपोतं,
मार्जारी हंसबालं प्रणयपरवशात्केकिकान्ता भुजङ्गम् ।

वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जन्तवोन्ये त्यजन्ति,
श्रुत्वा साम्यैकरूढं प्रशमितकलुषं योगिनं क्षीणमोहम् ॥ १ ॥

समपरिणामे करी एकांते रहेवाथी प्रकर्षे करीने उपशम्यां छे कलुष एटले पाप जेमनां एवा, वळी क्षीण थयो छे मोह जेमनो एवा योगीयोने सुणीने एटले उपशम सहित, पाप रहित, मोहरहित एवा जे योगी मुनिराज तेमने सुणीने अर्थात् एवा मुनिनां वचन सांभळीने बीजा जीव पण जेने जन्म थकीज अरस्परस एक बीजानी साथे वैर रहेलां छे एवा तिर्यंच जीव पण समवसरणमां मदरहित थया थका पोत पोतानां वैरने छांडे छे एटले जेनां एवां वचन छे के जे सांभळवा थकी जीवो आजन्मनां वैरने पण भूली जाय छे ते वैर कोने कोने छे ते कही देखाडे छेः—प्रभुना समवसरणमां आवेली मृगली ते सिंहना बालकने स्पर्शे छे एटले सिंहने अने हरणने आजन्मनुं वैर छे; पण समवसरणमां तेओनो वैर मटी जाय छे तेथी ते पोत पोतामां मळीने एकठां बेठां छे, तथा गाय पोताना पुत्रनी बुद्धिथी वाघना बालकने चाटी रही छे. एटले वाघने अने गायने वैर छे तो पण इहां ते वैर टळी गयुं छे, माटे वाघना बालकनी पासे बेठी थकी लाड करे छे, वळी बिलाडी छे ते स्नेहना वश थकी हंसना बालकने स्पर्श करीने बेठी छे, एटले बिलाडी पण हंसना बालकने मारती नथी. वळी मोर अने सर्प्पने पोत पोतामां वैर छे तो पण ते प्रभुना समवसरणमां केवा थइ बेठा छे, तो के ढेल (मयूरी) छे ते सर्पनी साथे बेठी छे. ए रीते इहां एवा प्रकारनां वैर ते सर्व जीवोनां मटी गयां छे.

एवो भगवानना वचननो अतिशय देखी इन्द्रभूति विस्मय थइ रह्यो छे. एटलामां भगवान बोल्या के हे इन्द्रभूति ! गौतम गोत्रिय ! तुं भले आव्यो, तुं सुख समाधिमां वर्त्ते छे. एवुं स्वामिनुं वचन सांभळी इन्द्रभूति मनमां चिंतववा लाग्यो के ए म्हारुं नाम, अने गोत्र

पण जाणे छे. केमके हुं एनी साथे क्यारे पण मल्यो नथी, तथापि एम विचार्युं के म्हारुं नाम तो जगतमां प्रसिद्ध छे माटे कोण नथी जाणतो ? सर्व कोइ जाणेज छे हुं कांइ अछतो माणस नथी. सूर्य क्यां छानो रहे ? पण एणे मने म्हारुं नाम कहीने जे बोलाव्यो तेनुं तत्त्व म्हारा जाणवामां आवी गयुं के एणे मात्र मने ठगवा सारुंज बोलाव्यो जणाय छे. परंतु हुं कांइ एवो अणसमजु नथी के एना मीठा वचनथी मोहित थइ जाउं. हुं तो ज्यारे ए म्हारा मनमां जीव छे के जीव नथी ? एवो संदेह रहेलो छे ते कही आपे अथवा ते संदेह भांजी न्हाखे त्यारे जाणुं के ए खरेखरो सर्वज्ञ छे. नहीं कां तो मात्र म्हारी साथे एने वाद करवो पडे तेथी व्हीतो थको मने राजी राखवा माटे मीठा वचनथी बोलावे छे तेणे करी ए पोताना मनमां एवुं समजतो हशे के ए म्हारी साथे वाद करशे नहीं, पण ते तो हुं मानुं नहीं, एवुं विचारे छे. एटलामां भगवान बोल्या के–हे इंद्रभूति ! जीव छे के नथी ? एवो त्हारा मनमां संदेह छे. वेदनां पद जीवने उत्थापवा वालां अने जीवने थापवा वालां जाणीने संदेहमां पड्यो छे, त्हेनो अर्थ तुं विपरीत करे छे, तेथी तने संदेह रही गयो छे माटे ते वेदनां पदोनो अर्थ पूर्वापर विरोध रहित हुं त्हने कहुं छुं ते सांभल, एम कही भगवान पोते स्वमुखे वेदनां पदोनुं उच्चारण करे छे ते केवा ध्वनिथी करे छे ते कहे छे–' समुद्रो मथ्यमानः किं, गंगापूरोऽथवा किमु । आदिब्रह्मध्वनिः किंवा, वीरवेदध्वनिर्विभौ ॥ १ ॥ ' जेम समुद्र मथन करवा मांड्युं होय ते वखते जे ध्वनि थाय त्हेवोज ध्वनि थाय छे के शुं ? अथवा गंगानदीनुं पूर आवे ते वखते जे ध्वनि थाय तेज ध्वनि थाय छे के शुं ? अथवा आदिब्रह्मानी ध्वनि थाय छे के शुं ? एवो वीर भगवानना मुखथी ध्वनि थयो. तेमां वेदमां जीवसत्ता निषेधकपद एवां छे के " विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय, तान्येवानुविन-

श्यति, न प्रेत्यसंज्ञास्तीति जीवाऽभावश्रुतिः ” हे गौतम ! ए वेदना पदोनो अर्थ तें आ प्रकारे जाण्यो छे के विज्ञानघन एटले विज्ञान समूह जे चेतननो पिंड (सएव के०) ह्वेज चेतन पिंड ते (एतेभ्यो भूतेभ्यः के०) भूत जे पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने आकाश ए पांच भूतो थकी (समुत्थाय के०) उत्पन्न थइने (तान्येवानुविनश्यति के०) ते भूतोनो नाश थया पछी ते विज्ञानघन चेतननो पण नाश थाय छे माटे (न प्रेत्यसंज्ञास्ति के०) परलोक नथी एटले ए पृथिव्यादिक पांच भूतोथी जीव उत्पन्न थाय छे अने ए पृथिव्यादिक पांचभूत ज्यारे नाश पामे त्यारे जीवनो पण नाश थइ जाय माटे जीव मरण पामीने परलोके जाय छे एम कहेवुं वृथा छे केमके परलोके जाय एवो जीव नथी. तो शुं छे तो के ज्ञान छे, ह्वेज ए भूतोथी उत्पन्न थाय छे. जेम दीपक उपजीने ज्यारे विनाशने पामे छे त्यारे तेनो प्रकाश पण जतो रहे छे तेम भूतोनो नाश थये ए जीवनो पण नाश थाय छे. प्रयोग पण छे के–‘ ज्ञानं नान्यभवगं भौतिकत्वात् दीपवत् ’ ज्ञान छे ते भूतथकी उत्पन्न थाय छे, माटे बीजे भवे जनार नथी एटले बीजा भवमां जवावाळुं नथी. जेम दीपक छे तेम ए पण छे, माटे परभवे जनारो जीव नथी. वळी प्रत्यक्ष देखीये छिये के पांचभूत तो देखवामां आवे छे, पण जीव देखवामां आवतो नथी. ज्यारे माणस मरण पामे छे त्यारे तेने बाळीने राख करीये छिये. त्यां हाड प्रमुख तो नजरे दीठामां आवे छे, पण जीवनुं चिन्ह तो कांइ देखातुं नथी. एवो विचार वेदना पदना अर्थथी तने भासे छे के जीव नथी. बीजुं वळी ह्वारा मनमां एम पण भासे छे के वेदमां एवुं पण पद छे ‘ स वै अयमात्मा ज्ञानमयो मनोमयो वाङ्मयश्चक्षुर्मय आकाशमयो, वायुमयस्तेजोमयः, आपोमयः, पृथिवीमयः, क्रोधमयः, अक्रोधमयः, हर्षमयः, शोकमयः, धर्ममयः, अधर्ममयः ’ इत्यादि–(स के०) ते

(वै के०) पादपूरणे अथवा संबोधने (अयं के०) ए (आत्मा के०) जीव ते ज्ञानमयः एटले ज्ञानवंत, मनवालो, वचनवालो, नेत्रवालो एमज आकाशमय, वायुमय, तेजमय, जलमय, पृथ्वीमय तथा क्रोधमय, अक्रोधमय, हर्षमय, शोकमय, धर्ममय, अधर्ममय, इत्यादिक वेदनां पद देखवाथी तने शंका उत्पन्न थयेली छे के जीव छे के नथी एवो त्हने संदेह छे.

हे इंद्रभूति ! योगीश्वरे प्रत्यक्ष जाणेलो एवो ए आत्मा छे एटले ज्ञानीने ए आत्मा प्रत्यक्ष छे. जेम परमाणु बीजा सामान्य जीवोने दीठामां आवतां नथी पण ज्ञानवंत जाणे छे. अनुमानथी पण ए जीवसत्ता सिद्ध थाय छे, ते अनुमान आ प्रमाणे छे–' अस्त्यात्मा-शुद्धपदवाच्यत्वाद् घटवत् '–छे आत्मा शुद्धपद कहेवापणाथी, माटे जेम घट पद छे ते असंयोगी पद छे, तो ए घट नथी एम न कहेवाय तेम आत्मा पद जे छे ते पण संयोग रहित पद छे, तेथी एनी पण नास्ति कहेवाय नहीं. जगतमां जे जे पदार्थ शुद्धपद वाच्य छे, ते ते पदार्थ असत् नथी अर्थात् सत् छे. वली शास्त्रमां पण आत्मा कहे छे तो हवे शुं जाणीए? जीव छे के नथी, केमके एक सूत्र जीव कहे अने एक सूत्र नास्ति कहे एवुं जाणी हे इन्द्रभूति ! तने संदेह पड्यो छे पण ते संदेह खोटो छे, व्यर्थ छे; केमके जीवने नास्ति कहेनारुं जे " विज्ञानघन " पद तेनो अर्थ तुं विपरीत करे छे तेथी ए पूर्वापर विरोधने लीधे तने शंका रही छे माटे एनो अर्थ आम करवो योग्य छे के ' विज्ञान ' एटले ज्ञान अने दर्शन ते अभिन्नपणाथकी विज्ञानघन एवुं जीवनुं नाम छे त्हेज " एतेभ्यो भूतेभ्यः " एटले भूत ते घटादिक छे तेने देखी उत्पन्न थाय छे एटले ज्ञाता जे विज्ञानघन तेने घटादिक जे ज्ञेय ते देखी ज्ञान उपजे छे त्यारे जाणे के घट ते एहज छे ए ज्ञान ते " समुत्थाय " उपजीने " तान्येव " त्हेज ज्ञान ते ज्ञेयनो

उपयोग जावाथी तेमांज नाश थाय " अनुविनश्यति " पछी ते घटना बोधनो पर्याय विनाश पामे छे " न प्रेत्यसंज्ञास्ति " जे पूर्वेनी ज्ञानसंज्ञा हती ते रहे नहीं एटले जे घट दीठो ते घटनुं ज्ञान त्हेज घटमां रह्युं पण घटनो उपयोग पटमां न थाय, परमार्थ ए छे के इन्द्रभूतिने विज्ञानघनन्नी श्रुतिना अर्थथी संदेह हतो के जीव भूतमां उत्पन्न थाय अने भूतमांज नाश थाय परंतु परलोक नथी, ए संदेह हतो ते प्रभुए अर्थ कह्यो के जे उपयोग घटनो हतो ते उपयोग घटमांज रह्यो ? परंतु पटमां नथी. जो एम न मानीए तो " यथाकारी तथा भवति " ज्हेवुं करे त्हेवुं थाय " साधुकारी साधुर्भवति " भलुं करनारो भलो थाय अने " पापकारी पापी भवति " पाप करनारो पापी थाय ' पुण्यं पुण्येन कर्मणा भवति ' पुण्य कर्म करीने पुण्य थाय ' पापः पापेन भवति ' पाप करीने पापी थाय तथा " दद्द " ए त्रण दकारनो अर्थ दया, दान अने दम छे ' इतिं दकार त्रयं यो वेत्ति ' ए त्रण दकारने जाणे ' स जीवः ' ते जीव छे ए यजुर्वेदादिकनां पद छे ते केम मले, माटे ए अनुमान करीये के ' विद्यमान भोक्तृकमिदं शरीरं भोग्यत्वादोदनादिवत् ' विद्यमान छे भोक्ता जेहनो एवुं ए शरीर एटले विद्यमान छे भोगवनारो ज्हेनो एवुं शरीर छे तो ए सूत्रथी एनो भोगवनारो जीव छे ते विद्यमान छे एम सिद्ध थयुं. तेथी ए शरीर भोगववा योग्य छे, माटे एनो भोगवनार पण छे. जेम आहार भोग्य छे तो तेनो भोक्ता पण छे तेम ए शरीरने भोगवनारो जीव छे ए अनुमानथी जीव छे ते माटे हे इन्द्रभूति ! जेम ' क्षीरेघृतं ' दूधमां घृत ' तिले तैलं ' तिलमां तेल ' काष्ठे अग्निः ' काष्टमां अग्नि ' सौरभ्यं कुसुमे ' फूलमां सुगंध अने ' चन्द्रकांतौ सुधा ' चंद्रनी कांतिमां अमृत ' यद्वत्तथा ' जेम ए छे तेम ' आत्माङ्गगतः प्रतिक्षेत्रं भिन्नः ' आत्मा शरीरमां छे. सर्व शरीर क्षेत्रमां जुदो जुदो

छे ते ' अपौद्गलिकः ' पुद्गल रहित ' पारिणामिकः ' पारिणामिक छे, कर्ता छे, भोक्ता छे, ' स जीवः ' ते जीव छे ' अन्यथा जीवं विना-दया किंविषया स्यात् ' एम जो जीव न मानिये तो जीवदया ते शाने विषे होय ' तस्मादस्ति जीवः ' माटे हे इन्द्रभूति ! जीव छे. इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांभली, संशय टाली, मद छांडी, वैराग्य पामी, श्रीवीरप्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइ, इन्द्रभूति पगे लाग्यो अने शुद्ध-भावथी पांचसो छात्रो सहित दीक्षा लीधी, एनुं गौतमगोत्र हतुं माटे गौतम एहवे नामे प्रसिद्ध थयो. भगवानना मुखथी ' उपन्नेवा, विगमेइवा, धुवेवा, ' ए त्रिपदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी. कह्युं छे के–' श्रीवीरमुखतो वेदपदार्थमवगत्य च । प्रव्रज्य त्रिपदीं लब्ध्वा, द्वादशाङ्गी स निर्ममे ' ॥ १ ॥ श्रीवीरप्रभुना मुखथी वेदपदनो अर्थ जाणी दिक्षा लेइने त्रिपदी पामी बार अंगनी रचना करी.

२ श्रीअग्निभूतिगणधर—

इन्द्रभूतिए दिक्षा लीधी ए वात एनो बीजो भाइ अग्निभूति छे तेणे सांभली त्यारे विचारवा लाग्यो के कदाचित् अग्नि छे ते पाणी थइ जाय, पाषाण नरम थइ जाय, पर्वत वायुथी डगी जाय, सूर्य पश्चिम दिशामां उदय थाय, चंद्रमाथी अंगारा वर्षे, पाणी छे ते अग्निज्वाला थइ जाय, अमृत खाधाथी मरण नीपजे, विष खाधाथी जीवतो थाय, पातालमां पृथ्वी पेसी जाय, मेरु पर्वत चलायमान थाय, समुद्र मर्यादा मूकी दे, एटलां वानां बनी जाय, परन्तु म्हारो भाइ ए इन्द्रजालीयाथी हारी जाय ए वात क्यारे पण बने नहीं. एम चिंतवना करे छे एवामां समोसरणथी केटलाक बीजा लोको गाममां आव्या. तेमने अग्निभूतिए पोताना भाइ संबंधि वृत्तांत पूछवाथी ते कहेवा लाग्या के शुं पूछो छो ? इन्द्रभूति तो भगवानना शिष्य थया, ए अमे अमारी नजरे जोइ आव्या छिये. एवुं सांभली अग्निभूति विचारवा लाग्यो के म्हारो भाइ अत्यंत डाह्यो छतां केम छलाय ? पण दैवेच्छाथी वखते छलाइ गयो हशे, तो हवे हुं त्यां जइ ए इन्द्रजालियाने जीतीने म्हारा भाइने पाछो लइ आवुं अने एना सर्वज्ञपणानुं बिरुद पण टाली आवुं. एम विचारी आमर्ष सहित पांचशे छात्रोना परिवारे परवर्यो थको, बिरुदावली बोलावतो थको त्यां जइ समवसरणनी पहेली पावडीए पग आव्यो. त्यारे प्रभुए पण तेने पूर्वनी रीते नाम-

गोत्र सहित बोलाव्यो अने कह्युं के हे अग्निभूति ! तुजने 'कर्म छे किंवा नथी' एवो संशय छे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी तेथी संशय रहे छे. ते आवी रीते— 'पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यं' इत्यादिक वेदना पदथी तुं जाणे छे के जीव छे त्हेज सर्व छे, तो एथी बीजुं कर्म ते वली जूदुं केम संभवे ! एटले कर्म नथी, केमके आत्मा तो अमूर्त्त छे तेने कर्म केम लागे ? कारण के मूर्त्तने अने अमूर्त्तने मांहो मांहे संयोग होय नहीं माटे कर्म नथी. वली कर्मथी जीवने सुख दुःख पण केम थाय. ए पद ऊपरथी कर्म नथी, एम तुं माने छे. तथा वली कोइक वेदनां पद आम पण छे के "पुण्यः पुण्येन, पापः पापेन" ए उपरथी कर्म छे एम पण देखाय छे. तो शुं कर्म छे के नथी ए त्हारो संदेह छे. पण हे अग्निभूति ! जे वेदनां पद छे ते आत्मस्तुतिनां छे, परंतु कर्म निषेध करनारां नथी; केमके अमूर्त छतां मूर्त द्रव्य साथे संयोग तो प्रत्यक्ष देखाय छे. अमूर्त्त आकाशने मूर्त्ति वादलाओने परस्पर योग थाय छे. जे मूर्त्तिवंत छे ते अमूर्तने सुख दुःख करे छे, जेम मदिरापान करनारने अचेतपणुं थाय छे ते मदिरा मूर्तिवंत छे पण अमूर्त्त जीव छे तेने मुंझावे छे माटे कर्म छे एम सिद्ध थाय छे. वली लोकमां एक सुभाग्य, एक दुर्भाग्य, एक सुरूपवान एक कुरूपवान, एक धनवान, एक दारिद्री ए सर्व शुभाशुभ कर्म विना केवी रीते संभवे ? ए रीते वेदपदमां पण कर्म सत्ता सिद्ध छे तेथी कर्म अवश्य छे, इत्यादिक वेदपदना अर्थ सांभलीने अग्निभूतिनो पण संशय टल्यो. त्यारे अहंकार छोडी भावसहित पांचसौ छात्रनी साथे दीक्षा लीधी.

३ श्रीवायुभूतिगणधर—

त्रीजो भाइ वायुभूति छे तेणे अग्निभूतिए दीक्षा लीधी. ते वात सांभली त्यारे चिंतववा लाग्यो के म्हारा बे भाइए ए सर्वज्ञनी पासे दीक्षा लीधी तो ते कोइ महात्मा पुरुषोत्तम देखाय छे माटे हुं पण तेने वांदुं पूजुं अने संशय पूछी पाप रहित थाउं. एम विचारी ते पण भगवान पासे आव्यो. भगवाने तेमने पूर्वोक्त रीते बोलाव्यो अने कह्युं के हे वायुभूति ! 'जीव त्हेज शरीर एटले जीव अने शरीर ए बे एक छे ?' एवो तुजने संशय छे, ते वेदपदना अर्थ बराबर न जाणवाने लीधे छे. ते वेदपद— "विज्ञानघनएवैतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय" इत्यादि ए पदथी जीव सत्ता सिद्ध छे, जीव छे तो ते जीवनुं भोग्य जे शरीर ते जीवथी भिन्न छे तथा 'सत्येन लभ्यस्तपसाह्येष ब्रह्मचर्येण' इत्यादि वेदपदनो अर्थ छे के सत्य, तप, ब्रह्मचर्यथी संयुत पुरुष, जाणे छे के जीव शरीरथी भिन्न छे. प्रमाणथी पण जीव अने शरीर भिन्न देखाय छे; केमके ए म्हारुं शरीर छे एम कहेवाय छे, तो इहां म्हारुं शरीर छे एम कहेनारो जीव छे, माटे जीव अने शरीर भिन्न छे. एवुं सांभलीने वायुभूतिए पण दीक्षा लीधी.

४ श्रीअव्यक्तगणधर—

' चोथो अव्यक्त पण प्रभु पासे आव्यो, स्वामीए कह्युं के 'पांचभूत छे के नथी' ए तुजने संदेह छे, ते तुं वेदपदनो अर्थ बराबर नथी जाणतो माटे संदेह रहे छे. 'स्वप्नोपमं वै सकलं' स्वप्ननी पेठे सर्व छे. ए वेदपद ऊपरथी तुं जाणे छे के—पांचभूत छे के नहीं ? पण ए पाठ जे छे ते अनित्यता बतावनारो छे, परंतु भूतनी नास्ति करनार नथी. वली पृथ्वी देवता, आपो देवता, इत्यादिक वेदपद जे छे ते सहु भूतनी सत्ता जूदी जूदी कहे छे, माटे पांचभूत छे. ते प्रत्यक्ष देखाय छे. एवुं सांभली संशय रहित थइ तेणे पण दीक्षा लीधी.

५ श्रीसुधर्मगणधर—

पांचमो सुधर्म आव्यो, तेने भगवाने कह्युं के हे सुधर्म ! आ भवमां जे ह्वेवा होय ते परभवमां त्हेवाज थाय एटले पुरुष मरीने पुरुषज थाय अने स्त्री मरण पामीने परभवमां पण स्त्रीज थाय छे' एवो तुजने संदेह छे ते वेदपद 'पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते पशुः पशुत्वं' एनो अर्थ तुं आवी रीते जाणे छे के पुरुष मरीने पुरुष थाय, अने पशु मरण पामीने पशु थाय, ए अर्थ तुं नित्य जाणे परंतु नित्य नथी, ए जे वेदपद छे ते कोइक जीव आश्रयी छे. जो ए पद नित्य होय तो वेदमां लखे छे के 'शृगालो वै जायते यः स पुरुषो दह्यते' (यः) जे पुरुष (दह्यते) बले छे (स) ते पुरुष (शृगालो) सीआलीओ (जायते) थाय छे, एटले जे पुरुष बले छे ते पुरुष मरण पामीने सीआल थाय छे. एमां पुरुष ते सीयाल थाय एम कह्युं, माटे पुरुष मरीने पुरुष ज थाय एवो संशय राखवो नहीं. पुरुष मरी सीआल पण थाय छे इत्यादि सांभली संशय मटावी सुधर्मे पण दीक्षा लीधी.

६ श्रीमंडितगणधर—

छठ्ठो मंडितजी आव्यो. तेने प्रभुए कह्युं 'बंध मोक्ष छे के नथी' ए तुजने संशय छे ते तुं वेदपदनो अर्थ जाणतो नथी. ते वेदपद 'सएष विगुणो विभुर्न बध्यते, संसरति वा न मुच्यते' (स) ते (एष) ए (विगुणः) सत्वगुणादि रहित (विभु) सर्वव्यापी जीव (न बध्यते) कर्मे करी बंधातो नथी (संसरति वा) अथवा संचरतो नथी एटले चालतो पण नथी (न मुच्यते) कर्मादि बंधनथी छूटतो पण नथी, ए अर्थथी तुं जाणे छे के जीवने बंध मोक्ष नथी. परंतु एम न जाणवुं ए वेदपद जे छे ते सिद्ध जीवना वर्णवतुं छे; केमके सिद्धना जीवोने बंध मोक्ष नथी. पण जे रागादियुक्त संसारी जीवो छे तेने तो बंध अने मोक्ष बन्ने छे एवुं सांभली संशय टाली एणे पण दीक्षा लीधी.

७ श्रीमौर्यपुत्रगणधर—

सातमो मौर्यपुत्र आव्यो, तेने प्रभुए कह्युं हे मौर्यपुत्र ! 'तुजने देव नथी' एवो संदेह छे ते तुं वेदना पदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी, ते वेदपद 'मायोपमान इन्द्र, यम, वरुण, कुबेरादि' माया जेम इन्द्र, यम, वरुण अने कुबेरादिक छे एनाथी तुजने एवो संदेह छे के देवादि सर्व मायारूप छे; परन्तु वस्तुगते नथी, एम तुं जाणे छे. पण ए मायारूप जे कह्या छे ते तो अनित्यता जणाववा माटे कह्या छे अने वेदमां 'सएष यज्ञायुधी यजमानोऽञ्जसा स्वर्गलोकं गच्छति'--यज्ञरूप आयुध छे जेहने ते ए यज्ञ करनारो यजमान तत्काल सूधो स्वर्ग एटले देवलोके जाय छे ए वेदपद ऊपरथी देवलोक छे एम सिद्ध थाय छे एवी रीते वेदपदनो अर्थ सांभली मौर्यपुत्रनो संदेह टल्यो तेथी दीक्षा लीधी.

८ श्रीअकंपितगणधर—

आठमो अकंपित आव्यो, तेने स्वामीए कह्युं हे अकंपित ! तुजने 'नारकी नथी' ए संदेह छे ते वेदपदना अर्थनुं रहस्य तुं जाणतो नथी तेने लीधे संदेह छे. ते वेदपद 'नेह वै प्रेत्य नरके नारकास्सन्ति' ए वेदपदना अर्थथी तुं एम जाणे छे के परलोकमां नारकी नथी. परन्तु ते अर्थ तुं खोटो समजे छे एनो अर्थ आम छे के (नेह) नहीं इहां (प्रेत्य) परलोकमां (नरके) नरकने विषे शाश्वता (नारका) नरकना जीव (वै) निश्चय एटले नारकीना जीव शाश्वता नथी एम जाणवुं, पण नारकी नथी एम न जाणवुं. केमके 'नारको वै एष जायते यः शूद्रान्नमश्नाति' जे शूद्रनुं अन्न लीये छे ते नारकी थाय ए वेदपद ऊपरथी नारकी छे एम सिद्ध थाय छे एम सांभली निःसन्देह थई एणे पण दीक्षा लीधी.

९ श्रीअचलभ्रातागणधर—

नवमो अचलभ्राता आव्यो, तेने प्रभुए कह्युं के त्हारा मनमां 'पुण्य पाप छे किं वा नथी' एवो संदेह छे ते तुं वेदना पदनो अर्थ विरुद्ध समजे छे तेने लीधे छे. ते वेदपद 'पुरुष एवेदम्' इत्यादि बीजा गणधरना वेदपदना पाठमां एनो जबो अर्थ करेलो छे ते रीते आंही पण जाणवो, माटे जीव पुण्यथी सुख पामे अने पापथी दुःख पामे. एम पुण्य अने पाप ए बे वेदमां छे. ए अर्थ सांभली संदेह टाली एणे पण दिक्षा लीधी.

१० श्रीमेतार्यगणधर—

दशमो मेतार्य आव्यो, तेने प्रभुए कह्युं. हे मेतार्य ! 'परलोक छे के नथी'

एवो तुजने संदेह छे तेनी ऊपर वेदनां पद जे रीते प्रथम गणधरने कह्यां हतां ते रीते सर्व कही देखाड्यां वली 'अस्ति परलोक इहलोकस्यान्यथानुपपत्तेस्त्वत्पूर्वजवत्'- परलोक छे जो न होय तो आ लोक पण केम कहेवाय माटे त्हारा पूर्वजनी परे परलोक पण छे, जेम त्हारा पूर्वज छे तो तुं पण छे अने जे पाप करीने मरण पामे ते नरकमां जाय, अने धर्म करे ते मोक्षे जाय. एवो अर्थ सांभली तेणे पण दीक्षा लीधी.

११ श्रीप्रभासगणधर—

अगीआरमो प्रभास आव्यो, त्यारे प्रभु बोल्या, हे प्रभास ! तुजने 'मोक्ष छे के नथी' एवो संदेह छे ते तुं वेदपदनो अर्थ बराबर जाणतो नथी, तेने लीधे छे. ते वेदपद "जरामर्यं एतत्सर्वं यदग्निहोत्रं"-'अग्निहोत्रं' यज्ञ छे 'तत्सर्वं' ते सर्व 'जरामर्यं वा' जावज्जीव करवो अने ए होममां जीव मरण पामे छे, ते पाप रूप छे. ते स्वर्गना सुख आपे, पण तेथी मोक्ष न थाय. केमके जावज्जीव ए करवो कह्यो माटे स्वर्गेज जवाय पण ते विना मोक्ष जावानो उपाय नथी तो मोक्ष केम थाय एम विचारतां मोक्ष नथीज, एवो अर्थ तुं करे छे तेथी तुजने संदेह रह्यो छे. परंतु ते अर्थ तुं करे छे तेम नथी. एनो अर्थ आवी रीते छे के अग्निहोत्र छे ते जावज्जीव सर्व पण छे. परंतु वा शब्दथी मुक्तिना अर्थी जे जीवो छे तेओए मोक्षना कारण सारूं पण क्रियानुष्ठान करवुं, एटले ए होमज सर्वकाल करवो नहीं. परंतु मोक्षनो पण उपाय करवो तथा वली बे ब्रह्म छे 'परमपरं' तेमां एक तो परब्रह्म अने बीजो अपरब्रह्म, 'तत्र परं सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म' त्यां परब्रह्म तो सत्यरूप, ज्ञान अनंतरूप, नाश रहित छे एटले अनंत ज्ञानमय ब्रह्म ते पर छे ए श्रुतिथी मोक्ष छे एम जाणवुं. ए अर्थ सांभली निःसन्देह थई एणे पण दीक्षा लीधी. इति गणधरवादः.

गणधरस्थापना अने चन्दनबालानी दीक्षा—

श्रीगौतमस्वामीथी मांडीने यावत् प्रभासजी पर्यंत सर्व मली अगीआर विद्वान् आव्या ते सर्वना मनमां जे जे संशय हता ते प्रभुए टाल्या तेथी अगीआरे जणे मली पोताना चुम्मालीशसो शिष्यो सहित प्रभु पासेथी दीक्षा लीधी, प्रभुए सर्वने त्रिपदी आपी ते आवी रीते-प्रथम 'उपन्नेइ वा' एटले सर्व उपजे छे एम कह्युं. त्यारे शंका पेदा थाय छे के जे सर्व उपजे छे तो ते जगतमां केवी रीते समाय ?, त्यारे बीजुं पद 'विगमेइ वा' एटले विनाश पामे छे. ए पदमां पण शंका

उपजे छे के जो विनाश थतो जाय तो सर्व संसार शून्य थइ जाय ?, एम विचारी त्रीजुं पद कहे छे ' ध्रुवे वा ' एटले ए संसारनी स्थिति निश्चल छे त्यारे जाण्युं के उपजे छे, विणसे छे अने रहेनारो छे ते रहे पण छे एवी संसारनी स्थिति सदा सर्वदा त्रणे कालमां चालती आवे छे. एम त्रिपदी प्रभु पासेथी पामीने ए अगीआरे गणधरोए बे घडीमां एटले एक मुहूर्त्तमां द्वादशांगीनी रचना करी ते अवसरने विषे इन्द्र महाराज पोते रत्नना थालमां वासक्षेप लेइ हाजर थया. तेमांथी प्रभुए मुट्ठी भरीने अगीआरे गणधरने माथे अनुक्रमे वासक्षेप कर्यो, ए तीर्थनी स्थापना थइ. देवताओए देवदुन्दुभि वगाड्यां अने जय जय शब्दोच्चार कर्यां पछी चंदनबालाए पण भगवाननी देशना सांभली प्रतिबोध पामीने महामहोत्सव सहित प्रभुपासेथी दीक्षा लीधी, तेनी पछवाडे बीजा पण घणा जनोए दीक्षा लीधी, घणा श्रावक थया, घणी श्राविकाओ थइ, एम चार प्रकारना संघनी स्थापना थइ.

गौतमस्वामिए अष्टापदतीर्थनी यात्रा करतां १५००३ तापसने दीक्षा आपी—

गौतम स्वामीनुं उत्कृष्टरूप, प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान. छट्ठ अट्ठमादिक तपश्चर्या करता थका, धर्मदेशना देता थका, तेजोलेश्यादिक अट्ठावीश लब्धिना धरनार, चार ज्ञानवंत, चौद पूर्वधारी, श्रुतकेवली थया, जेने दीक्षा आपे, तेने केवलज्ञान उपजे पोताने प्रभु ऊपर स्नेह घणो तेथी केवल उपजे नहीं त्यारे चिंतव्युं के मने केवलज्ञाननी प्राप्ति थाशे के नहीं ? गौतमनी एवी चिंतवणी जोइ श्रीवीर भगवान देशनामां एवी रीते बोल्या के–जे पोतानी लब्धिए अष्टापद पर्वत ऊपर चढी चोवीश तीर्थंकरने वांदे, ते जीव तेज भवे मोक्षे जाय, एवी वीरनी वाणी सांभली बत्रीश कोश ऊंचो अष्टापद पर्वत छे, जेनी आठ पावडीयो छे. तेना ऊपर सूर्यना किरण अवलंबीने श्रीगौतमस्वामी पोतानी लब्धिथी चढ्या,

चोवीश जिनने वांदी ' जगचिंतामणि ' स्तवन करी श्रीवयरस्वामीनो जीव तिर्यक्‌जृंभकनामा सामानिक देव छे तेने पुंडरीकाध्ययनथी प्रतिबोधीने नीचे उतर्या, त्यारे पन्नरशेने त्रण तापस चोथ, छट्ठ अने अट्ठम तपने पारणे कंदमूल फलादिनुं पारणुं करे, एम करतां बार मास वही गया छे. तेमणे श्रीगौतमने उतरता दीठा त्यारे चिंतव्युं के आपणे एना शिष्य थाइए तो अष्टापद ऊपर जइ देवने वांदीये एम धारी उठीने श्रीगौतमजीने पगे लाग्या, गौतमे तेमने प्रतिबोधिने दीक्षा आपी; पछी त्यांज ऊभा रही, सर्वे तापसोने स्वलब्धिबलथी ऊपर चढावी अने देव वंदावीने पाछा नीचे उतार्या, गौतमस्वामीए पूछ्युं के हे शिष्यो ! तमे पारणुं करशो ? ते बोल्या हा स्वामी, पछी गौतमस्वामी पोतानी लब्धिथी खीरनो एक पात्र सवा शेरनो भरी आव्या अने तापसोने कह्युं के उठो पारणुं करो, त्यारे खीरपात्र देखी तापसो कहेवा लाग्या के खीर थोडी ने खानार घणा, माटे आटली खीरथी तो आंखे आंजण थाशे ? अथवा बधाने एकेकुं टीलुं कराशे ? पछी, गौतमस्वामीए कह्युं के हे शिष्यो ! मांडले चालो म्हारे पारणुं करी गुरु पासे जावुं छे. एम कही मांडले बेसाडी तापसोनो संदेह भांजवाने अर्थे खीरना पात्रामां पोतानो अंगूठो मेल्यो, त्यारे अक्षीण लब्धिथकी पन्नरशे त्रण तापसने पारणां कराव्यां, पोते पण पारणुं कर्युं, त्यां पांचशे एक तापसने तो खीर जमतां जमतां श्रीगौतमना गुण चिंतवतां चिंतवतां केवलज्ञान उपन्युं अने पांचशे एकने प्रभुनुं समोवसरण देखी केवलज्ञान उपन्युं तथा पांचशे एक तापसने श्रीवीर भगवाननुं मुख देखतांज केवलज्ञान उपन्युं. एम पन्नरशे त्रण तापस केवली थया. तेओ वीरभगवानने वांदी केवलीनी सभामां जावा मांड्या, त्यारे गौतम बोल्या हे शिष्यो ! तमे छद्मस्थनी सभामां बेसो, ए तो केवलीनी सभा छे माटे एमां न बेसवुं. त्यारे

वीरभगवान् बोल्या हे गौतम ! तमे केवलीनी आशातना म करो, ए पन्नरशे त्रण केवली थया छे, ते सांभली गौतम खेद पाम्या के जुओ ! म्हारा शिष्य केवली थया पण हुं केवली थातो नथी. एम घणो घणो चित्तमां खेद करवा लाग्या, त्यारे भगवाने कह्युं के हे गौतम ! तुं खेद म कर, अंते आपणे बन्ने सरखे सरखा थइशुं.

चातुर्माससंख्या अने प्रभु महावीरनो निर्वाण—

ते काल, ते समयने विषे, श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामीने अस्थिग्रामनी निश्राये वर्षाकालनुं पहेलुं चोमासुं थयुं. त्यार पछी चंपानगरीमां अने पृष्टचंपानी निश्राये त्रण चोमासां वर्षाकालना थया, विशाला नगरीमां वाणिज्य गामनी निश्राये बार चोमासां वर्षाकालनां थयां, राजगृहनगरना नालंदीनामे पाडानी बाहेर चौद चोमासां वर्षाकालनां थयां, मिथिला नगरीए छ चोमासां कर्यां, भद्रिका नगरीए बे चोमासां कर्यां, आलंभिका नगरीमां एक चोमासुं कर्युं, सावत्थि नगरीमां एक चोमासुं कर्युं, अनार्य देशमां एक चोमासुं कर्युं, एवं एकतालीश थयां, छेल्लुं बेतालीशमुं चोमासुं मध्यम पावापुरी (अपापा) नगरीमां हस्तिपाल राजानी जूनी लेखकशालामां जगातनी मांडवी कारकुननी सभामां वर्षाकाले रह्या. ते चोमासानो चोथो महीनो सातमुं पखवाडीयुं कार्त्तिक वदि आमावास्याना दिवसनी रात्रिना छेहडाने विषे, भगवान श्रीमहावीरस्वामी काल प्राप्त थया. जाति, जरा, मरण, बंधन एटले जनमवुं, वृद्ध थावुं, मरवुं तेनुं जे बंधन तेने छेदीने सिद्ध थया, तत्त्व जाणवा वाला थया, मुक्त थया, सर्व दुःखनो अंत कर्यो, संताप रहित थया, सर्व दुःखनो क्षय थयो. पांच संवत्सर मांहेलो चंद्रनामा बीजो संवत्सर वर्त्ते छे तेने विषे, प्रीतिवर्द्धन नामे मास ते कार्त्तिक मास तेने विषे, नंदीवर्द्धन नामा पक्ष, अग्निवेश्य

नामा दिवस तेने विषे तथा क्यांएक 'उपशम' एवुं बीजुं नाम ए दिवसनुं कहे छे, देवानंदा नामा रात्रि क्यांएक बीजो 'निरत्ति' एवुं नाम पण ए रात्रिनुं छे जे लवमां भगवंत मोक्षे पहोता, ते लवनो नाम अर्च छे एटले अर्च नामा लव, मुहूर्त्त नामा प्राण एटले श्वासोछ्वास, सिद्ध नामा स्तोक, नाग नामा करण, सर्वार्थ सिद्ध नामा मुहूर्त्त, स्वाति नामा नक्षत्रनी साथे चंद्रमानो योग आवे छते भगवान काय स्थिति, भवस्थिति खपावीने कालगत थया, यावत् मन संबंधि शरीर संबंधि सर्व दुःखथी रहित थया, जे रात्रिमां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमां चारे निकायना घणा देव, अने घणी देवीयो स्वर्गलोक थकी हेठा तिर्च्छा लोकने विषे उतरवा लाग्यां. तेथी तथा ऊंचा उर्ध्वलोकने विषे जावा लाग्यां तेथी ते रात्रिने विषे आकाशमां घणो उद्योत थयो. जे रात्रिमां श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी कालगत थया ते रात्रिमां घणा देव अने देवीओ आवतां जातां बहुज आकुल थयां तेथी अव्यक्त (कोलाहल) शब्द थयो. जे रात्रिमां भगवान श्रीमहावीर स्वामी कालगत थया ते रात्रिमां गौतम जे इंद्रभूति-अणगार भगवानना शिष्य तेनुं प्रेमबंधन त्रूटयुं तेथी श्रीगौतमस्वामीने केवलज्ञान अने केवल दर्शन उपन्युं.

श्रीगौतमस्वामीने केवलज्ञान केम उपन्युं ?—

पोतानो अंतसमय जाणीने श्रीमहावीर देवे श्रीगौतमस्वामीनो पोतानी ऊपर निबिड स्नेह जाणी ते प्रशस्त स्नेह राग निवर्तन करवाने अर्थे संध्या समयथी पहेलां श्रीगौतमस्वामीने देवशर्मा ब्राह्मणने प्रतिबोध करवा सारुं पार्श्ववर्त्ती ग्रामे मोकल्या हता, ते ब्राह्मणने प्रतिबोध आपी त्यां रात्रि रही प्रभाते पाछा वल्या, त्यारे मार्गमां केटलाएक देवोने शून्य चित्ते देख्या अने उपयोगथी वीरनिर्वाण सांभल्युं, त्यारे वज्राहतनी परे मूर्च्छा पाम्या, थोडीवार पछी सावधान थया, त्यारे मोहना वशे

विलाप करवा लाग्या के हे प्रभो ! तमे त्रण लोकना सूर्य अस्त पाम्या तो हवे मिथ्यात्व अंधकार पसरवा मांडशे ! कुतीर्थरूप घुवडना समूह जागृत थइ गर्जारव करशे ! दुरमति दुःष्कालरूप राक्षस प्रवेश करशे ! कुमतिरूप चोर घणा जागशे ! जेम सूर्य अस्त थये कमल कुमलाय, तेम चतुर्विध संघरूप कमल वन कुमलाशे ! जेम चंद्र विना आकाश, दीपक विना मंदिर, अने सूर्य विना दिवस, शोभता नथी तेम तमारा विना ए भरत क्षेत्र शोभा रहित थाशे ! हे वीर ! तमारा विना हवे सात प्रकारना ईति उपद्रव प्रवृत्त थशे, हे वीर ! तमारा विना पाखंडी रूप तारा देदीप्यमान थशे, तमारा विना धर्मरूप चंद्रमाने पापरूप राहु ग्रहण करशे, हे महावीरदेव ! हवे हुं कोना पगतलियामां उल्लासतो थको म्हारा मनना संदेह पूछीश ? कोने हुं भगवान् कही बोलावीश ? कोने हुं नमीश ? हे प्रभो ! हवे मुजने तमारे विना बीजो कोण गौतम कही बोलावशे ? हा हा !!, हे वीर ! हे वीर !! तमे ए शुं कर्युं जे आ वखते मने दूर कीधो, लौकिक पणुं पण नहीं राख्युं, हुं शुं बालकनी परे आडो बेशी आपनो छेहडो पकडी रहेत ? अथवा शुं केवलज्ञाननो भाग मांगत ? शुं मोक्षमार्ग संकीर्ण थात ? अथवा शुं तमोने कांइ भार लागत, के मुजने भोलवीने चाल्या गया ? हे वीर ? जे वेलाए पोतानो बालक वेगलो होय तो पण तेने बोलावीने पोतानी पासे राखवो जोइये ते वेलाये उलटो तमे मुजने पोताथी दूर कर्यो. हे वीर ! तमे शुं तमारा ऊपर म्हारो कृत्रिम स्नेह जाण्यो ? हे वीर ! हुं तमारे शुं असुखकारी थतो हतो जेथी मने मूकी गया, हे वीर ! तमे मुजने केम वीसारी मूक्यो, हे वीर ! तमे आजे मुजने म्होटा विरह रूप समुद्रमां नाख्यो, प्रभो ! तमारा विना हुं म्होटा वियोग रूप दाहमां दाझ्यो, हवे तमारा विना म्हारो दुःख कोण भांजशे, हे वीर ! हवे समोसरणनी शोभा विलय थइ गइ, हवे मुक्ति मार्गनो साथ

भांग्यो, अने हवे जेम जल विना माछली टलवले तेम तमारा विना चतुर्विध श्रीसंघ टलवलतो थशे, हे वीर ! तमारा वचनरूप उपशम जलविना जिनशासन रूप वाडीयो, बाग, बगीचा सूकाइ जशे, तमारा विना समता रूप केतकी सूकाइ जशे, माटे हे वीर! हवे भव्य-जीवना मनरूप भ्रमर क्यां जइने गुंजारव करशे? हे वीर ! हे गुणनि-धान! हे जिनशासननायक! हे भव्यजीवसुखदायक ! हे जिनशासन--सणगार! हे करुणासागर, तमे मुजने विलविलतो मूकीने सात राज दूर जइ वस्या तो हा हा वीर ! हवे हुं कोनी साथे संदेशो कहेवरावुं ? एम अनेक प्रकारे गौतमस्वामी प्रशस्त मोहना उदयथी नाना प्रकारना दुःख करता थका श्रीगौतमने वार वार मोहना वशथकी वी ! वी ! एवा अक्षर मुखे रही गया. पछी गौतमस्वामीए विचार्युं के ए श्रीवीत-राग तो निःस्नेहीज होय, माटे ए तो म्हारोज अपराध छे, हुंज मूर्ख थयो जे में मोहना वश थकी श्रुतनो उपयोग आपी जोयुं नहीं माटे ए म्हारा एकपक्षी स्नेहने धिःक्कार थाओ अरे ! आ मोहराजानो कहेवो महात्म्य छे के म्हारा सरखाने पण एवी रीते पीडा करे छे तो वली बीजा ते शी गणतीमां ? अरे ! म्हें रागना वश-थकी विचार्युं नहीं के ए श्रीवीर प्रभु तो निरागी निस्नेही हता तो म्हारे एना ऊपर राग करवो ते फोकट क्लेशकारीज जाणवो. ए निर्मो-हीने शानो मोह होय अर्थात् कांइ पण न होय. वली हे जीव ! तुं कोण छे अने ते कोण छे. तेमां पण जो निश्चय दृष्टीथी विचारवा जइये तो श्रीवीर अने हुं कांइ जूदा नथी. केमके आ आत्मा तो एकज ज्ञान, दर्शन, चारित्रमयी शाश्वतो छे, बीजा सर्व भाव अशाश्वता छे, हुं एकलो छुं, म्हारो बीजो कोइ स्नेही नथी, जगतमां कोइ कोइनुं नथी. इत्यादिक सम भावना भावतां श्रीगौतम स्वामीने केवल-

३४

ज्ञान उपन्युं, इंद्रादिक देवताओए प्रभाते केवलज्ञाननो महोत्सव कीधो कवि कहे छे के ' श्रीगौतमस्वामी अहंकारथी तो प्रतिबोध पाम्या अने रागथी गुरुभक्ति करी तथा विषादमां केवलज्ञान पाम्या ' ए आश्चर्य छे, गौतमस्वामिए सौधर्मस्वामीने दीर्घायु जाणीने पाट दीधो. पछी बार वरस केवल पर्याय पाली अने सर्व मली बाणुं वर्षायु भोगवीने, मोक्षे पोहोता. गौतमस्वामी जेमने दीक्षा आपे ते त्हेज भवमां मोचे जाय ए गौतमस्वामीमां म्होटो अतिशय हतो.

दीपमालिका पर्वनी उत्पत्ति—

जे रात्रीमां भगवान मोक्षे गया ते रात्रिमां नव मल्लकी जातिना उपन्या, अने नव लिच्छवी जातीना उपन्या, काशी कौशल्य देशना मालिक गण एटले परिवारना धणी एवा अढारे गण राजा छे ते भगवानना मामो चेडो महाराजा छे तेना ए अढारे देशना राजा मित्र समान छे माटे मलवाने अर्थे आव्या हता ते राजा अमावास्याने दिवसे उपवास करीने रात्रे पोसहमां बेठा हता. पछी ते राजाओए भगवंत निर्वाण पाम्या माटे केवलज्ञानरूप जे भाव उद्योत हतो ते तो गयो तो हवे द्रव्य उद्योत करीशुं. एटले पोसह उपवास रूप जे द्रव्य उद्योत ते वरसो वरसे ए अमावास्या दिवसे करीशुं ? अथवा हवे द्रव्य उद्योत करशुं एवुं विचारीने दीवा प्रमुख द्रव्य उद्योत कर्यो. ते दिवसथी मंगलिकने अर्थे म्होटुं पर्व दीवालीनुं थयुं ते पर्वमां भगवान मोक्ष पाम्या, शिवसुख निरुपद्रव सुख पाम्या. वली कार्त्तिक शुदी एकमने दिवसे गौतमस्वामीने केवलज्ञान उपन्युं तेनो हर्ष जाणवो अने कार्त्तिक शुदी बीजने दिवसे भगवानना म्होटो भाइ नंदीवर्द्धन छे ते प्रभुनुं निर्वाण सांभलीने घणोज शोकवंत थयो हतो तेनो शोक मटाडवा सारुं भगवाननी बहिन सुदर्शनाए पोताने घेर नंदीवर्द्धनने तेडीने जमाड्यो ने भाइनो शोक टाल्यो ते दिवसथी लोकोमां ' भाइबीज '

चालू थइ, जे रात्रिमां भगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां क्षुद्र एटले क्रूर स्वभाव छे जेनो एवो अठ्यासी ग्रह माहेलो त्रीशमो भस्मराशि नामा ग्रह तेनी बे हजार वर्षनी एक नक्षत्र ऊपर स्थिति छे ते भगवानना उत्तराफाल्गुनी नामे जन्मनक्षत्र ऊपर आव्यो छे. जे दिवसथी भस्मराशि नामा म्होटो ग्रह भगवानना जन्म नक्षत्र ऊपर आव्यो ते दिवसथी प्रारंभीने निर्ग्रंथ जे साधु–साधवी छे तेमनी घणी पूजा एटले ऊठीने उभुं थावुं, आहारादिकनुं देवुं तथा सत्कार ते वस्त्रादिकनुं देवुं तेनी वृद्धि थाशे नहीं. निर्वाणनी वखते प्रथम भगवानने सौधर्मेन्द्रे वीनंति करी हती के हे महाराज ! तमे मोक्ष जाओ छो परंतु तमारा संतानीयांने बे हजार वर्ष पर्यंत पीडा थाशे माटे बे घडी भस्मग्रह बाकी रह्यो छे एटलुं बे घडीनुं आयुष्य तमारुं वधारो एटले भस्मग्रह उतरी जाय तो पाछलथी आपना संतानीयां (चेला–चेली)ने शाता उपजशे ते सांभली भगवान बोल्या हे इंद्र ! ए वात त्रणे कालमां न थाय, तमे तो बे घडी आयु वधारवा कहो छो, परंतु एक समय मात्र पण आयु म्हाराथी वधे नहीं, त्रूटयुं आयु कोइथी वधार्युं जाय नहीं ए एमज भावी छे जे बे हजार वर्ष पर्यंत म्हारा तीर्थमां शिष्योने बाधा थवा वाली तेने कोण वर्जी शके, कोइनुं पण सामर्थ्य नथी अने ज्यारे भस्मराशी ग्रहना बे हजार वर्ष पूरण थइ जशे त्यारे निर्ग्रंथोनी घणीज पूजा सत्कारादिक मानता अने धर्मनो उदय थशे, श्रीसंघने पण हर्ष थशे. माटे " घडी न लब्भे आगली, इश्युं आखे वीर । इम जाणी जीव धर्म कर, ज्यां लगे वहे शरीर ? " जे रात्रिमां भगवान मोक्ष गया ते रात्रिमां घणा झीणा झीणा कुंथुआ त्रीन्द्रिय जातीना जीव उत्पन्न थया ते उद्धर्या पण न जाय, उद्धरीने अलगा पण न मूकाय अने साधु साधवीने नजरे पण नहीं आवे, सीघ्र चाले त्यारे देखाय ते देखी घणा साधु साध्वीओए भात पाणी आदिक चारे आहारनो त्याग करी

अनशन कर्युं. शिष्ये पुछ्युं के गुरो ! आवी रीतनो उपद्रव केम थयो ? गुरु बोल्या हे वत्स ! आज पछी चारित्र दुःखे पलाशे.

श्रीमहावीरप्रभुनी संपत्ति—

ते काल समयने विषे भगवान श्रीमहावीरस्वामीने इन्द्रभूति प्रमुख चौद हजार उत्कृष्टी साधुओनी संपदा थइ, भगवान श्रीमहावीरस्वामीने चंदनबाला प्रमुख छत्रीश हजार उत्कृष्टी साध्वीओनी संपदा थइ, भगवानने शंखजी तथा शतकजी प्रमुख १५९००० उत्कृष्टी श्रावकोनी संपदा थइ, भगवानने सुलसा, रेवती प्रमुख ३१८००० उत्कृष्टी श्राविकाओनी संपदा थइ, भगवानने केवली नही पण केवली सरखा सर्व अक्षरोना संयोग जाणे तेवा केवलीनी परे सत्य प्ररूपणा करवावाला एवा त्रणशे (३००) चौदपूर्वधारी साधुओनी उत्कृष्टी संपदा थइ, भगवानने तेरशो अवधिज्ञानी साधुओनी उत्कृष्टी संपदा थइ, भगवान श्रीमहावीर स्वामीने सातसे संपूर्ण केवलज्ञान अने केवलदर्शनना धरनारनी उत्कृष्टी संपदा थइ, भगवानने जे देवतानी ऋद्धि बनावी लीये एवा सातशे वैक्रियलब्धिना धरनारनी उत्कृष्टी संपदा थइ, भगवानने जे अढीद्वीप बे समुद्रमां संज्ञीपञ्चेन्द्रिय पर्याप्ता जीवोना मनना भाव जाणे एवा पांचसो विपुलमति मनःपर्यवज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ, भगवानने जे देवो अने मनुष्योनी परषदामां बेशी वाद करता कोइथी हारे नही एवा चारसे वादिओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. श्रीमहावीरना जे अंते (समीपे) वासी (रहे) तेने अंतेवासी कहीए एवा सातशे शिष्य उत्कृष्टा मोक्ष गया. ए भगवानना पोताना हाथे दिक्षित जाणवा तथा चौदशे साधवी उत्कृष्टी मोक्ष गइ ते पण पोतानी हस्तदिक्षित जाणवी. श्रीमहावीरना आगामि भवे मोक्ष जावावाला जेमनी गतिनुं भद्रं आयुष्य एवा उत्कृष्टा आठशे साधुओ विजयादि पांच अनुत्तर विमाने गया.

बे प्रकारनी मोक्षमर्यादा—

श्रमण भगवान् श्रीमहावीर स्वामीने बे प्रकारे अंतगड भूमि थइ एटले मुक्ति मार्गनी मर्यादा थइ ते आवी रीते के—भव जे संसार तेनो अंत करवो तेनी जे भूमिका एटले मर्यादा अथवा कर्मनो अंत करवो तेनी मर्यादा ते बे प्रकारनी थइ ते एम के—एक युगान्त कृत् भूमि अने बीजी पर्यायान्तकृत् भूमि. तेमां प्रथम युग एटले काल-मान विशेष, अनुक्रमे गुरु शिष्य प्रतिशिष्यादि रूप जे पुरुषो तेना प्रमाणे कालमान जाणवुं. ते आंही श्रीवीर भगवानने त्रण पुरुषना पाट पर्यंतकाल सुधी कर्मनो अंत थयो एटले बीजा घणा जीवोए कर्म खपाव्यां छे ते श्रीवीर भगवानना पाटथी मांडीने श्रीजंबूस्वामी पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो, तेमां एक तो श्रीवीर भगवान पोते, बीजा तेमने पाटे तेमना शिष्य श्री सुधर्मास्वामी, त्रीजा भगवानना प्रशिष्य अने श्रीसुधर्म स्वामिना शिष्य श्रीजंबूस्वामी ए त्रण पाट सुधी मोक्ष मार्ग वह्यो छे, तेने युगान्तकृत् भूमि कहीए अने बीजी पर्यायांतकृत भूमि ते श्रीतीर्थंकरने केवलज्ञान उपन्या पछीनो काल ते आश्रयी जांणवो. ते भगवान श्रीमहावीरस्वामिने केवलज्ञान उपन्या पछी एटले प्रभुने चार वर्षनो केवल पर्याय थया पछी बीजा कोइक जीवने कर्मनो अंत थयो, कोइ मुनि मोक्ष गयो एम चार वर्ष वीते मोक्षमार्ग प्रवर्त्यो छे, बीजा जीवोने कर्मनो अंत थयो छे ते पर्यायान्तकृत भूमि कहीये. ते काल, ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी त्रीश वर्ष घरवासे रह्या अने कांइक जाजेरा बार वर्ष छद्मस्थपणे रह्या तथा कांइक ओछा एटले साडा छ मासे ऊणा त्रीश वर्ष केवलीपणे विचर्या. एकंदर बेता-लीश वर्ष लगे चारित्र पर्याय पाली साधुपणुं पाल्युं, सर्व मली बहोंतेर वर्षनुं आयुष्य पालीने वेदनीयकर्म, आयुकर्म, नामकर्म अने गोत्रकर्म ए चार कर्म शेष रह्यां हतां ते क्षय थयां त्यारे एहज अवसर्पिणी

कालने विषे दुःषम सुषमा नामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने ते आरानां त्रण वर्ष ने साडा आठ महीना बाकी रहे थके पावानगरीमां हस्तिपाल राजानी कारकुननी सभामां पोते एकला परंतु साथे बीजो कोइ नही एटले बीजा तीर्थंकरो सर्व साधुओना परिवार सहित मोक्ष गया छे अने श्रीवीर भगवान तो एकलाज बेलानुं तप एटले पाणी रहित चउविहार बे उपवास करीने पलांठीवाली बेठा थका स्वाति नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके पाछली चार घडी रात रहे थके पंचावन्न अध्ययन पुण्य फलना कहेवावाला अने पंचावन अध्ययन पाप फलना कहेवावाला तथा छत्रीश अध्ययन पूछ्या विना कहीने छेल्लो प्रधान नामा मरुदेवीनुं अध्ययन प्ररूपता थका काल प्राप्त थया, ऊंचा गया, जाति, जन्म, जरा, मरणनुं बंधन कापीने सिद्ध थया, बुद्ध थया, मुक्त थया, कर्मोनो अंत करीने सर्व संताप रहित थया. दुःखथी छूटा थया. भगवान श्रीमहावीरस्वामी मोक्ष गया पछी नवसे वर्ष वीत्यां अने दशमा सैकडानां एंसी वर्ष थयां त्यारे एटले वीरनिर्वाणथी ९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं अने वाचनान्तरे नवशे त्र्याणुं वर्षे पुस्तक लखाणुं एवुं देखाय छे.

निर्वाणमां इन्द्रादिकनो कर्त्तव्य—

भगवंतनुं निर्वाण थयुं, त्यारे इन्द्रादिकना आसन चलायमान थयां, भगवंतनुं पांचमुं निर्वाण कल्याणक जाणी सर्व इन्द्र भेगा थइने चमरेन्द्रादिकोए बावना चंदनथी भगवंतनी चय रची, अग्निकुमार देवोए अग्नि मूक्यो, वायुकुमारे वायरो विकूर्व्यो, भगवंतना मांस सर्व शोषाव्यां. पछी मेघकुमार देवोए वरसाद वरसाव्यो, शरीरनी राख खीर समुद्रमां न्हांखी, भगवंतनी ऊपरनी दाढा सौधर्मेन्द्रे लीधी, हेठली दाढा चमरेन्द्रे लीधी, ते दाढाने रत्नमय डाबलामां पूजवामाटे राखी ए अधिकार श्रीजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिमां विस्तारथी कह्यो छे, त्यांथी जोवुं.

पुस्तकलेखन क्यारे केवीरीते थयुं—

श्रीवीर निर्वाण पछी वल्लभीपुर नगरे देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण प्रमुख सर्व श्रीसंघे मलीने सिद्धांत पुस्तकारूढ कीधो, एटले आगल तो सर्व सूत्रो आचार्य प्रमुखने मुखपाठे हतां. पछी बार वर्ष दुःकाल पड्यो तेना लीधे केटला एक साधुओ मरण पाम्या तेथी घणा सूत्रपाठ साधुओने मुखे हता ते विच्छेद गया. त्यार पछी ज्यारे सुगाल थयो, त्यारे सूत्रोनो विनाश थतो देखी साधुनो संघ भेगो थइ जेने मुखे जेटलो पाठ स्मरणमां रह्यो हतो ते सर्व ताडपत्र ऊपर लखी पुस्तकारूढ कर्यो तथा केटलीएक प्रतोमां नवशे एंशीमां वर्षथी सर्व सिद्धांत पुस्तके लखवा मांड्या, ते नवशेने त्राणुमे वर्षे संपूर्ण लखाइ रह्या एवुं पण देखाय छे. यतः–' वल्लहिपुरम्मि नयरे, देवड्ढिपमुह–सयलसंघेहिं । पुत्थे आगमलहिओ, नवसय असिआओ वीराओ ॥ १ ॥ ' तथा कोइ एम कहे छे के ' स्कंदिलाचार्ये माथुरी वाचना करी पुस्तक लिख्यो छे तथा कोइ कहे छे के "कालिकाचार्ये चोथनी संवत्सरी नवशेने त्राणुं वर्षे थापी अने पाक्षिक चौमासी एक दिवसे थापी एवा केटलाएक मतथी बोले छे तेनो मुद्दो केवली जाणे. ए वातनो विशेष विस्तार दीपिका प्रमुख थकी जाणवो. श्रीवीर प्रभुना शासननुं प्रमाण एकवीश हजार वर्षनुं कह्युं छे. श्रीवीर प्रभुना नव गणधर तो प्रभु पोते छतां ज राजगृहि नगरीमां एक महीनानी संलेखणा करीने परिवार सहित सिद्धि पाम्या छे अने वीरनिर्वाण पछी बार वर्षे श्रीगौतमस्वामी मोक्ष पाम्या छे, सांप्रत पांचमा कालमां जे मुनिराज वर्त्ते छे ते सर्व भगवंतना पाटे श्रीसुधर्मास्वामी पांचमा गणधर बेठा हता तेनो परिवार जाणवो. ते श्रीसुधर्मास्वामी वीरनिर्वाण पछी वीश वर्षे सिद्धि पाम्या छे तथा श्रीवीर भगवाननो जन्म चैत्र महीनामां छे अने कार्त्तिक मासमां मोक्ष गया छे माटे बहोंतेर वर्षायु बराबर मलतुं

नथी ते बाबत घणा ग्रंथोमां संवत्सरना दिनमानना फेर देखाडी समाधान करे छे. परंतु खरेखरी वात केवली गम्य छे ए श्रीमहावीरना पांच कल्याणक विस्तारे कह्यां. ए छट्ठा व्याख्यान पर्यंत श्रीवीर भगवानना अधिकार जाणवो.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे षष्ठं व्याख्यानं समाप्तम् ।

अथ सप्तम व्याख्यान-प्रारंभः ।

पश्चानुपूर्वी न्यायथी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनां पांच कल्याणक कहे छे—

ते काल ते समयने विषे श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्रेशठ शिलाका पुरुषमां प्रसिद्ध जेने सर्व मतवाला जाणे छे एवा श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना पांच कल्याणक विशाखा नक्षत्रमां थया. विशाखा नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने वामादेवीनी कूंखे उपन्या, विशाखा नक्षत्रमां जन्म पाम्या, विशाखा नक्षत्रमां गृहस्थपणाने त्यागीने साधुपणुं ग्रहण कीधुं, एटले दिक्षा लीधी, विशाखा नक्षत्रमां सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थयुं छे अने विशाखा नक्षत्रमां मोक्ष गया छे. इति संक्षेप वाचना.

पार्श्वनाथप्रभुनो जन्म अने तेमना दश भव—

ते काल ते समयमां श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोमां प्रधान ते उन्हालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडियुं एटले चैत्रवदि चोथने दिवसे प्राणत नामा दशमा देवलोकथी वीश सागरोपमनुं आउखुं पूर्ण करीने चव्या ते आ जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रने विषे वाणारसी नगरीमां अश्वसेन नामा राजा तेनी वामादेवी नामे राणी तेमनी कूंखे मध्यरात्रीए विशाखा नक्ष-

त्रमां चंद्रमानो योग होते छते देव संबंधि आहार, देव संबंधि शरीरनो त्याग करीने गर्भपणे उपज्या. श्रीपार्श्वनाथ भगवान प्राणत देवलोके कया भवथी आव्या ते दर्शाववा सारुं श्रीपार्श्वनाथ स्वामिना प्रथम दशभव कहिये छिये—आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामक नगरनो अरविंद नामा राजा तेनो विश्वभूति नामे पुरोहित हतो तेनी अनुद्धरी नामनी स्त्रीना एक कमठ अने बीजो मरुभूति ए बे पुत्र हता अनुक्रमे तेनां माता पिता काल धर्म पाम्यां पछी राजाये कमठने पुरोहित पदवी आपी पण ते कमठ स्वभावे कठोर, लंपटी, दुष्ट, माठा लक्षणवालो मूर्ख छे, तेनी स्त्रीनुं नाम वरुणा छे अने मरुभूति तो सरल स्वभाववालो, भद्रकपरिणामी, धर्मात्मा, श्रावकधर्म पालनारो छे तेनी स्त्री वसुंधरा नामे अत्यंत स्वरूपवाली अने घणी चपल स्वभाववाली छे. एक दिवसे ते कमठ मरुभूतिनी स्त्रीने देखी तेना रूपे मोह्यो थको भोग करवाने माटे तेने बे त्रण वार बोलावी त्यारे ते स्त्री पण कमठ ऊपर राग करवा लागी. एक दिवसे कमठे प्रधान वस्त्राभूषण आपीने वसुंधराने पोताने वश करी मांहोमांहे प्रीति बांधी भोग कर्म करवा मांड्यो. ते वात कमठनी स्त्री वरुणाना जाणवामां आवी त्यारे ते पोताना भरतारने केहेवा लागी के आ अकृत्य तमे करो छो ते सारुं देखातुं नथी. जो देवरना जाणवामां आवशे तो लोकोमां निंदा थशे, एवो पोतानी स्त्रीनो कहेलो उपदेश कमठे मान्यो नहीं तेना लीधे ते वरुणा नाराज थइने कमठना अनाचारनी वात मरुभूतिने कही दीधी; त्यारे मरुभूतिये जाण्युं के पोतानी नजरे दीठा विना एकाएक स्त्रीयोनी वात मानवी नहीं, एम विचारी एक दिवसे कपटथी कोइक गामे जवानो मिष करीने बाहेर गयो. वली कापडीनो वेश करी पाछो पोताने घेर आवी रह्यो. ते रात्रीये तेणे दुराचारी कमठ अने पोतानी स्त्री बेहुने

क्रीडा करतां दीठां त्यारे क्रोध करीने प्रभाते कमठना दुराचारनी वार्त्ता अरविंद राजा आगल आवीने कही, राजाये कमठने पकडी चोरनी परे भूंडे हाले करी रासभ ऊपर चढावी, नगरमां फेरवी, विटंबना करी, शहेरनी बाहेर काहाडी मूक्यो अने मरुभूतिने पुरोहित कर्यो. पछी कमठ दुःखी थयो थको कोइ तापसनी पासेथी दीक्षा लइ बारवर्ष पर्यंत तपस्या करतो पृथ्वीमां भमतो भमतो फरी पाछो पोतनपुरनी बाहेर एक पर्वतनी ऊपर आवी तपस्या करवा लाग्यो, पण गाममां न आवे. गामना सर्व लोक तेने तपसीं देखी भोजनादिक आपे, प्रशंसा करे ते वात मरुभूतिये सांभलीने विचार्यु के ए म्हारो म्होटो भाइ छे. म्हें एने दुःख दीधुं छे, तेथी तापस थयो छे माटे हुं पण जइने म्हारो अपराध खमावी आवुं. एम चिंतवी घणा भोजनादिक रंधावी, साथे लइ कमठने खमाववा गयो, त्यां जइ तेना पगे लागी पोतानो अपराध खमावी पाछो फरे छे एटलामां कमठे मरुभूतिने ओलखी पोतानो वैर संभारी, तेना मस्तक ऊपर एक म्होटी शिला नांखी तेथी मरुभूति मरण पाम्यो ए पहेलो भव कह्यो.

ते मरुभूतिनो जीव आर्त्तध्यानथी मरण पामीने बीजे भवे विंध्याचलनी अटवीमां सुजातिक नामा हाथी थयो अने कमठनो जीव पण दुष्टकर्मना जोरथी ते पर्वत ऊपरथी उतरतां नीचे रपसी पड्यो. तेथी मरण पामीने तेज विंध्याचलनी भूमिमां पंखीनी परे उडतो चाले एवो कूर्कट नामे सर्प्प थयो. एकदा अरविंद राजाए संध्या समयने विषे पंचवर्णां वादलां दीठां, तेथी ते वैराग्य पामी, दीक्षा लइ अगीआर अंग भणी उग्रतप करता थका एकाकी विचरवा लाग्या. तेओ एकदा सागरचंद्र नामा सार्थवाहना संघनी साथे अष्टापद सम्मेतशिखरनी यात्राये गया, त्यां विंध्याचल वनमां एक सरोवर देखी संघे ते स्थानके उतारो कर्यो, एवामां मरूभूतिनो जीव जे हाथी थयो छे ते

पोतानी हाथणीयोना परिवार सहित त्यां सरोवरने विषे जल पीवा सारुं आव्यो, तेणे क्रोध करी सर्व संघने उपद्रव कर्यो. तेथी सर्व सथवाराना लोक नासी गया. पछी साधु काउस्सग्गमां ऊभा हता तेने ते हाथी मारवा आव्यो त्यारे मुनिना तपप्रभावथी त्यां थंभाइ गयो. ते अळगो ऊभो थको मुनिने जोवा लाग्यो. मुनिने जोतां थकां हाथीने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं त्यारे पूर्वना भव देखी साधुने ओळख्या. पछी सूंढ लांबी करी साधुने पगे लाग्यो. मुनिये पण भव्य जीव जाणीने तेने प्रतिबोध आप्यो तेथी ते हाथी समकित पाम्यो. ते जोइने बीजा पण घणा लोक त्यां प्रतिबोध पाम्या. पछी हाथीये श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. श्रावकना बार व्रतनी अभिलाषा धरतो थको साधुने नमस्कार करी सरोवरमांथी पाणी पीइने पोताने स्थानके गयो. साधुजी पण त्यांथी विहार करी सथवारानी पाछल चाली यात्राये गया. चारित्र पालीने शुभगति पाम्या. हवे मरुभूतिनो जीव हाथी ते एक दिवस उन्हालाना दिवसोमां मध्यान्ह समये तृषाथी पीडायो थको तलाव ऊपर पाणी पीवाने आव्यो. त्यां कादवमां खूंची गयो, ते वखते कमठनो जीव कूर्कट सर्प पण तृषाथी पीडायो थको उडतो उडतो आव्यो, तेणे पाणी पीइने पछी हाथीने दीठो त्यारे आगला भवना वैरना लीधे हाथीनी ऊपर चढीने तेना मस्तकमां डंक मार्यो, तेथी तेज वखते हाथीने झेर व्यापी गयुं अने श्रावकधर्म पालवाना योगे शुभ ध्याने मरण पाम्यो. ए बीजो भव. त्रीजे भवे ते हाथी त्यांथी मरण पामीने आठमा देवलोके देवता थयो अने हाथी पडतां सर्प पण चंपाइने मरण पाम्यो ते हाथी घातना पातकथी पांचमी नरके जइ नारकीपणे उपन्यो ए त्रीजो भव.

चोथे भवे मरुभूतिनो जीव आठमा देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकच्छ नामा विजयना वैताढ्य पर्वतनी दक्षिणश्रेणिमां तिलवती नामा नगरीने विषे विद्युतगति राजानी कनकवती

नामा स्त्रीनी कूंखे पुत्रपणे उपन्यो. तेनुं 'करणवेग' नाम दीधुं. अनुक्रमे युवावस्थाए सुरूपा नामा स्त्री परण्यो, राज्यने पण पाम्यो, एक दिवसे सुरूपा राणी साथे सुख भोगवतां गोखमां बेठा थकां संध्या फूली देखी वैराग्य पामी दीक्षा लीधी. पछी वैताढ्यना हेमशैल ऊपर काउस्सग्गमां ऊभा रह्या. ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमी नरकथी नीकलीने ते पर्वत ऊपर सर्प थयो छे तेणे साधुने करड्यो तेथी साधुये काल कीधो ए चोथो भव. पांचमे भवे साधु बारमा देवलोके देवता थयो अने सर्प मरण पामीने पांचमी नरके गयो ए पांचमो भव. छट्ठे भवे मरुभूतिनो जीव बारमा देवलोकथी चवीने आ जंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहने विषे गंधीलावती विजयमां शुभंकरा नगरीनो वज्रवीर्य नामे राजा तेनी लक्ष्मीवती नामे राणीनी कूंखे पुत्रपणे आवी उपन्यो. मात पिताए तेनुं वज्रनाभ नाम दीधुं. अनुक्रमे तेना पिताए तेने राजपाटे बेसाड्यो. ते यौवनवयमां राज पालतो थको संसारिक सुख भोगवे छे. एक दिवसे शुभंकरा नगरीना उद्यानमां 'श्रीक्षेमंकर' नामा तीर्थंकर आवी समोसर्या. तेमने वज्रनाभ राजा वांदवा गयो. त्यां तीर्थंकरनी देशना सांभली, संसार अनित्य जाणी, तीर्थंकर पासेथी दीक्षा लइ, अगीआरे अंग भण्यो, जंघाचारणनी लब्धीना बले सुकच्छ विजय मांहे निज्वलन पर्वत ऊपर काउस्सग्ग रह्या. ते अवसरमां कमठनो जीव पांचमा नरकथी नीकलीने, संसारने विषे बीजां पण घणां भवभ्रमण करी ते पर्वतमां कुरंग नामा भिल्ल थयो. ते भिल्ल पोताना स्थानकथी बाहेर आहेडो करवा निकल्यो त्यारे वज्रनाभ साधुने देखी आगला भवना वैरना लीधे साधुने देखतांवार ज अपशुकन थयुं जाणी क्रोध उपन्यो. तेथी साधुना मर्मस्थानके एक बाण खेंचीने मार्यो तेथी साधु शुभ ध्यान ध्यावता मरण पाम्या ए छट्ठो भव.

सातमा भवे साधु शुभध्याने मरण पामीने मध्यम ग्रैवेयके देवता पणे उपन्यो अने भिल्ल मरण पामी साधुघातना पापथी सातमी नरके गयो ए सातमो भव. आठमा भवे मरुभूतिनो जीव मध्यम ग्रैवे-यकथी चवीने आ जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहमां शुभंकर विजयने विषे पुराणपुर नामे नगरमां कुशलबाहु नामे वासुदेवनी सुदर्शना नामे राणीनी कूंखने विषे पुत्रपणे आवी उपन्यो, माताए चौद स्वप्न दीठां पछी पुत्रजन्म थयो त्यारे माता पिताए सुवर्णबाहु नाम आप्युं. चौद सुपन देखवाना प्रभावथी ते सुवर्णबाहु चक्रवर्त्तिनी पदवी पाम्यो, छ खंड साधी, चक्रवर्त्तिनी पदवी भोगवी, वृद्धावस्थामां तीर्थंकरनी देशना सांभली, दीक्षा लइ, वीश स्थानकनुं तप आराधन करी तीर्थं-कर गोत्र बांध्युं. ते राजर्षी एक दिवसे उजाडमां काउस्सग्ग ध्याने रह्या छे एवामां ते भिल्लनो जीव सातमा नरकथी मध्यम आउखुं पूर्ण करीने तेज उजाडमां क्षीर गुफामां सिंहपणे आवी उपन्यो, तेणे त्यां सुवर्णबाहु मुनिने दीठो त्यारे पूर्वभवना वैरथी राजऋषीने मारी नाख्यो ए आठमो भव. नवमा भवे साधु शुभध्याने मरण पामी दशमा प्राणात देवलोके देवतापणे जइ उपन्यो अने सिंह मरण पामीने चोथी नरके गयो ए नवमो भव. दशमा भवने विषे मरु-भूतिनो जीव दशमा देवलोकथी चवीने श्रीवामादेवीनी कूंखे आवी उपन्यो अने कमठनो जीव चोथी नरकथी मरण पामीने एक दरिद्री ब्राह्मणना घेर पुत्रपणे आवी उपन्यो. तेनां माबाप बालपणा-मांज मरण पाम्यां. पाछलथी दुःखी थयो थको लोके तेना ऊपर दया आणीने म्होटो कीधो. अनुक्रमे यौवनावस्था पाम्यो त्यारे निर्द्धनप-णाथी स्त्री मली नहीं तेथी अमर्ष धरी पेट भरवा सारुं अज्ञान तपस्या आदरी तापसी दीक्षामां पंचाग्नि साधवा लाग्यो तेथी ते तापस कमठ नामे विख्यात थयो.

पार्श्वप्रभुनो जन्म विवाह अने नागोद्धार—

श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत, पुरुषमां प्रधान, त्रण ज्ञाने करी सहित मातानी कूंखमां आव्या. माताए चौद स्वप्न दीठां " अत्रे स्वप्न पाठक बोलाव्या यावत् गर्भनी प्रतिपालना करी इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीर स्वामिनी परे जाणी लेवो." ते काल ते समयना विषे पार्श्वनाथ स्वामी शीयालानो बीजो महिनो, त्रीजुं पखवाडियुं, पोषवदि दशमीना दिवसे नव महीना ने साडा सात दिवस गर्भमां रहीने, मध्यरात्रिमां विशाखा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके वामाराणीनी कूंखथी रोग रहित पुत्रपणे जन्म्या. जे रात्रिमां श्रीपार्श्वनाथ जन्म्या ते रात्रिमां घणा देवता आव्या. "यावत् चोसठ इंद्र जन्ममहोत्सव प्रमुख करवा आव्या तथा दिगकुमारिकादि आवी ते सर्व श्रीमहावीर स्वामिनी परे श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनुं नाम लइने अहीं कहेवुं." पछी अश्वसेन राजा जन्ममहोत्सव करीने पोताना न्याति गोत्रिमां कहेवा लाग्या के—म्हारी वामाराणीनी कूंखे ज्यारे ए पुत्र आव्यो त्यारे वामाराणीए शय्यामां पोतानी पासेथी निकलतो कालो सर्प दीठो तेथी अमारा आ पुत्रनुं नाम पार्श्व होजो एम कही 'श्रीपार्श्व' एवुं नाम दीधुं. पांच धावे पालन कराता, बीजना चंद्रमानी परे वृद्धि पामता, माता पितादिकने आनंद उपजावता थका प्रभु अनुक्रमे युवान अवस्था पाम्या त्यारे कुशस्थल नगरना प्रसेनजीत नामे राजाने म्लेच्छ लोकोए रोक्यो. तेने सहाय करवा माटे अश्वसेन राजा जावा लाग्यो ते वखते पिताने वर्जिने पार्श्वकुमार त्यां जवाने तैयार थया. ते जोइ इंद्रमहाराजे सारथी सहित पोतानो रथ मूक्यो ते ऊपर चढीने प्रभु आकाश मार्गे थइ त्यां उतर्या. तेने जोइ सर्व म्लेच्छ लोको नाशी गया. प्रसेनजीत राजाए प्रभुने घणो सन्मान दीधो त्यां नीलवर्ण छबी, नवहाथनुं शरीर, युवान अवस्था, एक हजार आठ लक्षणधारक, अत्यंत रूपवान, महा कांतिवान सुंदर देदीप्यमान

अने तेजस्वी; एवा श्रीपार्श्वकुमरने देखीने प्रसेनजीत राजानी पुत्री प्रभावती नामे हती ते बोली के पिताजी ! मुजने पार्श्वकुमर साथे परणावो पछी भगवानने परणवानी इच्छा हती नही तो पण राजाए घणो आग्रह करीने पोतानी पुत्री परणावी, ते परणीने पाछा घेर आव्या. प्रभु प्रभावती राणी साथे सुख भोगवता विचरे छे एवामां एक दिवसे वाराणसी नगरीनी बाहेर पेलो कमठ नामा तापस आव्यो. घणा लोको हाथमां पूजापो लइने पंचाग्नि तापतो देखी तापस पासे जवा लाग्या. प्रभुए गोखमां बेठा थकां दीठा त्यारे पार्श्वकुमर बोल्या के आ लोको सर्व क्यां जाय छे ? त्यारे हजुरीओ (चाकर) पासे ऊभो हतो ते बोल्यो महाराज ! एक दरिद्री ब्राह्मण हतो. तेना मावाप न्हानपणमां मरी गयां तेथी तापस थइ कमठ नाम धारण करीने फरतो फरे छे, ते अहीं आव्यो छे. तेने आ सर्व लोको पूजवाने जाय छे, ते सांभली भगवान पण त्यां गया. त्यां काष्टमां बलता सर्पने अवधिज्ञानथी देखी भगवान बोल्या–अरे मूढ तपस्वी ! आ तुं दया विना शुं वृथा कष्ट करे छे, आ त्हारो श्रम ते दया विना सर्व मिथ्या छे. त्यारे क्रोध करीने कमठ तापस बोल्यो, अरे ! राजाओना पुत्रोने तप जप करवानी शी परीक्षा होय, तमे तो हाथी घोडाओनी परीक्षा करो, तपनी वात तो अमेज योगी पुरुषो समजीए छियें, ए वातमां तमे शुं समजो ? एवुं कमठनुं बोलवुं सांभली भगवाने ते अग्निकुंडमांथी एक बलतुं लाकडुं बाहेर काहाडी तेने कोहाडाथी फाड्युं. तेमांथी अर्धदग्ध व्याकुल थयेलो सर्प नीकल्यो. ते सर्प भगवानना मुखने देखीने श्रद्धापूर्वक भगवानना मुखथी नवकार–महामंत्र सांभलीने तत्काल मरण पामी धरणेन्द्र नागराजा थयो " घणी प्रतोमां तो अग्निकुंडमांथी बलतुं लाकडुं भगवाने सेवकना हाथे बाहर निकलावी कुहाडो मगावी, फोडाव्युं अने बलता सर्पने नवकार संभलाव्यो छे ते पण सेवकना मुखथीज

संभलाव्यो एम स्पष्ट लखेलुं छे." पछी एकठा थयेला लोको कमठने कहेवा लाग्या के अरे अज्ञानी ! तुं अधर्म करे छे, जीवोने हणे छे, एवो पोतानो अवर्णवाद सांभलीने कमठ लज्जा पाम्यो. भगवान घरे आव्या पछी कमठ त्यांथी मानभ्रष्ट थइ, वली अन्य स्थानके जइ, घणा कालपर्यंत विशेष पणे अज्ञान तपस्या करी, मरण पामीने भवनपति मांहे मेघमाली नामा देवता थयो.

श्रीपार्श्वनाथ प्रभुनी दीक्षा—

एकदा वसंतऋतुमां भगवान पोतानी राणी साथे वनक्रीडा करवा गया त्यां एक सुंदर प्रासाद जोइ तेमां जइ बेठा. ते प्रासादमां नेमीश्वर भगवाननी जान संबंधी राजीमतीने त्यागी दीक्षा लीधी तेनुं चित्र चित्रेलुं जोइने वैराग पाम्या. हवे भगवान श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत, दक्ष, चतुर, भली प्रतिज्ञा वाला, रूपवान, गुणवान, भद्रक, विनयवान, त्रीश वर्ष लगण गृहस्थावासे रह्या पछी लोकांतिक देव आवीने तेमने इष्टकारी वाणीए करी कहेवा लाग्या के—जय जय होवो हे समृद्धिमान् ! यावत् हे कल्याणवान् ! एवुं कहीने जय जय शब्द करे. श्रीपार्श्वनाथजी मनुष्य योग्य गृहस्थ धर्ममां पण अवधिज्ञाने करी सहित छे तेणे करी जाण्युं के म्हारे हवे दीक्षा लेवानो अवसर आव्यो एवुं जाणीने संवत्सरी दान प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी परे आपीने शीआलानो बीजो महीनो, त्रीजुं पखवाडियुं, पोष वदि अगीआरसना दिवसे बपोर पहेला विशाला नामा पालखीमां बेठा, देव मनुष्ये ते पालखी उपाडी ए सर्व दीक्षा महोत्सव श्रीमहावीरजीनी परे समजवो; परंतु एटलुं विशेष छे के वाराणसी नगरीमांथी थइने ज्यां आश्रमपद नामा उद्यान छे अने ज्यां अशोकवृक्ष छे त्यां आवीने पालखीथी उतरीने अशोकवृक्षनी नीचे पोताना हाथथी घरेणा प्रमुख सर्व उतारीने, पोताना हाथथी पंचमुष्टी लोच करीने, अने

अट्ठम तप पाणी रहित करीने विशाखा नक्षत्रे चंद्रयोग आवे थके एक देवदुष्य वस्त्र लेइने त्रणसे पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, अणगार थया. श्रीपार्श्वनाथ अरिहंत त्र्याशी दिवस पर्यंत नित्य कायाने वोसरावीने जे कोइ देवना, मनुष्यना अने तिर्यंचना करेला उपसर्ग थया ते सर्व सहन कर्यां. अने प्रभुए अट्ठम तपनुं पारणुं कोपट सन्निवेशमां धन्नाने घेर परमान्न वडे कर्युं त्यां पांच दिव्य प्रगट थया, साडी बार क्रोड सोनैया वरस्या.

कलिकुंड अने कुकुडेसर तीर्थनी स्थापना—

एक दिवस भगवान विचरता थका कादंबरी अटवीमां गया, त्यां कलिगिरि पर्वतनी नीचे कुंडनामा सरोवरनी पासे काउस्सग्गमां रह्या ते स्थानके महीधर नामा हाथी पाणी पीवा आव्यो ते भगवानने देखीने जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, तेथी पोतानो पूर्वनो भव दीठो के "आगला भवमां हुं हेमलनामा वामनो कुलपुत्र हतो. म्हारां स्वजन कुटुंब म्हारा ऊपर हसतां हतां तेथी मने चिंतातुर देखीने म्हारो सुप्रतिष्ठनामा मित्र मने गुरु पासे लइ गयो तेनी पासेथी म्हें श्रावकधर्म लीधो पण अंत अवस्थामां म्हारी वामणी न्हानी कायाने निंदतो थको मरण समये म्होटी काया पामवानुं म्हें नियाणुं कर्युं तेना योगथी हुं म्होटी काया वालो हाथी थयो छुं" एवुं जाणी ते हाथीए भगवानने कमले करी पूज्या. ए हाथीनी वात सांभळी चंपानगरीनो वासी करकंडू राजा त्यां आव्यो तेटलामां भगवान विहार करी गया. जेथी राजा घणो दुःख करवा लाग्यो. त्यारे इन्द्रे आवीने त्यां नव हाथनी श्रीपार्श्वनाथ स्वामीनी प्रतिमा प्रगट करी. पछी राजाए तेनी पूजा करीने त्यां मंदिर कराव्युं, ते स्थानके 'कलिकुंड' नामे तीर्थ थयुं, हाथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो ते चैत्यनो अधिष्ठायक थयो.

एकदा समये राजपुरनो ईश्वर नामा राजा ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने काउस्सग्गमां ऊभा देखी जातिस्मरण ज्ञान पाम्यो, ते पोतानो पूर्वभव देखीने मूर्च्छा पाम्यो. पछी ज्यारे सावधान थयो त्यारे तेने मंत्रीए पूछ्युं के स्वामिन् ! तमे मूर्च्छा केम पाम्या ? त्यारे राजा बोल्यो म्हें म्हारो पूर्वनो भव दीठो. "हुं वसंतपुर नगरमां एक कोढीयो ब्राह्मण हतो ते रोगना दुःखने लीधे गंगानदीमां पडीने मरवा तैयार थयो हतो. एटलामां एक चारण मुनिए आवीने मुजने प्रतिबोध दीधो. पछी समकित वासनाथी हुं नित्य चैत्यनां दर्शन करवा जाउं त्यां मुजने पुष्कलनामा श्रावके दीठो अने कहेवा लाग्यो के अरे ! आ कोढीयो मंदिरमां केम जाय छे ? पछी ते श्रावके मुनिने पूछ्युं के महाराज ! ए कोढीओ मंदिरमां जाय छे तेनो कांइ दोष छे किं वा नथी? त्यारे मुनि बोल्या—दूरथी नमवामां कांइ पण दोष नथी, वली हे श्रावक ए ब्राह्मण आगामी भवे राजपुरनगरे ईश्वर नामा राजा थशे. ते श्रीपार्श्वनाथजीने काउस्सग्गे रह्या देखीने जातिस्मरण पामशे." माटे हे प्रधान ! ते कोढीयो ब्राह्मण मरीने हुं ईश्वर नामे राजा थयो छुं; पछी ते ईश्वर राजाए भक्तिभावथी त्यां चैत्य कराव्यो तेमां श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा थापी ते 'कुकुडेसर' नामे तीर्थ थयुं.

पार्श्वनाथप्रभुने कमठासुरनो उपसर्ग—

एक समय भगवान विहार करता थका कोइ नगर नजीक तापसनो आश्रम हतो तेनी पासे आव्या एटलामां सूर्य अस्त थयो त्यारे भगवान वडवृक्षनी नीचे एक कूवानी पासे अडग ध्याने काउस्सग्गमां रह्या. ते अवसरमां पूर्वभवनो वैरी मेघमाली अधम देवता अवधिज्ञानना बले भगवानने ऊभा देखी पूर्वभवनुं वैर संभारी, अमर्षे पूर्यो थको क्रोधे करी उपसर्ग करवा लाग्यो. तेणे प्रथम वेतालनां रूप करी भगवानने बीवराव्या, पण भगवान तेनाथी डर्या नहीं. पछी सिंहनां रूप,

वींछीनां रूप, सर्पनां रूप, हाथीनां रूप बीजां पण अनेक जातिनां रूप विकूर्वीने भगवानने करडवा लाग्यो, मसलवा लाग्यो, तो पण भगवान तेनाथी क्षोभ पाम्या नहीं, चलायमान थया नही, त्यारे विशेष क्रोधारुण थइने घणो गर्जारव करी, विजली विकूर्वी तेनी साथे कल्पांतकालनो पवन विकूर्वी ते पवनथी धूलने उडावतो थको आकाशने पण आच्छादित कर्यो अने धूल साथे मलेला पाणीनी मूसल धारा वृष्टि करी तथा ब्रह्मांड स्फोट सदृश गर्जारव कर्यो, अने दशे दिशाए वीजलीना कणीया उत्पन्न करी त्रास पमाडवा लाग्यो, त्यां पाणीनुं पूर नदी जेवुं व्हेवा लाग्युं. जोरवालुं पाणी चढयुं, आकाश अंधकारमय थइ गयुं. ते वखते भगवानना कंठ सुधी पाणी ऊंचुं आवी लाग्युं तो पण प्रभु डग्या नहीं. ते वखते धरणेन्द्रनुं आसन चलायमान थयुं त्यारे अवधिज्ञान प्रयुंजी, भगवानने उपसर्ग थयो जाणीने, पद्मावती प्रमुख अग्रमहीषियो सहित त्यां आवीने प्रभुने मस्तके फणाटोप करी छत्र धर्युं अने प्रभुना चरणनी नीचे कमलनी रचना करी. ए प्रकारे वरसादना समूहने बंध राखवानो उपाय करी पोते इन्द्राणी सहित प्रभु आगल नाटक करवा लाग्यो पण वरसाद पडतो बंध थयो नहीं, त्यारे धरणेन्द्रे जाण्युं के प्रलयकाल तो हमणा छे नहीं तो आवा प्रकारनो मेघ केम वरसे छे ? एम विचारी अवधिज्ञानथी जोयुं तो मेघमाली कृत उपसर्ग जाण्यो त्यारे मेघमालीने ललकार्यो के " अरे दुष्ट, पापिष्ट, उद्धंठ, अधम ! तें आ शुं अकार्य करवा मांड्युं छे ? प्रभुए तो त्हारा ऊपर गुण कर्यो छे ते उलटो तुजने अवगुण थइ परिणम्यो तेथी तुं विपरीत थइने एमनी ऊपर द्वेष करे छे; परंतु भगवान पोते तो अतुलबलना धणी छे; तथापि ते क्षमावंत दयालु छे ते तो सहन करशे पण हुं त्हारो अपराध सहन करनार नथी. अरे मूर्ख ! तुजने रूडो उपदेश पण वैरकारी थइ पड्यो. तो हवे तुजने हुं त्हारी

कमाइ देखाडीश. तें स्वामीनी घणी आशातना कीधी छे पण हवे तुं क्यां नाशी जइश?" एम कही धरणेन्द्रे तेना ऊपर वज्र मूक्युं त्यारे जेम बाजने देखी सूडो तथा कबूतर भयभ्रांत थाय तेम कमठ भयभ्रांत थयो थको पोतानी देवांगना सहित भगवान पासे आवी तेमना चरणनुं शरण ग्रही, भगवानने नमस्कार करीने पोतानो अपराध खमाववा लाग्यो अने कहेवा लाग्यो के प्रभो! आज पछी हुं एम नहीं करीश. ते जोइ धरणेन्द्रे कह्युं के तुं म्होटाने शरणे आव्यो माटे म्हारो साधर्मी भाइ समजीने तने छोडी मूकुं छुं. पछी दश भवनुं वेर खमावी प्रभु पासे नाटक करीने कमठ पोताने स्थानके गयो अने धरणेन्द्र पण नाटक करी पोतानी इंद्राणी सहित स्वस्थानके गयो. अहीं धरणेन्द्रे त्रण दिवस पर्यंत भगवानना मस्तक ऊपर फणनुं छत्र राख्युं तेथी ते नगरी 'अहिच्छत्रा' नामे प्रसिद्ध थइ.

पार्श्वनाथप्रभुनो परिवार अने मोक्ष—

श्रीपार्श्वनाथ स्वामी अणगार थया, पांच समिति अने त्रण गुप्ति सहित थया, यावत् ग्रामानुग्राम विचरता आत्माने भावता थका त्र्याशी दिवस वीत्या अने चोराशीमो रात्रि दिन वर्त्तमान छतां उन्हालानो पहेलो महीनो, पहेलुं पखवाडियुं चैत्र वदि चोथना दिवसे, विशाखा नक्षत्रे चंद्रमानो योग आवे थके, पहेला बे पहोरना काल समयने विषे, धावडी वृक्षनी नीचे पाणी रहित चउविहार छट्ठतप कीधे थके, निर्व्याघातपणे आवरण रहित समग्र परिपूर्ण झलहलता सूर्य सरखुं एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन प्रभुने उत्पन्न थयुं. तेथी सर्व जीवोना भाव जाणता थका देखता थका विचरवा लाग्या. श्रीपार्श्वनाथजीने एक शुभ, बीजो आर्यघोष, त्रीजो विशिष्ठ, चोथो ब्रह्मचारी, पांचमो सोम, छट्ठो श्रीधर, सातमो वीरभद्र अने आठमो यशस्वी ए आठ म्होटा गच्छना धणी एवा गणधरोनी संपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने

आर्यदिन्न प्रमुख सोलहजार साधुओनी उत्कृष्टी संपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी पुष्पचूला प्रमुख आडत्रीश (३८०००) हजार साधवीओनी संपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुव्रत आदिदेइ एक लाखने चोसठ हजार श्रावकोनी संपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी सुनंदा प्रमुख त्रण लाख ने सत्तावीश हजार श्राविकाओनी संपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी केवली नहीं पण केवली सरखा एवा साडा त्रणशे चौद पूर्वधारी मुनिओनी संपदा थइ, श्रीपार्श्वनाथजीने उत्कृष्टी चौदशे अवधिज्ञानिओनी संपदा थइ, एक हजार केवलीओनी संपदा थइ, अगीआरसो वैक्रिय लब्धिवंतोनी संपदा थइ, छशे ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानीओनी संपदा थइ, एक हजार साधु मोक्षे गया, बे हजार आर्या मोक्षे गइ, आठशे विपुलमतिनी संपदा थइ, छसे वादीओनी संपदा थइ, बारसे साधु अनुत्तर विमाने गया—एकावतारी थया, ए प्रभुना परिवारनुं प्रमाण जाणवुं. श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणीने बे प्रकारनी अंतगड भूमि थइ, तेमां एक तो युगान्तकृतभूमि ते श्रीपार्श्वनाथना चार पाट पर्यंत मोक्ष मार्ग चाल्यो, बीजी पर्यायान्तकृतभूमि ते भगवान केवलज्ञान पाम्या पछी त्रण वर्षे कोइक मुनि सिद्धि पाम्यो एटले त्रण वर्ष मोक्षमार्ग चाल्यो. ते काल ते समयने विषे श्रीपार्श्वनाथ पुरुषादाणी त्रीशवर्ष पर्यंत घरवासे रह्या अने त्राशी दिवस छद्मस्थपणे रह्या तथा त्र्याशी दिवसे न्यून सीतेर वर्ष पर्यंत केवल पर्याय पाल्यो, परिपूर्ण सीतेर वर्ष साधुपणुं पाल्युं. सर्व मली एकसो वर्षनुं आयुष्य पालीने, शेष रहेलां चार कर्म खपावी आ अवसर्पिणी कालनो दुषम सुषमा नामे चोथो आरो ते घणो वीती गयो अने स्वल्प रह्यो ते अवसरमां वर्षादनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवाडियुं, एटले श्रावण शुदि आठमना दिवसे सम्मेतशिखर पर्वतनी ऊपर मासखमणना चउविहार (पाणी रहित) तपमां अणसण कीधे थके शैलेसी अवस्थाए

योग संवरीने तेत्रीश बीजा साधुओ अने चोत्रीशमा श्रीपार्श्वनाथ पोते, विशाखा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग आवे थके मध्यरात्रिना समयमां लांबा हाथे काउस्सग्गे ऊभा काल प्राप्त थया, निर्वाण पाम्या, सर्व दुःखथी रहित थया. विशेष वात श्रीपार्श्वनाथ चरित्र थकी जाणवी, श्रीपार्श्वनाथ परमेश्वर पुरुष मांहे आदानी एटले आदेय वचनीय ए विरुद्ना धरनारा छे. श्रीपार्श्वनाथ स्वामी मोक्षे गया पछी बारसो ने त्रीश वर्षे श्रीकल्पसूत्र पुस्तक ऊपर लखाणुं; केमके श्रीपार्श्वनाथ मोक्षे गया पछी अढीशे वर्षे तो श्रीमहावीरस्वामी मोक्ष गया ते पछी नवशे एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयुं. इति श्रीपार्श्वनाथ चरित्र.

श्रीनेमनाथप्रभुनो जन्म—

पश्चानुपूर्वीए बावीशमा श्रीनेमनाथ स्वामिनुं चरित्र कहे छे— ते काल, ते समयने विषे अरिहंत श्रीअरिष्टनेमि तेमना पांच कल्याणक चित्रा नक्षत्रमां थया. एक चित्रा नक्षत्रमां देवलोकथी चव्या, बीजो चित्रा नक्षत्रमां जन्म थयो, त्रीजो चित्रा नक्षत्रमां दीक्षा लीधी, चोथो चित्रा नक्षत्रमां केवलज्ञान उपन्युं, पांचमो चित्रा नक्षत्रमां मोक्षे गया. इति संक्षेप वाचना. विशेष वाचना कहे छे—ते काल ते समयमां श्रीनेमनाथ स्वामी आ वर्षा कालनो चोथो महीनो, सातमो पक्ष एटले कार्त्तिक वदि बारसना दिवसे अपराजित नामा महाविमान ज्यां बत्रीश सागरोपमनुं आयु छे त्यांथी चवीने आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे शौरींपुर नगरना समुद्रविजय नामा राजानी शिवादेवी नामे भार्या तेनी कूखमां मध्यरात्रिना विषे चित्रा नक्षत्रमां चंद्रमानो योग होते छते गर्भपणे आवी उपन्या त्यारे चौद स्वप्न माताए दीठां इत्यादिक सर्व वर्णन श्रीमहावीर स्वामीना परे कहेवुं. ते काल, ते समयने विषे श्रीनेमिनाथ अरिहंत वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवाडियुं एटले श्रावणशुदि पंचमीना दिवसे नव महीना ने साडा सात

दिवस गर्भमां पूरण थए थके यावत् चित्रा नक्षत्रे चन्द्रमानो योग आवे थके पुत्रपणे जन्म्या, इहां जन्म महोत्सव प्रमुख सर्व श्रीमहावीरस्वामीनी परे श्रीनेमिनाथजीना नामथी कहेवुं. पछी माता पिताए अरिष्टनेमि एवुं नाम आप्युं, तेनुं कारण के भगवाननी माता शिवादेवीजीए पन्नरमा स्वप्नमां अरिष्ट रत्ननुं चक्र दीठुं तेथी अरिष्टनेमि एवुं नाम आप्युं तथा लोकोनां अरिष्ट चूर्या-मटाड्यां माटे अरिष्टनेमि एवुं नाम दीधुं. भगवानने बालपणामां इन्द्राणी आवी रमत करावे, ज्यारे प्रभुने भूख लागे त्यारे पोताना अंगूठाने चूसे ते अंगूठामां देवो आवीने अमृतनो संचार करे परंतु मातानां स्तन चूसे नहीं. अनुक्रमे प्रभुजी वृद्धि पामवा लाग्या. प्रभुना शरीरनो श्यामवर्ण छे तथापि महा स्वरूपवान छे. एक दिवसे श्रीनेमिनाथजी पालणामां रमत करे छे ते वखते इन्द्रमहाराजे पोतानी सभा मांहे प्रभुना बल पराक्रमनी प्रशंसा करी ते वात कोइएक देवता अणसद्दहतो थको त्यां आवी भगवानने पालणा मांहेथी उपाडीने सवा लाख योजन दूर लइ गयो त्यारे भगवाने आ कोइ देवप्रयोग छे एवुं जाणीने कांइक स्वल्प बल देखाड्युं तेथी देवता नीचे आवी पड्यो अने एकसो योजन पर्यंत धरतीमां पेसी गयो त्यारे इन्द्रे आवी अनुकंपा आणीने देवताने छोडाव्यो अने भगवानने पाछा पालणामां मूकी, स्तवना करीने इन्द्रमहाराज पोताने स्थानके गया.

यादव अने पांडवोनी उत्पत्ति—

श्रीनेमीश्वर भगवाने द्वारिका नगरीमां दीक्षा लीधी त्यारे सांभलनारने आशंका थशे के जन्म तो शौरीपुरमां थयो अने दीक्षा द्वारिकामां लीधी ए वात केम मले ? ए संदेहने मटाडवाने माटे यादवोनी उत्पत्ति कहे छे.

पूर्वे हरि अने हरिणी ए बे युगलीया थकी हरिवंश कुल प्रगट

थयुं, ए वात दश अच्छेराना अधिकारमां संक्षेपथी लखाइ गइ छे. ते
पछी हरिराजानो पुत्र 'अश्व' थयो अने तेनो पुत्र 'वसुराजा' थयो. तेना
वंशमां अनुक्रमे ' यदु ' राजा थयो त्यांथी यादववंश प्रगट्यो. पछी ते
यदुनो पुत्र ' शूरराजा ' थयो तेना वळी एक ' शौरी ' अने बीजो
' सुवीर ' ए बे पुत्र थया, तेमां म्होटो पुत्र शौरी छे तेने मथुरानुं
राज्य आपीने सुवीरने युवराज पणे थापी शूर राजाए चारित्र लीधुं,
पछी शौरींराजाए पोताना न्हाना भाइ सुवीरने मथुरानुं राज्य आपी
पोते कुशावर्त्त देशमां जइ पोताने नामे ' शौरीपुर ' नामा नवीन
नगर वसावीने तेनुं राज्य करवा लाग्यो अने सुवीर मथुरानुं राज्य करे
छे. शौरीराजाने ' अंधकवृष्णि ' नामे पुत्र थयो अने सुवीरने ' भोज-
कवृष्णि ' नामा पुत्र थयो ते भोजक वृष्णिने वळी ' उग्रसेन ' नामा
पुत्र थयो. पछी भोजकवृष्णिए उग्रसेनने मथुरानुं राज्य आपी पोते
दीक्षा लीधी, अंधकवृष्णिने दश पुत्र थया. तेनां नाम—एक समुद्र
विजय, बीजो अक्षोभ, त्रीजो स्तमित, चोथो सागर, पांचमो हिमवंत,
छट्ठो अचल, सातमो धरण, आठमो पूरण, नवमो अभिचंद्र अने
दशमो वसुदेव ए दशे दशार्ह कहेवाया. अंधकवृष्णिए पोताना म्होटा
पुत्र समुद्रविजयने शौरीपुरनुं राज्य अने एज अंधकवृष्णिनी एक कुंती
अने बीजी माद्री ए बे पुत्रीओ थइ. तेमां कुंती पांडुराजाने परणावी
अने माद्री दमघोष राजाने परणावी.

संक्षेपथी पांडवोनी उत्पत्ति कहे छे—प्रथम ऋषभदेवजीनो पुत्र
' कुरु ' नामा थयो तेणे कुरुदेश वसाव्यो तेनी पछवाडे तेना पाटे
असंख्यात राजा थइ गया, तेमांथी एक ' हस्ति ' राजाए हस्तिनागपुर
वसाव्युं ते पछी केटलोएक काल वीत्या पछी सुभूमनामा चक्रवर्त्ति
राजा थयो, त्यार पछी वळी घणा राजा थया बाद एक ' शंतनुं ' नामे
राजा थयो तेनी बे स्त्री थइ—तेमां एकतो विद्याधरनी पुत्री ' गंगा '

हती तेने ' गांगेय ' नामे पुत्र थयो तेनुं भीष्मपितामह एवुं बीजुं नाम लोकमां प्रसिद्ध थयुं हतुं अने बीजी राणी ' सत्यवती ' नामे हती तेना बे पुत्र थया एकनुं नाम 'चित्रांगद' अने बीजानुं नाम ' विचित्र-वीर्य ' पछी शंतनु राजा चित्रांगदने राज्य आपीने परलोक प्राप्त थयो. चित्रांगद एक दिवसे कोइ नीलांगद राजा साथे युद्ध करतां मरण पाम्यो, त्यारे विचित्रवीर्य राजा थयो तेनी एक अंबिका, बीजी अंबा-लिका अने त्रीजी अंबा ए त्रण भार्या हती. तेमां अंबिकानो पुत्र 'धृत-राष्ट्र' थयो तेनी गांधारी प्रमुख आठ स्त्रीयो हती, तेना दुर्योधनादिक सो पुत्र थया अने बीजी अंबालिकाने पांडु नामे पुत्र थयो तेनी एक कुंती नामे स्त्री हती तेने एक युधिष्ठिर, बीजो भीम अने त्रीजो अर्जुन ए त्रण पुत्र थया अने वली बीजी माद्री नामे स्त्री हती तेनुं अपर नाम पद्मा एवुं हतुं. तेना एक नकुल अने बीजो सहदेव एवा बे पुत्र थया. एम बन्ने स्त्रीयोना मली पांडु राजाना पांच पुत्र थया ते पांच पांडवो कहेवाया, अने विचित्रवीर्यनी त्रीजी स्त्री अंबा हती तेने एक ' विदुर ' नामे पुत्र थयो. ए रीते पांडवोनो संबंध संक्षेपथी कह्यो.

अंधकवृष्णिनी बीजी पुत्री जे दमघोष राजाने परणावी हती तेनो 'शिशुपाल' नामा पुत्र थयो. तेने श्रीकृष्णे मार्यो छे एवी रीते व्यवस्था कर्या पछी अंधकवृष्णिए दीक्षा लीधी, हवे मथुरानुं राज्य उग्रसेन राजा चलावे छे, तेनी ' धारणी ' नामे राणी छे अने शौरीपुरनुं राज्य समुद्रविजय राजा चलावे छे तेनी ' शिवादेवी ' नामे भार्या छे ते शिवा-देवीने 'नेमिकुमार' पुत्र थयो. बीजा पण सर्व भाइओ एकठा (भेला) रहे छे. मथुरामां उग्रसेनराजा सुखे राज करे छे एक दिवसे ते नगरीनी बाहेर वनमां एक मासी उपवासनो करनारो एवो एक तापस आव्यो तेने एवो नियम छे के महीनानी अंदर कोइ आवीने कहे के–

म्हारे घरे पारणुं करजो, तो तेने घेर पारणुं करे. पण बीजाने घेर पारणुं करे नहीं अने जो नोतरुं आपनार धणी भूली जाय अने तापसने पारणुं करावबा माटे तेडवा सारुं नहीं आवे तो वली बीजा एक मासनुं पच्चक्खाण करी लीए एवो ते तापस मासिक उपवास करीने वनमां बेठो छे त्यां उग्रसेन राजा रमवा गयो अने वनमां तापसने देखी राजाए पोताने घेर पारणुं करवानी वीनंति करी. पारणुं करवुं कबूल करावीने पोताने घेर आव्यो; परंतु जे दिवसे पारणुं करावबानुं हतुं ते दिवसे विस्मृतिमां तापसने बोलाववा माणस मोकल्युं नहीं. तापस पण सांज सुधी वाट जोइ कोइ बोलाववा नहीं आव्यो त्यारे वली बीजा महीनानी तपस्यानो नियम करी लीधो. त्यार पछी वली केटलेएक दिवसे राजाने ते तापस याद आव्यो के अरे ! म्हें आ केवुं अकार्य कर्युं. जे तापसने नोतरीने जमवा तेड्यो नहीं. एम चिंतवी फरी पण तापसने जमवानुं आमंत्रण करी आव्यो, परंतु बीजी वार पण पारणाने दिवसे जमवा सारुं तेडवाने भूली गयो. एत्रीज रीते वली त्रीजे महीने पण नोतरुं आपीने जमाडवाने वखते तेडवानुं भूली गयो. तेथी तापसे राजा ऊपर क्रोध करीने विचार्युं के आ दुष्ट राजा मने नोतरुं आपी जाय छे ने जमाडतो नथी, माटे जो म्हारा तपनो प्रभाव होय तो हुं एने भवांतरमां दुःख देवावालो थाउं एवुं नियाणुं करी त्यांथी मरण पामीने उग्रसेन राजानी भार्या धारणीनी कूंखमां आवी उपन्यो, तेना प्रभावथी राणीने त्रीजे महीने राजानुं कालजुं खावानो डोहलो उपन्यो तेथी शरीरे दुर्बल थइ, तेने घणुं. घणुं राजाए पूछयुं त्यारे डोहोला संबंधि जेवी वात हती तेवी राजा आगल कही, पछी राजाए प्रधाननी अक्कलथी ते डोहलो पूरण कर्यो. राणीए गर्भ पाडवाना घणा उपाय कर्या पण गर्भ पड्यो नहीं. छेवट नव महीना पूरण थयां पुत्र जन्म्यो. ते जन्मतां ज राणीए तेने कांसानी पेटीमां नाखीने

मांहे नामांकित मुद्रिका मूकीने ते पेटी यमुना नदीमां वहेवरावी दीधी. ते कांसानी पेटी तरती तरती मथुराथी शौरीपुर आवी. एवामां घृत अने तेलनो वेचनार सुभद्र नामे वाणीयो ते यमुना नदीमां स्नान करवा आव्यो, तेणे ते पेटी नदीमांथी बाहेर कहाडी, उघाडी जोइ तो तेमां बालक दीठो त्यारे ते वाणीयो मुद्रिका सहित ते बालकने गुप्त-रीते पोताने घेर लइ आवीने पोतानी स्त्रीने सोंप्यो अने लोकोने कहेवा लाग्यो के म्हारी स्त्रीने गूढगर्भ पुत्र थयो, तेनुं नाम 'कंस' आप्युं. अनुक्रमे ते बालक म्होटो थयो त्यारे मस्ति करे अने लोकोना छोकराओने मार आपे, तेथी लोक आवीने सुभद्रने नित्य ओलंभा आपे, त्यारे वाणिए विचार्युं के हुं तो सामान्य माणस छुं अने आ तो राजपुत्र छे माटे म्हारे घेर ए केवी रीते रही शके? एवुं जाणी वाणीयाए ते छोकरो वसुदेव कुमरने जइ सोंप्यो. अने कंस पण वसुदेवजीनो चाकर थइ रह्यो. तेमज वसुदेवजी पण कंस ऊपर घणी कृपादृष्टि राखवा लाग्या. एवा अवसरमां वसुराजाना वंशमां 'बृहद्रथ' राजा थया. तेनो पुत्र 'जरासंध' नामे प्रतिवासुदेव त्रण खंडनो भोक्ता छे ते राजगृही नग-रीमां राज्य करे छे अने यादव पण सर्वे तेनीज आज्ञा पाले छे. ते जरासंध राजाए समुद्रविजयनी ऊपर दूतनी साथे एक कागल लखी मोकल्यो के "वैताढ्य पर्वत पासेनो रहेवासी सिंहनामे पल्लिपति ते सिंहपुर नगरनो राजा छे तेने जीवतो बांधी पकडीने जे म्हारी पासे लइ आवे तेने हुं म्हारी जीवयशा नामे पुत्री परणावुं अने वली एक नगर जे ते धणी पसंद करे ते नगरनुं राज्य पण आपुं." एवी रीतनो कागल वांचीने समुद्रविजयजी पोतानी सेना तैयार करी सिंह नामा पल्लिपतिने जीतवा माटे चढाइ करवाने तैयार थया एटलामां वसुदेव कुमरे आवी समुद्रविजयजीने वर्ज्या अने कंसने साथे लइ पोते सैन्य सहित ते राजानी ऊपर चढी गया. त्यां जइ कंसने आगेवान करी

तेनी साथे युद्ध कर्युं, कंसे सिंहराजाने बांधी लावीने वसुदेवजीने आधीन कर्यो. पाछलथी समुद्रविजयजीए कोष्टक निमित्तियाने पूछ्युं के वसुदेवजी अने जीवयशानुं जोडुं मलतुं छे के नथी ? त्यारे निमित्तिए कह्युं के ' ए जीवयशा परण्या पछी श्वसुरना कुलना अने पोताना पिताना कुलना ए रीते बेहु कुलनो क्षय करनारी छे. माटे तमे विचारीने काम करजो. म्हारा वचनमां लगार मात्र संदेह जाणशो नहीं.' एवुं सांभली निमित्तियाने शीख आपी विदाय कर्यो. निमित्तियानी वातथी चिंतातुर थया अने विचारवा लाग्या के वसुदेवजी जीत्यो एवुं सांभलशे तो जरासंध पोतानी पुत्री वसुदेवजीने आपशे अने ते कन्या तो बंने कुलनो क्षय करनारी छे तो हवे आपणने एनो शो उपाय करवो ? एवा चिंतातुर थइ बेठा एटलामां वसुदेवजी पण सिंहराजाने बांधीने समुद्रविजयजीनी पासे लइ आव्या अने समुद्रविजयजीने चिंतातुर थएला देखीने पूछवा लाग्या के तमे शी चिंतामां बेठा छो ? त्यारे वसुदेवजीने एकांतमां लइ जइने समुद्रविजयजीए, जीवयशा बेहु कुलना क्षयने करवावाली छे ए वात संभलावी त्यारे वसुदेवजी बोल्या के ए सिंहराजाने म्हें बांध्यो नथी, परंतु कंसे बांध्यो छे. ए वात सांभली समुद्रविजयजी विचारमां पड्या के ए वाणियाना छोकरामां एटलुं बल होय नहिं, माटे तेनी हकीकत पूछवा सारुं सुभद्र वणिकने बोलाव्यो, तेणे सर्व वृत्तांत कह्यो. पछी ते वाणियानी पासेथी मुद्रिका मगावी कंसने आपी. सिंहराजा सहित कंसने राजगृहनगरे जरासंध पासे मोकल्यो. जरासंधे पण कंसने पोतानी पुत्री जीवयशा परणावी दीधी अने वली कंसे तेनी पासेथी मथुरानुं राज्य माग्युं त्यारे जरासंधे पोतानुं सबल सैन्य आप्युं, ते लेइ कंसे मथुरामां जइ पोतानो पिता जे उग्रसेन तेने जीवतो पकडी काष्टना पांजरामां नाखी दीधो अने पोते मथुरानुं राज्य करवा लाग्यो. पोतानो पिता काष्टपिंज-

रमां पड्यो थको दुःख भोगवे छे एवुं जोइने कंसनो न्हानो भाइ अतिमुक्तक नामे छे ते संसारथी विरक्त थयो अने दीक्षा लइ चाली निकल्यो.

वसुदेवजीनो पाछलो भव—

वसुदेवकुमरे पूर्वभवमां स्त्रीवल्लभ कर्म उपार्ज्जन कर्युं छे, ते पूर्वभवनी कथा कहे छे. वसुदेवनो जीव पाछला भवमां कोइ एक गामने विषे नंदीषेण एवे नामे कुलपुत्र हतो. तेनां माता–पिता बाल्यावस्थामांज मरण पामी गया. पछी ते मामाना घरमां रहीने म्होटो थयो ते ज्यारे युवान अवस्था पाम्यो, त्यारे कालुं रूप, कुदर्शनी, बिलाडाना जेवी न्हानी आंख, गणेशना जेवुं म्होटुं पेट, हाथीना जेवा मोटा दांत ऊंटना जेवा मोटा होठ, वानराना जेवा कान, चपटी नासिका, त्रिखूणुं कपाल, एवो कुरूपो देखीने तेने कोइ कन्या आपे नहीं, सर्व स्त्रीयो तेनी निंदा करे तेथी चिंतातुर थयो थको मामाना घरमां कामकाज करवुं मूकी दीधुं, मामाए कह्युं के म्हारी सात पुत्री छे तेमांथी एक तुजने परणावीश, तुं चिंता करीश नहीं. पछी मामाए पोतानी दीकरीओने एनी साथे परणवानुं कह्युं. त्यारे ते साते बोली के अमे मरी जइशुं, पण ए दांतलाने तो कदापि परणीशुं नहीं. एवुं सांभली ते नंदीषेण मरवाने माटे कोइ एक पर्वत ऊपर चढीने त्यांथी पडवा लाग्यो, एवामां एक मुनिराजे तेने वर्ज्यो अने कह्युं के–भोला ! आवा प्रकारे मरवाथी त्हारूं दुःख मटे नहीं. त्यां प्रतिबोध पामीने चारित्र लीधुं. अने साधुओनो वेयावच्च करवानो अभिग्रह धारण कर्यो. वली पोते मासखमणनी तपस्या करे अने साधुओनी पण वेयावच्च करे. एक दिवस इन्द्रराजे पोतानी सभामां नंदीषेणनी वेयावच्च करवा आश्रयी घणीज प्रशंसा करी के एना सरखो वेयावच्चनो करनार बीजो कोइ नथी, ते वातने एक देवता अणमानतो त्यां आव्यो,

तेणे अतिसारना रोगें करी ग्रस्त थएला एवा एक साधुनुं रूप विकुर्वीने एक गामने बाहेर जइ बेसाड्यो. अने वली बीजा एक साधुनो रूप बनावीने ज्यां नंदीषेण मासखमणनुं पारणुं करवा लाग्या छे त्यां मोकल्यो. ते कृत्रिम साधु आवीने नंदीषेणने कहेवा लाग्यो के अरे! अतिसारना रोगवालो साधु बहार पडेल छे, तेनो वेयावृत्य कर. ते सांभली नंदीषेण पारणुं करवुं पडतुं मूकीने तरत ज ते साधुना शरीर शुद्धिने माटे गाममां सूजतुं पाणी लेवा सारुं फरवा लाग्यो. परंतु ते देवे देवमायाथी असूजतुं करी दीधुं, लेवा योग्य पाणी क्यांय मले नहीं तो पण मनमां खेद आवतो नथी, पण उलटो पश्चात्ताप करवा लाग्यो के अरे! जूओ तो खरा के हुं केवो भाग्यहीन छुं के आवा मुनिओनो वेयावच्च करवामां पण मने अंतराय पडवा लाग्यो छे. पछी एम करतां पाणी पण मल्युं, ते लइने साधु पासे आव्यो. त्यारे ते अतिसारी साधुए रीश करी लात मारीने पाणी ढोली नाख्युं अने कहेवा लाग्यो के—अरे! मूर्खा आटलो वखत रहीने केम आव्यो? एम कह्युं तो पण तेना ऊपर रोष न कर्यो. पछी ते साधुने पोतानी खांध ऊपर चढावी गाममां लइ चाल्यो, त्यारे ते साधुए देवमायाथी तेना ऊपर अत्यंत दुर्गंधित विष्टा करवा मांडी तेथी नंदीषेणनुं शरीर संपूर्ण मलथी भराइ गयुं, तो पण नंदीषेणने द्वेष उपज्यो नहीं. एवी तेनी धीरज जोइ देव तुष्टमान थइ नंदीषेणने वांदीने स्वस्थानके देवलोकमां गयो. एवी रीते नंदीषेणे बार हजार वर्ष पर्यन्त चारित्र पाल्युं " घणा ग्रंथोमां पंचावन हजार वर्ष चारित्र पाल्युं एम कहेलुं छे. " अंते अनशन कर्युं ते वखत कोइक चक्रवर्ति तेने वांदवा आव्यो. त्यारे चक्रवर्तिनी पटराणीने देखी तेणे नियाणुं कर्युं के हुं परभवे स्त्रीवल्लभ थाउं. त्यारे त्यांथी काल करी देवलोक गयो अने देवलोकथी चवीने आ वसुदेव थयो छे तेनुं पूर्वे करेला नियाणाना प्रभावथी कामदेव जेवुं

रूप थयुं छे. ते वसुदेव जे वखत शौरीपुर नगरमां फरे त्यारे ते नगरनी सर्व स्त्रीयो पोताना घर उघाडां मूकी तथा बीजां पण सर्व कामकाज पडतां मूकी रूपे मोही थकी वसुदेवनी पछवाडे फरे अने भरतारनुं कह्युं पण माने नहीं, तेथी कोइ कोइना घरोमां चोर पेसी जाय अने घर पण लूंटी चाल्या जाय एवुं कृत्य जोइ ते नगरना रहेनारा सर्व लोकोए समुद्रविजय राजानी पासे जइ विनति करी के गामनी सर्व स्त्रीयो घर सूनां मूकीने वसुदेव कुमरनी पाछल भमे छे माटे जो तमे वसुदेवजीने नहीं वर्जो तो अमने बीजे क्यांइ रहेवानी जगा बतावो. ते सांभली समुद्रविजय राजा बोल्या के–हे पंचो ! तमे कहो छो तेम हुं करीश. तमे सुखे पोतपोताने घरे जाओ अने सुखसमाधिमां रहो. एम कही महाजनने शीख आपी. थोडी वार पछी वसुदेवजी पण समुद्रविजयजीने पगे लागवा आव्या त्यारे वसुदेवजीने खोलामां बेसाडीने समुद्रविजयजी बोल्या के हे भाइ ! आज काल तुं शरीरमां दुर्बल थइ गएलो देखाय छे ते हुं जाणुं छुं के तुं ज्यां त्यां घणो रखडे छे, माटे वेला कुवेलाए कोइ छिद्र जोइ छल करीने त्हारा रूपनी खराबी करशे. तथा वली आपणे राजा छिए माटे आपणा वैरी पण घणा छे ते कोइ उपद्रव करे माटे तुं आपणा घरना बगीचामां रम्या कर अने बाहेर भमवानुं मूकी दे. बाहेर भमवाथी विद्या शीखेली छे ते पण भूली जइश. एवुं सांभली वसुदेवजी पण विनयपूर्वक बोल्या के तमारो हुकुम म्हारे प्रमाण छे एम कही घरनी वाडी मांहे ज रमत करवा लाग्या, एवामां उन्हालो आव्यो त्यारे शिवादेवीए समुद्रविजयजी माटे चंदन घसी तेनी कटोरी भरी ढांकीने दासीना हाथमां आपी समुद्रविजयजी पासे मोकली, ते कटोरी दासी लइ जाय छे, तेने देखी वसुदेव बोल्यो के आ शुं छे ? दासी बोली हजूरने विलेपन करवा सारुं चंदननी कटोरी राणीए दीधी छे ते लइ

जाउं छुं. त्यारे वसुदेवजीए ते दासीना हाथमांथी छीनवी लइ पोताना अंग ऊपर चंदननुं विलेपन करी लीधुं. ते जोइ दासी कोप करीने बोली के त्हारां आवां लक्षण छे तेथीज तुं बंदीखाने पड्यो छे. ते सांभली वसुदेवजीए दासीने पूछ्युं के बंदीखानुं ते वली कयुं ! त्यारे दासीए जवाब दीधो नहीं, पण ज्यारे घणो हठ करीने पूछ्युं त्यारे दासीए गामना लोको संबंधि विचार सर्व कही संभलाव्यो. तेथी वसुदेवजी राजानी ऊपर तथा पंचोनी ऊपर अमर्ष आणीने अर्धरात्रे एकला घरमांथी बाहेर निकली गया, अने विचार्युं के हवेथी ए समुद्रविजयजी म्हारी आशा मूकीने पछवाडे शोध करवा नीकले नहीं एवो कोइ उपाय करुं, पछी नगरनी बाहेर एक मडदाने बालीने पोलना कमाड ऊपर लोहीना अक्षरोथी लख्युं के हे नगरवासी लोको ! तमे सांभलो हुं तमोने तथा म्हारा म्होटा भाइने सुख थवाने माटे बली भस्म थयो छुं. हवे तमे सुख समाधीमां रहेजो. एवी रीते लखीने चालतो थयो. प्रभाते पोलीए पोल उघाडी त्यारे मडदुं बल्युं दीठुं अने वसुदेवजीना लखेला अक्षर वांची समुद्रविजयजीने जइ कह्युं, समुद्रविजयजी त्यां आवी ते कृत्य जोइ शोकथी मरवा लाग्या. त्यारे प्रधानादि लोकोए समजावी राख्या, तो पण शोकमां गरकाव थया थका राज्य करे छे. हवे वसुदेव गामे गामे फरवा लाग्यो. ते ज्यां जाय त्यां पूर्वे करेला नीयाणाना प्रभावथी अत्यंत स्वरूपवान कन्याओ परणे. एम क्यांक दश, क्यांक वीश, क्यांक सो, क्यांक पांचसो परणे. ते सर्व विद्याधरराजाओनी पुत्रीओ तथा बीजा भूचरराजाओनी पुत्रीओ तथा शेठ प्रमुख म्होटा धनाढ्य लोकोनी पुत्रीओ जाणवी एम सर्व मली बहोंतेर हजार कन्याओने वसुदेवजी परण्या अने घणी विद्याओ पण शीख्या, एवा अवसरमां रोहक राजानी पुत्री रोहिणी नामे छे तेनो स्वयंवर मंडप मंडाणो छे. त्यां त्रण खंडनो

स्वामी जरासंध आदि सर्व राजा स्वयंवर मंडपे आव्या. तेमज समुद्रविजयजी प्रमुख सर्व यादवो पण आव्या. ते रात्रिए वसुदेवजीने रोहिणी प्रज्ञप्ति विद्यादेवीए आवी स्वप्नामां कह्युं के—हे वसुदेव ! रोहिणीना स्वयंवर मंडपने विषे तुं जा अने तुजने ते रोहिणी परणशे. वली रोहिणी शिवाय बीजी पण कन्या तुं हजी परणीश. एम तुजने बे कन्याओनी प्राप्ति हवे थवानी छे माटे तुं कां सूतो छे ? प्रभाते तुं त्यां जाजे. एम कहीने पछी ते विद्यादेवीए रोहिणीनी पासे जइ, तेने पण स्वप्नामां कह्युं के तुं मृदंग वजाववावाला कूबडाने परणी लेजे.

रोहक राजाए प्रभाते स्वयंवर मंडप शणगार्यो. त्यां सर्व राजा, राजकुमारो पण शणगार करी पोत पोताना नामनां सिंहासनो ऊपर आवी विराजमान थया; एटलामां रोहिणी राजकन्या पण सखियोनी साथे सोल शणगार सजी अने हाथमां फूलमाला लइने स्वयंवर मंडपमां आवी, त्यारे सर्व राजा ते कन्याने देखवा लाग्या अने प्रतिहारिणी प्रत्येक राजाओना गुण रूपादिकनुं वर्णन करवा लागी. केमके रोहिणी सती छे माटे कांचमांथी सर्व देखी शके नहीं तेथी प्रतिहारिणीए सर्व राजाओने वर्णवी देखाड्या, पण कुलदेवीना वचनने हृदयमां धारण करीने रोहिणीए कूबडाना रूपे वसुदेव आव्या छे तेना पासे मृदंग छे तेने वजावतां 'एज वसुदेव एज वसुदेव' एवी ध्वनि थवा लागी तेने जोइने तेना गलामां वरमाला पहेरावी त्यारे कूबडो नाचवा लाग्यो अने मुखथी कहेवा लाग्यो, के अहो ! आ सर्व राजाओ करतां हुं अधिक भाग्यशाली छुं माटे ए सर्व राजाओ बेठा रह्या अने मुजने वरमाला मली गइ. एवुं जोइ ते मंडपमां आवेला सर्व राजाओ कन्या ऊपर क्रोध करीने, केटलाएक तो कन्याने निंदवा लाग्या, केट-

लाएक कन्याना पितानी निंदा करवा लाग्या अने केटलाएक बोल्या अरे ! आ कूबडाने मारीने एनी पासेथी वरमाला खेंची ल्यो, फोकट-बीजा ऊपर रीश करवाथी शुं थाय, एवुं मांहो मांहे कहीने बोल्या के जेना सुभट कूबडा पासे ऊभेला छे ते कूबडा पासेथी वरमाला खेंची लीए अने तेनीज ए वरमाला पण जाणवी. एवुं सांभली सर्व राजाओना सेवक कूबडा पासे आव्या, कूबडे पण सर्व सेवकोने सोनाना मृदंगथी मारीने जमीन ऊपर न्हांखी दीधा. ते देखी सर्व राजा शस्त्र लइने मारवा दोड्या त्यारे वसुदेवे सर्व राजाओने विरूप करी न्हांख्या, कोइनी मूछो, डाढी कापी न्हांखी, अने कोइने रुंड मुंड करी न्हांख्या ते जोइ जरासंध राजाए समुद्रविजयना स्हामुं जोयुं त्यारे समुद्रविजय राजा बख-तरटोप पहेरी धनुष बाण लइने युद्ध करवा उठ्या तेने देखी वसुदेवे जाण्युं के भाइना साथे लडवुं ठीक नहीं. तो हवे हुं म्हारुं स्वरूप प्रगट करी देखाडुं, नहीं तो संग्राम थशे. एम विचारी, कूबडानुं रूप त्यागी मृदंग न्हांखीने समुद्रविजय पासे एक बाण मूक्यो. तेमां 'वसु-देवनो आपने नमस्कार थाओ' एवुं सुवर्णमयी अक्षरोथी लखेलुं हतुं, ते वांचीने समुद्रविजयजीए सविस्मय विचार्युं के वसुदेव तो मरण पाम्यो ते अहीं क्यांथी आव्यो, ए कोइ इंद्रजालीयो मने भोळवतो तो नथी एवुं विचारे छे एटलामां तो वसुदेव पण आवी पगे लाग्यो. त्यारे तो समुद्रविजयजीए सारी पेठे ओळख्यो अने सर्व यादव खुशी थया. जरासंध प्रमुख राजाओ पण खुशी थया, महोत्सव करीने वसुदेवने रोहिणी परणावी तथा आगल पण जेटली स्त्री परण्या हता ते सहुनी हकीकत समुद्रविजयजीने कही. पछी पोतानी परणेल बहोतेर हजार स्त्रीओने भेली करी, विमानमां बेसाडी लावीने वसुदेव घेर आव्या. स्नेहना लीधे वसुदेवजीने मथुरा नगरीमां कंस लइ आव्यो. त्यां कंस तथा वसुदेवजी बेहु मथुरामां रहे छे.

एकदा देवकराजानी पुत्री देवकीजी, वसुदेवने परणवा आवी, देवकीजी अने जीवयशा ए बे साथे रमत करे पण जीवयशा पोताना बापना बलना गर्वे करी उन्मत्त छे. ज्यारे देवकीजीनो विवाह मंडाणो त्यारे जीवयशा मदिरापान करी देवकीजीने पोतानी खांध ऊपर बेसाडी नाचवा लागी एवा अवसरमां कंसनो न्हानो भाइ अइमुत्तो नामा साधु गोचरी सारु फरतो फरतो कंसना घरे आव्यो, तेने जीवयशाए दीठो त्यारे ते मदोन्मत्त थइ थकी मुनिने कंठे वलगीने बोली के–देवरजी ! तमे भला अवसरमां आव्या छो तो हवे एक राजकन्या तमोने पण परणावीश. एवुं बोलती तेने मूके नहीं त्यारे बीवराववा माटे साधु बोल्या के अरे मुग्धे ! तुं शुं नाचे कूदे छे जेने तैं त्हारी खांध ऊपर बेसाडी छे तेनो सातमो गर्भ जे थाशे, ते त्हारा भरतारने तथा त्हारा पिताने मारवावालो थशे. एवां साधुना वचन सांभली, साधुने मूकी दीधो. त्यांथी साधु तो विहार करी गया अने जीवयशानो मद उतरी गयो, मनमां शंका पडी के ‘ साधुनुं वचन खोटुं थाय नहीं ’ पछी ते वात एकांते जइ पोताना भरतार (कंस)ने कही, कंसे पण ते वात सत्य करी मानी तो पण ते वचन जुठुं करवाने अर्थे विचार्युं के आ वात कोइने जाणवामां नहीं आवे तेवी रीते एनो उपाय करवो एवुं चिंतवन करी, एक दिवस वसुदेवजीने कंसे राजी कर्या. त्यारे वसुदेवजी बोल्या के कंस ! त्हारा ऊपर हुं तुष्टमान थयो छुं, माटे तुं मांगे ते हुं आपीश. एवुं सांभली कंस बोल्यो के ‘ हे मित्र ! तुं तुष्टमान थयो तो देवकीजीना पहेलथेलां साते गर्भ थाय ते मने आपजे ’ ते वात वसुदेवजीए सरल चित्तथी मान्य करी अने कंसने कह्युं के हुं तमोने साते गर्भ आपीश एवी रीते वसुदेवजी वचनथी बंधाइ गया, पछी ते वात देवकीजी आगल कही. त्यारे देवकीजीए अइमुत्ता मुनिना कहेलां वचन

वसुदेवजीने संभलाव्यां अने कह्युं के आ कंस आपणा पुत्रोने लइ मारी नाखशे. ते सांभली वसुदेवजीने घणो पश्चात्ताप थयो पण वचने बंधाइ गयो त्यां शो उपाय ? सत्पुरुषनुं बोलवुं फरे नहीं. एवा अवसरमां भद्दिलपुर नगरनो रहेवासी नाग नामे शेठ छे. तेनी सुलसा नामा स्त्रीने मृतवच्छा दोष छे तेथी ते बधा मरेला पुत्रोने जन्म आपे छे माटे ते स्त्रीए अट्ठम तप करी हरणीगमेषी देवनुं आराधान कर्युं. ते देव त्रीजा उपवासमां प्रगट थइने बोल्यो के मने शा वास्ते बोलाव्यो ? त्यारे सुलसा बोली के हे देव ! मुजने मृतक पुत्र आवे छे ते जीवता करी आप. त्यारे देवता बोल्यो कोइनुं कर्म दूर करवाने हुं समर्थ नथी. माटे त्हारा पुत्र तो जीवता रहेशे नहीं, ए वात निश्चयात्मक छे तथापि तारी पुत्र संबंधि इच्छा हुं पूरण करी आपीश. एवुं कहीने देवता जतो रह्यो. पछी कर्मयोगे देवकीजी अने सुलसा ए बेहुने साथेज गर्भ रह्यो, अने साथेज जन्म्यो. त्यारे हरणीगमेषीए देवकीजीना जीवता पुत्रो लावीने सुलसानी पासे मूक्या अने सुलसाना मरेल पुत्र देवकीजीनी पासे लावी मूक्या. ते मरेला बालकोने कंसना चोकीदाराए लइ जइने कंसने स्वाधीन कर्या. कंसे तेमने शिला उपर पछाडी मारी नाख्या. एवी रीते देवकीजीना छ पुत्र सुलसानी पासे वृद्धि पाम्या अने सुलसाना मृतक पुत्र देवकी पासेथी लइने कंसे मार्या. " देवकीजीए पूर्वना भवमां पोतानी शोकनां सात रत्न चोरी लीधां हतां. तेथी शोक, दिलगीर थइने ज्यारे घणुं रुदन करवा लागी त्यारे एक रत्न तेने पाछुं दीधुं हतुं. ते कर्मना योगे अनिकयशा, अनंतसेन, विजयसेन, निहतारि, देवयशा अने शत्रुसेन ए छ पुत्र देवकीजीना लइने हरणीगमेषी देवे सुलसाने आप्या. "

श्रीकृष्णवासुदेवनो जन्म अने तेना हाथे कंसनो वध—

हवे सातमो गर्भ सात स्वप्न सूचित पांचमा देवलोकथी

चवीने देवकीजीनी कूंखे आवी उपन्यो. ते गर्भ जन्मतां ज लइ जवाने माटे कंसनां माणसो चोकीदार बेठेला हता तेथी देवकीजीए वसुदेवजीने कह्युं के आ सातमो गर्भ उत्तम छे माटे कोइ पण उपाय करीने कदापि एना माटे जुठुं बोलवुं पडे तो जुठुं बोलीने पण आपणे, ए गर्भ राखवो; ए वात वसुदेवजीए सांभलीने पछी वसुदेवजी जे वखत देवकीजीने परण्या हता. ते वखते जे देवकराजाए दायजो आप्यो हतो, तेमां गोकुलगाम पण साथे आप्युं हतुं. ते गोकुलगाममां नंदनामे गोप तथा तेनी यशोदा नामे स्त्री ए बे रहे छे ते पण दायजामां आवी गयां हतां एटलामां देवकीजीने गर्भ थयो. ते वर्णे कालो हतो. तेने देखी कृष्ण कृष्ण एवुं कहीने वसुदेवजी तेने त्यांथी छानो लइने निकली गया, ते वखते कंसे बेसाडेला चोकीदारोने निद्रा आवी गइ, आगल जतां दरवाजो खोलीने निकल्या त्यारे उग्रसेन बोल्या आ कोण छे. वसुदेवजी बोल्या आ म्हारुं काष्टनुं पांजरुं भांगीने तुजने मुक्त करनार छे एवुं कही आगल चाल्या, मार्गमां यमुनानदीए पण मार्ग आप्यो, नदी उल्लंघीने गोकुलमां जइ यशोदाजीने ते बालक सोंप्यो अने ते वखत यशोदाजीने पुत्री थई हती ते लइ देवकीजीने सोंपी. पाछलथी कंसना पोरायत निन्द्रामांथी जाग्या ते बोल्या शुं पुत्र आव्यो के पुत्री आवी त्यारे वसुदेवजीए पुत्री आपी ते कंसे लईने तेनुं नाक कापीने पाछी वसुदेवजीने आपी.[1]

हवे कंस निश्चिंत थयो, गोकुलमां यशोदाजी वसुदेवना कहेवाथी कृष्णनुं पुत्रनी परे पालन पोषण करे छे कृष्ण पण सुखे वृद्धि पामे छे. देवकीजी कृष्णजीने देखवानी घणी घणी चाहना करे पण कंसनी बीकना लीधे पन्नर पन्नर दिवसे अथवा महीने महीने आज

१ अन्यदर्शनवाला कहे छे के-कन्याने कंसे शिला ऊपर पछाडी मारी न्हांखी अने ते मरीने विजली थइ, पण ए वात मिथ्या छे.

वच्छ बारश छे, आज गोत्राट छे, आज काजली त्रीज छे; एवा नव नवा बहाना करीने गोकुलमां जाय तेथी ते दिवसो सर्व मिथ्यात्वीओना पर्व थयां, पछी त्यां जइ देवकीजी श्रीकृष्णने रमत करावे, दूध धवरावे अने यशोदाजीने कहे के त्हारो पुत्र मने घणो वल्लभ लागे छे. एवां वचन कही पाछी घेर आवे. ए रीते कृष्णजी बाललीला करता थका यशोदाजीनां दूध, दहीं प्रमुखनां वासण ढोली न्हांखे, फोडी नाखे, इत्यादिक अनेक प्रकारनी रमत करता विचरे छे. एकदा वसुदेवजीए देवकीने कह्युं के तमारे घणी वखत त्यां जावुं नहीं कारण के जो कंसने ए वातनी खबर पडशे तो वली कांइक उत्पात करशे. कृष्ण ज्यारे सात आठ वर्षना थया त्यारे तेने कलाओ शीखववा सारु रोहिणीना पुत्र बलदेवजीने कंसथी छांनो मोकल्यो अने ते छांनो रहेवानी हेतुभूत कंस संबंधि सर्व हकीकत बलदेवजीने निवेदन करी. एम बलदेवजी अने कृष्ण बेहु जण गोकुलमां नंदने घेर रहे छे अने बलदेवजी श्रीकृष्णने विद्याओ भणावे छे, अने सर्व कलाओ शीखावे छे एम करतां श्रीकृष्ण चौद वर्षना थया, हवे राम कृष्ण बन्ने भाइओ गोवालीयाओनी साथे नाचे, कूदे, गावे, वजावे, नीला पीला वस्त्र पहेरे, कृष्ण पोताने मस्तके मोरपींछ राखे, मुरली वजावे, गोपीयोनी साथे गावे, आखो दिवस रमत करे, सांजना घेर आवे. एवा अवसरमां वली एक दिवसे कंसना मनमां एवी वात आवी के साधुनुं वचन जूठुं थयुं के नहीं तेनी चोकसी करवा माटे निमित्तियाने पूछयुं के मने कोइ मारनार छे किं वा नथी ? ते सांभली निमित्तियो बोल्यो के 'साधुनुं वचन जूठुं नथी त्हारो शत्रु कोइक जग्याए म्होटो थइ रह्यो छे पण मरण पाम्यो नथी' त्यारे कंसे पूछयुं के ते केवी रीते म्हारा जाणवामां आवे, निमित्तियो बोल्यो के–'जे अरिष्टनामा बलदने दमन करशे, काली नागने वश करशे, त्हारा केशी

नामना घोडाने दमशे, खर अने मेष नामा खरोने मारशे, चंपोत्तर अने पद्मोत्तर नामा हाथीओने मारशे, सारंग धनुष्य चढावशे, चाणूर-मल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बेने मारशे ते त्हारो मारनार जाणजे ' ए वात सांभली कंसे तेनी निगाह करवाने माटे पडह वजडाव्यो के जे कोइ सारंग धनुष्यने चढावे तेने म्हारी ब्हेन सत्यभामा हुं परणावुं. ए वात सांभली घणा राजा त्यां भेला थया. एज अवसरमां वसुदेवजीनो एक अनादृष्ट नामा महा बलवंत पुत्र छे ते पण धनुष्य चढाववाने जाय छे मार्गमां सांज पडी तेथी रात्रे गोकुलमां रह्यो तेने बलभद्र ओलखतो हतो तेथी तेनी घणी सेवा करी, प्रभात थयुं त्यारे अनादृष्ट बलभद्रने कहेवा लाग्यो के एक वोलावो आपो तो मने मथुरानो मार्ग देखाडी आवे, ते सांभली बलभद्रे श्रीकृष्णने अनादृष्ट साथे मार्ग देखाडवा मोकल्यो, मार्गे जतां अनादृष्टनो रथ वृक्षोमां अटकी गयो ते अनादृष्टथी निकल्यो नहीं त्यारे कृष्णजीए बेहु वृक्षोने लात मारी उखेडी नाख्यां अने मार्ग करी रथ बाहेर रस्ते चडावी दीधो. ते जोइ अनादृष्टी तेने बलवान जाणी, रथमां बेसाडी मथुरामां लइ गयो, त्यां जइ अनादृष्टी धनुष्यने फरसवा लाग्यो दैवयोगथी पाछो पड्यो. त्यारे तेनी ऊपर लोक हस्या श्रीकृष्णे अनादृष्टीनुं हास्य थतुं देखी ते धनुष्यने सहेज उपाडीने चढावी लीधुं. सत्यभामा पासे ऊभी हती तेणे श्रीकृष्णना गलामां वरमाला पेरावी, त्यारे वसुदेवजी अनादृष्टी ऊपर क्रोध करीने कहेवा लाग्या के एने शा वास्ते अहीं लइ आव्यो. जा हमणाज पाछो मूकी आव. ते सांभली अनादृष्टी छांनो मानो कृष्णने गोकुलमां लइ गयो. एटला दिवससुधी आ बलभद्र म्हारो भाइ छे एवुं श्री-कृष्णना जाणवामां न हतुं. अनुक्रमे श्रीकृष्ण सोल वर्षना थया. त्यारे कंसे केशी घोडो अने मेष घोडो तथा अरिष्टनामा बलद ए सर्वने गोकुलमां मोकल्या. ते जइ गोकुलमां उपद्रव करवा लाग्या, तेमने

श्रीकृष्णे मारी न्हांख्या. एज अरसामां मथुरामां कंसे मल्लनो अखाडो
मांड्यो त्यां घणा मल्ल एकठा थया तेमां एक चाणूरमल्ल अने बीजो
मुष्टिकमल्ल ए बे मल्ल घणा बलवान छे ते वखते कंसे जाण्युं के
धनुष्य चढाववावालाने म्हें सारी पेठे ओलख्यो नहीं माटे हवे कोइ
रीते ते अहीं आवे तो हुं तेने मारी न्हांखीश. एवुं विचारी एक बाजु कंस
बेठो. एवामां श्रीकृष्णे सांभल्युं के आज मल्लयुद्ध छे ते हुं देखवा
जाऊं एवुं चिंतवी बलभद्रने गुरु जाणी पगे लागी बोल्यो स्वामिन्! आज
आज्ञा आपो तो मथुरामां मल्लयुद्ध जोवा जाउं. त्यारे बलभद्रे जाण्युं
के त्यां जवाथी कदाच कंसनी साथे युद्ध थइ जाय, माटे कृष्णने भाइ
पणानी वात जणावी आपुं एम विचारी बलभद्र बोल्यो—'हे यशोदा!
अमोने स्नान करवा माटे उन्हुं पाणी आप? अमे आज मल्लयुद्ध
देखवा जइशुं. ते वखते यशोदा बीजा कोइ काममां लागी हती तेथ
बलभद्रनुं वचन सांभल्युं अणसांभल्या जेवुं करी दीधुं. त्यारे बल
भद्र बोल्यो—केम यशोदा! तुं म्हारा भाइनुं पालन—पोषण करवाथी शु
राणी बनी बेठी ? दासपणुं भूली गइ ? शुं तेथी म्हारी वातने गणका
रती नथी ?' एवुं कहीने श्रीकृष्णने साथे लइ बलभद्र बोल्यो के चालो
आपणे यमुनामांज स्नान करीने, पछी मथुरामां जइशुं. एम यशो
दाने कडवां वचन बलभद्रे कह्यां तेथी श्रीकृष्ण नाराज थया त्यारे
मार्गमां बलभद्रे छ भाइने मारवा आदिक, कंस संबंधि सर्व वृत्तांत
कह्यो तथा आपणे बे भाइनी माताओ जुदी जुदी छे, परंतु बाप एकज
छे. तने कंसना भयना लीधे अहीं गोकुलमां राखेल छे ते सांभ
ळीने श्रीकृष्ण बोल्यो के 'जो आजना आज हुं म्हारा छ भाइने मार
वानुं वेर कंस पासेथी लउं तोज हुं खरेखरो कृष्ण छुं.' एम कही मार्गे
यमुना नदीमां स्नान करवा प्रवेश कर्यो, त्यारे कालियद्रहनो काली
नाग आव्यो तेने श्रीकृष्णे पकडीने नाक वींधी नाकमां कमलवेलथी

नाथी तेना ऊपर चडी असवार थइने घोडानी पेठे दोडाव्यो. आ वात लोकोए जइ मथुरामां एक बीजानी पासे करी, कंसे पण लोकोना मुखथी सांभली के आजे नंद गोवालीयाना पुत्रे कालिनागने दम्यो. एटलामां तो राम कृष्ण बेहु भाइ घणा गोवालीयाना वृंदथी परवर्या थका नगरने बारणे आव्या त्यां चंपोत्तर अने पद्मोत्तर ए बे हाथीए तेमने रोक्या तेथी बधा गोवालीया डरवा लाग्या. पछी बलभद्रे अने कृष्णे मली हाथीओना दंतोसल उखेडी नाखी हाथीओने उपाडी दूर फेंकी दीधा तेथी हाथी मरण पाम्या. पछी कृष्ण अने बलभद्र बेहु जण मल्लने अखाडे आव्या. त्यां एक राजाने मंच ऊपरथी नीचे पटकीने ते मंच ऊपर बेठा. त्यां बलभद्रे श्रीकृष्णने पोतानुं सर्व कुटुंब बताव्युं. वली कंसने पण देखाड्यो अने कह्युं के ए कंस आपणो ज छे परंतु दुष्ट छे. एटलामां कंसे पण चाणूरमल्ल अने मुष्टिकमल्ल ए बे ने युद्ध करवा तैयार कर्या. अनुक्रमे कृष्णजीए चाणूरमल्लने मार्यो अने बलभद्रे मुष्टिकमल्लने मारी नाख्यो. ए रीते बेहु मल्लने मरण पामेला जोइ कंस क्रोध करीने बोल्यो, अरे सुभटो ! जेणे ए बन्ने सर्पने पालन–पोषण करी म्होटा कर्या छे ते नंद अने यशोदा बेहुने बांधी पकडीने अहीं लइ आवो, घटले घाणीमां पीली न्हखावीए. एवुं कंसनुं बोलवुं सांभली श्रीकृष्ण रोषारुण थया थका कूदको मारीने कंसने कहेवा लाग्या. अरे दुष्ट! म्हारा छ भाइओने तें मार्या छे तेनुं हुं वेर लउं छुं. एम कही कंसनी चोटली पकडी, नीचो न्हाखी दइ, मूकी मारी तेथी कंस मरण पामी नरके गयो. यादवोए मली उग्रसेन राजाने पांजरामांथी बाहेर काहाडी छूटो करी सभामां लइ आवी बेसाड्यो, त्यारे लोकोए जाण्युं के आ राम अने कृष्ण बेहु वसुदेवना पुत्र छे. पछी उग्रसेन राजाए सोल वर्षनी ऊमरवाला श्रीकृष्णजीने त्रणसे वर्षनी ऊमरवाली सत्यभामाने परणावी दीधी.

सौरीपुरथी यादवोनुं निर्गमन अने कालकुमरनी प्रतिज्ञा—

यादवोए जरासंधथी बीक पामीने जीवयशाने पूछयुं के कंसने अग्निसंस्कार करीए ? त्यारे जीवयशा बोली राम–कृष्ण तथा बीजा पण घणा यादवोनी साथे कंसने दाह देवाशे तमे जुओ तो खरा शुं थाय छे ? ते सांभली कृष्णजी बोल्या के अरे ! रंडा ताराथी शुं थवानुं छे ? एवुं सांभली जीवयशा त्यांथी निकली परबारी राजगृहमां पोताना पिता पासे जइ उघाडे माथे रोवा लागी अने कह्युं के आपना जीवतां यादवोए तमारा जमाइने मारी न्हाख्यो. यादव घणा उन्मत्त थया छे ते सांभली जरासंध बोल्यो पुत्रि ! तुं धीरज धर. जे थवानुं हतुं ते थयुं. हवे ए राम कृष्ण बेहु म्हारा अपराधी छे. ते बेहुने आवी म्हारे स्वाधीन करी जाशे तोज यादवो म्हारा राजमां रही शकशे. नहीं तो हुं ए सर्व यादवोने मारी नाखीश. एवी रीते जीवयशाने दिलासो आपी संतोषी पछी एक सोमनामा सामंतने यादवोनी पासे जरासंधे मोकल्यो. ते यादवो पासे आवीने समुद्रविजय प्रमुख राजाओने कहेवा लाग्यो के हे यादवो ! तमे म्हारी वात सांभलो के–जे थवावालुं हतुं ते थइ गयुं. हवे मात्र एक राम अने बीजो कृष्ण ए बे गोवालीयाना छोकरा छे तेने बांधीने म्हारी साथे जरासंध पासे मोकली आपो. ए दासोना लीधे तमारा सर्व यादवकुलनो क्षय करवो ठीक नथी, ते सांभली समुद्रविजय बोल्या अरे सोम ! तुं समजतो नथी, जे एवा गुणवान अने बलवंत पुत्रोने मरावयाने अर्थे अमे तुजने केम आपी दइए ? हवे तो अमे वृद्ध थया छिये. केटला काल पर्यंत जीवता रहीशुं ? माटे जे थवानुं हशे ते थशे. अमे कांइ अमारा पुत्र आपीशुं नहीं. वली बलभद्र बोल्या के अरे सोम ! तुं पिताओनी पासेथी पुत्रने मांगता लजातो नथी ? अरे ! हजी तो अमे अमारा एक भाइ मारवानुं कंस पासेथी वेर लीधुं छे; परन्तु पांच भाइ बीजा मार्या छे तेनुं वेर तो लेवुं बाकी रह्युं

छे. माटे तुं जीवतानी च्हाहना राखतो होय तो इहांथी चाल्यो जा, नही तो तने हमणांज फल देखाडीश. एवुं सांभली सोमनामा सामंत बीक पामीने जरासंध पासे गयो. पाछलथी यादवो भय पाम्या तेथी कोष्टिक निमित्तियाने पूछयुं के अमारो जय क्यां थशे ते दिशा अमने बतावो, त्यारे निमित्तियो बोल्यो. 'तमारा कुलमां राम अने कृष्ण महापुरुषो छे. वली नेमीश्वरभगवान तीर्थंकर छे माटे तमारो कोइ रीते बिगाड थवानो नथी; परन्तु हाल तमे कृष्णने राजा करीने पश्चिमदिशाए जाओ. मार्गमां जतां जतां जे स्थानके सत्यभामा, पुत्रनुं जोडलुं प्रसवे ते स्थानके तमारे रही जावुं. त्यां तमारी वृद्धि थवावाली छे, पण अहीं तमारे रहेवुं नही' एवुं सांभलीने शौरीपुरथी समुद्रविजय प्रमुख अगीआर कुलकोटी यादव नीकल्या अने मथुराथी उग्रसेन प्रमुख सात कुलकोटी यादवो एकठा थइने सर्व कुटुंब सहित सोरठ देश तरफ चाल्या. हवे सोमनामा सामंते राजगृह नगरे जइ राजा जरासंधने समाचार विदित कर्या. जरासंध पण सैन्य सज्ज करी यादवो ऊपर चढाइ करवा तैयार थयो, ते वखते जरासंधनो पुत्र कालकुमर बोल्यो के जो म्हारुं नाम काल छे तो हुं सर्व यादवोने कालरूप थइ मारी न्हाखीश. जो यादवो आकाशमां ऊंचा गया हशे तो नीसरणी मांडीने ऊपर आकाशमां जइ यादवोनो नाश करीश अने जो यादवोए जमीनमां प्रवेश कर्यो हशे तो जमीन खोदीने हुं पण प्रवेश करी तेमने मारीश, जो पाणीमां यादवोए प्रवेश कर्यो हशे तो हुं पण पाणीमां प्रवेश करी तेमने मारीश तथा जो अग्निमां प्रवेश कर्यो हशे तो हुं पण अग्निमां प्रवेश करीने यादवोनो नाश करीश' एवुं पण करी पांचशे भाइओ सहित पिताने नमस्कार करीने कालकुमरे यादवोनी पछवाडे चढाइ करी अने जीवयशाने पण जती वखते कहेवा लाग्यो के म्हारा बनेवीनुं वेर

यादवो पासेथी लडुं तो म्हारुं नाम काल करी जाणजे. जीवयशाए आशीर्वाद आप्यो अने कह्युं के भाइ ! त्हारुं मृत्यु थाय तो भले थाओ पण यादवोनो क्षय करजे. ए रीते जेम थवानुं हतुं तेम जीवयशाना मुखमांथी वचन पण नीकल्युं. पांचसो भाइओ सहित घणी ताकीदथी कालकुमर चाल्यो, ते चालतां चालतां ज्यारे यादवोथी एक दिवसना मुकाम जेटले अंतरे आवी रह्यो एटलामां श्रीनेमीश्वर तीर्थंकर, कृष्ण वासुदेव, राम बलदेव, बीजा पण वली तद्भव मोक्षगामी एवा घणा जनो यादवोना परिवारमां छे, तेमना पुण्यना योगे खेंची थकी यादवोनी कुलदेवी आवीने यादवोनुं मुकाम तथा कालकुमरनुं मुकाम जे जे स्थानके हतुं तेना वचला मध्यभागमां एक पर्वतनी रचना करी ते पर्वतना मार्गमां एक चिता सलगावी, ते चितानी पासे वली एक डोशीनुं रूप करीने कुलदेवी रुदन करती थकी बेठी. तेने कालकुमरे आवीने पूछ्युं के आ चितामां कोण बल्या छे अने तुं शा वास्ते रुदन करे छे ? त्यारे कुलदेवी छल करी रोती थकी बोली के हे पुत्र ! कालकुमरना भयना लीधे सर्व यादवोनुं कुंटुंब आ चितामां बली भस्म थइ गयुं छे. कोइ पण यादव रह्यो नथी माटे हुं तेमनी कुलदेवी छुं तो हवे मने कोण पूजशे ? ए कारण माटे मुजने बहु दुःख लाग्युं तेथी रुदन करुं छुं. ते वात सांभली कालकुमर पोताना मुखे करेली प्रतिज्ञा राखवा माटे घणा सामंत तथा केटलाएक भाइओ सहित तरवार काहाडीने यादवोने मारवा सारुं अग्निमां पड्यो अने बली भस्म थइ गयो. पछी प्रभाते बाकी रहेला जरासंधना लश्कर मांहेला लोको देवमाया जाणीने पाछा फरी राजगृहे जइ जरासंधने सर्व वृत्तांत कह्यो.

द्वारिकानगरीमां यादवोनुं राज्य अने शंखेश्वरतीर्थनी स्थापना—

हवे सर्व यादवो मोज–मजामां खुशी थया थका पश्चिम समुद्रना तट ऊपर आव्या, त्यां सत्यभामाए भ्रमरनामा पुत्रनुं जोडुं

जण्युं. त्यां नैमित्तिकना कहेवा प्रमाणे यादवो रह्या पछी कृष्ण महाराजे अट्ठम तप करी सुस्थित नामा लवणाधिपदेवनुं आराधन कर्युं. तेथी देवता प्रत्यक्ष आवी ऊभो रह्यो. तेनी पासेथी श्रीकृष्णे रहेवाने सारुं जगा मांगी, त्यारे देवताए कह्युं. इन्द्रमहाराजने पूछीने तमोने जगा आपीश. एवुं कहीने सुस्थित देवताए इन्द्र महाराज पासे जइ सर्व वात कही. त्यारे इन्द्रे धनद नामा भंडारीने मोकल्यो, तेणे आवीने बार योजन लांबी अने नव योजन पोहोली एवी एक द्वारिका नगरी बनावी, तेने फरतो अढार हाथ ऊंचो अने बार हाथ जाडो तथा नव हाथ पृथ्वीमां ऊंडो एवो सोनानो कोट बनाव्यो. ते कोटने रत्नना कांगराथी शोभित कर्यो. वळी ते कोटनी चारे बाजु फरती खाइ करी तथा वाडी बाग बगीचाओ सहित एवो ते सुंदर कोट बनावी पछी धनदे ते द्वारिका नगरीमां श्रीकृष्णने वसवानी आज्ञा आपी. ते नगरीमां एक सातभूमिवाळुं कल्पवृक्षोनी वाडी सहित घर श्रीकृष्णजीने रहेवा सारुं बनाव्युं. वळी ते घरनी एक बाजु समुद्रविजयादिक दश भाइओने माटे घरो बनाव्यां तथा श्रीकृष्णना घरनी बीजी बाजुमां उग्रसेननुं घर बनाव्युं. तेनी बाजुमां वळी बीजा सर्व भाइओना घर बनाव्यां. ते सर्व घरो त्रण दिवस पर्यंत धन, धान्य, वस्त्र, घरेणा प्रमुख उत्तम वस्तुओथी भरीने श्रीकृष्णने स्वाधीन करी धनद देवता स्वर्गमां पोताने स्थानके गयो. सर्व यादवोए मळी द्वारिका नगरीमां वास कर्यो. अहीं यादवोना कुटुंबोनी वृद्धि थवा लागी. ते अनुक्रमे पचाश वर्षनी मुदतमां अढार कुलकोडी यादवोमांथी वधीने छपन्न कुलकोडी यादवोनी वस्ती थइ. एवा अवसरमां राजगृही नगरीमां कोइ रत्नकंबलना व्यापारीओए आवीने एवी वात करी के आ नगरीमां कांइ माल खपतो नथी, सत्वविनानी निर्धन लोकोथी आ नगरी भरेली छे; कारण के अमारा रत्न कंबलना लेवावाळा पण कोइ

आ शहेरमां निकल्या नहीं अने द्वारिकामां यादवो वसे छे ते महा-
सुखी छे. एवी रीते द्वारिका नगरीनी प्रशंसा जरासंधे सांभलीने विचार्युं
के म्हारा वैरी हजी लगण जीवता छे माटे हवे एनो नाश करुं, एम
चिंतवी सेना लइ युद्ध करवा चाल्यो एवामां नारद ऋषीये जइ श्रीकृष्णने
कह्युं के तमारे चेतवुं होय तो चेतजो जरासंध तमारी ऊपर चढी आवे छे ते
सांभली श्रीकृष्ण पण सेना तैयार करी लडवाने तेनी सामे चाल्या. तेणे
पंचासरा गामनी पासे आवी पडाव (मुकाम) कर्युं अने जरासंधनुं
लश्कर पण पंचासरा गामथी चार योजन दूर आवी पोहोच्युं. तेमां
जरासंधनुं लश्कर चक्रव्यूहना न्यायथी अने श्रीकृष्णनुं लश्कर गरुड-
व्यूहना न्यायथी एवा आकारे आवी पडाव कर्यो. ते बेहु लश्करने
मांहोमांहे म्होटुं युद्ध थयुं. लाखो सुभटो मरण पाम्या. (इत्यादि
विशेष अधिकार श्रीनेमिनाथचरित्रादि ग्रंथोथी जाणी लेवो. आंही
ग्रंथगौरवना भयथी लखता नथी) ते बेहु तरफवाला सुभटोनी
लडाइ चालतां श्रीकृष्णने जीतवो आपणने कठण थइ पडशे. एवुं
जरासंधे विचारीने कोइ उपाय न सूजतां जरा नामे एक बाण हतुं
ते श्रीकृष्णनी सेना ऊपर नाख्यो तेथी श्रीकृष्णनी सर्व सेना मुखे
लोही वमती मूर्च्छा पामी गइ, त्यारे श्रीनेमिनाथजीना कहेवाथी
श्रीकृष्णे अट्ठम तप करी धरणेन्द्रने आराध्यो. धरणेन्द्रे आवीने आगा-
मिक तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमा श्रीकृष्णने आपी, त्यां मंगल
निमित्ते श्रीकृष्णजीए सुस्थित देवे आपेलो शंख वजाव्यो अने धरणेन्द्रे
आपेला बिंबनुं स्थापन कर्युं तेथी 'श्रीशंखेश्वर' नामा तीर्थ थयुं ते
आज लगण मोजुद छे. कोइक आचार्य वली एम पण कहे छे के
श्रीकृष्णजी त्रण दिवस उपवास करी बेठा. ते त्रण दिवस पर्यंत श्रीने-
मिनाथ स्वामीए संग्राम कर्यो. वली इन्द्र महाराजे मातली नामा
सारथी सहित रथ मोकल्यो तेना ऊपर चढीने नेमिनाथजीए शंख

वजाव्यो तेथी जरासंधनी सेना शिथिल थइ, अने त्रण दिवस श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथनी मूर्तिनुं न्हवण पोतानी सेनामां श्रीकृष्णे छांटयुं तेथी श्रीकृष्णजीनी सेना सज्ज थइ. छेवट कोइ पण रीते श्रीकृष्णने जीतवानो उपाय जरासंधने सूज्यो नहीं त्यारे श्रीकृष्णने मारवा सारुं जरासंधे पोतानुं चक्र तेना ऊपर चलाव्युं. तेथी कांइ श्रीकृष्णनुं बगड्युं नहीं पण उलटुं ते चक्र श्रीकृष्णने त्रण प्रदक्षिणा आपीने तेमना हाथमां आवी बेठुं. पछी तेज चक्र लइ श्रीकृष्णे जरासंध ऊपर चलाव्युं, तेणे जरासंधनुं मस्तक छेदी नाख्युं. ते वखते देवताओ आकाशमां देवदुदुंभी वगाडीने बोल्या के 'श्रीकृष्ण नवमो वासुदेव थयो' ते वात सांभली समस्त जरासंधनी सेना आवीने श्रीकृष्णजीनी सेवामां हाजर थइ. पछी श्रीकृष्ण द्वारिकामां आव्या. सुख समाधिमां त्रण खंडनुं राज्य भोगववा लाग्या. बहोतेर कुलकोडी यादव द्वारिकामां रहे छे अने साठ कुलकोटी यादवो द्वारिकानी बाहेर रहे छे. तथा महापुरुष समुद्रविजयादिक दशे दशार्ह, तथा बलदेवादिक पांच महावीर एटले म्होटा योधा, तेमज उग्रसेनादिक सोल हजार राजाओ तथा प्रद्युम्नादिक साडा त्रण क्रोड कुमर, तथा सांबादिक सोल हजार दुर्दांत कुमर, अने वीरसेन प्रमुख एकवीश हजार वीर तथा महासेन प्रमुख छपन्न हजार बलवंत राजाओ द्वारिकामां वसे छे. वली रुक्मिणी प्रमुख बत्रीश हजार राणीओ तथा अनंगसेना प्रमुख अनेक गणिकाओ एवा परिवार सहित म्होटुं राज्य श्रीकृष्णजी करे छे.

नेमनाथनी बलप्रशंसा अने बलपरीक्षा—

एज अवसरमां इन्द्रमहाराजे श्रीनेमिनाथजीना बलनी प्रशंसा करी त्यारे ते सभामां कोइ मिथ्यात्वी देव इन्द्रमहाराजना वचनने नहीं मानतो थको गिरनार पर्वत ऊपर आव्यो. त्यां सुरंधरा नामे नवीन नगर वसाव्युं. तेमां ते देवता पोते आवीने मनुष्यनुं रूप धारण करीने

रह्यो अने द्वारिका नगरीना रहेनारा लोकोने नित्यप्रत्ये घणुंज दुःख देवा लाग्यो–उपद्रव करवा लाग्यो ए वात सांभलीने महा अभिमाननो धरनार एवो अनाद्दष्टिकुमर देवने पकडवा सारुं गिरनारनी ऊपर देवे वसावेला नगरनी ऊपर चढी आव्यो. तेने देवताए देवमायाथी जीती लीधो अने बांधीने पोताना नगरमां लइ गयो. ए वात सांभलीने समुद्रविजयजी तेनी साथे लडवाने माटे जवाने तैयार थया त्यारे राम कृष्ण बे भाइओए समुद्रविजयजीने वर्ज्या अने पोते लडाइ करवा सारुं गया. तेने पण देवताए हरावीने पोताना नगरमां लइ जइ बंदीखानमां नाखी दीधा, त्यारे द्वारिकामां कोलाहल थइ रह्यो अने लोको कहेवा लाग्या के राम कृष्ण बे भाइओ हारी गया तो हवे आपणी रक्षा कोण करी शकशे ? त्यार पछी सत्यभामाजी प्रमुख स्त्रीओए श्रीनेमनाथजीने कह्युं के तमे अनंत बली छतां तमारा भाइओने शत्रु दुःख आपे छे तो एथी तमारी लाज जाय छे, त्यारे नेमीश्वर भगवान एकला रथमां बेसीने शत्रुना नगरने चारे बाजु रथ फेरव्यो तेथी कांगरा सहित सर्व कोट पडी गयो, त्यारे देवे सिंह विकुर्व्या ते जोइ नेमिनाथे धनुष्यनो टंकारव करीने सर्व सिंहोने भगाडी दीधा. देवताए अंधकार करी मूक्यो, भगवाने उद्योतवालो बाण मूकीने अंधकारनो नाश कर्यो. देवताए मेघ वरसाव्यो, भगवाने वायरो चलावीने मेघने दूर कर्यो, देवताए अंगारानो वर्षाद वरसाव्यो, भगवाने पाणीथी बुझावी न्हाख्यो. पछी भगवाने मोह बाण मूक्युं तेथी सर्व शत्रु मूर्च्छा खाइने पडी गया महा दुःखी थया, त्यारे इन्द्रमहाराज त्यां आवीने विनंति करवा लाग्या, के महाराज ! ए अज्ञानी देव छे ते आपना अनंत बलने शुं जाणे ? त्यारे भगवाने कृपा करीने देवताने छोडी मूक्यो. पछी ते देवताए म्होटा महोत्सव सहित श्रीकृष्णादिकने द्वारिकामां मोकली दीधा, पोते भगवानने नमीने पोताने स्थानके गयो.

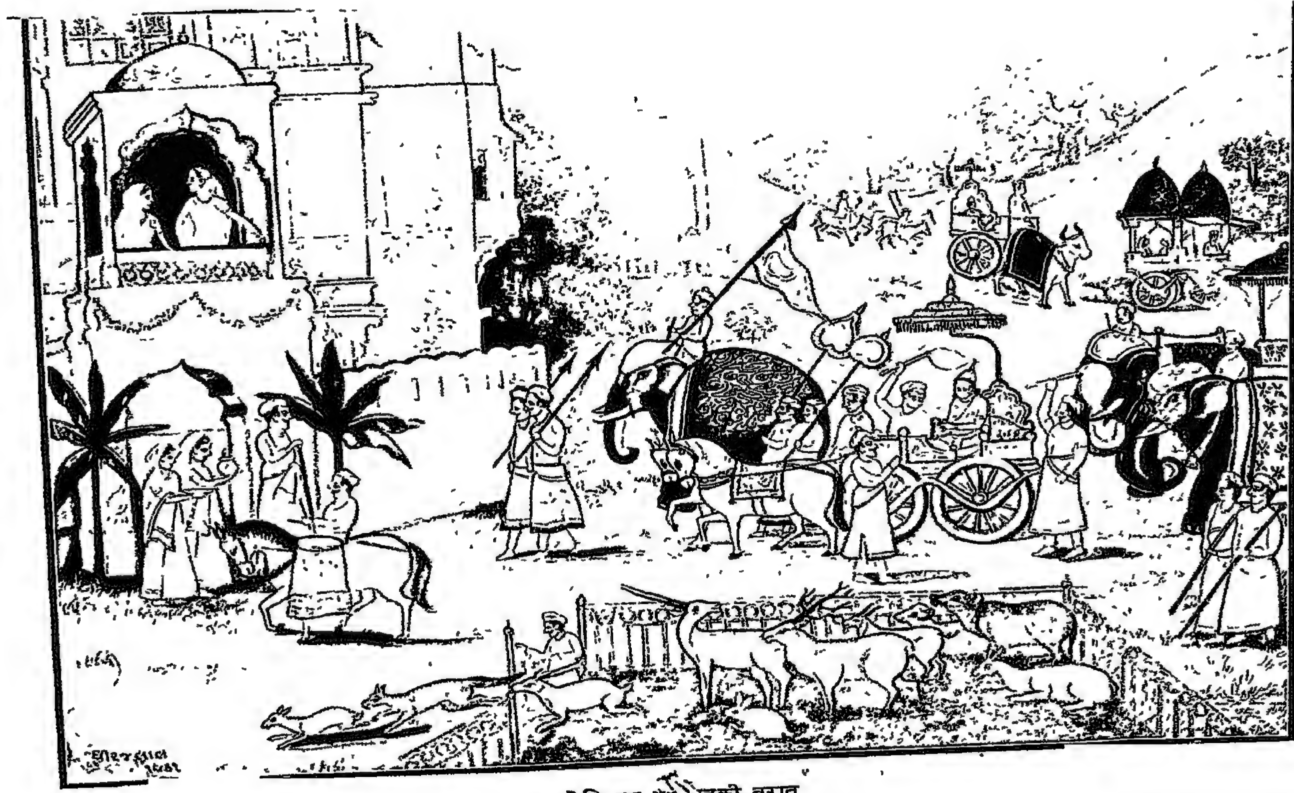
प्रभुनुं आयुधशालामां गमन, अने कृष्ण साथे बलपरीक्षा—

अनुक्रमे श्रीनेमीश्वर भगवान् त्रणसे वर्षना थया पण परणवानी इच्छा राखे नहीं, त्यारे शिवादेवीजीए कह्युं के–पुत्र ! तुं विवाह करीने म्हारा मनोरथ पूर्ण कर, भगवान बोल्या–माताजी ! कोइ म्हारा योग्य कन्या हशे, तो हुं परणीश. ते वात सांभली माताजी मौन धारण करी रह्यां. हवे श्रीसमुद्रविजयकुलशणगार, शिवादेवी मात मल्हार, एक दृढनेमि, बीजा दृढनेमि, त्रीजा अतिनेमि, चोथा अरिष्टनेमि अने पांचमा रथनेमि ए पांच कुमर मांहेला श्रीअरिष्टनेमि कुमर ते लघुवय सरखा सरखी जोडि, मनतणे कोडि, घणा कुमरे परवर्या. लीलाए रमता भमता श्रीकृष्णनी आयुध शालामां आव्या, आयुध जोवा लाग्या, रक्षपाल बोल्यो, तमे लघु बालक छो, माटे अलगा रहो, एनो स्पर्श करवो पण दोहिलो छे, छोकरडे छाश न पीवाय, म्होटुं कार्य ते म्होटाथी ज थाय, ते न सांभलतां श्रीअरिष्टनेमि कुमारे श्रीकृष्णना चक्रने उपाडी कुंभारना चक्रनी परे भमाव्युं तथा सारंग धनुष्यने उपाडीने कमलना नालनी परे नमाव्युं तथा कौमोदकी नामे गदाने लाकडीनी पेठे उपाडीने पोताना खांधा - ऊपर राखी, अने ज्यारे पांचजन्य शंख पूर्यो त्यारे तेनो शब्द सांभलीने त्रण भुवन कंप्या, पर्वतना शृंग तूटी तूटीने पडवा लाग्या, समुद्रना जल उच्छलवा लाग्या, हस्ती तुरंगमादिकना बंधन तूटी पड्या तेथी सर्व भागी गया, लोक सर्व बहेरा थइ गया, धरती कंपवा लागी, नगरनो कोट पण कंप्यो, दिग्गज त्रास पाम्या, यादवो सर्व मूर्च्छागत जेवा थइ गया, सर्व बीक पामवा लाग्या, श्रीकृष्ण, बलभद्र कंपवा लाग्या. अने भयाकुल थया थका चिंतववा लाग्या के आ ते कोण बलवंत छे? के जेणे सर्व पृथ्वीने क्षोभ पमाड्यो ? एवी रीते तेमने कांइ पण जंप न

आव्यो, तेथी तरत त्यां आव्या अने पृच्छा करी, त्यारे सर्वे बोल्या के श्रीअरिष्टनेमि कुमारनो ए बल छे, ते सांभली चमत्कार पाम्या पछी श्रीकृष्णे कह्युं के—हे भाइ ! आपणे बलपरीक्षा करीए तो वंछित सीझे त्यारे नेमिकुमर बोल्या के भूमि लुंठनादिक बाह्य खेल करवुं, ते तो उत्तम नरने योग्य नथी, माटे मांहोमांहे एकेकनी भुजा वालीने बल-परीक्षा करिए, ते वचन श्रीकृष्णे प्रमाण करी पोतानी भुजा लंबावीने कह्युं के, आ म्हारी बांह नमाडो, त्यारे नेमिकुमारे कमलनालनी परे एक आंगुलीथी श्रीकृष्णनी बांह नमावी दीधी. पछी श्रीनेमिकुमारे पोतानी बांह लंबावी त्यां कृष्ण घणुं बल करी वानरनी परे वलगीने हिंचवा लाग्या त्यारे श्रीनेमिकुमार सहास्य वचन बोल्या के कृष्णजी ! तमोने माता देव-कीए पालणे पोढाडीने रमाड्या नहीं, ते माटे हवे हुं तमने हिंचोळुं, (रमाडुं) छुं एम कहीने श्रीकृष्णने हिंडोलानी माफक हिंचोल्या. जेम जुगारी दाव हारे, तेम कृष्ण हारी गया. एवुं जोइने बलभद्रजी बोल्या के हे भाइ ! भ्रमरने भारे तरुशाखा नमे नही, पछी कृष्ण तथा बलभद्रजी चिंता-तुर थका चिंतवे छे के ए पितराइ भाइ आपणाथी अधिक बलवान् छे, माटे आपणुं सर्व राज्य लइ लेशे ?, कीडी—तीतर न्याय करशे. एटलामां आकाशे देव वाणी थइ के अहो ! कृष्ण—वासुदेव ! तमे चिंता म करशो. ए तो नेमीश्वर भगवान, बाल ब्रह्मचारी, बावीशमां तीर्थं-कर एनुं अतुल बल छे तथापि तमारुं राज्य लेवानी एने गरज नथी अने स्त्री परणवानी पण गरज नथी. ए तो परणया विना ज संसारनो त्याग करी दीक्षा लेशे. ए वचन सांभली कृष्णजी घणो हर्ष पामीने पोताने घेर पहोंच्या.

प्रभुने विवाह मंजूर करावना माटे गोपियोनो प्रयत्न, अने प्रभुनी जान—

एक दिवस शिवादेवीजीए नेमिकुमरने निरागी जाणीने गोपी-योने भलामण करी के 'तमे वसंत रमवाने माटे नेमीश्वरने तेडी जाओ



[illegible] नकी बरात

अने एने जेम बने तेम सरागी करी, विवाह करवाने मनावो' त्यारे सत्यभामा प्रमुख सोल हजार गोपीयो मलीने श्रीनेमीश्वरने सहस्राम्र वनमां लइ गइ, विचित्र प्रकारना वचनो कहेवा लागी-एक बोली तमे शामाटे परणता नथी, तमारो भाइ श्रीकृष्ण सोल हजार स्त्रीयो परण्या छे अने तमे एक पण परणता नथी तेनुं कारण शुं ?, बीजी बोली के भला पुरुष ! आवी रीते युवानपणुं कां फोकट गुमावो छो ? परणवामां घणी मजा छे, त्रीजी बोली परण्या विना मोक्ष पण जइ शकशो नहीं, केमके ऋषभादिक तीर्थंकर पण सर्व परणीने मोक्ष गया छे तो वली तमे कांइ नवा मोक्ष जवावाला थया छो ? एक बोली एतो मोल्यो थाशे, परणीने शुं करशे ? सत्यभामा बोली जो नहीं माने तो एनो पल्लो पकडो, लक्ष्मणा बोली ए पूज्य छे माटे एनी साथे जबराइ करवी नहीं, पण परणवुं तो अवश्य जोइएज. सत्यभामा बोली, एनी पासे कांइ सामर्थ्य नथी कारण के जो स्त्री परणे तो तेने पालवानुं काम मुश्केल छे. ते एनाथी बनी शके नहीं; तथापि जो परणी लेशे तो सोल हजारने एनो भाइ पाले छे तेनी साथे ए पण पलाशे. एवी वातो सांभलीने नेमिनाथजी कांइक हस्या त्यारे सर्व गोपीयो तालोटा पाडीने बोलवा लागी के 'एणे विवाह मान्यो,' माता-पिताए पण जाण्युं के विवाह मान्य कर्यो. एवुं समजीने शिवादेवीना कहेवाथी श्रीकृष्ण तथा समुद्रविजयजी प्रमुख राजाओए उग्रसेन राजाने घेर जइने राजीमती कन्यानी मांगणी करी. तेणे पण खुशीथी कह्युं के सुखेथी परणावो. पछी बेहु जगाए विवाहनो महोत्सव थवा मांड्यो, परणवा माटे शणगार कराववा लाग्या, पण नेमजी विनयवान छे माटे मातापितानो हर्षभंग थवाना भयथी जो पण निस्पृही छे तो पण मौन धारण करी रह्या. हवे जान निकली ते वखते अनेक यादवोना क्रोडो गमे मनुष्य साथे चाल्या, सर्व राजाओ साथे चाल्या, अनेक

वाजां वाजतां, हाथी ऊपर बेठा, चमर ढलता, देवदेवी आकाशमां चालतां, स्त्रीयो पृथ्वी ऊपर गीत गाते थके चालता चालता उग्रसेनना महेल पासे जान आवी, त्यारे नेमजी सारथीने पूछवा लाग्या के—आ महेल कोनो छे, सारथी बोल्यो—तमारा श्वसुरनो महेल छे.

बीजी एक प्रतमां नीचेमुजब लखेल छे—

ज्यारे वसंत मास आव्यो, त्यारे बत्रीश हजार राणी सहित श्रीकृष्ण–वासुदेव श्रीनेमिकुमरने साथे लइ वसंतक्रीडा करवा वनमां गया. त्यां सत्यभामादिक राणीयोने नेमिकुमरने विवाह मनाववानो सत्कारी कृष्ण स्थानांतरे रह्या, ते अनेक गोपिओ मली थकी श्रीनेमिकुमरने केसर, गुलाब प्रमुख सुगंध नीर छांटे, फूलनो दडो हृदयमां मारे, कटाक्ष बाणे वींधे, कामचेष्टा पूर्वक जल छांटे, एम घणा प्रकारे हास्य करीने कहेवा लागी के हे देवर ! विवाह मानो अने एक स्त्री तो परणो, जो स्त्रीनुं भरण–पोषण तमाराथी न थाय तो तमारो भाइ बत्रीश हजार स्त्रीयोनो भरण–पोषण करे छे, तेम तमारी एक स्त्रीनुं पण पोषण करशे ? तेनी कांइपण चिंता करशो नहीं, पण स्त्री जरूर परणो, स्त्री विना पुरुष शोभे नहीं, कोइ विश्वास न करे, कोइ माने नहीं, वली अंगनी शुश्रूषा कोण करे ? प्राहुणाने कोण साचवे, माटे पाणिग्रहण अंगीकार करो, मन मानती कन्या वरो, ए विनंति मानो, वधे जेम वानो, नहींतर पण नहीं छूटो, जोर करी जूठो, अमारे वश आव्या आज, करवी हवे केही लाज. एवा वचन सांभली नेमीश्वर नीचुं जोइ रह्या, स्त्रीओ साथे ते वली श्यो वचनविचार करवो ? एम चिंती हां ना कांइ न कही, त्यारे स्त्रीओ कहेवा लागी के मान्यो मान्यो विवाह, सहुने थयो उछाह, श्रीसमुद्रविजय शिवादेवी राणीने तिणीकाल, आपे वधामणी उजमाल, हवे श्रीकृष्ण नरिंद, मनने आणंद, उग्रसेन राजान, पासे बहु मान, मांगे राजीमती कन्या, सती शिरोमणि धन्या, उग्रसेन पभणे सघले साज, इहां आणो ते वरराज, तो देउं कन्या तास, जग विस्तरे जश वास. हवे समुद्रविजय राजा, शिवादेवी राणी ज्योतषी क्रोष्टुकना मुखथी श्रावण सुदि छठ्ठनुं लग्न जाणी, वांटे वधामणी, तेडावे सगासागीजा भणी, मांडे म्होटो आडंबर, धवल मंगल गाये घर घर, पोषे भल भले पकवान, जुगते चलावे जान. तद्यथा—सोल हजार मुकुटबद्ध छत्राधिपति राजान, बेतालीश लाख हस्ती ऐरावत समान, बेतालीश लाख घोडा, सुवर्ण साज तेने सजोडा, बेतालीश लाख रथ, शोभा पामता पथ, अडतालीश कोडी पायक, शत्रुदल घायक, नव कोडी सामान्य तुरंगम, एक एकथी अनोपम, छन्नुं कोडी चिराकदार, नव कोडी आगलियादार, बार कोडी वाजित्र वाजे, अंबर गाजे, सांबकुमर प्रमुख साठ सहस

दुर्दान्त कुमर ते पारसीक जातिना घोडे चढ्या, प्रद्युम्न प्रमुख पंचोतेर सहस्र कुमर महावीर ते हयरेवा जातिना अश्वे आरूढ थया, अरिमर्दन प्रमुख पांच लाख कुमर ते महोली जातिना अश्वे चढ्या, वीरप्रमुख सात लाख कुमर ते पाणीपंथा जातिना तुरंगे चढ्या, सागरचंद्र प्रमुख एक लाख कुमर ते कंबोजा जातिना अश्वे चढ्या, अनादृष्टि प्रमुख तेर लाख कुमर रेवाजातिनाअश्वे आरूढ थया, पालकप्रमुख सात लाख कुमर अष्टमंगल, जातिना अश्वे चढ्या, दृढनेमि प्रमुख बार लाख कुमर रेमंगली जातिना अश्वे चढ्या, रथनेमि प्रमुख नव लाख कुमर चंद्रप्रभा जातिना अश्वे चढ्या, महानेमि प्रमुख पन्नर लाख कुमर अग्निपंथा जातिना अश्वे चढ्या, एवा यादव कुमर, भोगी भ्रमर, जेहना जाणीता कुल, भालानुं बल, आगलथी चाले, थोडुं बोले, थोडुं ठाकुरने नमे, दर्शनीने नमे, परनारी सहोदर, वाचा अविचल, शरणागत साधार, सूर वीर दातार, झूंझार, रणांगण धीर, रिपुहृदय हल सीर, कसबोइ गरकाव, केशरीए पागे, लीबीए वागे, कांधाल, मूछाल, भलभला भूपाल, आवे उमह्यां, पंथे वह्यां, वली बे कोडी सेजवाला, चोराशी कोडी स्त्री गीत गान करे, छपन्न कोडी प्रलंब धजा, बार कोडी भाट बिरुदावली बोले, बार कोडी सुखासन पालखी, पन्नर लाख खच्चर द्रव्ये भर्या, त्रण लाख श्रीछत्र, बेतालीश लाख रथ, त्रण कोडि चामर ढले, एंसी लाख नीसान वाजे, सत्तर लाख ढोल वाजे, छन्नुं कोडी भेरी वाजे, नव लाख मादल वाजे, पीस्तालीश कोडी छडीदार, साठ कोडी सुरहीया, वडवडा वहीया, मंत्रीश्वर प्रधान, कहिए केता अभिधान, नवाणुं कोडी सामान्य वहिल, थइ इम जाननी चहिल पहिल, हवे वरराजाने सर्वौषधि नीरे कराव्युं स्नान, उजुवाल्युं विशेषे वान, माताए भालस्थले कीधो तिलक, अक्षतनो प्रतिष्ठ्यो ऊपर पदक, नव कोडीनो मुकुट, पचास कोडीनो नवग्रहो, बार कोडीना बे कुंडल, अडतालीश कोडीनुं रत्न जडित तिलक, पचीश कोडीनी मुद्रिका, पचीश कोडीना अनेक रत्न जडित हार, बे लाख कोडीनी रत्नजडीत सांकली, जनोइनी परे पहेरे, पन्नर कोडीनी चंपकली, देवदत्त अमूलिक पागडी, पचीश लाख कोडीनी कबाइ, एकाणुं कोडीना बे बहिरखां, पीस्तालीश कोडीना बे बाजुबंध, सत्तावीश लाखनो कणदोरो, पचीश कोडीनो रत्नजडित कणो, त्रीश कोडीनी वाणही पगरखां, छन्नुं कोडीनो अनेक रत्नजडित श्रीफल रूप फूलदडो, अमूलक वस्त्र पहेरावी, सकल सणगार करावी, आंख आंजी, मुख मांजी, सिर धार्यो खूंप, शोभे सुरूप, आण्यो गजराज, सुवर्णमय साज, मेघाडंबर छत्र, प्रतिष्ठ्यो पवित्र, चढ्यो वरराज, जाणे इन्द्र महाराज, के मूर्त्तिवंतो कामराज, शोभा समाज, पसर्यो तूर्यमंगलनिनाद, गह गह्यो स्त्रीजनसाद, आकाशे अनेक देव देवांगना इन्द्र–इन्द्राणी रंभा अपसरा आवे, मनने भावे, किन्नरी गीत गाये, सरस्वती वीणा वाये, तुंबर गंधर्व नाचे सहु मन साचे, कृष्ण बलभद्र दशे दशार्ह उमाचे, जीर्णदुर्ग भणी जान आवे, जेम

ज्येष्ठमास उद्दान, साजन जनने अधिको मान, याचक जनने देतां दान, हुओ धवल मंगल उच्चार, आवीओ वर तोरण बार, जोए जोवणहार, धन्य धन्य राजीमती नार, जेणीए वर लाधो श्रीनेमिकुंमार.

तोरणथी प्रभुनो पाछा फरी जवुं अने राजुलनो संताप—

राजीमती गवाक्षमां बेठी थकी सखीयोने कहे छे के–म्हारो भर्त्तार केवो छे? त्यारे सखीयो बोली–आ हाथी ऊपर बेठा थका महा-ऋद्धि सहित चाल्या आवे छे ते नेमजी छे. राजिमती प्रभुनुं रूप देखी मोह पामीने विचारवा लागी के म्हारो म्होटो भाग्योदय थयो के नेमजी जेवो वर आवीने मन्हे परणशे. एम विचारती चंद्रानना, मृगलोचना सखी सहित वार्त्ता करतां, सखीए कह्युं के–ए वर सर्व-गुण संपूर्ण छे पण एक अवगुण ए छे के एनुं श्यामवर्ण छे, वर तो गोरो जोइए, राजीमती बोली ए तो दूध मांहेथी पूरा काढवा मांड्या. श्यामवस्तु मांहे तो घणो गुण छे, भूमि, चित्रावेली, अगर, कस्तूरी, मेघ, कीकी, केश, कसोटीनुं पाषाण, मसी, रात्रि, इत्यादिक वस्तु श्याम होय छे ते जगतमां भली कहेवाय छे तथा धोळी वस्तु कपूर छे, तेने मरी अंगाराशुं मेल छे, चित्रा ने रोहिणी श्याम होय तो शोभे, निःकेवल गौर तो लूण, अस्थि, हिम, स्वेत–कुष्ट, ए मांहे शुं वखाणवा योग्य छे? श्यामले वरणे वर प्रशस्य देखी लोचन अमीय भराणी, हृदयकमल उल्लश्यां, मनना मनोरथ रूप वेली प्रसरी. एवामां राजीमतीनी जमणी आंख फरकी, त्यारे शोच करवा लागी अने जाण्युं के सर्वथा प्रभुनो संयोग न मले, पछी सखी प्रत्ये कहेवा लागी के म्हारुं जमणुं अंग फरके छे, ते सांभळी सखी बोली के तुं मंगलमां अप-मंगल कां बोले छे? एवामां प्रभुए पण तोरणे आवतां थकां मार्गमां चतुष्पदादिक जीवोना भर्या वाडा दीठां, पंखीयोना भरेला पांजरा दीठां तथा घणा जलचर जीव पाणी विना ऊंचा ऊंचा कुदी रह्या छे,

तथा थलचरमां हरिण, सांबर, रोज, चेटा, मेंढा, ससला, प्रमुख अनेक जातिना जीव तथा खेचरमां कुर्कुट, तीतर, मोर, सारसना जोडला, राजहंस, कोयल, बगला, सूडा, इत्यादिक जीवो एकठा कर्यां छे, तेनो पोकार सांभल्यो. एवामां एक हरिण अने हरिणी कोटे कोट भरावी विलाप करतां प्रभुने विनति करे छे के हे प्रभो ! अमने आ कष्ट मांहेथी उगार, अमे कांइ अपराध कीधो नथी, तृणखला मुखे दीये छिये, हे अनाथनाथ ! प्रभो ! राख राख. ते जोइ श्रीनेमि- कुमरे मावतने पूछ्युं के ए जीवोने शा कारणे रोकी राख्या छे ? त्यारे मावत बोल्यो. तमारा विवाहना गौरव-भोजनार्थे राख्या छे. ते सांभली प्रभु बोल्या धिक् धिक् ए विवाहथी सर्युं, मने आ नरकनो मूलरूप विवाह जोतो नथी. प्रभु दीनदयाल सर्व जीवयोनीने छोडावी हस्ति- थकी उतरी, रथे बेसी पाछा वल्या, त्यारे श्रीसमुद्रविजय राजा, शिवा देवी राणी, कृष्णवासुदेव अने बलभद्र प्रमुख छप्पन्न कुलकोडि यादव रथ अटकाववाने आडा फर्यां, परंतु प्रभु कोइना वार्यां वल्या नहीं. अने एवुं बोल्या के आ सर्व जीवो बंधनमां बांध्यां थका महा दुःख देखे छे, तेम हुं बंधाउं नहीं अने संसारमां पण रहुं नहीं. ' हाथीओ वाघे जाल्या न जाय, त्यां जाय रे जाय यादव राय ' एवी वार्त्ता सांभली राजीमती धरणी ढली, पछी क्षणेकमां सचेतन थइने बोली के-हे हे हे प्रभो ! तमें हर्षस्थानके ए श्यो विषवाद उपजाव्यो ? एम कहेती हार त्रोडती, वलय मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र भांजती, किंकणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, कुंतलकलाप रोलती, भूमि लोटती, साञ्जन-बाष्पजले भूमि सींचती, सखीजन अपमानती, जेम थोडा पाणी मांहे माछली टलवले तेम विकल थाती, विरहमाती, क्षणे रोवे, क्षणे जोवे, क्षणे आक्रंद करे, क्षणे नीसास भरे, क्षणे मूंझे, क्षणे बूजे, क्षणे झूंजे, क्षणे न सूजे, वली अनेक ओलंभा पूर्वक वचन

कहे छे के–हा यादवकुलदिनकर !, हा करुणासागर !, हे शरणागतवत्सल !, आ अबलाने एम एकली मूकवी तमने न घटे, जो सर्व जगजीवनी दया पालो छो तो मुज ऊपर कां दया न आणी, माटे अरे निष्ठुर निर्लज्ज हैडा ! तने प्रभु मूकी गया तो हवे तुं शतखंड कां नथी थातो ? हवे तुं श्यो ल्हावो लइश. एवा राजीमतीना विलाप सांभली सखीवर्ग, सज्जनवर्ग, अने मातापितादिक कहेवा लाग्या के ' ए निस्पृहि छे एना पर श्यो राग करवो ? तुं एटला विलाप शा वास्ते करे छे ? त्हारो कांइ विवाह थयो नथी माटे ए कालो कुरूपो वर गयो तो शुं थयुं. त्हारे वली बीजो रूपवान वर मलशे माटे हवे अन्य उत्तम वर वरो. ' राजीमती बोली ए वचन सांभलवा योग्य नहिं, तमे एवा वचन मुजने म कहो, म्हारे तो श्रीनेमिनाथना चरणनुं शरण छे, काली तो कस्तुरी पण थाय छे ते गुणवान छे माटे तेनुं मूल्य घणुं थाय छे अने जे सपेत लसण थाय छे ते निर्गुणी छे माटे तेनो कोइ भाव पण पूछतो नथी तो ए प्रभुजीए मारो हाथ न साह्यो पण हुं एनो हाथ म्हारे माथे मूकावीश. ए प्रभुने नामे हुं सौभाग्यवती छुं, माटे जो एणे मुजने नहीं परणी तो हुं एनी चेली थइने एनी पछवाडे फरीश पण बीजो कोइ पण वर वरीश नहीं. ' एम कही वली गिरनारजीने कहेवा लागी के हे गिरनार ! मुजने त्यागीने नेमजी जो त्हारी पासे आवे तो तुं एने पेसवा दइश नही. वली एवो ओलंभो आपजे के तुं अबलाने दुःखिणी करीने कां आव्यो ? इत्यादिक विकल्प करती, शील पालती थकी पोताना पिताना घरमां रहे छे. एवामां रथनेमि राजीमतीने कहेवा लाग्यो के नेमजीए तुजने परणी नहीं अने हुं नेमजीनो भाइ छुं माटे हवे तुं मने ज परण, त्यारे राजीमती बोली ! अरे ' वमेला आहारने खावानी तुं शुं चाहना राखे छे ? हुं तो एक श्रीनेमीश्वर विना बीजानी चाहना करती नथी ' एवुं सांभली रथनेमि विलखो थइ गयो.

नेमिनाथनी दीक्षा अने केवलज्ञान—

अरिहंत श्रीअरिष्टनेमि तोरणथी पाछा फरी घरे आव्या, बधा मली त्रणशे वर्ष कुमारावस्थाए घरमां रह्या. पछी लोकांतिक देवो आवीने बोल्या के-प्रभो ! धर्म प्रवर्त्तावो, नेमिनाथ स्वामीए अवधिज्ञानथी पोतानी दीक्षानो अवसर जाणी वरसीदान देवा मांड्युं. ते पछी प्रभुए वर्षाकालनो पहेलो महीनो, बीजुं पखवाडियुं, श्रावणशुदि छट्ठना दिवसे पहेला पहोरथी पूर्वदिवसमां अर्थात् मध्यान्ह पहेलां, देव अने मनुष्योथी उपाडेल उत्तरकुरा नामा पालखीमां बेशी यावत् द्वारिका-नगरीनी वचमांथी थइने ज्यां रेवत नामा उद्यान छे त्यां आवीने अशोक वृक्षनी नीचे पालखीमांथी उतरीने, पोताना हाथथी सर्व घरेणा अलंकार उतारीने, पांच मुष्टि लोच करीने, छट्ठ भक्त पाणीरहित एटले चउविहार बे उपवासे, चित्रा नक्षत्रना साथे चंद्रमानो योग होते छते, एक देवदुष्य वस्त्र लइने एक हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी, घर त्यागीने साधुपणुं अंगीकार कीधुं. अरिहंत अरिष्टनेमिए चोपन रात्री सुधी काया वोसरावी यावत् पंचावनमां दिवसनी रात्रिमां वर्त्तमान वर्षाकालनो त्रीजो महिनो, पांचमुं पखवाडियुं, आशोज वदिनी अमा-वासना दिवसे पाछला पहोरमां, गिरनार पर्वत ऊपर, वेतस नामा वृक्षनी नीचे पाणी रहित अट्ठमना तपमां प्रभुने चित्रा नक्षत्रसाथे चंद्रमानो योग आवे छते शुक्लध्यान ध्यावता थका अनंत केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयुं, सर्व भाव जाणवा देखवा लाग्या. श्रीनेमिनाथ स्वामीने गिरनार पर्वतना सहस्राम्र वनमां केवलज्ञान उपनुं, देवे समवसरण रच्यो, वनपालके आवी श्रीकृष्णने वधामणी आपी, श्रीकृष्ण म्होटी ऋद्धि सहित वांदवा आव्या, राजीमती पण वांदवा आवी, बीजा पण घणा लोक वांदवा आव्या, भगवाननी देशना सुणीने वरदत्त नामा

राजाए बे हजार पुरुषोनी साथे दीक्षा लीधी. कृष्णजीए पूछ्युं के–स्वामिन्! आपनी ऊपर राजीमती एटलो मोह केम राखे छे? तेनुं कारण मने संभलावो. भगवान बोल्याः—हे कृष्ण! म्हारे एनी साथे पूर्वे आठ भवनो संबंध छे. पहेले भवे हुं 'धन' नामे राजा हतो, त्यारे ए म्हारी 'धनवती' नामे राणी हती. बीजा भवमां बेहु जण पहेले देवलोके देवपणे उपन्यां. त्रीजे भवे देवलोकथी चवीने हुं 'चित्रगति' नामा विद्याधर राजा थयो, त्यारे ए 'रत्नवती' नामे म्हारी स्त्री थइ. चोथा भवमां बन्ने जण चोथे देवलोके गया. पांचमे भवे देवलोकथी चवी हुं 'अपराजित' नामे राजा थयो त्यारे ए 'प्रियमती' नामे म्हारी राणी थइ, छट्ठा भवे बेहु जण अगीआरमां देवलोके देवता थया. सातमा भवमां हुं 'शंख' नामे राजा थयो त्यारे ए 'सोमवती' नामे म्हारी राणी थइ. आठमे भवे अमे बेहु अपराजित नामा अनुत्तर विमाने देवता पणे जइ उपन्या. त्यांथी चवीने नवमा भवमां हुं 'नेमि' थयो अने ए 'राजीमती' थइ. एवी रीते नव भव संबंधि वार्त्ता संभलावीने भगवाने त्यांथी विहार कर्यो अने श्रीकृष्णादिक तथा राजीमती प्रमुख वृत्तांत सांभळी द्वारिकाए गया.

रथनेमिनी भोगपिपासा, अने राजिमतीनो प्रतिबोध—

एकदा श्रीनेमिनाथजी गिरनार ऊपर आवी समोसर्या, त्यारे राजीमतीए बीजी घणी राजकन्याओनी साथे दीक्षा लीधी. अने रथनेमीए पण दीक्षा लीधी. एक दिवस गिरनार पर्वत ऊपर भगवानने वांदवा जतां मार्गमां वर्षाद वर्ष्यो, तेथी राजीमतीना वस्त्र पलळी गयां. तेने सूकाववा सारुं एक गुफामां प्रवेश कर्यो, तेज गुफामां आगलथी रथनेमि काउसग्ग ध्यानमां रहेल हतो, तेनी कांइ राजीमतीने खबर पडी नहीं. तेथी राजीमतीए ते गुफा मांहे पोताना भींजेला सर्व वस्त्र उतारी म्हाखीने सूकववा मूक्यां. राजीमतीने नग्न देखीने रथनेमीनुं मन

चलायमान थयुं अने कामदेवथी पीडाइने लज्जानो त्याग करी बोलवा लाग्यो के " हे राजीमती ! तमे शा वास्ते तपस्या करीने नकामा शरीरने शोषवो छो, आवोनी म्हारी पासे, आपणे बेहु जण विषयसुख भोगवीए. हमणां युवान अवस्थामां तप करवानो अवसर नथी, फरी वृद्धावस्थामां दीक्षा लइशुं." रथनेमिना वचन सांभली, पोतानां अंगोपांग संवरी, धैर्य धरी, दृढता धारण करीने राजीमती बोली के " अरे ! तने धिक्कार पडो, जे तुं दीक्षा ग्रहण करीने एवी वात करे छे ? अरे ! समुद्रविजयराजाना पुत्रे सर्व सावद्य व्यापार त्यागी साधुपणुं आदर्युं तेणे मुजने वमी छे अने तुं चाहना करे छे ? जे अगन्धन कुलना सर्प छे, ते तिर्यंच जातीना होवा छतां पण वमेली वस्तुने वांछता नथी तो तुं शुं ते तिर्यंचथी पण नीच थाय छे ? जे वमेली वस्तुने भोगववा वांछे छे; वमेली वस्तुने तो श्वानादिक वांछे छे. माटे तुं त्हारुं मन ठेकाणे राख. हुं कोइ रीते त्हारे हाथ आववानी नथी. अरे ! तुं भोग त्यागीने फरी नरके जवानी अभिलाषा शा माटे करे छे ? महानुभाव ! ए पापनी आलोयणा लइ, फरी संयमनो उच्चार कर, नहीं कां दुर्गतिमां पडीश." इत्यादिक वचन रूप अंकुशे करी हस्तिनी परे रथनेमीने स्थिर कीधो. पछी रथनेमी पण पापनी आलोचना लइ, खमावी, संयमने विषे स्थिर थइ, केवलज्ञान पामी अनुक्रमे मोक्ष पोहोतो. श्रीनेमीश्वर भगवानथी राजीमती आठ वर्ष ऊमरमां न्हानां हतां, एवुं कोइक आचार्य कहे छे. राजीमतीजी चारसे वर्ष पर्यंत घरवासे रह्यां. तथा एक वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणे रह्यां अने पांचसो वर्ष केवल पर्याय पाली सर्व मली (९०१) वर्षनुं आयुष्य भोगवीने श्रीनेमिनाथजीनी पहेलां मोक्ष गया. कवि उत्प्रेक्षा करे छे के ' राजीमतीजीए एवुं जाण्युं के शिवनारी जे मोक्षरूपिणी स्त्री छे तेने म्हाराथी अधिक रूपवती जाणीने तेना ऊपर नेमीश्वरजी मोहित थया छे तो हुं पहेलाथी ज ते स्त्रीने देखी

तो लेउं. एटले मुक्तिरूप स्त्रीए राजीमतीना भर्त्तारनुं मन वश कीधुं, माटे ते पोतानी शोकने जोवा सारुं राजीमतीजी पण क्षपकश्रेणी साधी, कर्म खपावीं पोताना भर्त्तारनी पहेलां ज मुक्तिमां गया.'

श्रीअरिष्टनेमिप्रभुनो परिवार अने निर्वाण—

श्रीअरिष्टनेमि भगवानने अढार गच्छ अने अढार गणधर थया, अने वरदत्तप्रमुख अढार हजार साधुओनी संपदा थइ, गुणरूप मणिरत्नना भंडार जेवी यक्षणीं प्रमुख चालीश हजार साध्वीओनी संपदा थइ, नंदीषेण प्रमुख एक लाख ओगणोतेर हजार श्रमणोपासक व्रतना धरनार श्रावकोनी संपदा थइ, महासुव्रता प्रमुख त्रण लाख ने छत्रीश हजार श्राविकाओनी संपदा थइ, जिन नही पण जिन सरखा एवा सर्व अक्षरानुयोग (चौद पूर्व) धरनार चारसौ साधुओनी संपदा थइ, पन्नरशे अवधिज्ञानी साधुओनी संपदा थइ, तथा पन्नरशे वैक्रिय लब्धिना धरनार साधुओनी संपदा थइ, पन्नरशे केवलज्ञानी केवलीनी संपदा थइ, एक हजार साधु विपुलमतीना धणी मनःपर्यव ज्ञानीनी संपदा थइ, आठशे वादी साधुओनी संपदा थइ, सोलसौ साधु पांच अनुत्तर विमाने पोहोता, पंदरशे साधु भगवंत थका सिद्धि पाम्या अने त्रण हजार साध्वीओ भगवंत थका मोक्षे गइ—सिद्धि पामी. एवी रीते श्रीनेमीश्वर भगवाननो परिवार जाणवो. अरिहंत श्रीअरिष्टनेमिने बे प्रकारनी अंतगड भूमि थइ—तेमां आठ पाट पर्यंत मोक्षमार्ग चाल्यो ते युगांतकृतभूमि जाणवी तथा भगवानने केवलज्ञान उपन्या पछी बे वर्षे कोइक साधु सिद्ध थयो ते पर्यायान्त अंतकृत भूमि जाणवी. ते काल ते समयने विषे श्रीअरिष्टनेमि भगवान त्रणशे वर्ष गृहस्थावासे कुमारावस्थामां रह्या, चोपन दिवस छद्मस्थ पर्यायमां दिक्षा पाली अने चोपन दिवस ऊणा सातशे वर्ष केवल पर्याय पाल्युं एटले सातसौ वर्ष साधुपणे रह्या. एम सर्व मली एक हजार वर्षनुं पूर्ण आयु भोगवीने शेष

रहेलां चार अघाती कर्म खपावीने आ अवसर्पिणीनो दुष्पम सुषमा नामे चोथो आरो घणो वीत्यो अने थोडो रह्यो ते वखतमां उन्हालानो चोथो मास, आठमो पक्ष, आषाढ शुदि अष्टमीना दिवसे गिरनार पर्वत ऊपरे मध्यरात्रिमां, चित्रा नक्षत्रसाथे चंद्रमानो योग आवे थके, पांचशे ने छत्रीश साधुओनी साथे, एक मासनुं चउविहार (पाणी रहित) अनशन कीधे छते, पद्मासने बेठा कालधर्म पाम्या. यावत् सर्व दुःख थकी रहित थया. श्रीपार्श्वनाथ भगवानथी त्र्याशी हजार सातशे ने पचाश वर्ष पूर्वे श्रीनेमिनाथ भगवान थया एटले श्रीअरिष्टनेमि भगवान मोक्ष पोहोता पछी चोराशी हजार नवशे एंसी वर्षे पुस्तक लखाणुं–वांचना थइ इति श्रीनेमिनाथ चरित्रम्.

एकवीशमां तीर्थंकरथी श्रीऋषभदेव सुधीना आंतरा—

(२१) एकवीशमां श्रीनमिनाथ भगवान निरवाण थया पछी पांच लाख वर्ष गये थके बावीशमां श्रीनेमिनाथजी निर्वाण थया अने नेमिनाथजीथी चोराशी हजार, नवसो एंसी (८४९८०) वर्षे पुस्तक लखाणुं, (२०) वीशमां श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया पछी छ लाख वर्षे एकवीशमां श्रीनमिनाथजी मोक्ष गया ते पछी पांच लाख, चोरासी हजार नवसो एंसी (५८४९८०) वर्षे पुस्तक लखाणुं, (१९) ओगणीशमां श्रीमल्लिनाथ मोक्षे गया पछी चोपन लाख वर्षे वीशमां श्रीमुनिसुव्रत स्वामी मोक्ष गया ते पछी ग्यारेलाख, चोरासी हजार, नवसो, एंसी (११८४९८०) वर्षे पुस्तक लखायुं, (१८) अढारमां श्रीअरनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार कोडी वर्षे ओगणीशमां श्रीमल्लिनाथ स्वामी मोक्ष गया, ते पछी पांसठ लाख, चौरासी हजार, नवसो, एंसी (६५८४९८०) वर्षे पुस्तक लखाणुं, (१७) सत्तरमां श्रीकुंथुनाथ मोक्ष गया पछी एक हजार कोडी वर्षे न्यून एक पल्योपमनो चोथो भाग एटला वर्षे अढारमां श्रीअरनाथ मोक्ष गया, ते पछी एक हजार क्रोड ऊपर पांसठ

लाख चोराशी हजार नवशो एंसी वर्षे पुस्तक लखाणुं, (१६) सोलमां श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया पछी अर्द्धा पल्योपमे श्रीकुंथुनाथ मोक्ष गया, ते पछी एक पल्योपमना चोथा भागनी ऊपर पांसठ लाख चोरासी हजार नवसे एंसी वर्षे पुस्तक लखायुं, (१५) पन्नरमां श्रीधर्मनाथ मोक्ष गया पछी पोणा पल्योपमे ओछा त्रण सागरोपम गये श्रीशांतिनाथजी मोक्ष गया, ते पछी पोणा पल्योपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखायुं, (१४) चौदमां श्रीअनंतनाथजी मोक्ष गया पछी चार सागरोपम गये थके श्रीधर्मनाथजी मोक्ष गया ते पछी त्रण सागरोपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं, (१३) तेरमां श्रीविमलनाथजी मोक्ष गया पछी नव सागरोपम गये थके श्रीअनंतनाथजी मोक्ष गया, ते पछी सात सागरोपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखाणुं, (१२) बारमां श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया पछी त्रीश सागरोपम गये थके श्रीविमलनाथ मोक्ष गया, ते पछी सोल सागरोपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखायुं, (११) अगीयारमां श्रीश्रेयांसनाथनो निरवाण थया पछी चोपन सागरोपम गये थके श्रीवासुपूज्य स्वामी मोक्ष गया, ते पछी छेतालीश सागरोपम ऊपर ६५८४९८० वर्षे पुस्तक लखायुं, (१०) दशमां श्रीशीतलनाथजी मोक्ष गया पछी एकसो सागरोपम तथा छासठ लाख छव्वीस हजार वर्षे ऊपर एटला वर्षे एक क्रोड सागरोपममांथी ओछा एटले एक क्रोड सागरोपममांथी एकसो सागरोपम ओछा करीए तथा वली छासठ लाख ने छव्वीश हजार वर्ष बीजा पण ओछा करीए, बाकी जेटला वर्ष रहे तेटले वर्षे श्रीश्रेयांसनाथजी निरवाण पाम्या अने ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ महिने न्यून एवा छासठ लाख छवीश हजार वर्षे अधिक एकसो सागरोपम गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, त्यार पछी नवशे एंसी वर्षे पुस्तक लखायुं, (९) नवमां श्रीसुविधिनाथ मोक्ष गया

पछी नव कोडी सागरोपम गया थकां श्रीशीतलनाथ मोक्ष गया. त्यार पछी बेतालीश हजार ने त्रण वर्ष तथा ऊपर साडा आठ महिना एटले वर्षे न्यून एक कोडी सागरोपम गये थके श्रीवीरनो निरवाण थयो. त्यार पछी नवसो एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो, (८) आठमां श्रीचंद्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया पछी नेवुं कोडी सागरोपम गये थके श्रीसुविधिनाथजी मोक्ष पाम्या, ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ महिने न्यून दश कोडी सागरोपम गया पछी श्रीवीर निरवाण पाम्या, ते पछी नवसे एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो, सातमां श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया पछी नवसो क्रोड सागरोपम गये थके श्रीचंद्रप्रभ स्वामी मोक्ष गया, ते पछी बेतालीश हजार ऊपर त्रण वर्ष साडा आठ महीना एटला वर्षे न्यून एकसो क्रोड सागरोपमे श्रीवीरप्रभु निरवाण पाम्या. ते पछी नवसे एंशी वर्षे पुस्तक लखायुं. (६) छट्ठा श्रीपद्मप्रभजी मोक्ष गया पछी नव हजार क्रोड सागरोपमे श्रीसुपार्श्वनाथ मोक्ष गया, ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष ऊपर साडा आठ महीना एटला वर्षे ऊणा एक हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु मोक्ष गया, ते पछी नवसे एंशी वर्षे पुस्तकारूढ थयो, (५) पांचमां श्रीसुमतिनाथजी निरवाण पाम्या पछी नेवुं हजार क्रोड सागरोपम गये थके श्रीपद्मप्रभ स्वामी निरवाण पाम्या, ते पछी बेतालीश हजार त्रण वर्ष साडा आठ महीना एटला वर्षे ऊणा दस हजार क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया, ते पछी नवसे एंसी वर्षे पुस्तक लखायुं (४) चोथा श्रीअभिनंदनजिन मोक्ष गया पछी नव लाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीसुमतिजिननो निरवाण थयो, ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ महीना ऊंपर एटला वर्षे न्यून एक लाख क्रोड सागरोपम काल गये थके श्रीमहावीरजीनुं निर्वाण थयुं, ते पछी नवसे एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो, (३) त्रीजा श्रीसंभ-

वनाथजी निर्वाण पाम्या पछी दश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअभिनंदनजिननो निर्वाण थयो, ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष ऊपर साडा आठ महिना एटला वर्षे न्यून दश लाख क्रोड सागरोपम गये श्रीवीर निरवाण पाम्या, ते पछी नवसे एंसी वर्षे पुस्तक लखायुं, (२) बीजा श्रीअजितनाथ जिन मोक्ष गया पछी त्रीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीसंभवनाथजी मोक्ष गया, ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष ने साडा आठ महीने न्यून वीश लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरजिन मोक्ष गया, ते पछी नवसौ एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो. (१) पहेला श्रीऋषभदेव भगवान मोक्ष पाम्या पछी पचास लाख कोडी सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ भगवान निरवाण पाम्या, ते पछी बेंतालीश हजार त्रण वर्ष ऊपर साडा आठ महीना एटला वर्षे न्यून पचास लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीवीरप्रभु निर्वाण पाम्या, ते पछी नवसौ एंसी वर्षे पुस्तकारूढ थयो. ए श्रीमहावीर प्रभुना निरवाणथी लइने पश्चानुपूर्व्वीए आंतरा कह्या. हवे चोथो, पांचमो अने छट्ठो ए त्रणे आरानुं प्रमाण एक कोडाकोडी सागरोपमनुं छे. तेमां बेंतालीश हजार पंचोतेर वर्षनी ऊपर साडा आठ महीना एटला वर्ष ऊणां करीए त्यारे चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीरजिननो जन्म थयो. तेमां बहोंत्तेर वर्ष श्रीमहावीर स्वामीनुं आयुष्य हतुं अने चोथा आराना त्रण वर्ष ने साडा आठ महीना शेष रह्या त्यारे श्रीवीरप्रभु निरवाण पाम्या तथा एकवीश हजार वर्षनुं कालमान पांचमा आरानुं जाणवुं अने एकवीश हजार वर्षनुं कालमान छट्ठा आरानुं जाणवुं. ए सर्वनो सरवालो करीए त्यारे एक कोडाकोडी सागरोपम काल पूर्ण थाय.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते
श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे सप्तमं व्याख्यानं समाप्तम् ।

अथाष्टमो व्याख्यानः प्रारंभः ।

श्रीआदिनाथ भगवाननुं चरित्र कहे छे—

ते काल ते समयने विषे श्रीऋषभनाथ अरिहंत अयोध्या नगरीमां थया तेना लीधेज ए भगवान् कौशलिक कहेवाय छे. तेमना चार कल्याणक तो उत्तराषाढा नक्षत्रमां थया अने पांचमो कल्याणक अभिजिन्नक्षत्रमां थयो. उत्तराषाढा नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने गर्भमां आवी उपन्या, उत्तराषाढामां जन्म थयो, ऊत्तराषाढामां दीक्षा लीधी अने उत्तराषाढामां केवलज्ञान उपन्युं, तेमज अभिजिन्नक्षत्रमां भगवान मोक्षे गया.

भगवान श्रीऋषभदेवजीना तेर भव—

धण मिहुण सुर महब्बल, ललियंगो वयरजंघ मिहुणे य ।
सोहम्म विज्ज अच्चु, चक्की सव्वट्ठ उसभे य ॥ १ ॥

पहेले भवे आ जंबूद्वीपना विषे महाविदेह क्षेत्रमां सुप्रतिष्ठित नामा नगरे प्रियंकर नामा राजा राज्य करे छे. ते नगरमां म्होटो धनाढ्य 'धन्ना' नामे एक सार्थवाह रहे छे. एकदा ते धन्नो सार्थवाह वसंतपुर नगरे जवाने तैयार थयो त्यारे नगरमां पडहो वजडाव्यो के 'जो कोइने वसंतपुर नगरे जावुं होय तो तेणे म्हारी साथे आववुं. तेनो हुं निरवाह करीश.' एवो पडह सांभली घणा लोक तेनी साथे जवाने एकठां थयां, म्होटो सथवारो थयो. हवे तेज नगरमां श्रीधर्मघोषसूरि पांचसो साधुओ साथे रहेला हता. तेमनी पण यात्राने अर्थे वसंतपुर जवानी इच्छा थइ. तेथी धन्ना सार्थवाहनी पासे आवीने धर्मलाभ आपी बोल्या के 'सार्थवाह ! जो तमारी आज्ञा होय तो अमे पण वसंतपुर जवाने अर्थे साथे

आवीए.' त्यारे धन्नो बोल्यो के-स्वामिन्! सुखेथी म्हारी साथे पधारो. त्यारे आचार्य पण तेनी साथे चाल्या. मार्गे जतां एक दिवसे शेठने आंबानुं भेटणुं आव्युं ते साधुने आपवा मांड्युं, पण साधुओए सचित्त जाणी लीधो नहीं. हवे सथवारो धीमे धीमे थोडा थोडा कोश दररोज चाल्यो जाय छे तेथी मार्गमांज चोमासुं आवी गयुं, वर्षाद घणो वर्ष्यो, नदीओ जलथी पूर वहेवा लागी तेना लीधे पंथिजनोने चालवानो मार्ग रोकाइ गयो. हरितकाय प्रमुख जीवोनी उत्पत्ति थइ, कादव पण घणो थयो तेथी लोक चाली शके नहीं. त्यारे सथवारो एकठो थइ तंबु डेरा ताणीने जंगलमांज रह्यो अने धर्मघोष आचार्य पण एक पर्वतनी गुफामां निरवद्य स्थानक देखीने पांचसौ साधु सहित मासखमणनी तपस्या करी चोमासुं रह्या थका धर्मध्यान करवामां प्रवृत्त थया. एम करतां सथवाराना लोको पासे संबल खूटी गयुं, माटे सर्व लोक कंद-मूल फलादिकनो आहार करीने दिवस निर्गमन करवा लाग्या. तेथी साधुओने पण पारणे शुद्ध आहार मले नहीं. एम करतां केटलाक दिवस पछी त्यां एक भाट आव्यो. ते शेठने खुशी करवा माटे सुभाषित वचनथी बोल्यो के 'हे शेठ! म्होटा पुरुष जे वात अंगीकार करे ते पार पाडे पण अधवच मूकी दिये नहीं.' ए वात सांभलीने शेठे धर्मघोषसूरिने याद कर्या. अने मनमां विचारवा लाग्या के अरे! म्हारा कहेवा उपरथी साधुओ म्हारी साथे आव्या अने म्हें तो एक दिवस पण तेमनी सार संभाल लीधेल नथी. माटे तेओनो हुं विश्वासघाती थयो. तो हवे प्रभाते एमनी पासे जइने खमतखामणा करुं, एम चिंतवी प्रभाते आचार्य पासे जइ, वंदना करीने लज्जाथी पोतानुं मुख नीचुं करी बेठो अने विनंती करवा लाग्यो के-स्वामिन्! म्हारो अपराध तमे खमजो. म्हें आपनी कोइ वखते पण निगाह करी नथी. महाराज! लोकनुं सर्व संबल क्षीण थयुं छे. आप मुजने कांइ आज्ञा करो,

हुकुम फरमावो. त्यारे आचार्य बोल्या-सार्थेश ! अमारा माटे तमे कांइ पण चिंता करशो नहीं, अमारे तो सुखे धर्मध्यान थाय छे, तमारा साथना योगे अमे घणी अटवी उल्लंघन करी तेमां तमे अमारी म्होटी वात्सल्यता करी. एवुं सांभली धनो शेठ खुशी थयो अने सर्व साधुओने आहारनी निमंत्रणा करी सथवारामां लइ आव्यो. पछी पोतानी पासे शुद्ध आहारमां घृतना कुंपा हता ते साधुओने घणाज उलटथी व्होरावतां थका अत्यंत भावनी वृद्धि थवा मांडी. तेथी समकित पाम्यो[1]. पछी वर्षाकाल वीत्या बाद वसंतपुरे आव्या, धर्मघोष आचार्य पण सार्थवाहने धर्मलाभ देइने तीर्थयात्रा करवा गया, धन्नो पण घणा दिवस समकित पाली अंते शुभ ध्याने मरण पाम्यो, बीजा भवमां उत्तरकुरुक्षेत्रे जइ युगलीयामां उपन्यो. त्यां त्रण पल्योपमनुं आयुष्य भोगवी मरण पाम्यो, त्रीजा भवे सौधर्म देवलोके देवता थयो. चोथा भवे देवलोकथी चवीने पश्चिम महाविदेहनी गंधिलावति विजयमां शीतबल राजानी चंद्रकांता राणीने महाबल नामा पुत्र थयो, परंतु महा विषयलोलुपी भोगपुरंदर थयो. विनयवती प्रमुख घणी राणीयोनी साथे विषयसुख भोगववामां मग्न रहे छे, धर्मनी वात न जाणे, सर्वदा गीत, गान, तान, मान अने नाटकने प्रियकारी जाणे छे. एम महामोहनी निद्रामां काल गमावतां एक दिवस नाटकादिक थाय छे ते देखे छे, गीतमां एक चित्त लागी रह्युं छे, ते वखते सुबुद्धि नामा प्रधाने राजाने प्रतिबोधवा सारुं एक गाथा कही के-" सव्वं विलंबियं गीअं, सव्वं नट्टं विडंबणा । सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहा-

---

1 केटलाएक आचार्योनुं लखवुं छे के-घीना भरेला पांचसो कुंपा वहोराव्या पछी धन्नाए विचार्युं के 'हवे तो घणो वहोराव्युं ' एवी रीते धन्नाना परिणाम घटता देखी साधुओए कह्युं के-बस, वधारे खप नथी. परन्तु सेठनो परिणाम लगार वार घट्यो न होत तो ते केवलज्ञान पामत, पण तेवा अभिवर्द्धित भाव न रहेवाथी केवल समकितज पाम्यो !

वहा ॥ १ ॥ "–ए सर्व गीत छे ते विलापात करवा जेवा छे, सर्व नाटक छे ते विटंबना सरखां छे, सर्व आभरण छे ते भार समान छे, अने ए सर्व कामभोग छे ते दुःखदायी छे. ए गाथा सांभली राजा बोल्यो के प्रधान ! तमे विना प्रस्तावे आ वैराग्य उत्पन्न करनारी गाथा केम कही ? "यत्र सरागस्तत्र विरागः कथं ?, यत्र विरागस्तत्र सरागः कथं ?, यत्र श्रीरर्थः तत्राऽश्रीरर्थः कथं ?" माटे मंत्री ! विना प्रस्तावे आ वात शा कामनी, त्यारे प्रधान बोल्योः–में आ वात प्रस्तावेज कही छे, ते आवी रीते के आज मुजने केवली मल्या. तेमणे कह्युं के तमारा राजानुं आयुष्य एक मासनुं शेष रह्युं छे, माटे आपने चेतवणी आपुं छुं. एवी वात सांभली राजा चमक्यो, मरण समान कोइ भय नथी. पछी मंत्रिने कहेवा लाग्यो के हुं तो मोहनिद्रामां सूतो हतो, तें सूताने जगाड्यो तो खरो, परंतु आग लागी ने कूवो केम खणाय ? तेम हवे एक मासनुं आयु रह्युं, तेमां शुं धर्मसाधन थइ शके? त्यारे प्रधाने कह्युं–तमे विषाद म करो, एक दिवसनुं चारित्र पण मोक्षने देवावाळुं थाय छे अने जो मोक्षप्राप्ति न थाय तो पण देवताना सुखने तो आपे छे. एवुं सांभली पुत्रने राज्य आपी, सात क्षेत्रे धन वावरी, अट्ठाइ महोत्सव करी, सुगुरु पासे चारित्र लई, चोत्रीश दिवस चारित्र पाली, अंते अनशन करी काल कर्यो, पांचमा भवे ईशान देवलोके प्रभव नामा विमानना विषे ललितांग नामा सामानिक देवता थयो. त्यां स्वयंप्रभा नामा देवी घणीज वल्लभ छे तेनी साथे विषयसुख भोगवतो विचरे छे, पछी एक दिवसे स्वयंप्रभा नामा देवी चवी, तेना विरहथी मूर्च्छा पाम्यो, घणो दुःखी थइ शोक करतो थको रुदन करवा लाग्यो, त्यारे पूर्वभवनो सुबुद्धि मंत्री पण त्यांज देवता थयो छे. तेणे प्रतिबोध्यो तथापि तेनो शोक मट्यो नहीं. त्यारे मंत्री देवताए कह्युं तमारी स्त्रीने हुं जाणुं छुं

तेने मेळवी आपवानो हुं उपाय बतावुं. तमे शोक करशो नहीं, ते स्त्रीनो संबंध सांभळो–धातकी खंडना महाविदेह क्षेत्रे नंद नामा ग्रामना विषे नागिल नामे एक गृहस्थ महा दरिद्री छे, तेनी नागश्री स्त्रीए पूर्वे छ पुत्री तो जणेली छे. कह्युं छे के 'दारिद्रीने छोडीयो घणी थाय,' पछी तेणे विचार्युं के–हवे जो म्हारी स्त्रीने सातमी पुत्री आवशे तो हुं देश त्यागीने चाल्यो जइश. दैवयोगे स्वयंप्रभा देवीनो जीव पण तेना घेर पुत्रीपणे आवी अवतर्यो. ए सातमी पुत्री थइ. तेथी शेठ अने शेठाणी बेहु दुःख करवा लाग्यां अने नागिलतो दुःखे पीडातो परदेश गयो. पछवाडे कुटुंबीओए ते पुत्रीनुं नाम पाड्युं नहीं. लोक तेने 'अनामिका' कही बोलावे, अभागणी माटे कोइ परणे पण नहीं तेथी काष्ठना भारा वेचीने पेट भरे तथा लोकोना घेर काम करीने पेट भराइ करे. एक दिवसे कोइ धनवंतना बालकने मोदक खातां देखी अनामिकाए पण पोतानी माता पासेथी मोदक मांग्या, त्यारे माताए कह्युं ताहारो पिता मोदक लेवा गयो छे ते आवशे त्यारे आपीश, त्यांसुधी तुं अंतरतिलक नामा पर्वत थकी काष्ठनो भारो लाव, पछी रुदन करती भारो लेवा गइ, त्यां युगंधरमुनिने केवलज्ञान उपन्युं छे, तेनो इन्द्र महाराज महोत्सव करे छे, अनामिका पण नमस्कार करी त्यां बेठी, धर्म देशना सांभळी केवलीने पूछ्युं के हुं आवी दुःखनी अवस्था केम पामी? तथा म्हारे भर्तार प्रमुखनुं सुख कांइ पण थयुं नहीं तेनुं कारण शुं? प्रभुए कह्युं–तें पूर्व भवमां धर्म आराध्यो नथी माटे धर्म विना सुख होय नहीं. हवे जो सुखनी इच्छा होय तो धर्म कर. धर्मना प्रभावे देवना सुख पामीए. पछी अनामिकाए श्रावकनां व्रत आदर्यां, उपाश्रयमां बेठी श्रावकनो धर्म करे तेथी लोकोए 'धर्मिणी' एवुं नाम दीधुं. साधर्मि श्रावको तेने पारणा प्रमुखनी सहाय आपे छे. एम धर्मना प्रभावथी ते सुखी थइ छे. पछी छेवटे अनशन करी सूती छे, ते समये ललिता-

थाने स्वयंबुद्ध मंत्रिए कह्युं के तमे त्यां जइ तमारुं रूप एने देखाडो के जेथी ए नियाणो करे. ते सांभली ललितांगे आवी पोतानुं अत्यंत उत्कृष्ट रूप देखाडयुं. ते रूप देखी अनामिकाए व्यामोह पामी नियाणुं कर्युं के म्हारे तपस्यानुं फल होय तो एनी स्त्री हुं थाउं, पछी अनामिका मरण पामी स्वयंप्रभा देवी थइ, तेनी साथे ललितांग देव सुख भोगववा लाग्यो. त्यांथी चवीने छट्ठा भवे जंबूद्वीपे पूर्व महाविदेहनी पुष्कलावती विजयमां लोहार्गल नगरे सुवर्णजंघ राजानी लक्ष्मीवती राणीनो वज्रजंघ नामा पुत्र थयो अने स्वयंप्रभा देवी पण तेहिज विजयनी पुंडरीक नगरीमां वज्रसेन नामा चक्रवर्त्तिनी श्रीमती नामा पुत्री थइ, ते यौवन पामी थकी एक दिवसे चंद्रोदय सभामां बेठी छे ते समये कोइ साधुने केवलज्ञान उपन्युं छे तेने देवता वांदवा आवे छे, ते देवोने देखी एने पण जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं त्यारे विचार्युं के म्हारो पूर्वभवनो भर्तार ललितांग नामा देवतानो जीव क्यां उपन्यो हशे ? ते मले, अने हुं तेने परणुं तो सारुं थाय, एम विचारी मौनपणे रही, मातापिताए अनेक उपचार कर्या पण बोले नहीं, पछी धाई माताए एकांतमां वात पूछी त्यारे कुमरीए तेने एक कागल ऊपर हाथपेन्टरनी ललितांगदेवनी तस्वीर आलेखी आपी, धाइए ते चित्रपट राजाने दीधो. पछी एना पिता वज्रसेन चक्रवर्त्तीना वर्ष महोत्सवे अनेक राजपुत्रो आव्या अने धाई पण ते दिवसे चित्रपट लइ राजमार्गे बेठी, ते राजकुमरो पण जाति वखते चित्रपटने देखतां जाय छे, त्यारे वज्रजंघ ते चित्रपटने देखी जातिस्मरण पाम्यो अने कहेवा लाग्यो के आ चित्र तो म्हारी पूर्वभवनी स्त्री स्वयंप्रभा नामा देवीए चितरेलुं छे, ए वात धाइ माताए श्रीमतीने कही. पछी श्रीमती ते वात सांभलीने वज्रजंघ कुंवरने परणी.

---

१ केटलीक प्रतोमां आम लख्युं छे के ते पुत्री तीर्थंकरनी सभामां देवोने देखी जातिस्मरण पामी तेणे पूर्वभव जाण्यो, त्यां अनामिका अने स्वयंप्रभानो भव देखी

एकदा सुवर्णजंघराजाए वज्रजंघ कुमरने राज्य आपी पोते *दीक्षा लीधी, पछी वज्रजंघे पण श्रीमती राणी सहित गोखमां बेठा थका संध्या फूली अने विलय थइ देखीने विचार्यु के एवी ज रीते संसारमां सर्व वस्तुओ विलय थवानी छे. माटे प्रभाते पुत्रने राज्य आपी दीक्षा लेशुं; ते समये पुत्रे पण राज्यना लोभथी झेरनो धूमाडो करी मातापिताने (श्रीमती समेत राजाने) विषप्रयोगे मार्यो. त्यांथी मरण पामी सातमा भवे राजा राणी बेहु उत्तरकुरुक्षेत्रना विषे युगलिक थया. आठमा भवे सौधर्म देवलोके मित्रपणे देवता थया. त्यांथी चवीने वज्रजंघनो जीव नवमा भवे जंबूद्वीपे महाविदेह क्षेत्रे क्षितिप्रतिष्ठितनगरे सुविधिनामा वैद्यनो जीवानंद नामा पुत्र थयो. ते दिवसे ते नगरीमां बीजा पण चार जीव. पुत्रपणे अवतर्या—एक प्रसन्नचंद्र राजानो पुत्र महीधर, बीजो सुनासीर नामा प्रधाननो पुत्र सुबुद्धि, त्रीजो धनाशेठनो पुत्र गुणाकर, चोथो सागर नामा शेठनो पुत्र पूर्णभद्र जन्म्यो, श्रीमतीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने ईश्वरदत्तनो पुत्र केशव नामा थयो, ए पांचे जीवानंदना परम मित्र छे. ए छए मित्र साथे मली जमे, रमे, सुखे काल निर्गमन करे छे. एक दिवसे जीवानंदना घेर ते छए जणा बेठा छे एटलामां एक कोढीओ साधु गोचरी वहोरवा आव्यो, तेने देखीने ते पांच मित्र एकठा थइने वैद्य पुत्रने कहेवा लाग्या के ' अरे ! वैद्य तो मतलबीया थाय छे. जो पुण्यना अर्थे वैदुं करता हो तो आ साधुनो कोढ रोग मटावी आपो. त्यारे तो अमे पण जाणीए के तमे धर्मात्मा

विचार्यु के म्हारो पूर्वभवनो भर्तार ललितांग केवी रीते मले, पछी पिताए पूछयुं त्यारे पोतानी पूर्वभव संबंधि वात कही. चक्रवर्तीए केवलीने पूछयुं के एनो पूर्वभवनो भर्तार क्यां उपन्यो छे ? केवलीए वज्रजंघनो नाम कह्युं. पछी चक्रवर्तिए वज्रजंघने परणावी. तथा एक प्रतिमां एम पण लखेल छे के—चित्रपट बनावीने कह्युं के 'एना स्वरूपने जे कहे तेने हुं परणुं' पछी बीजा राजाओए अनेक प्रकारनी वातो बनावीने कही पण ललितांगनी वात मली नहीं; परंतु ज्यारे वज्रजंघे कह्युं के आ म्हारी स्वयंप्रभा देवीनुं रूप छे त्यारे चक्रवर्तिए तेने श्रीमती परणावी.

छो.' ते सांभली जीवानंद वैद्य बोल्यो के–मित्रो! तमे म्हारी वात सांभलो आ साधुनो रोग मटाडवा माटे लक्षपाक तेल जोइए. ते तो म्हारा घरमां तैयार छे. पण बीजो रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन जोइये ते म्हारी पासे नथी, माटे जो ए बे चीजो क्यांथी लावी आपो तो साधुनी वैयावच्च करीए. ए वात सांभली ते छए जणे मली अढी लाख सोनैया भेगा कीधा. पछी ते छए मित्र मली नगरशेठना घेर जइ सोनैया आपीने बोल्या के एक रत्नकंबल अने बीजो गोशीर्ष चंदन ए बे चीज अमने आपो. शेठे पूछ्युं के तमे एने शुं करशो? तेणे कह्युं के अमे साधुनी वैयावच्च करीशुं. ते सांभली शेठे विचार्युं के ए बालको छे तो पण जुओ! केवा धर्म बुद्धिवाला छे अने हुं आटलो म्होटो वृद्ध थयो छुं तो पण हजी लगण कांइ धर्ममां समजतो नथी. एम चिंतवी ते शेठे सोनैया लीधा विना रत्नकंबल तथा गोशीर्ष चंदन तेमने आपीने पोते दीक्षा लइ, साधुपणुं पडिवजी अने अंतगड केवली थइने मोक्ष गयो. हवे ते छए जणा औषध लइ वनमां गया. मुनि काउसग्गध्यानमां ऊभा हता तेने "अनुजानीध्वं" एवुं कही चामडा ऊपर मुनिने सुवाडीने तेना शरीरे लक्षपाक तेल मसल्युं. पछी चंदननो लेप करी रत्नकांबलमां लपेटी दीधा. पहेली वारमां तो चामडीमां जे कांइ कीडा हता ते सर्व कांबलमां आवी लाग्या. तेने गायना मृत कलेवरमां मूक्या, फरी बीजीवार तेल मसल्युं तेनी ऊपर चंदन लगावी रत्नकांबलथी वींट्या त्यारे मांस मांहेला कीडा निकली पड्या. तेमज त्रीजीवार पण पूर्वोक्त रीते कर्युं ते वखते हाड मींजीना कीडा निकली पड्या. पछी रोहिणी औषध साधुना शरीरे लगाडी तेनुं शरीर कंचन सरखुं करी मूक्युं. पछी ते छए जणे रत्नकंबलनुं द्रव्य सात क्षेत्रमां खरचीने दीक्षा लीधी. निरतिचार चारित्र पालीने अने काल करीने दशमा भवे ते छए जणा बारमा देवलोके देवपणे जइ उपन्या. छए देव मित्र थया.

अगीआरमा भवे बारमां देवलोकथी चवीने जंबूद्वीपना महाविदेह क्षेत्रनी पुष्कलावती विजयमां पुंडरीकिणी नगरीए वज्रसेन नामे राजा तेनी धारणी नामे राणीनी कूखमां ते छ जणमांथी पांच जण अनुक्रमे पुत्रपणे आवी उपन्या. तेमां जीवानंद वैद्य जे धन्ना सार्थवाहनो जीव छे, ते चौद स्वप्न सूचित मातानी कूंखमां उपन्यो, जन्म्या पछी माता पिताए तेनुं 'वज्रनाभ' नाम आप्युं. ए जीव ऋषभदेवजी थवावाला छे. हमणां चक्रवर्ति पणे उपन्यो छे. बीजो राजानो पुत्र महीधरनो जीव 'बाहु' नामे थयो. त्रीजो मंत्रीनो पुत्र 'सुबाहु' नामे थयो, चोथो शेठनो पुत्र गुणाकरनो जीव, 'पीठ' नामे थयो अने पांचमो सार्थवाहनो पुत्र पूर्णभद्रनो जीव 'महापीठ' नामे थयो. ए पांच तो भाइपणे आवी उपन्या अने छट्ठो केशवनो जीव जे पूर्वे अनामिकानो जीव छे ते वली बीजा एक राजाना घेर पुत्रपणे उपन्यो. ते वज्रनाभ नामा चक्रवर्त्तिने घणोज वल्लभ छे तेथी ए एनो सारथी थशे. ए रीते छए मित्र सुखे रहे छे. हवे वज्रसेन राजा तीर्थंकर थवाना छे माटे लोकांतिक देवोना वचनथी उदास थइ सांवत्सरिकदान आपी, अने वज्रनाभ नामा पुत्रने राज्य देइ, दीक्षा लइ, घनघातीकर्म क्षय करी केवलज्ञान पाम्या-तीर्थंकर थया. ते विचरता पुंडरीकिणी नगरीमां आव्या. वनपालके वज्रनाभने वधामणी आपी. तेज अवसरमां चक्ररत्न प्रगटवानी पण वधामणी आवी, त्यारे विचार्युं के पहेलां केनी पूजा करुं ? एम विचारतां निरधार कर्यो के, तीर्थंकरने पूज्या तो सर्वने पूज्या. ए त्रण लोकना नाथथी वली बीजो कोण वधारे गणाय. एम चिंतवी केवलज्ञाननो महोत्सव कर्यो. भगवानने वांदवा आव्यो. पछी चक्रने पूज्यो. अनुक्रमे छ खंड साधी, सुखे राज्य भोगवे छे. एक दिवसे वली वज्रसेन तीर्थंकर समोसर्या तेमने वज्रनाभ प्रमुख वांदवा गया, त्यां प्रभुनी देशना सांभली छए जणाए दीक्षा लीधी. तेमां

पहेलो वज्रनाभ चक्रवर्त्ति साधु थयो ते चौद पूर्व भण्यो. अने बीजा पांचे साधु अगीआर अंग भण्या. तेमां बाहुनामा जे साधु छे ते पांचसे साधुने आहार लावी आपे, अने सुबाहु पांचसे साधुओनी पगचंपी करे तथा पीठ अने महापीठ ए बे एकांते तप, जप, सज्झाय अने ध्यान करे, हवे बाहु अने सुबाहुनी गुरु प्रमुख सर्वे प्रशंसा करे तेथी पीठ अने महापीठ एवुं जाणे के 'जुओ ! काम सर्वने वल्लभ छे. जो साधु थया तो पण मतलबी देखाय छे. केमके अमे सज्झाय ध्यान करीए छिए तो अमोने कोइ प्रशंसता नथी अने बाहु, सुबाहु एमनी चाकरी करे छे तो तेमनी प्रशंसा सर्वे करे छे, माटे संसारमां सर्वे स्वार्थी छे.' पछी वज्रनाभमुनिए वीश थानक तप करीने तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्जन कर्युं. बाहु साधुए आहारना दानथी भोगफल उपार्ज्जन कर्युं. सुबाहु साधुए पगचंपीना प्रभावथी बाहुबल उपार्ज्जन कर्युं. तथा पीठ अने महापीठे ईर्ष्या करवाथी स्त्रीवेद बांध्यो अने छट्ठो अनामिकानो जीव ते श्रेयांस कुमर थशे. अंते अनशन करी मरण पामी, बारमा भवे छए जण सर्वार्थसिद्ध विमाने देवपणे उपन्या. पछी सर्वार्थ-सिद्ध विमानथी तेत्रीश सागरोपमनुं आयु पूर्ण करीने तेरमा भवे वज्र-नाभनो जीव ते 'श्रीऋषभदेवजी' थया तथा बाहुनो जीव 'भरत-चक्रवर्त्ती' थयो अने सुबाहुनो जीव 'बाहुबल' थयो. वली पीठ अने महापीठनो जीव 'ब्राह्मी अने सुन्दरी' थया. ए पांचे जीव अनुक्रमे मोक्ष जाशे.

प्रभुऋषभदेवनो मोरादेवीनी कुक्षिमां अवतरवुं—

ते काल ते समयना विषे श्रीऋषभदेव अरिहंत उन्हालानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, आषाढवदि चोथना दिवसे, सर्वार्थ-सिद्ध विमानथी, देवतानुं आयुष्य पूर्ण करीने चव्या. ते आ जंबूद्वी-पना भरतक्षेत्रने विषे इक्ष्वाकुभूमीमां नाभिकुलकरनी मरुदेवीनामा

भार्यानी कूंखे मध्यरात्रिना विषे देव संबंधी आहार, देव संबंधि भव, अने देव संबंधि शरीर त्यागीने गर्भमां पुत्रपणे आवी उपन्या. इक्ष्वाकु वंशमां उपन्या तेथी इक्ष्वाकु भूमि थइ. पूर्वे सर्वे युगलिया हता; नगर वगेरे कांइ हतां नहीं. युगलीयामां तो कल्पवृक्ष ज मनोरथ पूरण करता हता, तेमां सात कुलकर थया.

कुलकरोनी उत्पत्ति अनें नीति प्रचार—

आ अवसर्पिणीना त्रीजा आराना अंतमां पल्योपमनो आठमो भाग बाकी रहे छते आ दक्षिण तरफनो अर्द्धो भरत तेने दक्षिणार्द्ध भरत कहीए तेना त्रण भाग करवा, ते त्रण भाग मांहिला मध्य भागमां एटले वचला भागमां पहेला त्रण कुळकर थया, तेमां प्रथम कुलकर एवी रीते थयो के पश्चिम महाविदेहमां बे वाणीया हता ते बेहु वाणीया मांहोमांहे मित्र हता. परंतु तेमां एक कपटी हतो अने बीजो सरल मनवालो हतो, ते ज्यारे मांहोमांहे द्रव्य वांटे त्यारे कपटी वाणियो सरल स्वभाववालाने ठगीने तेनाथी छानुं धन पोते राखे अने सरल तो कपट रहितपणे व्यापार करे. एक दिवसे सरलचित्तवालानी स्त्रीने देखीने कपटी मित्रे भोग भोगववानुं कह्युं. त्यारे ते सरल वाणिआनी स्त्री पतिव्रता हती ते बोली के अरे मर्यादाहीन ! मित्रनी स्त्रीने वांछे छे ? एवुं कहीने निर्भ्रंछना करी बाहेर काहाडी मूक्यो. पछी ते कपटीए जइने सरल चित्तवालाने कह्युं के त्हारी स्त्री मने वांछती हती, परंतु म्हें इनकार कर्यो. ए वात सांभली सरल चित्तवालो वाणियो वैराग्य पामी मरीने इक्ष्वाकुभूमिमां मनुष्यरूपे युगलीयो थयो अने कपटी मित्र मरण पामीने तेज इक्ष्वाकु भूमिमां हाथीरूपे युगलीयो थयो. केमके 'जीव कपटाइथी बहुलताए तिर्यंचपणाने पामे छे' एकदा समयने विषे हाथी युगलियाए सरल युगलीयाने दीठो तेथी बेहु मांहोमांहे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या, पछी परमस्नेहथी हाथी तेमने पोताना स्कंध ऊपर बेसाडीने रात दिवस

फर्या करे, तेमने सफेद् हाथी ऊपर बेठो जोइने बीजा युगलीया बोलवा लाग्या के ए विमलवाहन छे. एवुं तेनुं नाम पाडी दीधुं. केटलोएक काल गयो, त्यारे कालनां माहात्म्यथी जेवा कल्पवृक्ष प्रथम हता तेवा रह्या नहीं त्यारे युगलीया लडवा लाग्या अने सौ कोइ पोत पोताना कल्पवृक्ष थापी बेठा, अने तेमांज पोते रहेवा लाग्या, तेमां बीजाने आववा दीए नहीं अने कदापि कोइ आवे तो तेनो विमलवाहननी पासे पोकार करवा आवे. विमलवाहन तेने ' हकार ' एवो दंड आपे तेथी युगलीया मनमां जाणे के सर्व म्हारी वात गइ एवो जाणी लडे नहीं. ए प्रथम हकार नीति थइ. ते विमलवाहनने चंद्रयशा भार्या हती, नवसो धनुष्य प्रमाण शरीर हतुं. ए प्रथम कुलकर, पछी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया, तेनी चंद्रकान्ता भार्या अने आठसो धनुष्य शरीरनुं प्रमाण, एनी पण हकार दंडनीति थइ, ए बीजो कुलकर. त्रीजो यशोमान् कुलकर थयो, तेनी सुरूपा नामे भार्या, एनुं सातसो धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं. एनी वखतमां 'मकार' दंडनीति जाणवी. चोथो अभिचंद्र नामा कुलकर थयो तेनी प्रतिरूपा नामे भार्या, एनुं साडा छसे (६५०) धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं. एना वखतमां पण ' मकार ' दंडनीति जाणवी. पांचमो प्रसेनजित् नामा कुलकर थयो, तेनी चक्षुष्मती नामे भार्या, एनुं छशे (६००) धनुष्य प्रमाण शरीर जाणवुं. एना वखतमां धिक्कार एटलुं कहेवाथी ते युगलिया एवुं समजी जाय के मने म्होटो दंड थयो, माटे ' धिकार ' दंडनीति जाणवी. छठ्ठो मरुदेव नामा कुलकर थयो, तेनी श्रीकांता नामे भार्या, एनुं साडा पांचसे (५५०) धनुष्य प्रमाण शरीरनुं मान जाणवुं. एना वखतमां पण ' धिकार ' दंडनीति जाणवी. सातमो नाभि नामे कुलकर थयो, तेनी मरुदेवी नामे भार्या, एनुं सवा पांचशे (५२५) धनुष्य प्रमाण देहमान जाणवुं. एना वखतमां पण धिक्कार एटलो कहे त्यारे ते समजे के मुजने महादंड थयो,

फरीथी जन्म पर्यंत ते अन्याय करे नहीं. एवीरीते पहेला तथा बीजा कुलकरना वारामां हकार दंडनीति हती अने त्रीजा तथा चोथा कुलकरना वारामां जघन्यथी हकार अने उत्कृष्टथी मकार दंडनीति चाली एटले घणो अन्याय करे त्यारे तेने 'म' एटलो कहे तेथी ते एवुं समजे के मने म्होटो दंड थयो, फरीथी कोइवारे ते अन्याय करे नहीं. तथा पांचमां, छट्ठा अने सातमा कुलकरनी वखतमां जघन्यथी तो हकार तथा मध्यमथी मकार अने उत्कृष्टथी धिक्कार एवी त्रण प्रकारनी दंडनीति चालु थइ.

प्रभुनो जन्म, नाम-वंशस्थापन, अने विवाह—

श्रीऋषभनाथ अरिहंत त्रण ज्ञाने सहित मरुदेवी मातानी कूखे आवी उपन्या यावत् मरुदेवीए चौद स्वप्न दीठा इत्यादिक सर्व अधिकार महावीर स्वामीनी परे कहेवुं. परंतु एटलो विशेष छे के मरुदेवीजीए पहेला स्वप्नमां वृषभ मुखमांहे पेसतो दीठो अने बीजा बावीश तीर्थंकरनी माताए पहेला स्वप्ने हाथी मुखमांहे पेसतो दीठो तथा श्रीमहावीर स्वामीनी माताए पहेला स्वप्ने सिंह मुखमां प्रवेश करतो दीठो." चौद स्वप्ननुं फल नाभीराजाए पोतेज कह्युं. परंतु स्वप्न-पाठक ते वखते हता नहीं, ते काल ते समयने विषे ऋषभनाथ अरिहंत उन्हालानो पहेलो महिनो, पहेलुं पखवाडियुं, चैत्र वदि आठमना दिवसे नव मास ऊपर साढा सात दिवस रात्री गर्भमां प्रतिपूर्ण होते छते उत्तराषाढा नक्षत्रसाथे चंद्रमानो योग आवे थके निराबाध पणे जन्म्या. (इहां जन्ममहोत्सव इंद्रादिकोए आवी कर्यो. इत्यादिक सर्व अधिकार श्रीमहावीरजीनी परे कहेवो. परंतु बंदीखानामांथी केदी छोडी मूकवा, तोल वधारवा, कुलमर्यादा करवी अने पूजादिकना अर्थे द्रव्य रखाववो. ए कृत्य युगलीयाना वखतमां गाम नगर आदिकना अभावना लीधे हता नहीं माटे ते कर्या नथी.)

ते वखते सर्व युगलीया हता तेथी प्रभुनुं नाम स्थापन करवानुं महोत्सव संबंधी व्यवहार पण चाल्यो नहीं. भगवाननी जंघामां रोमनुं वृषभ सरिखो लंच्छन दीठो तथा प्रभुनी माताए पहेला स्वप्नमां पण वृषभ दीठो तेथी 'ऋषभ' एवुं नाम दीधुं. भगवान महा स्वरूपवान थका देव तथा देवीओ साथे रमत करे, इन्द्राणी पोते खोलामां लइने रमाडे, सुनंदा भगवाननी साथेज युगलपणे जनमी हती तथा एक युगलीयाना मस्तक ऊपर तालवृक्षनुं फल पड्युं तेथी ते बालपणामां ज मरण पाम्यो. अने तेनी साथे जन्मेली युगलणी जीवती रही तेने बीजा युगलीयाओए दीठी, तेओए त्यांथी उपाडीने नाभि कुलकरने आपी, नाभिकुलकरे कह्युं के म्हारा पुत्र ऋषभदेवनी सुनंदानी साथे एने पण स्त्री करीशुं. एम कही तेनुं सुमंगला नाम दीधुं. ते पण भगवाननी साथे वधे छे, कंचनवर्ण शरीरवाला भगवान श्रीऋषभदेवजी मुणमुण बोले, रुकता रुकता चाले, हसे, त्यारे माता कहे के–पुत्र ! तुं इन्द्राणीनो वल्लभ छे. अने देवताए दीधेला अमृतनुं पान करे छे, म्हारी पासे तो रहेतो नथी, म्हारा स्तन पण चूसतो नथी, तो हुं त्हारी माता छुं एवो जगतमां कोण जाणशे ? इत्यादिक वातो करी रमाडे. ज्यारे भगवान देशे ऊणा एक वर्षना थया त्यारे इन्द्रमहाराज भगवाननुं वंश स्थापन करवा सारुं हाथमां सेलडी लइने आव्या ते वखते, भगवान नाभि–कुलकरना खोला मांहे बेठा हता ते खोला मांहेथी सेलडी लेवा सारुं हाथ लांबो कर्यो. तेथी इन्द्रे जाण्युं के प्रभुने सेलडी खावानुं मन थयुं, माटे इन्द्रे भगवाननो इक्ष्वाकुवंश स्थापन कर्यो. श्रीऋषभदेवने देवकुरु अने उत्तरकुरु क्षेत्र संबंधि कल्पवृक्षोना फलनो आहार देवताओए आणी आप्यो. ते आहार गृहस्थपणामां थयो अने बालपणामां तो अंगुठामां देवोए संचारेला अमृतनो आहार सर्व तीर्थ-

करोने होय छे अने एक श्रीऋषभदेवजी विना बीजा सर्व तीर्थंकरोने तो बालपणुं टल्या पछी म्होटा थाय त्यारे पक्व थयेलो आहार होय अने संयम लीधा पछी तो चोवीसे तीर्थंकरोने फासु आहार होय. भगवान ज्यारे भोग भोगववाने समर्थ थया त्यारे सर्व इन्द्र अने इन्द्राणि पोत पोताना परिवार साथे विवाह करवा आव्या, तेमां इन्द्रादिक देवो तो वरराजानी तरफ रह्या थका श्रीऋषभदेवने वींद बनाव्यो. अने इन्द्राणी प्रमुख सर्व देवीओए मलीने कन्यानी तरफ रहीने सुनंदा तथा सुमंगलाने वींदणीयो बनावी, शणगार कराव्या. मांडवा मांड्या इत्यादिक सर्व प्रकारनी विवाह संबंधी रीतीओ करीने वर-कन्याने परणाव्या, त्यारथी युगलीयामां विवाह करवानी रीती प्रवर्त्त-मान थइ ते आजदिवस पर्यंत चाली आवे छे.

ऋषभदेवनी सन्तति, राज्याभिषेक, अने विनीतानगरीनी स्थापना—

श्रीऋषभदेवजीने सुनंदा तथा सुमंगला ए बे राणीओ साथे भोग भोगवतां छ लाख पूर्व व्यतिक्रम्या. त्यारे सुमंगलाने भरत अने ब्राह्मी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो अने सुनंदाने बाहुबली तथा सुंदरी ए बे पुत्र पुत्रीनो जोडलो थयो. तथा ओगणपचास तो केवल पुत्रोनाज जोडला थया. ए रीते ऋषभदेव स्वामीने सो पुत्र तथा बे पुत्री थइ, कालना महात्म्यथी अनुक्रमे दिवसे दिवसे युगली-याओमां कषायनी वृद्धि थवा मांडी. त्यारे हकार, मकार अने धिक्कार ए त्रण जातनी जे दंडनीतिओ चालती हती, तेने पण लोक उल्लंघन करवा लाग्या, तेने मान्य न करतां परस्पर क्लेश उत्पन्न थवाथी श्रीऋषभदेवनी पासे आवी कहेवा लाग्या के अमारो न्याय करी आपो. त्यारे भगवान बोल्या, हुं राजा नथी, म्हारा पिता नाभिकुलकर राजा छे तेनी पासे तमे जाओ. ते सांभली युगलीया नाभीराजा पासे गया. नाभीराजाए कह्युं के तमारो राजा ऋषभदेव छे, ते तमारो न्याय

करशे. ए अवसरमां इन्द्र महाराजनुं आसन चलायमान थयुं, अवधिज्ञानथी भगवानने राज्यपाटे स्थापन करवानो अवसर जाणी इन्द्र-महाराजे आवी भगवानने मुकुट, कुंडल, हार प्रमुख पहेरावी, सिंहासन ऊपर बेसाडी राज्य अभिषेक कर्यो, युगलीया इन्द्र महाराजना कहेवाथी जल लेवा गया हता. परंतु ते राज्याभिषेक थइ गया पछी जल लेइने आव्या. त्यारे भगवानने शणगार सहित सिंहासन ऊपर बेठेला जोइने युगलीयाओने विवेक आव्यो के बीजा सर्व शरीर ऊपर तो शोभा थइ रही छे; परंतु एक भगवानना पग खाली देखाय छे एवुं जाणी पग उपरज पाणी ढोल्युं. त्यारे इन्द्रमहाराज बोल्या ए युगलीया भला विनीत पुरुषो छे माटे इहां विनीता नामे नगरी वसाववी. एवुं कहीने वैश्रवण देवने इन्द्रे नगरी वसाववानी आज्ञा आपी, वैश्रवणदेवे विनीता नगरी बनावी. ते बार योजन लांबी, नव योजन पोळी, आठ दरवाजा कर्या, फरतो म्होटो कोट कर्यो, ईशान कोंणमां सात भूमिओ चोखूणो एक म्होटो नाभिराजाने रहेवा माटे घर बनाव्युं, अने पूर्व दिशामां भरतना रहेवा सारुं सात भूमीनुं घर बनाव्युं, अग्निकोणमां बाहुबलीने रहेवा

---

१ केटलीएक प्रतोमां लखेलुं छे के युगलीया मांहोमांहे वढवाड करीने नाभिकुलकर पासे न्याय कराववा गया, नाभिराजाए तेमने कह्युं के अमे वृद्ध थया माटे तमे ऋषभने जइ कहो ते तमारो न्याय करशे. युगलीयाओए जइ ऋषभजीने कह्युं. ऋषभजी बोल्या मने राज्य अभिषेक करी राजा स्थापो, त्यारे युगलीयाओए धूलनो एक म्होटो ओटलो बनावी तेनां ऊपर प्रभुने बेसाडी पोते अभिषेक करवा पाणी लेवा गया. एवामां इन्द्रनो आसन कंप्युं तेणे आवीने मुकुटादिक अलंकार पहेरावी, सिंहासने बेसाडी, वस्त्रविभूषित करी राज्याभिषेक विधि साचव्यो. प्रभु ऊपर छत्र धारण कर्युं, चामर वींजतो थको इन्द्रमहाराज पोते प्रभुनी सेवा करे छे, एटलामां युगलीया पण कमलपत्रना दुनामां पाणी भरी लइ आव्या, भगवाननुं स्वरूप सर्वालंकार विभूषित देखीने चिंतववा लाग्या के प्रथम भगवानना मस्तक ऊपर नाखिए तो सर्व वस्त्र, अलंकार भींजाइ जाय माटे स्वामीनो डाबो पग खाली छे ते तेना ऊपर न्हवण करीए एम विचारी डाबा पग ऊपर अभिषेक कर्यो.

माटे म्होटुं घर बनाव्युं, तेनी वचमां श्रीऋषभदेवजीने रहेवा सारुं एक-वीश भूमिवाळुं घर बनाव्युं, एकसो आठ जिनमंदिर बनाव्या, वली राज्यना अर्थे हाथी, घोडा, गाय, ऊंट, वेसर (खच्चर) बलद प्रमुख चतुष्पदोनो संग्रह कर्यो. आगल तो ए हाथी प्रमुख सर्व जीवो जंगलमां फरतां रहेता हता. वली केटलाएक जुगलीयाओने अपराधमां आवे तेमने दंड देवा माटे 'उग्रा' एवा नामथी स्थापन कर्या, केटलाएक गुरुस्थानीया करी तेमने 'भोगा' एवा नामथी स्थापन कर्या. केटलाएक मंडलाधिप करीने तेमने 'राजन्य' एवा नामथी थाप्या, बीजा 'पायदल-क्षत्रियो' एवा नामे करी थाप्या. एम चार प्रकारना पुरुषोनी व्यवस्था थइ. तथा वली जे ब्रह्मचर्य पाले ते ब्राह्मण, जे शस्त्र राखे ते क्षत्रिय, खेती करावे ते वैश्य, चाकरी करे ते शूद्र, एवा नाम स्थापन कर्या. वली विनीता नगरीमां चोरासी चौटा कर्या, तेमां सौगंधिक-गांधी, तंबोली कंदोइ, सोनार, मणियार, सोनुं वेचनार, माणिक वेचनार, नाणावटी, भाडभुंजा, धान्यबजार, दोसी, चमार, कंसारा, माली, घृत बजार, तथा तेल, सूत्र, कपास, भांडा, भाडा इत्यादिक बजारो करी अनेक जातना उद्यमीओ वगेरे थया.

युगलिकधर्मनिवारण अने भोजनविधिनिरूपण—

श्रीऋषभनाथ स्वामीना पांच नाम थया-एक ऋषभनाथ, बीजुं प्रथम राजा, त्रीजुं पहेला भिक्षाचर, चोथुं पहेला केवली अने पांचमुं पहेला तीर्थंकर. श्री ऋषभनाथ अरिहंत महाचतुर, भली प्रतिज्ञाना पालनार, भला रूपवंत, सर्वगुण-संपन्न, सरल, विनीत, वीश लाख पूर्व पर्यंत कुमर पदे रह्या, त्रेसठ लाख पूर्व लगे राज्य भोगव्यो, राज्य करतां भरतनी साथे ब्राह्मी जन्मी हती ते बाहुबलीने परणावी अने जे बाहुबलीनी साथे सुंदरीनो जन्म थयो हतो ते

भरतने स्त्रीरत्न करवा माटे राखी--एटले युगलधर्म मटाड्यो. प्रथम तो युगलीया कल्पवृक्षना पत्रादिकनो आहार करतां हता ते अयोग्य थया, खावा योग्य रह्या नहीं त्यारे लोक मूल, पत्र, कंद, फल अने फूलनो आहार करवा लाग्या. अपकशालि प्रमुख काचुं धान्य खावा लाग्या, ते खातां खातां पचे नहीं, पेटमां दुखावो थाय त्यारे भगवान् पासे आवी कहेवा लाग्या के आहार कर्याथी अमारुं पेट चढी आवे छे. भगवान बोल्या लगारेक हाथमां मसलीने हाथनी बाफ आपीने खाओ तो पची जशे. तेम कर्यो तो पण केटलाएक दिवस पछी ते पण पच्यो नहीं. पछी कांखमां अने हृदयमां राखी बाफ आपीने आहार करवा कह्युं. तेम करतां केटलाएक काल पछी ते पण पचवा लाग्यो नहीं; आ अवसरे वन मांहे वंश घसातां अग्नि उपन्यो, ते देखीने युगलीयाओए जाण्युं के ए कोइ अपूर्व रत्न उत्पन्न थयुं छे. एवुं जाणी तेने हाथमां लेवा लाग्या, तेथी हाथ बळवा मांड्या, तेनाथी व्हीता थका ऋषभदेवजीने जइ कहेवा लाग्या के हे स्वामिन् ! एक अपूर्व रत्न उपन्युं छे परंतु तेमां क्रोध घणो छे तेथी हाथ लगाडीए तो बालवाने दोडे छे. (कोइ प्रतमां एवुं पण लखेलुं छे के युगलीआए जइ भगवानने कह्युं के--कोइ राक्षस उठ्यो छे) पछी भगवाने अवधिज्ञानथी जोयुं तो अग्नि उपन्यो दीठो, त्यारे युगलीयाओने कह्युं के--तमे एमां तृण लगावीने अग्नि ग्रहण करो, तेमां शालिप्रमुख धान्य पचावीने खाओ. युगलीओए घसवाडाना तृण तोडीने अग्नि जुदो सलगावी, तेमां धान्य नाख्युं ते सर्व बळी गयुं, कांइ पण पाछुं हाथमां आव्युं नहीं. ते जोइ फरी भगवान् पासे आवीने कहेवा लाग्या के--ते पोतेज भुख्यो छे. माटे सर्व धान्य खाइ जाय छे, अमने कांइ पण आपतो नथी. ते सांभळी भगवान् बोल्या, हुं हाथी ऊपर चढीने आवुं त्यारे मने एक माटीनो पिंड आपजो. पछी युगलीयाओए तेमज कर्युं. माटीनो पिंड

लइ आव्या, ते माटीमांथी भगवाने हांडी, कुंडी प्रमुख वासण बनावी आप्या. अने सर्वे विधि पण कही समजावी. पछी वासणो (पात्रो) ने अग्निमां पचावी तेमां धान्य पाणी नाखीने अग्नि ऊपर चढावी, पाकुं धान्य करीने खाओ, एवा भगवाने बतावेला विधिथी युगलीया अन्नने पचावीने खावा लाग्या त्यारे अन्न पचवा लाग्युं.

प्रभुए आपेल लेखनादि कला शिक्षण—

भगवाने अढार जातिनी लीपी ब्राह्मीने जिमणा हाथथी लखवाने बतावी तेनां नाम कहे छे. १ हंसलिपी, २ भूतलिपी, ३ यक्षलिपी, ४ राक्षसलिपी, ५ उड्डी लिपी, ६ यावनीलिपी, ७ तुरक्कीलिपी, ८ कीरोलिपी, ९ द्रावडीलिपी, १० सैंधवीलिपी, ११ मालवीलिपी, १२ नडीलिपी, १३ नागलीलिपी, १४ लाटीलिपी, १५ पारसीलिपी, १६ अनिमित्तिलिपी, १७ चाणक्कीलिपी, १८ मौलदेवीलिपी; ए अढार लिपीना नाम, तथा देशविशेषथी बीजी पण लाटी, चौडी, डाहली, कानडी, वगेरे १८ लिपिओ जाणवी. तथा गणित जे आंकनो विधान ते सुंदरीने भगवाने डाबे हाथे करवाने बताव्युं, ते श्या भणी ? तो के " अंकानां वामतो गतिः, अक्षराणां दक्षिणतो गतिः " वली भरत महाराजने रूप करवानुं कर्म बताव्युं तथा बाहुबलीने पुरुषादि लक्षण बताव्या तथा पुरुषनी व्होंतेर कलाओ बतावी तेना नाम कहे छे–१ लेखनकला, २ पठनकला, ३ गणितकला, ४ गीत गावानी कला, ५ नाटकनी कला, ६ तालमाननी कला, ७ ढोल वजाववानी कला, ८ मृदंग वजाववानी कला, ९ वीणा वजाववानी कला, १० वांसली वजाववानी कला, ११ भेरी वजाववानी कला, १२ हाथी परखवानी कला, १३ घोडा परखवानी कला, १४ धातुर्वादनी कला, १५ दृष्टिवादनी कला, १६ मंत्रवादनी कला, १७ पलितविनाशिनी कला, १८ रत्नलक्षण, १९ नारीलक्षण, २० नरलक्षण, २१

छंद्करण, २२ तर्कवाद, २३ न्याय, २४ तत्त्वविचार, २५ काव्यकरण, २६ ज्योतिष, २७ चार वेदनी कला, २८ वैद्यकला, २९ षट्भाषाज्ञान, ३० वशीकरण, ३१ अंजन, ३२ लिपी, ३३ कृषिकर्म, ३४ स्वप्नविचार, ३५ वाणिज्य, ३६ राजसेवा, ३७ शकुनविचार, ३८ इन्द्रजाल, ३९ वायुस्तंभन, ४० अग्निस्तंभन, ४१ मेघ वर्षावानी कला, ४२ लेपनकला, ४३ मर्दन-कला, ४४ ऊंचा जावानी (उडवानी) कला, ४५ घटबंधननी कला, ४६ घटभ्रमण, ४७ पत्रच्छेदन, ४८ मर्मभेदन, ४९ फल खेंचवो, ५० जल-वृष्टि, ५१ लोकाचार शीखवानी कला, ५२ लोकोनी मरजी राखवानी कला, ५३ फल भरवानी कला, ५४ खड्ग धारवानी कला, ५५ छुरी-बंधन, ५६ मुद्राकरण, ५७ लोहघटन, ५८ दंतसमारण, ५९ काष्ठच्छे-दन, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ दृष्टियुद्ध, ६३ मुष्टियुद्ध, ६४ दंडयुद्ध, ६५ खड्गयुद्ध, ६६ वाग्युद्ध, ६७ गरुडमर्दन, ६८ सर्पदमन, ६९ भूतदमन, ७० योगध्यान, ७१ वर्षज्ञान, अने ७२ नामावली.

स्त्रीयोनी चोसठ कला बतावी तेनां नाम—१ नाचवानी कला, २ आदर देवानी कला, ३ चित्रकला, ४ वाद्कला, ५ मंत्रकला, ६ तंत्रकला, ७ ज्ञानकला, ८ विज्ञानकला, ९ दंडकला, १० जलस्तं-भनकला, ११ गीत गावानी कला. १२ तालमाननी कला, १३ मेघवृ-ष्टीनी कला, १४ फलाकृष्टीनी कला, १५ वाग्गोपन, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुन जोवुं, १९ क्रियाकल्प, २० संस्कृतभाषा बोलवी, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वर्णिकावृष्टी, २४ सुवर्ण-सिद्धि, २५ सुगंधितेल करवुं, २६ लीलासहित चालवुं, २७ हाथी घोडानी परीक्षा करवी, २८ पुरुष—स्त्रीलक्षण जाणवुं, २९ सुवर्ण—रत्नभेदनुं ज्ञान, ३० अढार जातिनी लीपी, ३१ तात्कालिक बुद्धि, ३२ वास्तु-सिद्धि, ३३ वैद्यक्रिया, ३४ कामक्रिया, ३५ घटभ्रमण, ३६ सारिपरि-श्रम, ३७ अंजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनचतु-

रता, ४१ भोजनविधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ मुखमंजन, ४४ शालिखंडन, ४५ कथा कथन, ४६ फूलगुंथन, ४७ वक्र बोलवुं, ४८ काव्यशक्ति, ४९ वेष बनाववो, ५० सर्व प्रकारनी भाषाओ बोलवी, ५१ अभिधानज्ञान, ५२ घरेणा पहेरवा, ५३ राजानी भक्ति करवी, ५४ घरनो आचार शीखवो, ५५ काव्यकरण, ५६ परने हराववो, ५७ धान्य रांधवुं, ५८ केश बांधवा, गूंथवा, ५९ वीणा वजाववी, ६० वितंडावाद, ६१ अंकविचार, ६२ लोकव्यवहार, ६३ अंत्याक्षरिका, अने ६४ प्रश्न प्रहेलिका.

प्रभुना सो पुत्रोना नाम—

१ भरत, २ बाहुबलि, ३ शंख, ४ विश्वकर्मा, ५ विमल, ६ सुलक्षण, ७ अमल, ८ चित्रांग, ९ ख्यातकीर्त्ति, १० वरदत्त, ११ सागर, १२ यशोधर, १३ अमर, १४ रथवर, १५ कामदेव, १६ ध्रुव, १७ वत्स, १८ नन्द, १९ सूर, २० सुनन्द, २१ कुरु, २२ अंग, २३ वंग, २४ कोशल, २५ वीर, २६ कलिंग, २७ मागध, २८ विदेह, २९ संगम, ३० दशार्ण, ३१ गंभीर, ३२ वसुवर्मा, ३३ सुवर्मा, ३४ राष्ट्र, ३५ सुराष्ट्र, ३६ बुद्धिकर, ३७ विविधकर, ३८ सुयश, ३९ यशःकीर्त्ति, ४० यशस्कर, ४१ कीर्त्तिकर, ४२ सूरण, ४३ ब्रह्मसेन, ४४ विक्रान्त, ४५ नरोत्तम, ४६ पुरुषोत्तम, ४७ चन्द्रसेन, ४८ महासेन, ४९ नभःसेन, ५० भानु, ५१ सुकान्त, ५२ पुष्पयुत, ५३ श्रीधर, ५४ दुर्धर्ष, ५५ सुसुमार, ५६ दुर्जय, ५७ अजेयमान, ५८ सुधर्मा, ५९ धर्मसेन, ६० आनन्दन, ६१ आनन्द, ६२ नन्द, ६३ अपराजित, ६४ विश्वसेन, ६५ हरिषेण, ६६ जय, ६७ विजय, ६८ विजयन्त, ६९ प्रभाकर, ७० अरिदमन, ७१ मान, ७२ महाबाहु, ७३ दीर्घबाहु, ७४ मेघ, ७५ सुघोष, ७६ विश्व, ७७ वराह, ७८ सुसेन, ७९ सेनापति, ८० कपिल, ८१ शैलविचारी, ८२ अरिंजय, ८३ कुंजरबल, ८४ जयदेव, ८५ नागद,

८६ काश्यप, ८७ बल, ८८ सुवीर, ८९ शुभमति, ९० सुमति, ९१ पद्मनाभ, ९२ सिंह, ९३ सुजाति, ९४ संजय, ९५ सुनाभ, ९६ नरदेव, ९७ चित्तहर, ९८ सुस्वर, ९९ दृढरथ, अने १०० प्रभंजन. आ सौ पुत्रोमांथी भरतने अयोध्यानगरीनो, बाहुबलिने तक्षशिला (गिजनी) नो अने बीजा अठ्याणुं पुत्रोने अंग, वंग, कलिंग, गौड, चौड, कर्णाट, लाट, सौराष्ट्र आदि देशोनुं राज्य भगवाने आप्युं.

प्रभुनी दीक्षा अने तापसोनी प्रवृत्ति—

प्रभुए एवी रीते लखवानी कला, गणवानी कला, पुरुष-स्त्रियोनी कला, कारीगिरोना सौ भेद, कृषीवलादि त्रण कर्म, लोकोना हितना माटे बतावीने अने जुदा जुदा पोताना सौ पुत्रोने राज्य आपीने लोकांतिक देवोनी प्रार्थनाने मंजूर करी अने वार्षिकदान आपी तथा गोत्रियोने धन वांटीने उन्हालानो पहेलो, पहेलो पखवाडियुं-चैत्र वदि आठमना दिवसे पाछला पहोरे सुदर्शना नामा पालखीमां बेसीने, देव मनुष्य सहित यावत् विनीता राजधानीमांथी थइने ज्यां सिद्धार्थवन उद्यान छे त्यां अशोकवृक्षनी नीचे पालखी राखीने, तेथी उतरीने, सर्वालङ्कार पोताना हाथथी उतारी, चार मुष्टी लोच करीने, चोविहार

---

१ कल्पद्रुमकलिका आदि टीकाकारोए सौ पुत्रोना नामो बीजी रीते पण लखेल छे ते तेज टीकाओथी जाणवा.

२ सर्व तीर्थंकर पांच मुष्टि लोच करे छे परन्तु श्रीऋषभदेव प्रभुए चार मुष्टी लोच कर्यो. तेनुं कारण देखाडे छे-भगवाने ज्यारे चार मुष्टी लोच करी लीधो पांचमी मुष्टी उखेडवी बाकी रही. एटलामां पवनथी केसनी शिखा विखरीने पोहोली थइ तेथी घणीज शोभवा लागी. ते जोइने इन्द्रमहाराजे प्रभुने विनंति करी के महाराज केसनी शिखा घणीज सुन्दर देखाय छे, माटे एमज रहे तो सारुं. प्रभुए पण ते शिखा एमज राखी, जेम पद्मद्रहमांथी सिंधुनदी निकलती वखते सवा छ योजननी पोहोली छे अने पछी अनुक्रमे वधती वधती समुद्रमां मलतां साडी बासठ योजननी पोहोलपणे थयेली छे. तेम ए चोटली पण मस्तकना थडमांथी नीकली ते आमक

छट्ठ छतां उत्तराषाढा नक्षत्रना साथे चन्द्रयोग आवे थके उग्रकुल, भोगकुल, राजन्यकुल अने क्षत्रियकुलना कच्छ, महाकच्छ प्रमुख चार हजार पुरुषोनी साथे इन्द्रदत्त देवदुष्य वस्त्र लइने, गृहस्थपणानो त्याग करीने साधुपणुं अंगीकार कर्युं.

हवे भगवान घोर अभिग्रह धारी थया थका, ग्रामानुग्राम विहार करतां, आकरा परिषह सहन करता थका विचरे छे. भगवानने यद्यपि छट्ठ तपनुं पारणुं करवुं हतुं तथापि ते वखतमां साधुने दान देवानो (भिक्षा आपवानो) विधि कोइ जाणतो न हतो, साधु ते शुं ? अने भिक्षा ते वळी शुं ? एवो कोइ समजे नहीं अने ते वखते कोइ भिक्षानो मांगनार पण हतो नहीं, तेथी प्रभु ज्यां जाय त्यां कोइ अन्न आपे नहीं. चार हजार साधुओ भूख—तृषाथी पीडाता थका प्रभुने आहारनो उपाय पूछवा लाग्या. पण प्रभु कांइ बोल्या नहीं, मौनपणे रह्या. त्यारे कच्छ अने महाकच्छने पूछयुं, तेणे पण कह्युं—के अमे पण कांइ जाणता नथी. त्यारे सर्वे विचार करवा लाग्या के 'आपणे प्रथमथी ज भगवानने कांइ पूछयुं नहीं. अने हवे पाछा घेर जइने बेसवुं पण योग्य नथी, तेम आहार कर्या विना पण चाली शके नहीं. तो हवे आपणने ए वनवासमां रहेवुं ज ठीक छे. एम चिंतवीने गंगानदीना दक्षिण तटना वनमां जटिल तापस थइने रह्या अने वृक्ष-मांथी नीचे तूटी पडेला पत्र, फल, फूल आदिकनो आहार करवा लाग्या अने वृक्षनी छालना वस्त्र पहेरीने श्रीऋषभदेवजीनुं ध्यान-स्तवना करता थका विचरवा लाग्या.

ऋषभदेव स्वामिए पुत्र तरीके मानेला नमि अने विनमि—

प्रभुए ज्यारे दीक्षा लीधी हती त्यारे सर्व पुत्रोने जुदा जुदा

आगल पोहोलाइमां विस्तारने पामती दीठामां आवी. तेथी पद्मद्रह सिंधुनदीना अवाहनी परे शोभाकारी देखावा लागी तेने लोक भाषामां 'अछा चोटली' पण कहे छे.

देशोना राज्य व्हेंची आप्या हता. ते वखतमां प्रभुए पुत्र तरीके पालेलां कच्छ अने महाकच्छना पुत्र एक नमि अने बीजो विनमी ए देशांतरे जता रह्या हता, तेओने भगवान राज्य आपवा भूली गया. ते ज्यारे पाछा आव्या त्यारे भरतने बोल्या के अमने राज्य केम न आप्यो ?, भरते कह्युं के—हुं तमने थोडोक भाग आपुं. तेणे कह्युं के त्हारा पासेथी न लहीए. भरते कह्युं, भगवान जाणे ने तमे जाणो. बेहु भाइ भरतनी अवगणना करीने भगवाननी पासे आवी तेमना चरणकमलनी सेवा करीने कहेवा लाग्या के—प्रभो ! तमे सर्वने राज्य दीधुं, माटे अमोने पण राज्य आपो. भगवाने तो संसारत्याग करेल छे माटे मौनपणे रह्या, कांइ उत्तर दीधुं नहीं. त्यारे ते बन्ने जण राज्यना अर्थे भगवाननी पाछल रह्या. ज्यां भगवान ऊभा रहे त्यां भूमि साफ करे, कांटो, कांकरो काहाडी न्हांखे, पाणी छटकावे, फूल बिछावे, डांस, मशकादिक उडाडे, त्रिकाल खड्ग धरे; एम प्रभुनी सेवा भक्ति करता थका विचरे छे. एकदा धरणेन्द्र भगवानने वांदवा आव्यो. तेणे नमि, विनमिने कह्युं के—भगवान तो त्यागी छे माटे तमे भरतनी पासे जाओ, ते तमोने राज्य आपशे. त्यारे ते बोल्या—भगवान विना अमे बीजा कोइ पासेथी राज्य मांगीए नहीं. एवुं सांभली धरणेन्द्र तेमनी भक्तिथी संतुष्ट थइने कहेवा लाग्यो के तमे एकमना थइने प्रभुनी सेवा करो छो तो म्होटाना चरणनी सेवा क्यारे पण निष्फल थाय नहीं. तेथी हुं तमारा ऊपर प्रसन्न थयो छुं. माटे जे मांगो ते हुं आपुं. तो पण तेणे कांइ मांग्युं नहीं त्यारे धरणेन्द्रे भगवानना मुखमां अवतरी (प्रवेश करी) ने अडतालीश हजार विद्याओ गुणतां ज सिद्ध थइ जाय तेवी शीखावी अने गौरी, गांधारी, रोहिणी तथा प्रज्ञप्ति प्रमुख शोल देवीयो ते विद्याओनी अधिष्ठायिकाओ छे ते आपी अने वैताढ्य पर्वतनी दक्षिण उत्तर श्रेणीनुं राज्य आप्युं. पछी

विद्याओ साधी बन्ने भाइओ विद्याधरनी ऋद्धि पाम्या. त्यारे पोतानो सर्व स्वजनवर्ग लइने रथनूपुर चक्रवालादि पचास नगर उत्तर श्रेणिना तथा गगनवल्लभ प्रमुख साठ नगर दक्षिण श्रेणीना वसावीने विद्याना बळथी सर्व परिवार सहित त्यां राज्य करवा लाग्या. पछी ते बन्नेने धरणेन्द्रे कह्युं के–विद्याधरो ! तमे सांभळो. " एक तो केवली भगवाननी, बीजी जिनप्रतिमानी, त्रीजी चरम शरीरीनी अने चोथी प्रतिमाधर साधुनी. ए चारनी जो तमे आशातना करशो अने ए चारने रस्तामां मूकी तेनां दर्शन सेवा कर्या विना एम ज चाल्या जशो तथा परस्त्रीनी साथे जोरावरीथी भोग भोगवशो तो तमारी विद्याओ निष्फल थइ जशे. " एवी रीते शिखामण आपीने अने ते शिखामण रत्नभित्ति ऊपर लखीने धरणेन्द्र पोताने स्थानके गयो. पछी भगवाननी सेवानुं फल भरतने कहीने सोलजाति विद्याधरोनी थापी. दक्षिण श्रेणीनुं राज्य नमि करवा लाग्यो अने उत्तर श्रेणीनुं राज्य विनमि करवा लाग्यो.

अन्तरायकर्मना उदयथी प्रभुए करेल वार्षिकतप—

भगवान पूर्वकृत अंतराय कर्मना उदयथी एक वर्ष पर्यंत आहार विना रह्या, क्यांय शुद्ध भिक्षा न पाम्या. ज्यां गोचरी जाय त्यां म्होटो माणस जोइने कोइ वस्त्र आपे, कोइ आभरण आपे, कोइ मणी, माणिक अने मुक्ताफलना थाल भरी आपे, कोइक तो घणी स्वरूपवान् एवी कन्याने शोल शणगारोथी शणगारीने आपवा तैयार थाय, कोइक हाथी, घोडा, रथ प्रमुख वाहन आपवा आवे, कोइ धनभृत सुवर्णस्थाल प्रमुख उचित वस्तु आपवा आवे; एम घणा घणा पदार्थ लावीने लोको स्वामिनी आगल मूके ते सर्व अणखपता जाणी स्वामी लीए नहीं, पण अन्न कोइ आपवा आवे नहीं ए प्रमाणे एक

वर्ष पर्यंत स्वामी निराहारी रह्या. पण आहार विना लगार मात्र डग्या नहीं, दीनपणुं आव्युं नहीं. एवी रीते भगवान विचरता थका एकदा गजपुर नगरे पधार्या.

प्रभुने वार्षिकतपनुं पारणुं अने कर-संवाद—

गजपुरनगरमां बाहुबलीनो पुत्र सोमप्रभ नामे राजा राज्य करे छे, तेनो पुत्र श्रेयांस-कुमर युवराज छे. तेणे ते रात्रीमां स्वप्न दीठुं के 'मेरुपर्वत मलिन थइ गयो हतो. तेने म्हें अमृतना घडाथी धोइने उज्ज्वल (शोभायमान) कीधो' तथा श्रेयांसना पिता सोमप्रभ राजाने एवुं स्वप्न आव्युं के 'कोइ एक पुरुषने शत्रुए घेरी लीधो ते श्रेयांस कुमरना सहाय थकी जय पामी छूटो थयो' तथा ते नगरना सुबुद्धि शेठने स्वप्न आव्युं के—'सूर्यना सहस्र किरणो पडता हता. तेने श्रेयांस कुमरे पाछा सूर्यमां थाप्या.' ए त्रण जण प्रभाते राजसभामां भेगा थया. सौ पोत पोताने आवेला स्वप्ननी वात कही, त्यारे सर्वना मनमां एवो विचार आव्यो के आ स्वप्नाओनुं सर्व फल श्रेयांसकुमरने मलशे अने श्रेयांसने कोइ म्होटो लाभ थशे, एम कही सहु पोत पोताना घेर गया. पछी मध्यान्ह समए गोचरी करवाने माटे श्रीऋषभदेवजी घर घरना विषे फरवा लाग्या. तेने लोको पूर्वोक्त रीते वस्त्राभरणादिक वस्तु आपवा लाग्या, पण प्रभु लेता नथी. तेथी लोकोमां कोलाहल थइ रह्यो के भगवान तो कांइ पण लेता नथी. एटलामां श्रेयांस कुमर गोखमां बेठा हता, तेणे श्रीऋषभदेवजीने दीठा. पछी ईहापो करता जातिस्मरण ज्ञान पाम्या, तेणे करी पूर्वलो भव दीठो. त्यारे जाण्युं के अहो ! हुं तो ए प्रभुनो पूर्वभवना विषे सारथी हतो. त्यां म्हें पण दीक्षा लीधी हती. अने वज्रसेन तीर्थंकरे एवुं कह्युं हतुं के ए वज्रनाभ राजर्षि भरतक्षत्रेमां पहेला तीर्थंकर थाशे. तेज आ प्रभु तीर्थंकर, देवोना देव गोचरी माटे भमता देखाय छे एम जाणी गोखथी

नीचे उतरीने कह्युं के-हे प्रभु! लोको साधुने दान देवानी रीतीमा वाकेब नथी एम कही पांच अभिगमन साचवी, त्रण प्रदक्षिणा देइ "इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि" एम खमासमण आपी पछी 'इच्छाकारि सुहराइ, सुहदेवसि सुख तप शरीर निराबाध, सुख संजम जात्रा निर्वहोछोजी' हे भगवन्! भातपाणीनो लाभ देवा पधारो, म्हारुं गृहांगण पावन करो, म्हारे घरे पधारो, अने शुद्ध बेंतालीश दोषरहित आहार व्होरीने म्हारो निस्तार करो' एम श्रेयांस कुमर पहेला श्रावक प्रगट थया। ते समये शेलडीना रसे भरेला एकसो आठ घडा श्रेयांस कुमरने कोइक भेट आपी गयेलो हतो ते शुद्धमान घडा लइने श्रेयांस कुमरे भगवंतने भिक्षा लेवानी विनंती करी.

कवी घटना करे छे के दान लेती वखते प्रभुना बेहु हाथनो मांहो मांहे विवाद थयो. ते आवी रीते के-प्रथम जमणो हाथ गद्गद्-स्वरथी श्रेयांस कुमर प्रत्ये बोल्यो के अहो श्रेयांस! तुं सांभल, हुं श्रीऋषभदेवनो आ जन्मनो सेवक छुं, म्हें श्रीऋषभदेवजीना प्रसादथी घणा म्होटा म्होटा उत्तम कार्यो कर्यां छे. तेणे करी हुं घणो प्रतिष्ठा पामेलो छुं. ते म्हारां कर्त्तव्यो तुं निरपेक्ष पणे सांभल। प्रथम तो म्हें इंद्रादिक देवोने देखता थकां जमणे अंगूठे करीने प्रभुने अमृत-पान कराव्युं एटले तीर्थंकरनी एवी मर्यादा छे के पोतानी मातानुं तथा अन्य स्त्रीयोनुं स्तनपान न करे. पण ज्यारे भूख लागे त्यारे पोताना जमणा हाथनो अंगुठो चूसवा मांडे के तरत ज तेमां अमृत-मयी पुद्गल प्रणमी जाय तेथी क्षुधावेदनीय उपशमी जाय १, वली वंशस्थापनाना अवसरे म्हे इन्द्रना हाथथी सेलडीनो सांठो ग्रहण करीने स्वामीनी वांछा पूरण करी माटे वंशस्थापवामां पण हुं आगे-वान थयो २, वली म्हे भरतराजाने तिलक करीने विनीता नगरीनुं

राज्य आपी छ खंडनो भोक्ता कर्यो. एटले राज्यस्थापनमां पण जमणे हाथेज मंगालिक कामे टीलुं कराय छे ३, वली भरतनी परेज म्हे बाहुबलीने तक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं ४, तथा प्रभुना शेष अठ्याणुं पुत्रोने पण एज रीते म्हे राज्यो आप्यां ५, तथा सुनंदा अने सुमंगला ए बे कन्याओने पण हाथ मेलाववाना अवसरे जमणे हाथे झालीने स्वामीने परणावी दीधी ६, वली म्हे एक वर्ष पर्यंत स्वइच्छित वरसी दान आपीने त्रण जगतना मनोवांछित पूरण कर्या. केमके दान पण जमणा हाथथी ज देवाय छे ७, वली हुं छत्र, चामर, चक्र, गदा, खड्ग, धनुष्य, अंकुश, वज्र अने शंखादिक शुभ लक्षणे करी बिराजमान थको शोभी रह्यो छुं. एवां सर्व लक्षणो हुं (जमणो हाथ) धारण करुं छुं. अने लक्षण जोवावाला लोक पण म्हारीज रेखाओ आदिक सर्व लक्षण जुए छे ८, वली तीर्थयात्रा, पुत्रप्राप्ति, सौभाग्य, यशः कीर्त्तिनी सूचक रेखाओनो धारक पण हुंज छुं. एटले ए सर्व भावोने सूचववा वाली रेखाओ जमणा हाथमां होय तो ज तद्रूप फलनी प्राप्ति थाय छे ९, तथा हुं चोखा देखवामां सोधवामां चतुर व्यापारवान छुं. एटले चोखा गोधूमादिकमांथी कांकरा प्रमुख शोधी कहाडवा ते जमणा हाथथीज बनी शके छे १०, वली भोजनने विषे, देवपूजाने विषे, परमेश्वरना स्मरणने विषे, प्रीति बांधवाने विषे, बोल तथा कबुलात आपवाने विषे, दानने विषे, इत्यादिक अनेक शुभ कार्योमां म्हारो ज अधिकार छे ११, माटे हुं सर्वनी ऊपर छुं अने म्होटा म्होटा कामोमां म्हारो अधिकार छे, तो कहो आ स्वल्प सेलडीना तुच्छ रसनी खातर नीचो केम नमुं. अने त्र्याशी लाख पूर्व वर्ष लगे भगवाननी साथे राज्य साम्राज्य पाल्युं. तो हवे हुं हमणां भगवंतनी आगल थइने केवी रीते याचना करावुं. तेज कारणथी म्हे खावुं, पीवुं, पहेरवुं, ओढवुं, नाटक देखवुं, विगेरे छोडी क्रीडा विना मौन धरावीने वन गहन अटवी-

ओसां प्रभुने नमाव्या. तो हवे आ सेलडीना रसने हुं ग्रहण करीश नहीं, माटे तमे डाबा हाथने कहो तो ते मागी लेशे.

जमणा हाथना वचन सांभलीने डाबो हाथ बोल्यो के–रे निर्लज ! तुं वृथा पोतानी मेले पोताना आत्मानी म्होटाइ करीने शुं प्रशंसा करे छे. पोताना मुखथी जे पोतानी म्होटाइ करे तेमां कोइ गुण होय तो पण ते लघुताने पामी जाय अने परनी प्रशंसा करवाथी जो निर्गुणी होय तो पण गुणवान् थाय. गुणवंत होय तेना गुण तो पोतानी मेले ज प्रगट थाय छे. जेम कपूरनो सुगंध, रत्ननुं तेज अने मणिनुं निर्विषपणुं इत्यादिक जे गुणो छे ते पोतानी मेले ज प्रगट देखाइ आवे छे पण ते कोइ कोइनी आगल कहेवा जता नथी. तथा एकठा ज रहेनारा बे जण होय तेमांथी एक जण उठीने पोताना गुण बीजानी आगल वर्णवी देखाडे ते युक्त नथी. जेम माताना मुख आगल मामाना गुणनुं वर्णन करी देखाडवुं युक्त कहेवाय नहीं. तेनी पेठे ए पण जाणी लेवुं. माटे अहो ! श्रीश्रेयांस श्रीऋषभ देवना प्रपौत्र ! म्हारुं पण कर्तव्य जे छे ते तुं सांभल. परमेश्वरे जे बे कन्याने परणवानुं स्वीकार्युं, तेमने सूवा बेसवानुं ठेकाणुं तो म्हेज आप्युं. कारण के स्त्रीओ जे छे ते पतिना डाबा पासा तरफ सूवे–बेसे छे. एटले जमणे हाथे तो मात्र स्त्रीनो हाथ झालीने उठाडी मूकी, पण तेमने बेसवा माटे स्थानक तो म्हेज आप्युं १, वली हुं ढाल आगल राखीने संग्राममां विषे स्वामीनुं रक्षण करुं छुं. अने जमणो हाथ तो खड्ग उपाडीने पाछो नासी जाय छे २, वली हुं संग्राममां धनुष्यने आगल धारण करीने ऊभो रहुं छुं. अने आ जमणो हाथ तो तीर लइने कानना विषे चुगलनी परे पेसी जाय छे ३, वली आंक गणवानो व्यापार पण म्हारी पासेज थाय छे. एटले आंकनी वामगति होय छे ४, वली ग्रामांतरे प्रयाण करतां गधेडो पण जो म्हारी दिशा तरफ आवीने

बोले तो सिद्धिदायक छे ५, तेमज देवचकली पण डाबे पासे आवी बोले त्यारे शुभ फलनी सूचवनारी थाय छे ६, वली प्रथम प्रयाणना विषे प्रथम रात्रीना पहोरमां शृगालो पण म्हारी दिशाए रह्या बोले तो सिद्धिना करवावाला थाय छे ७, वली जे प्राणी रोगादिकथी पीडातो होय ते पण घणुं करीने डाबे पासे सूवे तो तेने समाधि कारक थाय छे ८, वली म्हारी तरफनी चंद्रनाडी वहेतां जो शुभ कामनो प्रारंभ कर्यो होय तो ते सिद्धिदायक थाय छे ९, वली सांभल के आ पापी जमणा हाथे प्रभुने परणवाना अवसरे कन्याओनो हाथ ग्रहण कर्यो, त्यारे पण मने बोलाव्यो नहीं अने कंसार पण एणे एकले ज खाधो. एम पण न जाण्युं के आ म्हारो भाइ भूख्यो छे माटे थोडोक एने पण बोलावीने खवाडुं. एवो विचार कर्या विना म्हाराथी कपट करीने ए एक लोज खाइ गयो, तेथी ए निःकेवल पेटभरो देखाय छे. फोकट पोताना मुखथी पोताना गुणनुं वर्णन करे छे. बीजी पण एनी निष्ठुरता कही देखाडुं छुं के—जे वखत मिष्टान्नपान भोजन करे त्यारे भोजन तो पोते करे अने मक्षिकाओ म्हारा पासे उडवावे तो पण हुं ते वखत म्हारी दाक्षिण्यताथी म्हारो म्होटो भाइ जाणीने एने कांइ कहेतो नथी. ए जमणा हाथमां चतुराइ किं वा बीजो कोइ गुण नथी; कारण के जे वखते मस्तके पाघडी वींटे छे, ते वखते एतो जेम तेम वींटी नाखे छे. पण पाछलथी बरोवर आंटा प्रमुख सुधारवा करवानुं काम, बराबर रचना करवी, सुंदर आकार करवो ते तो सर्व हुं ज करुं छुं. आ जमणो हाथ तो द्यूत रमवावालो छे. इत्यादिक तमोने केटलुं कहुं. अमारा बे जणना सारा माठा लक्षण तथा गुण अने अवगुणने सर्व जगत् जाणे छे अथवा आ श्रीऋषभदेव स्वामी पोते ज त्रण लोकना नाथ छे माटे सर्व जाणे छे. एवी रीते अमो बेहु जणने विवाद करता थका एक वर्ष व्यतीत थइ गयुं, तेथी भगवान्ने वर्षीतप

करवो पड्यो. एम कुटुंबनो विरोध क्यारे पण कल्याणकारी न थाय माटे ए घणोज हठी छे. तथापि हुं त्हारी दाक्षिण्यताथी एने समजावुं छुं. केम के कोइ प्रकारे ज्यारे कुटुंबमां विरोध उत्पन्न थाय छे त्यारे संबंधीने संबंधीओ ज पोत पोतामां प्रतिबोध आपी समजावे छे. एम कही डाबो हाथ, जमणा हाथने कहेवा लाग्यो के–भाई ! आ अवसरे आपणने विवाद करवो घटतो नथी. हमणां स्वामीने केवलज्ञाननी उत्पत्तिना विषे, तीर्थ प्रवर्तनना विषे अने संघस्थापनाने विषे आपणुं ज काम छे, एमां बीजा कोइनुं काम नथी. म्होटाओने पोतानुं काम ते पारके अर्थेज थाय छे. जेम माताए पीधेलुं दूध ते बालकना अर्थेज थाय छे, ते कारणे आ वखते आपणे विरोध करवो योग्य नथी. एवी रीते डाबो हाथ बोली रह्यो. त्यारे श्रेयांस कुमर बेहु हाथने समजाववा लाग्यो. अरे ! तमे बन्ने जण पोत पोताना काममां कल्याणकारी छो. परंतु हमणा तमे म्हारी प्रार्थना सफल करो. तमे बेहु एकठा थाओ के जे थकी भगवानने बार मासना तपनुं पारणुं थाय. अने म्हारे पण उत्तम दान आपवाथी संसार समुद्र थकी तरवुं थाय माटे तमे भला थइ, म्हारा ऊपर कृपा करीने, बेहु जण झगडो मटावीने भेगा थइ जाओ. एवी श्रेयांसनी विनंति सांभलीने बन्ने हाथ पसलीना आकारे एकठा मली गया. त्यारे श्रेयांस कुमरे शुद्ध भावथी सेलडीनो रस व्होरावी दीधो. तेनी शिखा ऊंची चढी तथापि एक बिंदुमात्र पण नीचे पड्यो नहीं. " जो हजारो घडा हाथमां ऊंधा वाली आपो अथवा सर्व समुद्रोना पाणी न्हांखो तो पण एक टीपुं हाथथी बाहेर पडी जाय नहीं. मात्र शिखा ऊंची चढती जाय एवी लब्धि ज्यारे प्राप्त थयेली होय त्यारे करपात्री थाय. छे " एं भगवानना लब्धिनो प्रभाव जाणवो. पछी स्वामीए त्यांज

पारणुं कर्युं. ते वखते पांच दिव्य प्रगट थयां—एकतो गंधो दक फूलनी वृष्टि थइ, बीजुं वसुधारानी वृष्टि थइ, त्रीजुं वस्त्रनी वृष्टि थइ, चोथुं आकाशे देवदुंदुभी वागी, पांचमुं "अहोदानमहो-दानम्" एवी उद्घोषणा देवोए करी. आ पात्रदानथी श्रेयांस कुमरे मोक्षफल उपार्जन कर्युं. ज्यां भगवाने पारणुं कर्युं त्यां रत्नमय पीठ कराव्युं. ए भगवानना पारणानो दिवस वैशाख शुदि त्रीजनो हतो, तेथी अक्षय त्रीज नामे पर्व जगतमां मान्य थयुं. लोकोए प्रशंसा करी के श्रीऋषभदेव सरखो पात्र अने सेलडीना रस सरखो शुद्ध आहार तथा श्रेयांस कुमरना जेवो भाव; ए कोइ म्होटा पुण्यना योग-थीज थाय छे. श्रीआदिनाथनुं पारणुं सेलडीना रसनुं थयुं अने बीजा तीर्थंकरोनुं प्रथम पारणुं खीर भोजनथी थयुं.

प्रभुना साथे श्रेयांसकुमरनो आठ भवनो संबन्ध—

श्रेयांसकुमरने लोकोए पूछ्यो के—अमे तो भगवान आहार लेशे एवुं जाणता न्होता. अने तमे शी रीते जाण्युं ? श्रेयांस बोल्यो के हुं भगवानना जीवनी साथे आठ भव पर्यंत रहेलो छुं. तेथी दान देवानो विधि सर्व जाणुं छुं. लोकोए कह्युं के ते आठ भव केवी रीते छे ? श्रेयांसे कह्युं के—पहेला भवमां भगवाननो जीव ललितांग देव हतो, त्यां हुं एमनी 'स्वयंप्रभा' नामे देवी हती, बीजा भवमां स्वामी वज्रंधर राजा थया, हुं तेमनी 'श्रीमती' नामे राणी थइ, त्रीजा भवमां अमे बेहु युगलीया थया, चोथा भवमां बेहु जण सौधर्म देवलोकमां जइ मित्रपणे देवता थया, पांचमा भवमां प्रभु वैद्यपुत्र जीवानंद नामे थया अने हुं एमनो मित्र थयो, छट्ठा भवमां अच्युत देवलोके जइ बेहु जण देवतामां मित्रपणे उत्पन्न थया. सातमा

भवमां प्रभु तो वज्रनाभ नामे चक्रवर्ती थया अने हुं एमनो सारथी थयो, त्यां तीर्थंकरनी पासेथी अमे दीक्षा लीधी, आठमा भवमां सर्वार्थ-सिद्ध विमाने देवतापणे उत्पन्न थया, त्यांथी चवी ए भगवान थया अने हुं एमनो पोतरो श्रेयांस थयो छुं ते वात एटला दिवस पर्यंत हुं कांइ पण जाणतो न्होतो. परंतु आजे म्हें भगवानने दीठा तेथी मुजने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं, म्हें सातमा भवमां दीक्षा पाली हती, तेनी सर्व रीत मने जाणवामां आवी. अने म्हें साधुनी मर्या-दाथी आहार व्होराव्यो, ए म्होटा पुरुष छे, एमने कांइ धनादिकनी गरज नथी, ए वात सांभलीने सर्व लोकोए साधुने आहार आपवानो विधि जाणी लीधो. एम आ अवसर्पिणी कालमां श्रेयांसकुमरथी प्रथम सुपात्रदान प्रवर्त्युं.

प्रभुए आहारान्तरायकर्म केवी रीते बांध्यो—

भगवानने एक वर्ष पर्यंत निराहार रहेवुं पड्युं अने आहार मल्यो नहीं ए कया अंतराय कर्मना उदयथी थयुं ? ते देखाडे छे—भग-वान पूर्वे कोइक भवमां शेठना जीव हता. ते शेठ एक दिवस कर-सणीयोनी पासे उघराणी करवा गया, ते करसणीए खलो कर्यो हतो. तेनुं धान कढावा सारुं ते करसणी पोताना बलदोने धानमां फेरवता हता. ते बलद फरता फरता जे वखते नीचे नमीने धानमां म्होढुं घाले त्यारे करसणी बलदोना म्होढानी ऊपर चाबका मारे, ते जोइ शेठने दया आवी. तेथी शेठे करसणियोने कह्युं के—अरे! एने तमो फोगट शा वास्ते मारोछो ? एमना म्होढा ऊपर छींकुं बांधी मूक, तो धान खाशे नहीं अने तमोने मारवानो परिश्रम पण पडशे नहीं. पछी करसणी-ओए बलदोना मुख ऊपर छींका बांध्या. ते छींका बार पहोर सुधी बांध्या रह्या. ए अंतराय कर्म भगवाने बांध्यो हतो, ते आ

भवमां उदय आव्यो. माटे कोइने पण अंतराय पाडवो नहीं.

धर्मचक्रपीठनी स्थापना अने वांग मूकवानी प्रवृत्ति—

भगवान विहार करता थकां बहुलीदेशमां तक्षशिला नगरीना उद्याने संध्या समयमां काउसग्गे रह्या. त्यांना वनपालके जइने बाहुबलिराजाने वधामणी दीधी. त्यारे वनपालकने दान आपी संतोषीने बाहुबलीए मनमां विचार्युं के 'हमणां सांज पडी अंधारु थयुं छे, तेथी थोडा वखतमां सर्व परिवार भेगो थइ शके नहीं. केमके त्रण लाख तो म्हारा पुत्र छे. वली पौत्रादिक अनेक छे. ते सर्व एकठा थइ शके नहीं माटे प्रभाते महामहोत्सव सहित प्रभुने वांदवा जइशुं' एम चिंतवी बेसी रह्यो, पछी प्रभाते नगरी शणगारी, घणा आडंबर सहित प्रभुने वांदवा गयो. एटलामां भगवान तो अप्रतिबंध विहारी छे माटे बाहुबली आव्यानी अगाउ विहार करी अन्यत्र चाल्या गया, तेथी बाहुबलीए भगवानने दीठा नहीं, तेथी घणो खेद कर्यो अने कानमां आंगलीओ नाखीने उच्चस्वरे रुदन कर्युं. तथा प्रभुना भूमिपर मंडेल बे पग पासे ऊभो रही बोल्यो 'हे बाबा आदम!, हे बाबा आदम!!' एवी वांग मूकी तेथी वांग मूकवानो रिवाज चालु थयो, हमणां पण

---

१ कोइक आचार्य कहे छे के-भगवाने ज्यारे महाविदेह क्षेत्रमां छ मित्रनी साथे चारित्र लीधुं हतुं. ते छएमां श्रीऋषभनो जीव म्होटो हतो. ते सपरिवार विहार करता करता कोइक कणबीना क्षेत्रनी वाडे गया, तेवामां ते कणबी पण धान कहाडवा माटे बलदोने फेरवतो हतो. हालतं खेडतां वचमां वचमां ते बलदो नीचा थइ थइने धान खाए त्यारे ते कणबी तेने परोणे करी मार आपे, ते देखी गुरु चिंतववा लाग्या के ए कणबी विचारा बलदोने परोणानो मार आपे छे, ते करतां जो ए बलदोना मुखे शींकु बांधी मूके तो कांइ पण धान खाइ शके नहीं. अने हींस्याज कां. एवी रीते मुखथी तो बोल्या नहीं, पण मनमां चिंतव्युं हतुं. ते कर्मना प्रभावथी प्रभु एक वर्ष सुधी आहार पाणी पाम्या नहीं.

मुसल्मान अने बोराओ बांग मूके छे. पछी भगवाननी भक्ति करवाने अर्थे ज्यां प्रभु काउस्सग्गमां ऊभा हता ते स्थानके 'धर्मचक्र' नामे आठ योजनना विस्तारवालो एक योजन ऊंचो, हजार स्थूणानो, अने हजार पगथीआवालो रत्नमय पीठ बांध्यो–थूभ कराव्यो. तेनी ऊपर भगवानना पगलां थाप्या. अने जाण्युं के एज भगवान छे. एवी बुद्धिथी नमस्कार कर्यो, बीजा लोकोए पण तेवोज महिमा कर्यो. अने ते धमचक्र तीर्थ तरीके प्रसिद्ध थयो त्यारथी बाहुबलीकृत पीठनो महिमा चाल्यो.

भरतप्रति मोरादेवी माताना ओलंभा—

जे दिवसथी भगवान दीक्षा लइने विहार करी गया ते दिवसथी मरुदेवीमाता भरत महाराजने ओलंभा आप्या करे छे अने कहे छे के हे भरत! जेम कमलना फूलोनी मालाने नाखी दइए तेम ऋषभो मुजने छोडीने चाल्यो गयो, अने एकाकी वनवासी थयो छे, भूख तृषाथी पीडातो हशे, क्यांएक मसाण अथवा गुफाओमां तपस्या करतो हशे, टाढ, ताप सहन करतो हशे. वर्षाकालमां भींजातो हशे, डांस, मच्छर, डंक मारता हशे, अरे! हुं पापणी छुं जे पुत्रने आटलुं दुःख थयुं छे, ते सांभलुं छुं. तेम छतां मरती केम नथी? माटे म्हारा जेवी दुःखणी क्यांय पण कोइ हशे नहीं, अरे भरत! तुं तो राज्यना सुखमां लोभाणो छो, म्हारा छोकरानी खबर पण कहाडतो नथी. तुं तो सर्व प्रकारना सुंदर भोजनो करावीने खाय छे. अने म्हारो पुत्र तो भिक्षा मांगी सूका टुकडा खाय छे, तुं तो सारा घरेणां पहेरे छे. अने म्हारो पुत्र तो नग्न फरे छे, तुं तो सुखे शय्यामां सूवे छे. अने म्हारो पुत्र तो कठण कांकरा कांटावाली जमीन ऊपर सुइ रहे छे, अरे! जे मधुर गीत गाने करी जागतो हतो, ते शृगालादिकना दुष्टस्वरे जागतो हशे,

वळी तेनी भूख तृषा अने शरीरनी शुश्रूषानी खबर कोण लेतो हशे. तथा अलवाणे पगे चालतो हशे इत्यादिक अनेक ओलंभा आपती रहे छे, पुत्रनी चिंताथी मरुदेवी मातानी आंखे पडल आवी गयां. भरतराजा समजावे छे के-माताजी ! तमे कांइ दुःख करो नहीं, तमारो पुत्र घणो सुखी छे. त्यारे फरी माता बोली के-मने देखाड, भरत बोल्या के-हवे थोडा दिवसोमां अहींयां आवशे, त्यारे हुं आपने देखाडीश. एम मरुदेवी माता भरतने ओलंभा देती रहे छे.

ऋषभदेवने केवलज्ञान, अने मोरादेवीनो मोक्षगमन—

श्रीऋषभदेव अरिहंते एक हजार वर्ष पर्यंत कायाने वोसरावी दीधी. अने शरीरनी शुश्रूषा त्यागी दीधी, एमने कांइ उपसर्ग थया नहीं. परन्तु एक वर्ष आहार मल्यो नहीं एज उपसर्ग थयो तेने सहन करता थकां, अने आत्माने भावता थकां, एक हजार वर्ष वीत्या त्यारे सीयालानो चोथो महिनो, सातमुं पखवाडियुं, फाल्गुन वदि अगीआरसना दिवसे पूर्वान्ह कालना समयना विषे पुरिमताल नगरना शकटमुख नामा उद्यानमां, न्यग्रोध वडवृक्षनी नीचे, पाणी रहित अट्ठम तप कीधे थके, उत्तराषाढा नक्षत्र साथे चंद्रमानो योग आवे थके, शुक्लध्यानना विचाले वर्त्ततां थका, जेनी समान बीजो कोइ जगतमां पदार्थ नथी. एवुं अनोपम अनंत केवलज्ञान अने अनंत केवलदर्शन उपन्यो. तेना योगथी प्रभु सर्व भावने जाणवा देखवा लाग्या. एज अवसरमां भरत महाराजनी आयुधशालामां चक्ररत्न पण प्रगट थयुं. त्यारे श्रीऋषभदेवना केवलज्ञाननी अने आयुधशालामां चक्ररत्न प्रगट थयानी बेहु वधामणी साथे आवी. वधामणी आपनारने हर्षदान आपीने विदाय कर्या. पछी भरतजी विचारमां पड्या के 'बे वधामणी साथे आवी छे एमांथी कोनो महोत्सव पहेलां करुं? एम क्षणेकवार विचारीने निश्चय कर्यो के चक्ररत्न तो सांसारिक छे अने

श्रीतीर्थंकरनो केवल महोत्सव तो लोकोत्तर छे. तथा पिताने पूज्या तो सर्वेने पूज्या, माटे प्रथम आ लोक अने परलोकमां सुखदायक जे केवलज्ञान तेनो महोत्सव करीने. पछी चक्ररत्ननी पूजा करीश.' एम निरधारी श्रीमरुदेवीमाता पासे आवीने कहेवा लाग्या के–माताजी ! तमे मुजने ओलंभा देता हता, ते तमारा पुत्र आजे अत्रे पधार्या छे माटे चालो म्हारी साथे. हुं तमारा पुत्रनो महिमा तमोने देखाडुं. एम कही मरुदेवीजीने हाथी ऊपर बेसाडी अने पछी पोते पण बेसीने घणा आडंबर सहित त्यांथी चाल्या. चालतां चालतां ज्यारे समवसरणनी नजीक आव्या, त्यारे माताजी बोल्या. के–भरत ! आ देव-संबंधि वाजा क्यां वाजे छे ? भरतजीए कह्युं–ए वाजा तमारा पुत्रनी आगल वाजे छे. तो पण माताजीए मान्युं नहीं. वली आगल चालतां घणा देव अने देवीओ समवसरणनी रचना करवा अने केवलज्ञाननो महोत्सव करवा आव्या छे. ते पोत पोतामां एक बीजाने हांकोहांक करी रह्या छे, ते सांभली मरुदेवीजीए भरतने पूछयुं के–आ कोलाहल शानो थइ रह्यो छे ? त्यारे भरतराजा बोल्या. के–माताजी ! आ तमारा पुत्रनी पूजा करवाने माटे देव–देवीओ आवे जाय छे, तेमनो कोलाहल थाय छे. तो पण माताए मान्युं नहीं. वली आगल जातां भरत महाराजाए कह्युं के–माताजी ! आ रूपा, सोना अने रत्नमयी त्रण गढवालुं तमारा पुत्रनुं घर तो जुओ ! एनी शोभानुं हुं शुं वर्णन करुं, एनुं वर्णन तो क्रोडो गमे ब्रह्माओ सहस्रजिह्वाओथी पण करी शके नहीं. ए वातने माताजी सत्य मानीने पोतानी आंखो हाथथी मसलवा लाग्यां तेथी पडल दूर थइ गया, त्यारे खरे खरो समवसरण दीठो. त्यां अनेक देव देवीयोने देखी मनमां विचार कर्यो के जुओ तो खरा, आ मोहनी विकलता केवी छे. हुं तो जाणती हती के म्हारो पुत्र दुःखी छे पण आ तो घणा ज सुखमां मस्त छे.

हुं तो रडी रडीने आंधली थइ गइ, आंखे पडल वली गया. अने एणे तो मने संभारी पण नहीं, म्हारी तो ऋषभ ऋषभ करतां जीभ पण सुकाइ गइ. भरतने पण ओलंभा देती हती के-म्हारो पुत्र भूख, तृषा, टाढ, तडका तथा वर्षाद आदिकनी पीडा खमे छे अने उपान्ह तथा वाहन रहित थको एकाकी डूंगर, वन तथा अटवीओमां भ्रमण करे छे तेने मनावी लइ आव, अने ए तो म्हारा दुःखने कांइ पण जाणतो नथी, सुखवार्त्ता पण पूछतो नथी, अहीं आव्यो तो पण मने संदेशो मोकल्यो नहीं, माटे धिक्कार छे ए मोहने. तो हवे म्हारे पण पुत्रनी साथे शुं काम छे ? हुं कोण अने आ पुत्र ते वली कोण ? जगतमां कोइ कोइनुं नथी, सर्वे स्वार्थी छे, अरे ! म्हारा पुत्रे मने एटलुं पण कह्युं नहीं के हुं सुखियो छुं. म्हारी चिंता करशो नहीं, परंतु ए शा वास्ते एम कहे. केम के ए तो निरागी छे, एने कोइनी ऊपर राग रह्यो नथी, अने हुं तो सरागी छुं. तेथी मने तो एवा विकल्प थाय एमां कांइ संशय नथी. तो हवे म्हारे पण ए निरागी साथे श्यो प्रतिबंध करवो. ए एक पखिया स्नेहने धिक्कार हो. इत्यादिक चिंतवना करी, सर्व वस्तु ऊपर ममत्व रहित थइने श्री मरुदेवी माताजी, शुभध्याने अव्यक्त भावना भावता थका केवलज्ञान पाम्या, अने अंतगड केवली थइने तेज वेलामां ऋषभदेवप्रभुथी पहेलां मोक्षे पोहोता. कवीश्वर कहे छे के-

'पुत्रो युगादीशसमो न विश्वे, भ्रान्त्वा क्षितौ येन शरत्सहस्रम् ।
यदर्जितं केवलरत्नमग्र्यं, स्नेहात्तदेवार्पित मातुराहुः ॥ १ ॥

मरुदेवी समा नास्ति, याऽगात्पूर्वं किलेक्षितुम् ।
मुक्तिकन्यां तनूजार्थं, शिवमार्गमपि स्फुटम् ॥ २ ॥

श्रीयुगादिदेव सरखो पुत्र बीजो कोइ विश्वमां थयो नथी, अने थाशे पण नहीं. के जेणे पृथ्वीने विषे एक हजार वर्ष पर्यन्त भ्रमण

करी, अने कष्ट सहन करीने कमावेल अमूल्य केवलज्ञान रूप महारत्न ते परम स्नेहथी प्रथम पोतानी माताने आप्युं, तेमज मरुदेवी समान कोइ माता पण थइ नथी, अने थाशे पण नहीं. केम के-जे पुत्रने परणाववाने अर्थे मुक्तिकन्या जोवाने माटे आगलथी ज त्यां गइ. एम आ अवसर्पिणीमां पहेलवहेला श्रीमरुदेवीजी मोक्ष गया. इन्द्रादिके तेना शरीरनुं संस्कार करी क्षीरसमुद्रमां परठव्युं. पछी इन्द्रना वचनथी शोक निवर्त्तावी, वापिका मांहे स्नान करी, भरत महाराजे हर्ष शोकाकुल थका भगवंतने जइ वांद्या एम पहेल वहेलुं केवली नाम प्रवर्त्तमान थयुं.

श्रीचतुर्विधसंघनी स्थापना—

भरत महाराज श्रीऋषभदेव स्वामीने नमस्कार करीने परषदामां बेठा, त्यारे भगवाने धर्मोपदेश दीधो. त्यां पहेली देशनामां ऋषभसेन प्रमुख पांचसो भरतना पुत्र तथा सातसो भरत राजाना पोतरा सर्व मली बारसौ कुमाराए दीक्षा लीधी. ए बारसो कुमारोमां मरिचि पण भेगो जाणवो. त्यां पुंडरीकादिक चोरासी गणधरोनी थापना करी तथा ब्राह्मीए बाहुबलने पूछीने दीक्षा लीधी. ए प्रथम साध्वी थइ अने भरत महाराज श्रावक थया तथा सुंदरी दीक्षा लेती हती तेने घणी स्वरूपवाली जाणीने स्त्रीरत्न स्थापवा सारुं भरते दीक्षा लेवानी आज्ञा आपी नहीं. त्यारे ते श्राविका थइ एम साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध संघनी स्थापना अने धर्मनी प्ररूपणा करीने प्रथम तीर्थंकर नाम धारण कर्युं. जे वृक्षना नीचे प्रभुने केवलज्ञान उपन्यो तेनुं नाम 'प्रयागवड' थयुं. ते वृक्षनी लोकोमां पूजा चाली. हमणां पण प्रयागवड नामथी ते पूजाय छे तथा कच्छ अने महाकच्छ ए बे तो तापसज रह्या. बीजा सर्वे भद्रक-परिणामवाला तापसो प्रभु पासे आवी फरीथी दीक्षा लीधी, भरतमहाराज वांदीने

पाछा अयोध्यामां आव्या. अने श्रीऋषभदेवप्रभुए अनेक जीवोने तारवा माटे अन्यत्र विहार कर्यो.

षट्खंडसाधना, अने सुंदरी तथा ९८ भाईओनी दीक्षा—

भरतराजाए घरे आवीने चक्ररत्ननो अट्ठाइ महोत्सव कर्यो. पछी छ खंड-पृथ्वी साधवाने अर्थे भरत महाराज सैन्य लइ चाल्या तेनी आगल हजार देवताधिष्ठित चक्ररत्न चाल्युं. ते जेटला योजन दूर जइ रहे तेटला योजन सैन्य पण चाले, अनुक्रमे तमिस्रा गुफा पासे जइ पडाव कर्यो. त्यां नवी नवी रीते अने नवा नवा वेशे गंगा-देवीनी साथे विषयसुख भोगव्या, पछी गंगादेवीए मार्ग आप्यो. त्यारे तमिस्रा गुफा मार्गे जइने म्लेच्छोना देश साध्या; एम षट्खंड साधीने साठ हजार वर्षे भरतजी पाछा अयोध्यामां आव्या. वली नमी विद्या-धरना घेर स्त्रीरत्न नवुं उपन्युं, ते भरतजी परण्या सुंदरीए पण साठ हजार वर्ष सुधी आयंबिल तप कर्युं, तेथी दुर्बल थइ गइ. पछी भरतजी ज्यारे आव्या त्यारे सुंदरीए भरतने मोतीयोथी वधाव्या. सुंदरीने दुर्बल देखीने लोको ऊपर भरत खीज्यो, अने कहेवा लाग्यो के तमे एनी सार संभाल कांइ करी नहीं, त्यारे लोक बोल्या. एणे आयंबिल तप कर्युं तेथी दुर्बल थइ छे. पछी भरतजीए तेने संयम लेवानी आज्ञा आपी, सुंदरी पण दीक्षा लइने साध्वी थइ, हवे भर-तजी अयोध्यामां सुख भोगववा लाग्या. एवामां आयुधशालानो अधि-ष्ठायक पुरुष आवीने भरतने कहेवा लाग्यो के स्वामिन्! चक्ररत्न आयुध-शालामां आवतुं नथी. भरते पूछ्युं के केम नथी आवतुं ? त्यारे अधिकारीए कह्युं के—तमारा भाइओ तमारी आज्ञा मानता नथी तेथी नथी आवतुं. त्यारे भरते सर्वे भाइओने दूत मोकलीने कहेव-राव्युं के जो तमो राज्य करवानी चाहना राखता हो तो सर्वे भाइओ म्हारी आज्ञा मानो, सेवा करो, नहीं तो राजनो त्याग करो, ते सांभली

अट्ठाणुं भाइयोए विचार्युं के आपणने राज्य तो पिताजीए दीधेल छे. तो भरतनी चाकरी शा माटे करीए, एम चिंतवी भगवान पासे गया. भगवाने अंगारा करवा वालानो दृष्टांत आपी, सूयगडांग सूत्रनो 'वेतालिय अध्ययन' संभलाव्युं तेथी प्रतिबोध पामीने सर्व भाइयोए दीक्षा लीधी, भगवानना शिष्य थया.

भरत बाहुबलिनो युद्ध अने बाहुबलने दीक्षा–केवलज्ञान—

मुख्य अधिकारी पुरुषे भरतने विनव्युं के स्वामिन्! आपना ९८ भाइयोए दीक्षा लीधी तो पण 'चक्ररत्न' आयुधशालामां आवतो नथी?, त्यारे मंत्रीश्वर बोल्यो के—स्वामिन्! बीजा तो सर्व आपनी आज्ञा माने छे पण बाहुबली महा अहंकारनो धरनार छे ते आपनी आज्ञा मानतो नथी, पोतानी भुजाना बलनुं पराक्रम घणुं दखाडे छे. माटे एने मूलथी उठाडी देवो जोइए. ए म्होटो रोग छे ते तमोने व्याधि उत्पन्न करे छे. एवुं सांभली भरतराजाए 'सुवेग' नामा दूतने सर्व वात समजावीने बाहुबलीनी पासे मोकल्यो. ते दूतने जतां थकां पुंठे छींक थइ, वस्त्र कांटो वलग्यो, रथनी पींजणी भांगी, जमणो रासभ बोल्यो इत्यादिक अनेक अपशुकन मार्गमां थयां तो पण ते वन, अटवी अने पहाड प्रमुख उल्लंघन करीने बाहुबलीना देशमां पांहोच्यो. तेने मार्गमां पूंछ भर्यो देखीने गोवालणीयो तथा पाणीहारीओए पुछ्युं के तमे कोण छो? क्यांथी आव्या अने कोण तमारो मालेक छे? त्यारे दूते कह्युं, हुं भरतराजानो दूत छुं, ते सांभली स्त्रियो बोली के भरत ते शुं? शुं अमारा पहेरवानी कांचलीओमां भरत काढीए छीए ते? अथवा वासणमां भरत किंवा रोग संबंधि भरत? ए त्रण भरत तो अमे जाणीए छीए. परंतु ए त्रण विना बीजो कोइ भरत छे, एवुं तो अमे सांभल्युं पण नथी. त्यारे दूत आश्चर्य पाम्यो. अने विचारवा

लाग्यो के आ बाहुबलीनुं राज्य अने प्रजा पण जबरजस्त छे. एम वातो सांभलतो विचार करतो तक्षशिला नगरीमां गयो. त्यां दरवाजा ऊपर पोलीए रोकी राख्यो. ज्यारे बाहुबलीनी आज्ञा आवी त्यारे गाम मांहे प्रवेश करी, राज्यसभामां गयो. बाहुबलजीए आसन ऊपर बेसाडीने. पूछ्युं के अरे दूत ! भरतने पोताना सवाक्रोड पुत्रादिको सहित कुशल छे ? दूत बोल्यो-राजन् ! लाखो गमे देवताओ जेनी चाकरीमां तत्पर रहेला छे तेने कुशल केम न होय ? कुशल ज छे. परंतु आप तेनी चाकरीमां आव्या नहीं, तेथी ते सर्व वात निष्फल गणे छे. माटे तमे भरत राजानी पासे पधारो, अने एटला दिवस नहीं आव्या तेनो अपराध खमावो. ते पण तमारो म्होटो भाइ छे, ते तमारा पितानी जग्याए छे. माटे तमारो सर्वे अपराध माफ करशे. अनेक राजाओ तेनी सेवा करी रह्या छे ते तमोने तो अवश्य पूजवा योग्य ज छे. एवा दूतना वचन सांभली बाहुबली ते वचनोनो परमार्थ जाणी गयो. अने भृकुटी चढावी, राता लोचन करी बोलवा लाग्यो के अरे दूत ! तुं मारवा योग्य नथी माटे तने मारतो नथी. पण न्हाना अठ्ठाणुं भाइओना राज्य तो लइ लीधा, अने म्हारुं पण राज्य लेवा वांछे छे; तेथी भाइनो स्नेह तो जाणी लीधो. हवे तुं तेने कहेजे के बालपणामां ज्यारे आपणे बेहु रमत करता हता, त्यारे हुं तुजने दडानी पेठे म्हारा हाथमां धरतो हतो ते दिवस भूली गयो छे के शुं ? हुं तो तेनो तेज छुं. म्हारा पासे चाकरी करावबानी वांछा राखवी ते म्होतने आमंत्रण करवा जेवुं समजवुं. दूत बोल्यो हे राजन् ! जो बे दिवस सुखे जीववानी तमोने वांछा होय अने कुंटुबनी साथे प्रयोजन होय तो तमे एनी सेवा भक्ति करो, हुं तमोने सत्य कहुं छुं. ते सांभली क्रोध करीने बाहुबले दूतने धक्का अपावी कहाडी मूक्यो. दूत पण पाछ-

ळना बारणाथी निकळी पोतानो जीव लइ नाशी गयो. ते चालतो चालतो अयोध्यामां आवीने भरत राजानी आगळ बनावी बनावीने घमणी वात कही संभळावी. त्यारे भरत पण रणभंभा वजडावी, चतुरंगिणी सेना लइने, पोते श्रीऋषभदेवजीनी पूजा करी, वज्रसन्नाह पहेरी, हस्तिरत्न ऊपर बेसी चाल्यो, तेनी पछवाडे सेना सवा क्रोड पुत्र तथा पुत्रना पुत्र (पोतरा) पण घणा चाल्या. चोराशी लाख हाथी, चोराशी लाख अश्व, चोराशी लाख रथ, छन्नुं क्रोड पायदळ, शोळ लाख रणतूर वजाडनार, दस क्रोड ध्वजा, चौद हजार म्होटा मंत्रीश्वर, अढार क्रोड म्होटा घोडा, पचास क्रोड दीवेटीआ, चोराशी लाख म्होटा निशान, नव निधान, चौद रत्न, सोळ हजार यक्ष, बत्रीश हजार मुकुटबद्ध राजा, वारांगना सहित बमणी चोसठ हजार अन्तेउर अने बत्रीश हजार नाटक, वळी बीजा पण घणा विद्याधर, यक्ष, किन्नरादिक अनेक प्रकारनो परिवार चाल्यो, भरते रणपट्ट मस्तके बंधावीने सुषेणनामा सेनाधिपतिने आगळ कर्यो. एवी रीते सेना लइने चढ्यो, अनुक्रमे बहुली देशनी सीमामां आवीने लश्करनो पडाव दीधो. बाहुबलि पण भरतजीनो आवागमन सांभळीने श्रीऋषभदेवजीनी पूजा करी. वज्रनो सन्नाह पहेरीने, सर्व जगतने तृण समान मानता, भद्रनामा हस्ती ऊपर बेसीने, लडवा माटे निकल्यो. तेनी पछवाडे त्रण लाख पुत्र तथा पोतरा पण बार हजार राजा तथा घणा विद्याधरो, अनेक सुभट, हाथी, घोडा, रथ, पायक प्रमुख सहित चाल्या. बाहुबलिए पोताना पुत्र सिंहरथने सेनापति बनावीने सौथी आगळ चलाव्यो, ते पण जइ भरतनी सेनाने मळ्यो. त्यां बेहु सैन्य एकठा मळवाथी धरती कंपवा लागी. समुद्र चलायमान थयो, पर्वतना टोंक पडी गयां, भरतनी सेनामां सोळ लाख रणतूर वाजते अने बाहुबलनी सेनामां पण लाखो गमे रणतूर वाजते तथा

बंदीजनो बिरुदावली बोलते बन्ने तरफना सैन्यनुं मांहोमांहे युद्ध थवा लाग्युं. हाथीए हाथी, घोडे घोडा, रथे रथ, विद्याधरे विद्याधर, पाले पाला एम न्यायथी युद्ध शुरु थयो. एटलामां सुषेण नामा सेनापतिए पोतानी सन्मुख सिंहरथने आवतो देखीने कह्युं के–हुं तो भरतनो चाकर छुं अने तुं तो बाहुबलनो पुत्र छे तेथी तुं म्हारो स्वामी छे माटे तुं पहेला म्हारा ऊपर शस्त्र चलाव. ते सांभली सिंहरथे तेना ऊपर शस्त्र चलाव्युं. त्यारे सुषेण सेनानीए खड्ग चलाव्युं. मार्गमां सिंहरथना भाइ सिंहकेतुए ते खड्गने पाडी नाख्युं. तेथी सुषेणने घणो क्रोध चढ्यो. त्यारे ते बाहुबलनी सेनाने विलोवीने बाहुबलनी पासे गयो. एवामां अनिलवेग विद्याधर आवी, बाहुबलने नमस्कार करीने सुषेणनी सन्मुख लडवा आव्यो. ते बेहु जण मल्लनी पेठे परस्पर मुष्टा मुष्टियो अने लठ्ठा लठ्ठियोनो युद्ध करवा लाग्या. ते वखते सुषेण खड्ग लइने सिंहरथने मारवा जाय छे एटलामां तो सूर्य अस्त थयो. “ एमना संग्राममां एवी मर्यादा छे के–कोइ पण श्रीऋषभदेवजीनी आण आपे तो लडवुं नहीं, बीजी सूर्य अस्त थया पछी लडवुं नहीं, त्रीजी मेघ वरसतो होय त्यारे लडवुं नहीं, जे सांज पड्यानी अगाउ मरी गया तेनो तो कोइ उपाय नहीं. परन्तु रात्रिमां जे अर्द्ध मरेला होय तेमने कांगणीरत्नना जले करी भरत पोताना सैन्यना माणसोने साजा करे. अने बाहुबली सोमयशना हृदयना आभरणोना जलथी साजा करे, एवी मर्यादा छे. ” फरी बीजा दिवसनी प्रभाते युद्ध थवा मांड्युं. त्यारे सुषेण सेनानी अनिलवेगने देखीने अग्निनी परे बलवा लाग्यो अने अनिलवेगने मारवा आव्यो. एटलामां सिंहरथ वचमां आवी आडो पड्यो. अने सुषेणनी सामो लडवा ऊभो रह्यो. त्यारे अनिलवेग भरत राजानी सर्व सैन्याने उल्लंघन करी ज्यां हाथीओना त्रण कोट बनावीने भरतराजा सूतो छे.

त्यां आवीने हाथीओने कांकरानी पेठे उछाली महा विकराल रूप धारण करीने सैन्यनुं मथन करतो करतो भरतनी पासे आव्यो. भरते जाण्युं के आ दुर्द्धर विद्याधर छे ते म्हारी सुरत चूकावी देशे माटे ए न होय तो सारुं एम चिंतवी तेना ऊपर चक्ररत्न मूक्युं. चक्रने देखी अनिलवेग नाठो; परन्तु ज्यां जाय त्यां चक्र पाछलनुं पाछल चाल्युं आवे. त्यारे अनिलवेग वज्रपिंजर बनावीने छ महिना सुधी लवण समुद्रमां बेसी रह्यो, पण चक्र माथे भमतुंज रह्युं. छ महीना पछी समुद्रमांथी गावडी बाहेर कहाडी त्यारे चक्रे ते गावडीने कापी न्हांखी. भरतपुत्र सूर्ययश बाहुबलीनुं कटक उलंघीने बाहुबल पासे आव्यो अने कहेवा लाग्यो के मने शस्त्र मारो, त्यारे बाहुबली हसीने बोल्यो—अरे! तुं इक्ष्वाकुवंशमां भलो सूरवीर छे, पण हुं जो तुजने एक मुष्टी मात्र मारीश तो पण तुं चूर्ण थइ जइश. माटे दूर ऊभो रहे. पछी तेने देवताए कह्युं के अरे मूर्खा! बाहुबली साथे तुं शुं लडवा आव्यो छे नाहकनो मार्यो जइश. माटे चाल्यो जा. त्यारे ते जतो रह्यो. एवी रीते बार वर्ष पर्यंत युद्ध चाल्युं, क्रोडो माणसो मरी गया, लोहीनी नदीओ व्हेवा लागी पण कोइ हार्यो नहीं. त्यारे घणो अनर्थ थतो देखी सौधर्मेन्द्र अने चमरेन्द्र भरतनी पासे आवी कहेवा लाग्या के भगवान तो लोकोनुं पालण पोषण करी गया अने तमे माणसोनो नाश करवा तैयार थया छो ए शुं? भरत कहेवा लाग्यो के बाहुबली मारी आज्ञा न माने त्यांसुधी चक्र आयुधशालामां आवतुं नथी, तो हवे कहो हुं शुं करुं? ते सांभली इन्द्र बोल्या—तमे बन्ने भाइ परस्पर युद्ध करो पण बीजा माणसोनो नाश म करावो, ए वात भरते कबुल करी. पछी ते बेहु इन्द्र बाहुबली पासे आव्या अने कहेवा लाग्या के आ प्रमाणे युद्धमां लोकोनो नाश करवो ठीक नथी माटे तमे बे भाइओ ज

अरस्परस युद्ध करो. बाहुबलीए पण ते वात मान्य करी. पछी इन्द्रे मलीने एक दृष्टियुद्ध, बीजुं वाक्‌युद्ध, त्रीजुं बाहुयुद्ध, चोथुं मुष्टियुद्ध, अने पांचमुं दंडयुद्ध ए पांच युद्ध करवानो ठराव कर्यो. अने बन्ने लश्करोने श्रीआदिनाथजीनी सोगन आपीने दूर कर्यां. पछी पाणी छटकावी, फूल बिछावी, भूमि शुद्ध करीने मुकुट, टोप, सन्नाह पहेरी बेहु भाइ सामसामा लडवाने आव्या. ते युद्धने देवता आकाशमां साक्षीधर रह्या थका देखे छे. प्रथम भरत अने बाहुबली बे भाइ आंखो कहाडीने एक बीजानी सन्मुख दोड्या, आंख टमकार्या विना मांहोमांहे एक बीजाने देखताज रहे, महा सूरवीर छतां पण जेम सूर्यनी सांमो देखवाथी आंखमां पाणी आवी जाय, तेम भरत राजानी आंखोमां पाणी आवी गयुं. ते जोइ देवता फूलोनो वरसाद वरसावीने बोल्या के--बाहुबली जीत्यो, अने भरत हार्यो; ए प्रथम युद्ध. पछी भरते सिंहनाद कर्यो, तेथी पर्वत कंपायमान थया अने बाहुबलीए सिंहनाद कर्यो तेथी ब्रह्मांड फूटवा जेवो शब्द थयो अने भरते पोताना कान ढांकी लीधा, ते जोइ देवता बोल्या के बाहुबल जीत्यो अने भरत हार्यो ए बीजुं युद्ध. पछी बाहुयुद्धमां प्रथम भरत राजाए हाथ लांबो कर्यो, तेने बाहुबलीए कमलनालनी परे वाल्यो अने बाहुबलीए पोतानो बांह लांबो कर्यो तेने भरत वालवा गयो पण लगार मात्र चसक्यो नहीं. हिंडोलानी परे भरतजी लटकी गया, ते देखी देवो बोल्या के--बाहुबली जीत्यो अने भरत हार्यो ए त्रीजुं युद्ध. ते पछी मुष्टीयुद्ध करवा लाग्या. तेमां प्रथम तो बन्ने भाइ मल्लोनी पेठे भुजास्फोट करता मल्या. पछी भरते बाहुबलीने मुष्टी मारी तेथी बाहुबलीनी थोडीशी वार आंखो मींचाई गई. पछी भरतने दडानी परे उपाडीने आकाशमां उछाली दीधो. परंतु फरी अनुकंपा आणीने पोताना हाथमां पकडीने एक मुष्टी मारी

तेथी भरतजी जमीनमां पेसी गया ते जोइ देवता बोल्या के बाहुबली जीत्यो अने भरत हारी गयो. ए चोथुं युद्ध. पछी पांचमुं दंडयुद्ध करवा मांड्यो तेमां प्रथम तो भरत महाराजे लोहदंड लइने बाहुबलने मार्यो, तेथी बाहुबलीनो मुकुट माटीना घटनी परे चूर्ण थइ गयो अने बाहुबली गोडा सुधी जमीनमां पेसी गयो. पछी जमीनमांथी बाहेर निकलीने बाहुबलीए लोहदंड मार्यो, तेथी भरतनो मुकुट चूर्ण थइ गयो. अने भरत महाराजनुं संपूर्ण शरीर धरतीमां पेसी गयुं. ते जोइने देवता बोल्या के आ युद्धमां पण बाहुबली जीत्यो, अने भरत हारी गयो. ए पांचमुं युद्ध. एम पांचे युद्धमां भरतजी हारी गया त्यारे चिंतातुर थई विचार करवा लाग्या के म्हारुं राज्य ए लइ लेशे. आ ते वली कोइ बीजो चक्रवर्त्ति थयो छे के शुं ? एवुं चिंतवीने पछी चक्रने पोताना हाथमां लइ, भमाडीने पोतानी करेली प्रतिज्ञानो भंग करी बाहुबली ऊपर मूक्युं, पण पोताना गोत्रमां चक्र चाले नहीं, तेथी ते चक्र बाहुबलीने त्रण प्रदक्षिणा आपीने पाछो जइ भरतना हाथमां आवी बेठो. एवी रीते भरते ज्यारे प्रतिज्ञानो भंग कर्यो. त्यारे बाहुबलने अत्यंत क्रोध चढ्यो तेथी भरतनी ऊपर मुष्टी उपाडीने मारवा दोड्यो. त्यारे देवता बोल्या के विचार करो. ते सांभली बाहुबलीए विचार्युं के धिक्कार छे आ राज्यने के जेना लीधे म्होटा भाइने पण मारवानो विचार थयो एवी रीते वैराग्य पामीने बाहुबले पोते भरतने मारवा माटे जे मुष्टी उपाडी हती, तेज मुष्टीथी पोताना मस्तकनो लोच करी दीक्षा लइ लीधी देवताओए फूलनो वर्षाद वरसाव्यो, बाहुबलजीए त्यांथी विहार कर्यो. भरत राजा विलाप करवा लाग्यो के म्हारा सर्व भाइओ दीक्षा लइने जता रह्या. पछी बाहुबलीना पुत्र सोमयशने तक्षशिला नगरीनुं राज्य आपी भरत राजा अयोध्या नगरीमां आव्या. विहार

दरमियान बाहुबलना मनमां विचार थयुं के म्हारा न्हाना अठ्ठाणुं भाइओए प्रथम श्रीऋषभदेवजीनी पासे दीक्षा लीधेल छे, ते केवली थया छे. माटे हमणा हुं भगवानना समवसरणमां जइश तो न्हाना भाइओने वंदना करवी पडशे, माटे हुं अहींआंज काउसग्गे रही, केवलज्ञान प्राप्त करीने पछी प्रभु-पासे जइश. एवुं चिंतवी मनमां अभिमान धारण करीने काउसग्गमां रह्या थका एक वर्ष वीती गयुं. मस्तक ऊपर वेलडियो वींटाइ गइ. तेने प्रतिबोधवा माटे श्रीऋषभदेवस्वामीए ब्राह्मी अने सुंदरी ए बे साध्वीओने मोकली, ते त्यां आवीने बाहुबलजीने कहेवा लागी के–वीरा ! हे भाइ ! तमे गज ऊपरथी नीचे उतरो. हस्ती ऊपर आरूढ थयाथी केवलज्ञान उपजशे नहीं. एटलुं तेमनुं बोलवुं सांभलतांज बाहुबलजीए विचार्युं के आ साध्वीयो क्यारे झुठुं बोले नहीं, माटे हाथी तो म्हारी पासे नथी. परंतु अहंकार रूप हाथीनी ऊपर हुं चढेलो छुं एम विचारी माननो त्याग करी पग उपाड्यो के तरतज केवलज्ञान पण उपन्युं. अने प्रभुना समवसरणमां जइ केवलीनी परषदामां बिराजमान थया.

ब्रह्मभोजन अने यज्ञोपवीतनी प्रवृत्ति—

एक दिवसे भगवान अष्टापद पर्वत ऊपर समवसर्या. त्यारे भरतमहाराजाए विचार्युं के बीजुं तो म्हाराथी कांइ थतुं नथी पण आ सर्व साधुओने आहार व्होरावुं तो लाभ मले. एवुं जाणी पांचसे गाडा सूखडीना भरी लाव्या अने भगवानने कहेवा लाग्या. स्वामिन् ! आजना दिवसे आ सर्व साधुओने आहार कराववानो हुकम म्हारे घेर थइ जाय तो घणुंज रुडुं थाय. त्यारे भगवाने कह्युं के–आधाकर्मिक राज्यपिंड साधुओने लेवुं कल्पे नहीं, तेमज सन्मुख लावेल आहार पण साधुओने कल्पतुं नथी. एवुं सांभली भरत राजाए जाण्युं के हुं

तो सर्व प्रकारे भक्ति रहित थयो, एम फिकर करवा लाग्यो. ते जोइ इन्द्रमहाराजे भगवानने पुछयुं के--हे प्रभो ! अवग्रह केटला प्रकारना छे ? भगवान बोल्या--पांच अवग्रह छे तेमां--एक इन्द्रनो अवग्रह, बीजो राजेन्द्रनो अवग्रह, त्रीजो ग्रहपतिनो अवग्रह, चोथो सागारिकनो अवग्रह अने पांचमो साधर्मिकनो अवग्रह. ए पांच अवग्रह जाणवा. ते सांभली इन्द्र बोल्या. हुं तो आपना सर्व साधुओने म्हारा सर्व क्षेत्रमां सुखे विचरवानी आज्ञा आपुं छुं. त्यारे भरत महाराज बोल्या के म्हारी छ खंड पृथ्वीमां हुं पण आपना सर्व साधुओने विचरवानी आज्ञा आपुं छुं, एम कहेवाथी भरतने घणो संतोष थयो. वली भरते इन्द्रने पूछयुं के आ आहारनुं हवे शुं करवुं ? त्यारे इन्द्रे कह्युं के--ताराथी अधिक गुणवान होय तेने ए आहार जमाडी दे. पछी भरते पण ते आहार श्रावकोने जमाड्यो. अने ते पछी भरतराजा सदा सर्वदा श्रावकोने जमाडवा लाग्यो. केटलाएक काल पछी ज्यारे घणा जमनारा थया, त्यारे परीक्षा करीने ओलखान माटे कांगणीरत्नथी देव, गुरु अने धर्मरूप त्रण तत्व संबंधी त्रण रेखाओ प्रत्येक श्रावकने करी. अने ते श्रावकब्राह्मणोने स्वाध्याय करवा माटे भरतजीए श्रीऋषभदेवस्वामीनी स्तुति गर्भित--१ संसारदर्शन, २ संस्थापनपरामर्शन, ३ तत्त्वावबोध अने ४ विद्याप्रबोध; आ चार वेदोनी रचना करी. त्यांथी ब्रह्मभोज अने जनोइ आपवानी चाल पडी. एकदा भरत राजाए इन्द्रमहाराजने पूछयुं के तमारुं खरेखरुं रूप केवुं छे ? त्यारे इन्द्रे एक अंगुली बतावी ते महाज्वाला मालाकुल देखीने भरत चमत्कार पाम्यो. तेथी वर्षोवर्ष ' इन्द्रमहोत्सव ' चालु थयो.

भरतचक्रवर्तीनो निर्वाण--

एक दिवसे भगवंत विहार करतां विनीतानगरीमां आव्या. भरत

वांदवा आव्यो, प्रभुए देशना आपी संसारनुं अनित्यपणुं देखाडयुं, जीव कर्मना भारे करी तुंबडाना दृष्टांते संसारमां बूडे छे, जेम तुंबडाने माटी चोपडी पाणीमां मूकीए तो हेठुं बेसे, तेम आठ कर्मोथी जीव भारी थयो थको हेठो बेसे छे, एवी भगवाननी वाणी सांभली भरत मनमां वैराग्य पाम्यो, ज्ञान दशामां लय लीन थयो. एम अनुक्रमे एकदा भरतराजा आरीसा भवनमां बेठा थका अनित्य भावना भावतां केवलज्ञान पामी, मोक्षे गया. पछी तेमना पाटे आदित्ययशा राजा थया. तेणे सोनानी जनोइ करीने श्रावक जमाड्या, तेनी पाटे महायशा राजा थया तेणे रूपानी जनोइ करीने श्रावक जमाड्या. एम आठ पाट लगे श्रावक जमाड्या. तेमां केटलाएक राजाओए सूत्रनी जनोइ करी जमाड्या छे, पछी ते जनोइना पहेरनार सर्व ब्राह्मण कहेवाया. आठमा तीर्थंकरनो तीर्थविच्छेद थयां पछी तेज श्रावक ब्राह्मणोए लोभलालचमां पडी अने धर्मभ्रष्ट थइने भरतरचित वेदोमां परिवर्त्तन करी तथा तेमां स्वार्थलोलुपताना पाठो उमेरी ऋग् १, यजु २, साम ३, अथर्व ४, ए कल्पित वेद बनाव्या. भरतनी पाटे आदित्ययशा, तेनी पाटे महायशा, तेनी पाटे अभिबल, तेनी पाटे बलभद्र, तेनी पाटे बलवीर्य, तेनी पाटे कीर्त्तिवीर्य, तेनी पाटे जलवीर्य, तेनी पाटे दंडवीर्य, ए आठ राजाओए भगवंतनो मुकुट पहेर्यो. अने ए आठे राजा आरीसा भवनमां केवली थइ मोक्षे गया.

श्रीऋषभदेवप्रभुनो परिवार अने निर्वाण—

भगवान श्रीऋषभदेवजीए एक लाख पूर्व पर्यंत विचरीने घणा जीवोने प्रतिबोध्या, श्रीऋषभदेवजीने ऋषभसेन प्रमुख चोराशी गणधर थया, चोराशी गच्छ थया, तथा ऋषभसेन प्रमुख चोराशी हजार साधुओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा ब्राह्मी अने सुंदरी प्रमुख त्रण लाख साधवीओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा श्रेयांस प्रमुख

त्रण लाख ने पांच हजार श्रावकोनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा सुभद्रा प्रमुख पांच लाख ने चोपन हजार श्राविकाओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा चार हजार सातसौ ने पचास चौद पूर्वधर. ते केवली नहीं पण केवली सरखा साधुओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा श्रीऋषभनाथ अरिहंतने नव हजार अवधिज्ञानीनी संपदा थइ, वीश हजार केवलज्ञानीनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा वीश हजार ने छसौ वैक्रिय लब्धिवंत साधुओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा बार हजार छसौ ने पचास अढीद्वीपमां संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ता जीवोना मनना परिणामने जाणे एवा विपुलमति मनःपर्यवज्ञानना धरनार साधुओनी उत्कृष्टी संपदा थइ. तथा बार हजार छसौ ने पचास वादी साधुओनी संपदा थइ. तथा वीश हजार साधु सिद्ध थया. चालीश हजार साध्वी सिद्ध थइ. श्रीऋषभनाथ अरिहंत कौशलिकने बावीश हजार ने नवसौ साधुओ अनुत्तर विमाने गया-एकावतारी थया, श्रीऋषभदेव अरिहंतने बे प्रकारे अंतगड भूमि थइ, त्यां यावत् असंख्याता पाट लगे केवलज्ञान चाल्यो-मोक्षमार्ग वह्यो; ते युगांतकृत भूमि कहेवाय अने भगवानने केवलज्ञान उपन्या पछी अंतर मुहूर्त बाद मरुदेवी माता मोक्षे गया ते पर्यायांतकृत भूमि कहेवाय. ते काल ते समयना विषे, श्रीऋषभनाथ अरिहंत वीश लाख पूर्व सुधी कुमारपणे रह्या अने त्रेसठ लाख पूर्व राज्यावस्थामां रह्या. एवी रीते त्रासी लाख पूर्वसुधी घरवासे रह्या. एक हजार वर्ष छद्मस्थपणे रह्या तथा एक हजार वर्ष ऊणा एक लाख पूर्व केवल पर्याय पालीने संपूर्ण एक लाख पूर्व साधुपणुं पालीने भवोपग्राही चार कर्मनो क्षय करी, आ अवसर्पिणीनो सुखमदुखमा नामा त्रीजो आरो घणो वीती गयो. बाकी त्रण वर्ष ने साडा आठ महिना शेष रह्या, त्यारे शीतकालनो त्रीजो महिनो,

---

१ सीत्तेर लाख क्रोड वर्ष अने छपन्न हजार क्रोड वर्षनो एक पूर्व थाय छे.

पांचमुं पखवाडियुं, माघवदि तेरसना दिवसे अष्टापद पर्वतनी ऊपर दशहजार साधुओनी साथे चौद भक्त एटले छ उपवास पाणी रहित कीधे थके, अभीच नक्षत्रना साथे चंद्रमानो योग आवे थके, प्रथम पहोर पछी बपोरनी वखते, पालखी वालेला आसने बेठा थका कालगत थया, यावत् सर्व दुःख थकी रहित थया. ते अवसरमां शक्रेन्द्रनुं आसन चलायमान थयुं त्यारे ते आंखोमां आंसु भराणो थको आव्यो, आवीने भगवानने त्रण प्रदक्षिणा आपी, नमस्कार करी, योग्य स्थानके बेठो, बीजा पण सर्व इन्द्रो आवीने बेठा. पछी शक्रेन्द्रे देवोने मोकली नंदनवनमांथी चंदन मंगाव्युं, तेनी त्रण चिता एक भगवानना शरीरने माटे, बीजी गणधरोना शरीरने माटे अने त्रीजी सर्व साधुओना शरीरने माटे बनावी. वली आभियोगिक देवोनी पासे खीरसमुद्रनुं पाणी मगावी शक्रेन्द्रे भगवानना शरीरने स्नान कराव्युं, सर्व वस्त्र आभूषण प्रमुख पहेराव्यां. पछी त्रण पालखी करी-एक पालखीमां भगवाननुं शरीर, एकमां गणधरोनुं शरीर अने एकमां मुनिओनां शरीरने मूकी चितानी पासे आव्या, शक्रेन्द्रे भगवानना शरीरने पालखीमांथी लइने चितामां मूक्युं. तथा अन्य देवोए बीजा गणधरादिकना शरीरने पालखीमांथी उतारीने चितामां मूक्या. तथा शक्रेन्द्रना हुकमथी अग्निकुमार देवो मनमांहे उदास थया थका चितामां अग्नि सलगाववा लाग्या तथा वायुकुमार देवो पण उदास थया थका वायु चलाववा लाग्या. वली बीजा देवो चितामां घृत प्रमुखने सींचवा लाग्या. पछी ज्यारे मात्र हाडकां ज शेष रह्या अने बीजा शरीरनो भाग सर्व बलीने भस्म थइ गयो त्यारे मेघकुमार देवोए वर्षाद वरसावीने चिताने बूझावी, पछी शक्रेन्द्र भगवाननी ऊपरनी जमणी बाजुनी दाढा लीए अने ईशानेन्द्र ऊपरनी डाबा बाजुनी दाढा लीए तथा चमरेन्द्र

…त्रबालावबोध पृष्ठ ३८१.

…- …ी …	मनःपर्यव ज्ञानी १९	पूर्वधर मुनि २०	वादीमुनि २१	श्रावकसंख्या २२	श्राविका संख्या २३	जन्मनक्षत्र २४	राशि २५	यक्ष २६	यक्षिणी २७
००	१२,७५०	४,७५०	१२,६५०	३०,५०००	५,५४०००	उत्तराषाढा	धन	गोमुख	चक्रेश्वरी
००	१२,५५०	३,७२०	१२,४००	२,६८०००	५,४५०००	रोहिणी	वृषभ	महायक्ष	अजितबला
००	१२,१५०	२,१५०	१२०००	२,९३०००	६,३६०००	मृगसिरा	मिथुन	त्रिमुख	दुरितारि
००	११,६५०	१५००	११०००	२,८८०००	५,२७०००	पुनर्वसु	मिथुन	यक्षेश	काली
००	१०,४५०	२४००	१०४००	२,८१०००	५,१६०००	मघा	सिंह	तुंबरु	महाकाली
००	१०,३००	२३००	९६००	२,७६०००	५०,५०००	चित्रा	कन्या	कुसुम	श्यामा
००	९१५०	२०३०	८४००	२,५७०००	४,९३०००	विशाखा	तुला	मातंग	शान्ता
००	८०००	२०००	७६००	२,५००००	४,७९०००	अनुराधा	वृश्चिक	विजय	भृकुटी
००	७५००	१५००	६०००	२,२९०००	४,७१०००	मूल	धन	अजित	सुतारका
००	७५००	१४००	५८००	२,८९०००	४,५८०००	पूर्वाषाढा	धन	ब्रह्मा	अशोका
००	६०००	१३००	५०००	२,७९०००	४,४८०००	श्रवण	मकर	यक्षराज	मानवी
००	६५००	१२००	४७००	२,१५०००	४,३६०००	शतभिषा	कुंभ	कुमार	चंडा
००	५५००	११००	३६००	२०,८०००	४,२४०००	उत्तराभाद्रपद	मीन	षण्मुख	विदिता
००	५०००	१०००	३२००	२०,६०००	४,१४०००	रेवति	मीन	पाताल	अंकुशा
००	४५००	९००	२८००	२०,४०००	४,१३०००	पुष्य	कर्क	किन्नर	कंदर्पा
००	४०००	८००	२४००	१,९००००	३,९३०००	भरणी	मेष	गरुड	निर्वाणी
००	३,३४०	६७०	२०००	१,७९०००	३,८१०००	कृत्तिका	वृषभ	गंधर्व	बला
००	२,५५१	६१०	१६००	१,८४०००	३,७२०००	रेवति	मीन	यक्षराज	धारिणी
००	१,७५०	६६८	१४००	१,८३०००	३,७००००	अश्विनी	मेष	कुबेर	धरणप्रिया
००	१५००	५००	१२००	१,७२०००	३,५००००	श्रवण	मकर	वरुण	नरदत्ता
००	१२५०	४५०	१०००	१,७००००	३,४८०००	अश्विनी	मेष	भृकुटी	गांधारी
००	१०००	४००	८००	१,६९०००	३,३६०००	चित्रा	कन्या	गोमेध	अंबिका
००	७५०	३५०	६००	१,६४०००	३,२७०००	विशाखा	तुला	पार्श्व	पद्मावती
००	५००	३००	४००	१,५९०००	३,१८०००	उत्तराफाल्गुनि	कन्या	ब्रह्मशांति	सिद्धायिका

नीचेनी जमणी बाजुनी दाढा लीए अने बलेन्द्र नीचेनी डाबी बाजुनी दाढा लीए तथा बीजा देवता जे छे ते केटलाएक तो जिनभक्तिना वश थकी, केटलाएक आपणुं आचार छे एवुं मानीने, केटलाएक धर्ममानीने परमेश्वरना अंगोपांगना सर्व हाडकां लइ लीये. पछी प्रभुने जे स्थानके दाग दीधेल छे, ते स्थानके शक्रेन्द्र रत्नोनां त्रण पीठ बनावे. एटलुं करीने सर्व देवो नंदीश्वरद्वीपना विषे जइ अट्ठाइ महोत्सव करीने पोत पोताने स्थानके जाय. अने दाढा प्रमुख जें लइ आव्या होय ते पोत पोतानी सभाने विषे वज्रमय डाबलामां राखे, तेने गंधमालादिकथी पूजे, धूप दीये, एज प्रकारनो निर्वाण महोत्सव सर्व तीर्थकरोनो जाणी लेवो.

श्रीऋषभदेव स्वामी मोक्ष गया पछी पचास लाख क्रोड सागरोपम गये थके श्रीअजितनाथ मोक्ष गया, श्रीऋषभदेव अरिहंत मोक्ष गया पछी त्रण वर्ष ने साडा आठ महिना, त्रीजो आरो शेष रह्यो हतो ते पण वीती गयो. पछी त्रण वर्ष ने साडा आठ महिना तथा ऊपर बेंतालीश हजार वर्ष ऊणा एक कोडाकोडी सागरोपम गयां पछी श्रीमहावीर स्वामी मोक्ष गया। एटले ते वखते त्रण वर्ष ने साडा आठ महिना तो चोथा आराना बाकी रह्या हता अने पांचमा आराना एकवीश हजार वर्ष, तथा छट्ठा आराना एकवीश हजार वर्ष एम बे आराना मली बेंतालीश हजार वर्ष ते एक कोडाकोडी सागरोपममां ओछा थयां. माटे बेंतालीश हजार ने त्रण वर्ष ऊपर साडा आठ महिने न्यून एवो एक कोडाकोडी सागरोपम काल चोथा आरानुं गये थके महावीरप्रभु मोक्षे पोहोता अने ते पछी नवसो एंसी वर्ष गयां. आ पुस्तक श्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणे लख्युं अने नवसो त्राणुं वर्षे श्रीसंघमां वंचायुं.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक-विजयराजेन्द्रसूरीश्वर-सङ्कलिते श्रीकल्पसूत्र-बालावबोधे अष्टमं व्याख्यानं समाप्तम् ।

अथ नवमो व्याख्यानः प्रारंभः ।



श्रीस्थविरावली अधिकार—

ते काल ते समयमां भगवान श्रीमहावीरस्वामीना नवगच्छ अने अग्यार गणधर थया, शिष्य प्रश्न करे छे के—हे गुरु महाराज! मर्यादा तो एवी छे के जेटला गणधर होय तेटला ज गच्छ पण होवा जोइए परंतु आप तो नव गच्छ अने अग्यार गणधर फरमावो छो तेनुं कारण शुं ? गुरु कहे छे के—श्रीमहावीरस्वामीना म्होटा शिष्य इंद्रभूति नामा अणगार थया, ते गौतमगोत्रीया हता. अने पांचसौ साधुओने वाचना आपता माटे तेनो एक गच्छ. जेनी वाचना एक होय तेने गच्छ कहीए. इहां कोइ शंका करे के वाचनामां फेर होय तो शुं केवलीना कहेवामां फेरफार छे ? तेनो उत्तर—केवलीना कहेवामां फेर नथी. परंतु केवलीना वचन सांभलीने ते वचनोनां गणधरो सूत्रो बांधे छे—गूंथे छे तेनी रचना (शब्दो)मां फेर छे; पण मतलबमां फेर नथी. मात्र शब्द अनेक प्रकारना छे. तेमां रचना करती वखते एक गणधर एक जातिना शब्दथी गूंथे छे, तो बीजो गणधर बीजी जातना शब्दोथी गूंथे छे. तेना लीधे शब्दरचनामां फेरफार होय छे. ’ बीजो वचलो भाइ—शिष्य अग्निभूति अणगार छे तेनुं गौतम गोत्र छे. अने पांचसौ साधुओने वाचना आपे छे ते बीजो गच्छ. त्रीजो न्हानो भाइ वायुभूति नामे शिष्य छे, ते पण गौतम गोत्रनो छे, ते पांचसौ साधुओने वाचना आपे छे ए त्रीजो गच्छ. ए त्रणे गृहस्थपणामां सगा भाइ हता. चोथा स्थविर आर्यव्यक्त नामा भारद्वायण गोत्रीया ते पांचसौ साधुओने वाचना आपे छे ए चोथो गच्छ. पांचमा स्थविर आर्यसुधर्म नामा अग्निवेश्यायन गोत्रीया छे ते पांचसौ साधुओने वाचना आपे छे ए पांचमो गच्छ. छट्ठा स्थविर मंडित

पुत्र वासिष्ठ गोत्रीया छे ते साडा त्रणसौ साधुओने वाचना आपे छे ए छठ्ठो गच्छ. सातमा स्थविर मौर्यपुत्र काश्यप गोत्रीया छे ते साडा त्रणसौ साधुओने वाचना आपे छे ए सातमो गच्छ. आठमा स्थविर अकंपित गौतम गोत्रीया छे. तथा नवमा स्थविर अचलभ्राता हारितांयन गोत्रीया छे. ए बेहु स्थविर त्रणसौ त्रणसौ शिष्योने वाचना आपे छे. ए बेहु गणधरोनी वाचना एक छे माटे एनो एक गच्छ गणीए. ए बन्ने गणधर भाइ छे. परंतु तेनी माता एक अने पिता बे छे, तेथी एमनां गोत्र जुदां जुदां कह्यां छे. आगळ ब्राह्मणोमां एकपति मर्या पछी स्त्रियोने बीजो पति करवानो चाल हतो. तेथी बे पिता कह्या. ए आठमो गच्छ. दसमा स्थविर मेतार्य अने अग्यारमा स्थविर प्रभास. ए बन्ने कौडिन्य गोत्रीया भाइ छे. ते त्रणसौ त्रणसौ साधुओने वाचना आपे छे. ए बेहुनी वाचना एकज छे, माटे एकज गच्छ कहेवाय. ए नवमो गच्छ. ए रीते हे शिष्य ! अमे श्रीमहावीरना अग्यार गणधरना नव गच्छ कहीए छिये. ए अग्यारे गणधर द्वादशांगीना धरवावाला, चौद पूर्वधारी, संपूर्ण आचार्य रत्नकरंडीयाना धारक एटले द्वादश अंगरूप रत्ननो करंडीयो तेना धरवावाला जाणवा, ए अग्यारे गणधर राजगृही नगरीमां एक मासी अनशन पाणी रहित करीने काळगत थया, मोक्ष पाम्या. सर्व दुःखथी रहित थया. तेमां नव गणधर तो श्रीमहावीरस्वामी विद्यमान छतां ज मोक्ष गया अने स्थविर इंद्रभूति तथा स्थविर आर्यसुधर्म ए बे गणधरो श्रीमहावीर भगवान मोक्ष गया पछी मोक्षे गया छे तथा बीजा सर्व गणधरोना शिष्यो पण काळ करी गया हता. कोइ पण शेष रह्यो हतो नहीं, माटे हमणां वर्तमान समयमां जे जैन साधुओ विचरे छे, ते सर्व सुधर्म गणधरना जाणवा. बीजा गणधरोना शिष्यो विच्छेद गया छे. तेथी एक सुधर्म गच्छज रह्यो.

गणधर	जन्मगाम	पिता	माता	गृहवास	छद्मस्थ पर्याय	केवल पर्याय	सर्वायु
इन्द्रभूति	गुब्बर	वसुभूति	पृथिवी	५०	३०	१२	९२
अग्निभूति	,,	,,	,,	४६	१२	१६	७४
वायुभूति	,,	,,	,,	४२	१०	१८	७०
व्यक्त	कोल्लाक	धनमित्र	वारुणी	५०	१२	१८	८०
सुधर्मा	,,	धम्मिल	भद्दिला	५०	४२	८	१००
मंडित	मौरिकसन्निवेस	धनदेव	विजया	५३	१४	१६	८३
मौर्यपुत्र	,,	मौर्य	,,	६५	१४	१६	९५
अकंपित	मिथिला	देव	जयंती	४८	९	२१	७८
अचलभ्राता	कोशला	वसु	नंदा	४६	१२	१४	७२
मेतार्य	तुंगिक सन्निवेस (वत्सभूमि)	दत्त	वरुणादेवी	३६	१०	१६	६२
प्रभास	राजगृह	बल	अतिभद्रा	१६	८	१६	४०

श्रीसुधर्मस्वामी अने श्रीजंबूस्वामी—

श्रीमहावीर स्वामी काश्यप गोत्री हता, तेमनी पाटे श्रीसुधर्म स्वामी पांचमा गणधर बेठा. तेमनुं अग्निवैश्यायन गोत्र हतुं, तेनो संबंध आ प्रमाणे छे–कुल्लाग सन्निवेश नामा नगरमां 'धम्मिल' नामा ब्राह्मण रहेतो हतो. तेनी 'भद्दिला' नामे भार्याना पुत्र 'सुधर्म' नामे थया. ते चौद विद्याना निधान, चार वेदना पारंगामी, पचास वर्ष घरवासे रह्या पछी महावीरस्वामीना पासे दीक्षा लीधी, पांचमा गणधर थया, त्रीश वर्ष पर्यंत महावीरस्वामीना चरणकमल सेवता रह्या, अने श्रीमहावीर निर्वाण पाम्या पछी बार वर्ष पर्यंत छद्मस्थपणे विचर्या, तथा आठ वर्ष केवलीपणे विचर्या. सर्व मली एकसो वर्षनुं आयुष्य भोगवीने मोक्ष गया. १ श्रीसुधर्म स्वामीना पाट ऊपर श्रीजंबूस्वामी बेठा तेमनुं काश्यपगोत्र हतुं, तेनो संबंध आ रीते छे–एकदा श्रीमहावीर-

स्वामी राजगृही नगरीमां समोसर्या. त्यां एक म्होटो तेजवंत देवता पोतानी चार अग्रमहीषीयो सहित तथा बीजा पण घणा देव अने देवीयोना परिवारे परवर्यो थको भगवानने वांदवा आव्यो. त्यारे श्रेणिक राजाए भगवानने पूछयुं के हे स्वामिन्! आ देवतानी बीजा देवोथी अधिक कांति केम देखाय छे? त्यारे भगवाने कह्युं के आ देवताए पूर्व भवना विषे दश वर्ष पर्यंत नित्य तप कर्युं छे, तेना प्रभावथी ए पांचमा ब्रह्म देवलोकना विषे तिर्यक् जृंभकनी जातिमां महर्द्धिक देवता थयो छे. वली ए देवता आजथी सातमा दिवसे देवलोकथी चवीने राजगृही नगरीमां ऋषभदत्त शेठनी धारणी नामे भार्यानी कूखमां पुत्रपणे आवीने उपजशे, पछी एनो जन्ममहोत्सव करीने एनी माता स्वप्नमां जंबुवृक्ष देखशे तेथी एनुं नाम 'जंबू' आपशे. अनुक्रमे युवान अवस्था पामशे, त्यारे सुधर्म गणधरनी पासेथी धर्मदेशना सांभलीने वैराग्य पामी कहेशे के हुं चारित्र लइश. पण म्हारा मातापिताने पूछी आवुं, एम कही पाछो घर जतां मार्गमां यंत्रथी उपडेलो पथ्थर, पोतानी पासेथी निकल्यो देखीने विचार करशे के हमणां जो मने आ तोपनो गोलो लागी जात तो हुं अव्रतिपणामां मरण पामत, एवुं जाणी सुधर्मस्वामीनी पासे पाछो आवीने एकवार तो समकित मूल बारे व्रत लेशे. तेमां चोथा व्रतमां, कदापि मातापिताना कहेवाथी स्त्रीयो परणवी पडे तो तेने परणुं, पण ते स्त्रीयोनी साथे भोग भोगवुं नहीं. एवो त्याग करी, फरी घरे आवी, माता पिताने कहेशे के मने आज्ञा आपो. हुं श्रीसुधर्मस्वामी पासे दीक्षा लेउं? माता पिता कहेशे के हे पुत्र! दीक्षा पालवी घणी दुष्कर छे. एवी रीते घणो घणो समजावशे, तो पण ए मानशे नहीं. त्यारे मातापिता कहेशे के हे पुत्र! आठ कन्याओ साथे त्हारुं सगपण करेलुं छे. माटे तेने परणीने पछी दीक्षा लेजे. ते

सांभली जंबुकुमर मौनपणुं धारण करी लेशे. मातापिता आठ शेठी- याओने कहेशे के अमारो पुत्र वैराग्यवान् थयो छे माटे तमारे दीक- रीयो परणाववानी मरजी होय तो भले परणावो. पण ते कन्याओनो त्याग करीने जो दीक्षा लेशे, तो अमारो दोष कहाडशो नहीं. ते सांभली सर्व शेठीया कहेशे के अमे परणावीशुं नहीं. पण ते शेठिया- ओनी दीकरीयो कहेशे के अमे तो जंबुकुमरने ज परणीशुं, बीजाने परणवानो त्याग छे. त्यारे शेठिया पोतानी पुत्रीयोने कहेशे के ए तो दीक्षा लेशे. तो पण दीकरीयो कहेशे के ए दीक्षा लीये तो भले त्यो पण अमे तो एने ज परणीशुं. पछी ते एक रात्रीमां आठे कन्या पर- णशे. अने रात्रिए शय्या ऊपर बेसीने आठ स्त्रियोने कहेशे के हुं तो दीक्षा लइश. केमके आ संसार सर्व अनित्य छे, कोइ कोइनी साथे आवनार नथी, स्त्रीयो कहेशे के हे स्वामी ! तमे हमणां दीक्षा लियो नहीं, हमणा तो संसारनुं सुख मल्युं छे, ते सारी रीते भोगवीने पछी दीक्षा लेजो, नहीं तो करसणीना पठे पश्चात्ताप करशो. " जेम कोइ मारवाड देशनो करसणी पोताने घेर गेहुं वावीने पछी मेवाडमा पोताने सासरे गयो, तेनी सासुए सारा रोटला करीने थालमां मूक्या ऊपरथी काकब मूकी. ते काकब करसणीने घणी सारी स्वादिष्ट लागी पछी शालाने पूछ्युं के आ काकब तमोने क्यांथी आवी ? शालाए कह्युं के ए अमारा घरमां नीपजे छे, बनेवीये पूछ्युं–केवी रीते नीपजे छे ? शालाए शेलडी वाववानो विधि देखाड्यो. पछी करसणीए जाण्युं के म्हारे घेर पण हुं वावीश एम निर्धार करी घेर आवीने प्रथम जे गहुंनुं खेत्र वाव्युं हतुं तेने उखेडवा लाग्यो. त्यारे लोकोए कह्युं के आ तुं शुं करे छे ? तेणे कह्युं के हुं एमां शेलडी वावीश. लोको कहेवा लाग्या के आ देशमां पाणी नथी, माटे शेलडी थशे नहीं, तो छतां जो तने शेलडीज वाववानी इच्छा होय तो एकवार आ गहुंनुं

करेली खेती पाकवा दे, पछी शेलडी वावजे. एवुं लोकोनुं वचन तेणे मान्युं नहीं, अने शेलडी वावी. ते थोडी ऊगी एटलामां कूवानुं पाणी खुटी गयुं, तेथी जे ऊगेली शेलडी हती; ते पण सुकाइ गइ. त्यारे पश्चात्ताप करवा लाग्यो, तेम तमे पण छतुं सुख मूकीने बीजा नवा सुखनी चाहना करो छो. तो पछी पस्ताशो." एवी स्त्रीयोनी वाणी सांभली जंबू कुमर कहेशे के हुं पूर्वोक्त दृष्टांते पश्चात्ताप करीश नहीं. परंतु तमो नहीं समजशो तो तमेज पस्तावो करशो. हुं तो ललितांग-कुमरनी परे तमारा फंदमां नहीं पडुं. तेनी कथा सांभलो—" एक नगरमां एक शेठनो पुत्र ललितांगकुमर महारूपवंत हतो. तेने एक दिवसे ते नगरना राजानी रूपवती नामा राणीए दीठो. त्यारे तेने एकांते बोलावीने तेनी साथे संसार संबंधि भोग—विलास करवा लागी. एटलामां राजा पण त्यां आव्यो. त्यारे भयभ्रांत थइने राणीए ते ललितांगकुमरने महेलना खालमां न्हांखी दीधो. अने विचार्युं के पछी कहाडी लइश. राणी तो राजानी साथे रमवा लागी, तेथी तेने भूली गइ. ललितांग खालमां भूखे मरतो, कोइ अन्य आवीने एंठवाडो न्हांखे ते खाय, अने एंठो पाणी पडे ते पीये एवी रीते चार महिना पर्यंत ते खालमां पड्यो रह्यो. अने ललितांगना मावापे घणोये जोयो पण लाधो नहीं. तेथी शोक करवा बेठां. एटलामां वर्षाद आव्यो तेथी खालमां पाणी भराणुं. ते पाणी कहाडवा सारुं खाल खोली. ते खालना पाणीनी साथे ललितांग पण तणातो तणातो नगरनी म्होटी खालमां जइ पड्यो. तेने लोकोए देखीने तेना मातापिताने जइ कह्युं. मातापिता जइ खालमांथी कहाडी घेर लइ आव्या. त्यां मूर्च्छा खाइने पड्यो. शरीर पीळुं पडी गयुं, हाडकां नीकली आव्या, मातापिताए घणा प्रकारना तैलादिक मसल्या त्यारे कांइक सावचेत थयो. पछी औषधोपचार करतां करतां घणा दिवसे तेनुं शरीर

सारुं थयुं. त्यारे वली कपडा प्रमुख पहेरीने बजारमां फरवा निकल्यो, तेने राणीए फरी ओळखीने बोलाव्यो. ते बोल्यो, हवे हुं तमारा फंदमां पडीश नहीं." एवी रीते आठ स्रीयो जुदी जुदी आठ कथाओ संसार सुखनो त्याग न करवा आश्रयी जंबू कुमरने कहेशे. अने जंबू कुमर पण फरी संसारनी असारता बतावनारी जुदी जुदी आठ कथा आठे स्त्रीयोने कहेशे. त्यारे स्त्रीयो प्रतिबोध पामशे. एवामां एक प्रभवो चोर पांचसो चोरने साथे लइने जंबु कुमरना घरमां आवशे. ते सर्वने विद्याना बलथी अवस्वापिनी निद्रा आपशे. तेथी सर्वने निद्रा आवी जशे. परंतु जंबुकुमरने निद्रा आवशे नहीं. पछी तालां उघाडवानी विद्याथी भंडार खोलीने नवाणुं क्रोड सोना महोरोनी गांठडीयो बांधी तेने लइने चालवा मांडशे. एटलामां जंबुकुमरने यद्यपि द्रव्य ऊपर मूर्च्छा तो बिलकुल नथी, तथापि एवो विचार आवशे के म्हारे तो प्रभाते दीक्षा लेवी छे. अने आजे चोर लोको द्रव्य लइ जशे तो लोक कहेशे के जूओ! एनुं धन सर्व चोर लोको लइ गया तेथी माथुं मुंडावे छे. एवी रीते धर्मनी निंदा थशे. ते वात सारी नहीं. एवुं चिंतवीने नवकार गणवा लागशे, तेथी पांचसो चोरोना पग थंभाइ जशे. त्यारे प्रभवाने विचार थशे के आते शुं थयुं जोशे तो जंबूकुमरने जागतो देखशे. त्यारे प्रभवो जाणशे के एन पासे कोइ महा जोरावर विद्या छे. एवुं जाणी जंबूकुमरने कहेशे म्हारी विद्या तमे ल्यो अने तमारी विद्या मने आपो. जंबूकुमर कहेशे म्हारी पासे कांइ पण विद्या नथी. अने बीजी विद्या मने खपती प नथी. मने तो मात्र नवकार मंत्रनो आधार छे. एवो धर्मोपदेश दे त्यारे प्रभवो कहेशे के आ नवी परणेली स्त्रीयोनो त्याग करीने दीक्षा शा वास्ते लीये छे? संसारना सुख भोगवी पछी दीक्षा ले जंबु कहेशे के प्रभवा! संसारमां सुख छेज क्यां? के जेने हुं भोग

संसारनुं सुख तो मधुबिंदुआ समान छे, तेनी लालचे जीव संसारमां रझले छे. " जेम कोइ एक पुरुष भूलथी उजाडमां जइ पड्यो; तेनी पछवाडे एक हाथी दोड्यो; हाथीना भयथी ते नासतो भागतो एक वडनी शाखामां जइ लटकी रह्यो. ते शाखानी नीचे एक कूप छे तेमां चार सर्प्प पोतानुं म्होडुं फाडीने बेठेला छे; तथा बे अजगर पण म्होडुं फाडी बेठा छे; तथा वडना थडने हाथी धूणावी रह्यो छे, तथा जे शाखामां ते पुरुष लटके छे, ते शाखाने एक कालो अने बीजो धोलो एवा बे उंदरो कापी रह्या छे, वली तेनी ऊपर एक मधुमाखीनुं मधपुडुं छे, तेनी मक्षिकाओ उडी उडीने ते पुरुषना शरीरने चटका मारी रहेली छे, एटलामां ते महुआलमांथी एक मधनुं टीपुं टवक्युं, ते पहेला पुरुषनी जीभने जइ लाग्युं. त्यारे ते पुरुषे ऊंचो जोवा मांड्युं तो तेणे दीठुं जे महुआल मांहेथी मधुबिंदु पडे छे; एवुं जाणीने ते टीपानी नीचे म्होडुं फाडीने ऊंचो राख्यो अने टीपाना स्वादमां मग्न थयो, पोतानी ऊपर पूर्वोक्त अनेक जातना दुःख पड्या छे ते सर्वे भूली गयो. एटलामां एक विद्याधर आवीने कहेवा लाग्यो के हे पुरुष ! त्हारुं दुःख देखीने मने दया आवे छे. माटे आव, म्हारा विमानमां बेशी जा, हुं तुजने दुःखमांथी कहाडवा आव्यो छुं. ते पुरुष बोल्यो के विद्याधर ! आ एक टीपुं मधनुं म्हारा मुखमां आववा द्यो. पछी हुं आपनी साथे विमानमां बेसी चालुं. एम एक टीपुं आव्युं, पछी वली पण कह्युं के आ बीजुं टीपुं आवे तो चालुं. एवी रीते एकेक टीपाना स्वादमां लोभाणो थको ते विकट स्थानने छोडे नहीं, त्यारे विद्याधरे जाण्युं के एतो एवोज मूर्ख छे, लोभी छे, ए कांइ दुःखमांथी निकलशे नहीं. एवुं जाणी तेने त्यांज मूकी विद्याधर चाल्यो गयो. तेम हे भव्य ! आ जीव संसाररूप अटवीमां आयुष्यरूप वृक्ष छे त्यां कुटुंबना रसरूप मधुबिंदुने खातो खातो आयुष्य खुटावे छे, मोहे

माच्यो थको रहे छे; तेने सद्गुरु आवीने चारित्ररूप विमानमां बेस वानुं कहे त्यारे संसारी जीव स्त्रीना भोगरूप मधुबिंदुमां लोभायो थको संसारमांथी निकलवा वांछे नहीं. माटे आ अवसर चूक्या तो फरी संसारमां मनुष्य अवतार मलवो महादुर्लभ छे." एवां वचन सांभलीने प्रभवो चोर पण प्रतिबोध पाम्यो अने बोल्यो के हे जंबू ! हुं पण त्हारी साथे दीक्षा लइश. पछी जंबूकुमर पोताना माता पिताने प्रतिबोध देशे तथा आठ कन्याओ पण पोत पोताना माता पिताने प्रतिबोध आपशे. तथा प्रभवो पण पांचसो चोरोने प्रतिबोध आपशे, एम सर्व मली प्रभाते पांचसौ ने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबूकुमर दीक्षा लेशे. एवुं श्रेणिकराजाने श्रीमहावीरस्वामीए कह्युं हतुं ते प्रमाणे नवाणुं क्रोड सोनैया धर्मक्षेत्रोमां खरचीने महा महोत्सव सहित पांचसौ ने सत्तावीश जनोनी साथे श्रीजंबूस्वामीए सुधर्मस्वामी पासे दीक्षा लीधी. पछी द्वादशांगी भणी श्रीसुधर्मस्वामीनी पाटे बेठा; केवलज्ञान पाम्या. पोतानी पाटे प्रभवाजीने बेसाडीने पोते मोक्ष गया. ए श्रीजंबूस्वामी छेल्ला केवली थया. कवीश्वर कहे छे के— "वाणिया घणा लोभी थाय छे एवुं लोक एटला माटे कहे छे के जंबुस्वामीना हाथमां केवलज्ञान रूप धन आव्युं, ते बीजा कोइने आप्युं नहीं. छेल्लुं केवलज्ञान एज पाम्या छे, मोक्ष नगरनो दरवाजो बंध करी बेठा माटे लोभी कहेवाणा. तथा श्रीजंबूकुमर सरखो सोभागी कोइ थयो नहीं अने थशे पण नहीं. अने मोक्षरूपिणी स्त्री पण एने परणया पछी बीजाने परणी नथीं. तथा एना जेवो कोइ कोटवाल पण नहीं थाय, केमके एणे पांचसो चोरोने साधु बनावी दीधा." श्रीजंबूस्वामी मोक्ष गया पछी दश वस्तु विच्छेद थइ, तेना नाम—एक मनःपर्यवज्ञान, बीजो परमावधि, त्रीजी पुलाकलब्धि, चोथुं आहारक शरीर, पांचमी क्षपक श्रेणि, छट्ठी उपशम

श्रेणि, सातमो जिनकल्प मार्ग, आठमुं परिहार विशुद्धि चारित्र, सूक्ष्म संपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र. ए त्रण चारित्र, तथा नवमुं केवलज्ञान अने दशमुं मोक्ष—गमन. जंबूस्वामी सोले वर्ष गृहस्थावासमां, वीस वर्ष व्रतपर्यायमां अने चुम्मालीस वर्ष केवलपर्यायमां; एवं सर्वायु एंसी वर्षनुं भोगवीने श्रीमहावीरस्वामीथी चोसठमा वर्षे मोक्ष गया.

श्रीप्रभवस्वामीनो संक्षिप्त वृत्तान्त—

त्रीजे पाटे श्रीप्रभवस्वामी कात्यायन गोत्री हता; तेमणे एक दिवस पोताना गच्छमां तथा श्रीसंघमां उपयोग दीधो के—हुं कोने आचार्य करुं ? ते उपयोग देतां गच्छमां तथा संघमां कोइ पोतानी पाटे बेसवा योग्य पुरुष दीठामां न आव्यो. त्यारे अन्य मतोमां उपयोग दीधो. तेमां सज्जंभवभट्टने दीठो, त्यारे श्रीप्रभवस्वामीए बे साधुने सीखावीने सय्यंभवने घेर मोकल्या, ते संय्यभवना घेर जइने बोल्या " अहोकष्टमहोकष्टं, तत्वं न ज्ञायते पुनः " जूओ ! आ कष्ट करे छे पण तत्वने जाणतो नथी, एवुं सांभली तत्काल खड्ग लइने सय्यंभव गुरुनी पासे आव्यो. अने तरवार कहाडीने बोल्यो के अरे ! मने देखाड; तत्त्व केवुं छे ? त्यारे गुरुए विचार्युं के माथो कपातां पण तत्त्व कहेवामां दोष नथी एम चिंतवी गुरु बोल्या—अरे ! तुं यज्ञ करे छे. ते यज्ञना कीलकनी नीचे श्रीशांतिनाथजीनी प्रतिमा छे, ते शांतिकारी छे. तेनाथी शांति थाय छे. परंतु यज्ञथी कांइ पण थतुं नथी. ते सांभली तेणे त्यांथी प्रतिमा कहाडी प्रतिबोध पाम्यो अने पोतानी स्त्री गर्भवती हती तेने छोडीने दीक्षा लीधी. श्रीप्रभवस्वामी त्रीश वर्ष गृहस्थ पणे रह्या तथा पंचावन वर्ष पर्यंत चारित्र पाल्युं. सर्व मली पंच्यासी वर्षनुं आयुष्य भोगवी अने श्रीसय्यंभवने पोतानी पाटे बेसाडीने महावीरस्वामीथी ७५ वर्ष पछी देवलोक गया.

श्रीशय्यंभवसूरिजी अने मनकमुनिनो संक्षिप्त वृत्तान्त—

चोथे पाटे श्रीसय्यंभवसूरि वच्छगोत्रीया पोतानी गर्भवती स्त्रीने छोडीने आव्या हता, तेने पाछलथी पुत्र थयो. तेनुं नाम मनक दीधुं. ते छोकरो एक दिवस पाठशालामां गयो, त्यां छोकराओनी साथे भणवा बेठो त्यारे बीजा छोकराओए मेणुं मार्युं के हे निष्पितृक ! अमो तने जाणीए छिये, त्हारो बाप तो छेज नहीं. आ वात सांभलीने छोकरो दुःखी थयो थको पोतानी माता पासे आव्यो. माताने पूछ्युं के माता ! म्हारो पिता छे के नथी ? त्यारे माताए कह्युं. के वत्स ! बाप विना पुत्र क्यांथी होय ? त्हारो बाप सय्यंभवभट्ट छे. छोकराए पूछ्युं, ते क्यां छे ? माताए कह्युं, त्हारा बापने जैनना साधुओ भोलवीने लइ गया; तेथी तेणे दीक्षा लीधी छे. एवुं सांभली जे गाममां सय्यंभवसूरि हता ते गामनी बाहेर ते मनक पण आव्यो, तेने सामा ठंडिले जाता गुरु मल्या. तेमने मनके पूछ्युं के महाराज ! अहीं सय्यंभवसूरि छे ? गुरु बोल्या—त्हारे शुं काम छे? मनके पोतानी सर्व हकीकत कही, अने कह्युं के हुं तेमनो पुत्र छुं. गुरुए पण कांइक उत्तर आपीने उपासरे मोकली दीधो अने ठंडिलथी पाछा आव्या बाद गुरुए प्रतिबोध दीधो. मनके कह्युं के मने दीक्षा आपो. ते सांभल गुरु बोल्या म्हारुं तथा त्हारुं पिता—पुत्रपणुं तुं बीजा साधुओं नहीं कहे तो हुं तुजने दीक्षा आपुं. त्यारे मनक बोल्यो, हुं कोइ कहीश नहीं. गुरुए दीक्षा आपी पण मनकनुं आयुष्य स्वल्प जाण त्यारे गुरुए सिद्धांतोमांथी उद्धरीने 'दशवैकालिक' सूत्र मनक माटे बनाव्युं. ते सूत्र छ महिनामां मनक भणी गयो, छ महि झाझेरुं चारित्र पालीने देवलोक गयो. पछी श्रावको मनकना शरी दाग आपी गुरुनी पासे आव्या. ते वखते यशोभद्र प्रमुख बी घणा शिष्यो गुरुनी पासे बेठेला हता. गुरुए श्रावकोने भ

पदेश आप्यो. पण गुरुनी आंखोमां आंसु आवी गया, ते देखीने यशोभद्र सहित संघना माणसो बोल्या-हे पूज्य! आपना अनेक साधुओ परलोक जाय छे. परंतु आपनी आंखमांथी आंसु पडतां क्यारे पण दीठां नथी अने आज आंसु केम पड्या? त्यारे गुरु बोल्या-मोहथी आंसु पड्यां. संघे पूछ्युं-मोहनुं कारण शुं छे?, त्यारे गुरु बोल्या-ए अमारो संसारीपणानो पुत्र हतो. परंतु स्वल्प काल चारित्र पाल्युं, तेथी मोह आवी गयो. त्यारे साधुओ बोल्या-महाराज! तमे अमने क्यारे पण कह्युं नहीं के ए अमारो पुत्र छे? त्यारे गुरु बोल्या-हुं जो तमने एवुं कहेत के ए म्हारो संसारीपणानो पुत्र छे तो पछी तमे एनी पासे वैयावच्च करावत नहीं, तेथी एने शो लाभ थात? माटे एना अल्प आयुष्यमां एटलो लाभ जाणीने तमोने कह्युं नहीं. पछी गुरु दशवैकालिकने पाछुं सिद्धांतोमां मलाववा लाग्या. त्यारे संघे विनंति करी के-स्वामिन्! ए छोटो ग्रंथ छे, ते आगल जतां अल्पबुद्धि अने अल्पायुष्यवाला लोकोने घणोज उपकारी थशे. माटे एमज रहेवा द्यो. ते सांभली एमज राख्यो. पछी सय्यंभवसूरि अठ्ठावीश वर्ष गृहस्थपर्यायमां, अग्यार वर्ष दीक्षापर्यायमां, तथा त्रेवीश वर्ष युगप्रधानपद्वीमां; एवं सर्वायु बासठ वर्षनो भोगवीने अने पोतानी पाटे श्रीयशोभद्रसूरिने बेसाडीने श्रीमहावीर स्वामीना निर्वाणथी अठ्ठाणुंमां वर्षे स्वर्गलोके गया.

श्रीभद्रबाहु अने वराहमिहिरनो संक्षिप्त वृत्तान्त—

पांचमा पाटे श्रीयशोभद्रसूरि तुंगीयायणगोत्रीया बेठा. तेओ बावीस वर्ष गृहस्थ पर्यायमां, चौद वर्ष व्रतपर्यायमां, अने पचास वर्ष युगप्रधान पदवीमां; एवं सर्वायु छयासी वर्षनो भोगवीने महावीर प्रभुथी १४८ वर्ष पछी देवलोके गया तेना पाटे बे शिष्य बेठा

तेमां एक तो आर्यसंभूतिविजयजी माढरगोत्रीया अने बीजा आर्य श्रीभद्रबाहुस्वामी पाईण (प्राचीन) गोत्रीया, तेमांथी भद्रबाहुजीनो संबंध आवी रीते छे के प्रतिष्ठानपुरना रहेवासी एक वराहमिहिर अने बीजा भद्रबाहु ए बे ब्राह्मण भाइओ हता. तेमणे श्रीयशोभद्रसूरिना पासे धर्मदेशना सांभलीने दीक्षा लीधी, चौद पूर्व भण्या. पछी गुरुए विनीतपणानो गुण जोइने भद्रबाहुने आचार्यपद आप्युं. अने वराहमिहिरने अविनीतपणाना लीधे आचार्यपद आप्युं नहीं. कारण के जे आचार्यपद गणधरोए धारण कर्युं, ते आचार्यपद जो अविनीत अयोग्यने आपे तो ते गुरु जे आचार्य पदनो आपनार होय ते पण अनंत संसारी थाय. हवे भद्रबाहुने आचार्यपद मल्युं जोइने वराहमिहिर कुपित थयो. गच्छथी बाहेर नीकलीने गुरुनी ऊपर द्वेष धरवा लाग्यो. चौदे पूर्व भणेलो हतो तेथी नवीन ज्योतिषना 'वाराहीसंहिता' प्रमुख ग्रंथो बनावी अने साधुनो वेष मूकीने ब्राह्मणनो वेष धारण करी, लोकोनी आगल निमित्त कहीने आजीविका चलाववा लाग्यो. तेने लोक पूछे के एटलुं तमे क्यांथी भण्या? त्यारे लोकोनी आगल एवुं कहे के में एक दिवस नगरनी बाहेर लग्न कुंडली मांडी हती. ते कुंडलीने भांग्या विना एमज पाछो चाली निकल्यो. पछी ज्यारे याद आव्युं त्यारे मटाडवा पाछो गयो अने त्यां जइने जोउं तो कुंडलीमां सिंहलग्ननो स्वामी सिंह पूंछडुं वधारीने ऊपर ऊभो छे. पछी में लग्ननी भक्तिना लीधे म्हारी छाती काठी करीने सिंहनी नीचे घुसीने लग्न भुसाडी न्हांख्युं. म्हारी भक्ति जोइने सिंहनो अधिपति सूर्य आवीने म्हारा ऊपर तुष्टमान थयो अने बोल्यो के जे मांगे ते त्हने आपुं त्यारे में कह्युं मने नक्षत्रादिकनो चार खरे खरो जेवो छे तेवो बतावो. पछी सूर्य पोताना ज्योतिषना मंडल चारमां मन्हे लइ गयो. त्यां मन्हे सर्व चार बताव्या, उदयास्तचक्र बताव्युं, ते ज्योतिषना बलथी

हुं त्रण कालनी वात जाणुं छुं. एवी कल्पित वातो कहीने लोकोमां पूजाय, राजा प्रमुखने निमित्त कहीने खुशी करे अने चमत्कार पमाडे. एम घणा लोकोने मिथ्यात्वी कर्या. एवा अवसरमां श्रीभद्रबाहुस्वामी पण ते नगरमां आव्या. तेमनो श्रावकोए म्होटा महोत्सव सहित गाममां प्रवेश कराव्यो पण वराहमिहिरथी ते सहन थयुं नहीं. त्यारे तेणे विचार्युं के एनुं मान खंडित करुं तो सारी वात थाय. एवुं चिंतवी एक दिवस राजसभामां जइने राजाने कहेवा लाग्यो के आजथी पांचमां दिवसे पूर्व दिशाथी वर्षाद आवशे. ते त्रीजे पहोरे वरषशे. आ हुं कुंडालुं करुं छुं, तेना वचमां बावन पलनुं एक माछलुं पडशे, एवुं निमित्त कह्युं. ते वात श्रावकोए आवीने भद्रबाहु स्वामी आगल कही के--स्वामिन्! आ वराहमिहिरे कहेली वात सत्य छे किं वा असत्य छे? त्यारे भद्रबाहु बोल्या--कांइक सत्य छे अने कांइक असत्य छे केम के पूर्व दिशाथी नहीं पण ईशान कोणथी वर्षा आवशे ते छ घडी दिवस पाछलो रहेशे, त्यारे पडशे. पण त्रीजो पहोर कह्यो ते झूठ छे. वली बावन पलनो नहीं परंतु वायुथी सुकाइ जशे माटे साडी एकावन पलनो मत्स्य रहेशे ते कुंडालाना मध्यभागमां नहीं पण कुंडालानी कोर ऊपर एक बाजुए पडशे. माटे वराहमिहिर मिथ्यात्वना योगथी आटलुं झूठुं बोले छे. ए वात पण श्रावकोए राजाने कही. राजा बोल्यो--सांच झूठनी खबर हवे तरत पांच दिवसमां जणाइ आवशे. एटलामां पांचमो दिवस आव्यो, त्यारे वर्षाद वरस्यो. अने श्रीभद्रबाहु स्वामीना कहेवा प्रमाणे सर्व वात सत्य थइ. त्यारे राजा प्रमुख सर्व लोकोए श्रीभद्रबाहु स्वामीनुं ज्ञान वखाण्युं अने वराहमिहिरनी कांइ साची कांइ झूठी वात पडी तेथी तेनी मान्यता कम थवा लागी. एक दिवस राजाने घेर पुत्रजन्म थयो. तेनी वराहमिहिरे जन्मपत्रिका बनावीने तेमां कुमरनो एकसो वर्षनुं आयुष्य बताव्युं

त्यारे सर्व लोक अक्षत लइने राजाने वधाववा आव्या. अन्यदर्शनी योगी संन्यासी प्रमुख सर्व आशीर्वाद आपवा आव्या, परंतु एक श्रीभद्रबाहु गया नहीं. त्यारे वराहमिहिर राजाने कहेवा लाग्यो के राजन् ! तमारे घेर पुत्रजन्म थयो ते भद्रबाहुने रुच्यो नहीं. तेथी ते आशीर्वाद आपवा आव्या नहीं. ए वात पण श्रावकोए जइ श्रीभद्रबाहुस्वामीने कही. त्यारे भद्रबाहु बोल्या–वारंवार केम जवाय. एकवार जइशुं. श्रावको बोल्या केम ?, गुरु बोल्या आठमा दिवसे रात्रीना वखते बिलाडीना योगथी कुमरनो मरण थशे, त्यारे आवीशुं. ए वात श्रावकोए जइ राजाने कही, राजाए सर्व बिलाडीयोने आखा गाममांथी बाहेर कढाडी मूकावी तथा बिलाडी कोइना घरमां अथवा गाममां न आवी शके, तेवा सेंकडो गमे जापता कर्या. परंतु आठमा दिवसे दैवयोगे दासीना हाथथी कमाडनी ठांसणी बालकना माथा ऊपर आवी पडी तेथी बालक मरण पाम्यो. त्यारे वराहमिहिर बोल्यो बिलाडीथी तो मरण पाम्यो नहीं ? पछी गुरुए ठांसणीनी ऊपर बिलाडीना मुखनो आकार लाकडामां कोतरेलो हतो ते देखाड्यो. तेथी वराहमिहिर लज्जा पाम्यो. अने त्यांथी निकली अन्यत्र स्थानके जइ अज्ञानकष्टथी मरण पामीने व्यंतर देवता थयो. तेणे आवी श्रीसंघमां मरकीना रोगनो उपद्रव कर्यो, तेथी घणा लोक मरवा लाग्या. त्यारे श्रीसंघनो उपद्रव टालवा माटे महा महिमावंत " उवसग्गहर " स्तोत्र गुरुए बनाव्युं. तेनो घर घरना विषे गणणो शरु थयो, तेथी सर्व उपद्रव दूर थइ गयो. पछी सर्व श्रावकोना घरमां जो थोडुं काम होय तो पण ते उवसग्गहरनो पाठ करे तेथी काम पार पडी जाय, एम करतां करतां छेवट लोकोमां एवी चाल पडी गइ के जो गाय दूध न आपे तो पण उवसग्गहर–स्तोत्र गणे त्यारे गाय पण दूध आपती थाय. तेमज कोइक स्त्री छाणा वीणवा गइ होय तेने कोइ

बीजो माणस छाणानो टोपलो उपडावनार न मळे तो ते पण उवस-ग्गहरनो पाठ करे. तेथी नागेन्द्रने आवी तेनो टोपलो उपडाववुं पडे. तेमज कोइ स्त्री रोटला करवा बेठी होय अने तेनो छोकरो झाडे गयो होय त्यारे ते पण उवसग्गहरनो पाठ करे, तेथी तरत नागराजाने त्यां आवीने ते छोकराने शौच कराववुं पडे, उवसग्गहरस्त्रोत्रथी नागराज पासे लोग एवा नीच कामो कराववा लाग्या. त्यारे नागराज खींज्या अने गुरुपासे आवी विनंति करी के—महाराज ! संघथी हुं एक क्षणमात्र पण अळगो रही शकतो नथी. लोको तो पूर्वोक्त हलका हलका काम म्हारी पासे करावे छे, गुरुए जाण्युं के ए निर्भाग्य लोको देवने खींजावशे तो उलटो अनर्थ थइ पडशे. माटे आ स्तोत्र भंडारी मूकवुं युक्त छे. नागेन्द्रे कह्युं के आप छट्ठी गाथा भंडारी मूको अने शेष पांच गाथाथीज हुं म्हारे स्थानके बेठो थको सर्व उपद्रव टालीश. एवुं सांभलीने गुरुए छट्ठी गाथा भंडारी दीधी. श्रीभद्रबाहु स्वामीना करेला आवश्य कनिर्युक्ति प्रमुख अनेक ग्रंथो हालमां विद्यमान छे. ए श्रीभद्रबाहु-स्वामी ४५ वर्ष गृहस्थ पर्यायमां, १७ वर्ष व्रतपर्यायमां, अने १४ वर्ष युगप्रधानपद्मां, एवं सर्वायु ७६ वर्षनो भोगवीने श्रीमहावीर स्वामीथी एकसो सितेर वर्ष पछी देवलोके गया तथा बीजा श्रीसंभूतिविजयजी जाणवा ते ४२ वर्ष गृहस्थ पर्यायमां, ४० वर्ष चारित्रपर्यायमां, अने आठ वर्ष युगप्रधानपद्मां, एवं सर्वायु ९० वर्षनो भोगवीने स्वर्गलोकमां गया. ए छट्ठो पाट.

श्रीथूलिभद्रजी अने वररुचिनो संक्षिप्त वृत्तान्त—

श्रीसंभूतिविजयजी अने श्रीभद्रबाहुस्वामीना पाटे आर्य थूलि-भद्रजी गौतम गोत्रीया थया. तेमनो संबंध आवी रीते के—पाडली-पुर नगरमां नवमो नंदराजा राज्य करे छे, तेनो शकडाल नामे प्रधान

छे. तेनी 'लाछलदे' नामा भार्याना बे पुत्र थया. एक थूलिभद्र अने बीजो सिरियो. एक दिवस वररुचि नामा ब्राह्मण राजा पासे आव्यो. तेणे एकसो आठ काव्य नवा बनावीने संभलाव्या. एम ते ब्राह्मण नित्य आवीने एकसो आठ काव्य नवा नवा बनावीने राजा आगल कहे पण ज्यारे प्रधान तेनी प्रशंसा करे त्यारे राजा दान आपे. नहीं कां दान आपे नहीं. अने प्रधान तो वररुचिने मिथ्यात्वी जाणी तेनी प्रशंसा करे नहीं. त्यारे वररुचिभट्टे प्रधाननी स्त्री लाछलदेने कह्युं. स्त्रीए प्रधानने कह्युं के बिचारा ते भट्टने कांइक अपावजो. त्यारे प्रधानना मनमां तो अपाववानो विचार न हतो पण स्त्रीना कहेवाथी राजसभामां कह्युं के ए काव्य सारा छे त्यारे राजाए संतुष्ट थइने नित्य तेने एकसो आठ सोनैया आपवा मांड्या. एम घणा दिवस देतां थया त्यारे प्रधाने जाण्युं के आवी रीते तो सर्व धन नाश थइ जशे. एवुं चिंतवीने पोतानी सात पुत्रीयो छे ते एवी बुद्धिमान् छे के पहेली पुत्री तो एकवार कांइ काव्य प्रमुख सांभले तो ते काव्य तेने मुखपाठ थइ जाय अने फरी तेनो पाठ कही संभलावे. एमज बीजी पुत्री बे वार सांभले तो तेने मुखपाठ थइ जाय. त्रीजी त्रणवार. चोथी चारवार एम यावत् सातमी सात वखत सांभलीने पाठ पाछो कही संभलावे. एम सात पुत्रीयो महा चतुर छे. तेने सीखावी मूक्युं के तमे राजसभामां एवुं कहेजो के ए काव्य जूना छे. अमोने आवडे छे. एम कही मुखपाठे संभलावजो. प्रभाते वररुचि पण एकसो आठ काव्य बनावीने सभामां आवी कहेवा लाग्यो, ते वखते प्रधान बोल्यो के महाराज! आगलना आपणा वडेरा नंदराजानी पासे कहेला ए काव्यो छे ते नित्य आवी कहे छे. ए काव्यो तो सर्व म्हारी पुत्रीयोने पण आवडे छे. त्यारे राजाए पुत्रीयोने बोलावी सर्व काव्य कहेवराव्या. ते साते जणीए अनुक्रमे एक बीजानी पाछल मुखपाठे कही संभलाव्या. त्यारे

राजाए भट्टने निर्भ्रंछना करी कहाडी मूक्यो. पछी ते वररुचिए गंगा-नदीमां एक यंत्र गोठवीने तेनी कल ऊपर छानो पांचसौ सोना म्होरोनो दडो नित्य मूकी आवे, अने प्रभाते लोक भेळा करी त्यां जइ गंगानी स्तुतिना नवा काव्य कही कल खटकावे के पांचसौ सोना म्होरोनो दडो हाथमां आवी पडे ते कौतुक जोइने लोको बोलवा लाग्या के जुओ राजाए आपवानुं बंध कर्युं. तो पण आ पंडितने गंगादेवीज द्रव्य आपे छे ए वात राजाए सांभळी त्यारे प्रधानने कह्युं के आपणे पण जोवा चालीए, प्रधाने कह्युं आवती काले चालीशुं. पछी प्रधाने त्यां छाना छूपा माणसो बेसाड्या ते ज्यारे सांजनी वखते भट्ट सोना म्होरोनी पोटली यंत्रमां मूकी आव्यो त्यारे ते छाना बेठेला माणसोए पोटली कहाडी लइने प्रधानने आपी. प्रभाते राजा प्रमुख सर्व लोको जोवा गया. त्यारे ते वररुचि पण गंगादेवीनी स्तुति करी घणा जोरथी कल दबावे छे, तो पण हाथमां कांइ आवतुं नथी. त्यारे राजा बोल्यो, आम केम थयुं? ते वखते प्रधाने सर्व प्रपंच प्रगट करीने पोटली बतावी पाछी भट्टने सोंपी दीधी. तेथी लोकोमां भट्टनी घणी निंदा थइ. भट्ट मंत्री ऊपर द्वेष करवा लाग्यो. एवा अवसरमां प्रधानना छोकरा सिरियानो विवाह मंडाणो त्यारे प्रधानना घरमां शस्त्र प्रमुख अनेक तरेहनी तैयारीयो देखीने भट्टे एक दुहो बनावी पोतानी पासे भणवा आवनार छोकराओने शिखाव्यो के "नंदराय जाणे नहीं, जे सिकडाल करेसि। नंदराय मारी करी, सिरियो रज्ज ठवेसि ॥ १ ॥" ए दुहो छोकरा राजाना महेल पासे आवीने कहेता थका निकल्या, राजाए भट्टने पूछ्युं आ वात केम छे? भट्टे कह्युं—तमे चोकसी करावो. सर्व जातिना शस्त्र तैयार थाय छे. राजाए चोकसी करावी. युद्धसामग्री जाणीने कुपित थयो, अने निरधार कर्यो के सकडालना सर्व कुटुंबने मरावी न्हांखवुं जोइए. आ वात सकडाले जाणी त्यारे

राजा पासे आव्यो, राजाए सकडालने जोइ म्होढुं फेरवी लीधुं त्यारे प्रधान घेर आवीने सिरियाने कहेवा लाग्यो के-म्हारी वात सांभल. ज्यारे हुं जइ राजाने नमस्कार करुं ते वखते तुं म्हारुं मस्तक तरवारथी कापी नाखजे. ए वात घणीज महेनतथी सिरिए मान्य करी. पछी सकडाले राजाने प्रणाम कर्यो. राजाए म्होढुं फेरवी लीधुं. प्रधाने पोताना मुखमां तालपुट विष न्हांखी लीधो. सिरियो बोल्यो के 'जे कोइ राजानो द्वेषी होय तेने तो मारवोज जोइए' एवुं कहीने तरवार मारी तेथी मस्तक कपाइ गयुं. राजा घणो खेद करीने पछी संतुष्ट थइ सिरियाने कहेवा लाग्यो के त्हारा पितानो अधिकार तुं ले, सिरियो बोल्यो-म्हारो म्होटो भाइ थूलिभद्र छे तेने अधिकार आपवो जोइए, राजाए पूछ्युं ते क्यां छे ? त्यारे सिरिए कह्युं म्हारो भाइ न्हानपणमां शास्त्र वांचवा ऊपर कालनिर्गमन करतो हतो ते परण्यो हतो पण पोतानी स्त्री पासे जतो नहीं. तेथी म्हारा मातपिताए जाण्युं के ए संसारनी कला शीखशे नहीं एवुं विचारीने कोशा वेश्याने कला शीखववा माटे सोंप्यो छे, तेने बार वर्ष थया. वेश्याने त्यांज लोभाइ गयो छे. बार क्रोड सोनैया खर्ची दीधा. माटे तेने बोलावीने अधिकारी करो. राजाए थूलिभद्रने तेडवा माटे छडीदार मोकल्यो, त्यारे वेश्या बोली राजा पासे म जाओ. केम के जाशो तो फरी राजा तमोने म्हारी पासे आववा देशे नहीं अने म्हाराथी पण तमारा विना कोई रीते रहेवाशे नहीं, माटे तमारे जावुं न जोइए. त्यारे थूलिभद्र बोल्यो के एक तो म्हारा पितानुं मरण थयुं छे. अने बीजो वली राजानो हुकुम आव्यो छे ते फरी शके नहीं, तो पण एकवार तने मलवा माटे तो जरूर आवीश. एवुं कहीने पोताने घेर आव्यो. भट्टना प्रपंचनी सर्व वात तथा पिताना मरणनी सर्व वात सांभलीने पछी राजा पासे गयो. राजाए तेने प्रधान पद ग्रहण करवा कह्युं. थूलिभद्र बोल्यो, विचारीने ग्रहण करीश.

राजाए कह्युं--तुरत विचारी ले.पछी राजानी ज अशोकवाडीमां जइने विचार कर्यो के--आ संसार तो मतलबी छे, कोइ कोइनो सगो नथी. म्हारा पितानी जेवी अवस्था थइ तेवी ज अवस्था म्हारी पण एक दिन थवा संभव छे. माटे राज्यना काममां आ लोकनुं पण सुख नथी अने परलोकमां तो नरकनी प्राप्ति थाय एम संसारने असार जाणी, वैराग्यरंग रंगित थइ, रत्नकंबलनो ओघो बनावी, लोच करी, साधु थइने राजाना पासे जइ धर्म-लाभ आप्यो. अने तरत त्यांथी निकल्यो. राजाए जाण्युं के आ व्यसनी छे माटे वेश्याने घेर जशे एवुं विचारीने जोवा लाग्यो. त्यारे ते तो कोइ महादुर्गंधित गलीमांथी थइने गाम बाहेर निकली गया पण दुर्गंधथी नाक ढांक्युं नहीं. तेथी राजाए जाण्युं के ए खरेखरो वैराग्यवान् छे. पछी थूलिभद्रजीए जइने श्रीसंभूतिविजयजीनी पासे दीक्षा लीधी अने राजाए सिरियाने मंत्रीपदनी म्होर आपी.

चोमासुं आव्युं त्यारे श्रीथूलिभद्रजी गुरुना आदेशथी कोशावेश्याने घेर चोमासुं रह्या. अने बीजो साधु सिंहनी गुफामां चोमासुं रह्या, तथा त्रीजो शिष्य सर्पना बिल ऊपर चोमासुं रह्या. चोथो साधु कुवाना वचला काष्ठ ऊपर चोमासुं रह्या, ए चारेमांथी थूलिभद्रजी वेश्याने घेर चोमासुं रह्या छे, त्यां चोमासुं निर्गमन करवुं महा कठण छे, एक तो वर्षाऋतु छे, ते कामनी जगाववा वाली छे केमके जे कालमां मेघ गर्जारव करे, वीजली चमके, मोर बोले, पपइया पिउ पिउ करे, एवा कालमां भोगनी वांछा घणी थाय छे. वली रहेवाने चौरासी आसनचित्रित चित्रशालावाली जगा, अने खावाने षड्रस भोजन नित्य मले, ए सर्व भोगना अंग मले अने जो स्त्री रागवाली न मले तो सर्व निष्फल थाय. परंतु अहीं थूलिभद्रजीने तो कोशा वेश्या सरखी सर्वमां अग्रेसर रागवाली स्त्री मली छे, तेणे म्होटी उमेदथी चित्र शालामां उतार्या, अनेक प्रकारना भोजन कराव्या, अनेक तरेहना

हाव भाव कर्या, फूल ऊपर नाटक कीधुं, भोग विलासना वचन बोली, तथापि ए महापुरुषनुं एक रोम पण डग्युं नहीं. छेवटे वेश्या बोली के हुं आटला विलास करुं छुं तेनुं कांइ प्रत्युत्तर तो आपो. मुनिए उत्तरमां कह्युं के हे भोली ! धर्म विना सर्व अवतार निष्फल छे. इत्यादिक उपदेश सांभळीने कोशा श्राविका थइ, एक राजाना हुकुमदार पुरुष विना बीजा कोइ पण पुरुषने घरमां पेसवा देवो नहीं एवो अभिग्रह लीधो. कोशाने श्राविका बनावी, पछी चोमासुं पूरण थयां थूलिभद्र मुनि गुरु पासे आव्या. अने बीजा त्रण साधु पण आव्या, तेमने तो गुरुए किंचित् उठीने कह्युं के हे दुक्कर-कारक ! भले आव्या अने थूलिभद्रजीने तो आवतो देखतां ज तत्काल गुरु उठी ऊभा थइने बोल्या—भले आव्या, अहो ! दुक्करकारक दुक्कर कारक, एवुं सांभली सिंहगुफावासी साधुए अमर्ष आणीने विचार्युं के आ गुरु पण धनवंतना गरजु देखाय छे. केमके जे खूब माल खाइने मातो थइ आव्यो तेने तो अहो 'दुक्करदुक्करकारक' एवुं कह्युं. अने में एवुं कठण तप कर्युं, तेने तो 'दुक्करकारक' एटलुंज कह्युं, एवुं जाणीने आवता चोमासे सिंहगुफावासी साधुए गुरुने कह्युं के हुं वेश्याने घेर चोमासुं करवा जइश. गुरुए कह्युं—वत्स ! कामदेवनी राजधानी सरखा घरमां जइ चोमासुं करवानुं काम अत्यंत कठण छे, तुं भ्रष्ट थइ जइश माटे त्हारे जावुं नहीं. तो पण तेणे मान्युं नहीं, अने कोशाने घेर चोमासुं रहेवा गयो. त्यां एक सामान्य जग्या वेश्याए तेने रहेवा माटे आपी अने तेनी पासे सामान्य वेष करीने बेठी, तो पण तेनुं रूप देखीने मुनि मुनिपदथी डगी गयो अने भोग माटे प्रार्थना करवा लाग्यो, त्यारे वेश्या बोली—धन विना तमारी कामना सिद्ध न थाय. साधुए कह्युं के धन क्यांथी लइ आवुं ? वेश्या बोली—नेपाल देशनो राजा साधुओने रत्नकंबल आपे छे त्यांथी लइ

आवो. साधु भोग करवानो मतलबी थयो माटे चोमासाना दिवसोमां कीचड खूंदतो खूंदतो नेपाल देशमां गयो. त्यांना राजा पासेथी रत्नकंबल लइने पाछो वल्यो. रस्तामां चोरोनो सूडो बोल्यो के-" लक्षं याति " चोरोए सूडानी वाणी सांभलीने साधुनी पासेथी रत्नकंबल पडावी लीधो. फरी पाछो राजा पासे जइ कहेवा लाग्यो के कंबल चोरोए लुंटी लीधो. त्यारे राजाए वांसनी लाकडीमां रत्न कंबल मूकीने दीधो. पाछो फरतां वली पण रस्तामां सूडो बोल्यो " लक्षं याति " ते चोरोए सांभल्युं. परंतु कंबल दीठामां न आवी, तो पण चोरोए जाण्युं के अमारो सूडो झूंठुं बोले नहीं, तेथी मुनिने कह्युं तमारी कंबल अमे लइशुं नहीं, पण सत्य कहो, के तमारी पासे कंबल छे के नथी ? मुनिए सत्य कह्युं, चोरोए छोडी दीधो. मुनिए रत्नकंबल लावीने वेश्याने दीधो, वेश्याए स्नान करी कांबलथी शरीर पूंछीने खालमां न्हाखी दीधो. ते जोइ साधु बोल्यो, हे भोली ! एवा अमूल्य रत्नकंबलने खालमां केम न्हाखी दीए छे ? वेश्या बोली अरे मूर्ख ! तुं पण शुं करे छे? के आ महा दुर्लभ इहलोकमां अने परलोकमां सुखकारी रत्नकंबलथी पण अत्यंत अधिक मूल्यवान् एवुं चारित्र रूप रत्न छे तेने मलमूत्रथी भरेलुं एवुं जे म्हारुं शरीररूप दुर्गंधित खाल तेमां न्हाखवा तैयार थयो छे ? माटे तुं म्हाराथी अधिक मूर्ख देखाय छे. एवुं सांभली प्रतिबोध पामी, ते साधु पाछो गुरुनी पासे आवीने फरीथी चारित्र लइ शुद्ध थयो.

एक दिवसे राजाना रथकारे कोशा वेश्याने घणीज स्वरूपवाली सांभली तेथी तेनी पासे जवानी इच्छा थइ पण राजाना हुकुम विना बीजाने वेश्या राखे नहीं एवो तेनो नियम जाणीने रथकारे राजाने कोइ पोतानी कला बतावीने राजी कर्यो. त्यारे राजा प्रसन्न थइने बोल्यो के-मांग जे तुं मांगे ते हुं आपुं. रथकारे कोशानी

मांगणी करी, राजाए हुकम आप्यो अने कोशाने रथकार सोंप्यो. कोशा नित्य प्रत्ये रथकारना पासे श्रीथूलिभद्रजीना गुण गान करे, ते जोइ रथकारे जाण्युं के हुं एने कोइ कला बतावुं तो ए म्हारा गुण जाणशे ने म्हारी स्तुति पण करशे. एवुं चिंतवीने गोखमां बेसी एक बाणथी सात केरीनो झुमखो वींध्यो तथा तेनी पछवाडे वली बीजुं बाण सांध्युं एम एकेकनी पछवाडे बाणो सांधीने गोखमां बेठा थकां ज आंबानी लूंब तोडीने वेश्याने आपी दीधी, अने कहेवा लाग्यो के जो आ म्हारी कला केवी छे ? त्यारे कोशावेश्याए एक राइना दाणानो ढगलो करी तेना ऊपर फूल सहित एक सूइ ऊभी राखीने तेनी ऊपर नाटक कर्युं. ते नृत्य जोइने रथकार अत्यंत खुशी थइ गयो अने कहेवा लाग्यो के मांग मांग हुं त्हारी ऊपर संतुष्ट थयो छुं. कोशाए कह्युं तमे केवो तमासो जोयो, के जेथी खुशी थइने म्हारा ऊपर प्रसन्न थया ? आ में जे सूइनी अणी ऊपर नृत्य करी बताव्युं एवी कलाओ जो शीखवा बेसीए तो हजारो शीखी शकाय छे. तेमज आपें जे आम्रनी लूंब तोडी, ए पण शीखवुं सहेल छे. एमां कांइ कठण नथी, अभ्यास करवाथी बधी कला शीखी शकाय तेवी छे. परंतु म्हारा जेवी स्वरूपवाली स्त्री पासेनी पासे ऊभी रहेली हती, अने वली चोमासाना दिवस हता, तेमज कामने जाग्रत करनारी एवी आ चित्रशाला हती तथा शरीरने पुष्टीना करनारा, अने मन्मथने उत्तेजन आपनारा एवा घणा श्रेयमां श्रेय भोजन मलता हता ते आरोगीने रात्रि दिवस म्हारी पासे रहेता. तेम हुं पण तेमना ऊपर मोहित थई हमेश सराग दृष्टीथी बहु प्रीतिपूर्वक विषयसेवन करवानी याचना करती हती. आटलो अनुकूल योग छतां एक क्षणमात्र पण जेनुं मन चलायमान थयुं नहीं एवी कला श्रीथूलिभद्रजीनी पासे हती, ते शीखवी घणीज कठण छे. आ महा मुनिवरना आगल में घणा प्रकारना चाला कर्या तो पण ते

महापुरुष किंचिन्मात्र डग्या नहीं. धन्य छे एमना मातपिताने के जेना कुलमां एवो पुरुषरत्न उत्पन्न थयो, एवो उपदेश आपी रथकारनुं मन वैराग्य तरफ वालीने श्रीथूलिभद्रजी पासे मोकल्यो, तेणे पण थूलिभद्रना पासे दीक्षा लीधी.

हवे ते समयमां बार वर्ष पर्यंत काल पड्यो. त्यारे त्यां सर्व मुनिराजो अग्यार अंगना जाणनारा रह्या, पण द्वादशांगीना जाणनारा कोइ न रह्या. त्यारे सर्व संघे बे मनुष्य मूकीने श्रीभद्रबाहु स्वामीने बोलाव्या, भद्रबाहु स्वामीए कह्युं म्हे प्राणायाम ध्यान चालु करेल छे माटे म्हाराथी आवी शकाय तेम नथी. तेमने श्रीसंघे फरीथी कहेवराव्युं के महाराज ! जे श्रीसंघनी आज्ञा न माने तेने केवा प्रकारनो दंड आपवो ? श्रीभद्रबाहुजी बोल्या तेने गच्छ बाहेर करवो एवी आज्ञा छे, पण मन्हे ध्याननो अंतराय पडशे माटे श्रीसंघने एम करवुं योग्य छे के भणवावाला साधुओने म्हारी पासे मोकली आपवा तेथी तेमने भणाववानुं कार्य बनी शकशे. त्यारे श्रीसंघे मली श्रीथूलिभद्र प्रमुख पांचसो साधुओने श्रीभद्रबाहुस्वामी पासे मोकल्या, त्यां गुरुए सर्व साधुने सात वाचना दीधी. तेमां बीजा सर्व साधु तो भणवाथी हारी गया. परंतु एक श्रीथूलिभद्रजी बे वस्तुथी ऊणा दश पूर्व भणी गया. एवामां श्रीथूलिभद्रजीनी सात ब्हेनो-यक्षा, यक्षदिन्ना, भूता, भूतदिन्ना, सेणा, वेणा अने रेणा ए साते साध्वीओ श्रीसंभूतिविजयजीनी शिष्यणीओ थयेली छे, ते श्रीथूलिभद्रजीने वांदवा सारु आवी. तेणे प्रथम श्रीभद्रबाहु स्वामीने वांदीने पूछयुं के थूलिभद्रजी क्यां छे ? गुरु बोल्या-पर्वतनी गुफा मांहे भणेला पूर्वनी आवृत्ति करे छे. त्यारे साते जणी त्यां गइ, तेमने आवती जोइ ज्ञाननो चमत्कार देखाडवा माटे श्रीथूलिभद्र सिंहनुं रूप करी बेठा. त्यां सिंहने देखी साध्वीओ भय पामी थकी फरी गुरु पासे आवीने कहेवा

लागी के महाराज त्यां तो सिंह बेठो छे. त्यारे गुरुए ज्ञानथी जाण्युं के एणे विद्या प्रगट करी जणाय छे, एम विचारीने कह्युं के हवे तमे जाओ, थूलिभद्रजी त्यांज छे. ते फरी गइ अने भाइने देखी हर्ष सहित वंदना करी, वली गुरु पासे आवीने कहेवा लागी के महाराज! "अमारी साथे सिरिये दीक्षा लीधी हती. तेने यक्षाए उपवास कराव्यो, तेथी ते देवलोक गयो. पछी यक्षाने प्रायश्चित्त लेवा माटे श्रीसंघने कह्युं. त्यारे श्रीसंघे काउसग्ग करीने शासन देवीने सीमंधरस्वामी पासे मोकली, सीमंधरस्वामीना मुखथी बे चूलिका लइने शासनदेवी पाछी आवी." एवुं कही गुरुने वांदीने पोताने स्थानके गइ. एक दिवसे श्रीथूलिभद्रजी पोतानो ब्राह्मण मित्र हतो, तेना घेर गया. त्यां ब्राह्मणनी स्त्रीने पूछ्युं–म्हारो मित्र क्यां छे? स्त्रीये कह्युं घरमां खावा माटे कांइ नथी तेथी गाममां भीख मांगवा गया छे. त्यारे श्रीथूलिभद्रजीए ज्ञानबलथी जोयुं तो एना घरमां वडिलोपार्जित घणुं धन भरेलुं दीठुं, पण ब्राह्मणने तेनी खबर नथी माटे भीख मांगे छे, पछी श्रीथूलिभद्रजीए पोतानी दृष्टीथी दाटेला धननुं ठेकाणुं तेनी स्त्रीने बताव्युं, अने पोते चाल्या गया. ब्राह्मणे आवीने पोतानी स्त्रीना कहेवाथी दाटेला धननुं स्थानक जाण्युं अने विचार्युं के पक्का मुद्दा विना मुनिराज दृष्टी आपे नहीं. माटे तेणे धरती खोदी जोयुं तो तेमांथी घणुं धन निकल्युं. तेना योगे ब्राह्मण सुखी थयो. एवी रीते एक सिंहनी विकुर्वणा करी अने बीजुं ब्राह्मणने धन देखाड्युं, ए बे वातो अयोग्य करीने श्रीथूलिभद्रजी गुरुनी पासे वाचना लेवा आव्या. त्यारे गुरुए कह्युं के पूर्वोक्त बे काम करवाथी तमे वाचना लेवाने अयोग्य थया छो, फूटेला भाजनमां दूध भरिये तो ठेरे नहीं, तेम तमने पण वाचना हवे देवाय नहीं. एवुं सांभली श्रीथूलिभद्रजी उदास थया. श्रीसंघने विनंति करी के म्हारामां चूक पडी छे माटे गुरु

वाचना आपता नथी. श्रीसंघे मली थूलिभद्रजीने वाचना आपवा माटे भद्रबाहुगुरुने अरजी करी. ते ऊपरथी गुरुए चार पूर्व मूल पाठे वंचाव्या पण अर्थ शीखाव्यो नहीं. वली एवुं पण कह्युं के ए चार पूर्व तमारे बीजा कोइने भणाववा नहीं. त्यारथी पाछला चार पूर्वना ज्ञाननो विच्छेद थयो, अने दश पूर्वनुं ज्ञान रह्युं. ए श्रीथूलिभद्रजी आचार्य गृहस्थवासमां त्रीश वर्ष, व्रतपर्यायमां चोवीस वर्ष, अने युगप्रधानपदमां पेंतालीस वर्ष; एवं सर्वायु नवाणुं वर्षनो भोगवीने श्रीमहावीर स्वामीना निर्वाण पछी बसो ने पन्नर (२१५) वर्षे देवलोक गया, एमां एक श्रीजंबूस्वामी केवली थया अने बीजा सर्व श्रुत-केवली थया.

आर्यमहागिरि, आर्यसुहस्ति अने राजासंप्रतिनुं वृत्तान्त—

श्रीथूलिभद्रस्वामानीना पाटे एक तो श्रीआर्यमहागिरि एलापत्य गोत्री अने बीजा श्रीआर्यसुहस्ति वाशिष्ठ गोत्री, ए बे शिष्य आचार्य थया तेमना वखतमां जिनकल्प मार्ग विच्छेद थयो हतो, तो पण श्री आर्यमहागिरिजीए जिनकल्पनी तुलना करी एटले जिनकल्पनी मर्यादा प्रमाणे वर्त्तवा लाग्या. एक दिवसे श्रीआर्यसुहस्तिसूरि कोइ शेठना घेर उपदेश आपी रह्या हता एज अवसरमां श्रीआर्यमहागिरिजी गोचरीए आव्या, तेमने देखीने श्रीआर्यसुहस्ति तरत उठीने ऊभा थया. त्यारे शेठे पूछ्युं के ए महात्मा कोण छे ? आर्यसुहस्तिसूरिए शेठनी आगल आर्यमहागिरिजीनी स्तवना करीने सर्व वृत्तांत कह्यो. वली एमना समयमां दुकाल पड्यो, धान खावाने मलवुं मुशकिल थयुं, तेथी सर्व लोक दुःखी थया, राजा जेवा हता ते पण रांक जेवा थइ गया, तो पण श्रावक लोको साधुओने बहु भिक्षा आपता हता. साधुओने घणी भिक्षा मलती देखीने एक भिखारी साधुओनी पछवाडे चालवा लाग्यो, अने बोल्यो के मने खावाने आपो. तमोने घणुं खावानुं मले छे. साधुओए कह्युं के अमारा गुरुने पूछी तेनी आज्ञा लइ आव. त्यारे भिखारी गुरुनी पासे

आव्यो, गुरुए कह्युं के अमारा जेवो होय तेने अमे आपीए. भिखारीए कह्युं के भले तमारा जेवो मने पण बनावी ल्यो. ते सांभली गुरुए पण भावी लाभ जाणी दीक्षा आपीने, तेनी इच्छा मुजब भोजन कराव्युं. अने कह्युं के पूर्वकृत पुन्यना उदयथी तमने चारित्र मळेल छे माटे शुद्ध भाव राखजो. एटलामां तेने उलटी थइ, त्यारे सर्व साधु तेनो वैयावच्च करवा लाग्या, तेथी भिक्षुए चारित्रनी अनुमोदना कीधी अने मरण पामीने उज्जयणी नगरीमां श्रेणिक राजाना पाटे कोणिक राजा, तेना पाटे उदायिन राजा, तेना पाटे नापित नंद नामे नव राजानां नव पाट थया. तेरमा पाटे मौर्य-चंद्रगुप्त, चौदमा पाटे बिन्दुसार, पन्नरमा पाटे अशोकश्री अने सोलमा पाटे अशोकश्रीनो पुत्र कुणाल थयो, ते कुणालनो पुत्र संप्रतिनामे राजा थयो. जन्मतां ज तेना दादाए तेने राज्य आप्युं, ते अनुक्रमे त्रण खंड पृथ्वीनुं राज्य भोगवनारो थयो, एक दिवसे संप्रतिराजा गोखमां बेठो हतो, तेणे रथयात्रामां आर्य सुहस्तिसूरिने जता दीठा, तेथी राजाने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं अने पूर्वे भिक्षुना भवमां पोते साधु थयो हतो, ते सर्व वृत्तान्त दीठामां आव्युं, त्यारे गोखथी नीचे उतरी, गुरुने पगे लागीने पूछयुं के स्वामिन्! अव्यक्त सामायिकनुं शुं फल? गुरुए कह्युं, राज्यादि प्राप्ति थाय, ते सांभली संप्रति राजा वली विशेष दृढ थइने गुरुने पूछवा लाग्यो के स्वामिन्! मने आप ओलखो छो? गुरु उपयोग आपीने बोल्या के तुं भिक्षुना भवमां अमारो शिष्य हतो, तो हवे तने राज्य मल्युं छे माटे धर्मवृद्धि कर, एवुं गुरुनुं वचन सांभलीने राजाए श्रावकपणुं लीधुं अने सवालाख जिनमंदिर नवा कराव्या, सवाकोटी जिनबिंब प्रतिष्ठाव्यां, तेर हजार जीर्णोद्धार कराव्या, पंचाणुं हजार पीतलनी प्रतिमाओ भरावी, सातसो दानशालाओ करावी, देवालयोथी सर्व पृथ्वी शोभाय-मान करी, कर छोडाव्या, साधुओना वेश पहेरावीने पोताना सुभटोने

तेवो उपाय करुं तो ए मने त्यागी देशे, त्यारे हुं दीक्षा लइश. एवुं जाणी माताने उद्वेग करावबाने माटे नित्य रुदन करवानुं चालु कर्युं. केमके एने तो चारित्र लेवानो भाव वर्त्ते छे. त्यारे बालकना रुदनथी माता घणो उद्वेग करवा लागी अने विचार्युं के हुं आ पुत्रने शुं करुं ? कोइने आपी दउं तो ठीक. एवा अवसरमां सिंहगिरि आचार्य त्यां पधार्या, त्यारे धनगिरि गोचरीए जवा लाग्या, तेने गुरुए ज्ञानदृष्टीथी विचारीने कह्युं के आज तमोने गोचरीमां सचित्त-अचित्त वस्तु जे कांइ मले ते लइ लेवी. पछी धनगिरि गोचरी फरतां फरतां सुनंदाना घरे गया. सुनंदा बोली आ तमारा पुत्रे तो मने उलटो संताप करी दीधो छे, माटे एने लइ जाओ. धनगिरिए कह्युं हमणा तो तुं आपे छे. पण पाछलथी दुःख करीश. सुनंदा बोली, हुं दुःख नहीं करुं, तमे सुखेथी लइ जाओ. त्यारे धनगिरिजी घणी स्त्रीयोने तथा बीजा लोकोने साक्षी करी पुत्रने लइ झोलीमां न्हांखी उपासरे आव्या. गुरुए झोली उपाडी तेमां भार घणो लाग्यो, त्यारे बोल्या के आ शुं वज्र छे के ? एवुं कहीने झोली उघाडी तो मांहे बालकने दीठो. तेनुं 'वज्र' एवुं नाम दीधुं. उपासरामां आव्या पछी बालके रुदन करवुं बंध कर्युं. गुरुए शय्यातरिणी श्राविकाने ते बालक सोंप्यो, तेणे पारणामां राख्यो. ते ज्यारे छ महीनानो थयो त्यारे त्यां शालामां साध्वीओ भण्या करती हती तेमना वचन सांभली पारणामां सूतां सूतां अगीआर अंग भणी गयो. अनुक्रमे त्रण वर्षनो थयो त्यारे सुनंदा बोली के हुं म्हारो पुत्र पाछो लइश. तेने संघे कह्युं के ए गुरुनो माल छे, अमाराथी अपाय नहीं. पछी राज दरबारमां गइ. त्यां संघनी विनंतिथी गुरु पण दरबारमां आव्या. राजाए एवी रीते न्याय थाप्यो के जेना उपकरण ए बालक लइ लीए, तेनोज ए पुत्र जाणवो. त्यारे माताए लाडु तथा रमकडा प्रमुख बालकने देखाड्या, परंतु बालके तेनी स्हामुं

एकज गच्छ हतो परंतु श्रीआर्यसुहस्तिसूरिथी सांभोगिकपणुं भिन्न थयो, आर्यसुहस्ति ३० वर्ष ग्रहस्थावासमां, २४ वर्ष व्रतपर्यायमां, अने ४६ वर्ष युगप्रधानपद्वीमां, एवं १०० वर्षनुं सर्वायु भोगवीने वीर-निर्वाणथी २५१ वर्ष बाद देवलोक गया.

९ श्रीआर्यसुहस्तिना बे शिष्य थया–एक तो सुस्थित अने बीजा सुप्रतिबद्ध. एमणे कोटी वार सूरिमंत्र जप्यो. काकंदी नगरीमां जन्म्या, तेमनुं व्याघ्रापत्य गोत्र हतुं. एमना पाटे १० श्रीआर्य-इंद्रदिन्नसूरि कौशिकगोत्रीया थया. एमना पाटे ११ श्रीआर्यदिन्न-सूरि गौतम गोत्रीया थया, एमना पाटे १२ श्रीआर्यसिंहगिरि कौशिक गोत्रीया थया जे जातिस्मरण ज्ञान पाम्या हता, एना पाटे १३ आर्य-वज्रसूरि गौतम गोत्रीया थया, एमना पाटे १४ आर्यवज्रसेनसूरि उत्कौशिक गोत्री थया, एमना चार शिष्य थया–एक नाइल, बीजो पोमिल, त्रीजो जयंत अने चोथो तापस. ए चारेना नामथी चार शाखाओ निकली.

वज्रस्वामी अने वज्रसेनसूरि—

आर्यसिंहगिरिथी मांडीने त्रण पाटनुं संक्षिप्त स्वरूप देखाडे छे–श्रीसिंहगिरिनी पासे सुनंदानो भाइ आर्यसमित तथा बीजो सुनंदानो भरतार धनगिरि ए बे जणे दीक्षा लीधी. अने सुनंदा गर्भवती हती तेने तुंबवन गाममां मूकी दीधी. पछी सुनंदाने पुत्र थयो, ते वखतमां बीजी पाडोसीनी स्त्री बोली के–बाइ! जो आज एना बाप धनगिरिए दीक्षा न लीधी होत, तो आ पुत्रना जन्मनो म्होटो महोत्सव थात. पण हमणां तो पिता विना बीजो कोण आवीने महोत्सव करे. एवी वात सांभलीने ते बालकने जातिस्मरण ज्ञान उपन्युं. त्यारे बालके जाण्युं के हुं जो म्हारी माताने राजी राखीश तो ए मुजने छोडशे नहीं. माटे कोइ रीते एने कंटालो उपजे

तेवो उपाय करुं तो ए मने त्यागी देशे, त्यारे हुं दीक्षा लइश. एवुं जाणी माताने उद्वेग करावबाने माटे नित्य रुदन करवानुं चालु कर्युं. केमके एने तो चारित्र लेवानो भाव वर्त्ते छे. त्यारे बालकना रुदनथी माता घणो उद्वेग करवा लागी अने विचार्युं के हुं आ पुत्रने शुं करुं? कोइने आपी दउं तो ठीक. एवा अवसरमां सिंहगिरि आचार्य त्यां पधार्या, त्यारे धनगिरि गोचरीए जवा लाग्या, तेने गुरुए ज्ञानदृष्टीथी विचारीने कह्युं के आज तमोने गोचरीमां सचित्त-अचित्त वस्तु जे कांइ मले ते लइ लेवी. पछी धनगिरि गोचरी फरतां फरतां सुनंदाना घरे गया. सुनंदा बोली आ तमारा पुत्रे तो मने उलटो संताप करी दीधो छे; माटे एने लइ जाओ. धनगिरिए कह्युं हमणा तो तुं आपे छे. पण पाछलथी दुःख करीश. सुनंदा बोली, हुं दुःख नहीं करुं, तमे सुखेथी लइ जाओ. त्यारे धनगिरिजी घणी स्त्रीयोने तथा बीजा लोकोने साक्षी करी पुत्रने लइ झोलीमां न्हांखी उपासरे आव्या. गुरुए झोली उपाडी तेमां भार घणो लाग्यो, त्यारे बोल्या के आ शुं वज्र छे के? एवुं कहीने झोली उघाडी तो मांहे बालकने दीठो. तेनुं 'वज्र' एवुं नाम दीधुं. उपासरामां आव्या पछी बालके रुदन करवुं बंध कर्युं. गुरुए शय्यातरिणी श्राविकाने ते बालक सोंप्यो, तेणे पारणामां राख्यो. ते ज्यारे छ महीनानो थयो त्यारे त्यां शालामां साध्वीओ भण्या करती हती तेमना वचन सांभली पारणामां सूतां सूतां अगीआर अंग भणी गयो. अनुक्रमे त्रण वर्षनो थयो त्यारे सुनंदा बोली के हुं म्हारो पुत्र पाछो लइश. तेने संघे कह्युं के ए गुरुनो माल छे, अमाराथी अपाय नहीं. पछी राज दरबारमां गइ. त्यां संघनी विनंतिथी गुरु पण दरबारमां आव्या. राजाए एवी रीते न्याय थाप्यो के जेना उपकरण ए बालक लइ लीए, तेनोज ए पुत्र जाणवो. त्यारे माताए लाडु तथा रमकडा प्रमुख बालकने देखाड्या, परंतु बालके तेनी सामुं

पण जोयुं नहीं. पछी गुरुए बालकने कह्युं के आ ओघो त्हारे लेवो होय तो लइ ले, त्यारे बालके ओघो ग्रहण कर्यो. अने नाचवा कूदवा लाग्यो. राजाए कह्युं न्याय थइ चुक्यो. एम कही बालक गुरुने आपी दीधो. ते आठ वर्षना थयो त्यारे दीक्षा लीधी. ते वखते सुनंदाए कह्युं के म्हारो पुत्र पण तमे लइ लीधो तो हवे मने पण दीक्षा आपो, गुरुए सुनंदाने पण दीक्षा आपी.

एक दिवस उज्जयणीना मार्गमां वज्रऋषीना पूर्वभवनो मित्र कोइ देव हतो ते मनुष्यनुं रूप करीने वज्रऋषीनी परीक्षा करवाने अर्थे कोळानी भिक्षा देवा लाग्यो. वज्रऋषीए जाण्युं के कोळानी ऋतु तो हमणा नथी, तो आ वखतमां ए कोळा क्यांथी लाव्यो. ए तो कोइ देवताए छल कर्यो होय एम जणाय छे माटे देवपिंड न लेवो. एवुं जाणी भिक्षा लीधी नहीं. देवे संतुष्ट थइने वैक्रिय लब्धि आपी. फरी वळी उन्हालाना दिवसोमां घेबरनी परीक्षामां देव चलाववा आव्यो, तेमां पण वज्रमुनि चलायमान थया नहीं. त्यारे देवताए आकाशगामिनी विद्या आपी. एक दिवस गुरु ठंडिल भूमिए गया अने केटलाएक साधुओ गोचरीए गया, पाछलथी वज्रमुनि बालक्रीडाथी साधुओना उपधि प्रमुख उपगरण चारे बाजु मूकी पोते वचमां बेसीने जेवी रीते गुरु वाचना आपे तेवी रीते जुदी जुदी अगीआरे अंगनी वाचना देवा लाग्या. गुरुए पण बारणे छाना ऊभा रहीने सर्व वाचना सांभळी, पछी बालकने कांइ पण शंका पडे नहीं तेवी रीते म्होटा स्वरथी निसीहि कहीने गुरु उपासरामां आव्या. वज्रऋषीए पण पोतानुं करेलुं सर्व कृत्य समेटी लीधुं. पछी गुरुए ते बालकना गुण प्रगट करवा माटे साधुमंडलने कह्युं के तमे अहींज रहेजो, हुं एक गाम जइने आवुं छुं, त्यारे साधुओ बोल्या—अमोने वाचना कोण आपशे ? गुरुए कह्युं वज्रऋषी आपशे. एवुं कहीने गुरु बीजे गाम गया. ते साधुओ गुरुनुं वचन

प्रमाण करवावाला विनयवंत हता, माटे वज्रमुनिनो विनय करीने वज्रमुनि पासे वाचना लेवा लाग्या, तेमने वज्रमुनिए पण एवी वाचना आपी के गुरु घणी वाचनाओथी जेटलुं भणावे, तेटलुं एकज वाचनामां भणावी दीधुं. साधुओए विचार्युं के गुरु गाम गया छे तेने जो चार दिवस वधारे लागे तो ठीक, तेटलामां अमारो आ अमुक श्रुतस्कंध पूरण थइ जशे. पछी केटलाक दिवस वीत्या बाद गुरु आव्या, तेमणे पूछयुं साधुओ! तमारे वाचना सुखे थइ? साधु बोल्या हां महाराज! हवे अमारे वाचनाचार्य ए वज्रज थाओ, गुरुए वज्रमुनिने वाचनाचार्य कर्या. गुरुनी आज्ञाथी वज्रमुनि उज्जयणी-नगरीमां भद्रगुप्ताचार्य पासेथी दश पूर्व भण्या अने आचार्यपद पाम्या. एक दिवस पाटलीपुरमां धनशेठना घरे साध्वीओ उतरी हती तेणे वज्रस्वामीना गुण अने रूपनुं वर्णन कर्युं. ते सांभली शेठनी पुत्री रुक्मि-णीए एवी प्रतिज्ञा करी के वज्रस्वामी विना बीजाने म्हारे परणवुं नहीं. एटलामां वज्रस्वामी पण पाटलीपुरमां आव्या अने विचार्युं के म्हारा रूपथी लोको क्षोभ पामे छे ते नहीं पामे एटला माटे विद्याना बलथी रूप संक्षेप करी सामान्य रूपथी धर्मदेशना आपवा मांडी. साधु-ओए लोकोना मुखथी सांभल्युं के गुरुनी देशना तो अमृत सरखी छे पण रूप तो सामान्य छे ए वातनी वज्राचार्यने खबर पडी. त्यारे बीजे दिवसे हजार दलनुं सुवर्ण कमल रचीने तेना ऊपर बेठा अने पोतानुं जेवुं मूलरूप हतुं तेवाज रूपथी देशना दीधी, ते जोइ सर्व लोक विस्मय पाम्या. धनशेठ पण पोतानी महारूपवाली रुक्मिणी नामा पुत्री अने एक क्रोड सोनाम्होरो लइ गुरुनी पासे आवी भेट करवा लाग्या. गुरुए कन्याने प्रतिबोध आपी, धर्म पमाडी अने दीक्षा आपी साध्वी बनावी.

एकदा वज्रस्वामीए पदानुसारिणी लब्धिना बले श्रीआचारांग

सूत्रना महापरिज्ञा नामा अध्ययनमांथी मानुषोत्तर पर्वत पर्यंत जइ शकाय एवी आकाशगामिनी विद्या कहाडी. पछी वज्रस्वामी एक समय उत्तर दिशामां दुकाल पडतो जाणी श्रीसंघने पट (कपडा) ऊपर बेसाडीने अन्य स्थानके लइ जवा तैयार थया, एवामां त्यां शय्यातर बोल्यो—महाराज ! हुं पण एमनो साधर्मि छुं. माटे मन्हे पण साथे लइ चालो, त्यारे तेने पण पट ऊपर बेसाडीने आकाशमां रह्या चालतां ठेकाणे ठेकाणे श्रीजिनचैत्य वंदावता ताकीदथी महानसि नामा नगरीमां गया. त्यां यद्यपि सुगाल हतो तथापि त्यांनो राजा बौद्धमतवालो हतो माटे तेणे बौद्धदर्शनीना भक्त लोकोना कहेवाथी पजोसणना दिवसोमां श्रीजैनमंदिरोमां फूल लइ जवा देवा नहीं एवो बंदोबस्त कर्यो. ते जोइने संघे श्रीवज्रस्वामीने विनंती करी के महाराज! फूलनो अटकाव थयो छे.वज्रस्वामीए कह्युं के—तमे चिंता करशो नहीं, हुं एनो उपाय करीश. एम कही आकाशमां उडीने माहेश्वरीपुरीमां हुताशन नामा देवना वनमां पोताना पितानो मित्र वनमाली हतो, तेने जइ कह्युं के तमे फूल तैयार राखजो. एवुं कहीने हिमवंत पर्वत ऊपर गया, त्यां पद्मद्रहनी कमलनिवासिनी लक्ष्मीदेवीए श्रीवज्रस्वामीने वांद्या अने कहेवा लागी के—स्वामिन् ! आपनी दासीने कांइ हुकुम फरमावो. आचार्यें कह्युं:—पूजाना अर्थे फूल जोइए, लक्ष्मीदेवी पोते पूजा माटे लक्षदल कमल लइ आवी हती, ते हाजर कर्यां. ते लइने फरी पाछा वलतां हुताशन वनथी वीश लाख फूल लइ विमानमां बेसीने पूर्वभवनो मित्र तिर्यक्जृंभक जातिनो देव हतो ते पण आचार्यनी साथे गीत, नृत्य, वाजिंत्र प्रमुख महोत्सव करतो साथे आव्यो. वज्रस्वामीए पुष्पो श्रावकोने आप्यां, अने जिनचैत्यनो महिमा वधार्यो. श्रीसंघ पण घणोज आनंद पाम्यो. ते नगरनो राजा पण बौद्धधर्म मूकी जिनधर्मी थयो. पछी एक

दिवस दक्षिण मार्गमां जाता थका श्रीवज्रस्वामीने श्लेष्म थइ गयुं त्यारे साधुओनी पासेथी गोचरीमां सूंठ मंगावी ते पोते कान ऊपर राखीने विचार्युं के पछी खाइश; पण भूलमां एमज रही गइ, ते पडिक्कमणो करती वखते नीचे पडी त्यारे वज्रस्वामीए विचार्युं के हुं दश पूर्वधर छुं मन्हे पण आवी भूल थइ तो म्हारुं आयुष्य स्वल्प रहेलुं जणाय छे. माटे अनशन करवुं ठीक छे. पोताना शिष्य वज्रसेनने कह्युं के बार दुकाली पडशे त्यारे तुं सोपारापुर पाटण जाजे, कोइ तने पूछे के सुभिक्ष क्यारे थशे ? त्यारे तुं जे दिवसे लाख मूल्यनी एक हांडी चूल्हा ऊपर चढे ते दिवसथी बीजा दिवसे सुगाल थशे एवुं जवाब आपजे. हुं तो हवे अनशन करीशुं. एम कहीने वज्रसेनने सोपारा पाटण जवाने विदाय कर्यो. पोतानी पासे रहेला साधुओने ज्यारे भिक्षा नहीं मळे त्यारे विद्यापिंड करीने केटलाएकने जमाड्या, पछी पांचसो साधुओने लइने अनशन करवा माटे चाल्या. तेमां एक न्हानो चेलो हतो तेने भोळव्यो के तुं अहीं बेस, हुं आवुं छुं पण ते चेलाए मोंहथी कह्युं के हुं तो तमारी पछवाडे आवीश तो पण गुरुए समजावीने राख्यो त्यारे चेलाए जाण्युं के गुरु महाराजने अप्रीति न थाय तेम करुं तो ठीक, एवुं चिंतवीने फरी पर्वतना भूळमां आवी तपेली शिला ऊपर अनशन करी दीधो, ते बालक हतो, माटे सुकुमारपणाथी तत्काल शुभ ध्याने मरण पामीने देवलोक गयो, देवताओए भेला थइने तेनो महिमा कर्यो, बीजा साधुओए पण विशेष दृढ थइने अनशन कर्या. परंतु मिथ्यात्वी देवो आवीने अनशनमां मोदकनी निमंत्रणा करवा लाग्या अने बोल्या के हे महाराज ! आ शुद्ध निर्दोष आहार छे ते ल्यो, त्यारे साधुओए विघ्ननो ठेकाणो जाणीने नजीकना बीजा पर्वत ऊपर जइने अनशन

कर्युं, शुभ ध्यानथी काल करीने वज्रस्वामी ८ वर्ष गृहस्थावासमां, ४४ वर्ष व्रतमां, अने ३६ वर्ष युगप्रधानपदमां एवं ८८ वर्षनो सर्वायु भोगवीने वीरनिर्वाणथी ५०४ वर्ष पछी देवलोक गया, इन्द्र महाराजे रथ ऊपर बेशी पर्वतने प्रदक्षिणा करीने सर्व साधुओने वांद्या. त्यां ते इन्द्र महाराजाना रथनी रेखा मंडाणी. तेथी ते पर्वतनुं 'रथावर्त' एवुं नाम थयुं तथा त्यांना वृक्ष पण साधुओने नमवाथी नमेला थकाज आज पर्यंत देखाय छे. श्रीवज्रस्वामी देवलोक गया पछी दशमो पूर्व तथा चोथो अर्द्धनाराच संघयण विच्छेद गयो. " सुहस्ति अने वज्रस्वामीना वचमां १ गुणसुंदरसूरि, २ कालिकाचार्य, ३ स्कंदिलाचार्य, ४ रेवतिमित्र, ५ धर्मसूरि, ६ भद्रगुप्ताचार्य, ७ श्रीगुप्ताचार्य, ए सात युगप्रधान थया एम केटलीएक पट्टावलियोमां लखेल छे."

वज्रसेनाचार्य सोपारा नगरमां जिनदत्त श्रावक तथा तेनी भार्या ईश्वरी नामे छे ए बेहुने प्रथम श्रीवज्रस्वामीनो प्रतिबोध हतो तेमना घेर गोचरी गया. त्यां दुष्कालना लीधे धान नहीं मलवाथी शेठ अने शेठाणीए पोताना चार पुत्रो सहित लाख मूल्य धान्यनी हांडी चढावीने विचार कर्यो के सर्व आपणे आ रांधेला अनाजमां झेर मेलवी खाइने पछी अनशन करी लेवुं. एवुं चिंतवी हांडीमां झेर नाखवाने तैयार थया एटलामां वज्रसेनसूरि आव्या, तेमणे ते कृत्य देखीने पूछयुं के तमे शा वास्ते मरवानो उपाय करो छो ? त्यारे शेठाणी बोली धन तो अमारा पासे घणुं छे; परंतु धान्य मलतुं नथी, त्यारे वज्रसेनसूरि बोल्या. गुरुए कहेल छे के लाख द्रव्यनी हांडी चढशे तेना बीजा दिवसे सुगाल थाशे. ते सांभली शेठाणीने पण पूज्यना वचननी प्रतीति हती तेथी बोली के जो सुगाल थइ जशे तो आ म्हारा चार पुत्र हुं आपने आपीश, ने तमे चारेने दीक्षा आपजो. एवी प्रतिज्ञा करी हांडीमां झेर

न्हांखवुं बंध कर्युं. त्यार पछी बार पहोर गया बाद केटलाक वहाणो ऊभड वायराना योगथी छेटे निकली गया हता, ते सारो वायरो वाग्याथी पाछां आव्यां. तेमां जुवार भरेली हती, ते लोकोए लीधी. सुगाल थयो, ते धान्यथी युगोद्धार थयो. तेथी तेनो नाम 'युगंधरी' थयुं, एने लोक भाषामां जुवार पण कहे छे. पछी शेठ अने शेठाणीए एक नागेंद्र, बीजो चंद्र, त्रीजो निवृत्ति अने चोथो विद्याधर; ए चारे पुत्रोने दीक्षा अपावी अने पोते पण दीक्षा लीधी. ते चारे साधुओ बहुश्रुत आचार्य थया अने तेना नामथी चार शाखा निकली. वज्रसेनसूरिजी ९ वर्ष गृहवासमां, ११६ वर्ष व्रतमां अने ३ वर्ष युगप्रधानपदमां, एवं १२८ वर्षनो सर्वायु भोगवीने वीरनिर्वाणथी ६२० वर्ष पछी स्वर्गे गया. वज्रस्वामी अने वज्रसेनना वचमां आर्यरक्षित अने दुर्बलिकापुष्प ए बे युगप्रधान थयां छे.

यशोभद्रसूरिथी विस्तृत स्थविरावली, गण, शाखा अने कुल—

तुंगियायन आर्य यशोभद्रसूरिना बे शिष्य थया—प्राचीनगोत्रीय भद्रबाहू अने माढरगोत्रीय संभूतिविजय. भद्रबाहूना काश्यपगोत्रीय चार स्थविर-शिष्य थया—गोदास १, अग्निदत्त २, यज्ञदत्त ३ अने सोमदत्त ४. स्थविर गोदासथी 'गोदास' गण निकल्युं अने तेनी १ ताम्रलित्तिया, २ कोडीवरसिया, ३ पंडुवद्धणीया, ४ दासीखब्बडिया ए चार शाखा थइ. संभूतिविजयना बार शिष्य थया—१ नन्दनभद्र, २ उपनन्दनभद्र, ३ तीसभद्र, ४ यशोभद्र, ५ सुमनोभद्र, ६ माणिभद्र, ७ पूर्णभद्र, ८ थूलिभद्र, ९ ऋजुमति, १० जम्बू, ११ दीर्घभद्र अने १२ पांडुभद्र. तथा यक्षा १, यक्षदिन्ना २, भूता ३, भूतादिन्ना ४, सेना ५, वेणा ६, अने रेणा ७ ए सात आर्यिका थइ. गौतमगोत्रीय थूलिभद्रना बे शिष्य थया—एलापत्यगोत्रीय आर्यमहागिरी अने वाशि-

ष्टगोत्रीय स्थविर आर्यसुहस्ती. आर्यमहागिरिना आठ शिष्य थया–
१ स्थविरउत्तर, २ बलिसह, ३ धनर्द्धि, ४ श्रीभद्र, ५ कोडिन्य, ६ नाग,
७ नागमित्र अने ८ कौशिकगोत्रीय षडुलूक रोहगुप्त. स्थविररोहगुप्तथी
'त्रैराशिकी' शाखा निकली अने उत्तर–बलिसहथी 'उत्तरबलिसह'
गण निकल्युं. तेनी १ कोसंबिया, २ सोइत्तिया, ३ कोडंबाणी अने
४ चंदनागरी ए चार शाखा थइ. आर्यसुहस्तीना बार शिष्य थया–
१ आर्यरोहण, २ भद्रयशा, ३ मेघ, ४ गणिककामर्द्धि, ५ सुस्थित,
६ सुप्रतिबद्ध, ७ रक्षित, ८ रोहगुप्त, ९ ऋषिगुप्त, १० श्रीगुप्त, ११
गणिब्रह्मा अने १२ गणिसोम. काश्यपगोत्रीय आर्यरोहणथी 'उद्देहगण'
निकल्युं. तेनी १ उदुंबरिज्जिया, २ मासपूरिया, ३ मइपत्तिया, ४ पुन्न-
पत्तिया, ए चार शाखा थई. तथा १ नागभूत, २ सोमभूतिक, ३ उल्लग,
४ हस्तलीय, ५ नन्दिज्ज, ६ पारिहासक ए छे कुल थया. हारियस-
गोत्रीय श्रीगुप्तथी 'चारणगण' निकल्युं. तेनी १ हारियमालागरी,
२ संकासीया, ३ गवेधुया, ४ वज्जनागरी ए चार शाखा अने १ वत्थ-
लिज्ज २ पीइधम्मिय, ३ हालिज्ज, ४ पूसमित्तिज्ज, ५ मालिज्ज, ६ अज्ज-
चेडय तथा ७ कण्णसह ए सात कुल थया. भारद्वायसगोत्रीय भद्र-
यशथी 'उडुवाडियगण' निकल्युं. तेनी १ चंपिज्जिया, २ भद्दिज्जिया,
३ काकंदिया, ४ मेहालिज्जिया ए चार शाखा. अने १ भद्दजसिय, २
भद्दगुत्तिय, ३ जसभद्द ए त्रण कुल थया. कुंडिलसगोत्रीय स्थविर
कामर्द्धिथी 'वेसवाडियगण' निकल्युं. तेनी १ सावत्थिया, २ रज्ज-
पालिया, ३ अंतरिज्जिया, ४ खेमालिज्जिया ए चार शाखा अने १
गणिय, २ मेहिय, ३ कामड्ढिय, ४ इंदपुरग ए चार कुल थया. वाशि-
ष्टगोत्रीय काकंदिक ऋषिगुप्तथी 'माणवगण' निकल्युं. तेनी चार
शाखा थइ–१ कासविज्जिया, २ गोयमिज्जिया, ३ वासिट्ठिया, ४ सोर-
ट्ठिया अने त्रण कुल थया–इसिगुत्तियत्थ १, इसिदत्तिय २, अभिज-

यंत ३. व्याघ्रापत्यगोत्रीय कोटिककाकन्दिक सुस्थित–सुप्रतिबद्धथी 'कोटिकगण' निकल्युं. तेनी चार शाखा थई–१ उच्चानागरी, २ विज्जाहरी, ३ वइरी, ४ मज्झिमिल्ला. अने कुल पण चार थया–१ बंभलिज्ज, २ वच्छलिज्ज, ३ वाणिज्ज, ४ पण्हवाहणय. सुस्थित–सुप्रतिबद्धना पांच शिष्य थया–आर्यइन्द्रदिन्न १, प्रियग्रन्थ २, काश्यपगोत्रीय विद्याधरगोपाल ३, आर्यऋषिदत्त ४, अने स्थविर अरिहदत्त ५. आर्य प्रियग्रन्थथी मध्यमा शाखा, अने विद्याधरगोपालथी विद्याधरी शाखा निकली. आर्य इन्द्रदिन्नना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यदिन्न थया अने तेमना बे शिष्य थया–१ माढरसगोत्रीय आर्यशान्तिसेनिक अने २ कौशिकगोत्रीय आर्यसीहगिरी. आर्यशांतिसेनिकथी 'उच्चानागरी' शाखा निकली अने तेना चार शिष्य थया–१ आर्यसेनिक, २ आर्यतापस, ३ आर्यकुबेर, ४ आर्यऋषिपालित. ए चारे शिष्योना नामथी अनुक्रमे 'अज्जसेणिया १, अज्जतावसी २, अज्जकुबेरा ३ अने अज्जइसिपालिया ४, ए चार शाखा निकली. आर्यसीहगिरीना चार शिष्य थया–१ धनगिरी, २ आर्यवज्र, ३ आर्यसमित अने ४ आर्य अरिहदिन्न. आर्यसमितथी 'ब्रह्मद्वीपिका' अने आर्यवज्रथी 'आर्यवज्री' शाखा निकली. गौतमगोत्रीय आर्यवज्रना त्रण शिष्य थया–१ आर्यवज्रसेन, २ आर्यपद्म अने ३ आर्यरथ. आर्यवज्रसेनथी 'आर्यनागिली' आर्यपद्मथी 'अज्जपउमा' अने आर्यरथथी 'अज्जजयंती' शाखा निकली. वच्छसगोत्रीय आर्यरथना शिष्य कौशिकगोत्रीय आर्यपूसगिरी थया, तेमना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यफल्गुमित्र, तेमना शिष्य-वासिष्ठगोत्रीय आर्यधनगिरी, तेमना शिष्य कुच्छसगोत्रीय आर्यशिव भूति, तेमना शिष्य काश्यपगोत्रीय आर्यभद्र, तेमना शिष्य काश्यप आर्यनक्षत्र, तेमना शिष्य काश्यप आर्यरक्ष, तेमना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यनाग, तेमना शिष्य वाशिष्टगोत्रीय आर्यजेहिल, तेमना शिष्य

माढरसगोत्रीय आर्यविष्णु, तेमना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यकालक थया. आर्यकालकना बे शिष्य थया–१ गौतमगोत्रीय आर्यसंपलित अने आर्यभद्र. ए बन्नेना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्यवृद्ध थया. आर्यवृद्धना शिष्य गौतमगोत्रीय आर्य संघपालित, तेमना शिष्य काश्यपगोत्रीय आर्यहस्ती, तेमना शिष्य सुव्रतगोत्रीय आर्यधर्म्म, तेमना शिष्य काश्यपगोत्रीय आर्यसिंह, तेमना शिष्य काश्यप आर्यधर्म्म अने तेमना शिष्य आर्यसंडिल्ल थया. आ स्थविरावलिना अन्तमां पाछलथी नमस्कारात्मक जे चौद प्राकृतभाषामय गाथा उमेरवामां आवी छे, तेमां स्थविरोना नाम एवी रीते गोठववामां आव्या छे–गौतम फल्गुमित्र १, वासिष्ट धनगिरि २, कुत्स शिवभूति ३, कौशिक दुज्जंत ४, कौशिक कृष्ण ५, काश्यप भद्र ६, काश्यप नक्षत्र ७, काश्यप रक्षित ८, गौतम आर्यनाग ९, वाशिष्ट जेहिल १०, माढर विष्णु ११, गौतम कालक १२, गौतम संपलित १३, गौतम भद्रक १४, गौतम आर्यवृद्ध १५, काश्यप संघपालित १६, काश्यप आर्यहस्ती १७, सुव्रत आर्यधर्म १८, काश्यप हस्त १९, काश्यप सींह २०, काश्यप धर्म २१, गौतम आर्यजम्बू २२, काश्यप नन्दित २३, माढर देवर्द्धिगणि च्चमाश्रमण २४, वत्स्य स्थिरगुप्त २५, गणिकुमारधर्म २६, अने काश्यप देवर्द्धिक्षमाश्रमण २७ उपरोक्त सर्वे स्थविर भगवन्तोने त्रिकरण योगथी नमस्कार थाओ.

त्रैराशिकशाखा अने वैशेषिकमतनी उत्पत्ति—

श्रीमहावीरथी पांचसौ चुम्मालीश वर्ष गयां पछी श्रीगुप्ताचार्यनो 'षडुलूक रोहगुप्त' नामा शिष्य हतो ते अंतरंजिका नामे नगरीमां आव्यो. ते वखते एक म्होटो वादी 'पोट्टशाला' नामे तापस पण ते नगरीमां आव्यो. ते वींछी, साप, उंदर, हरिण, सूअर, काग अने पंखी ए सात चीजो बनाववानी विद्याओनो जाण हतो तेना मदथी ते सर्व लोकोने एम बोल्यो के म्हारो पेट फाटीने कदाच विद्या बाहेर चाली जाय तेना भयथी म्हें म्हारा पेट ऊपर पाटो बांधी राखेल छे. वली एक जांबूनी डाली हाथमां राखीने एवुं जणाव्युं के आ जंबूद्वीपमां म्हारी साथे वाद करवावालो

कोइ नथी; पछी तापसे आवीने नगरीना राजाने पण कह्युं के तमारा नगरमां कोइ वाद करवावालो होय तो सुखेथी तेने तेडावीने म्हारी साथे वाद करावो नही त्यां मने जीतपताका आपो. त्यारे राजाए पडह वजडाव्यो के जे वाद करवाने इच्छा राखतो होय ते आ पडह झाली ले, एटलामां रोहगुप्त नामा श्रीगुप्ताचार्यनो शिष्य गाममां गोचरीए आव्यो. ते पडह सांभलीने बोल्यो. हुं वाद करीश. एवुं कही गुरुनी पासे आवी पडहनी हकीगत कही, गुरु बोल्या ए वात त्हें ठीक करी नहीं केमके ते योगी क्रोधी छे माटे त्हारा ऊपर विद्या चलावशे त्यारे शिष्ये कह्युं आपना बेठा थका ते जीतपताका लइ जाय तो पछी आपणी शी विशेषता कहेवाय ? एवो शिष्यनो निश्चय जाणीने गुरुए तेने १ मयूरी, २ नकुली, ३ बिडाली, ४ व्याघ्री, ५ सिंही, ६ उलूकी, ७ श्येनी; आ सात विद्याओ आपीने कह्युं के जो कदापि तने कोइ अधिक उपद्रव थाय तो आ ओघो मंत्री आपुं छुं तेने तुं फेरवजे तेथी सर्व उपद्रव निवर्तन थइ जशे. एवी रीते गुरुपासेथी आज्ञा लइने रोहगुप्त बलश्रीनामा राजानी सभामां आवी योगीने कहेवा लाग्या के त्हारो वाद शुं छे ते संभलाव. योगी छल करीने बोल्यो अमारा मतमां एक जीवराशि, अने बीजी अजीवराशि ए बे राशि कही छे. एवुं योगीनुं बोलवुं सांभलीने रोहगुप्ते विचार्युं के आ वातनो जो हुं हाकारो भरीश तो ए कहेशे के में म्हारी वात एने मंजूर करावी, म्हारुं मत एणे मान्युं, तेथी लोको जाणशे के शिष्य हारी गयो. एम चिंतवीने शिष्ये पण कुतर्क करी कह्युं के बे राशि तुं कहे छे ते खोटुं छे परंतु जीव, अजीव अने त्रीजो नोजीव संसारमां ए त्रण राशि छे. योगी बोल्यो-तुं नोजीव राशि केवी रीते कहे छे ? रोहगुप्ते तरत एक दोरो वटीने भूमि ऊपर नाख्यो. ते हालवा लाग्यो त्यारे कह्युं के जो आ नोजीव छे, एवी घणी युक्तियो लगाडीने संसारमां जीव, अजीव अने नोजीव ए त्रण राशि स्थापन करी, तेथी योगी हारी गयो. पछी योगीए विद्याओ चलाववा मांडी. प्रथम तो म्होटा डंकने मारवावाला वींछीओ बनाव्या, रोहगुप्ते मोर बनाव्या ते आवीने सर्व वींछीयोने खाइ गया, त्यारे योगीए सर्प बनाव्या, चेलाए नोलीयां बनाव्यां, योगीए उंदर बनाव्या, चेलाए बिल्लाडी बनावी, योगीए तीखा सींगडावाला हरिण बनाव्या, चेलाए चीतरा बनाव्या तेणे आवीने सर्व हरि-णोने मारी नाख्या. योगीए सूअर बनाव्या, चेलाए सिंह बनाव्या. योगीए काक बनाव्या, चेलाए घूड बनाव्या. योगीए पंखी बनाव्या, चेलाए बाज बनाव्या. आखिर एमां पण योगी हारी गयो. त्यारे योगीए गर्दभी विद्या चलावी ते वखते चेलाए ओघो फेरव्यो तेथी तेनी विद्या नाशी गइ. ए रीते योगी हारी गयो. अने चेलो जीत करीने घणा परिवारनी साथे गुरुनी पासे आव्यो. गुरुए पुछयुं केवी रीते जीती आव्यो ? शिष्ये त्रण राशि थापी ने जीत्यो एवुं कह्युं. गुरु बोल्या के वत्स !

र्हें आ सारी वात नहीं करी, भगवानना मतथी तुं विपरीत बोल्यो, माटे राजसभामां जइने 'मिच्छामि दुक्कडं' दइ आव, जो मिच्छामि दुक्कडं नहीं आपशे तो जैनमतनो उथ्थापक थइश. शिष्य बोल्यो, म्हारा मुखथी हुं केम जूठो पडुं, म्हाराथी तो मिच्छामि दुक्कडं देवाय नहीं, म्हे खोटुं थापन करेल नथी ? राशि तो त्रण ज छे, गुरुए कह्युं के तुं म्हारी साथे पण जो वाद करवा इच्छ तो होय तो चाल राजसभामां जइ आपणे वाद करीए. एम कही गुरु पोताना शिष्यने साथे लइ राजानी पासे आव्या अने कहेवा लाग्या के राजन् ! आ म्हारा शिष्ये वादीने जीतवा माटे जे त्रण राशि थापन करी ते वात असत्य छे, ए म्हारुं कह्युं मानतो नथी ने म्हारी साथे वाद करशे. तेनी वचमां आप साक्षीदार रहो तो अमे वाद करीए. राजाए कह्युं सुखे वाद करो, पछी गुरु शिष्य वाद करवा लाग्या. त्यां छ महीना सुधी वाद चाल्यो. १४४४ प्रश्न शिष्ये पूछ्या, गुरुए सर्व प्रश्नोनो अकाट्य उत्तर आप्यो, तो पण समज्यो नहीं. राजाने घणो वखत खोवो पड्यो. तेथी राजाए हुं केटला दिवस सुधी एओना झगडामां खोटी थाउं ' एम विचारीने गुरुने कह्युं. के स्वामिन् ! आपनुं बोलवुं सर्व साचुं छे, पण म्हारा राज्यसंबंधि कामकाजमां बिगाड थाय छे माटे हवे मने साक्षीथी मुक्त करो. गुरुए कह्युं आवती काले सर्व झगडो मटाडी दइश. बीजा दिवसे गुरुए चेलाने कह्युं के 'कुत्रिकापण' हाटमां त्रण लोकनी सर्वे वस्तुओ मळे छे. जो नोजीव त्यांथी मळी जाय तो तुं सांचो अने न मळे तो हुं साचो. शिष्ये पण ए वात मान्य करी, पछी राजसभादि परिवार साथे बन्ने कुत्रिकापणमां गया अने चेलाए कुत्रिकापणमां जीव, अजीव अने नोजीव मांग्या. त्यारे देवे जीवना बदले उंदर लावीने आप्यो तथा अजीवना बदले पत्थर लावीने आप्यो पछी नोजीव मांग्यो त्यारे बे त्रण वार जीव अने अजीव ए बेज वस्तु लावीने आपी, पण नोजीव आपे नहीं. एवामां आकाश वाणी थइ के जगतमां जीव अने अजीव ए बेज राशि छे पण त्रीजी कोइ राशि नथी. त्यारे सर्व लोक बोल्या गुरु साचा छे पछी गुरुए शिष्यने कह्युं के केम हवे समज्यो के नहीं ? जो समज्यो होय तो मिच्छामि दुक्कडं आप, शिष्य बोल्यो एम हुं मानवानो नथी. त्यारे गुरुए भस्मनुं कुंडुं तेना माथा ऊपर नाखीने तेने गच्छथी बाहेर कर्यो. रोहगुप्ते जइ वैशेषिक मत थापन कर्युं. तेमां नव द्रव्य, सत्तर गुण, पांच कर्म, त्रण सामान्य, एक विशेष, एक समवाय, ए छ पदार्थ प्ररूप्या, एना प्ररूपवाथी चौदसौ चुमालीश भेद थया. एनो नाम गोत्रना मिलापथी स्थापन थयुं, अने एथीज त्रैराशिक शाखा थइ.

मध्यमा शाखानी उत्पत्ति—

स्थविर प्रियग्रंथथी मध्यमशाखा निकली तेनो अधिकार आ प्रमाणे छे–श्रीहर्ष-

पुर नामा नगर जेने हमणा 'अजमेर' कहे छे, तेमां त्रणसौ जैनमंदिर अने चारसौ अन्य-दर्शनीओना देरा हता तथा आठ हजार घर ब्राह्मणोना अने छत्रीश हजार घर महाजनोना हता, तेमज नवसे बाग, सातसौ वावडी, सातसौ दानशाला हती, त्यां सुभटपाल नामे राजा राज्य करतो हतो. एक दिवसे ब्राह्मणोए यज्ञ मांड्यो. एवामां प्रियग्रंथसूरि पधार्या तेणे वासक्षेप मंत्रीने श्रावकोना हाथमां आप्यो. श्रावकोए जइने यज्ञमां ब्राह्मणो होम करवाने सारुं बकरो लाव्या हता ते बकरानी ऊपर वासक्षेप नाख्यो तेना योगे बकराना शरीरमां अंबिका देवीए प्रवेश कर्यो. तेथी बकरो उडी आकाशमां जइने मनुष्य वाणीथी बोलवा लाग्यो के-अरे निर्दयी ब्राह्मणो ! तमे जेम निरपराधि जीवोने निर्दताथी मारी नाखो छो तेम जो हुं हमणा निर्दय थइ जाउं तो तमो सर्वेने मारी नाखुं, जेवी रीते हनुमाने राक्षसोमां करी देखाडयुं तेम हुं पण तमोने करी देखाडुं. परंतु म्हाराथी दयानो उल्लंघन थइ शकतो नथी माटे हुं तमारी पेठे निर्दयी थतो नथी तथापि तमे विचारा आवा कोमल-मूक पशुओने हणो छो, तेथी तमो महापापी बनो छो. जे पशुने मारीए ते पशुना जेटला रोम होय तेटला हजार वर्ष पर्यंत ते पशुनो मारनार प्राणी नरकमां पडी दुःख भोगवे छे. तेमज जे कोइ माणस मेरुपर्वत जेटलो सोनो दानमां आपे अथवा समस्त पृथ्वीनुं दान आपे, तेटला दानथी पण अधिक फल एक प्राणी मरतो होय तेने बचाववाथी मले छे. माटे मरता प्राणीने बचाववा जेटलुं फल सोनाना दानथी के पृथ्वीना दानथी पण मलतुं नथी केमके बीजा सर्व प्रकारना दान छे तेनुं फल तो कालांतरमां खूटी जाय के भोगवाइ जाय छे, परंतु अभयदाननुं फल तो क्यारे पण खूटतुं नथी, तेना वचन सांभली यज्ञ करनारा निर्दयी ब्राह्मणो बोल्या तुं कोण छे ? बकरो बोल्यो हुं अग्निदेव छुं, बकरो म्हारुं वाहन छे, तमे पशुओने मारो छो तेथी तेमने घणां दुःख वेठववा पडशे, माटे तमारा ऊपर दया लावी उपदेश करवा आव्यो छुं. ब्राह्मणो बोल्या-अमे धर्मना माटे मारीए, बकरो बोल्यो-पशुवध करवाथी धर्म क्यां थवानो छे ? ए तो म्होटुं पापनुं स्थानक छे. जो एनो मुद्दो तमारे पूछवो होय तो, जैनाचार्य श्रीप्रियग्रंथसूरि पासे जइने पूछो, ते महा कृपापात्र छे माटे तमोने समजावी तमारो निस्तार करशे. ब्राह्मणो प्रियग्रंथसूरि पासे पूछवा आव्या, तेमणे दया रूप शुद्ध धर्म बताव्यो ते सांभली ब्राह्मण प्रमुख घणा लोको जैनी थया, एम श्रीप्रियग्रंथसूरिथी मध्यमशाखा निकली.

ब्रह्मद्वीपिका शाखानी उत्पत्ति—

थविर आर्य समित गौतमगोत्रीयाथी ब्रह्मद्वीपिका शाखा निकली तेनो संबंध—

आभीर देशमां, अचलपुर नगरनी नजीक एक कन्ना अने बीजी बेन्ना ए बे नदीयो हती, तेनी वचमां ब्रह्म नामा द्वीप हतो, तेमां पांचसो तापस वसता हता. एक तापस पोताना पगमां लेप लगाडी पावडीयो पहेरी हरहमेश बेन्ना नदीना पाणीमां थलना जेम चालीने गाममां पारणुं करवा आवतो त्यारे लोक तेनी प्रशंसा करता के आ तापसनी केवी अथाग तपःशक्ति छे, एवा मर्ममां घणा लोको मिथ्यात्वी थइ गया अने तापसनी भक्ति करवा लाग्या. श्रावकोने पण कहेवा लाग्या के जूओ अमारा गुरुनो केवो प्रभाव छे ! एना प्रभावमां कांइ न्यूनता नथी. एवा उपदेशथी घणा लोकोने मिथ्यात्वी थता देखीने श्रावकोए श्रीवज्रस्वामीना मामा श्रीआर्यसमितसूरिने बोलाव्या, सूरि आव्या. त्यारे श्रावकोए पुछ्युं-स्वामिन् ! आ तापसनी केवा प्रकारनी तपःशक्ति छे ? आचार्ये कह्युं के तपःशक्ति कांइ पण नथी. परंतु पादलेपशक्ति छे त्यारे सर्व श्रावक समजी गया, पछी तापसनुं छिद्र उघाडुं करवा माटे ते तापसने श्रावकोए पोताने घेर भोजनना अर्थे निमंत्रणा करी. मिथ्यात्वी लोक घणा खुशी थया अने जाणवा लाग्या के श्रावको पण हवे आपणा धर्ममां आवी जाशे. एवुं जाणीने श्रावकोना घेर योगीने लइ आव्या. श्रावकोए भक्तिना मिसे तापसना पग रगडी रगडीने धोइ नाख्या. योगीना मनमां तो म्होटुं दुःख थयुं पण शरमनो मार्यो नाकारो कही शक्यो नहीं. पछी तापस भोजन कर्युं नहीं कर्युं अने तरत त्यांथी उठ्यो. श्रावको आदर देइने पाछा तेना स्थानक ऊपर पोहोचाडवाने साथे चाल्या, ते मनमां तो एवुं समजता हता के जोइए केवी मजा आवे छे पण बहारथी तेने पोहोचाडवानुं डोल करीने साथे गया अने सर्व नदी किनारे आवी ऊभाः तापसे विचार्युं के जो थोडो लेप रहेल हशे तो पण नदी उतरी जइश. एम विचारी नदीमां पग दीधो के तरत डूबवा लाग्यो, लोकोमां निंदा थइ पछी दया लावीने श्रावकोए नदीमांथी तापसने खेंची बाहेर काढाड्यो. एटलामां लोकोने प्रतिबोध आपवा श्रीआर्यसमितसूरि पण त्यां आव्या अने चिपटी वजाडीने बोल्या के हे बेन्ने कन्ने ! म्हारे पहेले पार जावुं छे माटे मार्ग आप. एटलुं आचार्यना मुखमांथी वचन निकलवांज नदीना बन्ने कांठा भेगा मली गया, लोक विस्मय पाम्या. पछी आचार्य तथा बीजा नगरना लोको सर्व मली ब्रह्मद्वीप गया, त्यां तापसोने धर्मोपदेश आपी प्रतिबोध आप्यो. त्यारे पांचसो तापसोए दीक्षा लीधी अने चूर्णना प्रयोगथी तापस नदी ऊपर चालतो हतो, परंतु तेमां तपस्यानो कांइपण प्रभाव न हतो एवी वात सर्व लोकोमां प्रसिद्ध थइ, जैनधर्मनो महिमा वृद्धि पाम्यो. पछी संघसहित गुरु पोताना स्थानके आव्या. ए तापस साधुओथी ब्रह्मदीपिका नामे शाखा सर्वत्र प्रसिद्ध थइ.

आर्यरक्षितसूरिजीनो संक्षिप्त वृत्तान्त—

यद्यपि आ स्थविरावलीमां श्रीआर्यरक्षित प्रमुख आचार्योना नाम लखेल नथी तथापि ए पण स्थविर सरखाज थया छे माटे तेओनो संबंध कहे छे—दशपुर नाम नगरमां, सोमदेव पुरोहित तेनी रुद्रा नामे भार्या तेमना पुत्र आर्यरक्षितजी परदेश गया; त्यांथी चौद विद्या भणीने आव्या तेमने राजाए हाथी ऊपर बेसाडी, महोत्सव सहित नगरमां प्रवेश कराव्यो. सर्व सज्जन कुटुंब मित्रादिक आवीने मल्या परंतु एमनी माता मली नहीं. माताना पगे लागवा गया तो पण माता बोली नहीं. आर्यरक्षितजीए पूछ्युं-माताजी तमे आमण दुमणा देखाओ छो पण कांइ आनंद शावता नथी तेनुं कारण शुं छे? माताजी बोल्या के पुत्र ! तुं जे विद्या शीखी आव्यो छे ते सर्व नरकमां लइ जनारी विद्याओ छे. कारण के तुं घणा होमादिक लौकिक कृत्य करवानां शास्त्र भणी आव्यो छे. हुं जैनी छुं माटे ए दुर्गतिना देवावाला शास्त्रोने केवी रीते रूडा मानुं ? हुं तो आत्मानुं कल्याण थाय एवां शास्त्रो भणवाथी खुश थनार छुं. पुत्र बोल्यो के माताजी ! आत्माने तारनार कयां शास्त्र छे ? ते मने कहो तो हुं तेनो पण अभ्यास करुं. माताए कह्युं के दृष्टिवाद भण. आर्यरक्षितजीए पूछ्युं के दृष्टिवाद क्यां भणवा जाउं. माता बोली तोसलीपुत्राचार्यनी पासे जइ ए शास्त्र भण. आर्यरक्षितजीए प्रातःकाले उठीने भणवा माटे प्रयाण कर्युं. केटलाक दूर गया के पोताना पितानो मित्र एक ब्राह्मण शेलडीना सांठा हाथमां लइने आवतो रस्तामां मल्यो. तेणे पूछ्युं तुं कोण छे ? एणे कह्युं हुं आर्यरक्षित छुं. तेणे कह्युं के हुं तो तने परदेशथी आव्यो जाणी मलवा आव्यो छुं. अने आ शेलडीना सांठा पण त्हारा वास्ते लाव्यो छुं. आर्यरक्षिते शेलडीना सांठा गणी जोया तो साडा नव निकल्या तेथी जाण्युं के हुं दृष्टिवादना साडा नव भाग भणीश. पछी ते ब्राह्मणने कह्युं के तमे म्हारी माता पासे जाओ, अने माताजीने कहेजो के आर्यरक्षित मने मल्या हता. एवुं कही आर्यरक्षित आगल चाल्या अने पहेला ब्राह्मणे तेनी माता पासे जइ शेलडी आपीने कह्युं के तमारो पुत्र आर्यरक्षित मने रस्तामां मल्यो हतो. माताए जाण्युं के म्हारा पुत्रने शुकन तो सारा थया छे. माटे साडा नव पूर्व भणशे. एवुं मनमां जाणी लीधुं. हवे आर्यरक्षित ज्यां तोसलीपुत्राचार्य हता त्यां गया. अने विचारवा लाग्या के एमने केवी रीते वंदना करुं. एवुं चिंतवी उपासरानी बाहेर बेठो एटलामां ढङ्कर श्रावक; निसिहि कही उपासरामां जइ ऊंचा स्वरथी वांदणा देवानी इरियावहि प्रमुख किरिया करवा लाग्यो. ते सांभली सर्वे विधि

आर्यरक्षित शीखी गया. पछी गुरु पासे आवी तेवीज विधिथी गुरुने वांदीने विनयपूर्वक आगल बेठा. आ कोइ नवो श्रावक छे पण वांदवानो विधि तो बराबर जाणे छे. एवुं जाणी गुरुए ढढ्ढर श्रावकने पूछयुं, ढढ्ढरे बोलल्यो के आ गुरुनो भाणेज छे. पछी गुरुने कह्युं आ तो आर्यरक्षित आपना भाणेज छे. तेने गुरुए धर्मोपदेश आप्यो. त्यारे आर्यरक्षिते कह्यु, मने दीक्षा आपो. म्हारी माताए दृष्टिवाद भणवानी आज्ञा आपी छे. गुरुए लोकोना भयथी अन्य स्थानके जइ आर्यरक्षितने दीक्षा दीधी. पछी पोतानी पासे जेटली विद्याओ हती ते तो सर्वे गुरुए भणावी. अने अधिक पूर्व भणाववाने माटे श्रीवज्रस्वामी पासे मोकल्यो. त्यां जतां रस्तामां उज्जयणी नगरी आवी त्यां श्रीभद्रगुप्तसूरि मल्या ते बोल्या के तें बहु सारुं काम कर्युं. म्हारे अनशन करवुं छे, माटे तुं अनशनमां सहाय आपीने पछी जाजे. एवां गुरुनां वचन सांभली अनशनमां सहायी थयो, भद्रगुप्तसूरिए कह्युं के तुं वज्रस्वामी पासे भणजे पण तेमनी संघाते रात्रे भेगो रहीश नहीं. जुदा उपासरामां रहेजे, केमके श्रीवज्रस्वामीनी साथे जे एक रात्रीज रहे ते जो सोपक्रमी आउखावालो होय तो पण वज्रस्वामीना साथेज मरण पामे. ए वात सांभलीने तहत्ति करी संथारो करावी आर्यरक्षित श्रीवज्रस्वामीना पासे आव्यो. रात्रे नगरना बाहेर रह्यो. अने तेज रात्रीमां श्रीवज्रस्वामीने स्वप्न आव्युं के 'म्हारी पासे पात्रमां दूध भरेलुं हतुं ते कोइ प्राहुणो आवीने पी गयो, स्वल्पमात्र शेष रह्युं' प्रभात समये आर्यरक्षितजी पण तेमनी पासे आव्या. वज्रस्वामीए पूछयुं. तुं क्यांथी आव्यो ? त्यारे सर्व हकीकत कहीने कह्युं के हुं बीजा उपासरामां रहीने आपनी पासे भणीश. वज्रस्वामीए पूछयुं म्हारी पासे भणवुं ने बीजा उपासरामां रहेवुं एम शा माटे करवुं पडे ? त्यारे भद्रगुप्ताचार्ये कहेलुं सर्वे वृत्तांत संभलाव्युं. वज्रस्वामीए उपयोग आपीने विचार्युं के आ वात सत्य छे; महापुरुषना वचन अप्रमाण न होय. पछी अभ्यास करतां आर्यरक्षितजीए नवपूर्व तो संपूर्ण मुखपाठ करी लीधा अने दशमो पूर्व भणे छे, एटलामां माता पिताओने घणा दिवस पर्यंत आर्यरक्षितनुं कोइ समाचार न मलवाथी पोताना छोटा पुत्र फल्गुरक्षितने आर्यरक्षितना पासे मोकल्यो. तेणे आवी कह्युं के तमे माता पितानी पासे चालो. आर्यरक्षिते कह्युं के चालीने शुं करुं ? तेणे कह्युं धर्मोपदेश आपो, केमके तेमने दीक्षा लेवानी इच्छा थइ छे. आर्यरक्षिते कह्युं, तुं तो दीक्षा लइ ले. फल्गुरक्षिते कह्युं--मन्हे दीक्षा आपीने पण तमे त्यां चालो त्यारे फल्गुरक्षितने दीक्षा आपीने गुरुने पूछयुं के दशमो पूर्व केटलो बाकी छे? गुरुए कह्युं हजी घणो छे तुं उद्यम कर. त्यारे फरी भणवानो उद्यम करवा लाग्यो पछी केटला एक दिवस बाद मातापितानी पासे जवानुं मनमां घणुं उमंग थयो अने गुरुने पूछयुं के प्रभो !

दशमो पूर्व हजी केटलो शेष रह्यो छे ? गुरुए कह्युं दशमा पूर्वनुं बिन्दुमात्र तो तुं शीख्यो अने समुद्र जेटलो शेष भणवो रह्यो छे पण उद्यम कर. त्यारे फरी भणवानो उद्यम करवा मांड्यो पण चित्त बराबर लागे नहीं, तेथी बोल्यो के हवे तो हुं जइश त्यारे वज्रस्वामीए 'पूर्वनो एटलो भाग हवे शेष रहेशे; बाकी विच्छेद थइ जशे' एवो मनमां विचार करीने श्रीआर्यरक्षितने मावित्रो पासे जवानी रजा आपी पछी बन्ने भाइ दशपुर नगरे आव्या; राजाए म्होटा महोत्सव सहित तेमने गाममां प्रवेश कराव्यो. पछी माता प्रमुख सर्व कुटुंबने धर्मोपदेश दइने दीक्षा आपी, पण पिताए दीक्षा लीधी नहीं. परंतु कुटुंबना मोहथी पिता तेमना साथेज फरवा लाग्यो. आर्यरक्षितजी बोल्या तमे दीक्षा शा माटे नथी लेता. पिता बोल्यो के मने एकतो म्होटुं धोतीयुं, बीजी जनोइ, त्रीजुं छत्र, चोथा पगरखा अने पांचमुं कमंडल ए पांच वस्तु विना चाले नहीं, ए विना चालुं तो मने लज्जा आवे छे. जो एने राखवानी छूट आपो तो दीक्षा लउं. आर्यरक्षितजीए पांच वस्तुओनी छूट आपीने पण दीक्षा दीधी. पछी 'आ वृद्धने तो जरुर तारवो ज जोइए' आर्यरक्षितजीए एवो निश्चय करी छोकराओने शीखव्युं के अमो ज्यारे चैत्यना दर्शन करवा जइए त्यारे तमो सर्वे साधुओने वंदना करजो, पण एक आ वृद्ध साधुने वांदशो नहीं, आ जो तमोने कहे के मुजने केम नथी वांदता ? त्यारे तमो कहेजो के तमे तो छत्र राखो छो पछी छोकराओए तेमज कर्युं. वृद्धे कह्युं के वत्सो ! साधु छत्र न राखे तो म्हारे पण नहीं राखवुं एम कही छत्र नाखी दीधुं एमज अनुक्रमे जनोइ, पावडी अने कमंडलुनो त्याग करीने कह्युं के धोतीयुं तो म्हाराथी मूकाशे नहीं. आर्यरक्षितजी बोल्या भले चोल्युं राखो. एक दिवस एक साधुए अनशन करीने काल कर्यो. त्यारे आर्यरक्षितजीए बीजा साधुओने शीखावी दीधुं के तमे मांहोमांहे विवाद करजो पण साधुने परठवा माटे उपाडशो नहीं. एवुं शीखवीने पछी बोल्या के आ साधुना शरीरने जे परठवी आवे तेने महा लाभ थाय. साधुओ मांहोमांहे बोलवा लाग्या–एके कह्युं हुं लइ जाउं, बीजे कह्युं हुं लइ जाउं. सोमदेव वृद्धसाधु बोल्या के शुं ए कार्य करवामां घणी निर्जरा थाय छे ? गुरु बोल्या हा घणी निर्जरा थाय छे. वृद्ध साधु बोल्यो के ए काम हुंज करीश, गुरुए कह्युं एमां उपसर्ग घणा छे माटे उपसर्ग सहन करवानी शक्ति होय ते ए काम करे, नहीं तो अरिष्ट थइ जाय. वृद्ध साधु बोल्यो हुं सर्व उपसर्ग सहन करीश, एम कही अनशनी साधुना शरीरने उपाडीने चाल्यो. आचार्ये श्रावकोना छोकराओने शीखाव्या के वृद्ध साधुनी धोती खोसी लेजो तेथी छोकराओए हाको करी तेना पाछल पडीने धोतीयुं खोसी लीधुं. वृद्धे जाण्युं एतो उपसर्ग छे. पछी आचार्य साधु परिवार लइने वृद्धनी पाछल गया, वृद्ध लज्जा पाम्यो. गुरु

बोल्या म्होटो उपसर्ग थयो, हवे बीजो धोतियो लावो. साधुओ बोल्या–धोतियुं तो नथी; वृद्ध बोल्यो. लाज तो गइ हवे शुं छे ? माटे चोलपट्टोज आपो. एवी रीते चोलपट्टो पहेराव्यो. हवे ते वृद्ध गोचरी करवा जाय नहीं तेथी गुरुए साधुओने कह्युं के हुं नजीकना गामे एक दिवस माटे जाऊं छुं तमे गोचरी लावीने पोतेज वापरी लेजो, वृद्धने आपजो मती. एम कही गुरु अन्य गामे चाल्या गया. पाछलथी साधुओए पोतपोतानो आहार लइ आवीने जमी लीधो पण वृद्धने आप्यो नहीं. बीजा दिवसे गुरु आव्या साधुओने बोल्या–वृद्ध साधुने आहार शा वास्ते नहीं आप्युं ? साधुओ बोल्या. वृद्ध पोते गोचरी केम जाता नथी ? पछी गुरु पोते गोचरी जवा लाग्या. 'आ तो गुरुनो अविनय थशे.' एवुं चिंतवीने वृद्ध पोतेज गोचरी गयो. त्यां एक शेठना घरमां पाछलना बारणाथी पेसवा लाग्यो, त्यारे घरना माणसो बोल्या स्हामां बारणामांथी आवो. वृद्ध साधु बोल्या अरे लक्ष्मी तो मरजीमां आवे ते तरफथी आवे. जे तरफथी आवे ते तरफथी सारी जाणवी, एनो कांइ विचार राखवो नहीं. शेठे खुशी थइने वृद्ध साधुने बत्रीश लाडु व्होराव्या. ते लइने उपासरे आवी गुरुने देखाड्या. ते जोइ गुरुए विचार कर्यो के म्हारा बत्रीश शिष्य थशे, वृद्ध बोल्या पहेलो लाभ थयो ते सर्व साधुओने देवो जोइए, एम विचारी सर्व मोदक साधुओने आपी दीधा. फरी गोचरीए जइने खीरनुं भोजन लइ आवी पोते पारणुं कर्युं. एम ए वृद्ध साधु भिक्षामां लब्धिवंत थयो, ज्यां जाय त्यां जो ते दातार महालोभी होय तो पण उत्तम भोजन एने व्होरावे एम अनुक्रमे ते वृद्ध साधु गच्छनो आधारभूत थयो. श्री आर्यरक्षितजीना गच्छमां त्रण साधु लब्धिवंत थया–एक दुर्बलिकापुष्पमित्र, बीजो घृतपुष्पमित्र अने त्रीजो वस्त्रपुष्पमित्र तथा चार साधुओ महापंडित थया–एक दुर्बलिकापुष्पमित्र, बीजो वृद्ध, त्रीजो फल्गुरक्षित अने चोथो गोष्ठामाहिल. एक दिवसे इन्द्रमहाराजे सीमंधरस्वामीने निगोद विचार पूछयो, भगवाने वर्णन करी संभलाव्युं. इन्द्रे पूछयुं. भरतक्षेत्रमां पण कोइ एवो स्वरूप कहेवावालो हालमां छे ? भगवाने कह्युं आर्यरक्षितसूरि छे पछी इन्द्र वृद्धनुं रूप करी आर्यरक्षितजी पासे आवीने पूछवा लाग्यो के महाराज ! म्हारुं आयुष्य हजी केटलुं छे ? गुरुए श्रुतउपयोगथी कह्युं के तुं पहेला देवलोकनो इन्द्र छे पछी निगोदना सूक्ष्म विचार पूछया गुरुए ते सर्व खुलासापूर्वक कह्या, पछी इन्द्रमहाराज गुरुनी स्तवना करी उपासरानुं द्वार फेरवीने चाल्या गया, तेथी शिष्योने खबर पडी के इन्द्र आव्यो हतो. आर्यरक्षितसूरिए बुद्धिनी हानी थती देखीने सूत्रोना जूदा जूदा चार अनुयोग कर्या.

वृद्धवादी, सिद्धसेनदिवाकर अने कालिकाचार्य–

एक साधु वृद्धपणामां म्होटा स्वरथी भणतो हतो तेने देखी राजा बोल्यो के

एटला जोरथी शोखीने तुं शुं मूसलो फुलावीश ? ते सांभली वृद्ध साधुए सरस्वतीने प्रत्यक्ष करी अने तेथी विद्यावर पामीने चोवटा मांहे मूसलो ऊभो करी राजा वगेरे सर्व लोकोने देखतां फुल्लावित काव्यथी मूसलो फूलाव्यो, ते जोइ राजा प्रमुख चमत्कार पाम्या. तेमणे सिद्धसेन ब्राह्मणने प्रतिबोध्यो अने ते सिद्धसेनदिवाकरे विक्रमादित्यराजाने प्रतिबोध आपी, श्रीशत्रुंजयनो संघ कढाव्यो, ते संघमां एकसोने सीतेर सोनाना देवल हता. वली शत्रुंजानो उद्धार कराव्यो तथा श्रीसिद्धसेनदिवाकरसूरिनी सहायथी विक्रमादित्य राजाए पोताना नामथी संवत् चलाव्यो. आगल श्रीवीर भगवाननो संवत् हतो, ए वृद्धवादी अने सिद्धसेनदिवाकर बन्ने थविर थया.

तेमज त्रण कालिकाचार्य थया छे तेमां एक तो श्रीवीरभगवानथी त्रणशेने छोंतेर(३७६) वर्षे थया. तेमणे श्रीपन्नवणा सूत्र बनाव्युं छे. अने सौधर्मेन्द्रने निगोदनो विचार कह्यो छे. कोइक आचार्य कहे छे के ए कालिकाचार्य वीरथी त्रणशेंने वीश वर्षे थया छे, कोइ कहे छे के त्रणशें पचीश वर्षे थया छे, कोइ एम पण कहे छे के चोथनी संवत्सरी थापवावाला एज कालिकाचार्य छे. एमां खरुं खोटुं केवली भगवान् जाणे. बीजा कालिकाचार्य पूर्वे कालिकाचार्य कह्या तेमना मामा थया अने त्रीजा कालिकाचार्य श्रीवीरनिर्वाण पछी ९९३ मा वर्षे अने विक्रम संवत् ५२३ मा वर्षे जेणे चोथनी संवत्सरी करी ते छे तेमां कोइ कोइ चूर्णिकार लखे छे के कालिकाचार्यना केटलाक शिष्योए चोथनी संवत्सरी मान्य करी, अने केटलाएक श्रीसुधर्मस्वामीना शिष्योए पांचमनी संवत्सरी मानी. तत्त्व केवली जाणे. ए विवादमां कांइ सार नथी.

त्रण हरिभद्रसूरिनो संक्षेप वृत्तांत—

हरिभद्रसूरि पण त्रण थया छे. तेमां एकतो हरिभद्र नामा ब्राह्मण हतो तेणे व्याकरणादि भणया पछी प्रतिज्ञा करीके जेनो अर्थ हुं समजी न शकुं ते पदनो अर्थ जे कही आपे तेनो हुं शिष्य थाउं. पछी एक दिवस याकिनी महत्तरा साध्वी गाथा भणती हती के ‘ चक्किदुगं हरि पणगं, पणगं चक्कीण केसवो चक्की० ’ ए गाथानो अर्थ हरिभद्रथी थइ शक्यो नहीं. तेथी साध्वीने पूछयो. साध्वीए कह्युं अमारो अधिकार नथी गुरुने पूछो. पछी गुरु पासेथी गाथानो अर्थ सांभली प्रतिज्ञा पालवा सारुं दीक्षा लीधी, आचार्यपद पाम्या ते आचार्ये विक्रमसंवत् ५८५ मां आवश्यकनिर्युक्ति प्रमुख ग्रंथोनी टीकाओ करी तथा एमना एक हंस अने बीजा परमहंस ए बे शिष्य बौद्धोनी पासे भणवा गया, बौद्धोए जाण्युं के ए बे जैनी जेवा देखाय छे. तेथी परीक्षा करवा माटे दादराना पगथीयाओ ऊपर जिनप्रतिमा मूकी, तेना ऊपर पग आपीने बौद्धनां शिष्यो तो सर्व चाल्या गया. परंतु हंस अने परमहंस जिनप्रतिमा देखीने

प्रतिमाना हृदयमां खडीनी जनोइ करीने निकल्या. बौद्धोए जाण्युं के आ जैनीओ छे अने हंस परमहंस पण जाणी गया के ए आपणने अवश्य मारशे. पछी मरण भयथी ते बन्ने जण पोत पोतानी भणवानी पोथीओ हाथमां लइने पोताना देश भणी चालता थया. बौद्धोए राजाना सीपाइयो बन्नेने मारवा माटे मोकल्या. तेणे जइ प्रथम हंसने मारी नाख्यो अने भागीजता परमहंसने पण चितोड पासे मारी नाख्यो. हरिभद्रसूरि ए वात सांभलीने महा कोपायमान थया, एक तेलनी कढाइ उकालीने मंत्र जपता जाय अने एकेक कांकरो कढाइमां नाखता जाय. ते मंत्रित कांकराना प्रभावथी बौद्धनो एक तपस्वी ते कढाइमां पडी भस्म थइ जाय. एम १४४४ बौद्धोने हण्या. ते वखते एक श्रावक बोल्यो 'जइ जलइ जलउ लोए' एटलुं सांभलतांज क्रोध उतरी गयो. केटलाक ग्रंथोमां एम पण लख्युं छे के "याकनी महत्तरा साध्वीए एक श्राविकाने लावीने गुरुने कह्युं के एणे पंचेन्द्रिय जीवनो वध कर्यो छे. तेनो दंड शुं अपाय ? गुरु बोल्या पांच कल्याणानो दंड अपाय छे. साध्वी बोली—महाराज ! एक पंचेन्द्रियना वधनो एटलो म्होटो दंड अपाय एवुं आप जाणो छो तो आ बौद्धोने केम मारो छो ? त्यारे गुरुनो क्रोध उतरी गयो, पछी तेना प्रायश्चित माटे १४४४ पंचाशक प्रमुख प्रकरण ग्रंथो बनाव्यां." एक पट्टावलिमां एम पण लखेल छे के "हंस अने परमहंस बौद्धमठमांथी लाग जोइने निकली गया. मठना कुलपतिए बन्नेने पकडवा पाछल मोटुं लश्कर दोडाव्युं. लश्कर आवे छे एम जणायाथी हंसे कह्यो के परमहंस ! तुं पासेना नगरमां चाल्यो जा. त्यांनो सूरपाल राजा तारी रक्षा करशे. हंस सहस्रयोधी हतो तेणे लश्करनो सामनो कर्यो पण लश्करमां १४४४ योद्धा हता तेमना बाणोथी हंस वींधाइ गयो अने मरण पाम्यो. परमहंस सूरपालराजा आगल सहीसलामत पहोंची गयो. तेणे बधी हकीकत सांभली मदद करी. बौद्ध लश्कर आव्युं ने परमहंसनी मांगणी करी. राजाए जणावी दीधुं के हुं लडवा तैयार छुं, पण ते तो नहींज मले. आखिरे एवुं नक्की थयुं के परमहंस बौद्धो साथे विवाद करे अने जो जीते तो ते छूटो थाय. खूब वाद विवाद थयो. परमहंस जीत्यो. सूरपाले सन्मान साथे परमहंसने त्यांथी विदाय कर्यो. बौद्धोये रस्तामांथी पकडवा अनेक प्रयत्नो कर्या पण परमहंस तो पोताना गुरु हरिभद्राचार्य पासे पहोंची गयो. हंस केवी रीते मार्यो गयो ते सर्व हकीकत गुरुने जणावीने परमहंस पण प्राण मुक्त थयो. आ बनावथी आचार्यने बहु क्रोध चढ्यो ने तेज वखते सूरपाल राजाना नगर तरफ चाली निकल्या. टुंक समयमां त्यां पहोंची राजाए बतावेली चत्रियवटने असीम धन्यवाद आप्यो. सूरपालना दरबारमांज बौद्धमठपति साथे वादविवाद करी पोतानी प्रबल विद्वत्ताथी हरिभद्राचार्ये बौद्धोने परास्त कर्या. अने मठपति ते वखतेज कलकलती तेलनी कढाइमां जइ पड्यो ने जोत जोतामां तलाइ गयो. एम एक पछी एक

बौद्ध भजियानी जेम कढाइमां तलाववा मंड्या. एवामां बे जैनमुनि त्यां आव्या ने एक पत्र हरिभद्राचार्यना हाथमां मूक्यो. तेमां लख्युं हतुं के 'वीतरागना वचननो समझु होय तेनामां क्रोध न उद्‌भवे.' पत्र पठवनार पोताना गुरु जिनभद्रज हता. हरिभद्र पत्र वांचतांज शांत थइ गया. तेओ त्यांथी रवाना थइ पोताना गुरु पासे आव्या अने क्रोधमां थएल अकार्यनो प्रायश्चित्त माग्युं. गुरुए कह्युं तारो १४४४ बौद्धोने संहारवानो संकल्प हतो माटे तेटलाज ग्रंथ बनावी निर्मल था. हरिभद्राचार्ये ते मंजूर कर्युं. हंस अने परमहंस संसारीपणामां एमनाज भाणेज हता.

बीजा हरिभद्रसूरि विक्रम संवत् ९६२ मां थया छे. तेमना शिष्य सिद्धर्षिगणी हता ते बौद्धोना पासे एकवीश वार गया अने आव्या. तेने प्रतिबोधवा माटे ललित-विस्तरा शक्रस्तवनी वृत्ति बनावी. त्रीजा हरिभद्रसूरि विक्रम संवत् बारसोना सैकामां थया तेमणे बनावेला मुनिपति चरित्र आदिक ग्रंथो प्रसिद्ध छे. तथा श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण पण स्थविर थया छे, तेमणे विशेषावश्यकनुं भाष्य बनाव्युं छे. तेमज श्रीशीलंगाचार्य, अभयदेवसूरि अने मलयगिरि प्रमुख टीकाओना करवावाला थया छे. ए सर्व स्थविरो जाणवा. इति स्थविरावली-शेष संबंधः

अठ्ठावीश प्रकारनी साधु समाचारी—

१ ते काल ते समयना विषे, श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामी आषाढशुदि पूर्णिमाथी एक महीनो अने वीश दिवस वरसादना गयां पछी पजोसण करे एवो नियम छे. शिष्य पूछे छे के चोमासाना पचास दिवस गया पछीज शा माटे पजोसण करे. (१) गुरु ! कहे छे-शिष्य गृहस्थ श्रावको पोताना घरने खडी प्रमुखथी धोइ ऊपर छाया करी घठारे, मठारे, धूप आपे, परनाल प्रमुख पाणीना मार्ग बनावे इत्यादि सर्व काम गृहस्थे पोताना माटे कर्या होय. अने पोते वापरी फासु करी लीधा होय, तेथी वर्षादना पचास दिवस गयां पछी पजोसण करे. कदाचित् साधु पहेलाथीज कहे के हुं चोमासुं रहीश, तो ते गृहस्थ साधुना निमित्ते घर प्रमुखनो आरंभ करे. माटे पचास दिन गया पछी साधु कहे के अमे चोमासुं आंही करीशुं. (२) एवी रीते भगवान् पोते पचास दिन गयां पजोसण करे तो तेमना गणधर पण

पचास दिन गयां पजोसण करे. (३) अने गणधर पचास दिन गया केडे पजोसण करे तो गणधरोना शिष्यो पण वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करे. (४) गणधरोना शिष्यो पचास दिन गयां पजोसण करे तो थविर पण वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करे. (५) थविरो, वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करे तो जे आजना समयमां श्रमण निर्ग्रंथ विचरे छे ते पण पचास दिन गयां पजोसण करे. (६) आज वर्त्तमान श्रमण निर्ग्रंथ वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करे तो अमारा आचार्य उपाध्याय पण पचास दिवस गयां पजोसण करे. (७) अमारा आचार्य उपाध्याय पचास दिवस गयां पजोसण करे तो अमे पण वर्षादना पचास दिवस गयां पजोसण करिए छीए. अपवाद कहे छे के भादरवा शुदि पांचमना एक दिवस आगल अर्थात् भादरवाशुदि चोथना दिवसे पजोसण करवुं कल्पे परंतु भादरवा शुदि पांचमीने ओलंघवी कल्पे नहीं एटले एकावनमां दिवसे संवच्छरी करवी कल्पे नहीं, परंतु ओगण पचासमां दिवसे कारणे करवी कल्पे माटे कारणे चोथनी संवत्सरी करवी पण छट्ठनी संवत्सरी तो अपवादे पण करवी न कल्पे. (८) ए आठ आलावे करी पजोसण करवा आश्रयी प्रथम समाचारी जाणवी.

२ वर्षाकालमां चोमासुं रहेला साधु अने साध्वीने पांच कोशनो चोफेर अवग्रह राखवो पण अवग्रहथी बाहेर हाथ मूके त्यां सुधी पण उभुं रहेवुं नहीं. साधु साध्वीने वर्षादे चोमासामां गोचरीना माटे पांच कोश जावुं आववुं कल्पे ए जावा आववानी बीजी समाचारी जाणवी.

३ विचाले नित्य नदी वहेती होय तो नदी उतरीने पांच कोश लगण पण जावुं आववुं कल्पे नहीं अने कुणाला नगरीनी पासे 'ऐरावती' नदी छे ते नित्य वहेती रहे छे पण तेनो पाट घणो पहोलो छे, पाणी

कल्प छे. माटे एक पग जलमां अने एक पग ऊंचो आकाशे थलमां चालतो उतरे तो चोफेर पांच कोश जावुं आववुं कल्पे. पूर्वी नदी न होय तो न कल्पे. ए नदी उतरवा संबंधि त्रीजी समाचारी जाणवी.

४ वर्षादमां रहेला साधु अने साध्वीने गुरुए कह्युं होय के तमे गिलाणने आहार आणी आपजो. तो तेना माटे आहार लावी देवो कल्पे; परंतु पोतानी मतिए गिलाणना माटे आहार लावी देवुं कल्पे नहीं. अने जो गुरुए कह्युं होय के तुं त्हारे माटेज लइ आव, तो पोताने माटेज लइ आववुं कल्पे पण बीजाने आपवुं न कल्पे. गुरुए कह्युं होय के तुं गिलाणने आहार लावी आपजे अने तुं पण खाजे, तो लाववुं अने देवुं कल्पे. ए साधुओने परस्पर देवा लेवा संबंधि चोथी समाचारी जाणवी.

५ चोमासे रहेला साधु साध्वीने १ दूध, २ दहि, ३ माखण, ४ घृत, ५ तेल, ६ गोळ, ७ सहत, ८ मदिरा अने ९ मांस ए नव विग्रय छे तेमां मदिरा, मांस, माखण अने सहत ए चार विगय तो प्रथमथीज सर्व प्रकारे वर्जेली होय छे. माटे ते मूकीने बाकीनी पांच विगय जे छे ते बलवान् अने रोगरहित शरीरवालाने, नित्य लेवी कल्पे नहीं अने कारणे लेवी पडे तो लेवाय, पण पजोसणमां लेवी नहीं. ए विगय निषेध संबंधि पांचमी समाचारी जाणवी.

६ चोमासे रहेला साधु साध्वीने कोइ गिलाण कहे के म्हारा माटे अमुक चीज गृहस्थना घेरथी लइ आवजो त्यारे लावनार साधु गुरुने पूछे के स्वामिन् ! गिलाण साधु अमुक चीज मगावे छे ते लइ आवुं ? गुरु कहे केटली मगावे छे ? त्यारे गिलाणने पूछे. गिलाण कहे के आटली चीज जोइए. पछी गुरुने कहे स्वामिन् ! अमुक चीज

आटली गिलाण मगावे छे. त्यारे गुरु कहे एटली चीज एटला प्रमाणनी लावजे. पछी ते साधु ज्यारे गोचरी जाय त्यारे गिलाणने खपती चीजथी वधारे श्रावक देवा मांडे तो कहेवुं के एटलीज गिलाणने खपे छे. तेम छतां श्रावक कहे के वधारे लइ जाओ, आप पण खाजो, पीजो, वापरजो, म्हारा घरमां घणी छे माटे सुखे ल्यो. तो लेवी. पण गिलाणना नामथी पोते लइने वापरवी नहीं कल्पे. ए गिलाणने खपती वस्तु लावी आपवा संबंधि छट्ठी समाचारी जाणवी.

७ वर्षादमां रहेला थविर कल्पी साधुओने श्रावकोना घरमां जे नवा श्रावक थएला होय तेमना घेर हरकोइ न्हाना अथवा म्होटा साधु जाय अने ते जे कांइ मागे ते आपे, पण नाकारो करे नहीं, न्हाना म्होटा साधु स्हामुं जुए नहीं, पण चोरासी गच्छना साधुओने दान देवानीज इच्छा राखे ते, अने ज्यां साधुओने पण एवो विश्वास होय के जे चीज क्यांय पण नहीं मलशे, ते एमना घरमां तो जरूर मलशे. एवा श्रावको जे होय तेमना घरमां साधुओए विना देखती चीज मागवी नहीं. कारण के ते श्रावक तो हरेक चीजनुं दान आपवुं एवी वांछावालो छे तेथी ते एवुं जाणे के ए चीज एमने क्यांय नहीं मली हशे माटे मागवा आव्या छे. तेथी ते बजारमांथी वेचाती लइने अथवा अणसमजु नवो थयेलो श्रावक होय तो ते बाहेरथी चोरी लावीने पण साधुने आपे माटे एवा घरोमां अणदीठी वस्तु मागवी कल्पे नहीं. ए अदृष्टयाचन वर्जनसंबंधि सातमी समाचारी जाणवी.

८ वर्षादमां रहेला साधुओए नित्य एकवार जमवुं अने गृहस्थोना घेर गोचरी माटे एकवारज जावुं. पण आचार्य, उपाध्याय, तपसी, गिलाण, जेने दाढी मूछ आव्या न होय एवा लघुवयना शिष्य तथा जेने स्तन न होय एवी लघुवयनी शिष्यणी प्रमुखनी वैयावृत्त्य करवा

सारुं जो एक दिवसमां बे त्रण वखत गृहस्थना घेर जवुं पडे तो पण तेनी मनाइ नथी; परंतु पोताना माटे तो एकवारज जवुं कल्पे, उपरांत जवुं कल्पे नहीं. तथा एक उपवास करवावालाने, जो एकवार गोचरी लावी खाइ, पीने, तृप्त थइ रह्या, पातरां प्रमुख पूंछी मूक्या, तो फरी बीजी वखत गोचरी न जावुं अने जो तृप्ति न थइ होय तो बीजीवार गोचरीए जावुं कल्पे. बेलानी तपस्यावालाने बे वखत अने तेलानी तपस्यावालाने त्रणवार गोचरी जावुं कल्पे. त्रण उपवासथी उपरांत तपस्या करनारने मरजीमां आवे तेटला वखत गोचरी जावुं कल्पे. ए गोचरी जवा संबंधि आठमी समाचारी जाणवी.

९ वर्षादमां रहेला साधु साध्वी जे नित्य जमवावाला होय तेमने श्रीआचारांगसूत्रमां कहेला एकवीशे प्रकारना पाणी लेवा कल्पे. एक उपवासवाला साधुने एक आटानुं धोवण, बीजुं पाननुं धोवण अने त्रीजुं चावलनुं धोवण ए त्रण प्रकारनुं पाणी लेवुं कल्पे. छट्ठना तपवाला साधुने तूसनुं (कूकसानुं) धोवण, जवनुं धोवण अने तिलनुं धोवण, ए त्रण जातनुं पाणी लेवुं कल्पे. तथा अट्ठम तपवाला साधुने एक ओसामण, बीजुं कांजी, अने त्रीजुं तीन उकालावाळुं उन्हुं पाणी, ए त्रण प्रकारनां पाणी लेवां कल्पे, अने त्रण उपवासथी वधारे तप करवावाला साधुने छाणेलुं उष्ण पाणीज लेवुं कल्पे. तथा अनशनवाला साधुने एक उष्ण पाणीज कल्पे, ते पण छाणेलुं होय ते पण थोडुं थोडुं पीवुं; परंतु घणुं पीवुं नहीं कल्पे. ए पाणी पीवा संबंधी नवमी समाचारी जाणवी.

---

१ ओसामण, २ पिष्टोदक, ३ संस्वेदिम, ४ तंडुलोदक, ५ तुषोदक, ६ तिलोदक, ७ यवोदक, ८ सौवीर, ९ अम्बोदक, १० अम्बाडोदक, ११ कपित्थोदक, १२ मातुलिंगोदक, १३ द्राक्षोदक, १४ दाडिमोदक, १५ खर्जूरोदक, १६ श्रीफलोदक, १७ करीरोदक, १८ बदरोदक, १९ आमलकोदक, २० चिश्चोदक, २१ उष्णोदक.

१० वर्षादमां रहेला साधु जेणे मर्याद करी छे के पांच दात पाणीनी अने पांच दात भोजननी लेवी, पण जो पाणीनी चार दात मली अने भोजननी पांच दात मली पण ते पांच दातमां भोजन स्वल्प आव्युं छे तेनाथी पेट भराय नहीं. त्यारे विचार करे के पाणीनी चार दात मली छे पण पांच मली नथी तो हवे एक दात भोजनमां मेलवी आपुं, एम करवुं कल्पे नहीं. जे जेटलुं मल्युं तेटलुंज खाइने संतोष करवो, पण दात अदल बदल करवी नहीं. तेम बीजी वखत पण गोचरी जावुं नहीं. 'वोहोरती वखते पात्रमां मात्र एकज चावलनो दाणो आवी पड्यो, तो ते एक दात जाणवी; तेमज सर्व अन्न साथेज पात्रमां पडी जाय तो पण एकज दात जाणी लेवी. एमज पाणीनुं पण वहोरती वखते जो एकज टीपुं आवी पात्रमां पडे तो ते एकज दात जाणवी अने पाणीनी धारा खंडित थइ न होय, अस्खलित धार वहेतां संपूर्ण पात्र भराइ जाय तो पण एक दात समजवी; परंतु धार खंडित थया पछी बीजी धाराथी जे पाणी पात्रमां पडे ते बीजी दात कहेवाय.' ए दात आश्रयी दशमी समाचारी जाणवी.

११ वर्षाकाले जे उपासरामां साधु चोमासुं रह्या होय ते जगाथी मांडीने सात घर पर्यंत गोचरी माटे जवुं नहीं. गाममां जमण होय तो केटलाएक आचार्य कहे छे के उपासरा सहित सात घर अने केटलाएक आचार्य कहे छे के उपासरा सहित आठ घर लगण व्होरवुं नहीं. ए संखडी संबंधि अगीआरमी समाचारी जाणवी.

१२ चोमासा रहेला पाणिपात्रधारी (जिनकल्पी) मुनिने फुसार-मात्र (अति झीणो) जल वर्षतो होय तो पण गृहस्थोना घरोमां गोचरी माटे जवुं कल्पतुं नथी. तेमज वगर ढांकेला स्थानके गोचरी करवी पण न कल्पे. गोचरी करतां अकस्मात् जल वर्षवा मांडे तो भुक्तावशिष्ट आहारने हाथमां ढांकी अने छाती के कक्षामूलमां राखी,

ढांकेली जगा अथवा वृक्षना मूलतले आवीने जो तेमां वर्षादना छांटा न लाग्या होय तो वापरवुं कल्पे, पण पाणीना छांटा लाग्या होय तो वापरवुं न कल्पे. ए जिनकल्पीमुनिने गोचरी करवा संबंधि बारमी समाचारी जाणवी.

१३ वर्षादमां चोमासे रहेला स्थविरकल्पी साधुओने तो, जेनी धारा रोकाय नहीं एवो अखंड धाराथी मेघ वर्षे तो गोचरी जावुं नहीं. कदाच कोइक साधु गिलाण होय अथवा अशक्त होय, एक बे दिवसनो भूख्यो होय अने अधिक भूख सहन करवानी शक्ति न होय तो एक सूतरनो कपडो तेना ऊपर ऊननुं वस्त्र ओढीने थोडा छांटा पडता होय तो गोचरी जावुं कल्पे ए अपवाद सूत्र छे. तथा गृहस्थना घेर गोचरी गया केडे रही रहीने थोडो थोडो वर्षाद वरसे तो आराममां, उपासरासां, मंडपनी नीचे तथा रूंखनी नीचे आववुं कल्पे. तथा गृहस्थना घेर गोचरी गएला साधुने वर्षाद आव्यो तो तेना घरे जे वखते साधु आव्यो ते वखतथी पहेलां जो भात उतर्यो होय अने पछी दाल उतरी होय तो साधुए भात व्होरवो पण दाल व्होरवी नहीं अने जो दाल पहेली उतरी होय अने चावल पछी उतर्या होय तो दाल व्होरवी अने चावल व्होरवा नहीं अने जो चावल तथा दाल बन्ने पहेलां उतर्या होय तो बन्ने लेवा कल्पे. अने पछी उतर्या होय तो बन्ने चीज लेवी कल्पे नहीं. तथा गोचरी गएला साधुने आहार मल्या बाद वर्षाद रही रहीने वर्षतो होय तो बागमां, उपासरामां, ढांकेली जगामां, अथवा झाडनी नीचे आवीने प्राप्त आहार खाइ जवुं, पण आहारने घणो वखत राखी मूकवो नहीं. अने पातरा पूंछी एकठा बांधीने वर्षाद पडतो होय तो पण दिवस छतांज उपासरामां आववुं पण राते उपासरा बाहेर रहेवुं नहीं. वर्षादमां रह्या साधु गृहस्थना घेर गोचरी गया पछी रही रही वरसाद वर्षवा लागे तो बागादिकमां अथवा उपासरे आववुं;

परंतु बागादिक स्थानमां एक साधु अने एक साध्वीने, एक साधु अने बे साध्वीने, तथा बे साधु अने एक साध्वीने, तथा बे साध्वी अने बे साधु ए चारे भांगे ऊभा रहेवुं नहीं कल्पे तथा पांचमे भांगे बे साधु अने बे साध्वी होय तेमां एक वृद्ध साधु साध्वी होय तथा एक लघु साधु साध्वी होय अने जगा घणी मोकली होय ज्यां सर्व लोक देखता होय एवी जगामां रहेवुं कल्पे. एवाज चार भांगा साधुने श्राविकानी साथे कहेवा. तेमज एवाज चार भांगा साध्वीने श्रावकनी साथे कहेवा अने पूर्वोक्त पांचमा भांगे एकठाणे रहेवुं कल्पे. आ स्थविरकल्पीने गोचरी तथा साधु साध्वीने एकत्र वास संबंधि तेरमी समाचारी जाणवी.

१४ वर्षादमां रहेला साधु अथवा साध्वीए कोइ साधुना कह्या विना तेमना माटे अशनादिक चार आहार लाववा कल्पे नहीं. ते शा माटे ? के तेनी इच्छा होय तो ते आहार खाय अने इच्छा न होय तो न खाय माटे कह्या विना आहार लाववो नहीं. ए पूछया विना आहार नहीं लाववा संबंधी चौदमी समाचारी जाणवी.

१५ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने ज्यां सुधी शरीर भींजेलुं होय त्यां सुधी अशनादिक चार आहारमांथी कोइ पण आहार करवो कल्पे नहीं. एम शा वास्ते ? के घणुं करीने सात ठेकाणा भींजेला रहे छे, तेमां एक हाथ, बीजी हाथनी रेखा, त्रीजा नख, चोथी नखनी अणीओ, पांचमां भुंहारा, छट्ठा नीचला होठ अने नीचली दाढीनी जगा, सातमा ऊपरना होठ अने ऊपरनी मूछो, ए साते आला न होय तदुन सूकी गया होय त्यारे चार आहार करवा कल्पे. ए आर्द्र शरीरे आहार न करवा संबंधी पन्नरमी समाचारी जाणवी.

१६ चातुर्मास स्थित साधु साध्वीओने सूक्ष्म आठ वस्तुओने वारंवार सूत्र ज्ञाने करी जाणवी, पोताना चक्षुए करी देखवी, अने तेनी वारंवार पडिलेहण करवी. तेमां—एक प्राणसूक्ष्म, बीजुं पनकसूक्ष्म, त्रीजुं बीजसूक्ष्म, चोथुं हरितसूक्ष्म, पांचमुं पुष्पसूक्ष्म, छट्ठुं अंडसूक्ष्म, सातमुं गृहसूक्ष्म अने आठमुं स्नेहसूक्ष्म ए आठ सूक्ष्म जाणवा तेमां प्रथम प्राण सूक्ष्म एटले झीणा झीणा जंतुओ काला, नीला, राता, पीला अने धोला एवा पांच रंगवाला अणुद्धरी (कुंथुआ) जीव थाय छे, ए जीव एक स्थानके अणचालता रहे, ज्ञानरहित छद्मस्थ साधु साध्वीओने नजरथी देखाय नहीं माटे ते जीवोने वारंवार सूत्र सांभलवे करी जाणतां रहेवुं, चक्षुथी देखतां रहेवुं १. बीजा पनकसूक्ष्म एटले नीलफूल ते काली, लीली, राती, पीली अने धोली एवा पांच प्रकारनी थाय छे; ते जीवो जे वस्तुमां पडे ते वस्तुनां रंग जेवा दीठामां आवे, तेथी छद्मस्थने नजरे नहीं आवे माटे तेने पण वारंवार देखतां तपासतां रहेवुं २. त्रीजा बीजसूक्ष्म ते पण काला, नीला, धोला, पीला अने राता ए रीते पांच प्रकारना छे. शाल प्रमुखना जेवा वर्णवाला थाय छे, ते पण छद्मस्थने जाणवामां नहीं आवे माटे तेनी पण वारंवार पडिलेहणा करवी. ३. चोथा हरितसूक्ष्म एटले नीलोत्री सूक्ष्म थाय छे ते पण पूर्वोक्त पांच रंगवाली थाय छे ते पृथ्वीना रंग सदृश होय अने घणी बारीक होय; तेनी पण साधु साध्वीए घणीज रूडी रीते दृष्टि वडे जोइने पडिलेहण करवी ४. पांचमां पुष्पसूक्ष्म (झीणा फूल) ते पूर्वोक्त रीते पांच रंगना थाय छे ते रूखनो जेवो रंग होय तेवा रंगवाला थाय छे ते पण जाणवामां नहीं आवे, तेनी पण पडिलेहण करवी ५. छट्ठा अंडसूक्ष्म तेमां प्रथम मधुमाखीनां ईंडां, बीजा कलातरा(मांकडी)ना ईंडां, त्रीजां कीडीनां ईंडां, चोथां गिरोलीनां ईंडां अने पांचमां काकीडाना ईंडां ए सर्व जीवोना

ईंडां पण सूक्ष्म थाय छे; माटे एने वारंवार जोवा अने पडिलेहण करवी ६. सातमां गृहसूक्ष्म पण पांच प्रकारना छे–एक तो भूमिमां गद्दइया सरखा घर करेला होय ते, बीजा पाणी सुकाइ गया पछी पापडी भूमि ऊपर पडे ते, त्रीजा बिल, चोथा ताड प्रमुख वृक्षोना मूलमां न्हाना न्हाना घर थाय छे ते, अने पांचमां भमरानां घर ए पांच प्रकारना गृहोनी पडिलेहणा करवी ७. आठमो स्नेहसूक्ष्म ए पण पांच प्रकारनो छे–एक ओसनुं पाणी, बीजुं हेमारानुं पाणी, त्रीजुं धुंहरिनुं पाणी, चोथुं करानुं पाणी अने पांचमुं डाभ प्रमुखनी अणी ऊपर रहेल पाणीनां बिंदु, ए पांच प्रकारनुं पाणी छे तेने पण छद्मस्थे जाणीने पडिलेहवुं ८. ए आठ सूक्ष्म जीव आश्रयी सोलमी समाचारी जाणवी.

वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने ज्यारे गृहस्थोने घेर गोचरी (आहार प्रमुख) लेवाने जावुं होय त्यारे आचार्य, उपाध्याय, स्थविर प्रवर्त्तक, गणि, गणधर, गणावच्छेदक तथा जेनी आज्ञामां चालतां होइए तेमने पूछीनेज जावुं. तेमने एम कहेवुं के हे भगवन्! आपनी आज्ञा होय तो गृहस्थोने घेर भात पाणी वगेरे लेवा वास्ते जाउं. ते आचार्यादिक जो जवानी आज्ञा आपे तो जवुं कल्पे, विना आज्ञा नहीं. शिष्य पूछे छे के शा वास्ते? गुरु कहे छे के आचार्यादिक साधु असुक दिशा गयो तेने घणो वखत केम लाग्यो? इत्यादि उपद्रव टालवाना उपायने जाणे छे. एवीज रीते जो श्रीजिनचैत्ये दर्शन करवा, ठंडेल भूमिकाए, बीजा कोइ पण कामना माटे जवुं होय, अने गामोगाम विचरवुं होय तो पण पूछया विना जवुं नहीं. तथा चोमासे रहेला साधु साध्वीने विगयनो आहार करवानी इच्छा होय तो आचार्यादिकने पूछया विना विगय लेवी कल्पे नहीं माटे आचार्यादिकने पूछवुं के हे महाराज! आपनी आज्ञा होय तो हुं दूध प्रमुख

विगय गृहस्थना घेरथी लइ आवीने आहार करुं ? आचार्यादिक कहे के अमुक प्रमाणवाली विगय लावीने आहार करजे. शिष्य आशंका करे छे के आज्ञा लेवानुं शुं प्रयोजन छे ? गुरु उत्तर आपे छे के विगयादिक खावा के नहीं खावा, तेथी थता गुण तथा अवगुण ए सर्वे आचार्यादिक जाणे छे माटे पूछवुं जोइए. तथा चोमासामां कोइ साधु पोतानी आरोग्यता माटे औषध करवानी चाहना राखतो होय तो आचार्यादिकने पूछीनेज औषध करवुं करावतुं कल्पे. तथा चोमासामां कोइ साधु, सारुं, कल्याणकारि, उपद्रव रहित, धन्यकारी, मंगलिकनुं करनार, सोभावंत अने महा प्रभाविक एवुं तप करवानी चाहना राखतो होय, तो आचार्यादिकने पूछीनेज तप करवुं तथा कोइ साधु अनशन करवानी चाहना राखतो होय, अने भात पाणीनो त्याग करी मृत्युने नहीं चाहतां पादोपगमन अनशन प्रमुख करे, तेणे पण आचार्यादिकने पूछ्या विना अनशन करवुं नहीं. एमज आहार करवो, मात्रे ठले जावुं, सज्झाय ध्यान करवुं, धर्मजागरणा करवी, काउस्सग्ग प्रमुख करवुं ते सर्व आचार्यादिकने पूछीनेज करवुं, परंतु पूछया विना कोइ पण काम करवुं कल्पे नहीं. ए आचार्यादिकने पूछीनेज दरेक कार्य करवा संबंधि सत्तरमी समाचारी जाणवी.

१८ वर्षाकालमां रहेला साधुओने पोतानी उपधी तडके तपाववी होय, तो पोते त्यां खबर राखवी, पासे बेसवुं, परंतु उपधिने तावडे राखीने गोचरी जावुं नहीं, आहार करवो नहीं, चैत्य जावुं नहीं, ठले जावुं नहीं, सज्झाय करवी नहीं, अने काउसग्ग करवो नहीं, जो एटला काम करवां होय तो बीजा साधुने कहेवुं के हे आर्य ! मने गोचरी प्रमुख अमुक कार्य करवानुं छे. माटे तमे अमारी उपधीनी निगा राखो तो हुं गोचरी प्रमुखनुं काम करुं, जो ते साधु कहे

के हुं निगा राखीश तो गोचरी प्रमुख कार्य करवुं कल्पे. पण कदापि ते कहे के म्हारे बीजां काम छे तेथी बेशी नहीं शकुं, तो पूर्वोक्त गोचरी प्रमुख कार्य करवा कल्पे नहीं. ए उपधि तडके तपाववा संबंधि अढारमी समाचारी जाणवी.

१९ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने, एक हाथ ऊंची अने शब्द न करे, डगे नहीं, फरती काठी बांधेली एवी शय्या विना रहेवुं कल्पे नहीं. जो एवा शय्याऽऽसन विना रहे तो कर्मबंधनुं कारण थाय. तेमज ते शय्याऽऽसनने वारंवार पडिलेहवा, तडके नाखवा, अने पूंजता रहेवुं. तेम न करे तो तेने चारित्र पालवुं दुर्लभ थशे. ए शय्याऽऽसन ग्रहण करवा संबंधी ओगणीशमी समाचारी जाणवी.

२० चोमासामां रहेला साधु साध्वीने ठला मात्रानी त्रण जगाओ राखवी अने ते जगाओने वारंवार पडिलेहवी परंतु सीयाला अने उन्हालानी पठे चोमासामां न रहेवुं जोइए. शिष्य पुछे छे के शीयाला अने उन्हालाना दिवसोनी पठे चोमासामां शा वास्ते न रहेवुं ? गुरु उत्तर आपे छे के प्रायः चोमासामां नीली वनस्पति प्रमुख जीवो घणा उत्पन्न थएलां होय छे माटे चोमासानो जुदो प्रकार कह्यो. ए ठला मात्रानी जगा राखवा संबंधि वीशमी समाचारी जाणवी.

२१ चोमासामां साधु साध्वीने एक तो ठला (जंगल जवा)नुं, बीजो मात्रा (पेशाब करवा)नुं त्रीजो खेल (खंखार थूंकवा) प्रमुखनो एवं त्रण मात्रक (पात्र) राखवा. ए त्रण मात्रक राखवा संबंधि एकवीशमी समाचारी जाणवी.

२२ पर्युषण करीने रहेला साधु साध्वीने, गायना केश जेवडा सूक्ष्म केश पण पोताना मस्तके राखवा नहीं. केम के पंचमीनी रात्रे जो मस्तके केश रही जाय तो दंड आवे. जो कोइ अशक्त, ग्लान (रोगी),

अने टाटियो होय तो तेणे छरीथी मुंडावी नाखवा के कतरणीथी कतरा-
ववा. उत्सर्गथी तो लोचज करवो तथा जो कतरवा होय तो पांछा पंदर
पंदर दिवसे कतरवा अने गुरु मासी दंड लेवो, तथा महीने महीने खुर मुंड
करवो अने लघु मासी प्रायश्चित्त लेवो, युवान साधुने चार मासे लोच
करवो, स्थविर अने जर्जर थएला साधुने चक्षुनो तेज राखवा माटे
छे महीने लोच करवो, अथवा स्थविर (अतिवृद्ध)ने माथा ऊपर केश
थोडा आवता होय तो बार महिने एकवार लोच करवो. ए लोच
करवा संबंधि बावीशमी समाचारी जाणवी.

२३ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने संवत्सरी थया पछी पहेलां थयेलो
कलह खमाववो पण क्रोध राखवो नहीं, जे कोइ निर्ग्रंथ अने निर्ग्रं-
थणी पर्युषण वीत्या पछी क्रोध करे, क्रोध राखे, ते अनाचारी छे
एम जाणवुं. तेमने बीजा साधुओए कहेवुं के आर्य ! तमे क्रोध राखो
छो ते ठीक नथी. एवुं कहेवाथी नहीं समजे अने पर्युषण वीत्या
पछी कषाय खमावे नहीं तो जेम तंबोली सडी गएला पानने बाहेर
फेंकी दे छे तेम क्रोधी साधु साध्वीने पण संघमांहेथी बाहेर काहाडी
मूकवा. ए अधिकरण न उदीरवा संबधि त्रेवीशमी समाचारी जाणवी.

२४ वर्षाकालमां रहेला साधु साध्वीने, जो पर्युषणना दिवसोमां
कलह थयो होय, कटुक बोलवुं पडयुं होय, उद्वेग कर्यो होय तो
शिष्ये जइ रत्नाधिक (आचार्य) प्रमुखने खमाववा अने आचार्यादिके
शिष्यने खमाववुं. ए रीते पोते खमवुं अने बीजाने खमाववुं. पोते
उपशम करवो अने बीजाने पण कराववो, घणा प्रकारे रागद्वेष रहित
थवुं जोइये. जे क्रोधादिकने न उपशमावे ते ज्ञानादिकनो विराधक थाय
छे, एवुं जाणीने नियमा उपशम करवो. भगवान् उपशमनेज सार
पदार्थ कहे छे माटे उपशम अवश्य अंगीकार करवो. ए परस्पर
खमत खामणा संबंधि चोवीशमी समाचारी जाणवी.

पांच समिति पालवा ऊपर जुदा जुदा दृष्टान्तो—

१ साधु साध्वीए चोमासामां विशेष करीने पांच समिति पालन करवी जोइये. प्रथम इरिया समिति पालवा आश्रयी वरदत्त मुनिनो दृष्टांत—एक दिवस इन्द्र महाराजे पोतानी सभामां कह्युं के आज भरत क्षेत्रमां वरदत्त मुनि समान कोइ इरियासमितिनो पालवावालो नथी. इन्द्रना मुखथी वरदत्त मुनिनी प्रशंसा सांभलीने कोइक देव परीक्षा करवा सारुं आव्यो. तेणे हाथीनुं रूप करी सुंढमां पकडीने मुनिने आकाशमां उछाल्या अने देवमायाथी जमीन ऊपर न्हानी न्हानी घणी डेडकीओ विकुर्वी, मुनि आकाशथी नीचे पडतां विचार करवा लाग्या के 'मन्हे तो मरवानुं भय नथी पण आ डेडकीओ म्हारा शरीरना पडवाथी मरण पामशे, तेनी विराधना न थाय तो सारुं' एवुं जाणीने आकाशथी पडतां पण ओघाथी जमीन पूंजवा लाग्या ते देखी देवताए जाण्युं के धन्य छे एने जे एवी रीते जीव विराधनाथी व्हीए छे. पछी ते देवता प्रगट थइने पोतानो अपराध खमावी नमस्कार करीने पोताना स्थानके गयो.

२ भाषासमिति ऊपर संगतसाधुनो दृष्टांत—जे नगरमां संगतसाधु हता ते नगरनी बाहेर कोइ वैरी राजाए सेन्या लइ आवीने नगरने वींटी, संगतमुनिने पूछयुं—साधु ! नगर मांहे केटलीक फोज छे ? साधु बोल्यो के घणो सांभल्यो काने, घणो जोयो आंख्ये, नहीं देख्यो सर्वे सांभल्यो, नहीं सुण्यो सर्वे दीठो, ज्यारे ज्यारे ते पूछे त्यारे त्यारे एमज बोलवा लाग्यो, सेन्याना लोकोए जाण्युं के आ भणी भणीने घेलो थइ गयेल छे, एम विचारी मूकी दीधा.

३ एषणासमिति ऊपर नंदीषेणनो दृष्टांत—वसुदेवजीनो जीव पूर्व भवमां नंदीषेण हतो, तेणे ग्लानमुनिनी वेयावच्च करवानो अभिग्रह कर्यो हतो. पोते छट्ठे छट्ठे पारणुं करता तेनी इन्द्रे प्रशंसा करी. त्यारे कोइक देवे आवी अतिसारना रोगवालो साधु बनावीने नंदीषेण पासे मोकल्यो. नंदीषेण तेना सारुं पाणी लेवा गयो. देवताए अशुद्ध करी दीधो, नंदीषेणे लीधुं नहीं, ग्लानने खांधे बेसाड्युं, ग्लाने तेना ऊपर अशुची करी तो पण घृणा लाव्या नहीं, देवे बहु स्तुति करी ए कथा श्रीनेमि प्रभुना चरित्रमां लखाएल छे.

४ आदानभंडमत्तनिक्खेवणा समिति ऊपर सोमिल साधुनो दृष्टांत—एक दिवस साधु विहार करीने कोइक गामे आव्या. दिवस केटलो छे एवी बराबर खबर न पडवाथी वहेली पडिलेहण करी लीधी. एटलामां पाछलथी वखतनी खबर पडी त्यारे गुरुए कह्युं 'पडिलेहण करवानो वखत तो हवे थयो छे

माटे पुनः पडिलेहण करो.' ते सांभली सर्वे साधुओए पडिलेहण करी; पण सोमिल बोल्यो हमणा तो पडिलेहण करी छे एटलामां शुं सर्प घुसी गयेल छे ?, पछी प्रभाते पडिलेहण करी, पातरा बांधेला हता तो पण तेमांथी देवप्रयोगथी सर्प निकल्यो. तेथी व्हीक पामीने गुरुपासे आवी कहेवा लाग्यो के महाराज ! सर्प निकल्यो; गुरु बोल्या तुं उलंठ वचन शा माटे बोल्यो ? एवां वचन आज पछी बोलवा नहीं. पडिलेहण करवामां तो घणी निर्जरा छे. पछी ते साधुए एवो अभिग्रह लीधो के आजथी सर्वे साधुना दांडा हुं पडिलेहीश अने पडिलेहण करवामां सर्वे मुनिने सहाय आपीश; अभिग्रह पालतां सोमिलमुनिए घणा कर्म क्षय कर्या.

५ उच्चारप्रश्रवणसमिति ऊपर सुव्रताचार्यना शिष्यनो दृष्टांत–सुव्रताचार्यनो एक लघु शिष्य हतो तेने गुरुए कह्युं, मांडला कर, तो पण तेणे मांडला कीधा नहीं अने कहेवा लाग्यो शुं बहार ऊंटडा बेठा छे ? पछी रात्रिमां बाहेर मात्रु परठववा गयो. कोइक देवे ऊंटनुं रूप करी व्हीवराव्यो अने कह्यो, अरे ! आ गच्छमां एक साधु पण मंडल कर्या विना मात्रा प्रमुख करता नथी. पछी एक दिवसे मंडल कर्या नहीं अने रात्रे मात्रानी घणी बाधा थइ पण परठे नहीं. ते देवताए उद्योत कर्यो. शिष्ये जगा जोइने मात्रो परठव्यो माटे जे कोइ मंडल देखी परठवणा करशे तेने देवता सहाय आपशे. एवो निश्चय करी क्षुल्लक पण पारिठावणिया समितिमां सावधान थयो.

त्रणगुप्ति पालवा ऊपर जुदा जुदा दृष्टान्तो—

१ तेमज चोमासामां त्रण गुप्तिनो पालन पण सारी रीते करवुं जोइये. मनगुप्ति ऊपर कौंकण साधुनो दृष्टांत–कौंकणमुनिने काउस्सग्गमां घणी देर लागवाथी गुरुए पुछयुं. घणो वखत केम लाग्यो ? साधु बोल्यो–जीवदया चिंतववाथी, गुरु बोल्या–केवी जीवदया चिंतवी ?, साधु बोल्यो–म्हारा घरमां छोकरा आलसुं छे ते खेतरमां सूड निदानादिक करशे नहीं तो धान थोडो नीपजशे, तेथी दुःखी थशे, गुरुए कह्युं–तमे सावद्य चिंतव्युं माटे मिच्छामि दुक्कडं द्यो. ते सांभली साधुए मिच्छामि दुक्कडं दीधो १.

२ वचनगुप्ति ऊपर गुणदत्तसाधुनो दृष्टांत–गुणदत्त साधु एक दिवस पोतानी संसार संबंधि धनवती नामे माताने वंदाववा जतो हतो, रस्तामां चोर मल्या, तेणे साधुने पकड्यो अने कह्यो के आ रस्ताथी जान आवशे तेनी आगल तुं अमारुं नाम लइश नहीं. साधुए कह्युं–हुं तो बोलीश नहीं. चोरोए तेने छोडी मूक्यो, ते पोताने स्थानके जइ पोताना कुटुंबने वंदावीने फरी जाननी साथे तेज मार्गे आव्यो. चोरोए जानने लूंटी लीधी

अने बोलवा लाग्या के आ साधु केवो सत्यवादी छे के पोताना घरना माणसो आगल पण चोर रस्तामां बेठा छे एवुं कह्युं नहीं. ते वचन साधुनी माताए सांभल्युं, ते गुणदत्त साधुने कहेवा लागी के दुष्ट ! तें तारे हाथे चोरोने माल लुंटावी दीधो; तुं केम प्रथमथी बोल्यो नहीं, साधुने घणो कष्ट थतो देखीने चोरोए लूंटेलुं सर्व धन पाछुं आपी दीधुं; जानवाला खुशी थया. पण साधु बोल्यो नहीं २.

३ कायगुप्ति ऊपर अर्हन्नक साधुनी कथा—अर्हन्नक मुनि विहार करतां कोइ स्थानके जलनो खाल वहेतो देखीने विचारवा लाग्या के जो हुं आ खालमां पग देइश तो जीवविराधना थशे माटे कूदी निकली जाऊं एवुं चिंतवी कूदीने पेली तरफ गया. कोइक देवे ते साधुना पग छेदी नाख्या तेथी दुःखी थयो. देवता बोल्यो के हवे पछी कोइ वखते कूदीने जवुं नहीं, कदापि जीव मरे तो पण एने जयणाथी उतरी जवा माटे केवलीभगवंतनी आज्ञा छे माटे उतरीने जावुं पण कूदको मारीने जावुं नहीं ३.

खमावीनेज पडिक्कमण करवुं कल्पे, ते ऊपर उदायीराजानो दृष्टान्त—

पर्युषण आव्या के तरत सर्वनी साथे खमतखामणा करवा, कारण के खमतखामणा कर्या विना पडिकमणादिक क्रिया करवी कल्पे नहीं माटे जो कोइनी साथे वैरभाव थयो होय तो उदाइराजानी परे खमाववुं. जेम चंपानगरीमां कुमारनंदी नामा एक सोनार रहेतो ते जन्मथी स्त्रीनो लोलुपी हतो, धन आपीने महास्वरूपवाली पांचसौ स्त्री परण्यो हतो. एक दिवसे ते, हासा अने प्रहासा देवीयोने देखी मोहित थयो, देवीयोने बोल्यो के तमे म्हारी साथे भोग भोगवो. देवीयो बोली तुं पंचशैलद्वीपे आवे तो अमारे भोगयोग्य थाय एवुं कहीने देवीयो पोताने स्थानके गइ. सोनारे गाममां आवी पडह वजडाव्यो के जे कोइ मुजने पंचशैलद्वीपे लइ जाय तेने क्रोड सोनाम्होरो आपुं. ते सांभली एक वृद्ध खलासी लोभना वशथी 'घरना माणसो द्रव्यथी सुखी थशे' एवुं विचारी बोल्यो के हुं लइ जइश. पछी बन्ने जहाजमां बेठा, जहाज चाल्युं. आगल जतां एक वडवृक्ष आव्यो, नावड्यो बोल्यो आ वडनी ऊपर तुं चढी जाजे अने हुं तो पाणीना चक्रमां जहाज बूडशे तेनी साथे डूबी मरीश. तुं वड ऊपर बेशी रहेजे, रात्रिमां भारंड-पंखी आवशे तेना पगोमां त्हारा शरीरने बांधी मूकजे, ते पंचशैलद्वीपमां जशे त्यां तने मूकी देशे पछी तुं बंधनमुक्त थइ हासा प्रहासा देवीओनी पासे जाजे एटलामां ते वहाण वडनी पासे आव्युं, सोनार वड ऊपर चढ्यो अने जहाज भांगी पड्युं, नावड्यो मरण पाम्यो. सोनार भारंड पंखीना पगमां बंधाइने हासा प्रहासानी पासे गयो, ने भोग भोगववा माटे याचना करी. देवी बोली तारी अशुद्ध

देह छे तेथी अमो भोग करी शकीये नहीं. एम कही फरी तेने चंपानगरीमां मूक्यो अने कह्युं के जे हमणा अमारो देवपति छे ते चवशे माटे तुं जो मरण पामीने ते देवनी शय्यामां उपजे तो काम सिद्ध थाय. सोनार पण अज्ञानथी चितामां पडी मरवा लाग्यो. ते अवसरमां सोनारनो मित्र नागिल नामा श्रावक हतो ते बोल्यो, अरे! तुं आवी रीते मरवानुं म कर, देवीओना माटे मरवुं योग्य नथी तो पण तेणे मान्युं नहीं, काष्टमां भस्मथइ मरण पामीने हासा प्रहासाना ध्यानथी तेमनो पतिदेव थयो. अने तेओनी साथे भोग भोगववा लाग्यो. एक दिवसे इन्द्र महाराज, सर्व देव देवी सहित नंदीश्वरद्वीपनी यात्रा जवा माटे तैयार थया, हासा प्रहासाना पतिदेव ऊपर एवो हुकुम आव्यो के तुं सर्व देवोनी आगल मृदंग बजावतो चालजे. हासा प्रहासाए ते देवना गलामां मृदंग नाख्यो. देवे ते मृदंग पोताना गलामांथी कहाडी फेंकी दीधो. पण मृदंग तो तेना गलामां फरी आवी गयो, फरी देवे फेंकी दीधो, एम बे त्रण वार कर्युं. त्यारे हासा प्रहासा बोली अमारा भरतारनी एज मर्यादा छे के मृदंग बजाव्या विना ते छूटी शकेज नहीं "हासा प्रहासानो मृदंग गलामां पड्यो ते बजावे छूटको" एवी लोकमां पण कहेवत छे. पछी ते विद्युन्माली देव हासा प्रहासा सहित मृदंग बजावतो आगल चाले त्यां महर्द्धिक देवोने देखीने पोताना भवनी निंदा करवा लाग्यो. एटलामां नागिल श्रावकनो जीव बारमां देवलोकमां उपन्यो हतो, ते पण साथमां आव्यो अने विद्युन्मालीने कहेवा लाग्यो के तुं मने ओलखे छे देवे उपयोग आपीने कह्युं के हॉ मित्र नागिल! तें मने बहु वार्यो पण हुं तुच्छ भोगना माटे मनुष्य जन्म गमावीने आवा पुण्यहीन देवोमां उपन्यो छुं तो हवे म्हारे शुं करवुं? नागिल बोल्यो–तुं गोशीर्षचंदनमय श्रीमहावीरस्वामीनी प्रतिमा बनावीने तेनी पूजा कर के जे थकी तने सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय. पछी विद्युन्मालीए पण श्रीमहावीरजीनी प्रतिमा बनावीने केटलाएक काल पर्यंत पूजी. छेवट पोतानुं अल्पायुष्य रह्यो त्यारे प्रतिमाने पेटीमां मूकीने जहाजोवाला लोकोनी जहाजो अटकी रही हती ते काहाडी अने तेमने पेटी सोंपीने कह्युं के आ पेटीमां श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे ते तमे वीतभय पाटणमां जइने उदाइ राजाने आपजो. जहाजना लोकोए ते पेटी लावीने उदाइराजानी सभामां मूकीने कह्युं के आ श्रीदेवाधिदेवनी प्रतिमा छे कोइ देवताए मोकली छे. राजाए जाण्युं के देवाधिदेव तो ब्रह्मानुं नाम छे माटे ब्रह्मानुं नाम लइने उघाडवा लाग्यो तो पण पेटी उघडी नहीं. तेमज विष्णुना नामथी पण उघडी नहीं अने महेश्वरना नामथी पण उघडी नहीं, राजाने भोजननी वेला थइ गइ, त्यारे राजानी राणी प्रभावती बोली के "देवाधिदेव श्रीअरिहंत वीतराग होय तो पेटी उघडजो" बस, एम कहेवाथी पेटी उघडी, तेमांथी प्रतिमा निकली, ते लइ देरासरमां थापन करी, तेने प्रभावती राणी नित्य पूजवा लागी. एक दिवस प्रभावती राणीए

पूजाना श्वेत वस्त्र दासीना हाथे मगाव्या. दासीए लावी आप्या पण राणीए पोतानी दृष्टीना भ्रमथी लाल वस्त्र जोया, तेथी दासी साथे लडवा लागी पण थोडीवार पछी तेज वस्त्रने श्वेत दीठा त्यारे जाण्युं के हवे म्हारुं आयुष्य छ महीनानुं बाकी छे माटे राजापासे दीक्षा लेवानी आज्ञा मांगी, राजा बोल्यो तुं देवलोक जाय त्यारे कष्टनी वेला मन्हे सांनिध्य करवानुं कबूल करे तो आज्ञा आपुं. प्रभावतीए मान्य कर्युं. राजाए आज्ञा आपी प्रभावतीए दीक्षा लीधी, संयम पाली आयुष्य पूरण करी देवलोक गइ. पछी योगीनुं रूप करीने राजाने अमृतफल देखाडी जंगलमां लइ गइ. त्यां घणा योगी बेठा हता ते राजाने मारवा उठ्या. राजाए छींक पामीने देवताने याद कर्यो. देवे आवी राजाने त्यांथी उपाडी साधु पासे मूक्यो, जगतमां खरा आधारभूत तो एज छे. एम जाणी तेमनी पासे राजा श्रावकना व्रत लइ श्रावक थयो. हवे श्रीवर्द्धमान स्वामीनी प्रतिमाने प्रभावती राणी दीक्षा लेती वखते देवदत्ता दासीने पूजवानुं कही गइ हती. ते प्रमाणे ते दासी नित्य पूजा करती हती. एक दिवस कोइ गंधार नामा श्रावक सर्व गामोना देरासरोने वांदवा निकल्यो ते वीतभय पाटण आव्यो, तेणे ते प्रतिमाने पूजी, अने त्यां गंधार श्रावक अजारी (रोगी) थयो तेनी देवदत्ता दासीए चाकरी करी तेथी तेनो रोग मटी गयो. तेणे उपकार करवा बदल देवदत्ता दासीने बे गोली आपीने कह्युं के 'आ गोलीमांथी एक गोली खावाथी महास्वरूपवाली थइश अने बीजी गोली खावाथी मनमां चाहीश ते पुरुष वश थइ जशे.' एवुं कहीने गंधार श्रावक जतो रह्यो. पछी देवदत्ताए एक गोली खाधी तेथी दिव्य रूप थयुं अने तेनुं नाम 'सुवर्णगुलिका' पडी गयुं. बीजी गोली खाइने चंडप्रद्योतन राजाने मनमां चाह्यो. गुटिकाना अधिष्ठायिक देवे उज्जयणीमां आवी चंडप्रद्योतन राजानी आगल दासीनुं रूप वर्णन करी राजाने दासी ऊपर अनुरागी बनाव्यो, पछी राजा अनलगिरि हाथी ऊपर चढीने त्यां गयो. दासीने बोलावी. दासी बोली—वीर प्रतिमा विना म्हाराथी आवी शकाय नहीं. चंडप्रद्योतन फरी उज्जयणीमां आवीने ते प्रतिमा सरखी बीजी प्रतिमा तैयार करावी लावीने फरी वीतभय पाटण आवी. नवी प्रतिमा त्यां राखी अने देवे दीधेली प्रतिमाने दासी सहित लइने उज्जयणीमां चाल्यो गयो. प्रभाते उदायी राजाए पोताना हाथीओना मद उतर्या देखीने जाण्युं के अनलगिरि हाथीनी ऊपर चढीने चंडप्रद्योतन राजा अत्रे आव्यो हतो, ते सुवर्णगुलिका दासी अने प्रतिमा लइने जतो रह्यो. पछी उदायी राजा दश मुगुटबद्ध राजा अने सेना साथे लइने उज्जयणी नगरी सहामुं चाल्यो, मार्गमां जेसलमेरना ब्रह्मसर पासे आव्यो, पण मार्गमां पाणी मले नहीं तेथी विलखो थयो. राजाए प्रभावती देवने याद कर्यो. तेणे आवीने त्यां अखूट पाणी भरी दीधुं. ते स्थानके पुष्कर प्रमुख घणा तलावो अखूट पाणी वालां थयां. पछी उदायी राजाए उज्जयणीनी

सीमामां डेरो दीधो अने चंडप्रद्योतन ऊपर दूत मोकली कहेवराव्युं के दासी पाछी नहीं आपे तो भले तुं राख, परंतु अमारी प्रतिमाजी अमोने पाछी आप. चंडप्रद्योतने प्रतिमा दीधी नहीं अने चौद मुगुटबद्ध राजा साथे लइने उदायी राजा साथे लडवा आव्यो; अनलगिरि हाथी विना लडाइ करवानो ठराव थयो, तो पण चंडप्रद्योतन अनलगिरि हाथी ऊपर चढीने संग्राममां आव्यो; मांहोमांहे युद्ध करतां आखिरे चंड-प्रद्योतन हारी गयो. तेने अनलगिरि हाथी ऊपरथी उतारी, बांधी 'दासीनो पति चंडप्रद्योतन छे' एवो तेना ललाटमां डाम दइने उदायी राजा प्रतिमा लेवा लाग्यो, पण प्रतिमा त्यांथी उठी नहीं. एटलामां आकाशवाणी थइ के प्रतिमा लइ जशो नहीं, कारण के वीतभय नगरमां धूलनो कोट पडनार छे. पछी प्रतिमाने त्यां राखी चंड-प्रद्योतनने साथे लइ उदायी राजा पोताना नगर भणी चाल्यो. मार्गमां पर्युषण पर्व आव्यो. उदायी राजाए त्यां पडाव कर्यो, पर्युषण कर्या, तेमां पोते उपवास करी रसोइ करनाराने कह्युं के चंडप्रद्योतनने जे रुचे ते रसोइ करी जमाडजे. एवुं कही उदायी राजा जिनपूजादिक करणीमां प्रवृत्त थयो, रसोइ करनारे चंडप्रद्यो-तनने पूछयुं के आपना सारुं केवी रसोइ बनावुं ?, चंडप्रद्योतन बोल्यो के उदायि कहे ते बनावो, रसोइए कह्युं के तेमणे तो पर्युषण पर्व छे माटे उपवास कर्यो छे. चंडप्र-द्योतने विचार्युं के आज मने ज्हेर आपवानो विचार राख्यो छे माटे जुदी रसोइ करावे छे. एवा भयथी बोल्यो हुं पण आजे उपवास करीश, उदायी राजा अमारो साधर्मी भाइ छे, हुं पण एज धर्म पालुं छुं. रसोइए उदायी राजाने कह्युं. उदायीराजाए जाण्युं ए धूर्त्ततायी बोल्यो तो पण म्हारो साधर्मी थयो. एने खमाव्या विना पडिक-मण करवुं कल्पे नहीं. पछी चंडप्रद्योतनने बंदीखानाथी छोडावी, पोतानी पासे बोलावी, तेना ललाटे सोनानो पट्ट बंधावी, खमतखामणा करी अने सत्कार आपीने पाछो अवंती (उज्जैनी) नगरीमां मोकली दीधो. एवी रीते भव्यजीवोने पण उदायी राजानी परे खमाववुं, खमवुं अने क्रोधनो त्याग करवो.

कुंभार अने धूर्त्तोनी कथा—

अपराध करीने खमावे नहीं तो महा अनर्थनी वृद्धि थाय. जेम एक गाममां कोइक कुंभार मांडलुं गाडुं भरीने वेचवा आव्यो, त्यां तेनो एक बलद लेवा गामना धूर्त्त परस्पर बोल्या जूओ! आ एक बलदनी गाडी चाले छे. गाडावाले जाण्युं--आ दुष्ट लोको एक बलद खोसी लेवानो उपाय करे छे माटे ए प्रत्यक्ष चोर छे, केम के बलद तो बे छे अने ए लोको एक कहे छे. एम चिंतवी कुंभार पोताना ठामडा वेचवामां तत्पर थयो. एक बलदने धूर्त्त लइ गया. कुंभार वासण वेची जवा तैयार थयो पण एक बलद

दीठो नहीं. घणी हांको मारी के एक बलद कोण लइ गयो ? लोको बोल्या के अमे तो एकज बलद जोयो हतो. कुंभार घणुं दुःखी थयो अने निराश थइने पोताने स्थानके आव्यो पण क्रोधथी ते धूर्त्तलोकोना सात वर्ष लगण खेत्रखलां बाल्यां, एकदा कोइ यक्षनी यात्रामां गामना लोको एकठा थया, ते वखते पडह वजडाव्यो के जे अमारा धानना खेत्र—खलां बाले छे ते प्रगट थाओ. कुंभार पोतानो वेष बदलीने बोल्यो के जेनी एक बलदनी गाडी तमे दीठी हती ते तमारा धान खलां जलावे छे. पछी कुंभारने बलदीयो आपीने धूर्त्तोए अपराध खमाव्यो. माटे प्रथम बनता सुधी अपराध करवोज नहीं. परंतु कदापि थइ जाय तो तरत खमतखामणा करी अपराधनी क्षमा मागवी के जेथी कोइ अनर्थ थाय नहीं.

क्रोध न छोडे ते ऊपर क्रोधी ब्राह्मणनो दृष्टान्त—

पर्युषणमां क्रोधनो त्याग नहीं करे तेने सडेला पाननी परे संघ बाहेर करी देवुं, जेम एक खेडा गामनो रहेवासी कोइ ब्राह्मण हतो; ते खेतीनो धंधो करतां हल खेडवामां बलद हांकतां तेनो एक बलद गलीयो थइ बेशी गयो, तेने उठाडवानां घणा प्रयत्न कर्यां, पाडु मार्यो तो पण चाले नहीं, ब्राह्मण रीसे धम धमतो बलदनी ऊपर खेत्रना माटीना ढेफा नाखवा लाग्यो. ढेफाओथी बलद आखो ढंकाइ गयो, बलदनुं श्वास रुंधाइ जवाथी आखिर मरण पाम्यो. ब्राह्मणे आ पापनुं महापुरुषोनी पासे प्रायश्चित्त माग्युं, महापुरुषो बोल्या—तारो क्रोध उतर्यो के नहीं, ब्राह्मण बोल्यो हमणा बलदने देखुं तो मारी नाखुं. महापुरुषोए विचार्युं के आ पापीने शो दंड आपवो ? एनी शुद्धि तो कोइ रीते थइ शकेज नहीं, एवुं कही न्यात बाहेर काढी मूक्यो. एवी रीते जे क्रोधने त्यागे नहीं तेने संघ बाहेर करी देवो.

कृत अपराधनी क्षमा मांगवा ऊपर मृगावतीनो दृष्टान्त—

पोताथी अपराध थयो होय तो मृगावतीनी परे खमाववो. पोतानुं मन शुद्ध करीने मिच्छामि दुक्कडं देवो. जेम एक दिवसे श्रीमहावीरस्वामी कोशंबी नगरी समोसर्या, त्यां चंद्र अने सूर्य बे मूल विमानथी वांदवा आव्या, चंदनबाला, मृगावती प्रमुख त्यां बेठी हती; तेमां चंदनबाला तो सूर्य अस्त थतो जाणी, उठी पोताने उपासरे आवी अने मृगावती भगवाननी देशनामां मोहित थइने त्यांज बेशी रही, सूर्य चंद्र ज्यारे पोताने स्थानके गया त्यारे अंधकार थयो, मृगावती चंदनाने न देखवाथी भय पामती एकलीज उपासरे आवी. इरियावहि पडिकमि पगचंपी करती चंदनबालाने कहेवा लागी के स्वामिनी ! हुं रात्रिमां एकली आवी तेथी अपराधिनी थइ, माटे आप ए आपराधनी मने माफी आपो, चंदना बोली—भद्रे ! तुं उत्तम कुलमां उपनी

छे माटे तारे एम करवुं न घटे, मृगावतीए कह्युं–हवे पछी हुं एवी भूल करीश नहीं. एम वारंवार चंदनबालाने पगे लागती, शुद्ध मनथी खमावती, मृगावतीने केवलज्ञान उपजी गयुं अने चंदनाने तो पगचंपी करतां निद्रा आवी गइ. ए वखते अंधकारमां सर्प आवतो जाणीने मृगावतीए चंदनानो हाथ उपाडीने संथारा ऊपर मूक्यो, चंदना जागृत थइने कहेवा लागी के म्हारो हाथ कोणे उपाड्यो, मृगावती बोली, सर्पनो संघट्टो थवाने लीधे म्हे तमारो हाथ ऊंचो राख्यो, चंदना बोली–एवा अंधकारमां सर्प आवतो केवी रीते देखायो ?, मृगावतीए कह्युं आपना प्रतापथी. चंदना बोली–शुं तने केवलज्ञान उपन्युं छे ?, मृगावती बोली–आपनी कृपाथी. 'अरे ! में केवलीनी आशातना करी ' चंदना एवुं चिंतवीने वारंवार खमावती खमावती मिच्छामि दुकडं देवा लागी अने ते पण केवलज्ञान पामी. एवी रीते भव्य जीवोने पण मिच्छामि दुकडं देवो जोइए. परंतु कुंभार अने चेलानी पेरे नहीं करवुं जोइए. जेम एक लघु शिष्य कुंभारनां भांडा तावडे सूकतां हतां तेने कांकरा मारी फोडवा लाग्यो. कुंभारे कह्युं ' हांडा म फोडो ' शिष्य बोल्यो " मिच्छामि दुकडं " कुंभारे जाण्युं के हवे फोडशे नहीं. पण शिष्य तो फरी तेवीज रीते कांकराथी भांडा फोडवा लाग्यो अने कुंभार हाको करे त्यारे वारंवार मिच्छामि दुकडं देवा लाग्यो, ते जोइ कुंभारे पण एक कांकरो लइ शिष्यना कानमां राखीने कान मसल्यो, शिष्य बोल्यो–अरे ! कान दुःखे छे कुंभार बोल्यो ' मिच्छामि दुकडं ' एम वारंवार कान मसले अने मिच्छामि दुकडं आपे एवी रीते मिच्छामि दुकडं देवाथी कार्यसिद्धि न थाय, वारंवार पाप करवा अने वारं-वार मिच्छामि दुकडं देवो ते काममां न आवे.

अलिया गलिया करवा ऊपर सासु जमाईनो दृष्टान्त—

अन्तरंग शत्रुता न मटे तो पण व्यवहार शुद्धि राखवा माटे सासु जमाइनी परे सर्व अलिया गलिया तो अवश्य करवा. एक वृद्ध स्त्री हती तेनी पासे घणुं द्रव्य हतुं परंतु पुत्र न हतो अने पोते विधवा, घणी लोभी अने कंजूस हती. धननो संग्रह करती. पण पेटमां खाती नहीं. तेने एक दीकरी हती ते कोइ कुलवान् छोक-राने परणावी पण पोते लोभी हती माटे जमाइने दायजो प्रमुख कांइ दीधुं नहीं. तेथी जमाइ नाखुश थयो. होली, दीवाली प्रमुख कोइ पर्वे जमवा आव्यो नहीं. लोको वृद्धा स्त्रीने कहेवा लाग्या के पापणी ! आ तारो एकज जमाइ छे तेने पण जमाडती नथी ' छोकरो तो छे नहीं. तो आ धन कोण खाशे ? अने कोने काम आवशे ? पछी वृद्धाए लौकिक रीती सांचववा माटे जमाइने घणी मनवार करीने बोलाव्यो अने कहेवराव्युं के—तमे एकलाज पधारजो. ते सांभली जमाइना मित्रो कहेवा लाग्या के आज तहने सासु बधुं द्रव्य आपी देशे. पछी जमाइ सासुने

घेर एकलो जमवा गयो, सासुए खीर पीरसी, वाटकीमां रूनो पूंमडो नाखीने घृत पीरसवा आवी, वाटकी मांहेथी घृतनुं टीपुं टीपुं थालीमां नाखवा लागी पण वधारे पडवा दीधे नहीं. डोसिए विचार्युं के जमाइ हमणा नाकारो करशे. जमाइए जाण्युं के आ तो मने ठगवा आवी छे. तेथी सासुनो हाथ पकडी वाटकीने थालीमां ऊंधावी लीधी अने सासुने कहेवा लाग्यो के जी जी घणुं छे हवे म्हारे नथी खपतुं, वृद्धाए 'वाटकी तो खाली थइ के घी तो बधुं एकला जमाइजी खाइ जशे माटे कांइ युक्ति करूं' एम विचारी जमाइने कह्युं के जमाइजी! तमारे अमारे जे रूसणुं हतुं ते सर्व आजे भांग्युं. माटे आपणे भेगा बेसी जमीए. एम कही जमाइनी भेगी जमवा बेसी पण जमाइनी तरफ थालीनुं नीचाण होवाथी सर्वे घी जमाइ तरफ हतुं. तेथी सासु ओलंभानुं मिस करीने आंगुलीथी घी पोतानी तरफ खेंचती जाय ने कहेती जाय के तमारामां एटला वांक छे-प्रथम तो तमे होली ऊपर नहीं आव्या, बीजो दीवाली ऊपर नहीं आव्या, त्रीजो आखात्रीज ऊपर नहीं आव्या. एम बोली बोली सर्व घृत पोतानी तरफ खेंची लीधुं. 'सासु तो घणी समजणवाली देखाय छे. घी तो सर्व खेंची लीधुं' एवुं जाणी थालीमां हाथ फेरवीने जमाइ बोल्यो-'सासुजी! जें थवानुं हतुं ते थयुं पण हवे तमारुं अने मारुं बन्नेनुं मन एक करी ल्यो. आज पछी सर्व अपराध अलिया गलिया जाणजो' एम कही थाली उपाडीने घी खांड सहित सर्व खीर जमाइ पी गयो अने बोल्यो हवे आपणुं सर्व रूसणुं मटी गयुं माटे तमे खुशीमां रहेजो. एवी रीते धर्मार्थी जीवोने पण कोइ राग द्वेष उपन्यो होय ते सर्व खमाववो पण पर्युषणमां राग द्वेष राखवो नहीं मिच्छामि दुक्कडं दई देवो.

क्रोधपिण्डोपरि घेवरियामुनिनो दृष्टांत—

पर्युषण पर्वमां क्रोध, मान, माया अने लोभ करी आहारादि ग्रहण करवा नहीं. तेम करवाथी चारित्रधर्मनो विनाश थाय छे. क्रोधपिंड आश्रयी घेवरिया मुनिनो दृष्टांत-हस्तिकल्प नामा नगरमां एक साधु मासीतपना पारणे गोचरी करवा माटे ब्राह्मणोमां कोइ मरण पामेलानुं जमण हतुं, त्यां गयो. ब्राह्मणो घेवर खाता हता, साधु घणो वखत ऊभो रह्यो पण कोइए साधुने दीधुं नहीं. साधु क्रोध करीने बोल्यो के आजना जमणमां नहीं आपो तो फरी जमण थाय त्यारे आपजो. एवुं कही चालतो थयो, साधुनुं बोलवुं झुंठुं थाय नहीं. एटलामां बीजा महीने पारणाना दिवसे फरी पण कोइक ब्राह्मण मरण पाम्यो. तेना जमणमां तेज साधु पारणुं करवा माटे फरी गोचरी आव्यो. परंतु कोइए व्होराव्युं नहीं, वली क्रोधथी बोल्यो, त्रीजाना जमणमां व्होरावजो, एवुं कही जतो रह्यो. त्रीजा महीनामां फरी कोइ मरण पाम्यो तेना जमणमां पण व्होराव्युं नहीं. साधु क्रोधथी चोथाना जम-

थमां व्होरावावानुं बोल्यो. ते शब्द कोइ डोकराना काने पड्यो. डोसाए घरना धणीने कह्युं के आ साधुने घेवर आपीने खुशी करो, नहीं तो वली कोइ मरशे. एवुं समजी साधुने बोलावी घेवर व्होराव्या. जेम ए साधुए क्रोधथी घेवर व्होर्या तेम बीजा साधुओने कोइ वखते व्होरवो नहीं.

मानपिण्डोपरि सेवैयामुनिनो दृष्टान्त—

मानपिंड ऊपर सेवैया साधुनो दृष्टांत—कोशलदेशमां गिरिपुष्प नामा नगरना विषे सेवोनुं पर्व आव्युं त्यारे युवान साधु एकठा मल्या. तेमां एक साधु बोल्यो आज तो सेवैया पर्व छे माटे सेवो लावो तेमां शुं नवाइ छे ? परंतु प्रभाते खांड घी सहित जे सेवो लावीने साधुओने जमाडे ते लब्धिवान् जाणवो. एक शिष्य अभिमान करीने बोल्यो के हुं काले सेवो लइ आवीने सर्व साधुओने जमाडुं तोज म्हारुं नाम खरुं जाणजो. ते बीजा दिवसे मोटा मोटा पात्रा झोलीमां लइने गोचरी गयो. एक शेठना घेर सेवो देखीने मांगवा लाग्यो. पण शेठाणी लोभणी हती माटे बोली, जा जा, तने सेवो नहीं मले, ए प्रमाणे ललकारीने काहाडी मूक्यो. चेलो बोल्यो तुं जो तो खरी हुं जरूर तारा त्यांथीज सेवो कोइ पण रीते अवश्य लइ जइश. शेठाणी बोली—जो तुं सेवो लइ जाय तो म्हारुं नाक गयुं जाणजे परंतु म्हारुं नाक छे त्यांसुधी तो तने सेवो लइ जवा देइश नहीं, साधु त्यांथी निकली आगल जइ कोइने पूछ्युं के आ घर कोनुं छे ? ए घरनो मालक क्यां छे ?, कोइए कह्युं, ए देवदत्तनुं घर छे, ते हमणा पंचायतीमां बेठेल छे, साधु तेना पासे जइ कहेवा लाग्यो के तमारामां देवदत्त कोण छे ? ते बोल्या शुं काम छे ?, साधुए कह्युं—तेनी पासे कांइ मागवुं छे, पंच बोल्या—एतो कृपण छे ? जे कांइ मागवुं होय ते अमारी पासे मागो. देवदत्त बोल्यो साधुजी ! तमे मांगशो ते हुं आपीश, चेलाए कह्युं, देवदत्त ! जेम छ जणा स्त्रीओने वश हता, तेम तुं पण स्त्रीने वश न होय तो हुं तारी पासे कांइ मागुं. पंच बोल्या—ते छ जणा कोण हता ? तेनी कथा कहो—चेलो बोल्यो, एक कुलपुत्र हतो ते परणीने पछी स्त्रीने वश थयो, प्रभाते भूख लागी. स्त्रीना पासे खावा मांग्युं, स्त्री ढोलीया ऊपर बेठीज कहेवा लागी के जो तुं भूख्यो होय तो चूलामांथी राख काहाडी बाहेर नाख, ईंधन लाव, चूलामां अग्नी बाल, माथे हांडी चडाव, तेमां पाणी नाख, कोठामांथी चावल लावी तेने सोधी साफ करीने, हांडीमां नांखी, पचावीने तैयार कर; तैयार थयां पछी मने हांक मारजे, हुं उठीने पीरसी आपीश. ए वात सांभली कुलपुत्र बोल्यो तुं कहे छे ते सत्य छे. एम कही पूर्वोक्त सर्व काम नित्य करवा लाग्यो, नित्य चूलानी राख काहाडवाथी तेनी आंगुलीओ धोली पडी गइ; लोकोए तेनुं 'श्वेतां-

गुली ' नाम आप्युं. तेम देवदत्त ! तुं पण स्त्रीने वश न होय तो हुं याचना करुं. देवदत्त बोल्यो-हुं स्त्रीने वश नथी.

एक कुलपुत्र हतो ते स्त्रीने वश थयो तेने स्त्री ढोलीया ऊपर बेसीने कहेवा लागी के हुं पाणी लावीश नहीं माटे तुं जइ तलाव ऊपरथी पाणी भरी लाव, रोटला बनावी आपीश. ते पण लोकोनी लाजथी. पाछली एक पहोर रात्री रहे त्यारे नित्य माथे घडो लइ पाणी भरी लाववा लाग्यो. रात्रीमां बगला प्रमुख जनावर बीक पामीने तलाव ऊपरथी उडवा लाग्या तेनो कोलाहल थयो तेथी लोकोए जाण्युं के आ शुं नित्य उपद्रव थाय छे ? बगला केम उडे छे ?, पछी शोध कराव्याथी मालम पडयुं के कुलपुत्र पाणी भरवा जाय छे तेथी बगला प्रमुख उडे छे. पछी लोकोए तेनो नाम ' बगोड्डाही ' पाडी दीधुं. माटे देवदत्त ! तुं पण एवो न होय तो हुं जाचूं. देवदत्ते कह्युं-हुं एवो नथी.

एक कुलपुत्र स्त्री परणीने तेने वश थयो; पछी नित्य प्रभाते उठी हाथ जोडी स्त्रीने कहे के हुं शुं काम करुं ?, स्त्री बोली सर्व रसोइ कर, रसोइ तैयार करी स्त्रीने कहेवा लाग्यो हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली गादी बिछावीने पाटलो मूक, ते पण काम करीने पूछ्युं हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली मारा बाह पकडीने मने गादी ऊपर बेसाड, तेणे स्त्रीने बाह पकडी गादी ऊपर बेसाडीने पूछ्युं हवे शुं करुं ?, स्त्रीए कह्युं रसोइ पीरस, रसोइ पीरसीने पूछ्युं हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली माखीयो उडाड, ते उडाडीने पूछ्युं हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली मलमूत्र परठी आव, ते परठीने बोल्यो हवे शुं करुं ?, स्त्री बोली हुं सुइ रहुं छुं तुं मारी पगचंपी कर, त्यारे पगचंपी करवा लाग्यो ते जोइ लोक बोल्या-ए ' स्त्रीकिंकर ' छे. तेम देवदत्त ! तुं पण तेना जेवो होय तो हुं याचना न करुं, देवदत्ते कह्युं-हुं एवो नथी. एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थइने तेना वस्त्रप्रमुख धोवानुं कार्य नित्य करतो हतो तेनुं लोकोए 'तीर्थस्नाता' नाम पाडयुं. तेमज पांचमानुं नाम 'गद्धापरखी' पाडयुं. एक कुलपुत्र स्त्रीने वश थयो, तेने पुत्र थयो, स्त्री कहे छोकराने हंगावी लाव ते नित्य छोकराने हंगावे, स्नान करावे, ते देखी लोकोए तेनो नाम ' हदनीयो ' पाडयुं. माटे एनी परे तुं जो स्त्रीने वश न होय तो त्हारी पासे याचना करुं. देवदत्त बोल्यो-हुं तेवो नथी तमे सुखे मागो. बीजा पंच हास्यपूर्वक बोल्या-चेलाजी ! स्त्रीने वश थएलाना सर्व दोष एमां छे. देवदत्त बोल्यो-भगवन् ! ए तो म्हारी हांसी करे छे. आपने जे चाहना होय ते सुखे मागो. चेलो बोल्यो-घृत अने खांड सहित सेवो व्होरावो. देवदत्ते कह्युं-चालो हुं आपने व्होरावुं. एवुं कही साधुने साथे लइ घेर आव्यो. रस्तामां साधु बोल्यो के तारी स्त्री तो मारी साथे लडी चुकी छे. देवदत्ते कह्युं. तमे घरनी बाहेर ऊभा रहेजो हुं बोलावुं त्यारे आवजो. साधु बाहेर ऊभो रह्यो, देव-

दत्त घरमां जइने स्त्रीने कहेवा लाग्यो, आज ब्राह्मणोने जमवानुं कह्युं छे, ते जमवा आवशे, घरमां कांइ रांधेलुं छे ? ते बोली सेवो तैयार छे. देवदत्ते स्त्रीने कह्युं के निसरणी ऊपर चढीने डागलेथी घी खांड लइ आव. स्त्री घी खांड लेवा नीसरणी ऊपर चडी डागले गइ. साधुने अंदर बोलाव्यो. साधु बोल्यो, देवदत्त ! आ नीसरणी जरा अलगी लइ ल्यो. देवदत्ते नीसरणी दूर करी. साधुना पात्र रूडी रीते सेवो अने घी खांडथी भरी दीधा, ऊपर ऊभी ऊभी सेठाणी हांको करवा लागी के एने कां व्होरावो छो आतो मुंडो छे पण कांइ जोर चाल्युं नहीं. साधुए पण पात्रा भरीने निकलता नाक ऊपर आंगुली फेरवीने स्त्रीने जणाव्युं के तारुं नाक कपाइ गयुं. पछी उपासरे आवी सर्व साधुओने जमाड्या. एम ए साधुए अभिमान करीने आहार लीधो तेम बीजा साधुओने आहार लेवो नहीं.

मायापिंड ऊपर आषाढभूतिनो दृष्टान्त—

गुरु प्रेरणाथी आषाढभूति मुनि एकदा राजगृहनगरमां कोइ नटना घेर गोचरी माटे गया. अने विद्याबलथी रूपपरावर्त्तन करी पांच वार मोदक व्होर्या, ते जोइ नटवे मुनिने पोतानी रूपवती बे कन्याओना मोहजालमां फसाव्या. आषाढभूति साधु उपकरण गुरुने सोंपी अने मद्यमांस न वापरे तेना साथेज रहेवुं एवी बाधा लइ पाछा नटना घेर आव्या. नटवे तेने पोतानी बे कन्या परणावी घरजमाइ कायम कर्यो. मुनि नटकन्याओ साथे विविध विषयसुख भोगववा लाग्या. एज वखते नगरमां कोइ विदेशी नटे आवी उद्घोषणा करावी के 'कोइ पण नटविद्या पारगामी होय ते म्हारा साथे वाद करवा तैयार थाय' ते उद्घोषणाने रोकी ते नटवे पोताना जमाइ आषाढभूतिने विदेशी नट साथे विवाद करवा राज सभामां मोकल्या. आषाढभूतिनी स्त्रियोए पाछलथी मद्य मांस भक्षण करवा मांड्यो. पोताना विद्याबलथी विदेशी नटने क्षणवारमां परास्त करी आषाढभूति पाछा पोताने घेर आव्या अने कपाटने खड खडाव्या. 'दुर्गंधथी मद्य मांस भक्षण कर्युं जाणशे तो छोडीने चाल्या जशे' स्त्रियो एम विचारी घरना वाडामां गइ अने वमन करवा लागी. आषाढभूति भींत ऊपर चढी वाडामां उतर्यो अने वमनमां मांस जोइ विरक्त थयो. परंतु सुसराना कहेवाथी स्त्रियोने खावाखर्चनो बंदोबस्त करवा सारुं राजा पासे जइ आषाढभूतिए भरतनाटक करवा मांड्युं, तेमां भरतचक्रवर्त्तीना पठे सोल सिणगार सजी अने आरीसाभवनमां जइ एकत्व भावना भावणा मांडी. तेथी थोडीवारमां शुभध्यानना प्रभावथी आषाढभूतिने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. देवोए साधुवेष आपी स्वर्णकमलनी रचना करी. तेना ऊपर बेसी आषाढभूतिए धर्मदेशना आपी. तेने सांभली राजा, राणी अने एक हजार राजकुमारोए दीक्षा लीधी. पछी शिष्यमंडल सहित त्यांथी विहार करीने आषाढभूति

पोताना गुरु पासे आव्या. गुरु पण भावना भावतां केवलज्ञान पाम्या. जेम आषाढभूति मुनिए रूप परावर्त्तन करी कपटथी मोदक व्होर्यां, तेम बीजा साधुओने मायापिंड ग्रहण करवुं नहीं.

लोभपिंड ऊपर सिंहकेसरिया साधुनो दृष्टांत—

चंपानगरीमां उत्सवना दिवसे एक साधुए मासखमणना पारणे अभिग्रह लीधो के आजे सिंहकेसरिया मोदकज व्होरवा. पछी घरोघर भम्यो पण सिंहकेसरियामोदक क्यांइ मल्या नहीं. तेथी मुनिनुं मन गाफल थयुं. अर्द्ध रात्री लगण घरोघर धर्मलाभ देतो फर्यो. लोभना वशथी रात्रिनी खबर पण रही नहीं. पछी कोइएक श्रावकने घेर जइ धर्मलाभ दीधो. ते श्रावक महागंभीर अने मातापिता समान हतो तेणे रात्रे धर्मलाभ सांभलीने विचार्युं के कोइ कर्मना वशथी साधुनुं मन डगमग थयुं छे. एवुं जाणी उठ्यो ने मुनिने वंदना करी जोयुं तो साधु महातपस्वी देखायो. श्रावके पूछयुं—महाराज ! आपने शुं जोइए ?, मुनि बोल्या—सिंहकेसरिया मोदक खपे छे. श्रावके कह्युं—अमारे घेर ते घणा छे. एवुं कही सिंहकेसरिया मोदकनो थाल भरी लाव्यो अने मुनिने व्होराव्या. श्रावक बोल्यो—स्वामिन् ! पुरिमार्द्धना पच्चक्खाणनो वखत आव्यो के नहीं ?, मुनिए आकाशमां जोयुं तो निर्मल तारा अने नक्षत्रनी श्रेणिसहित चंद्रमाने जोयो तेथी मुनिनुं चित्त ठेकाणे आवी गयुं. पछी मुनि 'धिक्कार छे में आ शुं कर्युं ?' हुं रात्रीनो गोचरी करवा निकल्यो ? मारो साधुनो आचार क्यां गयो ? एम पश्चात्ताप करता नगरनी बाहेर आवीने सूत्रोक्तविधि सहित मोदक परठवता विचारे छे के अरे ! कर्मने जीतवुं घणुं मुश्केल छे, में आ खोटुं काम कर्युं, धर्मनी निंदा करावी, एवी रीते मुनि पश्चात्ताप करता अने शुक्लध्यान ध्यावता, क्षपकश्रेणी चढीने केवलज्ञान पाम्या. जेम एणे लोभना वशथी सिंहकेसरिया मोदक व्होर्या तेम बीजा साधुओए लेवा नहीं.

२५ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने जीवादिकनी उत्पत्तिना लीधे चोमासामां त्रण उपासरा राखवा. तेमां जे उपासरामां पोते रहे ते उपासरो प्रतिदिवस त्रणवार पूंजवो अने बीजा बे उपासराने एकवार पूंजवा तेनी पडिलेहण करवी ए प्रमार्जन पडिलेहण करवा संबंधि पचीसमी समाचारी जाणवी.

२६ वर्षादमां रहेला साधु साध्वीने पोतानी मरजीमां आवे

त्यां जवुं होय तो गुरुने पूछीने अने दिशि के स्थान बतावीनेज जाववुं कल्पे. वगर पूछे जवुं कल्पे नहीं. शिष्य पूछे छे के शा वास्ते ?, गुरु कहे छे—साधु चोमासा विना शेषकालमां तो सामान्य प्रकारना तप करे छे परंतु चोमासामां घणा प्रकारना विशेष तप करे छे. कोइ तपस्वी दुर्बल होय अने मूर्च्छा खाइ पडी जाय, तो जे दिशामां गयो होय ते दिशामां आचार्य याद राखीने निगाह करावे, शोध करावे के एटलो वखत केम लाग्यो माटे आचार्यने पूछीने बाहेर जवुं जोइए. ए प्रतिजागरण (पूछीने जवा) संबंधि छव्वीसमी समाचारी जाणवी.

२७ वर्षाकालमां चोमासे रहेला साधु साध्वीने औषध प्रमुख कामना लीधे वैद्यनी पासे जवुं पडे तो चार योजन अथवा पांच योजन पर्यंत पोताना गामथी जे गाम दूर होय ते गामे जवुं कल्पे. एटले सोल तथा वीस कोश दूर जइने ते गाममांथी औषध लइ, पाछो फरी, आवतां जो पोते रहेला गामनी मांहे उपासरामां दिवस छतां आवी न शकाय तो तेज गामनी बाहेर आवी रहेवुं पण जे गाममां औषधादिक लेवा गया ते गाममां रात्रे रहेवुं नहीं. अथवा दिवस छतां गामनी बाहेर न पहोंची शकाय तो मार्गमां पण रहेवुं कल्पे. ए औषधादिक लेवा गमनाऽऽगमन संबंधि सत्तावीसमी समाचारी जाणवी.

२८ इत्यादिक संवत्सरीनो स्थविरकल्प जेवी रीते कल्पसूत्रमां कह्यो छे तेवी विधिथी आराधन करे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो मार्ग जेवी रीते भगवाने कह्यो छे तेम पालन करे, भला प्रकारथी मन, वचन अने कायाएँ करी फरशे, अतिचार रहित पाले; विधि सहित शोभा करी दीपावे, जाव जीव सुधी पाले; कांठे पहोचाडे, लोकोमां कीर्त्ति करे, ए समाचारीने आराधीने अने आज्ञा सहित पालीने केटलाएक निर्ग्रंथ तो तेहज भवमां

सीझे. तत्त्वने जाणी, कर्मोथी रहित थइ, अने सर्व संताप रहित थइने सर्व दुःखथी छूटे–मोक्ष जाय. केटलाएक त्रीजे भवे सीझे यावत् मोक्ष जाय, परंतु सात–आठ भव तो ओलंघे नहीं. सातमे आठमे भवे तो अवश्य मोक्ष जाय. ए समाचारी (मर्यादा–पालन) फल संबंधि अट्ठावीशमी समाचारी जाणवी.

ते काल ते समयना विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी राजगृही नगरीमां गुणशील नामा यक्षायतनना विषे घणा साधुओमां घणी साध्वीओमां, घणा श्रावकोमां, घणी श्राविकाओमां अने घणा देवोमां घणी देवीओमां बेठा (बार परषदामां बेठाज) एवा वचने करीने कहे, ए कल्पने पालवानुं फल बतावे, एवो प्ररूपे, ए पर्युषणकल्प नामा अध्ययन दशाश्रुतस्कंधनो आठमो अध्ययन, ते अर्थ सहित. हेतु सहित, कारण सहित, सूत्र सहित, अर्थ सहित, सूत्रार्थ सहित, दृष्टांत सहित, वारंवार उपदेश करीने देखाडे. ' एम भद्रबाहुए आ सूत्र दशाश्रुतस्कंधमां आठमा अध्ययन तरीके रच्यो छे ' पण वाचना सर्व सुधर्मस्वामी अने जंबूस्वामीनीज जाणवी.

जैनाचार्य श्रीमद् भट्टारक–विजयराजेन्द्रसूरीश्वर–सङ्कलिते–
श्रीकल्पसूत्र–बालावबोधे नवमं व्याख्यानं समाप्तम् ।



अथ प्रशस्तिः ।



सर्वेषु सूत्रेषु वरप्रशस्ति—र्यस्यास्ति सर्वेष्वतिमुख्यता च ।
कल्पद्रुकल्पं मम कल्पसूत्रं, चारित्रकार्ये शुभकृत्सदास्तु ॥ १ ॥
सौधर्मपट्टे सुपरम्परायां, सूरीश्वरा ये च वरा बभूवुः ।
वन्दे सदा तान् वरसूत्रदातॄन्, श्रीरत्नसूरीन् विदुषो मुनीशान् ॥ २ ॥

श्रीमत्क्षमादिगुणराशियशःशमाऽऽढ्यो,
जातः क्षमागणधरः प्रवराऽऽस्लकर्त्ता ।
चित्रा लता चरणसेवनतत्पराभूत्,
तामप्यहो ! हृदि गुरुः स च नो दधार ॥ ३ ॥

देवेन्द्रविजयो वन्द्यः, तच्छिष्यो बहुकीर्त्तिभाक् ।
कल्याणविजयस्तस्य, प्रमोदश्च प्रमोदयुक् ॥ ४ ॥

सुधर्मस्वामिनो गच्छे, सन्ति राजेन्द्रसूरयः ।
तेनेयं कल्पसूत्रस्य, वार्त्ता बालावबोधिनी ॥ ५ ॥

कृता सूत्रपदैर्युक्ता, सर्वसारांशसंयुता ।
सा योगोद्वहनं येन, न कृतं तस्य हेतवे ॥ ६ ॥

अब्दे खवेदनन्दैके (१६४०), माधवे च सितेतरे ।
पक्षे दिने द्वितीयायां, मङ्गले लिखिता त्वियम् ॥ ७ ॥

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र—सकलजैनागमपारदृश्व—कलिकालसर्वज्ञकल्प—
जङ्गमयुगप्रधान—परमयोगिराज जगत्पूज्य—गुरुदेव—श्रीम-
द् भट्टारकजैनाचार्य—श्रीविजयराजेन्द्रसूरीश्वर—सङ्कलितः
'कल्पसूत्र—बालावबोधः' समाप्तः ।